मंगल-पत्रिका प्रारम्भ

जयई जग जिवजोणि वियाणऊ जगगुरू जगाणन्दो ।
जगनाहो जगबंधु जयई जगपिया महोभयव ॥ १ ॥
जयई सुयाणप्य भवो तियथराण अवछि मोजयई ।
जयई गुरू लोगाणं जयई महप्या महाविरो ॥ २ ॥
सिद्धाण णमोकीचा सजयाण च भावऊँ ।
प्रतिवंति फरेलेप पतो गई मणुतर ॥ १ ॥
जिणधम्मो यजिवाण अपुवोकप्प पायवो ।
ससपवगा सोपाणं फलाणं ठाई गोयमो ॥ २ ॥

ॐ नम प्रस्तावभूमिका.

अहो सुज्ञ जनो इसी अपारावार कलियुगमे नाम जैनधर्म है' अवि जैन किसिकु केते हे जिसी स्थानकमे जीवकी यत्ना या निरक्षा होते हे शोहि जैन है: अहो देवानुमीय अवि इस्मे विशेष वात यह ह कि देवगुरु धर्मकी पेहचान करनी उनेके पर आस्ता रखनी वोही दृढ श्रद्धा ह अवि वोहि तत्वकी पेहचानका किंचित वरन करताहु (श्लोक) वीतरागवरंदेवो महाव्रत धरोगुरुः जीवाना च दयाधर्म श्रीणी तत्व निशायते १ अवि अहोभव्यो इसका खुलासा यह हे कि धर्मका सार इतनाही हे कि तत्वका निर्णय करता सो तत्व कोनसा' देव गुरु धर्म अवी देव कोनसा हे वीतरागदेव वीतराग किसीकु कहते हे वी० इती वीशेषकर रागद्वेषका नास हुवा हे उसीका नाम वीतराग हे पुन १८ दोष रहीत द्वादस गुणसहित चउतीस अतिसे करयुक्त अष्ट महाप्रतिहार्य सहित अनत शक्ति अप्रतिहत ज्ञान दर्शनके धरने वाले एसे गुणसयुक्त वो देव ह अवी दुसरा गुरुतत्व किनकु कहिनाकि पच महाव्रतधारी कनक कामनीके त्यागी निरलोभी निस्वादी निश्रय अप्रतिबध विहारके करनेवाले भारडपखी इव अप्रमादी मानो अपमानसम खमसमदम इत्यादि अनेक गुणेयुक्त आप भवोदधी तिरे अनेराकु तार वो गुरु शुद्ध धर्म परुपक वोही गुरु ह अव धर्म नाम किसका हे कि दुरगति गमन जीवाके धारे यानि रक्षा कर जीसी धर्म य कोइका पक्षपातका वचन नहीं ह सर्व जीवाकों साताकारक यानि रक्षा कारक नव पदार्थका नीरणेय वो धर्म २ प्रकारका ठाणायग सूत्रमे वरणन किया ह सूत्र धर्म १ अरु चारित्र धर्म का २ भेद ह श्राविक १ ओर साधू २ श्रावक तो नवकारसी आदि द्वादश व्रतके धरनेवाले हे उसका नाम श्रावक हे अरु साधू सो पच महा व्रतधारी उनका स्वरुप गुरुतत्वमे वरणन कीया ह यह २ प्रकारका धर्म ह सो यहइ तत्वको सम्यक् प्रकारसे सचा कर सरधे परुपे उनका नाम श्रधान हे तो देखो एसें अमोल्य जैनधर्म अरुकल्पवृक्ष सदृश जिनवानी ह सोसर्व जीवाकों धर्मका आधार मेघवत देना ह जिनसे सवेग कहते ह हम सच्चे ह, साधमारगी केते ह हम सच ह, जती कहते ह हम सच्चे ह, तेरा पथी कहते ह हम सच्चे ह, तो भाई अग्रजन कहते हकि किनका वचन परमान कर, सो भाई निरपक्ष होकर वीतराग देवकी वाणी पर ध्यान लगाकर अनुभव स्वरुपमें वीचार कर देखो वीतरागका

धर्मे स्यादवाद सप्तनय च्यार नीक्षेपा सें यथा योग्य मानना उतम है अवी कलि-युगमे जो पक्षसहित धर्मके कुठाररूप जो मनुष्य है वो अपना २ पक्षपात खेंचता है सो मृषावादी है अवी देखो आगला जमाना मे पुज्य श्री श्री १००८ श्री श्री धुधरजी महाराजके शिष्य स्वामीजी श्री श्री १००८ श्री श्री रुपचन्दजी महाराजके शिष्य श्री श्री १००८ श्री श्री जेठमलजी महाराज ने वीरवीजेजी जसवीजेजी आदि बहु सवेगी यती लोगासें सेहेर अहमदावाद मे चरचा करी जीनकी तो घोतसी कथन है, उन चरचाके रचाकर समकितसार ग्रंथ रचा हुवा है सो आगे छपाया सो पुस्तक अब नही मीलती है उनसे अब पुज्य अमर सिंगजी महाराज के पाटानुपाट बाल ब्रमचारी पुजजी माहाराज श्री श्री १००८ श्री श्री पुनमचदजी म्हाराज के शीष्य स्वामीजी म्हाराज श्री श्री १००८ श्री जेठ मलजी म्हाराज श्री श्री १००८ श्री डालचदजी म्हाराज श्री हेमराजजी म्हाराजके सदउपदेस सें सेहेर जालोर मगने गाम वाल्दणवाडी के नीवासी सुश्रावक उदारचित मणामी मुता मनरुप मलजी उनके पुत्र कपुरचंद फुलचंद श्रधानका निर्णे के लीये प्रथम समकीतसार श्री जेठमलजी स्वामीजी कृत प्रथम भाग है,समकितसारका खंडन कीया वलभवीजेजी ने उसपर समकीत सल्लोद्वार बनाया उनका खंडन माणेकलाल धयालजी भावनगरी जिणाने समकितसार दुसरा भाग बनाया ए दोनु भाग श्रद्धान के लीये अमुल्य घोत श्रेष्ट है, श्रोताजनोके वांचने योग्य है जिनसे अपनी श्रद्धा घोत पुष्ट रेती है सो उपीयोग सें निरपक्ष होकर वांचो

अनुक्रमणीका

छप्पो

पट पापट पर दोट, कदापी बली न करशे;
पत्ती पथर पर भक्ष, दबलथी हरण न करशे;
मुक्ता फटक मराळ, रुपनमा कदी न लेये;
कागद कुशळ कराय, आप सटपट नव सेवे;
टेम नजर मु देखता, पहीचान छे पसुपणे;
फ र ही के नग्गु समज, प्रतिमा मां प्रभुता भणे

समकितसार भाग २ जो.

(उपोद्घात.)

समकित एटले शु एतो प्रथम बुक वाचता तेमज ते केवी रीते प्राप्त थाय छे ते आ बुकना प्रारभ अगाउना पृष्टपरथी सहजे मालम पडी आवशे

जैनधर्म अनादी छे ने तेना धर्म पुस्तको एवी गभीर्य शैलीथी रचाएला छे के तेनु श्रवण करता माणसोना हृदयमा दयानो अकुर फुटता, मन जन्म सार्थक केम थाय तेपर दोडेछे, पण तेनो मोटो जथो गुप्त भडारोमा भराइ रहेवाथी ने तेना विशेनी आधुनीक जैनोनी थोडी काळजीने लीधे हाल तेनी ख्याती अन्यमतवादी थोडी स्वीकारे छे, पण जेम जेम अज्ञानरुपी अधकारनो नाश थतो जशे ने आ तेजस्वी धर्मनो लाभ लेवा माणसोना मन आकृपाशे तेम तेनी अंदरनी खुबीओ ते वधार वधारे देखशेज एतो नि सदेह दीलगीर छीए के साभळ्वा मुजब तेमज नजरे देखवा मुजब आपणा उत्तम धर्म पुस्तक करनारना नामने काजळसम कालो डाघ आपनार केटलाक मात्र कहेवानाज जैनधर्मीओ मुळ पुस्तकोना आधार तथा आ ज्ञान जोतां मतिभ्रमताने लीधे पोताना नवा विचारो तेमा खोशी आवी रीते धर्म शास्त्रकारोनी आज्ञा छे एम भोळा भाविकोने समजावी पापना पुज्य बाधे छे ने बधावे छे तो आवा नरोने अमार क्या विशेषणो आपवा ए आ वखत लखवा अमारी कलम चालती नथी पण तेवा ओने बोध देवानेअर्थे अमे आ प्रसंगे हालना एवा एक कल्पीत पुस्तकना कर्त्ताने थोडी सुचना आपीए छीए केमके अमारो उद्देश तेने लगतो छे समकित शल्योद्धारना कर्त्ता–भाइ समकित एटले शु एतो आ बुक अथथी इतिसुधी वाचता मालम पडतुज नथी कमके समकितना राखनार क्षमा, दया, शाती, कटु भाषण, मृषावाक्य ने बीजा एवा अनेक अवगुणोथी तो विमुख रहेवु जोइए पण आ बुकना कर्त्ताए तो तेनी अदर एवा बीभस्त शब्दो वापरला छे के चोपडीना उपर नामने जाणे एवज आपी छे ! !

आतु तमागमां कयायी भुत भराइ गयु के समकित ए नामनी बुक ने तेनी अन्दर आवा कटु वाक्यो, टाढाइ लुचाइ तथा अविवक्ताइना पण लख्या, खरेखर समकितनो शल्यज तमागमा भरायो के आ शल्यनो उद्धार तमने आम सुज्यो ? भीक छे आ तमारा कामने अने * * *

सावय आचार्यजी तमोए पण काइ विचार न कर्यो ? तमोए आ समारनी

मिथ्या मायानो मोह शा वास्ते छोडेलो ? ते शु आम निंदीत पुस्तक प्रगट करवाने समजुने शान बस छे जो तमारे धर्मचर्चा करी मतनुं प्रतिपादन करावयु हतु तो अन्यमार्गनी खोट हती ? शु आम करेथी पीत्तल सोनामा खपशे ? अर छोडो तमारो मिथ्यागर्व ने काढो आवा नि.स्वार्थी विचारोने

मोक्ष संपादन करवानो रस्तो बहु विकट छे तपासो आपणा धर्मशास्त्रो के निंदीत कार्यो करनारना केवा बुरा हालो थएला छे ? तमारा नाम प्रमाणे तमारा सेवको तमने पोताना जीवथी व्हाला गणीने दीपकमा जेम पतंगीया झंपलाइ नाश पामे तेम नाश पामी पोतानी आवरूने नुकशान थएथी पस्तावो करता हशे के करशे साधुना सर्व लक्षणो आवा निंदीत पुस्तक रचनार मां केवा होय ते तो सौ अन्यमतवादी पण विचारशे ! !

युवान अवस्थाथी थएला अंधकारने सूर्यथी पण भेदी शकाय नहीं, रत्न प्रभावडे छेदी शकाय नहीं, ने प्रदिप्त प्रकाशव दुर करी शकाय नहीं,तो हवे आवा युवान मन्मां हींडोळे चढेला मदोन्मत्त उछरता युवानामां वळी ज्यारे चपळ तेना सेवकोने अति बुरीगतीए पोचाडनार, न जोवराबनार सारु या जोवराबनार नठारुं, चतुराइ, चंचळ्याइ, ने चपळताइने चलायमान करनार लक्ष्मीदेवी मळ्यां त्यारे तो पछी उदयनो आडो आंकज वळयोना ! !

युवानीमदमा दीवाना बनेला ने तेमां वळी धनमदथी अंधत्व प्राप्त थएला उछरता युवानो केम करवाथी मारापर विटंबना आवशे ? ने केम करवाथी हु लोक हितेषीमां खपीश ? या मारी, कुंटुंबनी के मारा सगावहालांनी उन्नतीनो अरुण प्रकाशमान करीसकीश तेनु भान क्यांथी लावे ! केमके पवन जेम रजो भ्रांती उत्पन करी शुष्कपत्रने स्वइच्छाए अतीदुर घसडी जायछे तेम आवा उन्मती युवानी मन्नी माणसोनी प्रकृति तो शास्त्रज्ञानथी सारी थइ होय तोपण जडतापात्र थइ जाय छे ने वळी तेमां ल्क्ष्मीनो मद मळे एटले श्री स्वामी रहे ! !

मित्रो पुरतो लागशे एम सपुर्ण खात्री छे पण समीए आ अप्रगीत ने अयोग्य कामनु आपमतमां तणाइने जे समकीतसारनी टीका समकीत शल्योद्धार नमृताने यगळीमुकी रचेलछे ने खरखर तमारा नामने अने कामने काजळसम काळो डाघज लगाडयो छे संपनु प्राबल्यने सपनी महता केटली बलवान छे ते जाणताछतां भम भुली गया ? अर भाम कुसपनुं बीज वाववाथी तो घणा घणा चक्रवर्ती राजाओनो पण नाश थएलो छे तो तमारा सरखा * * *

प्रथममा तमोए जे बुरा शब्दो नाखी अमारा तत्वशोध धर्मने खोटो करवाने ए पुस्तकमा वगर विचार्युं दाखल कर्युं छे तो तेम करवाथी शु * *

पछवाड थएलाने समाचारीथी दुर करेला द्रव्ययेपी जादुविद्यामा कुशळ तेमज मायाना पासामा बंधाएल छे, तेमज तेओ ससारीने न छाजे तेवा अघटीत काम करेछे, तेना दाखला तमोए आप्या पण अरे शु तमो नथी विचारता के बधाने पाच आगळी सरखी होय ? आवी बाबतनो जो अमे शोध करीए तो * *

हवे आ बाबतमा आटलेथी अटकता अमारे जणाववु पडेछे के मत प्रतिपादन करवाने अर्थे नितिनो रस्तो नहीं तजशो केमके मिथ्या डोळघालु पुरुषो कळाया विना रहेता नथीज, आ अमारु ल्खाण कदापी तमोने माठु तो लागशे पण ते तमे नितिनो रस्तो मूक्यो तेथीज छे

हवे आ बाबतमा आटलेथी अटकता विद्वान गुणज्ञ नरोने नम्रताथी केहेवानु के आ पुस्तक धर्म सबंधीनु छे एटलुज नहीं पण तेमा ठेकाणे ठेकाणे सिद्धातोना पाठ आयेला छे जेथी वाचनार साहेबोए अकाळ, असझाय, दीवो, वीगेर जे जे वखते सिद्धातो न वचाय ते ते वखत वरजीने मोंढे जतना सहीत वाचवा कृपा करशो ए मारी विनती छे, छता पछी उलटीरीते वर्तशो तो तेनो दोष तेमना शिरपर छे, हु आ बुक बनावता जाती विभक्ती, शब्द, चीन्ह (वीराम) ने वाक्यरचना वीगेरे योग्यरीते समाळवामा यथासक्ति दत्तावधान रहेल्गेछु तथापी मनुषजातीनी प्रकृति सिद्ध भुल थइजवाना दोषथी काइ दुषण के स्खल्न मागथी थइ गयु होय ता ते सुज्ञ वाचनार सुधारीने वाचशे केमके श्रुत्विकालीक सुत्रमा कयु छे के,

आयारपन्नत्तिधरदीट्टीवाएमहीजग
वएवीखलीयनञ्चानत्तंडवहशेमुणी ॥

अर्थ—आचारग सुत्रना भणनार तेमज विवहापनतीना धरनारने द्रष्टिवाद सर्वथा जाणनार छद्मस्तना कारणथी कोइ वखते वचनथी स्खल्ना पामे छे, तो तेनी उपहास न करवो अहो ! मुनी ! तो हुता अल्पज्ञानी न प्रथमाभ्यासी छु जेथी भुलयो बतावी प्रसार्थ करशो एटले बीजी आवृतिमा ते सुधारो करवामा चु-कीश नहीं एज विनति

———

समकितनु विवेचन

आ अनादि अनंत ससारमा अनादिकाळथी कोइएक मिथ्यात्वद्रष्टि जीव मिथ्यात्वनी प्रबळताना उदयथी अनंत पुद्गळ परावर्तक वारवार जन्म मरण करीने भ्रमण करे छे एम करता करता काळांतरे घणा अशुभ कर्मनां दळ घटीजवाथी हळ्वापणु थइ जाय छे, द्रष्टांत जेम पथ्थरवाळी जमीन नदीनो प्रवाह चाले छे तेमा केटलाएक पथ्थर पाणीना मोजाथी सामसामे आपथी घसाइने सरीखा वा टला एटले गोळाकारे थइ जाय छे, तेवीज रीते जीवपण परिणामे विशेषरूप यथा प्रवृतिकरणजोग थइने अनंता कर्मना दळ्न क्षयकर्या अने थोडा कर्म बांधवानो स्वभाव थयो ते वखते सन्नी पंचेंद्रिपणु पामीने पुर्वोपार्जित आठ कर्म छे, तेमाथी एक आउखाकर्म वर्जिने बाकीना सात कर्मने एक पलोपमनो असंख्यातमो भाग्य-हीन एटले एक कोडाकोडी सागरोपमनी स्थितिए करे छे तेनु नाम यथाप्रवृति करण कहेवाय छे अने ते वखते पुर्वजन्मोना उपार्जित अशुभ कर्मना जोगथी अत्यंत रागद्वेपना परिणामरुप कठण छुटी न शके तथा तुटी न शके अने परथम कोइपण काळ्मा जीवे तोडी नहोती एवी ग्रंथी एटले गांठ छे, ते गांठना मुळ्सुधी यथाप्रवृतिकरणथी अनंत कर्मोना दळ्ने क्षयकरीने अनंता अभव जीवो पण पो होची शके छे, वळी ते ग्रंथीना देशमा पहोंचवाथी भव तथा अभव जीव सख्या तोकाळ अथवा असख्यातो काळ रहे छे, तेमां जे अभव जीव छे ते तिर्थकरना अतिशय विगेरे देखीने तथा चक्रवर्ती आदे राजाओए करेली तिर्थकरनी सेवा वि नय आदिक बहु मान भक्ति देखीने देवलोकादिकनां सुख लेवानी इच्छाए दीक्षा ले छे ने ते अभवीद्रव्य साधु थइने पोतानी प्रतिष्टानी अभिलाशथी भाव साधु ओनी रीते एवी सख्त आकरी क्रियाथी शरीर प्रस्य एटले निर्बळ करीने अनंता द्रव्यलींग पणामा काळ करीने नवमा ग्रैवेक वीमानसुधी तेनी गति थाय छे वळी ते अभव द्रव्यलींगी केटलाएक सुत्रपाठ मात्र नवपुर्व सुधी भणे छे वळी केटलाएक देसेंउणा दशपुर्वसुधी भणे छे हवे आ शब्दना प्रसंगमा समजवानु के देसेंउणां दश पुर्वना अभ्यास करनारने मिथ्यात्वद्रष्टिपणानी सत्ता जणाय छे, माटे तेटलो अभ्यास करनार कोइपण जण मिथ्यात्वोदयथी सुत्रसुत्रथी विपरीत परुपणा करे-तो तेमां कांइ नवाइ जेवु गणाय नहीं अने पुरा दसपुर्वना अभ्यासवाळा जीवने तो अवश्य सम्यक्त्व प्राप्त थाय छे, न तेथी मोटा पुर्व भणनारने सम्यक्तनी भजना छे, वळी कल्पभाष्यमां पण पुर्वाचार्योए कथन करेलु छे, " चउदश दश

अभिन्नेनियमासम्मतुससेएभयणा " भावार्थ पुरा चउद तथा पुरा दश पुर्व भणनारने नियमा सम्यक्तनो लाभ थाय छे इये ए यथामवृतिकरणने अते अनत कर्मना ग्लक्षय थवाथी अनत वि्र्यना पसा(थी अपुर्व करण करे एटले सातकर्मोनी कोडाकोडी सागरोपमनी स्थीति रही हती तेमायी अतर मुहुर्त भोगवी हिन करीने ते स्थानके पुर्वोकत ग्रथी मेद पुर्वक अनिवृतिकरणमा प्रवेश करे छे एटले जे निवड राग द्वेपनी गाठ हती ते भेदाणी त्या यथा तप कर्मोनु क्षय करीने पुर्वो पार्जीत पन्छात रहेला मिथ्यात्व दळना त्रण पुज्य कर छे ते त्रण पुज्यना नाम शुद्द, मिश्र ने अशुद्ध ए त्रण पुज्य कर्या बाद निवृतिकरणनी सामर्थाइपणाथी कइक भव जीवो प्रथमथीज क्षायोप श्मीक सम्यकतद्रष्टि थाय छे ने केटलाएक औप श्मीक सम्यकत द्रष्टि थाय छे ए सम्यकतनु विशेषण बीजा सविस्तर सुत्र या ग्रथोथी विवेकी बुद्धिमान पुरुषोए जोइने माहतगार थवु ए त्रण करण जाणवा तेमा अभव पहेला यथा प्रवृतिकरण सुधी रइ छे ने भव जीवो त्रण करण करीने सम्यकत दशा पामे छे

सम्यक्तप्रकार नीचे मुजब

गाथा—एगविहदुविहतिविह, चउहापचविहदसवि
हसम्भहोइजिणणायगेहिंइइ भणियमणतनाणिहिं

भावार्थ—श्रीवितराग देवना शुद्ध उपदेशमा एम कहु छे के जीव, अजीव, विगेरमा साची श्रधा आणवी ते समकितनु मुख्य लक्षण छे ए एकविध १ हवे द्रव्य सम्यक्तने भाव सम्यक्त ए द्वीविध २ तेमा विशुद्धि विगुप करीने मिथ्यात्व पुग्गळोने शुद्ध करवा तेनु नाम द्रव्य सम्यक्त छे अने ते द्रव्य सम्यक्तनी सहायथी उत्पन्न थइ जीनोगत तत्वोपर रचिरुप परिणाम तेनु नाम भाव सम्यक्त छे वळी निश्चयनय अने व्यवहार नयथी पण द्वीविध थाय छे तेमा ज्ञान, दर्शन, चारित्र, रुप आत्माना परिणाम अथवा ज्ञानादिक परीणती थकी जुदो आत्मा छे एम जाणे तेनु नाम निश्चय सम्यक्त छ तेज मोक्षनु मुळ कारण छे तेमा देव ते अरीहत छ अन गुरु शुद्ध धर्मापदेशक छे तेज मोक्ष मार्गना देखाडनार छ अन केवळ ज्ञानी महाराजना प्रकाश करेला त्यामुन तेज सत्य धर्म छे ए त्रण सम्यक्त तथा सातनय, चार प्रमाण, चारनीक्षेपा, आन्गुणोथी श्रधान सिद्ध करी ते

समकितनु विवेचन

आ अनादि अनत ससारमा अनादिकाळथी काइएक मिथ्यात्वद्रष्टि जीव मिथ्यात्वनी प्रबळताना उदयथी अनत पुद्गल परावर्तन वारवार जन्म मरण करीने भ्रमण करे छे एम करता करतां काळातर घणा अशुभ कर्मना दळ घटीजवाथी हळवापणु थइ जाय छे, द्रष्टात जेम पथ्थरवाळी जमीन नदीनो प्रवाह चाले छे तेमा केटलाएक पथ्थर पाणीनां मोजाथी सामसामे आपथी घसाइने सरीखा वाटला एटले गोळाकार थइ जाय छे, तेवीज रीते जीवपण परिणामे विशेषरुप यथाप्रवतिकरणजोग थइने अनता कर्मना दळने क्षयकर्या अने थोडा कर्म बाकीनो स्वभाव थयो ते वखते सज्ञी पचेंद्रिपणु पामीने पुर्वोपार्जित आठ कर्म छे, तेमाथी एक आउखाकर्म वर्जिने बाकीना सात कर्मने एक पलोपमनो असंख्यातमो भागहीन एटले एक कोडाकोडी सागरोपमनी स्थितिए करे छे तेनु नाम यथाप्रवतिकरण कहेवाय छे अने ते वखते पुर्वजन्मोना उपार्जित अशुभ कर्मना जोगथी अत्यंत रागद्वेषना परिणामरुप कठण छुटी न शके तथा तुटी न शके अने परथम कोइपण काळमा जीवे तोडी नहोती एवी ग्रंथी एटले गांठ छे, ते गाठना मुळसुधी यथाप्रवतिकरणथी अनत कर्मोना दळने क्षयकरीने अनता अभव जीवो पण पोहोची शके छे, वळी ते ग्रंथीना देशमा पहोंचवाथी भव तथा अभव जीव संख्यातोकाळ अथवा असख्यातो काळ रहे छे, तेमां जे अभव जीव छे ते तिर्थंकरना अतिशय विगेरे देखीने तथा चक्रवर्ती आदे राजाओए करेली तिर्थंकरनी सेवा विनय आदिक बहु मान भक्ति देखीने देवलोकादिकना सुख लेवानी इच्छाए दीक्षा ले छे ने ते अभवीद्रव्य साधु थइने पोतानी प्रतिष्टानी अभिलाशथी भाव साधुओनी रीते एवी सख्त आकरी क्रियाथी शरीर कृस्य एटले निर्बळ करीने जैनना द्रव्यलींग पणामां काळ करीने नवमा ग्रेवेक वैमान सुधी तेनी गति थाय छे वळी ते अभव द्रव्यलींगी केटलाएक सुत्रपाठ मात्र नवपुर्व सुधी भणे छे वळी केटलाएक देशेउणां दशपुर्वसुधी भणे छे हवे आ धर्मना प्रसंगमां समजवानु के देशेउणां दश पुर्वना अभ्यास करनारने मिथ्यात्वद्रष्टिपणानी संज्ञा जणाय छे, माटे तेटलो अभ्यास करनार कोइपण जण मिथ्यात्वोदयथी मुळसुत्रथी विपरीत परुपणा करेतो तेमा काइ नवाइ जेवु गणाय नहीं अने पुरा दसपुर्वना अभ्यासवाळा जीवने तो अवश्य सम्यक्त प्राप्त थाय छे, ने तेथी ओछा पुर्व भणनारने सम्यक्तनी भजना छे, वळी कल्पभाष्यमां पण पुर्वाचार्योए कथन करलु छ, " चउदसद सम

दीरणने उपसम करवाथी जे गुण उत्पन्न थाय तेने क्षायोपस्मीक सम्यक्त कहीए, ए त्रिविध थया

हवे चार प्रकार कहछे, औ पस्मीक, क्षायक, क्षायोपस्मीक ने सास्वादन एम चतुर्विध सम्यक्त छे, हवे सास्वादन एटले पुर्वोक्त उपसम सम्यक्तथी पडिवाइ थवाना अतमा तेना अशनो जे अनुभव थायछे तेनु नाम सास्वादन सम्यक्त कहेवाय छे ए चारमे एक वेदक सम्यक्त मेळवता पचविध सम्यक्त कहवाय छे, तेमा वेदक सम्यक्तनु लक्षण ए छे के जे जीव क्षपकश्रेणी पामीने अनुतानवधीनी चोकडी तथा मिथ्यात्व अने मिश्र ए बे पुज्यनो क्षय कर्यापछी क्षायोपस्मीकरुप शुद्ध पुज्य क्षीण थतो जाय ने ते क्षय थता पन्छात अतीम पुद्गळने क्षय करवानी उद्यतके अतीम पुद्गळोनु जाणपणु ते वेदक सम्यक्त कहवायछे ए पचविध सम्यक्त निसर्ग ने अधिगमथी थाय छे माटे ते कारणथी दसविध थया ए सम्यक्तोनी प्राप्ति शुद्ध चैतन्यदशा प्रगट थवाना समयमा छे

हवे एवा आत्मगुणरु सम्यक्तनी पुष्टिनी खातर पन्नवणाजी सुत्रमा कयु छे के " दसविहे सोएसे " एटले पुर्वोक्त सम्यक्तोनी दस प्रकारे रुचि उपजे छे ते दस रुचिनु विवेचन नीचे मुजव

पोतानान स्वभावथी जीनोग्त वचन उपर रुचि उपजे ते पहली निसर्गरुचि १ गुरुना उपदेशथी जीन वचन उपर रुचि उपजे ते बीजी उपदेशरुचि २ सर्वज्ञ वचनरुप आज्ञामा रुचि उपजे छे त्रीजी आज्ञारुचि ३ सुत्रने अनुसार रुचि उपजे ते चोथी सुत्ररुचि ४ जीनोगत एक वस्तु जाणवाथी अनेक वस्तुमा रुचि उपजे ते पाचमी बीजरुचि ५ विशेष जाणवाथी रुचि उपजे ते छट्टी अभिगमरुचि ६ सकळ द्वादशागीनी नय जाणवाथी रुचि उपजे ते सातमी विस्तार रुचि ७ सजमादिक शुद्ध अनुष्ठान करवामा रुचि उपजे ते आठमी क्रियारुचि ८ घणा ज्ञाननु जाणपणु नहता थोडा जाणपणाथी रुचि उपजे ते नवमी सक्षेपरुचि ९ पाच आस्तिकाय धर्ममा तथा श्रुतधर्मनु जाणपणु करवामा रुचि उपजे ते दसमी धर्मरुचि १० ए दस रुचिनो सविस्तर बोध पन्नवणा सुत्रथी समजवु वळी ते पुर्वोक्त सम्यक्तोनो निश्चय करवामाटे सडसठ भेद पण कया छे, तेमा सम्यक्तना चार श्रधान तथा सम्यक्तना त्रणलींग तथा दस विनय तथा त्रण शुद्धी तथा पाच दुषण तथा आठ प्रभावक तथा पाच भुषण तथा पाच लक्षण तथा छ जत्ना तथा द्रव्यथी छ आगार तथा छ भावना तथा छ स्थानक छे ए सडसठ भेदथी सम्यक्त निर्मळ थाय छे, ए

निश्चय सम्यकतनु कारण व्यवहार सम्यक्त छे तेना नाम कारक, रोचक ने दीपक ए त्रण प्रकार थया तेमा कारक एटले आपणा जीवने घणा उत्साहथी धर्मानुष्टानमा प्रवर्त्ती करावे ए सम्यक्त विशेषे करीने पच महाव्रतधारी मुनीजनोनेज होय छे हवे रोचक सम्यक्त एटले केवळ अनुष्टान उपर रुचि करावे ए विशेषकरीने अव्रति समद्रष्टि जीवनेज होय छे हवे दीपक सम्यक्तना लक्षण कहे छे ए कोइ आपमिथ्यात्वद्रष्टि अभव्य अथवा कोइ दुरभव्य अगार मर्दकनी रीते रहे अने ते पोताविना बीजा जीवोने धर्म कथा कहीने वितराग भाषित बोधथी जीवा जीवादिक पदार्थो कही बताय पण पोते श्रधे नहीं, आ सम्यकतना प्रसगमा कोइ सशययुक्त थइ प्रश्न करेजे अहो बोधक ! ! जो ते सभव्य पोते मिथ्यात्वद्रष्टि छे तो तेने सम्यकत केम कहेवाय ? हवे बोधक कहे छे के अहो सुज्ञ ! निरसंसयपणे श्रवण कर के ए अभव्य मिथ्यात्वद्रष्टिने वाचकज्ञाननी वृद्धिथी भाषावर्गणा रुप धर्माधर्म प्रकाश करवानुं परिणाम विशेष करीने छे अने तेनो उपदेश श्रोता जनोने सम्यकत पामवानु कारण छे ए हेतु कारणथी कार्यनो उपचार करीने ते मिथ्यात्वीने धर्मोपदेशक थी बोलवा रुप सम्यकित कहेवाय छे ते नाम पाम्यो परतु निर्गुण छे ए त्रिविध थया, वळी सम्यकतना त्रण प्रकार छे, ते औपश्मीय, क्षायक, क्षायोपश्मीक ए त्रण, तेमां औपश्मीक सम्यकतनु लक्षण कहे छे जे उदयमे आवेला मिथ्यात्वनो अनुभव करीने क्षीण एटले क्षय करे अने सत्तामा रहेला अनुदीरण एटले उदयमे न आवे ते मिथ्यात्व दळने शुभ परिणामनी विशेषताए विशुद्ध करीने उपसम करवाथी पे गुण उत्पन्न थाय एने औपश्मीक सम्यकत कहीए ए सम्यकत पुर्वोकत ग्रथी भेद कर्चाने तथा उपसम श्रेणी करनारने होय छे

हवे क्षायक सम्यकतनु लक्षण कहे छे अनुतान बंधी क्रोध, मान, माया, लोम ने क्षय करीने त्यारबाद मिथ्यात्व मिश्रसम्यकत पुज्यरुप तथा त्रण प्रकारना दर्शन मोहनीय कर्मनुं सर्वथा क्षय थइ जवाथी जेगुण पेदा थाय तेने क्षायक सम्यकत कहीए ए सम्यकत क्षपकश्रेणी चढनार जीवने होय छे

हवे क्षायोपस्मीक सम्यकतनुं लक्षण कहे छे, उन्यमे आपला होय मिथ्यात्व तेने मिथ्यात्व विपाकने उदयकरीने भोगववाथी क्षीण थया परतु पे शेष सत्तामां छे पण उदयमे आव्या नथी ते उपशात थया, अर्थात मिथ्यात्वन मिश्र पुज्यने आश्रयण करीने उदयमे आवता राकया अने शुद्ध पुज्यने आश्रयणे करीन मिथ्यात्व स्वभावने दुर कर्या, ए प्रकारथी उदीरण मिथ्यात्वन क्षय करवाथी अने अनु-

समकित सार भाग बीजो

अनुक्रमणिका

समकितनो विस्तार करता पार आवे तेम नथी पण विवेकी धर्मात्माओने जाणवानु के एम जीनआज्ञा प्रमाणे सिद्धांतबोधनु श्रवण करता शुद्ध सम्यक्त ज्ञानचारित्र ए रत्नत्रयनो निश्चार्य थशे ने कर्म बंधनथी पोतानु भिन्नपणु मालम पडशे अने ते समकितनि पुष्टिना कारणो अरिहंतादिक श्रमण निग्रंथ या देशव्रर्ति ने कह्या छे ते दसमा प्रश्नोत्तरथि सारांस समजी स्वपरआत्माना हित्यवछक थवु.

समकितसार.

१ श्री दया धर्म मसर्यो भस्म ग्रह उतर्यो तेनो विस्तार

केटलाएक ढींस्याधरमी कहेछे जे तुमेतो हमणा थयाछो तमने थयां भणसें वरस थयां छे एहवो कहे छे तेहनो उत्तर कहीए छीए.

जरयणिंचण समणे भगवं माहावीरे जाव सव्व दुख प्पहीणे तरंयणींचण खुदाए भासरासी नाम महग्गहे दोवाससहस्सठिइ एइं समणस्स भगवउ माहावीरस्स जम्मण नखत्ते सकते तप्पभइचण समणाण निग्गथाण निग्गथीणय नो उदीए२ पुया सक्कारे पवत्तइ जयाणं से खुदाए जाव जम्मण नखत्ताउ विइक्कत्ताउ भविस्सइ तयाण समाणाण निग्गथाणनिग्गथीणय उदीए२ पुया सक्कारे भविस्सइ.

अर्थ ज. जेणी रात्री. स श्रमण भ भगवत. मा. श्रीमहावीर. जा, जावत स सर्व. दु दुखनो प्प अत कीधो. तं तेणी रात्रीए. खु क्षुद्र स्वभाव छे भ. भस्म रासी. न. नामे. म. महाग्रह दो. बेहजार वरसनी स्थीतीए स श्रमण भ भगवंत. मा श्रीमहावीरने. ज. जन्म, न, नक्षेत्रे स. सक्रम्यो आव्यो त ते दीवसथी स श्रमण. नी निग्रंथ. नि निग्रंथीने नो उ उदय पु पुजा स. सतकारे. प नहीं प्रवर्तें ज जीवारे. से ते खु क्षुद्र जा जावत ज जन्म न नक्षत्र थकी वी. अतीक्रमवो भ थाशे उतरशे त. तीवारे. स श्रमण. नि. निग्रंथ. नि. निग्रंथीने उ उदय पु. पुजा स. सतकार. भ. हुस्ये

ए कल्पसुत्रमांही ढींस्याधरमी माने छे ते मध्ये पाठ कह्यो छे जे वेळा श्रमण भगवंत श्रीमहावीरस्वामी मुक्त गया ते वेळाए भस्मग्रह त्रीसमो बेहजार वरसनी स्थीतीनो भगवंतने जन्म नक्षत्रे बेठो तेणे करी बे हजार वरस लगे जीनमारगनीं साधु साधवीनी उदय १ पुजा सतकार न थयो ते बेहजार वरस पुरां थीया केडे श्री जीनमारगनी साधुनी साधवीनी पुजा सतकार थीयो, हवे ते बेहजार वरस क्यारे पुरां

॥ अथ श्री शांतिजीन स्तवन ॥

सुखकारी रे प्रभु शांतिजी सोलमा जीनराय, समर्या नव नीध थाय; प्रभु जीना नामथी पातिक दुर पलाय ॥ १ ॥ विश्वसेन कुल दीनमणी, अचीरा प्रभु जीरी गाय; कचनवरणी छे काय, धनुष चालीसरी देखे आये छे दाय ॥ २ ॥ हथीणापुरीनो राजीयो, खट खंड केरो र इस; जीती राग ने रीस, सजम सुधो आदर्यो; पाल्यो विसवा र विस ॥ ३ ॥ घनघाति कर्म क्षय करी, हुवा केवल नाण; लोकालोकरा जाण थया, श्रीमोवन धणी, आगम वचन प्रमाण ॥ ४ ॥ देव अनेक देख्या घणा, नहीं आवे तुम तोल; काकरो केम पामे मुल, चिंतामणी आगले; अतर खोलीने गोल ॥ ५ ॥ तुमसु बाधी प्रीतडी, जेम बपीओ रे मेह; बाधे अधिको स्नेह, विसार्या न वीसरो; प्रभु मती देजो रे छेह ॥ ६ ॥ अतरजामी वहाला प्रभु, आतमना रे आधार; शु कहु वारो रे वार, पडयो भवसिंधुमा, तारो तारणहार ॥ ७ ॥ सरणो लीघो र साधुनो, तो सरसे मुझ काज; वाधे अधिकी लाज, प्रभुना प्रतापसु; लहीए अवीचल राज ॥ ८ ॥ शीष्यना शीष्य देवजी स्वामीना, पभणे ऋषी कर्मचंद; प्रभुजीने नामे आनद, निरतर माहरे; समर्या शांति जीणद ॥ ९ ॥ सवत ओगणीस एकवीसमा, चैत्र मास उदार; चद्र सातम शनीवार, गाया गुण प्रभु तणा; श्री सुजनगर मोझार ॥ १० ॥

ए संघपटानी त्रीजी काव्य कही हवे तेनो अर्थ करे छे इह कळीकाळ पांचमो आरो व्याप्त हवो जे सर्पना मुखना आंतरा तेहना मुखमांही रहेवुं ते जीवने कीस्यो सुख जाणवो रिपति पांचमा काळना मानवीने मीती तुच्छ हुस्ये जे भणी तत्व देव गुरुने धर्म्म दयादीक शुद्ध पथ ते धर्ममार्ग छोपासे गत थाशे, मीती नीती गत थाशे, नवनवा कुमते पथ प्रगट थाशे छकायजीव हणीने धर्म्म परुपसे पहवाकु पंथना उदय २ हुसे मोक्षमार्ग दयाधर्म्म छोपाशे. ॥ ३ ॥

॥ सगधरा ॥ प्रोशर्प्पे भस्मरासी' ग्रह सरवदसमाश्चर्य समाज्यपुष्पत् ॥ मिथ्यात्वध्वांत रुद्देः जगतिविरलतायातिजैनेंद्रमार्गे ॥ संक्लीष्ट द्रष्टि मुढ. प्रखल जडज नाम्ना यरक्ते जिनोक्ति ॥ प्रत्यथीसाधुवेषे. विषयभिरभितः सोयपार्थित्यपंथा' ॥ ४ ॥

ए सघपटानी चोथी काव्य कही हवे तेनो अर्थ करे छे. मो. काळकुट समान भस्मरासी ग्रह २९ मो दीपस्ये तथा दसमा अछेरातणो महातम जे मोटो आश्चर्य ते अनंती चोवीसीये प्रगट थयुं जे मीथ्यात्वीना मार्ग थोक उदया अहो आश्चर्य जे कुमार्ग हींस्याधरमीनुं राज सुरमत्र धारीनी दीपती हवी नवपधाना प्रबळ हवा जग-गुरु करी नवांगे करी पुजाय इम लक्ष्मीना सचय थाये कुसीळीयादर्सण ते जीनमार्गी कहावे शुद्ध दयापारग ते अरप पतंगवत सकळीष्टघीष्ट मुंढ हींस्यापर दयाधर्म्मना नींदक अज्ञानी कुसीळीआ घणु खळ दुर्जन जडलोक कहे ए दरसणाकि दगेभीन आम्नाय छे कुसीर्थे साधु वेष धारी छे पीण वीखयकरी नारीना संगना करणहार सोहया समार्यो चदनधुप सुगंधे करी अंचित तेथकी मुक्त पंथ वांछेछे पीण अ पितु तेहने न हेइ ॥ ४ ॥

॥ सार्दुल ॥ किंदिग्मोहमिताकिमधवधिरा किंयोगचुर्णकृता ॥ किंदैवोपहताकिमंगठगिताकिंवाग्रहावेशिता ॥ कस्वामूभिपदं-श्रुतस्पयदमीदृष्टेसदोपामपि ॥ यावृत्तिकुपथाजडानदधतेसूयंति-चेतकृते ॥ १७ ॥

ए सघपटानी सतरमी काव्य कही, हवे तेनो अर्थ करे छे कि. किंवा दीसी मुल्पाछो किंवा आंधळाछो, किंवा बहेराछो, किंवा योगतंत्रादीक धारी चुर्ण मुको धास खेद, माये धार्यांने छोक वस्य वर्तिया करो छो. किंवा देवे हण्याछो जे मंद-

थर्या तेनो वीचार—श्रीवर्धमानस्वमी मुक्ते गया तीवार पछी त्रण वरसने साडाआठ मास तो चोथोआरो हतो पछे पांचमाआराना चारसें सीतेर वरस छगे संवत् वीक्रम चाल्यो पछे वीक्रमादीते नवो संवत कर्यो तेहने पण संवत १८६९ वरस थीयां आ-जदीन छगे भगवंत मुक्त गयाने त्रेवीससेंहने ओगणचालीश वरस ते थीया तेमांहेथी बे हजार वरस तो संवत पंदरसें एकत्रीश थइ गीया तीणसमें श्रीसीद्धांत देखीने दया मारग मथतों तीहांथी दया मारग दीपतो थीओ, ए सुत्रनो न्याय जोतां थकां तो श्रीढुंढकगच्छः साधुनो मारग सत्य छे.

दोहरो.

जो गुरुगम सव पेढीयो ॥ तोही न राखे नाम ॥
पुत्र पछे पण जनमीओ ॥ तोही पीताने ठाम ॥ १ ॥

तथा मस्मग्रह वरतता थका कुमारपाळराजा. विमळशाह. वस्तपाळ. तेजपाळ इत्यादीक थीया तेणे घणा चैत्य कराव्या. पण जीनमारग दीपतो न कह्यो सांहमा मीथ्यात्व वधार्यो ते माटे हमणा थया कहसो दया धरमी मते तो पण सत्य छे, सीद्धांत तो अनतकाळना चालया आवे छे. ते अनुसारे ए मारग सत्य छे, जेम ओसवाळ वाणीआ पहीला तो मस आहारी क्षत्री हता पछे दयाधरमी महाजन थीया तो तेणे ए खोटुं कार्य कीधो के भलो कार्य कीधो ? तीम हींस्याधरमी मीथ्यात्व मत मुकी दयाधर्म आदर्यो, ते घणुं २ सारुं कर्युं छे ते वीचारी जोजो.

तेवारे हींस्याधरमी कहे तुमे कल्पसुत्र नथी मानता तोए भस्मग्रहनो भस्ताव कीम मान्यो ? ते उपर तुमने तमारा ग्रंथनी साख देखाववा माटे कह्यो छे. जेम श्रीमाहावीरे सोमळने तथा थावर्चा पुत्रे सुकदेवने कह्यो जे तुमारा ब्राह्मणना मतने मानो तेथी ते हवे तेहने तेहनाज मतनी साख देखाडी, तीम अमारे पण कल्पसुत्र मानवा न मानवानो तो इहां कथन नथी. ए तुमनेज साख देखाडी छे जे तुमारा मतना साख मध्ये पण एम कह्यो छे तथा संघपटाना करणहार तुमारे हद थया छे. जीनवल्लभ- खरतर तेणे पण सघपटा मध्ये भस्मग्रहक कह्यो छे. ते संघपटानी काव्य कसी छे.

॥ मालणीः ॥ इह किलि किल काल व्याल वक्रालराल ॥ स्थिति युखिगत तत्वे भीति नीति मचारे ॥ प्रसरद नवबोध प्रस्फुरत्का पयोध ॥ स्थिगिति सुगतिसर्गे· सम्प्रतिभाणवर्गेः ॥२॥

आक्रीमने मांछलनि गली नाखी छोडाने अंकुडे मांसनी पेसी वछगाडीने माछलाने पाणीमांथी काढीने मार्या तीम जती वेषे माछी समान मकरणरुप गलीनी दोरी, लोढाना अंकुडा ते आडंबर. मांस पेसी ते जीन मतिमानी पुजा देखाडीने जीम माछलां फादि पाडयां तीम श्रावकने खटमर्दन धर्मबांध पुजा करावीने चतुरगती संसारमां नाख्या नाम रुपी धरावी धुर्त विधाए करी कदर्थना मांडी छे ने जात्रा सेत्रुजा गीरनारादीक स्नात्र वीधी पुजादीक उपाय वीपे रातीजगो करी छक मांडया छे. आलोयणी युवतीने एकांते लेइने कुसीलकर्म्म सेवे छे एहवा सठ धुर्त विधाए करी थथे छे हो जैन वेषधारी हांहां एहवां कर्म्म कीम करोछो ते एणे रुपी वेषे जगत्र सर्व वंच्यो छे लोकमांही जगत्र गुरु धरावे छे ॥ २१ ॥

॥ श्रग्धरा ॥ सेपा हुंडावसप्पिण्यनु समयरुसभव्यभावा नुभावा ॥ त्रिशश्चो श्रग्महोयं खखनखमितिवर्षस्थितिर्भस्मरासी ॥ अत्यंचाश्चर्यमेत जिनमतहतयेत स्स मा दु खमाख्ये ॥ स्वेवंपुष्ठे पुष्टेन्दनुकिल मधुना दुष्ठभोंजनमार्ग्रे ॥ ३० ॥

ए संघपटानी श्रीश्रमी काव्य कही, हवे तेनो अर्थ कहे छे. सेपाए सुरीना मत चोरासी चाल्या ते हुंडासर्प्पणीने जोगे पांचमो आरो दुसम समय बीजो भस्मग्रह, त्रीजाने जोगे चोथुं असंजती पुजानुं अछेरु दसमाने जोगे पांचमुं वांकानेभट ए पांच जोगे करीने भव्य जीवना भाव हीणा पडया चेइए कहीरने पांच आश्रवमांही हींस्यामार्ग देखाडयो ते घणु भोगणत्रीशमो भस्मग्रह व्याप्यो श्रीमाहावीर देवने जन्म नखेत्रे बेठो तेणे करी उनमार्ग प्रगट चालयो छे शुद्धमार्ग सौधर्मसाखा इकाणी उपरांत्मार्ग चालया ए मोटा आश्चर्य दीसे छे जे श्रीजीनेंद्रनी वाणी केवल एक दयामय चाली आवेछे आचारंगप्रमुखे साख्य जे सब्वेजीवा सब्वेभूया सब्वेसत्ता नहंतब्वा इतीवचनात्. मार्गसुधो निरय चाल्यो आवे छे. अनत चोवीसीनी वाणी ते मार्ग हणाणो लोकने दुःखी कीधा जे खटमर्दन करीने ते दुष्ट पांचेंद्रीना पोषणे धर्म्म चलाव्यो अहो ! भाइ जीनमार्ग पामवां दोहीलो कीधो. जे लोकोत्तरमिथ्या त्वे विस्त्र भावयों यात्यइनी परे भमाडी मुक्या छे सुतमार्ग लोपाणो परूर्णनी रची मंडाणी ॥ ३० ॥

ए संघपटाने करणहारे पण पचमकाळ हुंडासर्पणी असंज्य पुजा नामे दसमो अछेरो मान्योछे, श्रीसमा भस्मग्रहनो वरतन पीण मान्यो तीम पासचंदसुरी

सुधी थकां शुद्रष्टी आचरी दीसे छे किंवा ठगारानी परे ठगा छो वापडा मुग्ध सरल कुगुरु कुदेषना वाह्या खटकायजीवने हणीने हींस्याए धर्म कहे छे. किंवा ग्रहवासी जीवा छे. एणे भेषधारीए ऋषीना वेष लइने पारार्धीनीपरे साधुवेष वेष मृगषव श्रावकने छेतरे छे, जे सुत्रवाणी ढांकीने कुपथ प्रकर्ण देखी कारण थापी भस्मग्रह पीडवलोकने भोळवे छे जे चैत्य पोसाळ करावी अधोमार्गे पाडे छे कीहांइ सुत्रमध्ये देहरां कराव्यां नथी कह्यां. ॥ १७ ॥

जिनग्रह जैनबींब जिनपुजन जिनयात्रा दिविधिकृत ॥ दान तपो व्रतादि गुरुभक्ति श्रुतपठनादि चादर्तं ॥ स्यादिह छ्मत कुगुरुकुग्रह कुबोध कुदेशनात ॥ स्फुट मनभिमतकारि वर भोजन मिवविषलवनि वेशत ॥ २० ॥

ए संघपटानो वीसमो काव्य कही, हवे तेनो अर्थ कहे छे जे दरसणीए जैनना देहेरां जीन बींबरुपी भराव्यां तेहनी पुजा खटमर्दन करी करावे छद्मस्थयनो कुव्ये करावी धर्म्म पोताने अर्थे पांचेंद्री पोखवानेकाजे उपाय गच्छ चोरासी नीपना पण ए सर्वे भस्मग्रह असंजतीनी पुजानुं अछेराने जोगे चाल्या छे जे ठामर स्वेतांबर वा द्रिगांबर या पोषना प्रासाद देहेरा नीपना छे. ते स्वेतांबर तीहांथी जोइ आवीने लोकने वीमतारीने ग्राम देसादीने उपराथ, मारवाड, गुजरात, प्रमुखे प्रासाद करावी खटमर्दन धर्म परुपी चालतो कीधो छे देहराना द्रव्य तथा गुरु नवांगे पुजावीने द्रव्य भंडारे भराव्या ए अवधी मार्ग कीधो जे दान तप, व्रतादी, गुरुभक्ति, स्तुति, भणवानी पुजा, पोथी, पुंजणा ए आदी देइ कुमति कुगुरु कुग्राह कुबोधी कुदेशना सत प्रकारे परुपी ग्रहीने परे रहे सोहया समार्या अगर चंदन चरच्या जीम प्रधान भोजन मध्ये विखलव खपा घाल्या जीम जीख कुगुरुना हेंद्र एहवा पुरी गुरु उपया केवळ नर्क गानी नव पांचहा भाणवा. ॥ २० ॥

॥ श्रग्धरा ॥ आकृष्ट मुग्ध मीना न्विडशापिशितव विंबमादर्श्यजैन ॥ तंन्नाम्ना रम्य रूपा नपवरकमठा न्सिष्टसिघ्योविभाव्य ॥ यात्रास्नात्राद्युपाये र्नमशितक निशाजागरादि स्थलेश्च ॥ श्रधालुर्नामजैनो स्थलितइव राठैर्वंच्यसोहाजिनोयं ॥ २१ ॥

ए संघपट्टानी एकवीसमी काव्य कही हवे तेनो अर्थ कहे छे आकृष्ट जीम

न निर्जरा होइ ॥ जायइकाय किलेशो ॥ बंधइ कम्मस्स आणाइ ॥ २ ॥

अर्थ असंजती केतां जेने व्रत पचखाण नथी तेने वांदवा नहीं तेमां संसार वेहेवारमां मात पीता मोटेरा सेनापति, शेठ, राजा, कुळदेव, तेने पगेलागवुं पडे तो ते ससार वेहेवार छे. ॥ १ ॥ पण जीन लींगी छे ने पास्या एटले भ्रष्ट थीया तेने वांदतो थको कीरती न पामे. तेम नीर्जरा पण न होई तो सु थाय के कलेस एटले दुख थाइ करमने बांधे ॥ २ ॥

चोपाइ

ए लुंको देखाडे लोकने ॥ लोक घणा समजाणा मने ॥
राणा तेने विचार्यो घणो ॥ छोड्यो संग मठपतितणो ॥ ९ ॥
पुछे मठपतिरे वाणीया ॥ कांइ करो डोळा प्राणीया ॥
कुळना गुरु कां वांदो नहीं ॥ अमे मणाव्या तमने सही ॥ १० ॥
प्रतीबोधीने श्रावक कर्या ॥ वडे तमारे अमने आदर्या ॥
आज तमे सु समजो धर्म ॥ तेनो अमने भांखो मर्म ॥ ११ ॥
बकलुं उत्तर लुंको कहे ॥ तुम दीठे अम मन नवी रहे ॥
तमे कहावो सद्गुरु साध ॥ घणा लगाडो छो अपराध ॥ १२ ॥
गुरु छत्रीस गुण परवर्या ॥ ते गुण तमे नवी अंगी कर्या ॥
तो गुरु जाणी केम वंदीए ॥ तव उत्तर दीधो लींगीए ॥ १३ ॥
गुण अवगुणनी वात मती करो ॥ वेस जोइ मन निश्चळ करो ॥
जीनभीए कह्यो वांदवो वेस ॥ गुण होवो महोवो लवलेश ॥ १४ ॥
वेश वांदता समकीत लहे ॥ गुण नहीं पचमआरे कहे ॥
एह वात लुंके सांभळी ॥ तेहने उत्तर आपे वळी ॥ १५ ॥
वेस तणोछे कुण वीसेस ॥ जो न करे सुधो उपदेश ॥

॥ गाथा ॥

वेसोवि अप्पमाणो ॥ असजय पएसूवद्द माणंस्स ॥ परतीती अवसेसं ॥ विप न मोरेई पजतो ॥ १ ॥

टवाने करणहारे पण हुंडासर्पिनी दसमो अछेरो मउमग्रह मान्योछे. ते भस्मग्रह उतरे श्रीदयामारग दीपतो थीयो. सवत पदरसेंएकत्रीसें श्रीगुजरात देशे अहीमदावाद नगरने वीशे ओशवाळवसी साहलंको वशे ते नाणावटनो व्यापार करे, एकदा एक जुवान आव्यो तेणे महुमदी एकना दोकडा छीधा. ते लंकेसाहे दीधा तेने तेहीज दोकडानी चीडीमार पासेथी चीडीयु वेचाती लीधी ने छवाने माटे घेर कई चाल्यो. एहवो व्यापार अनर्थनो मुळ जाणी ए वात प्रतक्ष देखी वैराग उपनो संवेगभाव आणी नाणाना व्यापारनो सम करी पोताने घेर आव्या पछी सीद्धांत लखवानो उपम आदर्यो.

चोपाई

संवत पंदर गत्रीसो गयो ॥ एक सुमेत मत सीहां थयो ॥
अहीमदाबाद नगर मोझार ॥ लकोसाह वसे सुविचार ॥ १ ॥
जे जे देखे रुषीआचार ॥ ते गायानो करे उधार ॥
ग्रंथ अरथ मेळे तेह घणो ॥ उपम मांडे लखवा तणो ॥ २ ॥
तेसे तेने मळ्यो लखमसी ॥ तेणे बीहु वात विचारी इसी ॥
सुत्रे बोल्यो जे आचार ॥ ते ए पासे नहीं लगार ॥ ३ ॥
भणे ग्रंथने राखे वेस ॥ थापे नीत कुडो उपदेस ॥
लोक प्रवाहे जाणे नहीं ॥ गुरु जागी वांदे छे सही ॥ ४ ॥
सुभेतो गुरु जे मोसीया ॥ साची जे पाळे रुषी क्रीया ॥
साधु तणो तो नाम नीर्ग्रंथ ॥ एतो देखीता सग्रंथ ॥ ५ ॥
साधु भांख्याछे निरवद्य । ऐतो बोलेछे सावद्य ॥
जोतीष निमीत प्रकाशे घणा ॥ भेद करे पाप कर्मतणा ॥ ६ ॥
नवकल्पी नवी करे विहार ॥ समासमणे बोहोरे आहार ॥
आधाकर्मि ते अवीचार ॥ पाप थकी नव टळे लीगार ॥ ७ ॥
लोक मोळवे लोभे पडया ॥ राग द्वेस अहंकारे चडया ॥
एहने वंदि लागे पाप ॥ एहवो सुमति करे जवाप ॥ ८ ॥

॥ यत ॥

असजय न वंदीजा ॥ मायर पीयरं गुरू सेणावइ पसथारो ॥ रायाणं देवयाणिय ॥ १ ॥ पासयत्तद माणस्य ॥ नैव किति

ढूंट मुंढा ॥ बोही पण दुलहा तेसिं ॥ १ ॥

अर्थः—जे ब्रह्मचर्यथी भ्रष्ट छे अने ब्रह्मचर्यवंतने पग लगाडे ते ढुंठा मुंगा थाइ ने तेहने धर्मनी माप्ती पीण भवांतरे दोहेली होइ.

चोपाई

भण्या गुण्याना गुण तस मांय ॥ छोध करे अलुवाणे पाप ॥
तो पण पासथादीक पंच ॥ सगत तेहनी वरजी रच ॥ २१ ॥
चंपकमाळ असुचीमां पडी ॥ ते उत्तमने शीर नवी चडी ॥
तीम पास्था करणी करे ॥ उत्तम तास न वदन करे ॥ २२ ॥
ब्राह्मण चोद वीद्यानो जाण ॥ चंडाळी संगवी रह्यो आण ॥
ते पामे नींदया अती घणी ॥ कुशील सगती एहवी गणी ॥ २३ ॥
एहवी रीत वीचारी घणी ॥ कुगुरु सगत माठी घणी ॥
सुधो धर्म अमे आचरुं ॥ कुगुरु कुदेव सगत परीहरुं ॥ २४ ॥
तुमेतो निर्गुण गुणे आदर्यो ॥ देव आपणे हाथे घड्या ॥
तेहनी भक्ति छकाया हणो ॥ ए उपदेश कह्यो कीणतणो ॥ २५ ॥
जीहां आरभनो ठाम न भजे ॥ तीहां समकीतनो गुण उपजे ॥
दयाधर्म भांख्यो वितराग ॥ अमे रह्या इण वचने लाग ॥ २६ ॥
आचारंग चोथे अध्येण ॥ गणधर तीर्थंकरनो केण ॥
परंपरा कहो सुधर्मतणा ॥ विघटे बोल तुमारे घणा ॥ २७ ॥

केटलाएक कहे छे जे सुधर्म स्वामीना अने केडापत तेनी परपरा अम पासे छे तेहने नीचे लख्या बोल पुछवा

बोल.

१. चेला वेचाया ल्योछो २. नाना छोकराने आचार भण्या वीना दीक्षा दी योछो ३ मुळगा नाम फेरवी नवा नाम आपो छो. ४ कान फडावोछो. ५. खमासमणे वोहेरोछो ६. घोडा रथ वेल डोलीए वेशोछो ७. ग्रहस्थने घेरे बेसी वोहेरोछो ८ घेरे जइने कल्पसुत्र वांचोछो ९. नीतमरये तेडीम घेरे वोहेरो छो १० अघोळ करोछो ११ ज्योतीष नीमत प्रजुंजोछो. १२ क छवाणी करी दीयोछो १३ मत्रजत्र झाडो ओखध करो छो १४ नगर मध्ये भावर्तां सामेला करावोछो. १५ छाइ मतिष्ठावोछो. १६ सात खेत्रे धन कढा

चोपाइ.

एम ढुंकाने कहे मातमा ॥ कांइ करो डोळो भावमा ॥
वेसतणोछे महीमा भलो ॥ साखी वेह उपर सांभळो ॥ १६ ॥

॥ गाथा, ॥

धम्म रखइ वेसो ॥ सकइ वेसेण दिखिऊ अह ॥ ऊम गोण पडंतो ॥ रखइ राय जणवऊव. ॥ १ ॥

अर्थ—वेसे करीने धर्म रहे ने वेसने देखीने माणस बीए ने वेस जो होये तो बीजा मारगमां पडे नहीं कोइएक राजाने द्रष्टांते जाणवुं

चोपाइ.

ढुंको कहे न मनाइ एम ॥ वेस एकलो तारे केम ॥
साधु गुणे वंदाए वेस ॥ अवर नथी जीननो उपदेस ॥१७॥

केवळ वेसने वंदनीक जाणे ते उपर द्रष्टांत सांभळो. जीम बखमांहे साकर बांधीने कोथळी उपर साकरनो नाम लख्यो, पछे तेमांथी साकर काढीने कडु भर्यो बंधण उपर साकरनो नाम छे ते बंधण छोडीने खाय तो स्वाद साकरनो आवे के कडुनो आवे ? तीम बंधन सरखो ते उपरलो वेस अने साकर सरखा ते साधुना गुण जाणवा बीना समम वेस ते पण बधन सरीखो छे बंधननो गुण एटले जे वस्तुने राखे तीम वेसनो गुण ए जे संममना गुणने राखे पीण गुण बीना वेस वंदनीक नहीं.

चोपाई

ढुंको कहे अमे परख्यो धर्म ॥ तुमे न जाणो तेहनो मर्म ॥
गुरु आचारी गुणवत देव ॥ अमे करीओ तेनी सेव ॥ १८ ॥
तुमे बळी जुओ मन विमास ॥ कीमही न रहीवो कुगुरु पास ॥
भलो सेववो बीखधर साप ॥ कुगुरु सेव्यानो बहु पाप ॥ १९ ॥
वळी जे हीणाचारी होय ॥ लोका पासे वंदावे सोय ॥
तेपण होवे ढुंढो पांगळो ॥ दुर्लभ बोधी इम सांभळो ॥ २० ॥

॥ गाथा ॥

जे ममचेर भठा ॥ पाय पाडंति बमयारीणं ॥ ते डुती

णुधम्म चारीणो ॥ २० ॥ तिविहेणवि पाणमाहणे ॥ आयहिए अणियाण सवुडे ॥ एव सिद्धा अणंतसो ॥ संपइ जे अणाग यावरे ॥ २१ ॥ एवं से ऊदाहु अणुत्तरनाणी ॥ अणुत्तरदसी अणुत्तर नाणदसणधरे अरहा नाय पुत्ते भगवं वेसालिए वियाहिए तिवेमि ॥ २२ ॥

अर्थ—भ. हुयाते भी. हे साधु चारीभीया पु पुर्वे जे जीन हुयाते. भा. आगमीए काळे हुस्ये जे भ वर्तमान काळे जेछे. सु. तीर्थंकर. ए पुर्वे कह्या ते. गु उपदेशने कहीता हवा ते सर्व जनि क रीखम देवना पुरुष्या. भ. धर्म्मने धा पवर्तावणहारा धाळणहारा ते गुण उपदेश करे छे. ति. भीवीधर पा पाणीने न हणे. भा आत्माना हेतुभो भा. नीयाणा रहीत स संवरी साधु. ए एणीरीते एहवा साधु. सी सीद्ध यया भ घणा अनंता स. वर्तमान रीहे छे. जे. जेछे भ. भागळे थासे भ. बीजा ते पण सीझशे ए. एम भण उदेशे से. ते जेम उ. कहीता हुवा. भ. मधान ज्ञानना धणी. भ मधान दर्शनना धणी. भ मधान. ना. ज्ञान दरसणना धरणहार भ इंद्रादीकना पुजनीक. ना. सीधारथ राजाना पुत्र. म ज्ञानवत, वे, मधान विस्तीर्ण ज्ञानना धणी. वि. कहीता हुवा ई इम हुं कहुं छऊ २२ एहवे आचारे मवर्ते से भीमहावीरना केडायत जाणवा १

---

२ आर्य खेत्रनी मर्यादा

केटलाएक ईस्या धरमी कहे छे. जे दक्षीण दीसे तथा उत्तर दीसे तारावंबोळ अस्तवबोळ नामे नगर छे तीहां राजा जैन मारगीछे लोक सर्वे जैनछे तीहां पण जैनना देहेरां छे नीश्चे पुजा ममुख होयछे इम पोतानो मत थापवा माटे सास्त्र देखाडे छे ते वात सुत्र वीरुद्ध करेछे ते कीमजे श्रीव्रुत्तिकल्प सुत्र मध्ये कह्यो छे जे.

कप्पई निग्गथाणं वा निग्गाथीणवा पुरथिमेणं जाव अगमगहाउ विसयाउ एतए दाहीणेणं जाव कोसंवीयाऊ विसयाउ एतए पच्चथिमेण जाव थुणाउ विस्याउ एतए ऊत्तरेण जाव कुणाला विस्याउ एतए एतावताव आयरिए खित्ते एतावताव

बोछो १७. पोथी पुजावोछो. १८ संघ पुजा करावोछो. १९. देहेरा प्रतिष्ठा करावो छो. २० पजुण पोथी आपी रात जगावोछो २१. पुस्तक पात्रा वेचो छो. २२ माल्ह सगटावोछो. २३. आधाकरमी पोसाळे रहोछो २४ मांडवी करावोछो २५ टीपणी करावी रुपाआ ल्योछो २६ गोतम पडघो करावोछो. २७. संसार तारण तेळो करावोछो. २८ चंदन बाळाना तप करावोछो २९. तपस्या करावी पैसा ल्यो छो. ३०. सोना रुपानी नीसरणी ल्योछो. ३१ कलश पडचे करावोछो. ३२. उजमणा होवरावोछो. ३३ पुज होवरावोछो. ३४ श्रावक पाचे संघको भपावी डुंगरे चढोछो ३५. माळा रोपण करावोछो. ३६ असोक वृक्ष भरावोछो ३७. अठोतरीस नाम करावोछो ३८ नवा फळ नवा धान प्रतिमाने होवरावोछो. ३९ श्रावकने माथे वासखेप घाळोछो. नाद मंडावोछो. ४१. पदीक चाक धांपोछो ४२ वंदणा देवरावोछो. ४३. लोकोने माथे ओघो फेरवोछो. ४४ गांठि प्रंथ राखोछो. ४५. मोरपींछना दंडासण राखोछो ४६ स्त्रीना संघट करोछो ४७. पगळ्ये नांथी पछेडी ओढोछो ४८ सुरमंत्र ल्योछो. ४९. कपडां धोवरावोछो ५० आंखेछनी ओळी करावो छो. ५१. जती मुवा केडे अड्डुवा करावोछो ५२ जती मुवा केडे धुम करावोछो

एवा भणाचारीना काम करीने वळी भगवंतनी परंपरा परुपोछो ए वर्णुं भ शुक्त करोछो साहर्ळके एहवार बोल पुछ्या तीवारे कींगीया जबाब देवा समर्थ थीया. पछे साहमा क्रोधवंत थीया एहवो जाणी साहर्ळके ते द्रव्यलींगी मीथ्यात्रष्टी ओनी संगत मुकी वेगळा रही पोते सीद्धांत वाणी घणा जीव मवे समकीत पमाडता हुवा. तेहवे समे पाटण मध्ये साह भीमजी तथा सुरत मध्ये साह रुपजीद आदीदे इत्यादी वैरागी पुरुष हता तेणे अनेक छ्तोगमे धननी रासी मुकी सीद्धांत मार्ग प्र माणे संजम आदर्या ठामर सीद्धांत साखे धर्म चरचा करी धर्म उपदेश देइ दया मार्ग दीपाव्यो

हींस्या धरमी कहे छे जे तुमे साधु कहेनी परंपरा मध्ये छो. केहेना केडामांछो ते उत्तर सुगडांग सुत्रे पेहेले सुतखंधे बीजे अध्यने श्रीजे. उदेशे गाथा २०—२१ —२२ मां कयुं छे जे

अभवि सूपुरावि भिख्खवो ॥ आएसावि
भवंति सुव्वया ॥ एआइ गुणाइं आहुंते ॥ काशवस्स अ-

नार्यक्षेत्र ए होवेतो सुत्र ड्हां कीहांयकी होवे ए छेले तारा तंबोळ प्रमुख आर्य क्षेत्र कहे छे ते सुत्र वीरुद्ध कहे छे जो तारा तंबोळ आर्यक्षेत्र होवे तो नदी पण तीहांनीज गणत पण ते तो नथी कह्यो वळी ववहार सुत्रनी चुल्का मध्ये चंद्रगुप्त राजाना सोळ स्वप्ना कह्या तेहना अर्थ भद्रबाहुस्वामीए कह्या ते मध्ये पण इम कह्या जे पेहेले श्वप्ने कल्पवृक्षनी डाळ भांगी दीठी. तेहनो फळ एजे आजपछी राजा संजम नहीं आदरे वळी सातमे स्वप्ने कह्यो जे उकरडा उपर कमळ उग्यो दीठो तेहनो फळजे.

चाउण वणाण मळे वइस हथे धम्म भविसई

जे चारवर्णमां प्राणीआने घरे वरम रहेसे ए छेले तारा तंबोळ ते आर्यक्षेत्र पण नहीं अने राजा जीनमारगी पण नहीं ए वात सुत्र प्रमाणे जाणवी अने कदा चीत कोइ देशमां वोषमती जैनी कहाय छे ते तो मंस आहारीजछे मंसनोज आ-हार करेछे जीवने समये समये नवो उपजवो माने छे एहनी श्रद्धा अने क्रीया बेहु वीपरीत छे ते माटे एहीज आर्य देश अने एहीज सीद्धांत प्रमाणे छे

जथ जथ जिण कलाण तथ तथ देसे धम्म हाणी भविस्सई

ए वचन पण चुलीकानो छे तथा हींडपा धरमीना तीर्थ पाहाड आबु गीरनार शेत्रंजो गोडीचो समेतसीखर तथा शीवमतना तीर्थ गगा, जमना, सरश्वति, चंद्रभागा, ज्वाळामुखी हेमाळो बदरीकेदार, जगन्नाथ द्वारीका, गीरनार, हींगळाज इत्यादीक तीर्थ ते पण हींदुमतना छे पण ते आगळ कोइ नथी कहेता जे अमारा तीर्थ पांच सात हजार गाउ उपरेछे. तो तमारा तीर्थ अनार्यक्षेत्र मध्ये कीहांथी होस्ये जो कोइ तीरथ ते देस माहीलो सुत्र मध्ये नाम कह्यो होवे तो ते देखाडो

---

२ प्रतिमानी स्थितिना अधीकार.

ढींस्याधरमी कहे छे जे सखेश्वरा पार्श्वनाथनी प्रतिमा आठमा चंद्रप्रभव जीनना वारानी छे एम कहेछे ते एकांत सुत्र वीरुद्ध कहेछे भगवती सतक आठमे उदेसे नवमे पाठ कह्यो छे जे

सेकिंतसमुययबंधे२ जण अगड तलाग नदी दह वावी पुख्करणी दीहियाण गुजालीयाण सराण सरपतियाणं बीलपंति

कप्पई नौ से कप्पई एतो बाहिं तेणपरं जथ २ नाण दंसण चरीताई ऊत्तसप्पंतिए१ ऊदेसे.

इम कह्यो जे पुर्वदीसे अगदेस मगध देस स्गे आर्यखेत्र ते हजु सुधी राजधानी चंपानी नीसानी पुर्व दीसे छे दक्षीणे कोसंबी नगरी ल्गे तेतो दक्षीणदीसे समुद्र नजीक छे आगे समुद्र जगती लगेछे, तीवारे नगरीनो स्यो कारण रह्यो ? पश्चिम दीसे थुभणा नगरी कही ते पण कच्छ देस ल्गे आर्यखेत्र छे आगे समुद्र जगती लगेछे. उत्तर दीसे कुणालादेश सावथी नगरी ते ठामे आज सालकोट नामे शहेर छे.पहील तो आर्यखेत्र घणो हतो साढा पचवीस आर्यदेशतो उत्तम पुरुषनी उतपति भुमीका माटे गण्योछे पण धर्ममार्ग तो विद्याधरनी श्रेणीमां पण हतो पछे कालप्रभावे पटधोर श्रीमाहावीरने वारे एटलाज आर्यखेत्रनी मरजादा बंधाणी छे ते मरजादाना खेत्र लगेज हवे च्यार तीर्थ वर्ते छे तथा केटलाएक नगरना नामठाम फरी गीयाछे ते लोकोत्तर थकी जाणीएछीए जीम पांडवीपुर ते पटणो देसारणपुर ते मंदसोर हथणापुर ते दल्ली सोरीपुर ते आग्रा भद्दीगाम ते बडनाण नकी ठाणांग सुत्रे पांचमें ठाणे बीजे उदेसे कह्यो छे जे.

नोकप्पई निग्गायाण वा निग्गंथीण वा इमाऊ अदीठाउ गणियाऊ वियंजियाऊ पच महाणवाउ महाणइउ अतोमासस्स दुखोतोवा तिखुतोवा उत्तरीत्तएवा सतरित्तएवा तंजहा ॥

अर्थ–नो नकल्पे नि साधु वा. अथवा नि. साध्वीने. ई ए आगल कही स्ये ग. गणी पांच संख्याए. वि प्रगट कीधी. पं. पांच. म. महार्णव घणा पाणी माटे. म मोटी नदीओ अं. ते महीनामांही दु बेवार. ति तिनवार. उ उतरवी कही. स. तरवी. तं ते कहेछे.

१ गंगा २ जमना. ३ सरजु ४ एरावती. ५ मही. जो आर्यखेत्र बीजा होवे तो तीहां साधुनो वीहार करे तो तीहांनीज नदी कीमन कही ? ए सुत्रमो मेल जोतां नदी आटलाज खेत्रनी पतावी गंगा जमना दील्ली आगरा पासे छे सरजु अयोध्या पासे छे ते पुर्व दीसे छे एरावती लाहोर पासे छे मही गुजरातमां छे ए लेखे पण जोतां आर्य खेत्र एटीज जाणवो तथा इहां आर्यखेत्र न होवे तो चार तीर्थ प्रण ए नहीं ने चार तीर्थ ए नहीं तो सीद्धांत पण नहीं मीथ्यात्वी लोक थने अ

अल्प आउखो बांधे १ प्राणतीपात (जीवनी हंसा) करतो थको २ मृखा (खोटुं) बोलतो थको. ३ श्रमण नीग्रथने अप्रासुकअण एखणीक (आधाकरमी) असणं (अन) पाणं (पाणी) खाइमं (सुखडी) साइम (मुखवास) देतो थको एहीज आलावे भगवती सुत्रमां सतक उदेसे कह्यो छे तो आधाकरमी आहार औषध उपाश्रय देतो लाभ कीहांथकी होस्ये ? वली भगवती सतक पांचमे उदेसे छठे कह्यो छे जे

अहाकम्मं अणवजोतिमणपहारेत्ता भवइ सेणतस्स ठाणस्य अणालोइय अपडीक्कते कालकरेति नथी तस्य आराहणा ॥

अर्थ—अ आधाकरमी तेह मते निर्दोश एहवो मनमांही श्यापणहार हुइ, से त. तेह स्थानकने, अ. आलोयावीना. अ. पडिक्रमाविना, का काळ मरण मतेकरे, न. नहीं तेहने जीन वचने बीखे आराधक॥

जे आधाकरमी आहारने निरदोश जाणीने भोगवे तेहने नथी आराधना इम कह्यो. वली भगवती सतक पेहेले उदेसे नवमे कह्यो जे श्रमणनिग्रंथ आधाकरमी आहार भोगवे ते सात करमनी गांठ गाढीबांधे लांबी थीती वधारे घणा प्रदेश वधारे तीव्र अनुभागकरे अनतो काळ ससार मध्य रुळे तो देणहारने पीण लाभ कीहांथी ? अल्प आऊखो बांधतो कह्यो. मांस भोगीने मांसनो दातार बेहु नरकगामी होवे तेहनी पेरे ए पण जाणवो ए आलावाना पाठ सुत्र थकी जोजो

---

५ मुहपति बांधे वायुका जिवनि रक्षा ते पाठ

हींस्याधरमी कहे छे जे मुहडे मुहपति दीजे ते पुस्तकने थुक न लागे तेहनी जतना माटे दीजे छे पण वायुकायना जीवमाटे देवी नथी कही. मुहपति दीधे वायुकायनी हींस्या टळती नथी एहवो कहे छे ते एकांत सुत्र विरुद्ध कहे छे भग वती सतक सोलमे उदेसे बीजे कयो छे जे.

गायमा जाहेण सक्केदेविंदे देवराया सुहुमकाय अणिजूहित्ताण भासभासई ताहेण सक्केदेविंदे देवराया सावज भास भासई

याण देवकुल सभा पव्वाय थुभ षाइयाणं फरीयाणं पागार हालग चरियदार गोपुर तोरणाण पासाय घर सरण लेण आवणाण सिंघाडगातय चउक चचर चउमुह महामापहइण छुहा चिषिल सिलेश समुचएण बंधे समुप्पजइ जहणेणं अंतोमुहुत्तं उक्कोसेणं सषेजकालं

अर्थ—हवे हुं ते समुचय बंध कहीए समुचय बंध ते आघाव सरोवर व पाणी सरोवर नदी द्रह. वाव पुस्पकरणी. दीर्घिका गुंजालीका सर. सरपंकती बी. बीलपंकित देवकुल सभा पर्वत. थुभ स्वाइ, फलीका. प्राकार गढकोट. अन्य क्रू. कांगरा गोपुर तोरण प्रासाद घर सरण लेण ए घर बीसेस हटश्रेणी सींघडाने आकारे. त्रीषरो चोवटो घणीगली. चतुरमुखराज. मार्ग आदीदेइ एहनो अर्थ पुर्वे लख्यो छे छोह. चुनो. चीलखो. कादी वजलेप बिसेसे उचकरी बंध उपजे बंध जोडे ते जघन्य तो अंतर मुहुरत रहे ने उतकृष्ट थकी सख्या तो काल रहे. एहवे क्रतम (करी) वस्तु सख्यातो काल रहे उपरांत न रहे. थकी भरथना कराव्या अष्टापदना देहरां माहावीरना वारा लगे असंख्यातो काल कीम रह्या ? गौतम स्वामीए ए चींब कीहांथी वांदया ? सखेश्वरानी प्रतिमा असंख्यातो काल कीम रही ? जो देव ममावे रही ए इम कहे तो पण जुदा लागे केमके देवता कोइ वस्तुनी स्थीति वधारवा समर्थ नथी पृथ्वीकायनी स्थिती बावीस हजार वरसनी छे ते उपरांत रहे नहीं तीवारे हींस्याधर्मि कहेछे जे सेत्रुंजो गीरनार, आबु, समेतसीखर चीतोड प्रमुखना पाहाड कालो वरघना आजसुधी कीम रह्या ? ते उतर ए पहाडो तो पृथ्वी थकी लाग्या रह्या छे पृथ्वीथकी आहार रस पुगल पोहोचे छे तेणे करी रह्या छे पण कटको काढी जुदो कीधो ते बावीस हजार वरस उपरांत रहे नहीं जीम मनुष्यना शरीर थकी लाग्या थका नख केश वधे पण कापीने जुदा कीधा पछे वधे नहीं ते रीते जाणजो ते माटे असंख्यता कालनां देहरां प्रतिमा कहे छे ते सुत्र विरुद्ध कहे छे

---

९ आधाकरमी लेवावाळाने फळ.

हींस्याधरमी कहेछे जे देवगुरु धर्मने काजे आधाकरमी आहार दीजे तेहनो लाभछे ते सुत्र विरुद्ध कहेछे श्री ठाणांगने त्रीजे ठाणे कह्युं छे जे त्रण प्रकारे जीव

सोमिलो जमे तव नियम संजम सझाय झाणावसगमादि- एसु जएणासेत्तंजता तप १२ नियम अनेक अभिग्रह संयम १७ सझाय ५ ध्यानधरमशुक्ल ॥

अर्थः—सोमीळे पुछ्यु तमारे हे भगवत जात्रा. इतिमस्न त्यारे भगवंत उत्तर देछे हे सोमीळ जे माहरे इहां तप असनादी बारे भेदे नीयम ते वीखय अभीग्रह विसेस सजम ते सत्तर भेदे सझाय स्वाध्याय वैया वृत्यादीमे अवश्ये रात्री दीव सने वीपे करवो इत्यादी रुप ते आवस्यक छए भेदे सामायकादीक जे जोग तेने वीखे जतना प्रवृत्ति ते जात्रा कहीए. एटली करणी करवी ए अमारे जात्रा इम कह्यो. जे जात्रा श्रीमाहावीरे सोमीळने कही जीम महावीर तीम रुखभदेव सर्व तीर्थंकरनु ज्ञान दरसन समकीत एक सरखुं छे. तीवारे रीखमदेवने पण एहीज जात्रा जाणवी पुरखे नवाणुंवार रुखभदेव सेत्रुजे आव्या कहेछे जात्रा करी ए अर्थ सुत्र विरुद्ध कहे छे. जो रुखभदेव ए भावे जात्रा माने छे तो भरथने देहरा करा व्यानो उपदेश कीम दीए ? जे कार्य पोते न करे ते कार्यनी आज्ञा अनेराने कीम दे ? ते वीचारीने जोजो.

१ वळी भगवती सतक वीसमे उदेसे आठमे कह्यो छे जे.

तिथ भते तिथकरे तिथ गोयमा अरहा ताव नियमं तिथं- करे तिथपुण चाउत्रणाइणे श्रमण सघे पनते तजहा समणा समणीउ सावय सावियाउ ॥

अर्थः—तिर्थ मस्छावयीज कहेछे तीर्थ चतुर विध विधे संघरुप कहीए ? अथवा तीर्थंकर ते तीर्थ कहीए ? इतिमस्न हवे भगवंत उत्तर कहेछे. हे गौतम अरीहंत जावत पहीला तीर्थंकर तीर्थ प्रवरतावणहार छे पण तीर्थ नहीं तो तीर्थ वळी च्यार वर्ण जीहां ते चातुरवर्ण कहीए तेह क्षमादी गुणे करी व्याप्त श्रमण सघ ते कहे छे श्रमण (साधु) श्रमणी (साधवी) श्रावक श्रावका

तीर्थंकर तो तीर्थना नाथ कहीए अने तीर्थ च्यार कहीए साधु साधवी श्रावक श्रावका तेज पण कोहांइ तीर्थ अने जात्रा पर्वतेर भमवो तथा सघ काढवो तेहना लाभ सिद्धांत मध्ये कह्या नथी।

अस्यार्थटीका यांजदासक्केंद सूक्ष्मकायं वस्त्र मांथावृत मुष-स्य भास मानस्यजीव सक्षणतो निविद्यो भाषा भवति ॥

अर्थ —हे गौतम जीवारे सक्केंद देव राजा, सु इत्यादीक वस्तु एम इप करे भनेरा कहे सु वस्त्र ते भवे. भणदीभा पटले मुखने वीषे इत्यादीक दीधा वीना भासा बोले. वीषारे सक्केंद्र देव राजा सुहु इस्त तथा वस्त्रादीक मुखद्वारे दीधा बोले. जीवारे सक्केंद्र हाथ वस्त्र तेणे करी मुख ढांकीने बोले वायुना जीवनी रक्षा करतो निरवद्य भासा बोलतो कहीए. दघाडे मुखे बोलेतो वायुकायना जीव हणतो बोले वीषारे सावद्य भासा बोलतो कहीए ए लेखे मुहपति देइ जतना यकी बोलतां वायुकायना जीवनी हींस्या टाळी ए सुत्र साख भाणवी भने नाक ढांकवो कीहांइ कह्यो नथी भने तुमे कहोछो के पुस्तकनी भासातना टाळवा माटे मुखपति देवी ते खोटो कहोछो केमके पुस्तक तो श्रीमाहावीर नीर्वाण यया पछी लीखाणा छे भने मुहपति तो श्री गौतमस्वामीने ठामर कहीछे तुगीभा नगरीना आलावा दीकमांही तथा उत्तराध्यन छवीसमे गाथा त्रेवीसमीना पेहेला बे पदमां कह्यो छे जे.

मुहपतिय पडीलेहित्ता पडीलेहिज गुछग ॥

अर्थ—मु पहिलुं. मोहपतिर्नु ५. पडी लेहीने ९. पछे पडी लेहे गु गुच्छाने ते विचारी जोजो

---

६ जात्रा तीरथ कह्या ते सुत्रसाखना आलावा

हींस्याधरमी कहे छे जे सेत्रुंजो. गीरनार आबु अष्टापद समेतसीखर इत्या-दीक पर्वतनी जात्रा करवी संघ काढवा तेहनो मोहोटो लाभ छे एम कहे छे. तेह नो उत्तर ए पर्वत उपर जे तीर्थंकर साधु सीध्या ते तो वंदनीक कह्या छे पण पर्वत तो वंदनीक नथी जीम कोइ व्यवहारीयो कोइ हाटे बेसी नाणावटो करे वी-वारे लोक वीवहारीयाने हाटे आवी थापण मुकी जाय पछे कालांतरे वीवहारीए ते हाट मुकी घणी फारफेर थीयो ते हाटतो तेहीमछे पण लोक वीवहारीयानो हाट जाणीने थापण कां न मुके ? तीम ए पर्वततो हाट समान छे वीवहारीया समान साधु सीध्या ते छे. हवे ते पाहाड तो सुना हाट समान रह्यां तीहां हुंडीनो सका रणहार कोइ नहीं ते माटे अवदनीक थीया तथा भगवती सतक अढारमे दसे दसमे सोमल ब्राह्मणने श्रीमाहावीर देवे तो ए जात्रा करवा कही छे ते ए के.

सोमिलो जंमे तव नियम संजम सझाय झाणावसगमादि-एसु जएणासेत्तंजता तप १२ नियम अनेक अभिग्रह संयम १७ सझाय ५ ध्यानधरमशुक्ल ॥

अर्थः—सोमीले पुछ्यु तमारे हे भगवत जात्रा. इतिमस्न त्यारे भगवंत उत्तर देछे हे सोमील जे माहरे इहां तप असनादी बारे भेदे नीयम ते बीखय अभीग्रह विसेस सजम ते सतर भेदे सझाय स्वाध्याय वैया वृत्यादीमे अवश्ये रात्री दीव सने बीपे करवो इत्यादी रुप ते आवस्यक छए भेदे सामायकादीक जे जोग तेने वीखे जतना प्रवृति ते जात्रा कहीए. एटली करणी करवी ए अमारे जात्रा इम कह्यो. जे जात्रा श्रीमाहावीरे सोभीलने कही जीम महावीर तीम रुखमदेव सर्व तीर्थंकरनुं ज्ञान दरसन समकीत एक सरखुं छे. तीवारे रीखमदेवने पण एहीज जात्रा जाणवी पुरवे नवाणुंवार रुखभदेव सेत्रुंजे आव्या कहेछे जात्रा करी ए अर्थ सुभ विरुद्ध कहे छे. जो रुखभदेव ए भावे जात्रा माने छे तो भरथने देहरा करा व्यानो उपदेस कीम दीए? जे कार्य पोते न करे ते कार्यनी आज्ञा अनेराने कीम दे? ते वीचारीने जोजो.

१ वली भगवती सतक वीसमे उदेसे आठमे कह्यो छे जे.

तिथ भते तिथकरे तिथ गोयमा अरहा ताव नियम तिथं-करे तिथपुण चाऊव्रणाइणे श्रमण सघे पनते तंजहा समणा समणीउ सावय सावियाउ ॥

अर्थः—तिर्थ प्रस्छावयीज कहेछे तीर्थ चतुर विध विधे संघरुप कहीए? अथवा तीर्थंकर ते तीर्थ कहीए? इतिमस्न हवे भगवंत उत्तर कहेछे. हे गौतम अरीहत जावत पहीला तीर्थंकर तीर्थ प्रवरतावणहार छे पण तीर्थ नहीं तो तीर्थ वली च्यार वर्ण जीहां ते चातुरवर्ण कहीए तेह क्षमादी गुणे करी व्याप्त श्रमण संघ ते कहे छे श्रमण (साधु) श्रमणी (साधवी) श्रावक श्रावका

तीर्थंकर तो तीर्थना नाथ कहीए अने तीर्थ च्यार कहीए साधु. साधवी श्रावक श्रावका तेज पण कीहांइ तीर्थ अने जात्रा पर्वतेर भमवो तथा सघ काढवो तेहना नाम सीद्धांत मध्ये कह्या नथी

---

७ सेत्रजो सास्वतो कहे छे तेना उत्तर.

हींस्याधरमी कहे छे जे सेत्रजो पर्वत सास्वतो छे ते वात सुत्र वीरुद्ध कहे छे ते केम जे भगवती सतक सातमे उद्देसे छठे कह्यो छे तथा जंबुद्विप पर्मती मध्ये कह्यो छे जे छठो आरो बेससे तीवारे भरतखेत्र मध्ये गंगा सींधु बे नदी अने वैरयाढ पर्वत रहेसे. सेस सर्व पर्वत वीछेद जासे ते पाठ इमज छे.

पव्वय गिरि डुगरु थल भठी माइय वैयड्ड गिरि वजे विरावेहेति ॥

अर्थः—प. क्रीडा पर्वत वेभारादीक तरी जेह उपर पाणी होइ डुगर सीखना हव रेतना थळ पर्वत समीप भूमीए इत्यादीक वैताढय पर्वत वरजाने सर्व क्षय जासे नीझरण वि नीझरण वीसेस लाइ.

ए पाठ बे सुत्र मध्ये छे तीहां सेत्रंजो सास्वतो रहस्ये इम नथी कह्यो. ती वारे हींस्याधरमी कहेस्ये जे रुखभकुट ए पाठ मध्ये नाव्यो. ते माटे रुखभकुट वीछेद जासे ? ते उत्तर इम तो रुखभकुट रहस्ये. गंगा सींधु कुट रहस्ये बोंहोतेर बीळ रहेस्ये पीण पर्वत मध्ये तो एक वैत्याढयहीज रहेस्ये तुमे सेत्रंजाने कुट मानो छो के पर्वत मानो छो ? अने जे रुखभकुट रहेस्ये ते तो जेवो छे तेहवोज रहेस्ये ने सेत्रंजो तो तमे कहोछो जे हाथ ऊंचो ने सात हाथ लांबो रहेस्ये जो सास्वतो होवे तो न्यु मापीक कीम होवे ? तीवारे हींस्याधरमी कहेस्ये जे गंगा सींधु नदी घटी जासे पण सास्वती गणी छे तेम सेत्रंजो पण जाणवो ते उत्तर गंगा सींधुने वेहुपासे पदमवर वेदीका कही छे ते वीचे साडोबासठ जोजननो विस्तार गंगा सींधुनो खेत्र कह्यो ते तो सदा सास्वतो काळप्रभावे पाणीनो प्रवाह घटसे पण नदीनो खेत्र घटस्ये इम नथी कह्यो गंगानो द्रष्टांत सेत्रंजा साथे ना मीळ्यो सेत्रंजाने पर्वत कहो छो पण कुट तो नथी कहेता ते माटे सेत्रंजो असास्वतो वैत्याढय वरजी सर्व पर्वत वीणससे ते मध्ये गणजो साधु सीध्या माटे तीर्थ सीद्ध मानो तो अढी द्वीपतो सर्व तीर्थ भोम अने सीद्ध खेत्रहीज छे मसाण उकरडानी भूमीका तीहां पण अनंता सीध्या छे. ते सास्त्र उववाइ पन्नवणा सुत्रे बे पदे कही छे तेमां उववाइ सुत्रमां छेवट अधीकारमां गाथा बावीस छे तेमांनी गाथा नवमी लखी छे

जथय एगोसिद्धो ॥ तथ अणताभवखय विमुक्का ॥ अणोण समोगादा ॥ पुठाण्येयलोग्गते ॥ ९ ॥

अर्थ'-ज जेणे स्थानके सीद्ध एकछे त तीहां अ. अनंता सीद्ध जाणवा भव-संसारना क्षय. वि ते मुकाणाछे. अ. मांहोमांहे. स. मळी रह्योछे. पु फरसी रह्यो छि. सघळा ए लोकना अतने वीखे ९

ए साखी ए लेखेतो सेर्व्वजो सास्वतो कहेछे तु सुत्र विरुद्ध कहेछे.

---

८ कयवलीकम्मा शब्दना अर्थ

१ हींस्याधरमी कहेछे जे सुत्रमां कय बलीकम्मा शब्दे देवपुजा करवी कहे छे ते वात सुत्र साथे मळती नथी. ते केमजे ज्ञाता सुत्रे बीजे अध्ययने धन सार्थवा हनी अस्त्री भद्रा सार्थवाही पुत्र वच्छाने अरथे नागभुत जक्षने पुजवा नगर बाहीर गइ तीहां इम कह्योछे जे.

जेणेव पोखरिणी तेणेव उवागच्छई २त्ता पुखरिणीए तीरेसु बहु पुफ जाव मल्लालका रकरी ठवेइ२त्ता पुष्करिणी ऊगहइ२त्ता जल मज्झण करेइ२त्ता जल क्रीड करेइ२त्ता न्हाया कय वलीक म्मा ऊल्लपडिसाडिगा जाइ त्तथण ऊप्पलाइं जाव सहस्स पत्ताइं ताइ गिन्हइ२त्ता पुखरिणिऊ पच्चो रुहइ२त्ता त सुबहु पुफ वथ गंध मल्लालकार गिन्हइ२त्ता जेणेव नागघरएय जाव वेसमण घरएय तेणेव ऊवागच्छई२त्ता ॥

अर्थ-जे. जीहां पो पोखरणीवाव. ते तीहां उ. आवे आवीने पु. पुखरणी-वाव तेहने. ती कांठे ब घणा पु. फुल जा जावत म. माळा अ अलंकार. ठ सर्व मुके मुकीने. पु पुखरणीवाव मध्ये उ पइसे पइसीने. ज. पाणीनो. म. मर्दन क करे करीने. ज पाणीनी की क्रीडा. क करे करीने न्हा. न्हाइ क. कीधा. ब बळीकर्म जलकोगरा कर्यां सुगंधी वस्तु वीलेपन करी नाइ उ. ते जे साडी पेहेरी नाही हती तेहनी भीनी. प साडी सहीत जा जे त तीहां उ कमळछे जा जावत स सहस प फुल कमळ ता ते गि ग्रहेग्रहीने पु ते वावीथकी प पाछो नीसरे नीसरीने स ते सु घणा पु फुल. व व वस्त्र ग गंध म माळा अ अलंकार गी लेइलेइने जे जीहां ना नागघर जा. जावत जक्षना. वे वेसमणना घरछे ते तीहां उ आवे आवीने.

इहां वावडी मध्ये बलीकर्म्म कीधो तो वावडी मध्ये केहेनी प्रतिमा पुनी? नागभुत तो वावडीथी नीकल्या केडे पुज्योछे.

२ वली ज्ञाता अध्यन आठमे मल्लीनाथ स्वामी पोताने पगे आगवा आव्या तीहां कह्यो.

न्हाया जाव बहुहिं खुजाहिं परीवुडा जेणेव कुंभएराया तेणेव उवागच्छईस्त्ता ॥

अर्थः—न्हा. न्हाइ. जा जावत ब. घणा. खु. खुजादासी ८. परवरी. जे. जीहां. कु. कुंभराजा ते. तीहां. उ आवे आवीने

इहां जाव शब्द मध्ये नाया कयबलीकम्मा.

कय कोउय मंगल पायछीत्ता सुद्ध प्पवेसाई मंगलाइ वथाई पवर परिहियाई ॥

अर्थः—क. कौतक मंगलीक पाणीनी अंजली भरी कोगरा कीधा पा आभ्रण पेहेरी तीलक मस करी सु मेल रहीत प पवीत्र म मगलीक भार चोटोने मुक घणो. ब एहवां वस्त्र प. प्रधान. प पहीर्या

एटले पाठ जाव शब्द मद्धे आव्यो

३ वली ज्ञाता अध्ययन आठमे मल्लीनाथ स्वामी छ राजाने प्रतिबोधवा मो हनघर मध्ये आव्या तीहां पण कह्यो छे जे

तएणं सा मली विदेहा न्हाया जाव पायछीत्ता सव्वालंकार विभूसीया बहुहिं खुजाहिं जाव परिखित्ता जेणव जालंधरए जेणेवकणगमइ पडिमातेणेव उवागच्छईस्त्ता

अर्थः—त. तीवारे सा ते. म. मल्ली वि विदेह. न्हा न्हाई जा जावत पा. आभ्रण पेहेरी तीलक मस करी स सर्व सोभता अलंकार युक्त वि. पेहेर्या सर्व विभूष्ण कीधां ब घणी खु खुजकादासी जा जावत प परीवारे परीवरी जे जीहां जा जालीनुं घर जे. जीहां क. कनकसुवर्णनी प. पडीमा ते तीहां उ आवे आवीने

ईहां जाव शब्द मध्ये कयबलीकम्मा

कयकोउय मंगल पायछीत्ता

अर्थः—क. कौतुक मगळीक पाणीनी अजळीभरी कोगळा कीधा पा आभ्रण पेहेरीने तीलक मस करी.

एटलो पाठ छे बळीकम्मा शब्दे देव पुजा छे तो तीर्थंकरे कीया देवने पुज्यो ते कहो

४. वली ज्ञाता सोलमे अध्ययने कह्यो छे जे.

तएण सा दोवइ रायवरकन्या जेणेव मझणघरं तेणेव उवागछई२त्ता मंझणघर अणुप्पविसई२त्ता न्हाया कय वलीकम्मा कयकोउय मगल पायछीत्ता सुद्ध प्पावेसाइ मगलाई वथाई पव्वर परिहिया मझणघराउं पडीनिखमइ२त्ता जेणेव जिणघरे तेणेव उवागछई२त्ता.

अर्थः—त तीवारे सा. ते. दो द्रुपदी रा राजवर कन्या. जे. जीहां मं. मंजणनुं घर ते तीहां. उ. आवे आवीने मं मंजन घरमां अ. प्रवेश करे प्रवेश करीने न्हा नाही. क. कीधां व. बळीकर्म पीठी प्रमुख वीलेपन कीधां क कौतुक. म. मंगळीक पाणी अजळी भरी कोगळा कीधा. पा. आभ्रण पेहेरीने तीलक मस करी. सु. सुद्ध निर्मल. पा. उत्तम म मंगळीक व वस्त्र. प प्रधान प. पेहेर्या. म नाहावाना घरथकी नीकळी नीकळीने जे. जीहां. जी. जसनु घर. ते. तीहां. उ. आवे आवीने

एटला पाठ मध्ये पहीला नाह्यो कह्यो पछे बळीकम्मा कह्यो पछे वस्त्र पेहेर्यो कह्यो तो जोवो स्त्रीजाती स्वभावे नगन थइ नाथा बेठी तीहां कीयां देवने पुज्यो ? नाहवाना घर मध्ये कीयो देव हतो ?

५ वली भगवती शतक नवमे उदेशे तेत्रीसमे देवानन्दा ब्राह्मणीए नाहवाना घरमध्ये बलीकर्म कीधो तो नाहवाना घरमां कीयो देव पुज्यो ?

६. भगवती शतक नवमे तेत्रीसमे उदेशे जमालीने अधीकारे कह्यो

तएण से जमाली खत्तीयकुमारे जेणेव मझणघरे तेणेव उवागछई२त्ता न्हायाकयवलीकम्मे जहाउववाइए परिपावन्नउं

तहामाणियव्वं जाव चदणो खित्तगायसरीरे सव्वालंकारे विभु-
सिए मज्झणघराउ पडिनिखमईरत्ता

अर्थः—त. तीवारे ते जमाली क्षत्रीय कुमार जे. जीहां मजननो घरछे. ते. तीहां उ आवे आवीने न्हा. स्नान कीधो कीधां वलीकर्म जेणे. ज जीम ऊवाइ ऊपांगने वीसे परीखदा वर्णव कर्यो तीम इहां पण कहीवो. जा. जावत. चदन सघाते लीप्योछे गात्र शरीर जेहनो देह इत्यर्थ स सर्व अलकारे विभुषीत थइने म. मजन घरथकी नीकले नीकलीने ॥ एणे नाहवाना घर मध्ये कीधो देव पुज्यो

७. वली भगवती सतक सातमे उदेसे नवमे वरणनागनतुयो मजण घर मध्ये कयवलीकम्मा कीधो पछे मजण घर थकी नीकल्यो कह्यो एणे स्नानना घर मध्ये कीयो देव पुज्यो

८. वली. रायपसेणी मध्ये कठीयारे वनमां स्नान कीधो वलीकर्म पण कह्यो तेणे कीयो देव पुज्यो

९. वली केसी श्रमणे कह्यो के हे ! प्रदेसी राजा ! तु मजन घरमां न्हाइ वलीकर्म करी पछे देव पुजवा जाय बीचमां भगीयो सेतखानामां बोलावे तो तुं जाय ? तो जोवो एणे नाहवाना घरमां सु वलीकर्म कीधो ? देव पुजवा तो पछे चाल्यो ते पाठ तो जुदो छे ते वीचारी जोजो

१० वली कोणीक राजा भगवंतनो परम भक्तिवंत नीतर एकलाखने आठ हजार रुपानाणो भगवंतनी वधाइमां देवे ने जे दीवसे श्रीभगवंतजी चपाये पधारे तीण दीवसे साढीबार क्रोड रुपानाणो वधाइनो देवे तेने प्रतिमा पुजतो केम न कह्यो ? अने श्री भगवंतजी वांदवा गयो तीणदीवसे स्नान विस्तार सहीत वरणव्यो तीहां कयवलीकम्मा शब्द मुल्गोज नथी कह्यो ते शुं ते नाहवानो पाठ संमपुर्ण लखेछे

जेणेव मजण घरे तेणेव उवागच्छईरत्ता मज्झण घर अणुप्प-
वेसईरत्ता समुत्तजालाउलाभिरामे विचित मणि रयण कुटिमतले
रमणिजे न्हाण मडवंसि नाना मणि रयण भत्ति चित्तसि न्हाण
पीढसी सुह निसन्ने सुद्धोदएहिं गधोदएहिं पुफोदएहिं सुभोद-
एहिं पुणोरकल्लाणगा पवर मजण विहाए मजिए तथ कोऊय
सएहिं वहु विहेहिं कल्लाणग पवर मजणा वसाणे पम्हल सुकु-

माल गंध कसाइय लुहियंगे सरस सुरहिं गोसिस चंदणा णुलि-त्तगते अहय सुमहग्ध दुस रयण सुसवुए सूइ माला वणग विलेवणे आविध मणि सुवणे कप्पिय हारद्दहार तिसरय पालंब पलंबमाण कडि सुत्तसुकय सोभे पिणद्धगेविविजे अगुलेजग लिलिय गय ललिय कयाभरणा वर कडग तुडीयथंभीयभूये अहिए रुव संसिसरीये मुदिया पिंगूल गुलीए कुंडल उद्योवियाणणे मऊड दिसिरए हारीछय सुकय रइय वछे पालंब पलंबमाण पड सुकय उत्तरिजे नाणा मणी कण रयण विमल महरिह निउणोवय मि शिमिसत विरइय सूसिलिठ विसिठ लठ आविद्ध वीरवलए किंन-हुणा कप्प रुख एचेव अलकिय विसुसिये नरवइ सकोरट मल्ल दामेण छत्तेण धरिजमाणेण चाउ चामर वालवीजीयगे मंगल जय सद्द कया लोए मजण घराउ पडीनिखमई२त्ता

अर्थ—वीवारे ते कोणीक राजा जे जीहां म स्नान करवानो. घ घरछे ते. वीहां उ. आवे आवीने म स्नान करवाना घ घरमांहे. अ पेसे पेशीने स मोतीनी जाळीया सहीत अ. गोसाळादीके कीर्ण व्याप्त तेणे अ. मनोहर छे वि. नाना प्रकारना म मणी र रतन तेणे कु भूमीकानु तळ आंगणु बांध्युछे र रमणीकछे न्हा स्नान करवानो मं मडप चोकछे ना नाना प्रकारना म मणी. र रतनने भ भांती ची चीत्राछे पहवा न्हा स्नान करवाना पी बामोठने वीखे सु सुखे नि बेठोछे सु सुद्ध स्वभावे उ पाणीए करी ग सुगंधीक च पाणीए करी पु फुल्पवासीत उ पाणीए करी सु तीर्थनो उ पाणीए करी पु वारवार क कल्याणकारी म प्रधान म स्नान करवानी वी वीधे करी म नाह्यो त वीहां को कोतीक रक्षादीकनो स गोतम व घणा वी प्रकार तेणे क कल्याणकारी प प्रधान म स्नानना आ छेहडाने वीखे प पुम सु सुहागछे जेहना ग सुगध क राती साडी तेणे करी लु लुयुछे भ अंग शरीर जेहनु सु सुगंध गो धावना. वं चदन अ लींप्युछे अ गात्र शरीर जेहनु अ अखंड उ दरादीके फरटपा नथी सु अती म. मुहघा वहु मुल्यां दु वस्त्र र रतन. सु भलीपरे

स. पहिरीयुं छे सु. मीम्र, मा. फुलनी मोतीनी मालाछे, व वर्णे अबीरादीक वि विलेपन कीधांछे जेणे आ पहीर्याछे म. मणीना. सु शोभता आभ्रण. क पहीर्याछे. अ अढार सराहार. अ नवसराहार. ति त्रीणसराहार पा सुवणो प कांबो नामी लगे अडतो. क. कणदोरो तेणे. सु भली कीधीछे. सो शोभा पि पहिर्याछे. गे कोटने बीखे आभ्रण जेणे अ. आंगलीने धीखे वेढ वींटी आभ्रण पहीर्याछे लि. मनोहर. गं सरीरने वीसे ल. शोभा लीधा. क. कीधाछे थाप्पाछे. आ. आभ्रण अनेरा जेणे. व मधान क. कडां तु पहीरखा तेणे. थं थमीखछे भारे भ मु ना जेहनी अ. अधीक रु. रुपछे स. शोभायमान दीसेछे. मु मुद्रिका पेहेरीछे. पी पीली थइछे अं अंगुली जेहनी. कुं कानना कुंडल तेणे उ उद्योत कीधोछे. भ मुख जेहने म मुगटे करी. दी. देदीपमानछे हा हारे करी व ढां क्याछे सु, भलुं क. कीधुं छे र रच्योछे प. हीयुं जेहनुं पा सुमणो. प. कांबो. प. एक पटनो वस्त्र तेणे करी. सु भलुं क कीधुं उ उत्रासग जेणे ना. नाना प्रकारना. म मणी. क. सुवर्ण र रतने वि निर्मल. म. मोटाने जोग्य नि. नीपुण विज्ञाननो ब. धर्युं मि देदीपमान वि नीपजाव्युंछे रच्युछे सु रुडी परे सी समाधी जोडीछे. वि मधान ल. मनोहर. आ पहीर्याछे रु वृक्षनीपरे थे नीश्वे. अ अलंकारीऊ मुगटादीके. वि सीणगार्योछे वस्त्रादीके. न मनुष्यनो अ. सामी रामा स. कोरंटनामा वृक्षना. म फुलनी दा माला सहीत छ मेघाडंबर घ. धरावतो थको मस्तके ज जय जय. स सब्द क कीधाछे. लो लोक जेहने म नाहवाना घ घरथकी. प नीकले नीकलीने

एटलो स्नाननो वर्णव कीधो ते मध्ये कयबलीकम्मा शब्द मुलयीज नथी अने श्रीवीर वांदवा जावानो अवसर छे तो बलीकम्मा शब्द प्रतिमानी पुजा होय तो इहां अवस्यमेव जोइए

११ वली श्रीजंबुद्विप पनंती मध्ये कह्यो श्रीभरथेश्वरजी नाह्या त्यां नाहवानो वीस्तार कोणीकनी परे छे तो त्यां पण बलीकम्मा शब्द मुलयीज नथी, तमे कहो- छो जे अष्टापद उपर वींब कराव्या हता तो प्रतिमाना रागीछे तो बलीकम्मा शु नहीं करता होय ? प्रतिमा नहीं पुजता होय ? पण एम जाणजो जे ज्यां विस्तार सहीत स्नान वरणव्या त्यां कोइ ठामे बलीकम्मा शब्द नथी कह्यो अने वहीज कोणीके तथा भरथेसरने नाहवानो अधीकार संखेपे कह्यो त्यां नाया कयबलीकम्मा ठाम २ कह्यो छे तो एम जाणजो जे ए बलीकम्मा शब्द नाहवानोज वीसेष छे,

त्हां देव पुजवानो अरथ ठरतो नथी नाहवां थकां जळंजळी कुरळाकुळकुळाट अर्थे देवाना ठाम लेवा मर्दन जगटणा प्रमुख करवा एहीज विशेष जणाइ छे वळी कम्मा शब्दे जीनराजनी प्रतिमा पुजी कहेछे. ते एकांत मीथ्यात्व मोहनीने उदये कहेछे.

१२. वळी केटलाएक कहेछे जे तुगीया नगरीना श्रावक चार थीवरने वांदवा गीया तीहां टीकामां एवो अर्थ कीधो छे जे कय वळीकम्मे ती स्वग्रह देवता अस्यार्थ. पोताना घरना देवनी पुजा कीधी तेनो अरथ ए जे पोताना ससारने अरथे गोत्रज देवादीकछे तेहने पुज्या. तीवारे प्रतिमामती कहे जे श्रावकने घरना देव ते जीन-मति छे. बीजा कुळदेवने श्रावक सम्यग्द्रष्टी वांदे पुजे नहीं. एम जोरावरीयी करी जीनप्रतिमा ठहरावेछे पण मुरख एटलु नथी जाणता जे तीर्थंकर केहना घरना देव होशे ? एतो त्रीनलोकना देवछे अने कहेछे जे समद्रष्टी श्रावक बीजा देवने कुळ परंपराए पण माने नहीं ते जुठो कहेछे सुत्र मध्ये जुवो

१ श्री भरथेश्वरे समद्रष्टी थइने चक्ररतन कीम पुज्यो ?

२ वळी सान्तिनाथ, कुंथुनाथ, अरनाथ ए त्रण जीनचक्री हता तेणे चक्कर-तन पुज्यो के न पुज्यो ? भरतक्षेत्र साधता तेर अठम लोकीक खाते ते सर्व चक्री-वर्ति करेछे ते कीधां के न कीधां ?

३ वळी ज्ञाता मध्ये सुठीया देवताने श्रीकृष्ण समद्रष्टी थइने आराध्यो के न आराध्यो ?

४ वळी चक्रवर्ति मागधादीक देवने साधवाने वाण मुके ते वाण मध्ये लखेछे जे सर मर्यादा मांहीला देवता ते माहरा सेवक थाओ

हदी सुण तुभवतु ॥ बाहीरर्उखलुसरस्सजे देवा ॥ नागा सुरा सुवना तेसिं पुनमो पणिवयामि ॥ १ ॥

अर्थः—ह. ईदीवीसत्ये सु. सांभल्यो तुम्हे वा सर. त वाहीरली भागे स्वचाइ अधीष्टायक देवताछे ख ते नीश्चे जे जे दे देवता. ना नागकुमार. अ. असुर कुमार सु सुवर्ण कुमार देवता. ते. ते दवताने कामे. खु नमस्कार हुओ प. प्रणाम नमस्कार करु छउं ॥ १ ॥

ए गाथामां वहो शर जाए त्यांथी पेहेले पासे देवता होय तेहने माहरो नमस्कार थाओ ए यीवी छे. ते साचववा माटे सांन्तिनाथ, कुंथुनाथ, अरनाथ,

स. पहिरीयुं छे सु. मीश्र. मा. फुलनी मोतीनी माळाछे. व वर्ण अत्रीराश्रीक वि विलेपन कीधाछे जेणे आ पहीर्याछे म. मणीना. सु शोभता आभ्रग. क पहीर्याछे. अ अढार सराहार. अ नवसराहार. वि त्रीणसराहार पा सुवणो प कांचो नामी एगे अढवो. क कणदोरो तेणे सु भश्री कीधोछे. सो शोभा पि पहिर्योछे. गे. कोटने वीखे आभ्रग जेणे अ आंगळीने वीवे वेड बींटी आभ्रण पहीर्याछे कि मनोहर. ग सरीरने वीवे ल. शोभा लीधा क कीधाछे थाप्याछे. आ. आभ्रण भनेरा जेणे. व प्रधान क कडां तु बहीरखा तेणे. य थभीतछे मारे भ भुजा जेहनी. अ अधीक र रुपछे स. शोभायमान दीसेछे. मु मुद्रिका पेहेरीछे. पी पीळी थइछे अ अंगुली जेहनी. कुं कानना कुंडळ तेणे उ उद्योत कीधोछे. भ मुख जेहने म मुगटे करी. दी देदीपमानछे हा हारे करी उ. ढां क्याछे सु. भर्छ क. कीधुं छे र रच्योछे व हीयु जेहनुं पा सुवणो. प. कांबो. प. एक पटनो वस्त्र तेणे करी सु भद्र क कीधुं उ उत्रासण जेणे ना. नाना प्रकारना. म मणी. क. सुवर्ण. र रतने वि निर्मळ. म. मोटाने जोग्य नि. नीपुण विज्ञाननो उ घर्युं. मि देदीपमान वि नीपमाव्युंछे रच्युंछे सु रुडी परे सी समाधी जोडीछे वि प्रधान ल. मनोहर. आ पहीर्याछे रु वृक्षनीपरे. चे नीश्चे. अ अलंकारीक मुगटादीके. वि सीणगार्योछे वस्त्रादीके. न मनुष्पनो अ सामी राजा स कोरटनामा वृक्षना म. फुलनी दा माळा सहीत. छ भेघाडंबर ध धरावतो थको मस्तके. ज जय जय स सब्द क कीधाछे लो लोक जेहने म नाहवाना घ घरथकी प नीकळे नीकळीने

पटलो स्नाननो वर्णप कीधो ते मध्ये कयबलीकम्मा सब्द मुळथीज नथी अने श्रीवीर वांदवा जावानो अवसर छे तो बलीकम्मा सब्द प्रतिमानी पुजा होय तो इहां अवस्यमेव जोइए

११ वळी श्रीजंबुद्विप पन्नती मध्ये कह्यो श्रीभरथेश्वरजी नाह्या त्यां नाहवानो बीस्तार कोणीकनी परे छे तो त्यां पण बलीकम्मा सब्द मुळथीज नथी, तमे कहो- छो जे अष्टापद उपर बींब कराव्या एवा तो प्रतिमाना रागीछे तो बलीकम्मा शुं नहीं करता होय ? प्रतिमा नहीं पुजता होय ? पण एम जाणजो जे ज्यां विस्तार सहीत स्नान वरणव्या त्यां कोइ ठामे बलीकम्मा सब्द नथी कह्यो अने पहीज कोणीके तथा भरथेसरने नाहवानो अधीकार संक्षेपे कह्या त्यां नापा कयबलीकम्मा ठाम २ कह्यो छे. तो एम जाणजो जे ए बलीकम्मा सब्द नाहवानोज वीक्षेप छे,

याये भिसियाए निसियइ२त्ता पंडुराय रजेय जाव अंतेउरिय कुसलोदत पुछइ

अर्थः—त. तीवारे. से ते. पं. पडुराजा. क कछुल. ना नारदने. ए. आवतो थको. पा. देखे देखीने प पांच पं पांडव. कु. कुंतीदेवी. स. साथे. आ आसनथकी. अ उठे उठीने क कछुल. ना. नारदने स सात आठ. प पग प. साहमो जाइ जाइने ति. त्रीनवार आ. आत्मा नमाडी म. मदीक्षणा. क. करे करीने वं. वांदी न नमस्कार करे करीने. म. मोयाने योग्य आ. आसन उ आमत्रे त तीवारे से. ते क. कछुल ना नारद. उ. पाणीना. प छांटा नाखीने. द. डाभ उपरे प. पाथरीने. मी पाटकी मुकीने नी. वेसे वेसीने. प. पडुराजाने. र राजने वीखे. जा. जावत. अं अंतःपुरने वीखे. कु कुशळनो समाचार. पु. पुछे.

एवी रीते नारदनी भक्ती कीधी. द्रोपदीए वांदयो नहीं, ते समये समद्रष्टीणी हती ते माटे, ए काम रुडो कीधो तेहीज नारद श्रीकृष्ण पासे आव्यो. तीहां श्रीकृष्णे पण जाव शब्द मध्ये पंडुराजानी परेभक्ति कीधी, वांदयो ते पाठ इमज छे.

इमंचण कछुलानारए जाव समोवयई जाव निसिइ२त्ता कन्हं वासुदेवं कुशलोदंतं पुछई.

अर्थ—इ एहवे अवशरे क. कछुक नारद. जा जावत आकाशथी. स. उतर्यो. जा. जावत. नि. वेसे वेसीने क. कृष्न. वा. वासुदेव. कु. कुशळ समाचार. पु. पुछे.

ए जाव शब्द मध्ये पंडुराजानी परे भक्ति साचवी कहे. एणे मीथ्यात्वनी भक्ति लोकीक रीते कीधी के न कीधी ?

११ ज्ञाता अध्ययन आठमे मल्लीनाथ स्वामीए

न्हाया जाव वहुहिं खुजाहिं परिखुडा जेणेव कुंभएराया तेणेव उवागच्छई२त्ताकुभयस्स पायग्गहण करेति

अर्थ—न्हा न्हाइ जा जावत व घणी खु खुमादासीए. प परीवरी जे जीहां क कुंभराजा ते तीहां उ. आवे आवीने कुं. कुंभराजाने पा. पगे लागयो. क करे.

एणे पण खट साधतां थाण नाखतां देवताने नमस्कार कीधोछे

५ वळी अभयकुमारे मेहनो डोहलो पुरवा माटे अठम पोसा कीधो तीहां देवताने साहाय्य कीम वांछयो

६ वळी आणंद श्रावकने अधीकारे उपासग पेहेले अध्ययने आगार छे राख्या जे अन्य तीर्थिने वांदवो तथा देवो पडे तो ते मध्ये १. देवाभी उगेणेणा (देवता कोण थकी) २ गणाभी उगेणणा (न्यातो समुदायने आदेशे) ३. रायाभी उगेणणा. (राजाने बळात्कारे) ४. विती कंतार एणं (दुर्भिक्षने जोगे अटवीने जोगे) ५. गुरूनी गहेण (गुरुने परवशपणे) ६. बलाभी उगेणं. (बळात्कारे ए छो कारणे ससारनी वीधी साचवु पण ते मध्ये धरम न जाणुं इम कह्यो.

७ वळी ए सास्वतो सुत्र मध्ये छे जे कार्य वीशेखे लोकीक पखे समद्रष्टीने श्रावकने अन्य देव मानवा पडेछे.

८ अने ते कहेछे जे असइम. श्रावक देवताने साथ न वांछे तो तमे कहोछो जे चोवीस तीर्थंकरना चोवीस जख चोवीस जखणी रक्षा करेछे वळी सासन दे वता साहाय करेछे. तेहनी थुइओ पडीकमणामां तमे कहोछो च्यार तीर्थ साहाय न वांछे तो ए जख जखणी केहनी रक्षा करता होसे ? वळी सेत्रुंजा उपर चकेश्वरी माताने कीम पुजोछो ?

९ तथा नवीयको गोरा, काळा, खेत्रपाळ, भेरव, तथा माणीभद्रादी जखने आराधे छे. पोतानी तथा धननी रक्षा माटे. ए छेस्ले तो देवता साहायवंछा माटे समाम गुरु ते पण समद्रष्टी नथी जाणता ते वीचारी जोजो

१० वळी द्रुपदीए नारदने न वांद्यो समद्रष्टी माटे. तो श्रीकृष्णे समद्रष्टी थइने नारदनी भक्ति कीम करी ? ते सास्त्र ग्राता. सोळमे अध्ययनेछे ते लखीछे.

तएणं से पंडुराया कच्छुल्ल नारय एजमाणं पासई२त्ता पच-हिं पंडवेहिं कुंतीए देवीए सद्धिं आसणाउ अब्भुठेई२त्ताकच्छुल नारयं सत्तठ पयाइ पच्चुगच्छइ२त्ता तिखुत्तो आयाहिणं पयाहिणं करेति२त्ता वंदइ नमसइ२त्ता महरीहेणं आसणेण ऊवनिमंतेइ तएणं से कच्छुलए नारए उदग परिफासियाये दभोवरि पच्चुथ-

८ द्विप, समुद्र, देवलोक चारर जीन पडीमा कहीछे तेहना चार नाम सरवे ठाम एहीज कहेछे १ रुखमानना. २ वर्धमाना ३ चंद्रानना, ४ वारीखेणा, ए तीर्थंकरने नामे नाम कह्या ते माटे कांइ ए चार जीननी प्रतिमा नथी. ते कीम जे ए चार नाम तो अनंतकाळना चाल्या आवेछे अने रुखम, वर्धमान, चद्रानना, वारीखेणा. ए चार जीन तो आ चोवीसी मध्ये थीयाछे ए सांचो केम लागे

९ प्रतिमा सीद्ध अने प्रतिमानो घर ते सीद्धायतन एहवो अरथ करो छो तो तमारे कहीण तो द्रुपदीनी प्रतिमानो घर तेहने सीद्धायतन कीम न कह्यो ? तीहां तो जीण घरे कह्यो छे. प्रतिमाना वास माटे सीद्धायतन कहीए तो द्रुपदीना देहेरा मध्ये प्रतिमा हती के न हती ? जो प्रतिमा न हती तो पुज्यो शुं ? अने प्रतिमा हती तो सीद्धायतन कीम न कह्यो ? ते कह्यो अने सुर्याभादीक देवताना देहेरांछे. तेहने सीद्धायतन कहीने बोलाव्याछे ते शुं इहां प्रतिमाना वास माटे सीद्धायतन नथी कह्यो परमार्थ तो एछे जे.असास्वता देहरां छे तेहने तो नागघरे, भुतघरे, जक्षघरे, वेसमणघरे, कहीए ज्ञाता अध्ययन बीजे साखछे. अने जे अनंत काळना देहरांछे तेहने स्थिती आश्रयने सीद्धायतन संज्ञाए बोलाव्याछे अनतकाळनी स्थितीनी जे वस्तु होवे तेहने सीद्ध कहीए तेहनी साख श्री अनुजोगद्वार मध्येछे ते लखीछे

सेकिंतं दसनामे२दसविहे पन्नते तजहा गोणे १ नोगुणे २ आयाणपएण ३ पडिवक्खपएण ४ पहाणपएण ५ आणादीसिद्धे ६ नामेण ७ अवयवेण ८ सजोएण ९ पमाणेण १०

अर्थः—से कोण ते द दस नामर द दस प्रकारे. प. परुप्या. त. ते कहेछे. गो. गुणनीपन नाम १. नो अगुणनीपन नाम. २. आ आदीपद करी नाम नीपजे ते ३ प प्रतिपक्ष उपरागे कहेछे ४ प. प्रधान वस्तुने नामे सजोगे नाम नीपजे ५ अ अनादी काळना सीद्ध सास्वता नाम ते अनादी सीद्ध नाम ६. ना पीतादीक नामेनाम ७ अ कोइक अध्ययने सजोगे नाम कहेवाय ८ स. द्रव्य सजोगे नाम कहेवाय ९. प नाम थापनादीक चार प्रकार नामना १०.

ते मध्ये अनादी सीद्धे नाम ते शु ते लखेछे

सेकिंत अणादिएसिद्धे२ धम्मथिकाए अधम्मथिकाए आ- गासथिकाए जीवथिकाए पुग्गलथिकाए अद्धासमए

जुवो तीर्थंकर देव मीथ्यात्वी अट्टती पीताने पगे लाग्याछे के नहीं ? लोकीक मीथ्यात्व खाते जाणी जे ने माता पीता तो श्रावकपणो मल्लीनाथ स्वामीए सजम लीधो तेवारे आदर्यो छे एटली सात कुल्देव लोकीक मीथ्यात्व समद्रष्टीने लागे छे ते उपर कही समद्रष्ठी धर्म हेवे मीथ्यात्वना देव गुरुने माने नहीं. लोकीक रीत नो नीखेद कह्यो नहीं

९. सीधायतन सब्दना अर्थ उत्तर.

हींस्याधरमी कहेछे जे, सुत्र मध्ये देहरानो नाम सीद्धायतन कहेछे ते सीद्धनो घर जाणवो, अने प्रतिमा ते सीद्ध जाणवी. ते वात सुत्र वीरुद्ध कहेछे. जो सीद्धायतन नाम गुणनीपन मानोछो तो.

१ भगवती नवमे सतके रुखभदत्त ब्राम्हण कह्यो, ते रुखभदेवनो दीयो थयो मानसो ?

२ तथा उत्तराध्ययन अडारमे अध्ययन असंजतीना करता मृगया मारवा माटे गीयो, तेहनो नाम सजती राजा कह्यों, तो ते शुं संजती थयो ?

३ तथा जीवाभीगम मध्ये कह्यो. सातमी नरके गया तेहने पंच माहा पुरुषा कह्या छे, तो कांइ लोकोत्तरपसना ए महा पुरुषा कहेवासे ?

४ वीजय, वीजयंत, जयंत, अपराजीत नामे अनुत्तर विमानना नाम कह्यां अने तेहीज चार नाम असंख्याता द्विप समुद्रना चार चार द्वारना नाम कह्यां ते माटे अणुत्तर विमान थकी स्यो सबंध थीयो ?

५ अनुजोगद्वार मध्ये नोगुण नामना भेद कह्या तीहां अमुदोये. नीर्गुन नाम कह्यो तीम १ रुखभदत्त, २ संजतीराजा, ३ पंचमाहापुरुषा, ४ अणुत्तर विमानना नाम, ए सरवे नोगुण नाम तीम सीद्धायतन ए पीण नोगुण नाम जाणवो.

६ भरथादीक एकसो सीत्तेर वीजयमां एकर लेखे त्रणर तीर्थ कह्या १ माग ध, २ वरदाम, ३ प्रभास, ते तीर्थ कह्या माटे कांइ समद्रष्टीने मानवाना नथी. तीम ए सीद्धायतन सब्द पण जाणवो

७ जो गुणनीपन नाम सीद्धायतन मानो तो कहो ए देहेरा मध्ये कीयो सी द्धछे ते कहो तथा ते सीद्धने भर होवे ? प्रथम एकतो परीग कहो.

अर्थः—ध एहवो धर्म देखाडता परुपता थका. वि. वीचरेछे. तं कहे छे. पु. पृथ्विकाय भा इम भावनाने गमे करीने आचारंग सुत्रना बीजा सुत स्कंधनुं भावना अध्ययन थकी प. पांच माहाव्रत. स. पचवीस भावना सहीत जाणवो.

पंच माहाव्रत, बारव्रत, छकायनी दया, सलेखणा, ए धर्म परुप्यो इम श्रीमाहावीरे आचारंग बीजे सुतस्कंधे भावना अध्ययनमांहे प्रथम उपदेश एमज दीधो.

२ वळी उववाइ सुत्रे कोणीक राजा आगळे पांचमाहाव्रत, बारव्रत, सलेखणा, छकायनी दया, ए धर्म पुरुप्यो पण कीयांय सीद्धांत मध्ये जात्रा, पुजा, संघ काढवा, पाहाड पर्वत भमवो, प्रतिमा घडाववी, देहरां करावबां. ए उपदेश तीर्थंकरे गणधरे, कीहांइ दीधो नथी तो गौतमने अष्टापद जावो कीहांथी कह्यो.

३ वली तथा मध्ये कहेछे जे श्रेणीकराजाने नरके आयु टाळवाने चार बोल बताव्या १ काळीकसुरियो भेंसा न मारे २ कपीला दासी साधुने दान देवे. ३ पुणीयो श्रावक सामायक आपे ४ तु नोकारसी मात्र पचखाण करे तो नरके न जाइ एम कह्यु पण अष्टापद, सेत्रंजानी जात्रा करवी न बतावी.

४ तथा साळीभद्रे सजम लीधो पण केटलां धनना देहरां करावबां. संघ काढाववा ए उपदेश न बताव्यो

५ प्रदेशी राजाए दानशाळा मंडावी (पोताने छांदे) पण केसीकुमारे देहरा प्रतिमा करावबां संघ काढवानो उपदेश न दीधो

६ कोणीकराजाने पण ए उपदेश श्रीमाहावीरे न दीधो

७ द्वारका बळवानो प्रस्ताव जाणीने नेमनाथे कृष्णने देहरा प्रतिमा पुजवानो उपदेश दीधो नथी, तो गौतमने जात्रा जावानो कीम कहेस्ये ?

८ उत्राध्ययन दशमे गाथा अठावीसमां कह्यु छे जे

वोछिंद सिणेह मप्पणो ॥ कुमुय सारइयव पाणीयं ॥ से सव सिणेहवज्जिए ॥ समय गोयम मा पमायाए ॥ २८ ॥

अर्थ —वो छेदे टाळे सी स्नेह रागने अ आत्माने कु. कमळ ने ते जेम सा सरद रुतुनो पा पाणीने छांडीने कमळ ऊचो रहे तेम तुं पण. से तेह स सर्व सी स्नेहे करी रहीत थको म समयमात्र पण गो. हे गौतम मा प पा प्रमादी (प्रमाद न कर.) २८

अर्थः—से कोणते अ अनादी सीद्दनां नाम ध. धर्मास्थिकाय. १. अ अध र्मास्थिकाय २. आ. आगास्थिकाय. ३. जी जीव ४ पु पुदगलास्थिकाय ५. अ. काल ६, ए खट (छो) द्रव्य.

ए छो वस्तुने अनादी सीद्दे कहीए, ते तमारे मते तो छ वस्तुने अनादी सीद्द कही ते माटे वदनीक थइ. तीहां सीद्द प्रतिमानो आयतन घर ते सीद्दायतन मानो. तो इहां काळ, पुदगळ जीव. धर्मास्थि, अधर्मास्थि. आकाश. परमाणु जीव अनंत प्रदेसीक खध तेहने सीद्द कह्या. माटे ते पण वदासे सीद्दना घरने वांदसो तो सीद्धने कीम नही वांदो ? पण इहां तो सुत्र परमार्थ एहीज अर्थ छे जे, अनंता काळनी स्थिती छे अने स्वय सीद्द अणकीधा थया माटे सीद्धायतन कहीए.

तीवारे ढीस्याधरमी केहेसे जे वैताढयादीक पर्वत छे तेने नव कुटछे. ते नव कुट अनतकाळना छे तो ते, नवने सीद्धायतन कुट कां न कह्या. सिद्धायतन कुट एकज कीम कहयो ? प्रतिमावाळा एम पुछे तेने उत्तर. अनुजोगदारमां कह्युंछे जे महया सेयेती महीस—मही केतां जे पृथ्वी उपर सुवे छे ते माटे भेंसाने महीस कहीए तो पृथ्वी उपर सर्व मनुष्यादीक पशु सुवे छे, एणे लेखे तो सर्व महीस कहीए. पण बीसेखण बीन्या भेंसाने महीस कह्यो तथा कुनरे रतीती कुंजर कुंज कहीए धन तेहने वीषे रती पामेछे ते कुंजर, केतां हाथी कहीए तो वनने वीखे मनुष्य हुं रती नथी पामता ? पण कुजर नाम ते हाथीनेज कहीए तीम नवकुट अनंतकाळ सीद्दछे, जदपी देव देवी अधीष्टीत छे तेहने देवदेवीने नामे कुट कह्या. अने इहां देव देवीनो बीसेसण नथी तीहां सीद्दायतन कुट कह्यो अने प्रतिमाना वास माटे सीद्धायतन कहीए नहीं श्री गणधर देव सुके नहीं ते बीचारी जोजो

---

१० गौतम अष्टापद चढया कहेछे तेहनो उत्तर

१ ढीस्याधरमी कहेछे जे भगवत श्री माहावीरे गौतमने कह्यो जे तुमे अष्टा पद पर्वत जाओ ने भरथना कराव्या बींब जुहारो, जीम तुमने केवळ ज्ञान उपजे ए वात सुत्र बीरुद्द कहेछे जंबु द्वीप पर्नती मध्ये कह्यो. श्री रुखभदेवने केवळ ज्ञान उपजयो, तीवारे प्रथम देसना देवता मनुष्यने दीधी तीहां कह्यो

धम्मोदेसमाणे विहरई तजहा पुढवीकाईए भायणागमेणं पचमहव्वयाई सभावगाइ

सुत्र पाठनो अरथ छे. ए जाम्रा जावो बताव्यो ते कया मुळ पाठ उपर ते पाठ देखाडो जो पाठमां जाम्रा जावानो नाम नथी तो टीकामां कीहांथी आव्यो ?

९ हींस्याधरमी कहेछे जे, सुर्यनी कीरण पकडी अमीकंबीने चडया ते वात खोटी छे. कीरणना पुदगळ तो वीखरा कह्या छे उत्राध्ययन अठावीसमे गाथा बारमी कहीछे ते लखेछे.

सदंधयार उजोउ ॥ प्पहा छायातहेइवा ॥ वन्न गंध रस फासा ॥ पुग्गलाणतु लखण ॥ १२ ॥

अर्थः—स. सुभ सुभ शब्द अंधकार उ. उद्योत रतनादीकनो. प. प्रभाकांती चंद्रादीकनी. छा छाया सीतळी आ. आतप सुर्यादीकनो प्रसनताबद ए. ए कर्थु ते समुचे. व. वर्ण. १२ गं. गंध ८. र. रस १ फा. फरस १७. पु. पुदगळास्यिकायनो वळी ल. ए २७ मबोलरुप लक्षण जाणवो ए छ द्रव्यना गुण, लक्षण कह्या १२

कीरण तापना पुदगळने कोइ देवता सरखोपण पकडवाने समर्थ नहीं, जीम पाणीनी धारा पकडीने कोइ चडी न सके तीम.

१०. वळी समवायंग सुत्रे कह्यो जेः जंघाचारण साधु रतन प्रमायी.

सतरस जोयण सहस्साइ उर्द्ध गता तउ पछा तिरिय गइ पव्वतइ

अर्थ.—सतर हजार जोजन ऊचा उतपतिने पछे तीरछी गती करे पण जंघाचारण सरखा पण सुर्यनी कीरण पकडवा समर्थ नहीं तो कीरण पकडीने चडया कहेछे ते एकांत जुठुं बोलेछे.

११. वळी अठावीस लब्धीना नाम कहेछे

१ आमोसही. २ विपोसही ३ खेलोसही. ४. जल्लोसही ५ सव्वोसही ६. संभिन्न सोतीया ७ अव्वधीनाणी. ८. रुजुमति ९ विपुळमति. १०. चारण ११. आसीविष. १२. केवळ १३. गणधर. १४ पुर्वधर. १५. अरीहंत. १६ चक्रवर्ति १७ बळदेव. १८ वासुदेव १९ खीरासवा महुयासवा सपीयासवा अमीयासवा. २० बीजबुधी २१. कोठबुधी १२ पादानुंसारणी. २३. तेजोलेस्या. २४ सीतळ लेस्या. २५ आहारक. २६, वैक्रीय २७ अखीणमाणसी २८ पुळाक.

ए अठावीस लब्धी कही, ते मध्ये सुर्यकीरण पकडे ते कही लब्धी थकी ?

१२. भगवती मध्ये कह्यो, सकलाइ असबद अणगार लब्धी फोरवे तेहने

एमां कयुं जे आपणे स्नेह घणा काळनो छे. ते हुं निवार. म केवल एमने इम कह्यो, पण जात्रा जावो नथी कह्यो.

८ पछी भगवती सतक चउदमे उदेते सातमे कह्यो. जे.

रायगिहे जाव परीसा पडीगया गोयमादि श्रमणे भगवं महावीरे भगव गोयम यव वयासी चिरस सिठासि मे गोयमा चिरसमु ओसि मे गोयमा चिरपरी चयेंसी मे गोयमा चिरजूसि तोसि मे गोयमा चिराणु गत्तोसि मे गोयमा अणंत्तर देवलोए अणतरं माणुसे भवे किपर मरणकायस्स भेद्राइत्तों चुयादो वि तुला एगठा अविसेस मणाणत्ता भविसामो

अर्थः—रा राजगृह नगरने वीखे तीहां भगवंत श्रीमाहावीर स्वामी गौतमने केवल ज्ञाननी अमाप्तीए करी स्वदया जाणी गौतमने आस्वासन नीमीते आमंत्री तेडीने आपने भने गौतमने हुणहार तुल्यता मते केवाने अरथे ए कहेछे हे गौतम आमत्रणे श्रमण भगवंत श्री महावीरे गौतम मते आमंत्री एम कहे अतीतकाल लगी स्नेह थकी मुजसुं संबंध छे इसंचीएछे हे गौतम घणा काळ लगी मुझमते प्रसंसा छे हे गौतम घणा काळ लगी पछी पछी देखवे मुझने सों परीचय छे. हे गौतम घणुं चीरंकाल लगी सेव्या मतीतीव पात्र छे. हे गौतम चीरंकालनो मारे पुंठे चा ल्योछे. हे गौतम घणेकाले मनुकुलमाते भावथकी अनुगामी छे हे गौतम अतर रहीत देवभावने वीखे तीहांयकी पण अनंतरो मनुष्य भवने वीखे एटले श्रीपृद थामुदेवने भवे गौतमनो जीव सारथी हतो घणुं शुं कहीए मरण थकी पछे काय कायना भेद हेतुथकी एह मत्यक्ष मनुष्यना भवथकी बहु चवीने होवीती आप दोन्हुनुतुल्य सरीखा हुसे तीयोग तीहां तुल्य सामान्य जीव द्रव्य बेहुना एकहीज अर्थ कहेतां प्रयोजनछे. बेहुने अनंत सुख प्रयोजनपणायकी अथवा नाठा कहीतां एक क्षेम आश्रीत बेहु सीद्धक्षेत्रनी अपेक्षाए वीसेस रहीत जीम हवे तीम नाना नात्य० नानापणा रहीत बेहुना तुल्य ज्ञानादी पर्याय हुस्ये इत्यर्थ

इम कीधो के हे गौतम ताहरे मुझथकी घणा भवनो स्नेह छे इहांथी चवीने बेहु मुक्ति जाईं तीहांथी बेहुतुल्य थाईं पण तुम पाठे अष्टापद जावो इम नथी कह्यो एहनी टीका मध्ये अष्टापद जावो कह्यो छे. तीवारे कहीए जे टीका तो मुक

एटलो अधीको पाठ कहेछे ते घात सुत्र वीरुद्धछे. आवता कालना तीर्थंकर हजुसुधी अवीरती अपचखाणी च्यारे गती मध्ये होवे ते कीम वदाए ? पण एम जाणे जे गुण रहीत आवता कालना तीर्थंकर द्रव्य नीखेपेछे, ते वांदवा मानीए तो गुण रहीत थापना नीखेपो वांदता शेहेज थाइ, पण इम नथी. ठाम ठाम सीद्धांत मध्ये नमोथुण ईंद्रे कीधां, तथा उववाइ मध्ये राजा कुणीके कीधां अबंडने सीप्पे कीधां. रायपसेणी मध्ये सुरीयाभे कीधां. राइपसेणी मध्ये राजा परदेशीये कीधां भगवती मध्ये खधक मुनीए कीधां ज्ञाता मध्ये अरणक श्रावके कीधां, इम अनेक ठामे नमोथुण कह्यांछे, तीहां सीद्धने नमोथुण कह्यो तीहां छेलो पद ठाणसपत्ताणं कह्यो अने अरीहंतने नमोथुण कह्यो तीहां छेडे ठाण सपावीओ कामस एटला लगे कह्यो, सेखपद कोइ सुत्रमां नथी कह्यां, ते माटे प्रखेपीने घधार्या छे.

वली ईंस्याधरमी कहे छे जेः नमोथुण तो ईंद्रनो कह्यो थीयो छे सीद्धांततो गणधरना मुख वीना छोडाय नहीं रुखभदेव गर्भमां उपना तीवारे इंद्रे पोताना म नथकी जोडयो नथी. पुर्व सुवना समद्रष्टी साधु हता ते पडीत मरण करी ईंद्रपणे उपना ते सु नमोथुणादीक घणा पदार्थ जाणता न हुता ? तथा माहावीदेह खेत्रे सास्वता नमोथुणा छे के नथी ते जोवो जीहां वीयमान जीन छे तीहांकणे कांमरस ए अतपद छे सेखपद नथी एटलां पद नवां केम जोडया छे ?

---

१२ च्यार निंखेपानो जाणपणो

ईंस्याधरमी कहेते जे च्यार नीखेपा सुत्र मध्ये कह्या छे. १ नाम नीखेपो. २ स्थापना नीखेपो. ३ द्रव्य नीखेपो ४ भाव नीखेपो ते माटे स्थापना नीखेपो मांनीए छीए एम कहे छे, ते घात सुत्र वीरुद्ध कहे छे. श्री अनुजोगद्वार मध्ये सुत्रे च्यार नीखेपा कह्या छे ते सत्य छे, पण च्यार नीखेपा वदनीक तो कह्या नथी. एक भाव नीखेपो वदनीक कह्यो छे

नामजिणाजिण नामा ॥ ठवणानिक्षेपोजिणंदपडीमाउ ॥
दव्वजिणाजिणसरीर ॥ भावजिणाजिणअीरहता ॥ १ ॥

ए च्यार नीखापानो स्वरुप कह्यो, हवे च्यार नीखेपानो अर्थ वीस्तारीने सुत्र अर्थरुप कहे छे अनुजोगद्वार मध्ये प्रथम च्यार नीखेपा आवस्यक उपर देखाडया छे. पछे सुत्र शब्द उपर देखाडया छे. पछे खध शब्द उपर देखाडया छे,

मायश्चित कह्यो छे प्रायश्चित छीपा वीन्या काळ करे तो वीराद्धक कह्यो वळी स-तक वीसमे उद्देसे तथा बीजा पण घणे ठामे छमथी फोरवतां मायश्चित कह्यो छे. जे पावे विराद्धिक थाय ते उपदेश भगवतजी गौतमने कीम देवे ? वळी करे कीरण पकडया विना चढाइ नहीं तो, पनरसें तापस वेसी कीम रह्या हता. तथा गौतमना साधु पण रीते चढया ? सर्व तो लबधीधारी हुवा नहीं

१३. वळी ढींस्याधरमी कहेछे जेः पनरसे तापस केवळी थया, ए पण सुत्र विरुद्ध कहेछे. सीद्धांत श्रीभगवती सतक पांचमे उद्देसे चोथे कह्यो जेः सातमा देवलोकना देवताये भगवतनी पासे आवीने पुछयो जे भगवन तमारा केटला साधु केवळ पामीने मुक्ति जाशे. तीवारे भगवते कह्यो

मम सत्तंतेवासी सयाइ सीझीस्संति

मारा सातसे केवळी मुक्ति जाशे, पण अधिका नथी कह्या वळी कल्पसुत्रमां पण भगवतने सातसें केवळीनी सपदा कही.

१४. कदाचीत ढींस्याधरमी कहे जेः ए पदरशे केवळी तो गौतमनी सपदामां हवा ते माटे सातसेंमां न गण्या, ए पण जुठ्ठ गौतमने शिष्य तो ठाम ठाम सीद्धांत मध्ये पांचसेंह कह्यांछे अने कल्पसुत्रमां पण पांचसें साधु गौतमने अने सुधर्मा स्वामीने कह्या छे

१५. तथा कृतम वस्तुनी स्थिति सरुपावा काळनी सुत्रपाठे भगवती मध्ये कहीछे, तो भरथना कराव्यां बींब श्रीमाहावीरना वारा लगे कीम रहे ? अने गौतम कीम वांदे ? ते वीचारी जोजो.

---

११ नमोथुणनो पाठ सुत्रनी साखे

ढींस्याधरमी नमोथुणं कहेछे तेहने छेदे

जियभयाण ॥ जेअअईआसिद्धा ॥ जेअभविस्संतणागए-काले ॥ संपइअवट्टमाणा ॥ सव्वेतिविहेणवंदामी ॥ १ ॥

अर्थ—जी. सात मकारना भय रहीत जे जे अतीतकाले तीर्थंकर थइ सीद्ध पर्यायपणुं पाम्या जे जे अनागत काले तीर्थंकर पर्याय पामी सीद्धपणुं पामशे स. संप्रतीते हमणां वर्त्तमानकाळे जे सीद्ध थायछे, एटले वर्त्तमाने जे महाविदेहमां छद्मस्थपणे वीचरेछे ते स सर्व तीर्थंकरप्रते वि मन वचनने कायाए त्रीवीधे करी वं. हुं वांदुछुं. १

एटले अधीको पाठ कहेछे ते वात सुत्र वीरुद्धछे. आवता कालना तीर्थंकर हजुसुधी अवीरती अपचखाणी च्यारे गती मध्ये होवे ते कीम वंदाए ? पण एम जाणे ने गुण रहीत आवता कालना तीर्थंकर द्रव्य नीखेपेछे, ते वांदवा मानीए तो गुण रहीत थापना नीखेपो वांदता शेहेठ थाइ, पण इम नथी. ठाम ठाम सीद्धांत मध्ये नमोथुण इंद्रे कीधां, तथा उववाइ मध्ये राजा कुणीके कीधां अबंडने सीष्ये कीधां. रायपसेणी मध्ये सुरीयाभे कीधां. राइपसेणी मध्ये राजा परदेशीये कीधां भगवती मध्ये खधक मुनीए कीधां ज्ञाता मध्ये अरणक श्रावके कीधां, इम अनेक ठामे नमोथुण कह्यांछे, तीहां सीद्धने नमोथुणं कह्यो तीहां छेल्लो पद ठाणंसपत्ताणं कह्यो अने अरीहंतने नमोथुण कह्यो तीहां छेडे ठाण सपावीओ कामस एटला लगे कह्यो, सेसपद कोइ सुत्रमां नथी कह्यां, ते माटे प्रखेपीने वधार्या छे.

वली हींस्याधरमी कहे छे जेः नमोथुण तो इद्रनो कह्यो थीयो छे सीद्धांततो गणधरना मुख वीना छोडाय नहीं रुखभदेव गर्भमां उपना तीवारे इंद्रे पोताना म नथकी जोडयो नथी. पुर्व सुत्रना समद्रष्टी साधु हता ते पंडीत मरण करी इंद्रपणे उपना ते शु नमोथुणादीक घणा पदार्थ जाणता न हुता ' तथा माहावीदेह खेत्रे सास्त्रता नमोथुणा छे के नथी ते जोवो. जीहां वीयमान जीन छे तीहांकणे कांमस्स ए अतपद छे सेसपद नथी एटलां पद नवां केम जोडया छे ?

---

१२ च्यार निंखेपानो जाणपणो.

हींस्याधरमी कहेते जे च्यार नीखेपा सुत्र मध्ये कह्या छे. १ नाम नीखेपो. २ स्थापना नीखेपो. ३ द्रव्य नीखेपो. ४ भाव नीखेपो ते माटे स्थापना नीखेपो मांनीए छीए एम कहे छे, ते वात सुत्र वीरुद्ध कहे छे. श्री अनुजोगद्वार मध्ये सुत्रे च्यार नीखेपा कह्या छे ते सत्य छे, पण च्यार नीखेपा वदनीक तो कह्या नथी. एक भाव नीखेंपो वंदनीक कह्यो छे

नामजिणाजिण नामा ॥ ठवणानिक्षेपोजिणदपडीमाउं ॥
दव्वजिणाजिणसरीर ॥ भावजिणाजिणअीरहता ॥ १ ॥

ए च्यार नीखापानो स्वरुप कह्यो, हवे च्यार नीखेपानो अर्थ वीस्तारीने सुत्र अर्थरुप कहे छे. अनुजोगद्वार मध्ये प्रथम च्यार नीखेपा आवस्यक उपर देखाडया छे. पछे सुत्र शब्द उपर देखाडया छे. पछे खंध शब्द उपर देखाडया छे,

पछे जे जे वस्तु जगत मध्ये वरते छे ते ते वस्तु उपर उतारवा. ए करी मुक्यो छे ते अनुसारे

१ अरीहंत वन्दना चार नीखेपा करे छे

१ नामअरीहंत २ थापनाअरीहंत ३ द्रव्यअरीहंत. भावअरीहंत.

१ तीहां नाम अरीहंत ते माता पीताये पुत्रनो नाम रुखभो, सांतो, नेमो, वीरो, वर्धमान, जीनदत्त, जीनरखक, जीनपालक, एहवा अरीहंतने नामे नाम दीधां जीम अरहणए समणोवासए इत्यादीक नाम. अरीहंतनाम धरीलपण माटे नाम अरीहंत, पण अरीहंतना गुण रहीतपणा माटे (अवंदनीक) वांदवा जोग नथी

२ थापना अरीहंत ते अरीहंतना शरीर सरखो आकार कीधो. काष्ट, पाखाण, माटी चीत्राम, घुंघरा, पीतळ, धातु, प्रमुखनो तेहने वीषे अरीहंतनो भाव आरोप्यो, पीण अरीहंतना गुण नथी ते माटे अवंदनीक जीम मल्लीनाथ स्वामीये पोतानी मुरती करावी. तथा १ रूखभानना २. वर्धमाना. ३. चंद्रानना. ४ वारीखेणा. पर्वते, देवलोके, सास्वती कही छे. पीण गुण रहीतपणा माटे वांदवा जोग्य नथी

३ द्रव्यअरीहंतना पांच भेद १ जाणगसरीर द्रव्यअरीहंत २ भवीयसरीर द्रव्यअरीहंत. ३ लोकीक द्रव्यअरीहंत. ४ कुभावचनीक द्रव्य अरीहंत ५ लोकोत्तर द्रव्यअरीहंत नाम, स्थापना अरीहंतनो अर्थ शुगम्य.

१ श्री अरीहंतदेव मुक्ति गया तेहनुं शरीर पड्युं छे. ते शरीर जाणगसरीर द्रव्यअरीहंत कहीए. जीम ए घृतनो घडो हतो तीम

२ तथा ग्रहवासे वसता अरीहंत हजुसुधी अरीहंतना गुण आमनीकाळे आवसे. हजुसुधी आव्या नथी, ते भवीयसरीर द्रव्यअरीहंत जीम ए घृतनो घडो होस्ये, पण हमी थीयो नथी तीम

३ तथा लोकीक द्रव्यअरीहंत ते सत्रुने मारीने जीतो ते चक्री, वासुदेव, राजादीक.

४. तथा कुभावचनीक द्रव्यथकी अरीहंत ते चोत्रीस अतीसय वीना देव कहावे, हरी, हर, ब्रह्मादीक ते,

५ तथा लोकोत्तर द्रव्यअरीहंत, ते गोसाला प्रमुख; जीनसासनमांही केव-

ज्ञान वीना अरीहंत कहेवाणा, ते लोकोत्तर द्रव्यअरीहंत ए पांच भेद द्रव्य-अरीहंत नीक्षेपाना कह्या.

४ भावअरीहंत ते लोकोत्तरपक्षे केवलज्ञानादी सर्व गुण सहीत वरतेछे वंदनीक वांदवा जोग्य छे. ए अरीहंतपदना चार नीक्षेपा कह्या.

२. हवे गुरु आचार्य पदना च्यार नीक्षेपा कहेछे.

१ नामआचार्य. २ थापनाआचार्य ३ द्रव्यआचार्य, ४ भावआचार्य.

१. नामआचार्य ते कोइ जीव तथा अजीवनो नाम आचार्य दीधु ते नामआचार्य.

२. थापनाचार्य ते काष्ट, पाखाण, पीतल, चीत्राम, कुंयरानो करी आचार्यपणे मान्यो, ते थापनाचार्य ए नामने थापनाआचार्य गुण रहीतपणा माटे अवंदनीक

३. द्रव्यआचार्यना पांच भेद १ जाणगशरीर द्रव्यआचार्य. २ भवीयशरीर द्रव्यआचार्य ३ लोकीक द्रव्यआचार्य ४ कुमावचनीक द्रव्यआचार्य. ५. लोकोत्तर द्रव्यआचार्य ए पांच भेद हवे तेनी समजण कहेछे.

१. तीर्हा गुणवंत गुरुये काल कीधो, तेहनो शरीर पड्योछे. ते शरीर नाम जाणगशरीर द्रव्यआचार्य, जेम ए घृतनो घडो पुर्वे हतो तेम.

२. शरीरनो धणी कालांतरे आचार्यपणो पामशे, पण हजी पाम्यो नथी ते भवीयशरीर द्रव्यआचार्य. जेम ए घृतनो घडो थासे तेम.

३. लोकने बोंहोतेर कला सीखावे ते लोकीक द्रव्यआचार्य

४ त्रणसें त्रेसठ पाखंडीना गुरु, ते कुमावचनीक द्रव्यआचार्य

५. जीनमारग मध्ये हीणाचारी, छकायनी दया रहीत, पांच माहाव्रत रहीत, आधाकरमी आदी दश दोष आहार उपध्य, उपाश्रय सेवे; ते लोकोत्तर द्रव्यआचार्य ए पांच द्रव्याचार कह्या, पीण गुण वीना अवंदनीक.

४. भावआचार्य ते लोकोत्तरपक्षना साधु सत्तावीश गुण सहीतः केसी, गौतम, सुधर्म, जंबु, प्रमुख ते भावआचार्य गुणवंत वंदनीक. ए गुरु आचार्यना चार नीक्षेपा कह्या.

३ हवे धर्म शब्दना चार नीक्षेपा कहेछे

१ नामधर्म. २ थापनाधर्म ३ द्रव्यधर्म. ४ भावधर्म. तेनो वीस्तार.

१. नामधर्म ते कोइक जीव अजीवनो नाम धर्म, धर्मदास, धर्मचंद, धर्मसी, नाम दीधो ते नामधर्म अवंदनीक.

पछे जे जे वस्तु जगत मध्ये वरते छे ते ते वस्तु उपर उतारवा. ए कही मुक्यो छेः ते अनुसारे

१ अरीहंत वन्दना चार नीखेपा करे छे

१ नामअरीहंत २ थापनाअरीहंत ३ द्रव्यअरीहंत. भावअरीहंत.

१ पीहां नाम अरीहत ते माता पीताये पुत्रनो नाम रुखभो, सांतो, नेमो, वीरो, वर्धमान, जीनदत्त, जीनरखक, जीनपालक, एहवा अरीहंतने नामे नाम दीधां जीम अरहणए समणोवासए इत्यादीक नाम. अरीहंतनाम शरीखवा माटे नाम अरीहत, पण अरीहतना गुण रहीतपणा माटे (अवंदनीक) वांदवा जोग नथी

२ थापना अरीहंत ते अरीहंतना शरीर सरखो आकार कीधो. काष्ट, पाखाण, माटी चीत्राम, धुंपरा, पीतल, धातु, प्रमुखनो तेहने वीषे अरीहंतनो भाव आरोप्यो, पीण अरीहंतना गुण नथी ते माटे अवंदनीक जीम मल्लीनाथ स्वामीये पोतानी मुरती करावी. तथा १ रुखभानना २. वर्धमाना. ३ चंद्रानना. ४ वारीसेणा. पर्वते, देवलोके, सास्वती कही छे. पीण गुण रहीतपणा माटे वांदवा जोग्य नथी

३ द्रव्यअरीहंतना पांच भेद १ जाणगसरीर द्रव्यअरीहंत २ भवीयसरीर द्रव्यअरीहंत. ३ लोकीक द्रव्यअरीहंत. ४ कुमावचनीक द्रव्य अरीहंत. ५ लोकोत्तर द्रव्यअरीहंत नाम, स्थापना अरीहंतनो अर्थ सुगम्य.

१ श्री अरीहंतदेव मुक्ति गया तेहनुं शरीर पड्युं छे. ते शरीर जाणगसरीर द्रव्यअरीहंत कहीए. जीम ए घृतनो घडो हतो तीम

२ तथा ग्रहवासे वसता अरीहंत हजुसुधी अरीहंतना गुण आगमीकाळे आवशे. हजुसुधी आव्या नथी, ते भवीयसरीर द्रव्यअरीहंत जीम ए घृतनो घडो होस्ये, पण हजी कीधो नथी तीम

३ तथा लोकीक द्रव्यअरीहंत ते सत्रुने घातीने जीतो ते चक्री, वासुदेव, रामादीक.

४. तथा कुमावचनीक द्रव्यथकी अरीहंत ते चोवीस अतीसय वीना देव कहावे, हरी, हर, ब्रह्मादीक ते,

५ तथा लोकोत्तर द्रव्यअरीहंत, ते गोसाळा प्रमुख; जीनसासनधारी देव

छद्मस्थ वीना अरीहंत कहेवाणा, ते लोकोत्तर द्रव्यअरीहंत ए पांच भेद द्रव्य-अरीहंत नीक्षेपाना कह्या.

४ भावअरीहंत ते लोकोत्तरपक्षे केवलज्ञानादी सर्व गुण सहीत वरतेछे वंद-नीक वांदवा जोग्य छे. ए अरीहंतपदना चार नीक्षेपा कह्या.

२ हवे गुरु आचार्य पदना च्यार नीखेपा कहेछे.

१ नामआचार्य. २ थापनाआचार्य ३ द्रव्यआचार्य, ४ भावआचार्य.

१. नामआचार्य ते कोइ जीव तथा अजीवनो नाम आचार्य दीधु ते नामआचार्य.

२. थापनाचार्य ते काष्ट, पाखाण, पीतल, चीत्राम, इंयरानो करी आचार्यपणे मान्यो, ते थापनाचार्य ए नामने थापनाआचार्य गुण रहीतपणा माटे अवंदनीक

३. द्रव्यआचार्यना पांच भेद १ जाणगशरीर द्रव्यआचार्य. २ भवीयशरीर द्रव्यआचार्य ३ लोकीक द्रव्यआचार्य ४ कुभावचनीक द्रव्यआचार्य ५. लोकोत्तर द्रव्यआचार्य ए पांच भेद हवे तेनी समजण कहेछे.

१. सीहां गुणवंत गुरुये काल कीधो, तेहनो शरीर पडयोछे. ते शरीर नाम जाणगशरीर द्रव्यआचार्य, जेम ए घृतनो घडो पुर्वे हतो तेम

२. शरीरनो धणी कालांतरे आचार्यपणो पामशे, पण हजी पाम्यो नथी ते भवीयशरीर द्रव्यआचार्य. जेम ए घृतनो घडो थासे तेम.

३. लोकने बोंहोतेर कळा शीखावे ते लोकीक द्रव्यआचार्य.

४ त्रणसें त्रेसठ पाखंडीना गुरु, ते कुभावचनीक द्रव्यआचार्य

५. जीनमारग मध्ये हीणाचारी, छकायनी दया रहीत, पांच माहाव्रत रहीत, आधाकरमी आदी दश दोष आहार उपध्य, उपाश्रय शेवे; ते लोकोत्तर द्रव्यआचार्य ए पांच द्रव्याचार कह्या, पीण गुण वीना अवंदनीक

४. भावआचार्य ते लोकोत्तरपक्षना साधु छत्तीस गुण सहीतः केसी, गौतम, सुधर्म, जंबु, मभूस ते भावआचार्य गुणवंत वंदनीक. ए गुरु आचार्यना चार नीखेपा कह्या.

३ हवे धर्म शब्दना चार नीखेपा कहेछे

१ नामधर्म २ थापनाधर्म. ३ द्रव्यधर्म. ४ भावधर्म. तेनो वीस्तार.

१. नामधर्म ते कोइक जीव अजीवनो नाम धर्म, धर्मदास, धर्मचंद, धर्मसी, नाम दीधो ते नामधर्म अवंदनीक.

थापनाधर्म ते धर्मवंतनो. आकार आलेरयो, काष्ट, पाखाण, धातु, चीत्राम, धुंयराधीकनो ते थापनाधर्म. गुण वीना अवंदनीक.

३. ध्रव्यधर्मना पांच भेद, १ जाणगशरीर, ध्रव्यधर्म २ भवीयशरीर ध्रव्यधर्म ३ लोकीक ध्रव्यधर्म ४ कुमावचनीक ध्रव्यधर्म ५ लोकोत्तर ध्रव्यधर्म.

१. धर्मवंतनो शरीर जीव वीना पड्यो होय ते जाणगशरीर ध्रव्यधर्म जेम ए घृतनो घडो हतो तेम.

२. एणे सरीरे आगली काळे एहने धर्मना गुण आवशे, पण हजु आव्या नथी. ते भवीय सरीर ध्रव्यधर्म, जेम ए घृतनो घडो थाशे पण हजी लगे थीयो नथी तेम.

३. लोकीक ध्रव्यधर्म ते गाम, नगर, देश, न्यात, जात, कूलनो, जीत आचार पाळे ते लोकीक ध्रव्यधर्म.

४. कुमावचनीक ध्रव्यधर्म ते त्रणसें त्रेसठ पाखंडीना मत दानधर्म, शुचीधर्म, जात्रा, स्नान, श्राद्ध, जाग, होम, देव देवीना देहरां इत्यादीक कुमावचनीक ध्रव्यधर्म

५ लोकोत्तर ध्रव्यधर्म ते गोसालामत, जमालीमत वेहनो ज्ञानदर्शन, चारीत्र, पर्व प्रमुख ने छकायनो वधकरी धर्म माने ते

४ भावधर्मना बे भेद. १ श्रुतधर्म ज्ञान दर्शनरुप २ चारीत्र धर्म वीरती तपरुप साधु ने श्रावकनो आचार, आरंभ परीग्रह रहीत वीखय कखाय रहीत ए भावधर्म लोकोत्तर ते वंदनीक.

८

ए देव, गुरु धर्मना चार नीक्षेपा कह्याछे, इमज भाव आवस्यक प्रमुख घणा पदार्थना चार नीक्षेपा अनुजोगद्वार सुत्रमां कह्याछे, ते मध्ये एक भाव नीक्षेपो लोकोत्तर पक्षनो वंदनीक सेखभेद अवंदनीक जाणवा

१ हवे कोइ हींस्याधरमी कहेशे जे तीर्थंकरना चार नीक्षेपा वंदनीक छे ते अमे वांदीएछीए तेनो उत्तर. जो तीर्थंकरनो नामनीक्षेपो वांदवो तो तीर्थंकरने नामे अनेक पुरुषछे रुखभो, सांतो, नेमो, वीरो, वर्धमान, एहने तीर्थंकरना नामना सरीखपणा माटे वांदता केम नथी ? तेवारे हींस्याधरमी कहेशे जे, लोगस मध्ये चोवीस तीर्थंकरना नाम लीधेछे ते नाम नीक्षेपो वांदीए छीएजनो ते उत्तर लोगस मध्ये चोवीस तीर्थंकरना नाम कीर्तन तेतो नाम सत्याछे ते नाम नीक्षेपो नथी अनुजोगद्वार मध्ये कह्योछे जे

नामाणी जाणि काणिय ॥ दव्वाणय पजवाणंवा ॥ तेसिं आगम निहस ॥ नामतिपरुनियासन्ना ॥ १ ॥

अर्थ–ना नाम जा जे कोइक द जीव अजीव प्रव्यना गुणानादीका अनेक रुपादीका गुणना प. नारकादीकना अनेक, कृष्णपणादीक नाम जीवना नाम जीवनतु आत्मा प्राणी इत्यादीक आकाश नाम आकासम तारा पयव्योम अवर इत्यादी गुण नाम ज्ञान बुद्धि बोध तथा रुप, रस, गंध, स्पर्श, इत्यादीक तथा पर्याय नाम नारकी श्रीयच नरदेव तथा एक गुण कृष्न इत्यादीक. मा आगम ज्ञा नरुपणी जे कसोटीने वीख नाम पदवी सज्ञारुपणी जीम सोनुं, रुपु, कसोटीए प रखे तीम सोना रुपा सरखा जीव पदार्थ परखीने कीजे, नामादीकनुं ज्ञान ते कसोटी छे

लोगस मध्ये नाम छे, ते तो मुक्ति गया भाव सीद्ध नीखेपा मध्ये वरतेछे ए नाम नीखेपो नहीं तीर्थंकरना नाम अनेरी वस्तु मध्ये पामीए, ते वस्तु नाम द्वारे तीर्थंकर नाम थकी मीले ते वस्तुने नाम नीखेपो कहीए ते माटे तुमारे मते जीन नामे जे पुरुष होय ते सर्व तुमारे वदनीक जोइए तेहने कीम नथी वांदता? जीवारे चोवीश जीनवर वरतता हता तीवारे नाम तो एहीज हता पीण नाम नीखपो न कहीए साक्षात भाव नीखेपो हतो ऋखभादीकनो नाम ऋखभादीक वो ते नाम नीखेपो नहीं, ते नामसज्ञा कहीए, जे अनेरानु नाम ऋखभादीक कहेवाय तेह वस्तुनु नाम नीखेपो कहीए, ते तमे कां वांदवा नथी ?

२ तेथी नजीक थापना नीखेपो तेतो तमे मानोछो. तेहनी चरचा आगले कहेवाशे, पेहेला प्रव्य नीखेप नी लखे छे

१. तमे कहोछो जे, भरथेशरे श्रीदृष्टीआने चरम तीर्थंकर थातो जाणीने वां दयो ए प्रव्य जीन वंदनीक थीयो, पण ए वात तो सीद्धांत मध्ये कीहांय कही नथी सीद्धांत मध्ये अतगड सुत्रे पांचमे वर्ग श्री कृष्णने नेमनाथ स्वामीए कह्यो जे

एव खलु तुम देवाणुप्पिया तच्चाउ पुढव्वीउ उजलीयाउ नरगाउ अणतर उव्वट्टित्ता इहेव जंबुद्दीवे२ भारहेवासे पुंडेसु जणवएसु सतदुवार नयरे वारसमो अमम्मो नाम अर्हा भवि-

स्सइ तथ तुम्मं बहुर वासाइं केवली परियागं पाउणित्ता सिझि हिति तएण से कन्हे वासुदेवे अरहउं अरिठनेमी अंतिए एय मठं सोचा निश्रम्म हठ तुठे अफोडेईरत्ता तिवइछेदिइरत्ता सीह नाय कोरईरत्ता

अर्थः—ए. एम स नीभ्ने तु. तमे दे. हे देवानुंप्रीय. त श्रीजी. पु. मथवी. उ. उमठी, छप न नरकथकी अ आंतरा रहीत. उ नीकळीने इ. एहीज जं. जंबु द्विपे-२. भा. भरथ खेत्रे पु पुंड्र ज. देशने वीषे. स सयद्वार. न नगरने वीषे. बा बारमो अ. अमम. ना. नामे अ. तीर्थंकर. भ थाइश. त. तीहां. तु. तमे. व. घणा. वा वरसनी. के. केवळीनी प पर्याय पा पाळीने सि. सर्व कार्य सीद्ध थाशे मुक्ति जाशे त. तीवारे से ते क. कृष्ण वा वासुदेव. अ. अरीहंत अ. अरी-ष्टनेमीने अं. समीपे ए ए अर्थ. सो सांभळीने नि विमासी इ. हर्ख. तु. संतोष पामे अ अस्फोट कर्यो, हर्ख करीने. ति. त्रीहुंफाळे उदक्यो उदकीने. सीं. सींह नाद करे करीने

हे कृष्ण तुं बारमो जीन थाइश एम कह्यो ते सांभळीने श्रीकृष्ण हरख्या, नाच्या, कुद्या, त्रीपदी छेदी, सींघनाद कीधो, पोताना मन थकी आनंद पाम्या, पण जीन द्रव्य जाणीने कोइ गणधरे, साधुए, श्रावके, देवताए, वांदया नहीं असे-स्या नहीं तो द्रव्य नीखेपो केम वंदनीक होवे ? २ वळी ठांणाग सुत्र नवमेठाणे श्रीमहावीरे समा मध्ये कह्यो छे, श्रेणीक राजा मुज सरीखो जीन प्रथम थकी थाशे आउखो, औगाहणा, परीवार, परुपणा, मुज सरखी करशे एम कह्यो पण ते समये साधु, श्रावके, गणधरे, देवताए, कोइए वांदया नहीं. तो द्रव्य नीखेपो वंदनीक कीम होवे ?

१ वळी ज्ञाता अध्ययन आठमे अरणक श्रावक मीथुळानगरीए गया कुंभ राजाने कुंडळनो जोडो आप्यो, पीण अनेसर मध्ये मल्लीनाथ स्वामी त्रण ज्ञान खायक समकीत सहीत चोसठ इंद्रना पुजनीक हता, तेहने जाणे छे. तो द्रव्य नीखेपाने वांदवा कीम न गया ? तथा कोइ साथे वंदणा पोहोचाडी पीण कीम नहीं ? तथा कुंडळ जीन जाणीने भेट केम कीधां नहीं ? तो द्रव्य नीखेपो वंदनीक कीम होवे ?

४. वळी छ राजा मोहनघरमां आव्यां, त्यां मल्लीनाथ स्वामीने साक्षात जीन जाण्या, पोताने जाती समरण प्राम्याना, उपजवाना, कारणीक जाण्या, पण वंदना कीधी नहीं, तो भ्रव्य नीखेपो वंदनीक कीम होवे ?

५. वळी मल्लीनाथ स्वामीनी प्रतिमाने स्थापना नीखेपो जाणीने पोताने जातीस्मरण तथा चारीत्रनुं कारणीक जाणीने वांदीए नहीं. तो स्थापना नीखेपो पण वंदनीक कीम होवे ?

६. समवायंग मध्ये वर्त्तमान चोवीशे जीनना भाव नीखेपाना धणी जीनना नाम गणधरे कीधा तीहां कह्यो

उसभ मजीयं च वंदे जिणे च चदपहं वंदे धम्मो संतं च वंदामी वंदे मुनीसुवयं नेमिजिणं च वदामी

अर्थ—उ. रीखभदेव स्वामी म. अजीतनाथ स्वामी. वं. वांदुछुं. जी. राग द्वेषना जीतनार च वळी. चं चंद्रप्रभु स्वामी. वं वांदुछुं. ध. धर्मना स्वामी स सांतीनाथ स्वामी. च. वळी व. वांदुछुं. वं वांदुछुं. मु. मुनीसुव्रत स्वामी. न नमीनाथ स्वामी. च. वळी. वं. वांदुछुं.

ए वंदे शब्द कह्यो. अने आवती चोवीशीना जीन थाणहार छे श्रेणीक, कृष्णादीकना जीव तेहना नामहीज कह्या, पीण वंदे शब्द न कह्यो. हजुसुधी अव्रती अपचखाणी वरते छे ते माटे तो भ्रव्य नीखेपो वंदनीक कीम होवे ?

७ वळी भगवती शतक नवमे उदेशे बत्रीशमे गंगेय अणगारे श्री माहावीरने भ्रव्य जीन जाण्या, तीहां लगे वांदया नहीं. पछे भंगजाळ पुछी निःसंदेह थयो, साक्षात भाव नीखेपे केवळी जाण्या, पछे वांदया ते पाठ कहे छे.

तुप्पभिइंचणं से गंगेय अणगारे समण भगवं माहावीर पच्चभि जाणइ सव्वनुण सव्वदरसी

अर्थ—त जे समयने वीखे भगवंत अनत रोक्त वक्त कर्युं तेहीज समय भमति कहेतां आदे देइने ते गगेय अणगार भगवत श्री माहावीर प्रते जाणे. इ. सर्व वस्तुना जाण, सर्व वस्तुना देखणहार.

तो भ्रव्य नीखेपो वंदनीक कीम होवे ?

८. वळी श्री तीर्थंकर देव घरवासे होवे, छकायने आरंभे वरते तीहांलगे साधु. श्रावक, वादे नहीं अवरती माटे, तो भ्रव्य नीखेपो वदनीक कीम होवे ?

रसइ तथ तुम्मं महुर वासाइं केवली परियाग पाउणित्ता सिध्धि हिति तएण से कन्हे वासुदेवे अरहउ अरिठनेमी अंतिए एय मठं सोचा निशम्म हठ तुठे अफोडेईरत्ता तिवइछेदिइरत्ता सींह-नाय केर्इरत्ता

अर्थः—ए. एम स नीश्चे तु. तमे दे. हे देवानुंमीय. त श्रीजी. पु. मथवी. उ. उगली, छप न नरकथकी अ आंतरा रहीत. उ नीकळीने इ. एहीज. जं. जंबु द्विपे-२. भा. भरथ खेत्रे पु खुद ज देशने वीखे. स सयद्वार न नगरने वीखे. बा बारमो अ. अमम. ना. नामे अ तीर्थंकर. भ थाइश. त. तीहां. तु. तमे ब. घणा. वा वरषनी. के. केवळीनी प पर्याय पा. पाळीने सि. सर्व कार्य सीद्ध थाशे मुक्ति जाशे त. तीवारे. से ते क. कृष्ण वा वासुदेव. अ. अरीहंत अ. अरीठ्ठनेमीने अं. समीपे ए ए अर्थ. सो सांभळीने. नि विमाशी ह हर्ख. तु. संतोष पामे अ. अस्फोट कर्यो, हर्ख करीने. ति. त्रीहुफाळे उदक्यो उदकीने. सीं. सींह नाद करे करीने

ऐ कृष्ण तुं बारमो जीन थाइश एम कह्यो ते सांभळीने श्रीकृष्ण हरख्या, नाच्या, कुद्या, त्रीपदी छेदी, सींघनाद कीधो, पोताना मन थकी आनंद पाम्या, पण जीन द्रव्य जाणीने कोइ गणधरे, साधुए, श्रावके, देवताए, वांदया नहीं असे-स्या नहीं. तो द्रव्य नीखेपो केम वंदनीक होवे ? २ वळी ठांणाग सुत्र नवमेठाणे श्रीमाहावीरे समा मध्ये कह्यो जे, श्रेणीक राजा मुज सरीखो जीन मथम थकी थाशे आवस्तो, ओगाहण्य, परीवार, परंपणा, सुम सरखो करशे एम कह्यो पण ते समये साधु, श्रावके, गणधरे, देवताए, कोइए वांदया नहीं. तो द्रव्य नीखेपो वंदनीक कीम होवे ?

१ वळी ज्ञाता अध्ययन आठमे अरणक श्रावक मीथुळानगरीए गया कुंभ राजाने कुंडळनो जोडो आप्यो, पीण जेतेवर मध्ये मल्लीनाथ स्वामी त्रण ज्ञान क्षायक समकीत सहीत चोसठ इंद्रना पुजनीक हता, तेहने जाणे छे तो द्रव्य नीखेपाने वांदवा कीम न गया ? तथा कोइ साथे वंदणा पोहोचाडी पीण कीम नहीं ? तथा कुंडळ जीन जाणीने भेट केम कीधां नहीं ? तो द्रव्य नीखेपो वंदनीक कीम होवे ?

४. वळी छ राजा मोहनघरमां आव्यां, त्यां मल्लीनाथ स्वामीने साक्षात जीन जाण्या, पोताने जाती समरण पाम्याना, उपजवाना, कारणीक जाण्या, पण वंदना कीधी नहीं, तो भव्य नीखेपो वंदनीक कीम होवे ?

५. वळी मल्लीनाथ स्वामीनी प्रतिमाने स्थापना नीखेपो जाणीने पोताने जातीस्मरण तथा चारीत्रनुं कारणीक जाणीने वांदीए नहीं. तो स्थापना नीखेपो पण वंदनीक कीम होवे ?

६. समवायंग मध्ये वर्धमान चोवीश जीनना भाव नीखेपाना धणी जीनना नाम गणधरे कीधा तीहां कह्यो

उसभ मजीयं च वंदे जिणं च चंदपहं वंदे धम्मो संतं च वंदामी वंदे मुनीसुवयं नेमिजिणं च वंदामी

अर्थ—उ. रीखभदेव स्वामी म. अमीतनाथ स्वामी. वं. वांदुछुं. जी. राग द्वेषना जीतनार च वळी. चं चंद्रप्रभु स्वामी. वं वांदुछुं. ध. धर्मना स्वामी स सांतीनाथ स्वामी. च. वळी व. वांदुछुं. वं वांदुछुं. मु. मुनीसुव्रत स्वामी. न नमीनाथ स्वामी. च. वळी. वं. वांदुछु.

ए वंदे शब्द कह्यो. अने आवती चोवीशीना जीन थाणहार छे श्रेणीक, कृष्णादीकना जीव तेहना नामहीज कह्या, पीण वदे शब्द न कह्यो. इशुसुधी अव्रती अपचखाणी वरते छे ते माटे तो द्रव्य नीखेपो वंदनीक कीम होवे ?

७ वळी भगवती शतक नवमे उदेशे बत्रीशमे गंगेय अणगारे श्री माहावीरने द्रव्य जीन जाण्या, तीहां लगे वांद्या नहीं. पछे भंगमाळ पुछी निःसंदेह थयो, साक्षात भाव नीखेपे केवळी जाण्या, पछे वांद्या ते पाठ लखे छे.

तुप्पभिइंचणं से गंगेय अणगारे समणं भगवं माहावीर पच्चभि जाणइ सव्वनुण सव्वंदरसी

अर्थ—त जे समयने वीखे भगवंत अनंत रोक्त परुक्त कशु तेहीज समय प्रमति कहेतां आदे देइने ते गंगेय अणगार भगवत श्री माहावीर प्रते जाणे. इ. सर्व वस्तुना जाण, सर्व वस्तुना देखणहार.

तो द्रव्य नीखेपो वंदनीक कीम होवे ?

८. वळी श्री तीर्थंकर देव घरवासे होवे, छकायने आरंभे वरते तीहांलगे साधु, श्रावक, वांदे नहीं अवरती माटे, तो द्रव्य नीखेपो वंदनीक कीम होवे ?

९. जुवो जे: द्रव्यनिखेपा मध्ये त्रण ज्ञान क्षायक समकित, केटलायक अतिशय छे तेहने साधु, श्रावक, वांदे नहीं तो थापनानिखेपा मध्ये ज्ञान, दरशन, चारीत्रनो एकही गुण नहीं, ते वंदनिक कीम होवे ? तथा द्रव्यगुरु द्रव्यनिखेपे वरते छे, ते पण सिद्धांत मध्ये अवंदनिक कह्या छे.

१ उपासगदसांग मध्ये सातमे अध्ययने सकडाल कुंमार समकित पाम्या पछी साधुना वेश सहीत गोसालाने पोताने घेर आव्यो देख्यो, तोपण वांदो नहीं लींग साधुनो छे पण गुण नहीं ते माटे.

२. तथा सीलगराज रुपीना शीष्य पांचसें नवाणु गुरुनो आचार सीथल जाणीने मुकी गया, पण द्रव्यगुरु जाणीने पासे न रह्या

३. तथा जमालीना साधु जमालीने मीथ्यात्वी जाणी द्रव्यगुरुने मुकी भावगुरु श्री महावीर पासे आव्या

४. तथा गोसाले भगवतने तेजुलेस्या मुकी, ते देखीने गोसालाना शीष्य द्रव्यनिखेपानो गुरु गोसालो तेहने मुकी भगवंत पासे आव्या, तो द्रव्यनिखेपाना गुरु वदनिक कीम होवे ?

५. तथा साधु चारीत्रीयो साधुने वेसे होय अने आरंभ, परीग्रह, विषय, कषाय, सेवे तेहने साधु, श्रावक, वांदे नहीं, तो द्रव्यनिखेपो वंदनिक कीम होवे ? एम अनेक सुत्र सास्त्र जाणवी भावनिखेपा विना वंदनिक न होवे जो द्रव्यनीखेपो गुण विना वंदनिक नहीं तो थापना नीखेपो निर्गुण वंदनीक कीम होवे ?

१० जीम पाषाणना लाडु कर्या, थापना लाडुनी ठेरावी, पीण भुख न भांगे, स्वाद न आवे: इमज पथ्यरना घोडा, नर, नारी, वनस्पति, जेटली वस्तुनी थापना थापे तेणे ते वस्तुनी गरज न सरे मातांने अभावे मातानी थापना, भरथारने अभावे भरथारनी थापना कीधी; बालकने दुधनी गरज न सरे, स्त्रीने भोगनी गरज न सरे एक पथ्थरना त्रण खंड (कटका) कीधा, एकनी गाय करी, एकनो वाघ कर्यो, एकनो देवता कर्यो; गाय दुध न देवे, वाघ मारे नहीं, देव तारे नहीं. तो थापना निखेपो कथन मात्रहीज छे, पण गुण रहीत, माटे गरज न सरे ते वीचारजो

११ तथा हींस्याधरमी कहेछे जे: द्रव्यनिखेपो अवंदनिक कहोछो, पण सुत्र मध्ये जुओ, गर्भमां रह्या तीर्थंकरने तथा तीर्थंकरना मृतक शरीरने इंद्रे वांद्या छे,

तो अवंदनिक कीम होवे ? तेनो उत्तर —जंबुद्वीप पन्नती मध्ये छपन दीसाकुमारी जन्म महोच्छव करवा आवी. तीहां जीत आचार कह्यो छे. ते पाठ लखेछे

उपन्ने खलु भो जंबुद्दीवे २ भगव तित्थयरे तं जीयमेयं तीत पच्चुपन्न मणागयाण अहोलोग वथवाण अठ्हदिशाकुमारिणं महातारीयाणं भगवउ तित्थयरस्स जम्ममहिमा करित्तए

अर्थ—उ. उपना. ख निस्चे भो. भोइति, आमत्रणे. ज. जंबुद्वीपनामा द्वीपने विषे भ. भगवत ति. तीर्थंकर. त. ते भणी. जी. जीत आचार छे ए. एह. अ. अतीतकाळ थया प. हवणां वर्तमान काळे छे. अ. अनागत काळे थाशे. अ. अधालोकनी व. वसनारी. अ. आठ दिसा कुमारीका. म मोटी रुधीनी धणीआणी, भगवत तीर्थंकरनो ज जन्म महोच्छव महीमा. क. करवानो आचार छे.

इम सर्वे इंद्रे पण वीचार्यो. वळी एहीज सुत्र मध्ये रुखभदेव स्वामीना निर्वाण समये इंद्रे इम वीचार्यो जे

परिनिव्वुए खलु जंबुद्दीवे२ भरहेवासे उसमे अरहा कोसलीए तजीयमेयं तीयच्चुप्पन्न मणागयाणं सक्कणदेविंदाणं देवरायातीण तित्थयराण परिनिवाणं महिमं करित्तए

अर्थ.—प परिनीवृत मोक्ष पोहोता. ख. निस्चे ज जंबुद्वीपनामा द्वीपने विखे. भ भरतक्षेत्रे उ. रुखभदेव स्वामी अ. अरीहंत. को. कोसलीक. त ते माटे जीत आचार छे अ एह अतीत. प. वर्तमान. अ अनागत काळना. स. सौधर्मेंद्र दे. देवतानो इंद्र दे. देवतानो राजा हुइ. ती तीर्थंकरनो. प परी निर्वाण. म. महीमा करे

इम सर्वे इंद्रे विचार्यो, तो ए पण व्यवहार मध्ये गण्यो पण भ्रव्यनिखेपानी भक्ति निर्जरा हेतु न गणी जो निर्जरा हेतु होवे तो, जीतव्यवहार मध्ये कीम कहे ? जीम अनार्य पुरुष मद्य भक्षण धरम जाणीने मुके तेहने धरम होवे अने वाणीया पोताना कुळआचारना लीधा मांस भक्षण नथी करता पण ते कांइ धरमखाते नथी. कुळआचारनी रीते मुक्यो छे पण व्रतनो लाभ नहीं तथा मनुष्य कुसीलनो त्याग करे. धरम जाणीने तो तेहने धरम थाय अन मुकये, अपवास

पचख्ये, लाभ थाय, पण अणुत्तरवासी देवता तेत्रीस हजार वरसे आहार करेछे. पण ते माटे नोकारसीनो पण लाभ नथी. एहनो एहवोज जीतव्यवहार छे. ते माटे जीतव्यवहार धरम मध्ये न गणाय. तथा राजा, श्रावक, समकीत श्री भगवंतने तथा साधुने वंदणा कीधी, तीहां जीतव्यवहार नथी कह्यो. तथा एहीज भगवंतने भावे वांदवा आव्या तीहां जीतव्यवहार नथी कह्यो अने देवता नमोथुणं करेछे ते पण जीतव्यवहार मध्येज छे. जे देवलोकनी प्रतिमा आगळे तथा गर्भमां रह्या तीर्थंकरने नमोथुण करेछे, पण साक्षात भगवंतने वांदवा आव्या, तीहां भगवंत हजुर कोइए नमोथुणं कह्यो थके सुं पाप लागत ? पण कोइ देवताने ६ बोल जीतव्यवहार एवोज जणाय छे तथा तीर्थंकर मुक्ति गया पछे इंद्र थुभ करावे. ते पण इंद्रनो जीतव्यवहार छे जो थुभ कराव्ये धर्म होवे तो कोइ राजाए तथा श्रावके कीम न कराव्यां ? पीण इम जाणजो जे देवतानी करणी जीतव्यवहार मध्ये छे पण मनुष्य श्रावके क्यांइ थ्रव्यनिक्षेपो थाप्यो नथी कह्यो. ते वीचारी जोजो

१२ वळी हींस्याधरमी कहेछे जे, थापना निक्षेपा मध्ये तो श्री वितरागनो गुण नथी. पण आपणे ध्याननुं कारण छे. ते माटे वांदीए छीए. तेनो उत्तर. जो प्रतिमा देखेज शुभ ध्यान आवे तो मल्लीनाथ स्वामीनो रुप देखी छराजा कामध्यान केम थया ? उपसमभाव तो मल्लीनाथ स्वामीना उपदेश थकी उपनो छे. जो प्रतिमा देखे तो शुभध्यान आवे, तो एटला अनार्य मनुष्य प्रतिमाने सेवीत करेछे, तेहने शुभध्यान कां न उपजे ? माटे दयाथी द्वेष मुकी विचार करो

---

१३. नमुनो देखीने नाम सांभळे कहेछे ते उत्तर.

वळी हींस्याधरमी कहेछे जे, नमुनो देखीने भगवंतनो नाम सांभळेछे, ते माटे थापना वांदीए छीए. तेनो उत्तरः श्रुत उत्तराध्ययन, अढारमे छेताळीसमी गाथामां कह्यो छे जेः—

करकंडु कलिंगेसु ॥ पंचालेसुय दुम्मुहे नमीराया विदिहेसु ॥ गंधारेसुय नग्गई ४६

अर्थ—क. करकंडुक राजा. क. कलींग देशने वीसे पं पंचाल देशने वीसे. दु. दुम्मुह राजा हुस्यो. न. नमीराजा विदेह देशने विषे हुस्यो, गंधार देशने वीसे. न. निगइ राजा हुस्यो ४६.

१. करकंडुराजाए कलींग देशनो राज मुक्यो. वृखम देखी मुक्यो
२. दुमुख राजाए पंचाळ देशनो राज मुक्यो. थंभो देखीने मुक्यो.
३ नेमी राजाए विदेह देशनो राज मुक्यो चुडी देखीने मुक्यो.
४. निगइ राजा गधार देशनो राज मुक्यो. आंबानो वृक्ष देखी मुक्यो
५. वळी एकवीसमे अध्ययने समुद्रपाळ चोर देखीने मुक्यो.

ए पांच जण पांच वस्तु देखीने मुक्या, पण १ वृखभ, २ थंभ, ३ चुडी, ४ आंबो, ५ चोर, ए पांचने पोताना जातीसमरण उपजवाना तथा संजम लेवाना उपगारी कारण जाणीने कोइए १ वृखम २ थंम, ३ चुडी, ४ आंबो, ५ चोर ए पांचने वांदया नहीं, तो कीम बीजा वांदशे ? वैराग्य उपजवानो निश्चे कारण तो पोतानो खयोपसमछे, अने बाहाय कारण तो अनेकछे भरथेश्वर आरीसा भवनमां केवळज्ञान पाम्या, ते माटे काइ आरीसा भवनने वांदयो, पुज्यो, नहीं, ते माटे बाहाय कारण वंदनीक नहीं, जीम छ राजा मोहनघर मध्ये मल्लीनाथनी प्रतिमा, देखी, तथा मल्लीनाथने देख्या, पोताना संजमना, जातीसमरणना, कारणीक जाणीने प्रतिनाथने तथा मल्लीनाथने वांद्या कह्या नथी ए सुत्रसाख जाणवी. तथा प्रतिमाने ध्याननें कारण जाणीने जीनमारगी वांदे, तो राजग्रही,चपा, भाकंदीया, तुंगीया, हथीणापुर, द्वारका वनीता, इत्यादीक नगरीना कोट, खाइ, चौहटा राम-भवन, वैस्याना वर्ग, छइ वखाण्या वर्णव्या, तो ते नगरी मध्ये घणा श्रावकना वर्ग, रहीता हुता, राजा पण भगवंतना परम भक्तिवंत हुता तो ते नगरीमां देहरां कीम न वरणव्यां ? जखना देहरां ठाम ठाम कह्यां ? तो जीननां देहरां कीम न कह्यां ? तथा भगवंतने वीरहे आनंद, संख, पोखळी, प्रमुखश्रावके चीत्रामनी प्रतिमा पण पुजी नथी कही आज प्रतिमा वांदवा माटे संघ काढोछो. तो साखात भगवत विसरागने वांदवा माटे कोइए श्रावके संघ कीम न काढया ? तेहने धननी सी खोट हसी ? तथा सुबाहु कुमार विपाक सुत्रमां तथा उदाइ राजा भगवतीमां एम भावना भावी के, जो भगवंत इहां आवे तो हुं वांदु, पण इम केणेइ चींतव्यो नहीं जे, संघ काढीने वांदवा जाइए तो प्रतिमा वांदवी कीहां रही ?

केटलाएक दयाना द्वेषी कहेछे जे, प्रतिमा भगवतनो नमुनोछे. ते वात कीम मीळे ? उववाइ सुत्र मध्ये कह्योछे जे, थीवर भगवंत केहवाछे.

अजिणा जिण सकासा जिणाइव अवित्तह वागरेमाणाः

अर्थ—अ परम. अ राग द्वेष जीत्या नथी, पण जी जीत्या पहवा जिन वितराग. स सरीखाछे जी जीन विसरागनीपरे. अ साचाछे. भा उत्तर पहुचर करेतां थकां.

इम साधुने बीरद् कह्यो, पीण प्रतिमाने आजिणा जिण सरखा कह्या एम रागद्वेष जीत्या नथी, पण जीत्या एहवा जीन विसराग सरखाछे, एहवो नथी कह्यो.

भगवंते देवानंदा ब्राह्मणीने कह्यो जे, मग अम्मगा पीन कोइक इम नथी कह्यो जे, मम पडीमा तो नमुनो केहेनो हुस्ये ?

पछी नमुनो तो केहेनो नामछे जे, घणी वस्तु पडी होवे, ते मांहीथी थोडीसी देखाडे ते नमुनो कहीए, पण वस्तु फेर होय तो नमुनो नहीं, जेम सोनानो नमुनो ते सोनो, पण पीतळ, तो नहीं. आंबानो नमुनो ते आंबो, पण आकडो तो नहीं हाथीनो, नमुनो ते हाथी पण गर्दभ (गधेडो) तो नहीं अन्नीनो नमुनो ते अन्नी पण पुतळी तो नहीं. रत्ननो नमुनो ते रत्न, पण कांकरो तो नहीं एम घण्णां द्रष्टांते. तीम ज्ञान, दर्शन, चारीत्र गुण सहीत साक्षात विसरागदेव तेहनो नमुनो ते साधु. ज्ञान, दर्शन, चारीत्रवंत छे, पण ज्ञानादीक गुणहीण प्रतिमा ते नमुनो नहीं. साधुनो नमुनो ते साधुज, पण गोसळा, जमालीमती, पासथा, वेषधारी निःनव ते नमुनो नहीं, गुणरहीत माटे अने वेष सरखा तेथी समद्रष्टी, श्रावक, तेहने वंदणा करे नहीं तो श्रीविसरागना गुण वीन्या विसरागनी प्रतिमा, कीम वंदनीक थाय ?

---

१४. नमो बंभीए लीवीए कहेछे तेनो उत्तर.

हींस्याधरमी कहेछे जे, भगवतीने धुरे नमो बंभीए लीवीए एहवो पाठ छे. तेहनो अर्थ नमस्कार होवे. ते उत्तर ब्राह्मीलीपीकने तीहां इम कहेछे जे, अढार लीपी अक्षरनी स्थापना ते रुखभदेवस्वामीए पोतानी पुत्री ब्राह्मीमते शीखावे ते रुखभदेवनेज नमस्कार थयो एटले लीपीकर्मनो सीखावणहार तेहीज लीपी कहीए. जीम अनुजोगद्वारे पाथानो जाण पुरुष तेहीज पाथो, तीम लीपीनो जाणहार, सी खावणहार, तेहीज लीपीक तेहने नमस्कार थयो एणे भाव नय प्रमाणे रुखभदेव-नेज नमस्कार सुधर्म स्वामीए कीधो मुळ अर्थ तो एहछे अने केटलाएक इम कहे छे जे, लीपी विधान अढार भेदे स्थापना अक्षर तेहने नमस्कार कीधो थापना नीक्षेपो ठरावबा माटे इम अर्थ कहेछे पण ए वात मुळ वीरुद्धछे ते कीम जे, जो आगम सीद्धांतवाणी सुधर्म स्वामी छद्मस्थ सीद्धांत अक्षररुप थापनाइ कीहां हता ?

वीर नीर्वाण पछे नवसेंह एंसी वरसे पुस्तकारुढ ज्ञान थयोछे, तो अक्षर स्थापना शुधर्म स्वामीए कीहांथी वांदया ? वली मालारुपे, लीखत थापनारुपे, अक्षर आकार वंदनीक मानो, तो अढार लीपीमां जेटलां पुस्तक, लखाणा ते सर्व अक्षर सन्ना तमारे वदनीक थाशे. कुराण, कीताब, पुराण, वेद, जोतीष, वैदक, विकथा वार्ता, मत्र, जत्र, तंत्र, लोंकसामुद्रीक, ओगणत्रीस पापसुत्र, ए अक्षर, स्थापना माटे सर्व वंदनीक थास्ये, पण तेहने तो श्रीवितरागे ओगणत्रीस पापसुत्र कहीया, पण तुमारे तो वदनीक थासे. तेहने वांदता कीम नथी ? पापसुत्र इम कहेछो ते वीचारी जोजो वंदनीक तो एक भावसुत जीन वचन द्वादसांगी सीद्धांतछे. सेखमतना ग्रंथ अवदनीकछे.

---

१५ जघाचारण विद्याचारणनो उत्तर

हींस्याधरमी कहेछे जे, भगवती सतक वीसमे उदेसे नवमे जंघाचारण, विद्या चारण, साधुए प्रतिमा वांदीछे एम कहेछे ते पण एकांत शुद्ध बोलेछे सीद्धांत मध्ये कह्योछे जे, जघाचारण, विद्याचारण, साधु लब्धी फोरवीने प्रथम मानुखोत्तर पर्वते जाय. पछे नदीश्वर आठमे द्विपे जाय. पछे रुचकद्विप पदरमे जाय, ए वात साचीछे, पण ठाणांग सुत्रे चोथे ठाणे मानुखोत्तर पर्वते चार दीशे चार कुट कह्याछे ते भवनपातिना इद्रना आवास कह्याछे, पण प्रतिमाने काजे सीद्धायतन कुट मुलगोज नथी कह्यो, तो प्रतिमा मानुखोत्तर पर्वते कीयांथी ? अने वांदसे कीयांथी ? ते पाठ ठाणांग सुत्रना चोथा ठाणाना बीजा उदेसा थकी लख्योछे.

माणुसुत्तरसण पव्वयस्स चउदिसिं चत्तारिकुडा पन्नत्ता तजहा रयणे १ रयणुच्चय २ सव्वरयणे ३ रयणसचए ४.

अर्थ—मा. मानुष्योत्तर पर्वतने. च चार दीसे. च. चार कु कुट सीखर प कह्या. त ते कहेछे. र रतन कुट १ र रतननो चय कुट २ स. सव रतन कुट ३. र. रतन संचय ४

' एहना अर्थ मध्ये पण इम कह्यो जे, ' अग्नीखुणने वीखे रतन कुट गुरुल वेणु देवनो आवास मुत २ अने नेरुत्यखुणाने वीखे रतननोचयकुट (प्रयांतरे एहनो नाम वेलवमुलद नाम बीजो) तीहां वायुकुमारना वासछे ३ तथा इमान खुणाने वीखे सर्व रतनकुट ते वेणुदाली नामे सुवर्णकुमारना इद्रनुं आवास मुत

कुट छे. तथा वाव्यकुणने वीसे रतनसंचय कुट कहनो वीजो नाम प्रभंजनाख्य वायुकुमारना इंद्रनो आवास भुत छे. ए भाव द्विपसागर पन्नति मध्ये संग्रहणी गा- थानी अनुसारे कह्यो छे इहां चार कुट चार दीसी माटे कह्या छे, पण कोइक ग्रंथे पुर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षीणे प्रत्येक प्रत्येक त्रीण त्रीण कुट कह्या छे ते एक एक देवता अधीष्टीत छे.

पुव्वेण तिन्नि कुडा ॥ दाहिणउ तिन्निर अवरेणं ॥ उतर्रं तिन्नि भवे ॥ चउदिशि माणुस्स नग्गस्स. ॥ १ ॥

सुत्रपाठे चार कुट कह्या, तीहां पण सीद्धायतन कुट न कह्यो वली द्विपसागर पन्नति मध्ये संग्रहणान्तु

दक्षीण पुव्वेण रयणकुड गुरुलस्सवेणु देवस्स सव्व रयणंच पुव तरेणं तेवेणुदालीस्स रयणस्स अवर पासे तिन्नि विसमछि- उणं कुडाई वेलंब सुहयं सया होई सव्व रयणस्स अवरेणं तिन्नि समय छिउण कुडाइ कुड पभंजणस्सउ पभंजण आदियं होइ सूत्तोइहवतु स्छानकानुरोधेन चतारियुक्ता तथा अन्यान्यपिद्वाद- ससंति पुर्व दाक्षिणा परोतरासुत्रिणी द्वादशांपिचैकेकदेवाढिष्टता- निति इतिस्छानगंवत्तो

सुत्रसुत्रे चार कुट कह्या, इवि मध्ये चार कुट कह्या ते मध्ये चार दीसीना चार कुट मध्ये भवनपतिनी दाढा चार कुट चौदीसना कह्या, तीहां पण एक एक देवतानो वास कह्यो, पण सीद्धायतन मानुस्खोत्तर पर्वते न कह्यो, तो सीद्धायतन कुटमध्ये न होवे एमे सुत्रे मानुस्खोत्तर पर्वते प्रतिमा सुस्कीम नथी तो प्रतिमा वांदी कीहांयकी ?

२. वली रुचक पर्वत पण चालीस कुट दीशाकुमारीना कह्या छे. सीद्धांत जंबुद्विप पर्वती मांहे पीण सीद्धायतन कुट रुचकद्विपे सीद्धांत मांहे कह्यो नथी, तो रुचकद्विपे प्रतिमा कीहांथी वांदी ?

३ वली नंदीश्वर द्विपे प्रतिमा कही छे, ते पण नंदीश्वर द्विपने समग्रतबाने वीषे तो नथी कही अंजनगीरी पर्वत चोरासी हजार जोजन उंचो छे. ते उपर चार सीद्धायतन छे तीहां तो जंघाचारण, विद्याचारण, गया नथी कह्या.

मे तुमे एम जाणोछो जे, प्रतिमा वांदीछे तहीं चइयाइ वंदीतए ए पाठ उपर कह्योछे, पण जो प्रतिमा वांदी पुजी होत तो प्रत्यक्षपणे वंदइ नमंसइ पाठ जोइए वंदे शब्दे तो गुणग्राम करवा अने नमंसइ शब्दे नमस्कार करवो ते तो नम्मंसइ शब्द तो छेज नहीं वळी प्रमाण जाइजा दसवीकालीक पांचमे अध्ययने बीजे उद्देसे कह्योछे जे, गुणग्राम करतोथको साधु गृहस्थ पासे जावे नहीं. ए साखे वंदइ शब्दे गुणग्राम करवानो अर्थछे जो प्रतिमाने प्रत्यक्ष देखी होवे तो नमंसइ शब्द कीम न कह्यो ? तथा चैइत्य वंदणा नमोथुणं कीम न कह्यु ? अने तमे इम कहोछो जे, चेइ शब्दे प्रतिमा नथी तो चेइ शब्दे शुं वांचो ? ते उत्तर. साधुनी ए रीतीछे जे,आहार, निहार, विहार कार्य करी आवे ठेकाणे आवी बेसे तेहने समोसरण समोसर्यो कहीए. अने इरीयावही पडीकमे ते इरीयावही पडीकमतां लोगस्स कहे, ते लोगस्स मध्ये श्रीमावीतरागना गुणछेहीज तेहीज चैत्य शब्दे अरीहंतने वांदे ए परमार्थ घणा जेवंता जीन केवळी वांद्या ते माटे बहु वचने चेइयाइ बहु वचने वांद्या कहीए, इहां लोगस्स कहीतां प्रतिमा विना घणा अरीहंतरुप चैत्यवंदणा ए मध्ये स्यो संदेह रह्यो ? वळी मानुखोत्तर पर्वते सीद्धायतन कुट नथी, प्रतिमा पण नथी, तीहां पण चेइया वंदइ ए पाठ छे तीहां चेइ शब्दे शुं वांचो ? तो इम जाणजो, जे प्रतिमा वीन्या चैत्य श्री वितराग केवलीछे तेहज वांद्याछे. तीम नंदीशरद्विपे, अने रुचक द्विपे पण अरीहंतनेज वांद्याछे मानुखोत्तर, नन्दीशर, रुचकद्विपे, वंदणाना शब्दमां कांइ फेर नथी. जीहां प्रतिमाछे तीहां पण चेइया वदइ ए पाठ छे अने प्रतिमा ज्यां नथी त्यां पण चेइया वंदइ ए पाठछे कांइ फेर नथी, तो इम जाणजो जे, त्रणे ठामे चैत्य थया ए ते चैत्य वांद्याछे. श्री वितराग तो जीहां रहीने वांदीए तीहां रह्या वंदाए तो जाणजो सर्वज्ञ वितराग चैत्यहीज वांद्याछे. जो प्रतिमा माटे चैत्य कहेसो तो नदीश्वर द्विपे. आ पाठ मीळसे जे तीहां प्रतिमाछे ते माटे. पण मानुखोत्तर पर्वते अत्रे मुळथीज प्रतिमा ने सीद्धायतन नथी तीहां. चेइयाइ वंदइ पाठ कीम मळसे ? अने चैत्य शब्दे वितराग वांद्या ए अर्थ तो सर्व ठामे मळस्ये तो इम जाणजो जे, चैत्य शब्दे श्रीवितरागहीज वांद्याछे. जीहां साधु आवे, तीहां समसर्या कहीएछीए अने चोवीस स्तवन करे ते चैत्य वांद्या कहीए वळी ए जंघाचारण, विद्याचारण, प्रतिमा वांदवा, जात्रा करवा गया, एम कहे छे ते एकांत जुठु कहेछे ते केम जे, जो जात्रा करवा गया होवे तो जंघाचारण रुचकद्विपथकी पाछा वल्या, बीजारे नंदीश्वरद्विपे आव्या, तीहांथी पोताने ठाम आव्या कह्या, पण मानुखो-

कुट छे. तथा वाय्यकुणने वीसे रतनसंचय कुट बहनो बीजो भाव मयकिजुड वायुकुमारना इंद्रनो आवास भुत छे. ए भाव द्विपसागर पनति मध्ये संघयनी क यानी अनुसारे कह्यो छे इहां चार कुट चार दीसी माटे कह्या छे, पण वेल प्रये पुर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षीणे प्रत्येक प्रत्येक त्रीण त्रीण कुट कह्या छे ते एक एक देवता अधीष्टीत छे.

पुव्वेण तिन्नि कुडा ॥ दाहिणउ तिन्निर अवरेणं ॥ उतर्त्त तिन्नि भवे ॥ चउदिशि माणुस्स नग्गस्स ॥ १ ॥

सुत्रपाठे चार कुट कह्या, तीहां पण सीद्धायतन कुट न कह्यो वली द्विपसागर पन्नति मध्ये संग्रहणानु

दक्षीण पुव्वेण रयणकुड गुरुलस्सवेणु देवस्स सव्व रयणंच पूव तरेणं तेवेणुदालीस्स रयणस्स अवर पासे तिन्नि विसमछि उणं कुडाइं वेलव सुद्दय सया होई सव्व रयणस्स अवरेणं तिन्नि समय छिउण कुडाइ कुडं पभंजणस्सउं पभंजण आदियं होइ वृत्तोइहवतु स्छानकानुरोधेन चतारियुक्ता तथा अन्यान्यपियाद ससंति पुर्व दक्षिणा परोतरासुत्रिणी द्वादशांपिंत्तेकेकदेवाढिष्टता निति इतिस्छानगंधवृत्तौ

मुळसुत्रे चार कुट कह्या, वृति मध्ये बार कुट कह्या. ते मध्ये चार दीसीना चार कुट मध्ये भवनपतिनी दाढा चार कुट बीदीसना कह्या, तीहां पण एक एक देवतानो वास कह्यो, पण सीद्धायतन मानुलोत्तर पर्वते न कह्यो, तो सीद्धायतन कुटमध्ये न होवे एमे सुत्रे मानुसोत्तर पर्वते प्रतिमा सुत्रमांम नथी तो प्रतिमा वांदी कीहांथकी ?

२. वली रुचक पर्वत पण चालीस कुट दीसाकुमारीना कह्या छे. सीद्धांत जंबुद्विप पन्नती मांहे पीण सीद्धायतन कुट रुचकद्विपे सीद्धांत मांहे कह्यो नथी, तो रुचकद्विपे प्रतिमा कीहांथी वांदी ?

३ वली नंदीश्वर द्विपे प्रतिमा कही छे, ते पण नंदीश्वर द्विपने समस्तवाने वीषे तो नथी कही. अंजनगीरी पर्वत चोरासी हजार जोजन उंचो छे ते उपर चार सीद्धायतन छे तीहां तो जंघाचारण, विद्याचारण, गया नथी कह्या.

ने तुमे एम जाणोछो जे, प्रतिमा वांदीछे तहीं चइयाइ वंदीतए ए पाठ उपर कह्योछे, पण जो प्रतिमा वांदी पुगी होत तो प्रत्यक्षपणे वंदइ नमसइ पाठ जोइए. वंदे शब्दे तो गुणग्राम करवा अने नमंसइ शब्दे नमस्कार करवो ते तो नम्मसइ शब्द तो छेज नहीं वळी वंदमाण जाइजा दसवीकालीक पांचमे अध्ययने बीजे उद्देसे कह्योछे जे, गुणग्राम करतोथको साधु गृहस्थ पासे जाचे नहीं. ए सारवे वदइ शब्दे गुणग्राम करवानो अर्थछे जो प्रतिमाने प्रत्यक्ष देखी होवे तो नमसइ शब्द कीम न कह्यो ? तथा चैइत्य वंदणा नमोथुणं कीम न कह्यु ? अने तमे इम कहोछो जे, चेइ शब्दे प्रतिमा नथी तो चेइ शब्दे शुं वांचो ? ते उत्तर. साधुनी ए रीतीछे जे,आहार, निहार, विहार कार्य करी आवे ठेकाणे आवी वेसे तेहने समोसरण समोसर्यो कहीए. अने इरीयावही पडीकमे ते इरीयावही पडीकमतां लोगस्स कहे, ते लोगस्स मध्ये श्रीमावीतरागना गुणछेहीज तेहीज चैत्य शब्दे अरीहतने वांदे ए परमार्थ घणा अनंता जीन केवळी वांचा ते माटे बहु वचने चेइयाइ बहु वचने वांचा कहीए, इहां लोगस्स कहीतां प्रतिमा विना घणा अरीहंतरुप चैत्यवंदणा ए मध्ये स्यो संदेह रह्यो ? वळी मानुख्योत्तर पर्वते सीद्धायतन कुट नथी, प्रतिमा पण नथी, तीहां पण चेइया वंदइ ए पाठ छे तीहां चेइ शब्दे शुं वाचो ? तो इम जाणजो, जे प्रतिमा वी'पा चैत्य श्री विचराग केवळीछे तेहज वांचाछे तीम नंदीश्वरद्विपे, अने रुचक-द्विपे पण अरीहंतनेज वांचाछे मानुखोत्तर, नदीश्वर, रुचकद्विपे, वंदणाना शब्दमां कांइ फेर नथी. जीहां प्रतिमाछे तीहां पण चेइया वदइ ए पाठ छे अने प्रतिमा ज्यां नथी त्यां पण चेइया वदइ ए पाठछे. कांइ फेर नथी, तो इम जाणजो जे, त्रणे ठामे चैत्य वचा ए ते चैत्य वांचाछे. श्री विचराग तो जीहां रहीने वांदीए तीहां रह्या वदाए तो जाणजो सर्वत्र विचराग चैत्यहीज वांचाछे. जो प्रतिमा माटे चैत्य कहेसो तो नदीश्वर द्विपे आ पाठ मीळसे जे तीहां प्रतिमाछे ते माटे. पण मानुख्योत्तर पर्वते अत्रे मुख्यीज प्रतिमा ने सीद्धायतन नथी तीहां चेइयाइ वंदइ पाठ कीम मळसे ? अने चैत्य शब्दे विचराग वांचा ए अर्थ तो सर्वे ठामे मळस्ये. तो इम जाणजो जे, चैत्य शब्दे श्रीविचरागहीज वांचाछे जीहां साधु आवे, तीहां समसर्या कहीएछीए अने चोवीस स्तवन कहे ते चैत्य वांचा कहीए वळी ए जंघाचारण, विद्याचारण, प्रतिमा वांदवा, जात्रा करवा गया, एम कहे छे ते एकांत जुठ कहेछे ते केम जे, जो जात्रा करवा गया होवे तो जंघाचारण रुचकद्विपथकी पाछा वल्या, तीवारे नदीश्वरद्विपे आव्या, तीहांथी पोताने ठाम आव्या कह्या, पण मानुख्यो-

कुट छे. तथा वाय्व्यकुणने वीखे रतनसंचय कुट रहनो वीजो नाम मनोरमा वायुकुमारना इंद्रनो आवास युत छे. ए नाम द्विपसागर पन्नति मध्ये संग्रहणी व्याख्यानी अनुसारे कह्यो छे इहां चार कुट चार दीसी माटे कह्या छे, पण मेरु ग्रंथे पुर्व, पश्चिम, उत्तर, दक्षीणे प्रत्येक प्रत्येक त्रीण त्रीण कुट कह्या छे ते एक एक देवता अधीष्टीत छे.

पुव्वेण तिन्नि कुडा ॥ दाहिणउ तिन्निर अवरेणं ॥ उतरं तिन्नि भवे ॥ चउदिशि माणुस्स नगस्स. ॥ १ ॥

मुलपाठे चार कुट कह्या, तीहां पण सीद्धायतन कुट न कह्यो वली द्विपसागर पन्नति मध्ये संग्रहणात्

दक्षीण पुव्वेण रयणकुड गुरुलस्सवेणु देवस्स सव्व रयणंच पूव तरेणं तेवेणुदालीस्स रयणस्स अवर पासे तिन्नि विसमछिउणं कुडाइं वेलंव सुहयं सया होई सव्व रयणस्स अवरेणं तिन्नि समय छिउण कुडाइ कुडं पभंजणस्सउं पभंजण आदियं होइ मूत्तोइहवत्तु स्थानकानुरोधेन चतारिकुक्ता तथा अन्यान्यपिद्वादससंति पुर्व दक्षिणा परोतरास्तुत्रिणी द्वादशापिचेकैकदेवाद्धिष्टतानिति इतिस्थानगंवृत्तो

मुलसुत्रे चार कुट कह्या, इति मध्ये चार कुट कह्या. ते मध्ये चार दीसीना चार कुट मध्ये भवनपतिनी दाढा चार कुट वीदीश्वना कह्या. तीहां पण एक एक देवतानो वास कह्यो, पण सीद्धायतन मानुसोत्तर पर्वते न कह्यो, तो सीद्धायतन कुटमध्ये न होवे एणे सुत्रे मानुसोत्तर पर्वते प्रतिमा सास्वीत नथी तो प्रतिमा वांदी कीहांथकी ?

२. वली रुचक पर्वत पण चालीस कुट दीशाकुमारीना कह्या छे. सीद्धांत मेरुद्विप पन्नती मांहे पीण सीद्धायतन कुट रुचकद्विपे सीद्धांत मांहे कह्यो नथी, तो रुचकद्विपे प्रतिमा कीहांथी वांदी ?

३ वली नंदीश्वर द्विपे प्रतिमा कही छे, ते पण नंदीश्वर द्विपने समस्तपणे दीठे तो नथी कही. अंजनगीरी पर्वत चोरासी हजार जोजन उंचो छे ते उपर चार सीद्धायतन छे तीहां तो जंघाचारण, विद्याचारण, गया नथी कह्या.

वळी हींस्याधरमी कहे, प्रतिमाने तो चैत्य कहीए, पण अरीहंतने चैत्य कीहां कह्या छे ? तेनो उत्तर. भगवती, उववाइ, रायपसेणी, ठाणांग, प्रमुख घणे ठामे साधुने चैत्य कह्या छे ते पाठ लखे छे

तिखुत्तो आयाहीण पयाहीणं वदामी नमंसामी सकारेमि सम्माणेमि कल्लाण मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासामी.

अर्थ—ती. त्रणवार आ आदान एटले बे हाथ जोडीने जमणा कानथी डाबा कान सुधी. प. प्रदक्षीणा करीने. वं. वांदुछुं एटले पगे लागुछुं न. नमस्कार करुंछुं मस्तक नमाडीने. स. सत्कार दउंछु. स. सन्मान दउछुं क कल्याणकारी म. मंगळकारी दे धर्मदेव समान. चे. ज्ञानवंतनी प. सेवा करुछुं मन, वचन, कायाए करी.

ए पाठ मध्ये कल्याणं कहेतां कल्याणकारी मत्ये मंगळ कहेतां मंगळीक मते, चत्तारी मगळ, सुत्रमध्ये साहु मगलं कह्या छेम, देवय कहेतां धर्मदेव मत्ये, चेइय कहेतां ज्ञानवंत मत्ये ए द्वीतीव्या विभक्तिना वचन जाणवा

वळी समवायग सुत्र मध्ये, चोवीस जीनने केवळज्ञान उपनो, जे वृक्ष हेठे ते वृक्षने पण चैत्यवृक्ष कह्या. ज्ञान चैत्यनी नेश्राये. ते हवे समवायंग सुत्रनो पाठ चोवीसमे समवायेथी लखे छे.—

एणस्सिण चउविसाए तिथकराणं चोवीसं चेइय रुखा पन्नता तजहा निग्गोह तिवन्नेय साले पीयए पीयं गुछतो हसरीसेय नागरुखे सालेपीलख रुखेय १ तिंदुय पाडल जबु आसीथे खलु तहेव दहिवन्ने उदीरुखे तिलएय अवगडरुखे असोगेय २ चपग वडुलेय तहा वडसिरुखे तहेव धवरुखे सालेय वद्धमाणे चेइयरुखजिणवराण ३

अर्थ —चोवीस चैत्यवृक्ष हुवा जे वृक्ष हेठे केवळज्ञान उपनो ते वृक्षने चैत्य वृक्ष कहीए इत्यर्थः ते केहा श्री आदीनाथने न्यग्रोध ते वटवृक्ष हेठे केवळ ज्ञान उपनो इमज अनुक्रमे चोवीशे जाणवा निग्रोध १ सप्तवन २. मीया ३ पीयगु ४, छत्र ५. सरसडो ६ नाग ७ माल्ती ८ पीलु ९ टींवरु १० पाडल ११. जांबु १२ पीपलो १३ नीम्बे तेमज, दधीवर्ण १४ नदी १५ तीलक १६ आंबो १७. अशोक १८. चांपो १९ बकुल २०. वीमश सेतस २१. वीमम

घरना चैत्य कीम न वांद्या ? तथा उंचा पंडगवन जाइने पाछा वल्या, तेवारे नंदनवने आव्या तीहांथी पोताने ठामे आव्या, तो सोमनसवने अने भद्रसालवननी प्रतिमा वांदवा कीम न गया ? पीण इमन जाणजो जे, प्रतिमा वांदवा नथी गीया, पण चारीत्रमोहेनीने उदे असंवुड अणगार थइ लबधी फोरवी सकलाइपणे ए प्रमादनो थानक सेव्यो वळी पोताने ठामे आव्या तीहां पण कह्यो जे, इहां चेइयाइ वंदीते. जो मुनी गाम, नगर, वन, पर्वतने वीखे जीहां हता तीहां पाछा आव्या पोताने ठामे तीहां कीया चैत्य हता ते वांद्या ? पीण एम जाणजो जे पोताने ठामे आव्या तीहां इर्यापथीक पडीकमी ते मध्ये चोवीसस्तव कह्या जे तेहीज श्रीविचरागरुप, चैत्य वांद्या विचराग चैत्य तो जे ठामथकी रहीने वांदीए तीहांथी वंदाय, अने प्रतिमा ते मुनीराजना स्थानक मध्ये कीहांथी ? ते वीचारी जोजो. वळी एहीम उपउपदेशने छेडे कह्यो जे.

तस्स ठाणास्स अणलोइय अप्पडीकते कालं करेइ नथी तस्स आराहणा.

ए स्थानक लबधी फोरवीने गया ते कार्य आलोया वीना नींद्या वीन्या काळ करे तो वीराधक कह्या, पण श्री जीनप्रतिमा जीनसरीखी तेहने वांदवा जातां काळ करे तो वीराधक कीम होवे ? अने मोहनीने उदे असंवरपणाना कार्यकरी द्विप, समुद्र, जोवा गीया, चक्षुइंद्रीना वीखयना भेयोगथका. तेणे कारणे वीराधक मुसे होवे

वळी हींस्याधरमी कहे, ए प्रायश्चितनो ठाम कह्यो, ते प्रतिमा वांदवा गया ते माटे नथी कह्यो वातां आवतां प्रमादना थइ होवे ते माटे, आलोयणा कहेछे ते उत्तरः तुमे कहोछो जे, संघादीकने कारणे चक्रवर्तिना सैन्यचुरे, तोपण मारा ठाम छे परम कारज करतां हींस्या छे ते पाप नहीं लागे तो ए साधु गगनचारीने छकाय मध्ये केही कापनी हींस्या लागी ? अने माहाफळ उपराज्यो ते मध्ये ए हींस्यानो, प्रमादनो, दुखण स्यानो गणाय.? ए वातां तुमे असत्य करी जो प्रतिमा वांदवा गया होवे तमारे मते विराधक कह्या न जोइए वळी भगवत मध्ये कह्यो छे जे; आलोयण लेवा मुनी चाल्यो, ते वचमां काळ करे तो आलोयणना लाभ थकी आराधीकपणुं कहीए तीम जीनप्रतिमा वांदवाने मार्गे चाल्यो ते निश्चे आराधीकपणुं कहीए प्रमाद, अज्ञानानो फळ इहां स्या माटे गणाय ?

वळी हींस्याधरमी कहे, प्रतिमाने तो चैत्य कहीए, पण अरीहंतने चैत्य कीहां कह्या छे ? तेनो उत्तर. भगवती, उववाइ, रायपसेणी, ठाणांग, प्रमुख घणे ठामे साधुने चैत्य कह्या छे ते पाठ लखे छे

तिखुत्तो आयाहीण पयाहीण वदामी नमंसामी सक्कारेमि सम्माणेमि कल्लाण मंगलं देवयं चेइय पज्जुवासामी

अर्थ—ती. त्रणवार आ आदान एटले बे हाथ जोडीने जमणा कानथी डाबा कान सुधी. प. प्रदक्षीणा करीने. वं. वांदुछु एटले पगे लागुछुं न नमस्कार करुंछुं मस्त क नमाडीने. स. सत्कार दकुंछुं. स. सन्मान दकुंछुं क कल्याणकारी मं. मंगळकारी दे धर्मदेव समान. चे. ज्ञानवतनी प. सेवा करुछुं मन, वचन, कायाए करी.

ए पाठ मध्ये कल्याणं कहेतां कल्याणकारी मत्ये मंगल कहेतां मंगळीक मते, चत्तारी मगलं, सुत्रमध्ये साहु मंगलं कह्या छेम, देवय कहेतां धर्मदेव मत्ये, चेरय कहेतां ज्ञानवत मत्ये ए द्वीतीव्या विभक्तिना वचन जाणवा

वळी समवायग सुत्र मध्ये, चोवीस जीनने केवळज्ञान उपनो, जे वृक्ष हेठे ते वृक्षने पण चैत्यवृक्ष कह्या. ज्ञान चैत्यनी नेश्राये. ते हवे समवायंग सुत्रनो पाठ चोवीसमे समवायेथी लखे छे.—

एणस्सिणं चउविसाए तिथकराणं चोवीसं चेइय रुखा पभता तजहा निग्गोह तिवन्नेय साले पीयए पीय गुछतो हंसरीसेय नागरुखे सालेपीलख रुखेय १ तिंदुयं पाडलं जबु आसीथे खलु तहेव दहिवन्ने उदीरुखे तिलएय अबगडरुखे असोगेय २ चपग वकुलेय तहा वडसिरुखे तहेव धवरुखे सालेय वद्धमाणे चेइयरुखजिणवराण ३

अर्थ —चोवीस चैत्यवृक्ष हुवा जे वृक्ष हेठे केवळज्ञान उपनो ते वृक्षने चैत्य वृक्ष कहीए इन्यर्थः ते केहा श्री आदीनाथने न्यग्रोध ते वटवृक्ष हेठे केवळ ज्ञान उपनो इमज अनुक्रमे चोवीसे जाणवा निग्रोध १ सत्तवन २. प्रीया ३ पीयगु ४, छत्र ५. सरसडो ६ नाग ७. मालती ८ पीलु ९ टींबरु १०. पाडळ ११. जांबु १२. पीपलो १३ नीम्बे तेमज, दधीवर्ण १४ नंदी १५ तीलक १६ आंबो १७. असोक १८. चांपो १९ बकुल २०. वीमज वेतस २१. वीमजु

पावणी २२ साल २१ वर्धमान १४ ए चैत्यशब्द चोवीस जीनवरना आश्रया- ए हेठे केवळज्ञान उपना माटे.

ए ज्ञाननी नेश्राये इसने चैत्य कह्या. तो ज्ञानवंत अरीहतने तथा साधुने चैत्य कहीए ते मध्ये स्यो संदेह ? ते माटे जथाचारणे पण चैत्य शब्दे विचराग, तीर्थंकर, अरीहंत, केवळज्ञानी, प्रस्ये सांधा छे. प्रतिमा वांदी कहेस्यो तो मानुस्तोत्तर पर्वते प्रतिमा नथी त्यां शु कहेशो ? अने पाठ तो त्रणे ठामे सरखा छे, अधिको ओछो नथी जीहां प्रतिमा छे ने जीहां प्रतिमा नथी तीहां पाठ फेर नथी, ते माटे प्रतिमा वांदी छे इम विरुद्ध कहे छे.

---

१६ आणद श्रावकना आलावानो अर्थ

हींस्याधरमी कहे छे जे, आणंद श्रावके प्रतिमा पुजी, वांदी छे, ते एकांत शुद्ध कहे छे उपासगदसांगे अध्ययन पेहेले पाठछे ते कहे छे

नो खलु मे भंते कप्पई अजपभिईय अणउछियाणियावा अणउछियादेवयाणवा अणउछियापरीगहियाणिवा अरीहंतचेइ- याइं वदीतएवा नमसित्तएवा पुव्विआणालवंते आलवित्तएवा सलवित्तएवा तेसिं असणंवा पाणंवा खाइमवा साइमवा दाउवा अणुपदाउवा

अर्थः—नो नहीं. ख. निस्चे मे. मुझने भं भगवंत नो क. न कल्पे. अ आज पछी अ अन्यतिर्थि अ. अन्यतिर्थिना देव. अ. अन्यतिर्थिना ग्रह्या आच र्यो अ अरीहंतना चैत्यमृष्टाधारी साधु वं. वांदवा न. नमस्कार करवो. आ. बोलाववो सा वारंवार बोलाववो ते तेहने अ. असन. पा पाणी खा. खादीम मुखडी सा सादीम मुखवास. दा गुरुहेते धर्मनी बुद्धिए देवा. अ आज्ञाकरी देवरावको

इम भगवंतना मुख आगळे आणंद श्रावके अभीग्रह कीधो, जे आज पछी मु झने न कल्पे १ अन्यतीर्थि साक्यादीकने २ अन्यतिर्थिना देव अनेक प्रकारना इश्वरादीकने ३ अन्यतिर्थिये ग्रह्या अरीहंतना चैत्य अन्यतिर्थियकी मीळवा भयाथे करी पासथा, वेषधारी, गोसळामती, जमाळीमती, जेहनो लींग तो साधुनोछे, पण जीनमारगथकी भ्रष्ट मृष्ट जीनआज्ञा बाहीर एहवा साधुरुप चैत्य ए त्रण जणने

१ वांदु नहीं २. बोलाव्या पेहेलां बोलुं नहीं ३. अणसादीक दान आपु नहीं, कोइ देवाभि उगेणवा(देवताने परवस पडये)इत्यादीक कारणे वांदवा पडे, बोलाववा पडे, अणसादीक देवो पडे, तो आगार पण नीर्मरावेतु माणु नहीं, तेणे करी सम्यक्त सुद्द, एहवो अभीग्रह लीधो हवे मुझने कल्पेसुं

कप्पई मे समणा निग्गथाफासुय एसणिजेणं असणं पाणं खाइमं साइमं वथ पडिग्गह कंबलपायपुछणेणं पाडीहारियपीढ फलग सिजा संथारपण उसहमेसजेण पाडिलामेमाणे विहरीत्तण

अर्थः—क कल्पे, मे मुझने स श्रमण. नि. निर्ग्रंथ फा. फासुक. ए एस णीक छेषा जोग्य. अ. अन्न. पा. पाणी खा सुखडी मेवादीक. सा. मुखवास व वस्त्र. प. पात्रा कं. कंबल. पा. आगळे मांडवानुं. तथा रजोहरणनो पुछणो. पी. पाजोठ. फ. पाटीयु सी. स्थानक. सं. दर्भादीक सथारो उ. ओसध कीरीयाता दीक. मे. वर्णादीक गोळी. प तेहने विहरावबुं नित्यमेव एहवा मनना अभीग्रह.

कल्प्पामध्ये तो देव अरीहंत ते तो श्रीमाहावीर, अने गुरु साधु, ए बेहुने वांदवा बोलाववा,ने प्रतिलाभवा कल्पे ते कह्या.हवे स्वयमत ग्रहीस प्रतिमा वांदवी कल्पे तो इहां प्रतिमा करेत पण ते तो सुत्र मध्ये छेज नहीं राख्या बोलमध्ये तो प्रतिमा न कही, अने वोसराव्यामध्ये पण प्रतिमा नथी कही, जीनमतना देव, ने गुरु, वांदवा राख्या अने अन्यमतना देव, गुरु, वोसराव्या. जीनमतना ढीढळसाधु ते पण वोसराव्या ए अर्थ छे.

हवे हींस्याधरमी कहेछे जे, वोसराव्या मध्ये अन्यतिर्थिए ग्रह्या चैत्य वांदु नहीं, ते प्रतिमा आश्री कह्योछे एम कहेछे, ए वात सुत्र वीरुद्द कहेछे, ते केम जे, जीननी प्रतिमा बेठी पद्मासणे, ए वळी आयुद्ध, अस्वारी, अस्त्री रहीतछे. अने अन्यमतीनी प्रतिमा समोगी, आयुद्ध, अस्त्री, अस्वारी, सहीतछे ते रीत आज मुर्खलोकछे, ते पण जाणेछे जुदी जुदी ओळखेछे तो अन्यतिर्थिनी प्रतिमाने ठामे जीनमतनी प्रतिमाने कीम मांडशे ? तथा ब्रह्मा, विस्नु, महेश, गणेश, माता, हनुमान, खेत्रपाळ, इत्यादीक शु जाणशे जीनप्रतिमा आवी जुदी पडे ते तो वीचारता नथी, ते माटे प्रतिमाने अर्थ न मीळे. वळी जो प्रतिमानो अर्थ करशो तो वीहां इम कह्यो छे जे,

१ अन्यतिर्थिने २ अन्यतिर्थिना देवने. ३ अन्यतिर्थिए ग्रह्या चैत्यने १ वांदु नहीं २ पोस्नु नहीं ३ दान दीयुं नहीं ए त्रण बोल नीसेध्या, तो तुंबो चैत्य शब्दे पासथा, वेषधारी, नीःनव, उपर तो ए त्रण बोल मीले, जे बोलाव्या बोले, दान दीधुं ल्ये, पण चैत्य शब्दे प्रतिमा होवे तो, बोलावी केम बोले, तथा दान कीम ले ते कहो ? पण हींस्याधरमीना मनमां ए वात जे अन्यमत ग्रहीत प्रतिमा नीसेधीए तो पोतानी ग्रही प्रतिमा मानवा ठहीरे. पण ए वात सुत्र न्याये ठहरी नहीं ते वीचारी जोजो.

वळी हींस्याधरमी कहेछे जे, जीनप्रतिमा बोले नहीं दान ल्ये नही, ते माटे प्रतिमा अर्थने वीषे नीखेधेछो, तो अन्यतिर्थिना. देव कीहां बोलाव्या बोले, दान दीधां ल्ये, ते उपर जीनना देव बोलेछे, दान ल्येछे, तो ब्रह्मा, विष्णु, महेष, गणेश, माता, हनुमान, नारद, आहार लेता के न लेता ? स्वयमेव जीवता हता तीवारे आहार लेता, ते वीचारी जोजो अन्यतिर्थिना देव उपर तो सुले ए त्रण बोल ठहरेछे, पण प्रतिमा उपर न ठहरे तथा जे प्रतिमाने पोताना देव करी अन्यतिर्थिए मान्या तेहने तुमे देव करी न मानो तथा अन्यतिर्थिना देहरामां रही जीन प्रतिमा ते तमे न मानो ठामफेर माटे, तो तुमारो बाप कार्य विसेसे चंडालने घेरे बेठो होय ते वेलाए तमारो बाप खरो के नहीं ? जो ए तमारो बाप तो ते तमारो देव पछी अन्यतिर्थिने देहेरे गइ प्रतिमा ते अवंदनीक थइ, तो साधु अन्यतिर्थिना आश्रममां उतर्या ते वेला गुरु करीने मानो के नहीं ? जो चंडालने घेरे बेठाने बाप मानो, मठमां उतर्या साधुने गुरु करी मानो, तो अन्यतिर्थिने देहेरे गइ प्रतिमाने देव करी कीम न मानो ?

वळी अन्यतिर्थिये ग्रह्या चैत्य शब्दे प्रतिमा मानसो, तो भ्रष्टजोगी, पासथा, नि:नव वेषधारी, ढीलसाधु, क्या बोलाभवे बोसराव्या ठहरावशो ए पण अवंदनीकछे, जो कहेसे अन्यतिर्थिमां गणीए तो खोट्य पडे भगवती शतक पेहेले एम घणा पद दीसमे से श्रेणी दसण वावनग समकीतना वमनहार पीण सपखींगी कह्या, पण अन्यतिर्थिमां नथी कह्या, अने अन्यतिर्थिना देवमांतो नथीज, पछे अन्यतिर्थि ग्रह्या चैत्यमांज पण गणासे तो नहीं, तो चोथो बोल सुत्रपाठे देखाडो ? वळी स्वयमतना ग्रह्या चैत्य, देहरा, प्रतिमा, आणंद श्रावक, वांदे ते पाठ देखाडो, ते वीचारजो.

—

१६ अंबड श्रावकना आलावानो अर्थ

जेम समकीतनी बीघ आणद श्रावके कही छे, तेहीज रीत सर्व श्रावक संत, ाली, मणुस्स छे कोइ वातनो फेर नथी ते उपरांत उववाइ सुत्रमां अंबड श्रावकने ोकारे एहवो पाठ छे जे

अमडस्सण परीवायस्स नोकप्पई अउछिएवा अणउछिया-वयाणिवा अणउछिय परीग्गहियाणिवा अरीतहचेइयाइ वदि-एवा नमसित्तएवा जावपज्जुवासिएवा णणथअरीहंतेवा अरीहत इयाणिवा.

अर्थ—अ अमड संन्यासीने नो न कल्पे अ. अन्यातिर्थि समयादीक. अ. अ तिर्थिना देव हरी, हरादीक. अ अन्यतिर्थिये ग्रह्या अरीहतना चैत्य भ्रष्टसाधु वं-दवा न. नमस्कार करवा. जा जावत पुजा करवा जावत धर्ममध्ये उपरना ठ छेवा

एटलो पाठ छे जे, न कल्पे १ अन्यातिर्थि. २ अन्यातिर्थिना देवने. ३, अन्य र्थिये ग्रह्या चैत्यने १ वांदवा २ बोलाववा. ३ दान देवा ए मण बोलतो आ दनी पेरेज छे. अने कल्पे ते मध्ये अरीहत ते तो देव अने अरीहंतना चैत्य ते ाधु गुरु ए बे वांदवा अरीहत ते देव अने चैत्य ते ज्ञानवत अरीहतना साधु ए कल्पे एटले कलप्यामां पण आणंदनी परेज ठहर्यो, तीहां श्रमण नीर्ग्रंथ कहीने रु राख्या इहां अरीहत चैत्य कहीने गुरु राख्या. एटले देव, गुरु, ने वांदवा ाख्या. इहां ढुंढीयाधरमी कहे छे जे, प्रतिमा राखी चैत्य शब्दे ते न मीले. केमजे रीहत ते पण देव अने प्रतिमा ते पण देव, तो गुरु वांदवानो बीजो पाठ कीहां ? ते तो नथी ए ऐसे अबडने साधु गुरु छे के नथी ? जो चैत्य शब्दे प्रतिमा ो गुरु वांदवानो बीजो पाठ देखाडो ? अने अबड साधुने वांदे छे असनादीक ापेछे धारद्दत सुत्र पाठे कह्यां छे तुमे तो प्रतिमाने देव करी मानो छो तो गुरु ाधुनो पाठ कीहां ? पण मीथ्यात्व मोहनीकर्मने उदये खोटो अर्थ सुझे छे, जे ए रु, श्रावकने कल्पे ते आणदनी पेरे जाणवी ते वीचारी जोजो.

---

१८ सात क्षेत्रे धन कढावे, ववरावे. तेहनो उत्तर

वळी हिंस्याधरमी कहे छे जे, सात खेत्रे धन वावरवो. ते एकांत सुत्र वीरूद्ध कहे छे. सात खेत्रे धन वावरवो ते कीया सुत्रमां कह्यो छे एम पुछवो तथा आर्णदादीक श्रावके व्रत आराध्या, पडीमा आदरी, संथारा कीधा, ते सर्व सुत्रमां कह्यो छे, पण धन केटलो वावर्यो तथा केटले क्षेत्रे वावर्यो ते सुत्रथी कहो तो प्रमाण. तथा संघ काढया, तीर्थयात्रा कीधी, देहरा कराव्या, प्रतिमा प्रतिष्टि, इत्यादीक आर्णद, संख, पोखलीने, अधीकारे कह्यो होवे तो सुत्र मध्ये देखाडो. श्री माहावीर स्वामीये गौतमस्वामी आगळे केटला खेत्र कह्यां ते कहो तुमे सात खेत्र कहो छो. ते १ देहरो, २ प्रतिमा, ३ पुस्तक, ४ साधु, ५ साधवी, ६ श्रावक, ७ श्रावीका, ए सात खेत्र कहोछो, ते श्रीवितरागना परुप्या नथी. स्या माटे जे, पुस्तकनो छलवो तो श्री माहावीर स्वामी निर्वाण केडे नवसेंएसी वरसे थयो छे, तो आगळे पुस्तक नीमीत्ते धन काडवानो स्यो प्रयोजन हतो ? ए वीरूद्ध

वळी साधु, साधवीने, काजे धन खरची आहार उपध्य, उपाश्रय, करावे तो ते साधु, साधवीने कामे न आवे तो साधु, साधवीने, काजे धन स्याने काडे ? दस वीकालीक सुत्रे छठे अध्ययने अडतालीसमी गाथामां कह्यो जे,

पिंड सिज च वथच ॥ चउथं पाय मे व य ॥ अकप्पियं न इछेजा ॥ पडिगाहिज कप्पिय ॥ ४८ ॥

अर्थः—पेहेले बोले. पी आहार बीजे बोले सी थानक, पाट, पाटला, संथारो, वळी त्रीजे बोले. व वस्त्र, पछेडी, चळोट्या, मुहपतिः च वळी प्रते प्रमुख च. वळी चोथे बोले. पा. पात्रा, पडीग्रह दडग, प्रमुख ए ए य वळी. अ वळी कल्पनीक दांडो प्रमुख सयम निर्वाह. अ अकल्पनीक न न वांछे तथा नवावे नहीं. प लीये. क कल्पनीक.

एम आचारंग, निसिय, कल्प, प्रमे सुत्रे सुत्रनो आण्यो आहारादीक नीसेध्यो छे, तो साधु, साधवी, ते धनने स्युं करे ? ए पण खेत्र वीरूद्ध कहोछो

श्रावक, श्राविका, जे पु पर्यंत होवे ते पण सेरातनो दाम रवे नहीं, रांक, कंगाळ, दीन, अनाथने, अंतराय पाडे नहीं. देहरां प्रतिमा आगळे हतां नहीं, तो तेहने कामे धन काढीने स्युं करे ? तुमारे मते आगळे देहेरा प्रतिमा हतां एम मानो छो, तो कहो आर्णदादीक श्रावके न्यात जमाडी, परदेसी राजाये दानसाळा मांडी,

श्रीकृष्णे संजमनी दलाली कीधी, सेणीक राजाये अमरपडो फेर्यो, कोणीक राजाये वधामणी दीधी, पीण केटलो धन काढी देहेरां प्रतिमा कराव्यां ते पाठ सुत्र मध्ये देखाडो नहीं तो ए सात खेत्र नवां कल्पीने मुरख लोकोना धन लुटोछे. ते चौटीना चोर थाओछो. ए सात खेत्रना नाम लइ देखाडेछे ते एकांत सुत्र विरुद्ध कहेछे.

---

१९ द्रुपदीए प्रतिमा पुजी कहेछे ते उत्तर

हींस्याधरमी कहेछे जे, द्रुपदीए प्रतिमा पुजीछे, तेहनो उत्तर सुत्र प्रमाणे कहे छे सर्व सुत्र मध्ये जोतां, साधु, साधवी, श्रावक, श्रावीका, समद्रष्टीए, कीहांइ वित्तरागनी, प्रतिमा करी पुजी कही नथी. राजग्रही, चपा, मथुरा, वाणीअग्राम, तुंगीया, आलंबीया, सावथि, द्वारका वनीता, हथीणापुर, इत्यादीक नगरीयुने बाहीरे जक्षना देहरां कह्याछे, पण श्रीवित्तरागना देहेरा कह्यां नथी. एक द्रुपदीए परणवाने अवशरे प्रतिमाने पुजी कही, तो पण बाधाभव मध्ये एकवार पुजी कही छे पदमोत्तर राजाने घेरे सा हरण थयो तीहां आंबील सहीत छठ छठ पारणाए तप कीधो, पण तीहां प्रतिमा पुजी कही नथी

१ ते द्रुपदीये पुर्वभवे धर्मरुचीने कडुओ तुमडो आप्यो ए अयुक्त
२ पछे सुकमालकाने भवे भीक्षुकने भरतार कीधो ए अयुक्त.
३. पछे सजम लेइने अवनीत पासथी थइ ए अयुक्त.
४. पछी नगरी बाहार, आज्ञा लोपीने आतापना लीधी ए अयुक्त
५. पछे पांच भरतारनो नीयाणो कीधो ए अयुक्त
६ पछे सजम वीराधी वेस्या देवांगना पणे उपनी ए अयुक्त.
७. पछे पांच भरतार थर्या जगत नींदनीक कार्यो कीधो ते अयुक्त

एहवा अयुक्तनी करणहारी, मीथ्याद्रष्टी नीयाणा सहीत तेणे प्रतिमा पुजी ते पुजाने भलामण पीण अद्यसी सुरीयाभ देवतानी दीधी, पण आणद, कामदेव, संख, पोखली, श्रावकनी भलामण स्यामाटे न दीधी ? आणदादीकनी भलामण स्याने देवे ?

१ द्रुपदीये प्रतिमा पुजी ते वेला समद्रष्टी नहीं. २ श्रावका पण नहीं
३ द्रुपदीना माता पीता पण समद्रष्टी नही ४ द्रुपदीए प्रतिमा पुजी ते प्रतिमा

तीर्थंकरनी पण नहीं घरमां देहराशर पण नहीं ए चार बोल सीद्धांतनी साखे वीचारवा ते कहेछे.

१. प्रथम तो द्रुपदी श्रावका नहीं, जो श्रावीका होय तो पांच भरतार कीम घरे ? सर्व संसारनी रीते स्त्रीने एक एक भरतार होयछे तीम द्रुपदी पण एक भरतार जाणती हशी, पण एम जाणती न हशी जे माहरे पांच भरतार थासे वीचारे पुरवभवना नीयाणानी प्रेरणाये करी पांच भरतार वर्या तो वीचारी जोओ, द्रौपदीए श्रावकना व्रत लीधां त्यारे भरतार दस वीस मोकला राख्या हता ? अने ज्यारे भरतारनी मर्यादा नथी त्यारे श्रावका केम कहीए एणे न्याये द्रौपदी श्रावका नहीं तथा बालपणामां श्रावकना व्रत लीधां पण कह्यां नथी.

२. वली द्रुपदी समद्रष्टी पण नहीं दसासुतखंध सुत्रने दसमे अध्यपने नीयाणाना भाव कह्या, ते मध्ये मनुष्यना कामभोगनो नीयाणो करे उत्कृष्टा रसना नीयाणानो फल ए जे, नीयाणाना करणहार केवली परुप्यो धर्म काने सांभलवो पण न पामे, अने मधीमरस जघन्यरसनो नीयाणो होवे तो वंछीत भोग मल्या पछी समकीत व्रत पामे, पण जीहां लगे नीयाणानो फल उदय न आवे त्यां लगे समकीत व्रत कांइ न पामे वली नीयाणा बे प्रकारनाछे. १ एक द्रव्य प्रत्यय, बीजो भव प्रत्यय, ते वासुदेव चक्रवर्तिनो, नीयाणाना उदये जाव जीव लगे व्रत उदय न आवे ते भव प्रत्यय नीयाणो, कहीए अने बीजो द्रव्यप्रत्यय नीयाणो ते जेणे द्रव्य वांछ्यो ते मील्यो तीवारे ते द्रव्य प्रत्यय नीयाणे पुरोथीयो, पछे देसव्रती सर्व व्रती सुखे आवे ते द्रव्यप्रत्यय नीयाणो कहीए, ते भणी ए द्रुपदीने द्रव्यप्रत्यय नीयाणोछे, जे पांच भरताररुप द्रव्य मीलया तीवारे द्रव्यनीयाणो पुरो थीयो पण परणी नहीं त्यां लगे नीयाणानो उदये हतो सर्यवरा मंडप मध्ये सर्व राजाने मुकीने पांच पांडव वर्या तीहां पाठ मध्ये कह्योछ जे—

पुव्वकय नियाणेणं चोइजमाणी

अर्थ —पु पुर्वकृत पाछला भवना कीधां नी नीदांनने चो प्रेरी थकी,

पुर्वकृत नीदाननी प्रेरीयकी पांच पांडव पासे आवी ए पाठ छे, तो इम जाण जो जे नीयाणाना उदयसहीत जीव वरते, तीहां लगे समकीत तथा व्रत कीहांथकी होस्ये ? ए लेखे द्रुपदी परण्या पहेलां एकांत मीथ्याद्रष्टी जाणवी

३ वली द्रोपदीना माता पीता, पण मीथ्यात्वी छे घेरे देहरां छे, प्रतिमा पुजी छे, एम जे कहे छे ते वात सुत्र वीरुद्ध कहे छे. ते कीम जे द्रुपदीने पीताए

श्रीकृष्ण प्रमुख सयघरा मडपमध्ये अनेक राजा तेडाव्या. तेहने काजे छ आहार नीपजाव्या. ते मध्ये मद्य, मांस, घणो नीपजाव्यो जो जीनमारगी होवे तो, अने घरमां देवघरो होवे तो तथा पुजा जीनजीपरे होवे तो, क्रोडागमे त्रसजीव मारीने मद्य, मांस कीम नीपजावे ? जीनमारगी होवे तो मद्य, मांस, खावे नहीं त्रसजी-वने हणे नहीं हणावे पण नहीं ए जीनमारगनो लक्षण छे अने ध्रुपद राजाए मांस भोजन नीपजाव्यो सुत्र कह्यो छे ते पाठ लखे छे

विउल असणं पाणं खाईम साइम सुरच मजंच महुयंच मसंच सिंधच पशन्नंच सु वहु पुप्फ वथ गध मल्लालंकारं च वा-सुदेव पामोखाण रायसहस्साण आवासेसु साहरह तेवि साहरंति.

अर्थः—वी विस्तर्ण अ. असन पा. पाणी खा. सुखडी मेवादीक. सा. मुखवास सु. सुरा. म मदीरा म महुडानो दारु. मं. मांस. सीं. सींधु. प. प्रसन्न ए मदीरानी जाती सु. अति. व घणा. पु फुल व वस्त्र. गं. गध. म. माला. अ अलंकार. व वासुदेव. पा. प्रमुख. रा. राजाना सहस्र आ आवासनेवीसे. सा मुको. ते. ते पण सा सीम मुके

एम सेवकने कह्यो अने ए काम सेवके कीधो जीहां समद्रष्टीना घर होवे तीहां मद, मांसना, गौरव कीम होवे ? सुत्रमध्ये मद, मांस, घणे ठामे नीखेध्या छे सम द्रष्टीने घरे च्यार आहार होवे, पण छ आहार होवे नहीं एणे मेळे ध्रुपद राजानो सर्व घर मीथ्याद्रष्टी जाणवो.

४ वळी हींस्याधरमी कहे छे जे, प्रतिमा तो श्रीवितरागनी हसी खरी, जीन पडीमा कही बोलावी छे ते माटे ते उत्तर कहे छे

तएण सा दोवइ रायवरकन्ना जेणेव मजणघरे तेणेव उवा गछईस्त्ता न्हाया कयवलीकम्मा कयकोउयमगल पायछित्ता सुध प्पावेसाइ मगल्लाइ वथाइ पवर परिहिया मजणघराउ पडी निखमईस्त्ता जेणेव जिणघरे तेणेव उवागछईस्त्ता

अर्थ —त तिवारे सा से दो ध्रुपदी रा रायवरकन्या जे. जीहां म. स्नानघर. ते. तीहां उ आवे आवीने न्हा. न्हाइ क. कीधा बळीकर्म पाठी प्रमुख

वीलेपन कर्यो. क. कौतक मगलीक पाणीनी अमली भरी कोगळा कर्यो. पा. अ
श्रण पेहेरी तीलक मस करी. सु सुद्द निर्मळ. पा. उत्तम मं मगळीक. व. व
प प्रधान प. पेहेर्यो म. मजन जे नहावानां घरथकी. प. नीकळे नीकळीने
जीहां. जी. जसतु घर. ते तीहां उ. आवे आवीने.

इहां तीथयर घर नथी कह्यो, जीण शब्दे तो सर्व चार जातना देवता आव्या
अने तीथयरे मध्ये तो एक तीर्थ करहीज आव्या, ते तीर्थकरने घर न होवे
तीथयरे घरे स्याने कहे

जिणधर अणुप्पेवेसई२त्ता जिणपडीमाण आलोय पणा
करेई२त्तालोमहथंपम्हजता एव जहा सुरियामो जिणपडीमाउं
अवेइ तहेव भाणियव्व जाव धुवंडहई२त्ता वामजाणु अचेई२त्त
दाहिणजाणं धरणितल सिनियई२त्ता तिखुत्तो मुधाणधरणितल
नियर्येई२त्ता इसि पचुणमइ२त्ता करयल जाव तिकट्टु एववयासी
नमोथुणं अरीहताणं भगवताण जाव समत्ताणं वदइ नमंसई२त्ता

अर्थः—मी जीनना घरमांही प्रवेश करे करीने ते प्रतिमाने जोइने प्रणा
करे वांदे नमस्कार करे नमस्कार करीने मोर पींछनी पुंजणीइं पुंजे पुंजीने इ
जीम सुरीयाम देवे जीम जीनप्रतिमाने पुजी तीम पुजे तीम सर्व कहेवुं जावत धु
उखेवे उखेवीने डाबा पगनो ढींचण ऊचो राखे राखीने जमणा पगनो ढींचण ध
णी तळे नमाडे मुइ नमाडीने. ता प्रणवेळा. मु मुस्तक. ध भूमीतळे. नी लगा
लगाडीने इषत लगारेक मार्थुं मुइ नमाडे नमाडीने करयल हाथ जोडी जावत इ
करी इम कहे चैत्यवंदन करे नमस्कार ठेकार वचनालकारे अरीहतप्रते भगवंत
ज्ञानमय आत्मा छे जेहनी जावत प्राप्त मुक्ति पोता सीमवांदे नमस्कार करे नम
स्कार करीने

एटलो पाठ ज्ञाता मध्ये छे अने जीहां सुरीयामो.

जिणपडीमाऊं अचेइ तहेव भाणियव्व जाव धुवडहई

अर्थ —जी जीनप्रतिमाने जावत धुप उखेवे पटळा लगे सुरीयामनी मध्या
प्रणमां पाठ छे ते लखे छे

जिणपडीमाणं लोमहथ पमजइरत्ता जिणपडीमाऊं सुरही गंधोदएणं न्हाणेई सरस गोसिस चदणेण गायाइअणुलिप्प ईरत्ता जिणपडीमाण अहियाइ देवदुसा जुयलाइं नियसेईरत्ता अग्गोर्हिविरोहि गंथेर्हि अचेइ पुफारुहण मलारुहणं चुतारुहणव- यारुहण आभरणारुहण करेईरत्ता आसत्तोसत्त विपुलवट्ट व ग्घारिय मल्लदाम कलाव करेईरत्ता जिणपडीमाण पुरतो अच्छे- हिं सएहहि रययामयएहिं अछरसेहिं तदुलेहिं अठ मगलए आलिहईरत्ता तजहा सोथीय जाव दप्पण तवाण तरंचण चद- प्पह रयण विमल मणीरयण भत्ति चित्ता कालागुरु पवर कुदरक तुरुक धुव मघमघत गधु धु अमाणचिठति.

अर्थः—जी. जीनप्रतिमाने लो. मोरपींछना पुजणीए करी प. पुजे पुजीने जीनप्रतिमा सु. सुगघे. ग. गघोदक. न्हा स्नान करावे स आर्द्र. गो. गोसीर्ख. च. चंदने करी. गा गात्रप्रते अ लेप करे. जी जीनप्रतिमाने. अ. मुहघां. दे. देव दुष जु जुगळ वस्त्र नी पेहेरावे पेहेरावीने. ९ पु फुल चडावे. ६. म माळा चडावे, ७. चु. चुर्ण वास लेप चडावे व वस्त्र चडावे धजा बांधे १० आ आभ रण चडावे. क करीने. आ उपर चद्रवा बांधे हेठे भूमीका लगे. वी. वीसतीर्ण घाटला स्थायमान. म फुलनी द दाम. क. ठरे करीने जीनप्रतिमाने. पु आगळे अ निर्मळ. से घन रुइ २ रुपामय. अ हुकडी वस्तु ते मांहे प्रतिबींब पडने. तं तदुले करी सा साथीयो जा. जावत शब्दे आठ कहेवा द आरीसो त. तीवार पछी र. चंद्रप्रभा २ वैदुर्यरत्नमय वि निर्मळ छे म मणीरत्ननी भ भांति ची. चीत्रीत छे का. कृस्नागुरु प प्रधान. कु. चीडगुद. तु सीलारस धु धुप म मघमघायमान. ग उत्तम गध तेणे करी.

एवलो पाठ राइपसेणीमां सुरीयाभे प्रतिमा पुजी ते रीतने मळाव्यो. एटले सुरीयाभनी प्रतिमा अने द्रुपदीनी प्रतिमा एकसरखी अने पुजा पण एक सरखी जाणवी। सुरीयाभे पण प्रतिमाने वस्त्र पेहेराव्या अने द्रुपदीए पण प्रतिमाने वस्त्र

पेहेराव्यां अने आज ईस्याधरमी मतिमाने वस्त्र न नथी पेहेरावतां, ने कहेछे जे तीर्थंकरनी मतिमाने वस्त्र होवे नहीं ए लेखे सुरीयाभनी, द्रुपदीनी मतिमाने वस्त्र होवे नहीं. ए लेखे सुरीयाभनी, द्रुपदीनी, मतिमा ते केहेनी ठहरी, एने तो वस्त्र पहीराव्यां सुत्र पाठे कह्योछे

वली ज्ञाता अध्ययन बीजे भद्रासार्थवाहीए नाग, भुत, वेसमणने पुजवा वास्ते ते पुजा बीधी लखी छे.

जेणामेव नागघरएय जाव वेसमणघ रणय तेणेव उवागछ्‌ईरत्ता तथण नाग पडीमाणय जाव वेसमण पडिमाणंय आलो ए पणाम करेइरत्ता पचुणणईरत्ता लोमहथगं परामुसईरत्ता नागपडीमाऊ जाव वेसमण पडीमाउय लोमहथेण पमजईरत्ता उदगधाराए अझुखईरत्ता पम्हल सुकमालाए गंधकासाईए गायाइ लुहेईरत्ता महरिहच पुफारुहणच वथारुहणच मलारुहणच गधारुहण चुन्नारुहणं आभरणारुहण करेईरत्ता जाव धुवडहईरत्ता

अर्थ—जे जीहां ना. नागना घर छे जा जावत जसना. वे. वेसमणना घर छे. ते तीहां उ आवे आवीने त तीहां. ना नागनी प मतिमाने जा. जावत. वे. वेसमणनी प. मतिमाने आ दर्सनाहीके प नमस्कार करे करीने. प थोडोस्यो कोड नमाडी नमाडीने. लो मोरपींछनी पुंजणीए प लेइ लेइने ना. नागमतिमाने जा. जावत. वे वेसमणनी प मतिमाने. लो मोरनी पुंजणीए प पुंजी पुंजीने. उ उदकनी धाराए अ अभीषेक करे पखाले पखालीने प पछे उ उदकनी धाराए. अ अभीषेक करे पखाले पखालीने प पछे निर्मल. सु सुहाळां वस्त्रने गं राती सुगंध साडी तेणे गा गात्र लु लुहे लुहीने म पछे महुर्यां पु फुल पहीरावे व वस्त्र पहीरावे. मं माल्य पहीरावे ग सुगंध चडावे. चु चुर्ण चडावे अबीरादीक छांटे आ आभ्रण पहीरावे क. करे करीने जा जावत धु धुप उखेवे उखेवीने प सर्व पुजानो पाठ नमोथुणं वीना द्रुपदी सुरीयाभ जेरमो जाणवो

हवे जंबुद्वीप पन्नती मध्ये भरतेसरे चक्रीए चक्रने पुज्यो ते विधि लखीछे

भरहेराया जेणेव आउधघरसाला तेणेव उवागछई२त्ता चक्करयणस्स आलोए पणामंकरेइ२त्ता जेणेव चक्करयणे तेणेव उवागछइ२त्ता लोमहथय परामुसई२त्ता चक्करयण पमजई२त्ता दिव्वाए उदगधाराए अब्भुखेई२त्ता सरसेण गोसीस चदणेण अणुलिप्पई२त्ता अग्गेहिं वरेहिं मल्लेहिं गंधेहिं अचणिई२त्ता पुप्फारुहण मल्लारुहण गधारुहण वणारुहण चुनारुहण वथारुहण आभरणारुहण करेइ२त्ता अथेहि सुन्हेहिं सेएहिं रययामएहिं अथरस तंदुलेहिं चक्कर यणंस्स पुरऊ अठ्ठ मगलाइ आलिहई २त्ता त सोथिय सिरिवथ नदियावत वद्दमाणग भद्दासण मछ कलस दप्पण अठ मगलाइ आलिहित्ता काउणकरेई उवयार किंतं पाडल तिलिय चपक असोगपनाग चुयमजरी नवमालिया वउल तिलय कणवीर कुद कुजय कोरंटे पत्तटमणगवर सुरहि सुगध गधियस्स कयगाहथगाहियलप्पभ्रठ विप्पमुक्कस्स दसदवणस्स कुसुम निगरस्स तथचित्त जाणुस्सेहपमाणमित्त उहिं नियर करेत्ता चदप्पभइवइर वेरुलिय विमल दड कचण मणि रयण भतिचित्त कालागुरु कुदरुक धुव गधु तमणुविरुधच धुमवट्टि वेरुलिय मइ कडुछुय गहय पयत्ते धुव दहई२त्ता सत्तठपयाई पच्चोसकई२त्ता वामजाणु अचेई जाव पणाम करेई२त्ता आउध घरसालाउ पडीनिखमई२त्ता

अर्थ—भ भरय राजा जे जीहां. आ आऊध घर. सा साला छे ते तीहां उ आवे आवीने प. चक्ररत्नने आ दीठाथका प प्रणाम करे करीने जे. भीहां च चक्ररत्न छे ते. तीहां उ आवे आवीने लो मोरपींछनी पुजणी प स्र्प एइने च. चक्ररत्न प पुजे पुजीने दी दीव्य च पाणीनी धाराए करी. अ सींचे सींचीने स सरस रस सहीत गो गोसीर्ष च चंदने. अ. लीपे लीपीने अ अग्र उत्तम व. प्रधान ग सुगध वस्तुए करी. म फुलनी माळाए करी. अ.

अर्चा पुजा करे. पु. फुलना आरोपण चढावी. वो. म फुलनी मालानो आरोपण. ग गंधद्रव्ये आरोपण. व. वाना आरोपण. चु. चुर्ण, गंध, पुडी आरोपण. व. वस्त्र लुगडां तेहनुं आरोपण. आ. आभरण घरेणानुं आरोपण. क. करे करीने. अ. निर्मळ सु सुलक्षण सकोमळ. से स्वेत उजळां. र रजत रुपामय अ. अत्यंत स्वच्छछे फटीकनी परे एहवा. तं तदुले करीने. च. चक्ररतनने पु आगळे. अ. आठ आठ. म मगळीक आ आळीखे करे त. ते कीहां सो. सायीओ. १. सी. श्रीवछ २ न नंद्यावर्त्त ३ व वर्धमान सरावसंपुट ४. म. भद्रासन. ५ म. मछ ६ क. कळस ७. द. दर्पण ८ अ आठ म मंगलीक. आ. करे करीने. का. करे उ. उपचार कीं. ते. त्यो उपचार पा. पाटल वृक्षना फुल. ती तीलक वृक्षना फुल. चं चंपाना फुल. अ. अशोक वृक्षना फुल. पु. पुणाग वृक्षना फुल. चु. आंबानी मांजरी न. नवमाळतीना फुल व बउरसीरीना फुल ती. तीलक वृक्षना फुल. क. कणयरना फुल. कुं कुंद वृक्षना फुल. कुं. कुजयकुवाना फुल. को. रट वृक्षना फुल. प दमणाना फुल. व मधान सुं सुरभी. सु. सुगध. ग गधीव एहवो. क हाथे करी ग्रहवा मांडया मने ग्रह्या नहीं अथवा करतलमांहीथी पडया एहवा तेणे करी धी पचवर्ण थकी मुक्या थकां वीसतार्यो तथ. तीहां चक्ररतनने चोख फेरे जे मयवी मरेल तेहने वीखे वी. चीत्रसंयुक्त जाणस्ये ढींचण समान हग कीधा द पांच वर्णना फु फुलना नी. समोहना त तीहां आश्चर्यकारी जा. ढींचण सुधी एतले प्रमाण मात्रे उ अवधी मर्यादाइ फुलनो विस्तार करीने चं चद्रकांत रतन व वज्रहीरा वे वैदुर्य रतननो वि निर्मळ दं दंड छे जेहनो एहवो कं. सुवर्ण म मणी र रतने करी म भातीस्युं चीतर्यो एहवो. का कृस्नागुरु कु कुदरु तेहनो. धु धुप ग महा गंधे करी उत्तम तेणे करी अ अनुविधण्या प एहवी. वे वैदुर्यरतनमय एहवो क. धुपनो कडुछो. ग. ग्रहीने. प उयमवंत थको धु धुपमंगे द दहेधुप करीने स सात आठ पगलां प. पाछो उसरे पाछो उसरीने. वा डाबुं ढींचण अ ऊंचु करे आ आवंत प प्रणाम करे करीने आ आउधघर सा साळामांहीथी प. नीकळे नीकळीने

इहां पण चक्र पुजवानी वीधी पण नमोथुणं वीन्या धुपदी, सुरीआभनी पुजा जेहवी पुजा जाणवी

इसे वीस्तार सहीत कुणीक राजाए श्रीमहावीरने कीम रीते वांधा, पुज्या ते वीधी उववाइ सुत्रथकी लखी छे.

चंपाए नयरीए मझंमझेण निग्गछई२ त्ता जेणेव पुणभद्देचे-ईए तेणेव उवागछई२ त्ता समणस्स भगवउ महाविरस्स अदुर-सामते छत्ताझिए तिथयराइ सेसेपासाई२ त्ता अभिसेक हथि रएणाउ पच्चोरुहई२त्ता अवहवु पंचराइ कुकुहाइं तजहा खग१ छत्त२ उप्फेसं ३ वाहणाउ४ वालवीयण ५ जेणेव समणे भगवं महावीरे तेणेव उवागछइ२त्ता श्रमण भगव माहावीरं पचविहेणं अभिगमेण अभिगछति तजहा सचित्ताण दव्वाणं विउसरणयाइ अचित्ताणं दव्वाणं अविउसरणयाई एगसाडिय उतरासग करणेणं चखुफासे अजलिपग्गाहण मणसोएगत भाव करणेण श्रमणं भगव महावीर तिखुत्तो आयाहिण पयाहिण करेई२त्ता वदइ नमसई२त्ता तिविहाए पजुवासणाए पजुवासति तजहा काइयाए वाइयाए माणसीयाए तावस छुइय ग्गाहथपाए सुस्सुसमाणे अभिमुहे विणएण पजलिउडा चजुवासति वाइयाए जजंभगवं वागरइ एवमेय भते अवितहमेय भते असादिठमेय भते पडीछी-मेय भते इथीयपडीछीमेयं भते सेजहाय तुझेवयह अपडीकुल-माणे पजुवासंई माणसीयाए महयासवेग जणईरत्ता तीव्वधम्माणु रागरत्ते पजुवासई ॥ इति ॥

अर्थ—कोणीक राजा चं चंपा. न नगरीने म मध्य भागे (वीचाळे) नी नीकळे नीकळीने. जे जीहां पु पुर्ण भद्र चैत्य छे ते तीहां उ आवे आवीने स श्रमण. भ भगवंत म माहावीरना. अ अती वेगला नहीं अती ढुकडा नहीं छ. छत्र आद देइ ती तीर्थंकरना से अतीसय पा देखे देखीने. अ पाटनो. ह. हाथी र रतनने प हेठो उतरे उतरीने. अ अलगा मुके पं पाच राजना. कु. चीन्ह सं ते कहेछे. ख खडग १ छ छत्र २ उ मुगट. ३ वा मोजडी ४ चा. चामर ५ जे जीहां स श्रमण भ भगवत म. माहावीर. ते. तीहां उ. आवे आवीने स. श्रमण. भ भगवत म माहावीर देवने प पांच प्रकारे. अ

अर्चा पुजा करे. पु. फुलना आरोपण चढावी. वो. म फुलनी मालानो आरोपण. ग गंधद्रव्ये आरोपण. व. वाना आरोपण. चु. चुर्ण, गंध, पुडी आरोपण. व. वस्त्र लुगडां वेहनु आरोपण. आ. आभरण घरेणानुं आरोपण. क. करे करीने. अ. निर्मल सु सुलक्षण सकोमल. से स्वेत उजलां. र. रजत रुपामय अ. अत्यंत स्वच्छछे फटीकनी परे एहवा. तं तंदुले करीने. च. चक्ररतनने पु आगले. अ. आठ आठ. मं मंगलीक. आ आलीखे करे स. ते कीहां सो. सायीओ. १. सी. श्रीवछ २. न नंदावर्त्त ३ व वर्धमान सरावसपुट ४. भ. भद्रासन. ५ म मछ ६ क कलस ७ द. दर्प्पण ८ अ आठ म मंगलीक. आ. करे करीने. का. करे उ उपचार कीं. ते. स्यो उपचार पा. पाटण वृक्षना फुल ती तीलक वृक्षना फुल. चं चंपाना फुल. अ. अशोक वृक्षना फुल. पु. पुणाग वृक्षना फुल. सु आंबानी मांजरी न. नवमालतीना फुल ब बउरसीरीना फुल ती. तीलक वृक्षना फुल. क. कणयरना फुल. कुं कुंद वृक्षना फुल. कुं. कुजपकुवाना फुल. को को रट वृक्षना फुल. प दमणाना फुल. व प्रधान सु सुरभी. सु. सुगंध. ग गंधीत एहवो. क हाये करी ग्रहवा मांडया अने ग्रह्या नहीं अथवा करतलमांहीथी पडया एहवा तेणे करी वी कुग्गल थकी मुक्या पंच वर्ण वीखरायों तय तीहां चक्ररतनने चोख फेरे जे प्रथवी प्रदेश तेहने वीखे वी चीत्रसंयुक्त जाणस्ये ढींचण समान हग कीधा द पांच वर्णना. फु फुलना नी समोहना व तीहां आश्चर्यकारी जा ढींचण सुधी एतले प्रमाण मात्रे उ अवधी मर्यादाइ फूलनो विस्तार करीने चं. चंद्रकांत रतन व वज्रहीरा वे. वैडुर्य रतननो वि निर्मल. दं दंड छे जेहनो एहवो कं. सुवर्ण. म. मणी र. रतने करी भ भातीस्युं चीतर्यो एहवो का कृस्नागुरु कु कुदरु तेहनो. धु धुप गं महा गंधे करी उत्तम तेणे करी अ अनुविधण्या प एहवी वे वैडुर्यरतनमय एहवो क. धुपनो कडुछो. ग. लइने प उपमवंत थको धु धुपमने द देइधुप करीने स सात आठ पगलां प. पाछो उसरे पाछो उसरीने. वा डावुं ढींचण अ ऊंचु करे आ जावत प प्रणाम करे करीने आ आयुधघर. सा सालीमांहीथी प नीकले नीकलीने.

इहां पण चक्र पुजवानी वीधी पण नमोथुणं वीन्या द्रुपदी, सुरीयाभनी पुजा जेहवी पुजा जाणवी

हवे वीस्तार सहीत कुणीक राजाए श्रीमहावीरने कीम रीते वांद्या, पुज्या ते वीधी उववाइ सुत्रथकी लखी छे

करी तो इम जाणजो जे ए प्रतिमा भगवंतनी न होये, जे आरंभ परीग्रह सहीत वीखय, कखाय सहीत जीनछे अवीधनाणी तथा वीभंगभनाणी देवता जीन कहीए ते जीननी प्रतिमा जाणजो

वीबारे हींस्याधरमी कहेछे जे, पुनानी वीधी भगवंत कोर्णीक यकी जुदी पडी, पण जीणपडीमा कहीछे, पण नाग, भुत, जक्ष, वेसमणपडीमा, नथी कही तेहनो उत्तर श्रीठाणांगजी सुत्रने त्रीजे ठाणे कह्योछे जे —

तउ जिणा पन्नंता तजहा उहिनाणजिणा मणपजवनाण-जिणा केवणनाणजिणा तउ केवली पन्नत्ता तजहा उहिनाण केवली मणपजवनाण केवली केवलनाण केवली तउ अरहा पन्नता तजहा उहिनाण अरहा मणपजवनाण अरहा केवल-नाणअरहा

अर्थः—त. त्रण जी. जीन. प कह्या त ते कहे छे उ. अवधीज्ञान सहीत ते अवधी जीन कहीए म. मनपर्जवज्ञानी जीन. के केवलज्ञानी जीन. त त्रीण. के. केवली प कह्या त ते कहे छे. उ. अवधीज्ञानी केवली म मनपर्जव ज्ञानी केवली के केवल ज्ञानी केवली त त्रण अ अरीहंत प. कह्या. तं. ते कहे छे उ अवधी ज्ञानी अरीहंत म मनपर्जव ज्ञानी अरीहत के केवल ज्ञानी अरीहंत

इहां अवधनाणीने पण जीन केवली अरीहंत कह्या छे,पण केवलनाणी केवली, केवलनाणी अरीहंत, केवलनाणी जीन त्रणेने तो सचीत वस्तु पुष्प, चंदन वीलेपन, धुप, दीप इत्यादीक पांच इंद्रीना भोग कल्पे नहीं. जे दीवसथकी अणगार थीया ते दीवसथकी वोसराव्या छे तेहनी भक्ती कोर्णीक राजाए कीधी तेज रीते थाय पण धुपनीनी रीते न थाय, अने मनपर्जव नाणी केवली, मनपर्जवनाणी अरीहंत, मन-पर्जवनाणी जीन ए त्रण तो सर्व वीरती साधु होवे तेहने पण सचीत वस्तु आरंभ सहीत भक्ति न कल्पे. जे दीन थकी अणगार थीया ते दीनथकी वोसराव्या छे. हवे तीर्थंकर, साधु, केवलीनी भक्ति सावद्य करणी करी कोइए कीधी होवे तो सुत्र मध्ये देखाडो जेहवा पुरुष होवे तेहवी भक्ति पण होवे

राइपसेणी सुत्र मध्ये त्रण आचार्य कह्या, १ कलाचार्य, २ सील्पाचार्य, ३ धर्माचार्य, ते मध्ये कलाचार्य, सील्पाचार्यनी भक्तिपणे होवे कही, तीहां स्नान करावनो,भोजन

साहमा अ आवानी वीधी सावधीने साहमा जाये तं ते करेछे. स. सर्वात फु संघोलादीक द. द्रव्य वी अलगा मुके भेजे. अ अचीत. द द्रव्य आभरणादीक अ. अनित्य जे पासे राखे ए एक पनानु दस तेणे उ, उत्तर दीसन हाथे संभे ऊधा करे च, भगवतने द्रष्टी गोचर देखे अ बे हाथ जोडीने. म मननो ए काम्र मा भाव क करवे करी स भमण भ. भगवंत म. श्रीमहावीरने ती अणवार आ जीमणा पासाथी मांडीने प प्रदक्षणा करे करीने व स्तुती करीने नमस्कार करीने ती त्रण प्रकारे. प सेवाइ प. सेवा करछे त ते करेछे. का. काइयामी १. वा वचननी २ मा. मननी ३ ता प्रथम तो सकोचाछे अ अग्र हाथ पगना. सु भली सेवा करतो थको. अ सनमुख साहमो. वी. वीनय करे. पं बे हाथ जोडीने ८ सेवा करेछे वा वचननी जं. जेजे भगवंत वा वचरे कहे ए एमज तुमारो वचन भं. हे पुज्य, अ. जुठो नहोइ तुमारो वचन भं. हे पुज्य. अ. संदेह रहीत ए ए तुमारो वचन. भ हे पुज्य प हे पुज्य वीसेस वांछुंछुं ए तुमारो वचन भं हे पुज्य इ इछुंछुं वीसेस वांछुछुं ए तमारो वचन. भं हे पुज्य. से तीमज तु तुमे कहोछो तेम. अ. अणउथापतो. प सेवा करतो मा मनने म. मोटा वैराग्य ज उपजवे उपजावीने ती तीव्र आकरो धर्ममा रा. रागभाव तेणे रातो प. सेवा करेछे

इहां श्रीवितराग वांदवानी वीधी कोणीक राजाए सावची पण सावज पुजा कांइ करी नहीं सुरीयाभ, द्रोपदी, भद्रासार्थवाही, भरतेसरनी, पुजा प्रतिमा संबंधी सरीखी स्थाप थाई प्रथम १ मोरपींछयकी पुंजी, २ न्हवरावी, ३ चदन छीप्यो, ४ वस्त्र पहीराव्या, सुगंध द्रव्ये अरची, ५ फुल, ६ फुलमाळा, ७ चुर्ण, ८ वस्त्र आभ्रण, ए पांच वस्तु मुख्य आगळ चडावी ९ फुल माळा वीखेरीये, १० चो खाना आठ मगळीक आळेख्या, ११ धुप उखेव्यो, एटला बोल सुरीयाभनीपरे प्र तिमा आगळे धुपदीप कीधां, भद्राए जस आगळे कीधां, भरतेश्वरे चक्र आगळ कीधां इवे तेहनी रीते प्रतिमा आगळ तमे पण करोछो जीनप्रतिमा जीन सरखी पण कहोछो तो तुमयकी तो राजा कुणिक भक्तीवंत घणो हवो, अने प्रतिमायकी अधीक श्रीभगवंत हता तो तेणे तमारी परे सावद्य पुजा केम कीधी नही? पण इम जाणजो जे, भगवंत अने भगवतनी प्रतिमानी पुजा एक सरखी कही होत तो जाणत जे, धुपदीप भगवंतनी प्रतिमा भगवतनी रीते पुजा ते माटे ए प्रतिमा भगवतनीज छे, पण पुजा कीधी तो न.ग, सुत, जस, वेसमण, चक्ररतननी पेरे

करी तो इम जाणजो जे ए प्रतिमा भगवंतनी न होवे, जे आरंभ परीग्रह सहीत वीखय, कखाय सहीत जीनछे अवीधनाणी तथा वीभंगअनाणी देवता जीन कहीए ते जीननी प्रतिमा जाणजो

वीवारे हींस्याधरमी कहेछे जे, पुजानी वीधी भगवंत कोर्णीक थकी शुदी पडी, पण जीणपडीमा कहीछे, पण नाग, सुव, जक्ष, वेसमणपडीमा, नथी कही तेहनो उत्तर श्रीठाणांगजी सुत्रने त्रीजे ठाणे कह्योछे जे —

तउ जिणा पन्नंता तंजहा उहिनाणजिणा मणपजवनाण-जिणा केवणनाणजिणा तउ केवली पन्नत्ता तजहा उहिनाण केवली मणपजवनाण केवली केवलनाण केवली तउ अरहा पन्नता तजहा उहिनाण अरहा मणपजवनाण अरहा केवल-नाणअरहा.

अर्थः—त. त्रण जी. जीन. प. कह्या त ते कहे छे उ. अवधीज्ञान सहीत ते अवधी जीन कहीए म. मनपर्जवज्ञानी जीन. के केवलज्ञानी जीन. त त्रीण. के केवली प कह्या त ते कहे छे. उ. अवधीज्ञानी केवली म मनपर्भव ज्ञानी केवली के केवल ज्ञानी केवली त त्रण अ अरीहंत प. कह्या. तं. ते कहे छे. उ अवधी ज्ञानी अरीहंत म मनपर्जव ज्ञानी अरीहंत के. केवल ज्ञानी अरीहंत

इहां अवधनाणीने पण जीन केवली अरीहंत कह्या छे,पण केवलनाणी केवली, केवलनाणी अरीहंत, केवलनाणी जीन प्रणेने तो सचीत वस्तु पुप्प, चंदन वीलेपन, धुप, दीप इत्यादीक पांच इंद्रीना भोग कल्पे नहीं. जे दीक्षयकी अणगार थीया ते श्रीत्रसथकी वोसराव्या छे तेहनी भक्ती कोणीक राजाए कीधी तेम रीते थाय पण धुपनीनी रीते न थाय, अने मनपर्भव नाणी केवली, मनपर्जवनाणी अरीहंत, मन-पर्भवनाणी जीन ए त्रण तो सर्व वीरती साधु होवे तेहने पण सचीत वस्तु आरंभ गर्हीत भक्ति न कल्पे. जे दीन थकी अणगार थीया ते दीनथकी वोसराव्या छे. इमे तीर्थंकर, साधु, केवलीनी भक्ति सावद्य करणी करी कोइए कीधी होवे तो सुत्र मध्ये देखाडो जेहवा पुरुष होवे तेहवी भक्ति पण होवे

राइपसेणी सुत्र मध्ये त्रण आचार्य कह्या, १ कल्याचार्यो, २ सील्याचार्य,३धर्माचार्य, ते मध्ये कलाचार्य, सील्याचार्यनी भक्तिपणे होवे कही, तीहां स्नान करावनो,भोजन

करावबो, घणो धन आपवो कह्यो, अने धर्माचार्यनी भक्ति करवी करी त्यां स्नान, भोजन, धन आपवो न कह्यो,जे धीरतबतने न कल्पे ते माटे तेहने तो वंदना नमस्कार ने सुझतो असणादीक चउद प्रकारनो दान देवो कह्यो, तीम जेहवो पुरुष होय तीम तेहनी प्रतिमा पण तेहवीज होवे, अने तेहनी भक्ति पण तेहवीज होवे, धुपदीप पुष्प कीधी ते श्रीवितरागनी प्रतिमा न होवे वितरागने साक्षात पणे कोइ श्रावके धुपदीनी परे पुज्या नहीं कह्या तो भगवंतथकी प्रतिमा मोटी कीम जाणी ? ए प्रतिमा भगवंतनी नहीं.

वळी तमे हमणां प्रतिमा पुजोछो, तेहने वस्त्र नथी पहीरावता ग्रहेणा, पहीरावो छो, अधुरी भक्ति करोछो, दीगंबर वस्त्र ने आभुषण एकेही न पहीरावे बोयनी प्रतिमाने गळे जनोइज होयछे. माथे सीखा राखे छे तेमां साची रीत ते कही ! देवताने धुपदीप तो घरेणानि कपडां बेहु पहीराव्यां, ते प्रमाणे तो तमारी प्रतिमा नथी दीसती. प्रतिमा जे रीते करवी, पुजवी, ते रीत सुत्र पाठे होवे तो बतावो १. तीवारे हींस्या धरमी कहेस्ये जे जीणधर कीम कह्या ते उत्तर

१ जंबुद्विप पन्नती मध्ये श्रीरुखभदेवस्वामीये संजम लीधो तीहां आगारीय अणगारिए पव्वइये कह्यो जे, आगार कहीतां घर मुकीने अणगार थीया.

२ ज्ञाता मध्ये मल्लीनाथ स्वामीए संजम लीधो तीहां आगाराउ अणगारीयं पव्वइए आ गृहवास मुकीने अणगारपणुं अंगीकार करे कह्यो

३ आचारांगमध्ये श्रीमाहावीरे संजम लीधो तीहां आगाराउ अणगारीयं पव्वइए कहेतां घरवास मुकीने अणगारपणुं अंगीकार करे एम कह्यो एम सुत्रमध्ये ठाम ठाम जेणे दीक्षा लीधी; श्रीवितरागे, गणधरे, राजाए, शेठे, सेनापतिए,गाथापतिए, माहाबळ कुमारे, सुदर्शन शेठे रुखभदत्त, देवानंदाए, जेयंती, मृगावंती, उदाइराजा, कार्तिकशेठ, मेघकुमार, थावर्चापुत्र, सेलकराजा, सुखदेव इत्यादीक जेणे संजम लीधा तीहां कह्यो. आगाराउ अणगारीयं पव्वइए कहेतां जे घरवास मुकीने अणगार पणुं अंगीकार करे घर मुकीने नीकल्या ए लेखे केवळनाणी जीन अने मनपर्जव-नाणी जीन ए बे जीनने तो घर न होवे, जे केवळी जीनने घर कहेछे ते माहा मुर्ख, मंदबुद्धि, भारे कर्मि जीव दुर्लभबोधी जाणवा.

वळी राजग्रही, चंपा, तुंगीया, आलंभीया, सावत्थि प्रमुख घणे ठामे श्री वितराग तथा मुनीराज पधार्या तीहां राजा, शेठ, सेनापति प्रमुख वांदवा गया

तीहां इम कह्यो जे, चालो हे देवाणुप्रीया गुणसील, पुर्णभद्र बाग मध्ये भगवत तथा साधु आव्या छे तेहने वांदवा जायछे; पण इम कोइए न कह्यो जे, चालो जीनघरे जाइए. तो एम जाणजो जे भगवंत केवळीने घर न होवे, जे कहे छे ते एकांत शुद्ध कहे छे

वळी सुत्रमध्ये ठाम ठाम आचारंग, ठाणांगजी, बृहतकल्प मध्ये जीहां साधु रहे ते ठामने "उवसर्य" कहेतां अल्पकाळना आश्रयमाटे उपाश्रय कह्यो छे. पण क्यांइ जीनघरे, मुनीघरे एम नथी कह्यो दसाश्रुतस्कंध मध्ये पडिमाधारी साधुने पण त्रण जातना उपाश्रयमां रहेवुं कह्युं पण घर नथी कह्युं एम अनेक सास्त्र जाणवी ते माटे द्रुपदीने अधीकारे जीन घरे कह्युं ए पाठ साचो छे पण केवळनाणी जीन न जाणवा जे जीनने घर होवे ते जीन जाणवा घरवासी जीन केवळनाणी, मनपर्जवनाणी जीन न होवे जीनघर ते अवधनाणीजीन चार गतना जीव, चार जातना देवता तेहने घर होवे अवधनाणीजीनने सुत्र मध्ये घणा ठामे घर कह्यां छे ते कहेछे ज्ञाता अध्ययन बीजे कह्युं जे वीजय चोर राजग्रही नगरीमां जेटलां ठाम जाणे छे तेमांथी कहेछे

रायगिहस्स नगरस्स वहुणि अइभिगमणाणिय निगमणाणिय पाणीगाराणिय वेस्यागाराणिय तक्करठांणाणिय संघाडगाणिय तियाणिय चउक्काणिय च्चराणिय नागघराणिय भूतघराणिय जखदेउलाणिय

अर्थ.—रा राजग्रही, न नगरमां व घणा, अ पेसवाना मर्म जाणे नी. नीसरवाना मर्म जाणे पा मद्यपानना घर तेणे ठामे वे. वेस्याने घरे त चोरने ठामे (चोर रहेवाना घर.) स बे वाट पडे. ती तीन वाट लागे. च चार वाट एकठी मीळे च. चाचरना ठाम. ना. नाग देवना घर. भु भुतना घर ज. जखना देहेरां

ए अवधनाणी जीन, जख, भुतना घर कह्यां वीजय चोर जखादीकना घर जाणेछे. इत्यादीक ज्ञाता सुत्रमां घणा ठामनो वीस्तार छे जे वीजय चोर आटलां ठाम जाणेछे तो तीर्थंकरना देहेरां नहीं जाणतो होवे ? पण एम जाणजो जे ते काळे राजग्रहीमां तीर्थंकरना देहेरां नथीज.

वळी ज्ञाता बीजे अध्ययने भद्रासार्थवाही पुत्र वछा माटे पुजा कीधी छे तीहां पण कह्यो छे जे केणेव नाग घरे जाव वेसमण घरे नागना घर छे, जक्षना, वेसमण ना घर छे जाव शब्दमध्ये एटला द्वार कह्या नागघर, भुतघर, जक्षघर, इंद्रघर, खंधघर, रुद्रघर, सीवघर, वेसमणघर, तो इम जाणजो जे अवधनाणी जीनने घर कह्या छे. जे देवताने घर तेहनी प्रतिमाने पण घर अने विचरागने घर नथी तो तेनी प्रतिमाने घर स्याने होस्ये ?

वळी कोइ कहे तीर्थंकर वीना बीजाने जीन कीहां कह्या छे. ते उत्तर

१ तीर्थंकरने जीन कहीये २ सामान्यकेवळीने जीन कहीए. ३ अवधनाणीने जीन कहीए ४ मनपर्जवनाणीने जीन कहीए ५ बारमा गुणठाणावाळाने जीन कहीए, ६ चउद पुर्वीने जीन कहीए ७ आवत दशपुर्वीलगे जीन कहीए ८ अ ग्यारमा गुणठाणावाळाने जीन कहीए ९ आवती चोवीसीने जीन कहीए. १० जीन नामे द्वीपने जीन कहीए ११ जीन नामे समुद्रने जीन कहीए. १२ कंदर्पने जीन कहीए १३ नारायण, कृष्णने जीन कहीए १४ बहु धनवंतने जीन कहीए.

कंदर्पने जीन कह्यो ते कीसा ग्रंथनी साखे ? हेमाचार्य कृत्य हेमी नाम माला अनेकार्थ मध्ये श्लोक कह्यो

वीतरागोजिनोचैव ॥ जिनसामान्यकेवली ॥
कंदर्पोजिनोस्यात ॥ जिननारायणो ॥ १ ॥

अर्थः—१ अरीहंत घातीकर्म जीत्या ते माटे जीन २ इम सामान्यकेवळी पण चार घातीकर्म जीत्या ते माटे जीन. ३ कंदर्प सर्व जीवने व्याप्यो ते माटे जीन वासुदेव भुजाबळे त्रण खंड जीत्या ते माटे जीन पछे जेहवो अवसर प्रस्ताव तेहवो अर्थ जाणवो.

वळी द्रुपदी परणवाने अवसरे नियाणाना तीव्र उदय मध्ये भरतारनी वांछा विपर्यायकी पुजीछे. ते वेळा चारित्र मोहनीनो उदय तिव्र छे मीथ्यात्व वृत्ती छे ते मीथ्यातने उदये श्री विचराग निरागी उपर भावभक्ति नथी. ते माटे एने अवधनाणी जीननी प्रतिमा जाणवी तीवारे हींस्या धरमी कहे अवधनाणी जीननी प्रतिमा होवे तो नमोथुणं कीम कहे अवधनाणी मध्ये तो नमोथुणंना गुण कीहांथकी तेनो उत्तर अवधनाणी मध्ये तो नमोथुणंना गुण कीहांथकी ए वात साची छे पण अणभरिहतन मुर्खलोकोए अरिहंत करी मान्या छे, तीर्थंकर करी मान्या छे, अने नमोथुणं पण कह्या छे ते साख सुत्रमध्येथी अन्वी छे

१. भगवती सतक आठमे उदेसे पाचमे गोसाळाना श्रावक वखाण्या छीहां कह्यो छे जेः—

इचेतेदुवालस्स आजीविय उवसग्गा अरिहं देवतागा अ-
म्मा पीउसु सुसागा

अर्थः—एम ए बारे आजीवीक गोसालाना मुख्य श्रावक कह्या. आ गोसा-
ळाने अरीहंतनी कल्पनाए करी अहेपणायकी माता पीतानी सुसुखाना करणहार.
अरीहंतनी भक्तिना करणहार कह्या आणदवत तेहने मने गोसाळो अरीहत
छे. ए श्रावक गोसाळाने नमोथुण करेछे के नथी करेता ' अरिहंत जाण्या तीहां
नमोथुणं नियमा थयो.

२. वळी सतक पदरमे कह्यु गोसाळो मखलीपुत्र सावथि नगरीये

अणिणा जिणप्पलावी अणअरहा अरहप्पलावी अकेवली
केवलीप्पलावी असवन्नु सव्वनु प्पलावी अजिणे जिणसद्दं
प्पगा समाणे विहरई

अर्थ.—जीन नथी तेहवोथकी जीन छु एहवो प्रलाप करे, अरिहत नहीं अने
अरिहत छुं इसो प्रलाप करी कहे, केवळज्ञान नहीं अने मुखसो कहे के केवळी छुं,
सर्व पदार्थनो जाण नहीं अने कहे हु सर्व पदाथनो जाणछु. अजीन थको जीन छु
इमो शब्द कहेतोथको विचरे

अजीन, अणअरिहत, अकेवळी, असर्वज्ञथको जीन, अरीहत, केवळी सर्वज्ञ
कहेवाय छे तेना मानणहार तिर्थंकर करी मानेछे नमोथुण करेछे

३. वळी पंदरमे सतके गोसाळानो अयंपुळ श्रावक चीतवे छे जेः—

एव खलु मम धम्मायरिय धम्मोवएसए गोसाले मखलीपुत्ते
उपन्न नाण दसणधरे जाव सव्वनु सव्वदरसी इहेव सावथीए
नयरीए हालाहल हीइ कुभकारीए कुभकारावणसि आजीवियसंघस
परिवुडेआजीविएसमएण अप्पाण भावेमाणे विहरइ

अर्थ —ए एम निश्चे मारो धर्माचार्य, धर्म उपदेश दातार गोसाल मखलीपुत्र
ष उपना ज्ञान, दर्शणना धरणहार जा इत्यादी सर्वज्ञ स सर्वना देखणहार इ.

इहांम. सा. सावत्थि नगरीने विषे हा. हालाहल. कुंभकारिनो. कुं. कुमार आवणने विषे. आ. आजीवक संघाते परवर्यो आ. आजीव समर्थ सालेकरी आत्म भावपाने भावतोथको विचरेछे.

तेहने काले सुर्य उगता हुं अइने वांदीस. ए तो गोसाळाने अरिहंत कहेछे अने नमोथुणं पण करेछे

४ वळी उपासग सातमे अध्ययने सकदाल कुंभारने देवता कही गयो.

पहितेणं देवाणुपीया कल्ले इह महामाहणे उप्पन नाण दंसण धरे तीय पडुप्पन्नामणागयजाणये अरहा जिणे केवली सव्वन्नु सव्वदरसी तिलोगं पेहिय महियए पुईए सदेव मणुस्सा सुरस्स लोगस्स अचाणिजे वदणीजे पुयणीजे सक्कारणीजे सम्माणणिजे कल्लाणं मगल देवीयं चेइयं जाव पजुवासणिजे सचकम्म सपया सपउत्ते तेण तुमवं वंदिजाहि जाव पजुवासेजाहिं पाडिहारियेण पीढ फलग सिजा सथारएण उवानिमते जाहि

अर्थः—प. इहां आपछे दे हे देवानुंप्रीया क. काले इ इहां. म मोटे ये माहानुंभाव. उ उपना ना ज्ञान दं दर्सण धारींअनो प धरणहार ती आतित काळ. प वर्तमानकाळ अ अनागतकाळनो अ अरिहंत जी जीन के. केवळी. स सर्वज्ञ जाण स. सर्व दर्सी. ती. तीलोक. पे. दीठो. म माहेत पु पुजनिक. स. देवता सहीत म. मनुष्य अ. असुर कुमारने लो लोकमे अ. अर्चनिक, पुजनिक. वं वंदनिक पु. पुजनिक. स सत्कार करवा जोग्य स सन्मान करवा जोग्य क कल्याणकारी म. मंगळीक. दे. देवसमान चे ज्ञानवंत जा. जावत प. सेवा करवा जोग्य हदा कर्मना स सत्य कर्तव्यरुप सं सपदा सं संयुक्त ते तेहने तु तुम्हे. वं वांदजो जा जावत प सेवा जोग्य सेवा करजो. पा पाडीआर. पी. बाजोट. फ पाटीयुं सी सीज्या, पाट अथवा स्थान स संथारोतृणादी उ समीप आवी आमत्रभे

इत्यादीक एवी रीते देवताए सकदाल कुंभारने कयु वीचारे सकडाले जाण्युं, माहारो धर्माचार्य गोसाळो मंखलीपुत्र एहवा गुणवत छे ते काले आवसे एम जाण्युं,

अने देवताए तो श्री महावीरस्वामी आश्रे कह्यु हतुं. ए केवे गोसाळाना श्रावक नमोथुणं अणअरिहतने अरिहंत जाणीने कहेछे ए चार सुमनी.

५ तथा छ दीसाचर आदि देइ गोसाळामति साधु पडीकमणु करे तीवारे अरिहंत केहेने जाणीने नमोथुणं कहेछे ? गोसाळानेज अरिहंत जाणीने कहे छे तथा गोशाळाना श्रावक नमोथुणं गोसाळाने अरिहत जाणीने कहेछे.

६. तथा जमालीना श्रावक, साधु भगवतना प्रतिनिक आवश्यक करतां नमोथुणं कहेछे, ते केहेने कहेछे ? जमालीनेज केवळी जाणीने कहेछे.

७ तथा अनुजोगद्वार मध्ये लोकोत्तर द्रव्यासकना करणहार वखाण्या, ते भगवंतनी आज्ञा बारे छे अने बे टकना आवश्यक करे छे, ने भगवते तेहने मीथ्या दृष्टी कह्या छे ते नमोथुणं केहेने करेछे ते पाठ

जेइमे श्रमणगुण मुक्त योगी छकायनिरणुंकपा हयाइंव उद्दामा गयाइव निरकुसा घठामठा तुप्पोठा पडुरपड पाउवणा जिणाणं अणाणाए सछंद विहरिउणं उभनकाल आवस्सयं उवटंति

अर्थ.—जे. भेए मत्यक्ष. स साधुना गुणथकी. मु मुकयाछे जो. व्यापार जेणे छ छकायने बीसे गइछे अनुकंपा जेहनी ई घोडानी परे उ चोकडा रहीत ग हस्तीनी परे नी गुरुनी आज्ञारुप अकुस रहीत घ घसीछे मांखणे जंघ जीणे म मठार्युंछे सरीर मसतके तेलादीक जेणे तु चोपडया होठ मदनार्थे पं पंडुर धमछा पा धोया वस्त्र जी पेहेर्याछे जेणे अ तीर्थंकरनी अण आज्ञाये. स. पोताने छांदे वी. वीचरीने उ भमाते सांजे आ आवश्यकने अर्थे उ उठे

८ तथा अभव्य साधुना वेसमां रह्यो नमोथुणं कहे. ते केहने कहेछे ? श्री विचरागने तो देव करी जाणतो नथी, तो नमोथुणनो स्वामी कोण ? एम अनेक सुत्र सासछे जे अज्ञान, मुर्ख, मीथ्यात्वीना लीधा अजीवने जीव जाणे, ने नमोथु-ण कहे पण विचरागपणे ओळख्या वीना नमोथुण कह्यानो काम नथी.

तथा कोइए पोताना कुळदेवनी पुजा सावद्य आरभ करी कीधी, अने नमो थुणं ते आगळे कह्यां, ते कांइ नमोथुणं कह्या माटे ते कुळदेवनी पुजा समकित खाते न थइ, तीम द्रुपतीये नमोथुण कामदेवादीक अवधनाणी जीन आगळे कह्यो.

तो कोइ ए सावद्द पुजाना पछकने तीर्थंकर केवळनाणी कीम जाणता नहीं

वळी एहीज द्रुपदी परण्या पछी समकित पामी, समम पामी, तीवार पछी क्यांइ प्रतिमा पुजी कही नथी वळी प्रतिमा तीर्थंकरनी होवे तो कोम इस्ते कर्ण पुजती प्रतिमाने सघळे कीम करे ? जो तीर्थंकरनी प्रतिमा होवे तो स्त्री कीम फरसे?

वळी तमे कहोछो जे, जीनप्रतिमा जीन सरखी तो श्री विचरागे तो श्री उत्तराध्ययन सोळमे अध्ययने तथा समवायांग नवमे समवाये, तथा प्रस्नव्याकरण चोथे संवरद्वारे, एम बीजे पण घणे सुत्रे ब्रह्मचारीने एटला बोल वरज्या छे

१ स्त्री सहीत स्थानक, २ स्त्रीनी कथा, ३ स्त्री थकी एक आसने बेसवो ४ स्त्रीनो अंग निरखवो. ५ स्त्रीनो शब्द सांभळवो ६ स्त्रीनो भोग संभळाववो ७ स्त्रीनो फरसवो एटला बोल वरज्या छे. वळी आचारंग, प्रश्नव्याकरण, समवायंगमे पचवीस भावना मध्ये पण स्त्रीनो फरस वरज्यो छे साधु, साधवी, ब्रह्मचारी, श्रावक श्राविकाने पण एहीज रीत पाळवी कही छे. तो श्री विचराग श्रीऋषभदेव स्वामी, जगत चींतामणी विश्वभूषण, तेहने स्त्री केम फरसे? ए वात नीपट अयुक्त छे.

१. श्री वीरवर्धमानस्वामीने देवानंदाये पुत्रने स्नेहे सामो जोयो स्तने दुध आव्यो, पण पुत्रनीज बुद्धे भगवंतने फरस्या नहीं

२ वळी देवकी राणी छ अणगारने पुत्रने जाणी घणो स्नेह आव्यो, स्तनमां दुध आव्यो; पण मुनीने फरस्या नहीं

३ वळी उव्वाइ सुत्रे कह्यो कोणीक प्रमुख पुरुषे तो भगवंतनी आगळे बेसीने धर्म कथा सांभळी. अने सुभद्रा प्रमुख राणीए "ठायाचेव पज्जुवासति" उभीयकी धर्म कथा सांभळी स्त्री जात भगवंतने आगळ बेसवो पण न पामे, तो फरसवो कीहांथी?

४. भगवती सतक नवमे देवानंदा ब्राह्मणी भगवतनी माताये उभां रही धर्म सांभळ्यो; पण बेसवा पाम्यां नहीं

५ इम धारमे सतके जेवंता, मृगावंती पण एमज

६. वळी गणधर गौतमादिक " नाइदुरमणासन्ने आवि नजीक नहीं " अति वेगळा नहीं अति ढुकडा नहीं इम बेठा

७ इम इंद्र, देवता, कोणीक राजा, श्रीकृष्ण, आनंद, कामदेव, सख, पोखली प्रमुख श्रावक ते पण अदुरसामंते (मर्यादाये) बेठा पण फरस कीधो नहीं.

८. तथा जेवती मृगावती, चेलणा, सीवानंदा प्रमुख श्राविकां दुर रही, पण तीलक करवाने कही नहीं. इम कोणीकनी राणी पण, ए लेखे जोतां श्री वितरागना मारगमध्ये स्त्रीनो सग योग्य नहीं तो थी जीन प्रतिमां जीन सरखी तेहने स्त्रीनो स्घटो कीम जोइए ? एणे मेळे जोतां ए प्रतिमा तीर्थंकरनी नहीं

वळी श्री वितरागने तथा साधुने वांदवा गया छे श्री भरथेसर, श्रीकृष्ण, कोणीक, उदाइ राजा, रायप्रदेसी चीत्तसारथी, आणंद प्रमुख श्रावक तेणे पांच अभीगम साचव्यां तीहां सचिताण दवाण वित्तसरणयाई

स. सचीत. फुल, तंबोळादीक द. द्रव्य वि अळगा मुके. मजे.

सचीत द्रव्य दुरे कर्यां जे रीत तीर्थंकरनी ते रीत साधु वांदवानी; तो तीर्थंकरनी प्रतिमानी रीत जुदी कीम पडी ? जीनप्रतिमा जीन सरखी तुमे कहो छो ए वात कीम मळी ? ते माटे द्रुपदीने अधीकारे एटला बोलनो निर्णय करजो

१ द्रुपदीनो पीता मीथ्यादृष्टी २ द्रुपदी श्राविका नहीं ३ द्रुपदी समदृष्टी नहीं ४ अने प्रतिमा पण तीर्थंकरनी नहीं ते केम जे १ प्रथमथी तो मोरपींछथकी पुंजी. २ बीजो पुजा भोगी देवतानी परे अभोगी देवनी कीधी ३ वळी जीन घरे कह्यो. ते जीनराजने घर होवे नहीं ४ ए लेखे अवधनाणी जीननी प्रतिमा काम देवादीकनी जाणवी. जे जीनने घर होवे, जे जीनने स्त्री फरसे जे जीनने पुष्प, चंदन, धुप, दीप, स्नान खपे ते जीननी प्रतिमा जाणवी अने अवधनाणी जीन; नाग, भुत, जक्ष, वेसमणने तो स्त्री सुखे फरस करे. ते साख नदी सुत्रे रोहाने आधिकारे छे. राजाने पांच पीता कह्या, ते मध्ये राणी वेसमण देवतानी प्रतिमाने फरसी. काम सौभाग्यनी अभीलाखथकी, ते माटे हे राजा ! तुं वेसमण देवनो पुत्र छे. ए अवधनाणी जीनने स्त्री फरसी, ते माटे द्रुपदीनी पण वेसमण देवतानी प्रतिमा जाणीए. नमोथुणं कह्या माटे कोइ तीर्थंकरनी प्रतिमा जाणे ते उपर तो अनेक साख सुत्रनी छे

वळी हींसा धरमी कहेसे द्रुपदी नारद आव्यो उठी नहीं ते माटे समदृष्टी कहीये तेनो उत्तरः द्रुपदीने परण्या पछी नियाणो पुरो थयो छे. पछे तो समकितप्रत सुखे पामे एहनो अटकाव नथी परण्यापछी नियाणो पुरो थयो छे, तीवारे पछे धरम सुखे पामे पण परण्या पेहेला समकित प्रत हतां नहीं कोइ कहेस्ये परण्या केडे द्रुपदी समकित प्रत पामी ते कीसे ठामे,कीसा गुरु पासे ते कहो,समकीत तो कुमारापणानोज हतो परण्या केडे पामी होय तो गुरुना नाम ठाम कहो. ते उत्तरः जो द्रुपदीना गुरुना

तो कोइ ए सावद्द पुजाना बंछकने तीर्थंकर केवळनाणी जीन जाणवा नहीं

वळी पईज वुपरी परण्या पछी समकित पामी, संजम पामी, तीवार पछी क्यांइ प्रतिमा पुजी कही नथी वळी प्रतिमा तीर्थंकरनी होवे तो कोम इस्ते करी पुजती प्रतिमाने संघटो कीम करे ? जो तीर्थंकरनी प्रतिमा होवे तो स्त्री कीम फरसे?

वळी तमे कहोछो जे, जीनप्रतिमा जीन सरखी तो श्री विसरागे तो श्री उत्तराध्ययन सोळमे अध्ययने तथा समवायांग नवमे समवाये, तथा प्रस्नव्याकरण चोथे सवरद्वारे, एम बीजे पण घणे सुत्रे ब्रह्मचारीने एटला बोल वरज्या छे.

१ स्त्री सहीत स्थानक, २ स्त्रीनी कथा, ३ स्त्री यकी एक आसने बेसवो ४ स्त्रीनो अंग निरखवो. ५ स्त्रीनो शब्द सांभळवो ६ स्त्रीनो भोग संभळावबो ७ स्त्रीनो फरसवो एटला बोल वरज्या छे. वळी आचारंग, प्रश्नव्याकरण, समवायंगे पचवीस भावना मध्ये पण स्त्रीनो फरस वरज्यो छे साधु, साधवी, ब्रह्मचारी, श्रावक श्राविकाने पण एहीज रीत पाळवी कही छे तो श्री विसराग श्रीजेकला स्वामी, जगत चींतामणी विश्वभूषण, तेहने स्त्री केम फरसे? ए वात नीपट अयुक्त छे.

१. श्री वीरवर्धमानस्वामीने देवानंदाये पुत्रने स्नेहे सामो जोयो स्तने दुध आव्यो, पण पुत्रनीज बुद्धे भगवंतने फरस्या नहीं

२. वळी देवकी राणी छ अणगारने पुत्रने जाणी घणो स्नेह आव्यो, स्तनमां दुध आव्यो; पण मुनीने फरस्या नहीं

३ वळी उव्वाइ सुत्रे कह्यो कोणीक प्रमुख पुरुषे तो भगवंतनी आगळे बेसीने धर्म कथा सांभळी अने सुभद्रा प्रमुख राणीए "ठायाचेव पजुवासंति" उभीयकी धर्म कथा सांभळी. स्त्री वात भगवंतने आगळ बेसवो पण न पामे, तो फरसवो कीहांथी?

४ भगवती सतक नवमे देवानदा ब्राह्मणी भगवतनी माताये उभां रही धर्म सांभळ्यो; पण बेसवा पाम्यां नहीं

५ इम वारमे सतके जेवंता, मृगावंती पण एमज

६. वळी गणधर गौतमादिक " नाइदुरमणासन्ने आति नमीक नहीं " अति वेगळा नहीं अति ढुकडा नहीं इम बेठा

७ इम इंद्र, देवता, कोणीक राजा, श्रीकृष्ण, आणंद, कामदेव, सख, पोखळी प्रमुख श्रावक ते पण अदुरसामंते (मर्यादाये) बेठा पण फरस कीधो नहीं.

८. तथा जेवती मृगावंती, चेलणा, सीवानदा प्रमुख श्राविका दुर रही, पण तीलक करवाने कही नहीं. इम कोणीकनी राणी पण, ए केले जोतां भी विघरागना मारगमध्ये स्त्रीनो सग योग्य नहीं तो श्री जीन प्रतिमा जीन सरखी तेहने स्त्रीनो सघटो कीम जोइए ? एणे मेळे जोतां ए प्रतिमा तीर्थंकरनी नहीं

वळी श्री विघरागने तथा साधुने वांदवा गया छे श्री भरयेसर, श्रीकृष्ण, कोणीक, उदाइ राजा, रायप्रदेसी चीतसारथी, आणद प्रमुख श्रावक तेणे पांच अभीगम साचव्यां तीहां सचिताण दवाण विउसरणयाई

स. सचीत. फूल, तबोळादीक द. द्रव्य वि अळगा मुके. मजे.

सचीत द्रव्य दुरे कर्या जे रीत तीर्थंकरनी ते रीत साधु वांदवानी; तो तीर्थंकरनी प्रतिमानी रीत जुदी कीम पडी ? जीनप्रतिमा जीन सरखी तुमे कहो छो ए वात कीम मळी ? ते माटे द्रुपदीने अधीकारे एटला बोलनो निर्णय करजो

१ द्रुपदीनो पीता मीथ्यादृष्टी २ द्रुपदी श्राविका नहीं ३ द्रुपदी समदृष्टी नहीं ४ अने प्रतिमा पण तीर्थंकरनी नहीं ते केम जे १ प्रथमथी तो मोरपींछथकी पुंजी. २ बीजो पुजा भोगी देवतानी परे अभोगी देवनी कीधी ३ वळी जीन घरे कह्यो. ते जीनराजने घर होवे नहीं ४ ए केले अवघनाणी जीननी प्रतिमा काम देवादीकनी जाणवी. जे जीनने घर होवे, जे जीनने स्त्री फरसे जे जीनने पुष्प, चंदन, धुप, दीप, स्नान खपे ते जीननी प्रतिमा जाणवी अने अवघनाणी जीन; नाग, भुत, जक्ष, वेसमणने तो स्त्री छुखे फरस करे. ते सास्त्र नदी सुत्रे रोहाने अधिकारे छे. राजाने पांच पीता कह्या, ते मध्ये राणी वेसमण देवतानी प्रतिमाने फरसी. काम सौभाग्यनी अभीलाखथकी, ते माटे हे राजा ! तु वेसमण देवनो पुत्र छे. ए अवघनाणी जीनने स्त्री फरसी, ते माटे द्रुपदीनी पण वेसमण देवतानी प्रतिमा जाणीए नमोथुण कह्या माटे कोइ तीर्थंकरनी प्रतिमा जाणे ते उपर तो अनेक सास्त्र सुत्रनी छे.

वळी तीसा घरभी कहेसे द्रुपदी नारद आव्यो उठी नहीं ते माटे समदृष्टी कहीये तेनो उत्तरः द्रुपदीने परण्या पछी नियाणो पुरो थयो छे. पछे तो समकितप्रत सुखे पामे पहनो अटकाव नथी परण्यापछी नियाणो पुरो थयो छे, तीवारे पछे धरम सुखे पामे पण परण्या पेहेला समकित प्रत हवां नहीं कोइ कहेस्ये परण्या केडे द्रुपदी समकित प्रत पामी ते कीसे ठामे,कीसा गुरु पासे ते कहो,समकीत तो कुवारापणानोज हतो परण्या केडे पामी होय तो गुरुना नाम ठाम कहो. ते उत्तरः जो द्रुपदीना गुरुना

तो कोइ ए सावद्य पुजामा बंछकने तीर्थंकर केवळनाणी जीन जाणवा नहीं

वळी पहीज दुपदी परण्या पछी समकित पामी, संजम पामी, तीवार पछी क्यांइ प्रतिमा पुजी कही नथी वळी प्रतिमा तीर्थंकरनी होवे तो केम इस्ते क्री पुजती प्रतिमाने सघटो कीम करे ? जो तीर्थंकरनी प्रतिमा होवे तो स्त्री कीम फरसे?

वळी तमे कहोछो जे, जीनप्रतिमा जीन सरखी तो भी वितरागे तो भी उत्तराध्ययन सोळमे अध्ययने तथा समवायांग नवमे समवाये, तथा प्रस्नव्याकरण चोथे सवरद्वारे, एम बीजे पण घणे सुत्रे ब्रह्मचारीने एटला बोल वरज्या छे

१ स्त्री सहीत स्थानक, २ स्त्रीनी कथा, ३ स्त्री वकी एक आसने बेसवो ४ स्त्रीनो अंग निरखवो. ५ स्त्रीनो शब्द सांभळवो ६ स्त्रीनो भोग संभळाववो ७ स्त्रीनो फरसवो एटला बोल वरज्या छे. वळी आचारांग, प्रश्नव्याकरण, समवायंगे पचवीस भावना मध्ये पण स्त्रीनो फरस वरज्यो छे साधु, साधवी, ब्रह्मचारी, श्रावक श्राविकाने पण पहीज रीत पाळवी कही छे. तो भी वितराग त्रीलोकना स्वामी, जगत चींतामणी विश्वभूषण, तेहने स्त्री केम फरसे? ए वात नीपट अयुक्त छे.

१. श्री वीरवर्धमानस्वामीने देवानंदाये पुत्रने स्नेहे सामो जोयो स्तने दुध आव्यो, पण पुत्रनीज बुद्धे भगवंतने फरस्या नहीं

२. वळी देवकी राणी छ अणगारने पुत्रने जाणी घणो स्नेह आव्यो, स्तनमां दुध आव्यो; पण मुनीने फरस्या नहीं

३ वळी उववाइ सुत्रे कह्यो कोणीक प्रमुख पुरुषे तो भगवंतनी आगळे बेसीने धर्म कथा सांभळी अने सुभद्रा प्रमुख राणीए "ठायाचेव पज्जुवासंति" उभीथकी धर्म कथा सांभळी स्त्री जात भगवंतने आगळ बेसवो पण न पामे, तो फरसवो कीहांथी?

४ भगवती सतक नवमे देवानदा ब्राह्मणी भगवतनी माताये उभां रही धर्म सांभळ्यो; पण बेसवा पाम्यां नहीं

५ इम बारमे सतके जेवंता, मृगावंती पण एमज

६. वळी गणधर गौतमादिक " नाइदुरमणासन्ने अति नजीक नहीं " अति वेगळा नहीं अति ढुकडा नहीं इम बेठा

७ इम इंद्र, देवता, कोणीक राजा, श्रीकृष्ण, आनंद, कामदेव, सख, पोखली प्रमुख श्रावक ते पण अदुरसामंते (मर्यादाये) बेठा पण फरस कीधो नहीं

द्रौपदी न सम्यक्त धारणी सभाव्यते पुन॰उंघनिर्युक्त चिरंत नटी कायां गधहस्ता चार्येण युक्तं द्रौपद्या नृप पूत्रीका निदांन क्तिर्भि भसार पंचस्या छत निदान भोजात वाजाएक पुत्रः पुन पश्चात साधु सका समाप्प द्रव्यरं समक्त मारगो धरंतो

ए ओघनिर्युक्तिनो पाठ अने गंधहस्ती आचार्यकृत टीकांथी उत्तर जोजो

---

२० सुरियाभे तथा वजेपोळीये प्रतिमा पुजी कहेछे तेनो उत्तर.

केटलाक हींसाधर्मि कहेछे जेः—सुरियाम देवताये अने वीजय पोळीये प्रतिमां पुजी छे माटे अमे पण पुजीयेछीये तेहनो उत्तर कहेछे सुरियाम अने वीजयपोळीयानो अधीकार एक सरखो छे. ते माटे सुरियामनो अधीकार रायपसेणी सुत्रमध्येथी कहेछे

१. प्रथम सुरियाभ देवताये श्री माहावीरदेवने अमलकपा नगरिये अंबसालवनमां दीठा दीठां साहमो जइ नमोथुण कह्यो ते ठाणं संपत्ताणं लगे कह्यो सेस पद कल्पीत छे. २. पछे इम कह्यो जे

त महाफल खलु देवाणु प्पिया तहारुवाण अरीहताण भगवताण नामगोयस्सवि सवणयाए किमग पुण अभिगमण वंदण नमसण पडीपुछण पज्जुवासणयाए एगसवि आयरीयस्स धम्मीयस्स सुवयणस्स सवणयाए किमग पुण विउलस्सअठस्स गहणयाए

अर्थ—तं ते म. मोटो फळ ख. निश्चे. दे देवताने वाल्हो त. तीर्थंकरने गुणेकरी सहीत तेहनो अ अरीहतनो. भ भगवतनो ना. नाम गोत्रनुं ते एटलां गोत्र ने गुणनीपन तेहनु पण. स. सांभळवे करी की. तेहनु सु कहीवु पु वळी. अ साहमु जावु व वांदवु स्तुती. न प्रणामनुं करवुं ९ प्रश्नादीकनुं वळी पुछवु ध धर्म संबंधी ने सु सु वचननो स. सांभळवो की तेहनुं सु कहीवु पु वळी. वि वीसतीर्ण अ अर्थने. ग ग्रहीने

इहां वांदवानो, उपदेश सांभळवानो मोटो लाभ कह्यो. पण सुरियाभे मा

नाम ठामनो निर्णय करोछो तो प्रतिमानो तो निर्णय करो के द्रुपदीये प्रतिमा पुजी ते कीया तीर्थंकरनी, कोणे करावी, केहेने वारे थइ एटले निर्णय करो अने समकितनो द्रुपदीनो गुरु पुछोछो तो श्रीकृष्ण, बळभद्र, समुद्रविजय, उग्रसेन, आदी छप्पन्न जादव कीया गुरु पाश समकीत पाम्या ते गुरुनो नाम बतावो ' तथा राजेमती महासती सीयळवता बहुसुया उत्तराध्ययन बावीसमे अध्ययने कही छे ते ससारमां थकी कीया गुरु पाशे बहु सुत थइ ' ते गुरुनो नाम तुमेज कहो. अने द्रुपदीए नारद विनय न कीधो असजती जाणीने ते माटे समकीती कहोछो ते तो भर्हु कर्युं छे, श्रीकृष्ण समदृष्टी हता तेणे पंडु राजानी परे नारदनो विनय कर्यो छे. "वदइ नमंसइ" पाठ छे तेणे नारदनो विनय कीम कीधो ? ए पाठ ज्ञात्र मध्ये सोळमे अध्ययने छे. जो लोकीक मीध्यात्व समदृष्टी कार्य विशेसे सेवे तोपण धर्म न जाणे.

वळी जीनमारगनी रीते पादोगमन सथारो तामली तापसे तथा पुरण तापसे कीधो, पीण कांइ जीनमारगी न थया. तथा भरथेसरे भरतखेत्र साधतां तेर अठम पोसह कीधा पदमोत्तर राजाए पद्मीने काजे अठम कीधो पण कांइ अगीयारमां व्रतमांही न गणाय सर्व रीत जीन सरखी होत तो जीन तीर्थंकरनी प्रतिमा जाणत पीताने सुख लागेथके पुष्पनो भक्षण करे ए अयुक्त कर्म छे, तेम तीर्थंकरमा छेदा पुष्प समान छकायना जीव थे तीर्थंकरनी भक्ति करवाने इच्छे, ते पण अयुक्त, ए भक्ति वितराग माने नहीं.

वळी हिंसाधर्मी कहेछे मानेछे ओघानिर्युक्तिनी टीका गंधहस्ती आचार्यनी कीधी ते मध्ये कह्यो छे जे, द्रुपदीने एक पुत्र थयो तीवार पछी समकीत पामी. ए पाठ कहेछे

उघनिर्युक्ताइ युक्तं इथीजणसंघट्ट तिविहं तिविहेणं वजए-साधु इतिवचनात् त्रिविधि त्रिविधि नसाधुर्ना वर्जनीय साधो श्चाकल्प नीयं कर्मचरत सम्यक्ता भावात् द्रोपद्या आगमेख्व श्रोयते लोम हथे परामुसई लोम हस्ते नपरामीश्रति परमाजय तीत्यर्थः तत्पर्माजिनन जिनस्पस्पर्सोजात जिनस्य अस्त्रीजन सपर्सेत आसातना स्यात आसातना सम्यक्ता भावात् एतए

द्रौपदी न सम्यक्त धारणी सभाव्यते पुनःउघनिर्युक्त चिरत नट्टी कायां गधहस्ता चार्येण युक्त द्रौपद्या नृप पुत्रीका निदांन क्तिर्भि भसार पंचस्या छत निदान भोजात वाजाएक पुत्रः पुन पश्चात साधु सका समाप्प द्रव्यर समक्त मारगो धरंतो.

ए ओघनिर्युक्तिनो पाठ अने गंधहस्ती आचार्यकृत टीकांथी उत्तर जोजो

---

२० सुरियाभे तथा धर्मेपोळीये प्रतिमा पुजी कहेछे तेनो उत्तर.

केटलाक हींसाधर्मि कहेछे जेः—सुरियाम देवताये अने वीजय पोळीये प्रतिमां पुजी छे माटे अमे पण पुजीयेछीये तेहनो उत्तर कहेछे सुरियाम अने वीजयपोळीयानो अधीकार एक सरखो छे. ते माटे सुरियामनो अधीकार रायपशेणी सुत्रमध्येथी कहेछे

१ प्रथम सुरियाभ देवताये श्री माहावीरदेवने भमळकपा नगरिये अवसाळ वनमां दीठा तीहां साहमो जइ नमोथुणं कह्यो से ठाणं संपत्त.ण लगे कह्यो सेत्त पद कल्पीत छे. २. पछे इम कह्यो जे

तं महाफल खलु देवाणु प्पिया तहारुवाण अरीहताण भगवताण नामगोयस्सवि सचणयाए किमंग पुण अभिगमण वंदण नमसण पडीपुछण पज्जुवासणयाए एगसवि आयरीयस्स धम्मीयस्स सुवयणस्स सवणयाए किमग पुण विउलस्सअठस्स गहणयाए

अर्थ—त से म. मोटो फळ ख. निश्चे दे देवताने वाळो त. तीर्थंकरने गुणेकरी सहीत तेहनो अ अरीहवनो. भ भगवतनो ना. नाम गोत्रनुं ते यथां गोत्र ने गुणनीपन तेहनु पण. स सांभळवे करी की. तेहनु सु कहीवु पु वळी. अ साहमु जावु व वांदवु स्तुती न प्रणामनु करवुं १ भस्नादीकनुं वळी पुछवु प धर्म संबंधी ने सु सु वचननो. स. सांभळवो की तेहनु सु कहीवु पु वळी. वि वीसतीर्ण अ अर्थने. ग ग्रहीने

इहां वांदवानो, उपदेश सांभळवानो मोटो लाभ कह्यो. पीण सुरियाभे मा

टीकनो मोटो लाभ चींतव्यो नथीं ,सांद्वो ने उपदेस सांभळवो ते क्षयोपसम भाव छे. भगवतनी आज्ञानो करतव्य छे, अने नाटीक उदय भाव छे भगवतनी आज्ञा बाहारनो करतव्य छे.

३ वळी सुरीयाभे देवलोकमां रही वंदणा करी ने इम कह्यो

एव मे पच्चा हियाए सुहाए खमाए निसेसाए आणुगा मियत्ताए भविस्सई.

अर्थ—ए. एह भगवंतनु पदनादीक. मे मुजने ५. परभव जन्मांतरे. हि. हीत भणी पथ्यनी परे. सु सुख भणी. ख. जोगता भणी रोगनो विनाश करवा ओषधनीपरे नि मोक्ष भणी. आ भवनी परंपरा लगे एह सुखनुं कारण होसे भ हुस्ये एम कहो

पेचा कहेतां परलोकने बीशे हीतकारी तथा अनुगामीक फळ कह्युं. पेचा शब्दे परलोक ए अर्थ घणे सुत्रे कह्यो छे उत्तराध्ययन नवमे अध्ययने अठावनमी गाथामां पेहेला बे पदमां कह्यु छे.

इहंसि उत्तमो भते ॥ पेच्चाहोहिसिउत्तमो ॥

अर्थ—इ. ए भवमे बीषे उ प्रधान छो भं हे पुज पे परभवने विषे. हो होस्ये उ उत्तम

तथा प्रस्नव्याकरणे संवरद्वारे पेहेले अध्ययने पेचा भावियं आगमेसि भद्द कहेतां प परभवमे विषे. भा सुख उपमावे. आ आगामी काळे भ. कल्याणनो करणहार एहवो पाठ छे. एम भगवंतने वंदणा कीधी, ते परलोकनो अर्थ सीद्ध थयो गण्यो

४ तीवारे पछी सुरियाभे सेवक देवने तेडीने इम कह्युं तुमे भगवंत पासे जाओ वंदणा करी जोयण प्रमाणे पुंजो, पाणी छांटो, पुष्प वृष्टी करो दिव्यं सूरवरा।भिगमणजोग करेह कहेतां दि प्रधान बीजीव सु देवताने आववा जोग भोमिका करो; पण इम न कह्युं जे, भगवंतने रहेवा जोग करो. स्यामाटे जे भगवंत तो फुल, पाणी, धुपदीपना भोगी नथी ए आवरणहारनी शोभाछे पछे सेवक देवताये तीमज कीधो फुलने अधीकारे हींस्याधर्मि कहेछे जे " जलया थलया भासुर " जळजा ते (कमळना) फुल थलजा ते (आड, जुइनां)फुल, ते सचीत फुलनी वृष्टी मानेछे वळी समवायंगजीसमे समवाये कह्यो "" जलथलय " ते

सचीत फुल मानेछे तेहनो उत्तर:जेवारे सुरियामने सेवके पुष्पनी वृष्टी कीधी तीहां अने पाणीनी वृष्टी कीधी तीहां कयु छे.

अभ वद्दलं विउवईश्त्ता पुप्फवद्दलं विउवईश्त्ता

अर्थः—म. सेवक देवता पु फुल्नु वादळ. वि. विकुर्वे विके कीधानो पाठ छे जीम जन्ममहोच्छव करतां घणा द्वीप, समुद्रना फुल, माटी, पाणी आण्या कह्यां अने जीहां आण्यां छे तीहां सचीतहीज जाणवा तीहां अमवद्दल पुप्फवद्दलं विउर्व्वइ कहेता अ. सेवक देवता. पु फुल नु वादळ. वि. विकुर्वे. एहवो पाठ नथी कह्यो अने जीहां अमवद्दलं पुप्फवद्दल विउर्व्वई कहेतां अ सेवकदेवता पु पुल्नुं वादळ वि वीकुर्वे कह्यु त्यां अचीतहीज छे, ते माटे अचीतफुल, पाणी, वीकें वादळ करी वरसाव्यां अने चोत्रीसमे अतीशय मध्ये "जलथलज" कह्यु ते पण अतीशय मनुष्य देवताना कीधां नथी थातां; भगवतना पुन्य प्रभावथकी स्वभावे प्रगट थायछे. स्वभावी वीस्सा पुदगळना परिणाम जाणवो जीम जुगळी यानां कल्पवृक्षनी परे तथा कोइ बोल देवताकृत होवे तो पण अचीत होवे. जो समोसरणमध्ये, सचीत फुल, पाणी, होवे तो राजा, शेठ, सेनापती, वांदवा गया हता. तीहां पांच अभीग्रह साचव्यां ते मध्ये सचीत द्रव्य दुरे कीम मुक्यां! जो सचीतनो संघटो अयुक्त छे तो वर्जवा कह्यां. वळी भगवतने १ चवन, २ जनम, ३ दीक्षा, ४ केवळ, ५ निर्वाण कल्याण कहीए ते मध्ये जे कल्याण भगवंतने अवीरती मध्ये थयो छे तीहां सचीत अचीत बेहु द्रव्य होवे कोइनो अटकाव नही त्या माटे जे तदा भगवत पांच आश्रव सहीत छ अने केवळ महोच्छवने समे भगवत वीरती छे तेथी जुवो स्नान, वीलेपन, वस्त्र, आभुषण, पुष्प, इत्यादीक कांइ वस्तु भगवंतने चढावी नहीं "वद्दलविउवइ" कह्यु ते ससार अवस्थाना महोच्छव मध्ये नथी कह्युं एटलो फेर छे वळी देवकृत वस्तु तो अचीत होवे जो सचीत होवे तो बीजा साधुने सचीत सहीत थानक कीम कल्पे? वृतिकल्प पेहेले उद्देसे बहु धान, पाणी, अग्नी, आहार, ओषध, आभ्रण, सहीत थानके, रहेवा ना कही छे ते माटे ए फुल, पाणी सचीत नहीं तथा कोणीक प्रमुख वांदवा गया तीहां पाणी, फुलनो आरंभ कीधो मार्ग छंटाव्या, पण समोसरण मध्ये छटकाव्या नथी कह्या अने नगर सीणगार्यो, आरंभ कीधो ते पोताने छांदे, पण भगवतनी आज्ञा नथी वळी कोणीक राज मार्गमां जळ छांटी फुल वीखेर्यो ते मांहीथी भगवतने काम शु आव्युं ते कहो ए वस्तु भगवतने भोग आवी नथी ए मांहि भगवतनी भक्ति

कांही नथी. पोतानी रूद्धी वीस्तारी ए पोतानी शोभा, पोतानी मोटाइ छे. वळी अळज थळज शब्द तो उपमा वाचक छे जे जळज थळजना सरखा फुळ तेवारे हींसाधर्मि कहेशे; जो जळज थळजने उपमावाचक शब्द जाणो तो जळमाइव एहवो शब्द जोइए ते इ शब्द तो नथी तुमे उपमावाचक शब्द कीम जाणयो ते उत्तरः उत्तराध्ययन त्रेवीसमे अध्ययने कह्यु "पासहा कोउ गा मीय।" पा. पाषंडी अन्य दर्शनी. को कौतुकी मी मृग पशु सरखा अजीणी परपाषंडी,

इहां पाषंडी कौतुकी मृग जेवा ए उपमा दीधी ने "मीवाइवाइम" नथी कह्यु पीण मृगइवमृगा जाणवा तथा दशविकालीक नवमे अध्ययने बीजे उद्देशे सातमी गाथाना चोथा पदमां अवनित शीष्यने कह्यु छागा ते विगलेंद्रीया छागा बोकडा सरखा तथा दकाणी छे शरीरनी सोभा एहवा अवनीत वि. खोडीला इंद्रीय जेहनी.

छागाइव नथी कह्यु छागा शब्दे बोकडा सरखाज जाणवा तीम जळजा ते जळज सरखा पण न जळमा इमज जाणजो, पण सचीत नहीं वळी उत्ताध्ययन बारमे छत्रीसमी गाथामां हरकेसीमुनीने दान दीधा पछी कह्यु

तहियं गधोदये पुप्फवासं ॥ देवा तहिं वसुधारायवुअ ॥
पहियउ दुदुंभिउ सुरेहिं ॥ आगासे अहोदाणंचयुठं ॥ ३६ ॥

अर्थः—त ते जज्ञपाडाने विखे. गं सुगंध पाणीनो. पु फुलनो वा वरसाद वुठयो. दे मथाम त तीहांज. व द्रव्यनी धारा पुग्य प मगाडीवो दु देव दुंदुभीयो देवताए आ आकाशने वीसे अ आश्चर्य दान दीधु निषेसी कीधो देवतामे.

इहां गंधोदकनी वृष्टी कही ते वैक्रे वीनां गधोदक कीम होवे? समावे ता सुगंधोदक कहीए ए पाणी वीक्री छे के सचीत छे? इम सर्वम जाणवो देवकृत वस्तुने अचीतहीम जाणवी. वळी भगवती सतक चउदमे उद्देसे बीजे कह्यु चार जातना देवता वृष्टी करे जन्मकल्याणदीक अवसरे तीहां शेषक देवने कहेछे पछे जेहनो ए इच्छा होय ते देवता वरसावे. ए प्रगट पाठ वैक्रे करी वरसाव्यानो छे, तीम पुष्प, पाणी, सुरीयामने सेमके वरसाव्यो, ते पण वैक्र वादळ करी वरसाव्यो, ते माटे अचीत कह्यो.

८. वळी सुरीयाम पोते वांदवा आव्यो भगवंतने वंदणा कीधी, तीवारे भगवंतेइ बोल कह्या

१ पोरणामेयदेवा २ जीयमेयंदेवा ३ कियमेयंदेवा ४ करणीजमेयदेवा ५ आचिन्नमेयंदेवा ६ अभणुन्नायमेयदेवा

अर्थ—पो. जुठो नहीं ए कार्य चीरंत देवताये पण ए कार्य कीधो १. जी तुम्हारो ए आचरण २. की. तुमारुं एह कर्तव्य करवा जोग्य कार्य कीधो. ३. क. तुमारी एह करणी छे ४ आ आचरवा जोग्य छे. ५. अ में अने अनेरे तीर्थकर पण अनुआज्ञा दीधी ६.

ए छ बोल वंदणा करवा आश्री कह्या छे, पण नाटकनी आज्ञा माटे नथी कह्या स्या माटे जे, आगळे सुरियाभ कहेस्ये जे गौतमादी श्रमणने बत्रीशबीध नाटीक देखाड़ु ?

एयमठ नो आढाई नो परिआणाई तुसएणं संचीठइ.

अर्थः—ए. एहवा वचन मत्ये. नो आदर नो देइ. नो. अनुआज्ञा पण न देइ. तु अणबोल्यायकां सं रहे.

अणबोल्या रह्या, पण आज्ञा नथी दीधी नाटकनी करणी सावद्य माटे. तीवारे कहेस्ये नाटकमां आरंभ जाणेछे, तो भगवंते नाटकमां ना कही ? ते उत्तर सुरियाभ साथे देवता घणा छे तेहने पोतपोताने ठामे नाटीक जुदां जुदां थाय छे जीहां लगे सुरियाम नाटक बांधे छे, अने भगवंत सुरियामनो नाटक नीखेधे छे तीवारे सर्व पोताने ठामे जाय जुदां जुदां नाटक थाय, हींसा घणी थये, ते माटे सुरियामनो नाटक नीखेध्यो नहीं ए अर्थ राइपसेणीनी टीका मध्ये छे ते जोजो. अने नाटीकमध्ये कर्म निर्जरा होवे तो आणद, कामदेव, कोणीक राजा, कृष्ण प्रमुखे साक्षात भगवंत आगळ कां न कीधां ? वळी तुमे कहोछो जे, रावण अष्टापद उपर प्रतिमा आगळ नाटीक करतां तीर्थंकर गोत्र बांध्यो. अने ज्ञाता आठमे अध्ययने वीस स्थानके जीव तीर्थंकरपद उपराजे, ते मध्ये तो नाटीक करतां तीर्थंकरगोत्र बांधे इम न कह्यु

६. वळी सुरियाभ देवताये भगवंतने पुछयुं

अहणं भंते सुरीयाभेदेवे किं भवसिधिए किं अभवसिधिए समदीठीए मिछदीठीए परीतससारीए अणंतससारीए सुलभबोहीए दुलभवोहीए आराहए विराहए चरीमे अचरीमे

अर्थ:—अ हुं भं. हे भगवंत. सु सुरियाभ देव. कि. सुं. भ. भव्य कि. के. अ. अभव्य स. समदृष्टी मी के मीथ्यादृष्टी प. तुच्छ (थोडो) संसारी. अ के अनंत संसारी सु सुलभबोधी (जीन धर्मनी प्राप्ति सोहली छे. दु. के दुर्लभबोधी आ. जीनधर्मनो आराधीक थी के वीराधीक. च देवनो छेल्लो भव एज ते चरीमे अ घणा भव हुइ ते अचरीमे.

तीवारे भगवंते छ बोल भला भला ए केले सुरियाभविमाने बार आलवा जीव सुरियाभपणे उपजवा जाणजो वळी भगवती सतक बारमे उदेसे सातमे छालीना वाडानुं दृष्टांत कह्यु छे; सो बकरीनो वाडो ते मध्ये " अया सहस्स परिखयेजा" एक हजार बकरी भरी छ मास लगे वाडामां राखी ते बकरीने उचार, पासवण, खेळ, जळ, संघाण, वीत्त, पीत्त, शुक्र, श्रोणीत, सींगे, मुख, हाथ, पग, पुंछ, वाळ, खुरीये करी सर्व वाडानी भुमी फरसाणी ? हंता गोयमा, कोइक आ काश प्रदेशमात्र मोमका अणफरसी पण रही, पण,

एयसिए महालयंसि लोगंसि लोगस्सय सासय भावं सं सारस अणादिय भावं जीवस्स नीचभावं कम्मवहुत्तं जम्मणं मरणं वहुल पडुच नथीकेइ परमाणु पोग्गले मेते विपएसे जयण अय जीवेणं जाएणवा मएवा ए जीवे

अर्थ—ए एहने विषे एवडा महालय लोकने वीषे छे को परमाणु पोगळाने ते बीपएसे इत्यादिक पुर्वोक्ति भमीलासे कर्यो सर्वथ महात्वपणायकी लोकने कीम रह्यो इसी आसंका टाळवाने कहेछे को लोकना सास्वता भाव प्रत्ये आश्रइने वळी संसारमा अनादी भाव प्रत्ये आश्रीने जीवना नित्यभावप्रत्ये आश्रीने कर्मना बहुलपणायकी कर्मने बहुलपणे जन्मादिकने अल्पपणे एकवार्थ न हुए एटला माटे कह्युं. जन्म वळी जनम, मरण, बाहुल्य आश्रीने न. नहीं केइ परमाणु पुदगळ मात्र पण प्रदेश के प्रदेशने विषे एह जीव जन्मो नहीं मुवो पण नथी

सर्व लोक उपजी, मरीने फरसीने मुक्यो छे; प्रदेशमात्र मोमका पण बीज फरसे रही नहीं—चोरासी लाख नरकावासा, सात क्रोड बोहोतेर लाख भवन, पांच थावर, त्रण विगलेंद्रि. तीर्यंच, मनुष्यना असंख्याता आवास, चोरासी लाख सताणुं हजार त्रेवीस वेमान. एटले ठामे (पांच अनुत्तर वेमान वरजी सेस सर्व

ठामे) सर्व जीव भव्य, अभव्य सर्व उपजी चुक्या छे. " असई अदुवा अणंत खुत्तो " एकेके ठामे एकेक जीव अनंतीवार उपनो ए केवे सुरियाभ विमाने पण सर्व जीव भव्य, अभव्य प्रमुख चार बोलवाळा जीव अनंतीवार उपजी चुक्या छे. तीवारे सुरियाम देवताये पण माण्यु, जे माहारे विमाने चार बोल्ना जीव सुरियाभपणे उपजे छे, ते मध्ये हुं केवो छु, एम निश्चय करवाने पुछ्यु छे. वळी त्रीछे-लोके असंख्यता द्वीप, समुद्र छे पचवीस क्रोडाक्रोड कुवाना खंड जेटला छे, तेथी चोगणा पोळीया छे. ते सर्व विजयपोळीया जेवा छे तीहां पण सर्व जीव विजय पोळीयापणे अनंती वार उपजी चुक्या छे. तीवारे वीजय पोळीयानीपरे सर्वे जीवे प्रतिमा पुजी छे. पण प्रतिमा पुज्यायकी सर्व जीव भव्य, अभव्य समदृष्टी थया नहीं. ते विचारी जुओ

वळी जीवाभीगममध्ये पडीवती कह्यो छे जे,

सोधमीसाणे सुणभंते कप्पेसु सव्वेपाणा सव्वभूया सव्वे-जीवा सव्वेसत्ता पुढवीकाइयत्ताए जाव वणस्सइकाइत्ताए देव-त्ताए देवीत्ताए आसण सयण जाव भड मत्त वगरणत्ताए उवन्न पुव्वा हंता गोयमा असए अदुवा अणतखुत्तो सेवेसुकप्पेसु ए-वं चेवणवरी नोचेवण देवीत्ताए जाव गेविजवा अणुतरोववातिए सुविएवं नोचेवणं देवत्ताए देवीत्ताए सेत्तंदेवा

अर्थ—सुधर्मा, इसान देवलोके अहो भगवत सर्व प्राणी, सर्व भुत, सर्व जीव, सर्व सत्व पृथ्वीकायपणे, यावत वनस्पतिकायपणे, देवतापणे, देवांगनापणे, सिंहासन, सज्या ध्यान भांड, उपगरणपणे, उपना छे अतीतकाळे. इति प्रश्नः त्यारे भगवंत कहे छे हा गोतम वारंवार निश्चे अनंती अनंती वार इम सर्व देवलोके उपना छे. पण देवांगनापणे तीहां नथी उपना. जे कारणे त्यां देवांगना नथी. पांच अणुत्तर वेमाने पण पृथव्यादिकपणे अनंतीवार उपना छे, पण देवता अने देवांगनापणे, तीहां नथी उपना जे कारणे तीहां देवांगना नथी अने देवता पण तीहांना एकावतारी प्रमुख छे ते भणी देवतापणे पण सर्व जीव ससारी नथी उपना एटले देवता पुरा थया इहां पण सर्व जीव वीमानीक देवतापणे उपजी चुक्या कह्या कांइ भव्य, अभव्य चार बोलमध्ये टाल्यो नहीं वळी भगवती सतक बारमे उदेसे सातमे कह्यो

अयणंभंते जीवे चोसठीए असुरकुमारावास सयसहस्से सुएगमेगंसी असुरकुमारा वाससिंपुढवीकाइयत्ताए जाव वणस्सइकायत्ताएदेवत्ताए देवीत्ताए आसण सयणभंडमत्तोवगरणताए उववन्नपुछाहंतागोयमाजाव अणंतखुत्तो सव्व जीवाविणंमंते एव चेव.

अर्थ.—एह हे भगवत चोसठ असुरकुमार आवास सत सहस्रने विषे एक एक असुरकुमारना आवासने विषे पृथ्विकायपणे, इम जावत वनस्पतिकायपणे, देवपणे, देवीपणे, आसन, सयन, भंड, मात्र, उपगरणपणे उपनो पुर्वे. इति प्रश्न उत्तर. हा गौतम अनेकवार, अथवा अनंतवार सर्व जीवपणे. हे भगवान इत्यादीक प्रश्नः उत्तर. इमहीज अनेतवार कहेवो

एवं जाव थणीयकुमार सुं पछे पृथव्यादीक जावत मनुष्योने सुत्र पण इमज पुछयो

वाणव्यंतर जोइसीय सोहम्मीसाणेय जहा असुरकुमाराणं.
अर्थ —वाणव्यंतर, ज्योतषी, वैमानीकमांहे सुधर्मो, इशान, कर्गे पहले विषे असुरकुमारने कह्यु तेम कहेवुं.

पछे इमज त्रीजा देवलोकथकी जावत बार देवलोक, नव ग्रीवेकमो पण अनंतीवार उपनो, पण नो चेवण देवीताए नहीं नीस्चे देवीपणे उपनो इ या माटे जे इसान देवलोकलगेज देवी उपजे ते माटे.

इम अणुत्तर विमानने विषे प्रथव्यादीकपणे उपनो. नो चेवणं देवताए देवीताए नहीं अणुत्तर विमानने विषे देवतापणे अनंतीवार उपजे अने देवीपणे तो सर्वथा न उपजे, इसानलगेज देवीना उपपाठ माटे.

एम लोकांतिकपणे छकायपणे उपनो असइ अदुवा अणंतखुत्तोः ॥ अनेकवार इत्यर्थ. अथवा अनंतीवार इत्यर्थ.

इहां भव्य, अभव्यादिक वार बोलना सर्व जीव उपना कह्या ए आलावो मोटो छे, ते सुत्रथकी जोजो. इम इहां परमार्थ मात्रहीज बोलो लख्यो छे

७ वली हींसाधरमी कहे छे जे, सुरियाभ देवता नवो उपज्यो तीवारे सामानीक देवताये आवीने कह्यु, तुम्हे सीद्धायतनमध्ये भरने एकसो आठ जीनपडी

माने अने सुधर्म सभामां जीनदाढाने पुजो. ए तुमने पहेलां करवा जोग्य ए तुमने पछे करवा जोग्य ए तमने.

पुव्वि पछा हियाए सुहाए खमाए निसेसाए आणुगामियत्ताए भविस्सइ ॥

अर्थ—पु. पुर्वे प तथा पछे पण. ही हीतकारी सु. सेखताभणी ख. जोगताभणी. नि श्रेयकल्याणकारी. आ परपराए सुखभणी. भ हुस्ये.

इम कह्यु ते शुभो ए देवताये पण प्रतिमा पुजवी बतावी छे ते उत्तर सुरियाभादीक बत्रीस लाख विमान प्रथम देवलोके छे, ते सर्व विमाननी एक रीत छे विमान दीठ अत्ये पांच पांच सभा छे, एक एक सीद्धायतन छे, एवं छ छ वस्तु सर्व विमान मध्ये छे. जीवारे देवता नवो उपज्यो, तीवारे पहेलवार राजअभिषेक करतां सर्व प्रतिमा पुजे छे ते समदृष्टी, मीथ्यादृष्टी, भव्य, अभव्य सर्व उपजे ते सर्व पुजेछे सर्व उपजती वेळाए सर्व देवताने पोत पोताना सामानीक देवता इमज कहेछे जे, प्रतिमा अने दाढा पुजो इहां कांइ एम नथी जे, समद्रष्टी होवे तेहीज पुजे ने मीथ्याती न पुजे. जीतव्यवहार माटे सर्व पुजेछे. जीम मनुष्यलोकमध्ये समदृष्टी होवे ते तो तीर्थंकर अने साधुने वांदे छे. अने मीथ्याती होवे ते, घोर, मसीत, मीरां, पीर, ठाकोरद्वारा, विष्णु, महेश, गणेश, माता, हनुमान, खेत्रपाळादीकने पुजे अन्यमती मनुष्य होवे तो जीनमतना देवना गुरुने वांदे, पुजे नहीं एम मनुष्यलोकनी रीत. जैन, सीव, मुसलमानना देहरां पण जुदां जुदां छे. तेम देवलोकमध्ये मत मतनां देहरां जुदां जुदां छे नहीं समद्रष्टी अने मीथ्यादृष्टीने पुजवाने पुजवानो सीद्धायतन एकहीज छे तेहनां देहरां जुदां कह्यां होवे तो सुत्र साख देखाडो समदृष्टी मीथ्यादृष्टीना धर्म व्यवहार तो जुदा छे, अने लोकव्यवहार एक छे जीम मनुष्यलोकमां स्नान, दातण, भोजन, वस्त्र; भूसण, वाहन, सयन, भोग, विलास, समदृष्टी मीथ्याद्रष्टीना एकछे, अने धर्मव्यवहार जुदा जुदा छे, तीम देवतामध्ये लोकव्यहवार जीत आचार समदृष्टी, मीथ्यादृष्टीनो एकज छे, अने जीन वदन प्रमुख धर्मव्यहवार जुदा जुदा छे, अने समदृष्टी देवतायकी मीथ्यादृष्टी देवता असख्यता गुणा अधीका छे समदृष्टी मीथ्यादृष्टीना वीमान मध्ये सीद्धायतन एक सरखा छे मीथ्यातीना वीमानमां घोर, मसीत, ठाकरद्वारा तो नथी कह्या. जे, ते वीमान दीठ सीद्धायतन अने प्रतिमा तो सुरीयाभना जेहवी छे, तेहने भव्य,

अयणंभंते जीवे चोसठीए असुरकुमारावास सयसहस्से सुएगमेगंसी असुरकुमारा वाससिंपुढवीकाइयत्ताए जाव वणस्सइकायत्ताएदेवत्ताए देवीत्ताए आसण सयणभडमत्तोवगरणताए उववन्नपुछाहंतागोयमाजाव अणंतखुत्तो सव्व जीवाविणंभते एव चेव.

अर्थ.—एह हे भगवत चोसठ असुरकुमार आवास सत सहस्रने विषे एक एक असुरकुमारना आवासने विषे पृथ्विकायपणे, इम जावत वनस्पतिकायपणे, देवपणे, देवीपणे, आसन, सयन, भंड. मात्र, उपगरणपणे उपनो पूर्वे. इति प्रस्ना उत्तर. हा गोतम अनेकवार, अथवा अनंतवार सर्व जीवपणे. हे भगवान इत्यादीक प्रस्नः उत्तर. इमहीज अनंतवार कहेवो

एवं जाव थणीयकुमार सुं पछे एयव्यादीक जावत मनुष्योने सुत्र पण इमज पुछवो

वाणव्यतर जोइसीय सोहम्मीसाणेय जहा असुरकुमाराणं

अर्थ—वाणव्यतर, ज्योतपी, वैमानीकमांहे सुधर्मा, इशान, स्वर्गे पहले विषे असुरकुमारने कह्यु तेम करेवुं.

पछे इमज त्रीजा देवलोकथकी जावत बार देवलोक, नव ग्रीवेकसमे पण अनंतीवार उपनो, पण नो चेवण देवीताए नहीं नीस्चे देवीपणे उपनो इ वा माटे जे इशान देवलोकसुधीज देवी उपजे ते माटे.

इम अणुत्तर विमानने विषे प्रथव्यादीकपणे उपनो. नो चेवणं देवत्ताए देवीताए नहीं अणुत्तर विमानने विषे देवतापणे अनंतीवार उपजे अने देवीपणे तो सर्वथाज न उपजे, इसानसुधीज देवीना उपपात माटे.

एम लोकांतिकपणे छकायपणे उपनो असइ अदुवा अणंतखुत्तोः ॥ अनेकवार इत्यर्थः अथवा अनंतीवार इत्यर्थ.

इहां भव्य, अभव्यादिक बार बोलना सर्व जीव उपना कहा ए अळावो मोटो छे, ते सुत्रथकी जोजो. इम इहां परमार्थ मात्रहीज थोडो कह्यो छे

७ वळी हिंसाधरमी कहे छे जे, सुरियाभ देवता नमो थुणस्यो तीवारे सामानीक देवताये आवीने कह्युं, तुम्हे सीद्धायतनमध्ये अइने एकसो आठ जीनपडी.

पण समकीत कोइ पाम्यो नहीं.

९ पछे ए पुस्तक वांचीने "धम्मीयं ववसाइयं गिन्हिमा " ध. कुळधर्मे सबंध व. व्यापार. गि ग्रहे ऐहवो पाठ छे

ए धर्मनो व्यापार कह्यो ए पद पण समुचय छे इम नथी जे प्रतिमा पुजा ते धर्मव्यवसाय समुचय पदमध्ये प्रतिमा, पुतळी, थांभा, हथीयार, तोरण, पोळी, खड्ग, पुस्तक बत्रीसवानां पुज्यां; ते सर्व धर्मव्यवसाय प्रमा केहे पुज्या छे, ते माटे धर्मव्यवसाय पद ते पण साधारण पाठ छे उठीने इशानखुण सीद्धायतनमध्ये गीयो ज्यहां एक सो आठ जीणपडीमा छे तीहां आव्यो, ते प्रतिमाने शरीर धरव्यो ते सुभयकी कहेछे.

१ थीज्यदेवतानी प्रतिमा जीवाभीगममध्ये वरणवी तीहां रीठमयामंसु रीठ रतनमे दाढी कहे छे रायपसेणीमां सुर्यामे पुजी तेने दाढी न कही ते फेर.

२ कणगामया चुचुआ ते कमकमय स्तनछे ए स्तन जुगळ केहने होवे श्री उववाइमध्ये श्री वित्तरागनो शरीर वखाण्यो तीहां स्तन जुगळ मुगलयीस कह्यो नथी तीर्थंकर, चक्रवर्ति, बळदेव, वासुदेव, उत्तम पुरुष, सामंत, घोडो, एटलाने स्तन होवे नहीं ते माटे जीन तीर्थंकरनी प्रतिमां होवे तो स्तन होवे नहीं

३. वळी ए प्रतिमाने पासे बे बे चामरधारनी पडीमा, एक एक छत्रधारनी पडीमा, अने मुख आगळे बे बे नागपडीमा. बे बे जक्षपडीमा, हाथजोडीने वीनय करती कहेछे ए नाग, मुत, जक्षनी, पडीमा कहेना परीवारमध्ये होवे? तीर्थंकरने पासे तो सुत्रमध्ये ठाम ठाम कह्यो छे जे, इसीपरीसाए जइपरीसाए कह्यो छे जो ए प्रतिमा पासे गणधर, साधुनी प्रतिमा होत तो जाणत जे प्रतिमा तीर्थंकरनी खरी पण ते तो नथी तो इम जाणजो जे, कोइ भोगीदेव कामदेवादीकनी छे वळी पण आज हींस्याधरमी प्रतिमा करावेछे तेहने पासे काउसगीया साधुनी प्रतिमा करावे छे, पण नाग, मुत, जक्षनी, प्रतिमा नथी करावता ए बे प्रतिमा मध्ये कही साची ने कही जुठी? माटे ए प्रतिमा नाग, मुत, जक्ष, ठाकुर, वेसमण. खेत्रपाळ, महेश, कामदेवादीकनी जाणवी ए वीधेप

४. वळी सुरीयामे पुजतां पहीलायकी " लोमहथेण पमजइ " कह्यो छे जे, मोरपींछनी पुजणीयकी पुजी कही. जीम द्रुपदीये, भद्रासार्थवाहीये, जक्षनी प्रतिमा मोरपींछ थकी पुजी ते रीते, अने ठाणांगसुत्र पांचमे ठाणे त्रीजे उदेशे कह्यो छे जे.

अभव्य, समदष्टी, मीथ्यादष्टी, सर्व एकरीते पुजे छे एमां कर्मकरतम्म स्यानो कर्यो अने प्रतिमा पुजे एटला समदष्टीम थाय तो बीज्यपोळीयादीक असंख्याता पोळीया सर्व बीज्यपोळीयानीपरे प्रतिमा पुजे छे, ते तमारे मते सर्व जीव बीज्यपोळीयापणे अनंतीवार उपज्या छे, तो प्रतिमा पुज्या माटे अनंतभव केम करवा पडया ! समकीतवतने अनता भव होय नहीं ए सुत्रसाख छे अरणक श्रावक, कामदेव श्रावकने परीसह दीधा ते देवता तथा गोशाळामती, जमालीमती, नास्तीकमती एहवा मीथ्याती देवता जीनमारगना धेखी; ते पण उपजती वेळाए जीतआचारमाटे सीद्धायतननी प्रतिमा पुजेछे मसीत, ठाकरद्वारा पुजता नथी, ने ते छे पण नहीं ए सीद्धायतननी प्रतिमा तीर्थंकरनी होवे तो मीथ्याती कीम पुजे ? ए कुळाचार जीतव्यवहारमध्ये प्रतिमानी पुजा जाणवी पण समकीतसाते नही एकला समदष्टी देवता पुजता होवे तो धरमखाते थाय, पण सर्व समकीती, मीथ्याती, भेळी पुजे तीवार धर्माचार स्यानो !

८. वळी ए प्रतिमा तीर्थंकरनी नहीं, ते कीम जाणीये ते सीद्धांतनी साख छली छे. प्रथम सुरीयाभ देवताने राज्यभीषेक थयो तीवारे पछे व्यवसाय सभामध्ये आव्यो तीहां " धमीये सये वाएति " एहवो पाठ छे जे, धर्मशास्त्र वांच्या, ए धर्मशास्त्र छे, पण कुळधर्मनी रीत समंधीया छे पण आचारंगादीक द्वादशांग प्रवचन नथी ते कीम जो आचारंगादीक द्वादशांगी होवे तो मीथ्यात्वी, अभव्य कीम वांचे ? कीम सद्दहे ? अने जीन वचन साचां केम माने ? अने वांचवा तो सर्व पडेछे. अने मीथ्यात्वीना ओगणत्रीस पापश्रुत कीहांइ जुदां पण कह्यां नथी, जे समदष्टी आचारंगादीक वांचे अने मीथ्यात्वी कुरान, पुरान वांचे तेम तो नथी. केटला वार पोथवाळा उपजे ते सर्व एहीज धर्मशास्त्र वांचे छे, ते माटे ए धर्मशास्त्र ते पण लोकीक कुळरीतना जाणवां वळी हींसाधरमी कहे छे जे, श्रावक, समदष्टी सीद्धांत वांचे तो अनंत संसारी थाय एवे एहना कह्या लेखे जुओ. जो आचारंगादीक धर्मशास्त्र होवे तो समदष्टी देवता सीद्धांत वांचीने अनंत संसारी स्याने थाय ? ते माटे ए धर्मशास्त्र ते कुळरीतना छे जीम मनुष्यमध्ये बोहोंतेर कळाना शास्त्र तथा अर्थ, धर्म, काम, साम, दंड, भेद इत्यादीक ग्रंथ ते सरखा जाणवा, समदष्टी, मीथ्यादष्टीने सर्वने काम आवे मनाय तेहवा छे ए प्रतिमा अने ए शास्त्र एक सारखे छे. अनंता जीव अनंतीवार देवता थइने ए प्रतिमा पुजी, ए पुस्त वांच्या

पण समकीत कोइ पाम्यो नहीं.

९ पछे ए पुस्तक वांचीने "धम्मीयं ववसाइयं गिन्हिआ" ध. कुळधर्म सर्वेष व. व्यापार. गि ग्रहे पेहवो पाठ छे

ए धर्मनो व्यापार कह्यो ए पद पण समुचय छे इम नथी जे प्रतिमा पुजा ते धर्मव्यवसाय समुचय पदमध्ये प्रतिमा, पुतळी, थांभा, हथीयार, तोरण, पोळी, खडग, पुस्तक वगेरेवानां पुज्यां; ते सर्वे धर्मव्यवसाय प्रमाण केहे पुज्या छे, ते माटे धर्मव्यवसाय पद ते पण साधारण पाठ छे वठीने इशानखुण सीद्धायतनमध्ये गीयो ज्यहां एक सो आठ जीणपडीमा छे तीहां आव्यो, ते प्रतिमाने शरीर धरन्यो ते सुत्रथकी कहेछे.

१ वीज्यदेवतानी प्रतिमा जीवाभीगममध्ये वरणवी तीहां रीठमयामंसु रीए रत्नमे दाढी कहे छे रायपसेणीमां सुर्यामे पुजी तेने दाढी न कही ते फेर.

२ कणगामया चुचुआ ते कमकमय स्तनछे ए स्तन जुगळ केहने होवे श्री उववाइमध्ये श्री वितरागनो शरीर वखाण्यो तीहां स्तन जुगळ मुगळथीज कह्यो नथी तीर्थंकर, चक्रवर्ति, वळदेव, वासुदेव, उत्तम पुरुष, सामंत, घोडो, एटलाने स्तन होवे नहीं ते माटे जीन तीर्थंकरनी प्रतिमां होवे तो स्तन होवे नहीं

३. वळी ए प्रतिमाने पाशे वे वे चामरधारनी पडीमा, एक एक छत्रधारनी पडीमा, अने मुख आगळे वे वे नागपडीमा. वे वे जक्षपडीमा, हाथजोडीने वीनय करती कहेछे ए नाग, भुत, जक्षनी, पडीमा कहेना परीवारमध्ये होवे ? तीर्थंकरने पासे तो सुत्रमध्ये ठाम ठाम कह्यो छे जे, इसीपरीसाए जइपरीसाए कह्यो छे जो ए प्रतिमा पासे गणधर, साधुनी प्रतिमा होत तो जाणत जे प्रतिमा तीर्थंकरनी खरी पण ते तो नथी तो इम जाणजो जे, कोइ भोगीदेव कामदेवादीकनी छे वळी पण आज हींस्याधरमी प्रतिमा करावेछे तेहने पासे काचसगीया साधुनी प्रतिमा करावे छे, पण नाग, भुत, जक्षनी, प्रतिमा नथी करावता ए वे प्रतिमा मध्ये कही साची ने कही जुठी ? माटे ए प्रतिमा नाग, भुत, जक्ष, ठाकुर, वेसमण. खेत्रपाळ, महेश, कामदेवादीकनी जाणवी ए वीशेष

४. वळी सुरीयामे पुजतां पहीलायकी "लोमहथेण पमजइ" कह्यो छे जे, मोरपींछनी पुजणीयकी पुजी कही. जीम द्रुपदीये, भद्रासार्थवाहीये, जक्षनी प्रतिमा मोरपींछ थकी पुजी ते रीते, अने ठाणांगसुत्र पांचमे ठाणे बीजे उदेशे कह्यो छे जे.

कप्पई निगांथाणवा निगार्थाणवा पंच रयहरणाई धारित्त-एवा परिहरित्तएवा तजहा उन्नए १ उट्टीए २ साणए ३ पच्चा पिचिए ४ मुजापिचिए ५.

अर्थः—क. कल्पे नि निर्ग्रंथ. नि निग्रंथीने. पं पांच २ रजोहरण. धा. धारवा, ५. राखवा त ते कहे छे उ. कबल उननो १ उ उटना रोमनो. २ सा सरणनो. ३. ५ छण वीमेले कुटीच तेहनो. ४ मु. मुंजनो कुटीतनो.

ए मध्ये मींटी तथा मुजना रजोहरणा अपमादे राखवा कह्या, पीन मोरपींछ राखवानी ना कही सो जीनमारगमध्ये मोरपींछ नीसेध्यो छे अती सुकमाल छे, तो पण अन्यातिर्थियकी मल्लो वेपे थाय ते माटे नीसेध्यो छे जुओ साधुने मोर पींछ राखवानी ना कही, तो साधुना स्वामी भगवंतने शरीरे मोरपींछनो पुंजणो कीहां थकी ? अने भगवंतने तो मुख्यीज रजोहरणो नथी, तो भगवंतनी प्रतिमाने मोरपींछ कीम कल्पे ? ए छेखे पण श्री विचरागनी ए प्रतिमा नहीं.

५. वली छरीयामे प्रतिमा पुजी तीवारे प्रथमथकी प्रतिमाने नवरावी पछे "अहयाई देवदुस जुइयछाई नियसेइ २ त्ता करेतां अ अहुर्या दे देवदुष्य. जु. जुगल वस्त्र नि पहीरावे पहीरावीने

ए पाठ छे, जे जीनप्रतिमाने चीगटरहीत ऊदहनी चांचरहीत पटले अखंड वस्त्रनो जोडो पहीराव्यो इम पाठ बोल्यो, अने तीर्थंकर तो अचेल छे वस्त्र पहीरे नहीं, तो तीर्थंकरनी प्रतिमाने धोती जोडो कीम पहीराव्यो ? ए छेखे तो प्रतिमा कया जीननी ठहरी आभ्रण ने वस्त्र तो एक रीते छे जो कल्पे तो बेहुने ने न कल्पे तो एकुहीने न कल्पे. अने हींस्याधरमी आज प्रतिमाने पुजे छे, ते पण वस्त्र नथी पहीरावता; तो देवता भगवंतने अचेल जाणीने वस्त्र कीम पहीरावे ? पीन इम जाणजो जे, ए प्रतिमा वस्त्रमा पहीरणहार देवतानी छे, पण भगवंतनी नहीं वली हींस्याधरमी कहेसे जे, ए तो वस्त्र भगवंतने मुख आगले मुक्या छे ते खोटुं कहे छे. मुख आगल वस्त्र मुकपा ते तो "वथारुहणं" पाठ जुदो छे. "वथारुहणं चुन्नारुहणं पुफारुहणं वयारुहणं आभरणारुहणं" कहेतां व वाना आरोपण चु चुर्ण वासखेप चडावे. पु फुल चडावे व वस्त्र चडावे आ आभ्रण चडावे तेमां आव्यो पण इहां तो "देवदुसा जुवलीयं निर्यसेइ २ त्ता करेतां दे देवदुष्य जु जुगल वस्त्र नी पहीरावे पहीरावीने

कह्यो निर्यस्या पहीराव्या कह्या छे एम आभ्रण चढाव्या ते जुदां अने पही- राव्यां ते पण जुदां. ए वस्त्र आभ्रण बे वस्तु भगवंतने अभोग्य तीम भगवंतनी प्रतिमाने पण अभोग्य वळी ढुंढ्यापाधरमी कहेछे जे, भगवंतने तो ए बे वस्तु अजोग्य छे, पण भगवंतनी भक्ति छे, जे सार वस्तु होवे ते प्रतिमाने भगवंतने नीमीते करेज ते उत्तरः जो त्यागी पुरुषनी भक्ति भोगवडे थाय तो स्त्री केम न चढाव्यो ? सर्व भोगमां स्त्री प्रधान छे जेम वस्त्र, आभुषण, तेम स्त्री. ए पण तमारे भक्तिने खाते गणजो, पण एहवी भक्ति जीनमार्गमध्ये नथी कही ते जाणजो.

६ वळी प्रस्नव्याकरण पांचमे अध्ययने आश्रवद्वारे देवताना चैत्य, देवकुळ, परीग्रह मध्ये कह्या छे, ते पाठ लख्यो छे

एवचते चउविहा सपरिसावि देवा ममायंति भवण वाहण जाण विमाण सयणा सणाणिय नाणा विह वथ भुसणाणी प- वर पहरणाणिय णाणामणी पंचवण दिवंच मायणविह णाणा- विहं कामरुवे वेउव्विय अथर गणसघा तेदिव समुद्दे दिसाउ विदिसाउ चेइयाणिय वणपंडे णीयवणसंडे पवते गाम नगरा- णीए आरामु जांण कांणणाणीय क्षुत्र सर तलाग वाविदिहिया देवकुल सभ पव्वा वसहीमा इयाइ वहुकाई कित्तणाणिय परिगे- न्हवा परिग्रहं विपुलं दव्व सार देवावि सइदगा नव्विर्त्ति उतु- व्विउवलभति

अर्थ—ए एणीपरे ते ते देवता. च भवनपत्यादीक चार प्रकारना स परीखदा सहीत ए पूर्वे कह्या ते दे देव ते म. माहारा एहवी ममता करे एटला बोल उपरे ते कया ते कहेछे भ घर १ वा अश्वादीक. २ जा सटकादीक. ३ वि. विमान ४ स. पल्यकादीक. ५ स. सींघासनादीकमते ममताकरे. ६ ना नाना प्रकारना. व वस्त्र ७ भु भुषणमते. ८ प. प्रधान प हथीयारमते ममताकरे ९ णा नानाप्रकारना मणी १० प पांचवर्णे दि प्रधान भा भाजन. ११ ना. नानाप्रकारना का कदर्पावतारुप, १२ वे वेक्रीयकीधा एहवा अ. अपच्छराना १३ ग. समोह सेहनाहृतमते. दी द्वीप, १४ स. समुद्रमते १५ दी चार दीसा

मते १९. षी. चार विदीसमते २१ चे चैत्य मतिमामते अन्यातिर्थिनी प्रतिमा पण परीग्रहमध्ये २४ म. मनखडे २५ प पर्वत. २६ गा. गाम. २७ न. नगरमते. २८ आ आराम २९ उ. उध्यायन ३० का. काननवनमते ३१ कु कुप. ३२ स सरोवर ३३. त. तळाव. ३४ वा वाव. ३५ दीर्दीर्घिका ३६ दे सीखरबंध देहरां ३७ स. सभा ३८ प पर्व. ३९ व तापसना आराम ४० आ. ए आर देइ. घ घणा पदार्थमते की. एम कहे जे ए माहारा माहरा एम ममता करे ए प्रहीने एवा प. परीग्रहने परीग्रह कहेवा छे षी, षीसतीर्णे. द. द्रव्ये करी सा मधान एहवा परीग्रहने आदरीने दे देवपण स. इंद्रसहीत देव न मपवि म पामे उ र्की देवा.

ए पाठ मध्ये भे जे वस्तु कही ते ते वस्तुने देवताने परीग्रहमध्ये कही तेमध्ये देवकुळ, मतिमा ते पण परीग्रहमध्ये गण्या छे. ते परीग्रह पुन्ये धर्म न होवे. हींसा धरमी कहेस्ये, पुर्णभद्रादीक जक्ष छे. तेहनी मतिमा ते जक्षना परीग्रह खाते छे, सेस मतिमा परीग्रहमां नहीं ते उत्तरः जो मीछालोके व्यंतरनी मतिमा छे, ते मतिमा परीग्रहमध्ये कहेस्यो तो इहांतो " चउवीहावीदेवा " कह्मा छे. इंद्र सहीत तेहनी मतिमा मीछा लोकमाही कीयां छे ? अनेकुण पुमे छे अने "दीवसमुद्देसुवाणीसं" कह्युं ते कया व्यंतरनी मतिमा छे. तुमे तो सर्व द्वीप, समुद्रनी मतिमा तीर्थंकरनी मानोछो. इहां तो ते पण मेळी आवी छे, अने देवलोकमध्ये विमानदीठ मतिमा छे, ते पण विमानवासीने परीग्रहखाते छे ते कीम पोतपोताना विमाननी सर्व पुजेछे कोइ बीजानी नथी पुजता अने सुरीयाभने सामानीके पुन्यानो कह्मो छे, तेणे पण सुरीयामविमानना सीद्धायतननी मतिमा सुरीयामदेवने पुजवी कही दे खाडी अने तेणे पण तेहीज पुजी अन्य थानकनी—मेरुनी, नंदीश्वरद्वीपनी पुजवी चलावी नथी. पहीला जीतआचारमां पुजवानी छे ते बतावी एटले पोतानी करी बतावे छे ते माटे परीग्रहखातेज कही अन्यतीर्थंकरने जन्मादीक महोच्छव करतां सर्व इंद्र मेळा थया छे से कीम भगवंत तो भरत, इरवत, महावीदेहना क्षेत्रज्ञ छे ते कांइ देवताना परीग्रहमांही नथी अने मतिमातो तेहनी हद मर्यादा विमानमांही आवी ते पुजे. ते माटे परीग्रहखाते कही अने तीर्थंकर, साधु कोइनी इहमध्ये कह्या पण नथी. वळी हींसाधरमी कहे, सुरियामनी मतिमा तीर्थंकरनी नहीं परंतु तुमे साथकी जाण्युं. ते उत्तर. ए प्रतिमाना लक्षण छो भगवंतथकी जुदां पडयां १ प्रथम दाढी २ स्तन ३ मोरपींछ. ४ नाग, मुवमो परिवार ५ कपडां परीराव्यां

वेणे करी जाण्युं जे, ए प्रतिमा भगवंतनी नहीं. ए छो बोल बीरूद्ध अने द्रुपदीनी प्रतिमाने पछे सातमो अद्योनो सघट्ये ए सात बीरुद्ध. वळी हींसाधरमी कहेस्ये, जीनप्रतिमा वितरागनी नथी तो " धुवदाचणजीणवराणं " कीम कह्यं ते उत्तर जो जीनघर धुप, सुगध लेवे तो सुरियाभे प्रत्यक्ष भगवंतने धुप कीम न कीधो ? ते कहो जे धुप सुगधना भोगी देव ते जीनवरनी प्रतिमा जाणवी एवं प्रश्न आठ थयां. बीजारे हींसाधरमी कहेशे जे, तीर्थंकरनी प्रतिमा नथी तो सुरीयाभे नमोथुणं कीम कह्यु ? ते उत्तर सुरीयाभनमोथुणं धर्मखाते नथी. कुळाचार व्यवहार साथे छे. नमोथुणं त्रण प्रकारे कहेछे १ लोकीकरीते २ कुप्रावचनीकरीते ३ लोकोत्तर रीते

१ लोकीक ते लोकीक देव गुरु देव गुणरहीतने आगळे नमोथुणं कहे. जीम द्रुपदी पोते मीथ्यात्वी अने नीयाणासहीतथकी भोगीदेवनी प्रतिमा आगळे, नमोथुणं कह्युं, ते जेम ओसवाळ महाजन आगे पोकरणा भोजक चोवीस जीनना नाम सुणावे. पण पोते सद्दहे नहीं आजीवका अरथे कहे तेम जाणवु एमां धर्म नथी.

२ कुप्रावचनीक ते गोसाळा, जमाळीनो शीष्य, श्रावक गोसाळा, जमाळीने नमोथुण कहे ते कुप्रावचनीक. तथा अनुजोगद्वारे द्रव्यासकना करणहार भेसधारा तथा दीगंबर नमोथुणं कहे ते सर्व कुप्रावचनीक.

३. लोकोत्तर नमोथुणं ते साधु, श्रावक, श्री वितरागने ओळखी गुण जाणीने कह्यु ते एकांत मुक्ति हेतु जाणवुं.

जीम सुरीयाभे प्रतिमा आगे नमोथुणं कह्युं तीम असंख्याता वीजयदेवता, असंख्याता वीजयंतदेवता, असंख्याता जयंतदेवता, असंख्याता अपराजीतदेवता, एकेकने ठामे अनंता थया. अने अनंता थासे समकीती, मीथ्यात्वी, भव्य, अभव्य, ते सर्व नमोथुणं करे असंख्याता भवनपती, असंख्याता व्यंतर, असंख्याता ज्योतषी, असंख्याता विमानीक, ते सर्व सुरियाभनी रीते प्रतिमा पुजे, दाढा पुजे, धर्मशास्त्र वांचे, भव्य, अभव्य सर्व देवतानी ए करणी छे ते माटे लोकीकरीतमां नमोथुणं गीणाय जो एकला समदृष्टीज पुजा करे तो समकितखाते होवे वो, वळी प्रतिमानी पुजा धर्मखाते होवे तो, मनुष्यलोके राजा, सेठ, सेनापति, श्रावक प्रतिमापुजी धरमांमांडी, देहरां कराव्या, संघ काढया कीम न कह्या ? देवताये प्रतिमा आगळे नमोथुणं कह्युं गर्भमां रह्या आविरती सहने नमोथुण कह्युं. पण सासात केवळी

मते १९. वी. चार विदीसमते २१ चे चैत्य मतिमामते अन्यतिर्थिनी प्रतिमा एम परीग्रहमध्ये २४ घ. वनखंडे २५ प पर्वत. २६ गा. गाम. २७ न. नगरमते. २८ आ आराम २९ उ. उध्यायन ३० का. काननवनमते ३१ कु कुप ३२ स सरोवर ३३. त. तलाव. ३४ वा वाव. ३५ दीर्दीर्घिका ३६ दे सीसर्व देहरां ३७ स. सभा ३८ प पर्व. ३९ व तापसना आराम ४० आ. ए आम देइ. य घणा पदार्थमते की. एम कहे जे ए माहारा माहरा एम ममता करे प्रहीने एवा प. परीग्रहने परीग्रह करेवा छे बी, वीसतीर्ण द. द्रव्ये करी सा. मधान एहवा परीग्रहने आदरीने दे देवपण स. इंद्रसहीत देव न भपवि न पामे उ कीं देवा.

ए पाठ मध्ये जे जे वस्तु कही ते ते वस्तुने देवताने परीग्रहमध्ये कही तेमध्ये देवकुळ, मतिमा ते पण परीग्रहमध्ये गण्या छे. ते परीग्रह पुन्ये धर्म न होवे. हींसा धरमी कहेस्ये, पुर्णभद्रादीक जक्ष छे तेहनी मतिमा ते जक्षना परीग्रह स्यावे छे, सेस मतिमा परीग्रहमां नहीं ते उत्तरः जो श्रीछालोके व्यतरनी मतिमा छे, ते मतिमा परीग्रहमध्ये कहेस्यो तो इहांतो " चसवीहावीदेवा " कह्या छे. इंद्र सहीत तेहनी मतिमा श्रीछा लोकमाही कीयां छे ? अनेकुण पुजे छे अने "दीवसमुदेवेइ्वाणीयं" कह्यु ते क्या व्यतरनी मतिमा छे. तुमे तो सर्व द्वीप, समुद्रनी मतिमा तीर्थंकरनी मानोछो. इहां तो ते पण भेळी आवी छे, अने देवलोकमध्ये विमानदीठ मतिमा छे, ते पण विमानवासीने परीग्रहस्यावे छे ते कीम पोतपोताना विमाननी सर्व पुजेछे कोइ बीजानी नथी पुजता अने सुरीयामने सामानीके पुण्यानो कह्यो छे, तेणे पण सुरीयाभविमानना सीद्धायतननी मतिमा सुरीयाभदेवने पुजती कही दे स्यावी अने तेणे पण तेहीम पुजी अन्य थानकमी—मेरुनी, नदीसरद्वीपनी पुजवी चतावी नथी. पहीला जीवभाचारमां प्रजधानी छे ते बतावी एटले पोतानी करी बतावे छे ते माटे परीग्रहस्यावेज कही अन्यतीर्थंकरने जन्मादीक महोच्छव करवां सर्व इंद्र भेळा थया छे ते कीम भगवंत तो भरथ, इरवत, महावीदेहना जेटला छे ते कांइ देवतानां परीग्रहमांही नथी अने प्रतिमातो तेहनी हद मर्यादा विमानमांही आवी ते पुजे ते माटे परीग्रहस्यावे कही अने तीर्थंकर, साधु कोइनी हदमध्ये कह्या पण नथी. वळी हींसाधरमी कहे, सुरियामनी मतिमा तीर्थंकरनी नहीं पहतुं तुम्हे सायकी जाण्युं ते उत्तर. ए मतिमाना लक्षण जो भगवतवकी जुदां पहयां १ प्रथम दाढी २ स्तन. ३ मोरपींछ. ४ नाग, मुवनो परिवार ५ कपडां पहीरायां

मनो भगवंतने नमोथुणं परलोकखाते, अने धन काढवो अने प्रतिमा पुजवी इहलोक खाते थीयो ए परमार्थ.

११. वळी हींसाधरमी कहे, प्रतिमा पुजी तीहां " निसेसाए " कह्योछे ते नीसेप शब्दनो अर्थ मोक्षनुं हेतु इम कह्यो छे. ते माटे ते प्रतिमानी पुजा मोक्ष हेते थइ ते उत्तर भगवती सतक पदरमे चोथा राफडाने फोडतां एक पुरुषे धरज्या ते पुरुष राफडाना फोडणहार पुरुषनो.

हियकामए सुहकामए पछकामए निसेसियाए ॥

अस्यार्थटीकाया हितकामए हिंइहहित मपायाभावं सुहकामए तिसुखमादनरुप पथकामए त्तिपथामिवपथ्य आनद कारण वस्तु अणुकपएत्ति अनुकपाया वरतित्यानुकपीक. निसेयसिए-तिनि. श्रेयसर्यंन्मोक्षामिछाति तिनिश्रेयिक ॥

हीतनो वांछक आनदरुप तेहनो वांछक पथ्यनीपरे पथ्य तेहनो वांछक मोक्षने वांछक इहां नीश्रेस सब्दे मोक्ष अर्थ कीधो इहां मोक्षनो अर्थ कारण सु हतो ? खपकने अधीकारे निश्रेय कह्यो, धन काढतां तीहां धन काढवामां मोक्षनो अर्थ स्यो हतो ? प्रत्यक्ष धन तो इहलोकनो अर्थ छे तीम शब्द सरखो पण भावार्थ वीचारवो जो प्रतिमानी पुजा मोक्षनो अर्थ होवे तो भव्य, अभव्य, पुजणहारा सर्व मुक्ति जाय ते तो नथी वळी कोइ कहेसे, अभव्य देवताये प्रतिमा पुजी तेहनी साख कीहां छे. ते उत्तर: सीद्धांतमध्ये तो अभव्यजीव सर्व देवलोक उपना तीहांनी स्थीती राखवामाटे सर्वजणे प्रतिमा पुजी छे, ए सुमसाख इम करतां प्रत्यक्ष पाठ जोवो होय तो ओघनिर्युक्तिनी टीकामध्ये तमे मानो तो ते मध्येज कह्यो छे जे

इत्वमि जिणहराइ तिवाख्या द्रव्यलिंगि परिग्रहिता निचैत्यानिसम्यक्तदृष्टी नसभाविता निइतिकस्मातजस्मात द्रव्यलिंगी मिथ्यादष्टी स्वातयद्येवत हिंदिगवरसमधी निचैत्यानि अद्येतदसत्यतर्हि स्वर्गलोके पुसश्रितानि चैत्यानि सुर्याभाद्यादेवा सम्यगदष्टय प्रपूज्यते तत्चैत्यानिसगमकवत् अभव्यदेवा मदीयमदीयमितिचहुमानात् प्रपूज्यते पुर्वापर विरुद्ध नस्यात् नतुसुर्याद्या

भगवंतने वंदणा करवा आव्यो तीहां नमोथुण न कह्युं. तो शुं प्रतिमाथकी भगवंत उतरता हता ? पण देवतानी जेहवी रीते कुळाचार जीतव्यवहार छे तीम करेछे. इहां धर्म कर्मनो वीचार कांइ न रह्यो.

१० वळी सुरीयाभे प्रतिमाने नमोथुणं कह्यु तो इहलोक खाते छे, पण परलोक खाते नथी. तेहनी साख भगवती सतक बीजे उदसे पेहेले छे ते खंधक सन्यासीये श्री माहावीरस्वामीप्रत्ये कह्यु जीम कोइ गाथापती घर बळतो देखी धनकाढे ते इम जाणे ए सभे

निछारीएसमाणे पुव्व पछा हियाए सुहाए खमाए निसे साए अणुगामीयत्ताए भविसई ॥

अर्थः—नि नीस्तार पाम्या ए माहारो आत्मा अने केदेसु नीकल्यापर्का. पु. पहीला प. अने पछे. हि हीतने काजे सु. सुखने काजे ख क्षमाने काजे नी. मुक्ति हेतु. अ. अनुगामीकपणे भ हुस्ये

ए धन काढयोयको मुजने पहीलां अने पछी हीतकारी प्रमुख याशे एणे दृष्टांते खंधक कहेछे, लोकमध्ये आदीप प्रदीप्त, जरा, मरणरुप अग्नी लागी छे, ते मांहीथी सार भंड हुं माहारो आत्मा काढुंछु ए आत्मा ससारथकी काढेथके मुजने.

पचो हियाए सुहाए खमाए निमेसाए अणुगामीयत्ताए भविस्सइ. ॥

अर्थः—ए परभव जन्मांतरे हि. हीतमणी पथ्यनीपरे सु सुखभणी. ख. जोगथामणी रोगनो विनासकरवा ओपधनीपरे. नि मोक्षभणी. अ भवनी परंपरा लगे एह सुखदुं करण थेशे. भ हुसे

पेचा करेतां परलोके हीताये प्रमुख याशे इहां हीयाये प्रमुख पांच बोल तो सरखा छे, पण धन काढयो तीहां "पुवी पछा" कह्युं छे, ए लोकमध्ये ए धन काढयोयको पहीलां अने पछी धन "हीयाये" प्रमुख पांच बोल याशे अने संजम लेतां पांच बोले तो तेहीज पहीण पेचा करेतां परलोकने विषे "हीयाये" प्रमुख याशे इम कह्यो एटवा शब्दनो फेर छे तीम सुरियाभे भगवंतने नमोथुणं कह्यो तीहां "पेचाहीयाए" प्रमुख पांच बोल कह्या संजम लेतां संधके कह्या तीम अने प्रतिमा पुजवी, सामानीक देवताये वताव्यो तीहां "पुवी पछा हीयाए" प्रमुख पांच बोल, कह्या धन काढवाना आलावानीपरे. एणे देखे रूपकथो संजम अने सुरिया

ने दरसणे भविस्सई " ए मोहनीकर्मनो उधे तीम ए पण मोहनी ए कर्मजनीत तआचार माटे त्ये ए दाढानो छेवो तथा पुजवो धर्मखाते नथी जो धर्मखाते वे तो, देवता दाढा लइ जाय तीवारे मनुष्य, श्रावक, समदृष्टी रख्या तो छीये ? ा एमां कांइ धर्मखाते नथी, देवतानो जीतव्यवहार छे ते छीये छे. जो दाढा- त्ये केवळी परुप्यो धर्म होवे तो भव्य, अभव्य, समदृष्टी, मीथ्यादृष्टी सर्व कीम ले ? अभव्य मीथ्यादृष्टीने जीनमार्गनी रुची न होवे अने मनुष्य लोकनीपरे वलोकमां देवता पण समदृष्टी, मीथ्यादृष्टी बे जुदां जुदां छे पीण जीनमार्गिना स्तक जुदा जुदा नथी. अने जीनमार्गी सीद्धांत वांचे छे, अने अन्यमार्गिना रान, पुरान वांचे छे तीम तो नथी सर्वने " धम्मीसये " एक छे ते लोकीक र्गे सर्वने मानवा जोग सरखो छे.

१ प्रतिमा पण मनुष्यलोकमां सीव ने मुसलमान जुदा जुदा छे. पण देव- लोकमां समदृष्टी, मीथ्यादृष्टीना देहेरां जुदां जुदां नथी. वीमान बे मते एक एक ीद्धायतन जीनपडीमा छे तेहीज छे तेहने सर्व पुजे छे

२ वळी मनुष्यलोके पोतपोतना गुरुना अग पुजवा योग्य जाणे छे. जीनमति या अन्यमती, तीम देवलोकमां जीनमती जीनदाढा पुजेछे, अने अन्यमती अन्य- मनी दाढा पुजेछे एम तो नथी. सर्व एहीज जीनदाढा पुजे छे

१ ते माटे जे काम समदृष्टीज करे ते काम तो लोकोत्तर खाते.

२ अने जे काम एकला मीथ्यातीज करे ते कुप्रावचनीक मीथ्यात खाते

३ अने जे काम समदृष्टी, मीथ्यादृष्टी, बेहु करे ते लोकीक जीतव्यवहार तथा ोताना स्वार्थहेते जाणे पाप पण करवो पडे ते लोकीक रीत. तीम ए दाढा सम कीती, मीथ्याती सर्व पुजे तीवारे लोकीककरणी ठहरी. ए त्रण वस्तु अनतेभीवे, मनतीवार पुजी पण समकीती थयो नहीं

वळी सुधर्मिसभामांही देवता भोग नथी भोगवता ते दाढानो महीमा छे, एह कहे छे तेनो उत्तर. ज्ञाता सोळमे अध्ययने कृष्ण वासुदेवने पण सुधर्मासभा कही छे. तीहां जीनदाढा छे नहीं ते माटे सु सुधर्मिसभा मध्ये भोग करता हुस्ये ? कदापी न ठरे, इहां दाढानो प्ररतव देखाडयो ते भट्ठ, पण जीनपडीमां, राजसभा, दरबार, बाजर, हाट प्रमुख ठामे जीनदाढा नथी ते माटे सु भोग करे छे ? भोग तो भोगने ठामे होवे पण तेहीज सुधर्मिसभामां दाढा छे तीहां बेग देवता धारे

देवा स्वर्गलोके पुसास्वतानि चैत्यानि भज्युते तत्कल्प स्थिति वशानुरोधात् अतएव विरुध नसंभवति.

इम कह्यु इहां अभव्य सगमक देवतानी पुजा प्रतिमा सुर्याभादीक देवता जीम पुजे. तीवारे कह्यो देवतानी स्थीतीमाटे पुंजे स्थीतीनो कल्प एहमोज छे ए तत्व ए लेखे अभव्यसरखा ते पण प्रतिमा पुजे धर्मबुद्धि रहीत छे, तो पण जीतव्यवहा र माटे पुजे तो हवे लोकीक रीत ठरही के धर्मरीत ठहरी ते बीचारी जोजो.

---

२१ डाढा पुजी कहे छे. तेहनो उत्तर.

१२ वळी हींस्याधरमी कहे छे, सुरीयाभे, बीजयपोळीये जीनडाढा पुजी छे. डाढाने लीधे सुधर्मिसभामध्ये भोग भोगवता नथी, ते माटे डाढानी पुजा मुक्ति हेते छे ते उत्तरः डाढानो पुजवो समकीत स्वाते नथी " धम्मीयसये १ जिन पडीमा २ जिणडाढा ३ ए त्रण एक स्वाते छे डाढाने पण भव्य, अभव्य, सम दृष्टी मीथ्यादृष्टी, सर्व पुजे छे सर्वने भवनमध्ये, विमानमध्ये, चार जातना देवताने सरवेने छे अनता तीर्थंकर मुक्त गया तेहने चार चार डाढा हती अने तेहना लेण हार पण चार जणां छे १ सर्केद्र २ इसान ३ चमरेंद्र, ४ बलेंद्र एहीज स्ये छे. तेहने दाबडामां घाली पुजे छे, ए डाढा धरम जाणीने स्ये ते धर्म, पण कुळधर्म जीतववहार ९ जाणीने स्ये इहां श्रुत, चारीत्ररुप धर्म जाणीने लेवा नथी जो धर्म जाणीने लेवा होवे तो अच्च्यु इंद्र ते ईंद्रादीक सर्वथकी मोटा छे ते कां लेवा नथी? एहने कोण वरजी सके ? पण तेहने लेवानो जीतववहार छे तेहीज लेवे छे अने तेहीज रीते स्ये छे उपरनी जमणीडाढा सर्केंद्र लये हेठळी डाबीडाढा इसानेंद्र लये, हेठळी जमणीडाढा चमरेंद्र स्ये, हेठळी डाबीडाढा बलेंद्र स्ये ए रीते स्ये छे. ए चार डाढा चवारीक परीणाम छे असंख्यात काळ उपरांत रहे नहीं, अने होवे पण चार ईंद्रने चीमाने छे अने डाढानी पुजा तो सक्रादी इंद्र तथा सुरीयाभादीक सामानीक तथा बीजयादीक पोळीया तथा असंख्याता भवनपत्यादीक सर्व पुजे छे ते सर्वेने जीनडाढा कीहांथी आवी ? पण इम जाणजो जे सास्वता पुदगळ डा ढाने आकारे परीणामे छे डाढाने आकारे तेहने पुजे छे तेहनो नाम ते जीनडाढा छे पण कांइ लेइ जाय ते सदाकाळ रहे तथा सर्व ठामे होवे इम नथी, जीम ज माळी, मेघकुमारे दीक्षा लीधी तेवारे माताये भरतकना केस लीधा ए समे " सुप-

इ भगवं तवोकम्मं करेति एसो आगतो

इहां संगामो देवता सामानीकईंद्र सक्रेंद्रनो कह्यो. अने अभव्य कह्यो.

१. वळी सदेहदोलावली ग्रंथ छे तेहनी वृत्तिमध्ये कह्यो.

मन्वेवतर्हि संगमक प्राय माहा मीथ्यादिष्टी देवे विमान सिद्धायतन प्रतिमा अपीनातनमिति चेतन्न्येत्पज्येष्ठदि स- वत् अभव्य अपीदेवा पदियमिति वहुमानात्कल्प स्थिति- ानुरोधात् तदभूत प्रभावाद्धांन कदाचीत असमंजसक्रिया रम्यते ॥

ए संगामो देवता अभव्य कह्यो छे इद्रनो सामानीक कह्यो सामानीक देवता रत्ला विमाननो धणी उपजतीवेळा सुरीयाभनी परे प्रतिमाडाढा पुजे. पोतानी रिथती माटे. ए साख.

१ वळी सीद्धांतसाख जुओ अभव्य अने मीथ्याद्रष्टी सामानीक देवतापणे पजे तो श्री महावीरप्रत्ये सुरियाभे कीम पुछयु जे, स्वामी हुं भव्य, अभव्य, द्रष्टी मीथ्याद्रष्टी इत्यादीक चार बोल कीम पुछया ? जो सुरियाभ विमाने मी- द्रष्टी, अभव्य न उपजे तो, सदेह श्यानो उपनो ? जीम अनुत्तरविमाने अभव्य, याद्रष्टी, न होवे. तेनो उत्तर. जो प्रतिमा पुजतां समद्रष्टी होवे तो सुरियाभे जती वेळाज प्रतिमा पुजी छे, पछे भगवत पासे वांदवा तो आव्यो छे प्रतिमा तांज समद्रष्टी ने भव्य तो थइ चुक्यो, सदेह न रह्यो. तो वळी भगवंतने पुछ- तु सु कारण होवे ? बीचारे हींसाधरमी कहेस्ये जे, पोते जाणतांयकां पण निःस थावामाटे पुछयु, एम कहे तेनो उत्तर जो जाणतो निःसदेह थावामाटे पुछे मनुष्यलोकमां गणधर, साधु, श्रावक, समद्रष्टी, राजा, सेठ, सेनापति पोताना वआथी तथा बीजा मनुष्यआभी ए चार बोल क्यांइ पुछया कह्या नथी जीहां हां चार बोलनी पुछा देवता आश्रीयज छे सक्रेंद्रना चार बोल गौतमे पुछया ावती सतक सोळमे उदेसे बीजे इसानेंद्रना चार बोल गौतमे पुछया सनतकु रना चार बोल गौतमे पुछया भगवती सतक त्रीजे उदेसे पेहेले सुरियाभे पोते छया रायपसणीमध्ये इम जाव छद्मस्थमध्ये चार बोलनी पुछा घणे ठामे कही छे, ा गणधर, साधु, श्रावक, मनुष्यना पुछया नथी एटलामाटे इम जाणजो जे वि

भाषा बोले छे तथा सावद्यभाषा जीव वीराद्नारुप भाषा बोले छे तथा सर्व ई. सुधमद्र सभामां बेठायकां हांस्य, विनोद, विलास, तकटाक्ष, कामचेष्टा, नाटीक, नारीक्षण, गीत, श्रवण इत्यादीक तो करेछे, ते ससारी जीवनो छांदो छे. एवो भव्य, अभव्य, समदृष्टी सरखो आचार छे एमा मुक्तिनो कारण कोइ नथी.

११ तथा सर्वजीव देवतापणे उपना तेणे वीर्धपुर्वक पुस्तक प्रतिमा, दाढा पुजी छे.- भव्य, अभव्य, समदृष्टी, मीथ्यादृष्टी जुदा न पडया जीतव्य चार माटे. धीवारे हींसाधरमी कहे छे जे, विमानना अधिपतिये प्रतिमा पुजी छे ते तो एकांत समदृष्टी होवे मीथ्यत्वी विमानना अधिपतिपणे उपजे नहीं. ते वात सुत्रविरुद्ध कहे छे. सुत्रमध्ये तामलीतापस बाळतपसी पुरण बाळतपसी मीथ्यात्वी; काळकरी इसानेंद्र, चमरेंद्रपणे उपना कह्या. तेणे पोतानी स्थीती नीतीआचार माटे प्रतिमा पुजी होसे के नहीं पुजी होवे? अने समकीत तो पछे पाम्या छे ने प्रतिमा तो उत्पातसीजामांहीथी उठतांयको पुजेछे ते माटे इम नथी जे समदृष्टीज पुजे. वळी हरीभद्रसुरींनो कीधो अभव्यकुलक छे. ते मध्ये इम कह्यु छे, जे इंद्रपणे, सामानीकांद्रपणे, त्रायत्रीसकपणे, लोकपाळपणे, परमाधामीपणे, तथा प्रतिमा थाप ते पाषाणपणे, प्रतिमाना भोगना फळ, पाणीपणे एटला मध्ये अभव्य जीव उपजे नहीं एहवुं कह्यु छे तेनो उत्तर

१ इंद्रपणे न उपजे, वीमाननाधणीपणे न उपजे, तो बारमा देव लोकना इंद्र थकी पण नवग्रीवेकना देवता अधिका छे अहीमींद्र छे ते मध्ये अधीकी ज्योती, कांन्ति, पुनाइ चोसठ इंद्रथकी पण अधीकी छे; ते मध्ये अभव्य अने मीथ्यादृष्टी उपजता सुत्रमध्ये कह्या छे भगवती सतकमध्ये सर्व जीव नवग्रीवेकपणे अनतीवार उपना कह्या छे, ते माटे इहां नवग्रीवेकसुधी अभव्यनो उपजवो इम कह्यो ते

२. तथा तमारेज मते आवस्यकनीभ्रुति बावीस हजारी हरीभद्रसुरीनी कीधी ते मध्ये सामायके नाम अध्ययननी टीका मध्ये अभव्य, संगामादेवतानो अधीकार छे जे, श्री माहावीरने उपसर्ग करवा आव्यो तीहां पहेलां सक्रेंद्र बोल्यो, माहावीरने कोइ चळावी न सके, तेवारे सगामो अभव्य देवता सक्रनो सामानीक छे ते बोल्यो

अह सगामो नाम सोहम्म कप्पवासी देवो सक्कसामाणीउ सोभणीइ देवराया अहोरागे नउकवई कोमाणुसो देवा न चाली- सई अहं चालेमि नाहे सक्कोतं भवारेती माजाणीहिति परनि-

साए भगवं तवोकम्मं करेति एसो आगतो.

इहां संगामो देवता सामानीकईद्र सक्रेंद्रनो कह्यो. अने अभव्य कह्यो.

१. वळी सदेहदोलावळी ग्रंथ छे तेहनी वृत्तिमध्ये कह्यो.

मन्वेवतर्हि संगमकःप्राय माहा मीथ्यादिष्टी देवे विमान स्छसिद्धायतन प्रतिमा अपीनातनमिति चेतनन्येत्पज्येष्टदि संगमं वत् अभव्य अपीदेवा पदियमिति वहुमानात्कल्प स्थिति-वसानुरोधात् तदभूत प्रभावाद्दांन कदाचीत असमजसक्रिया आरम्यते ॥

ए सगामो देवता अभव्य कह्यो छे इद्रनो सामानीक कह्यो सामानीक देवता ईद्रसरखा विमाननो धणी उपजतीवेळा सुरीयाभनी परे प्रतिमाडाढा पुजे. पोतानी कल्पस्थिती माटे. ए साख.

१ वळी सीद्धांतसाख जुओ अभव्य अने मीथ्यादृष्टी सामानीक देवतापणे न उपजे तो श्री महावीरमध्ये सुरियाभे कीम पुछ्यु जे, स्वामी हु भव्य, अभव्य, समदृष्टी मीथ्यादृष्टी इत्यादीक बार बोल कीम पुछया ? जो सुरियाभ विमाने मीथ्यादृष्टी, अभव्य न उपजे तो, सदेह स्यानो उपनो ? जीम अनुत्तरविमाने अभव्य. मीथ्यादृष्टी, न होवे. तेनो उत्तर. जो प्रतिमा पुजतां समदृष्टी होवे तो सुरियामे उपजती वेळाज प्रतिमा पुजी छे. पछे भगवत पासे वांदवा तो आव्यो छे प्रतिमा पुजतांज समदृष्टी ने भव्य तो थइ चुक्यो, सदेह न रह्यो. तो वळी भगवंतने पुछवानु सुं कारण होवे ? सीवारे हींसाधरमी कहेस्ये जे, एणे जाणतांथकां पण निःसदेह थावामाटे पुछयु, एम कहे तेनो उत्तर जो जाणतो निःसंदेह थावामाटे पुछे तो मनुष्यलोकमां गणधर, साधु, श्रावक, समदृष्टी, राजा, सेठ, सेनापति पोताना जीवआश्री तथा बीजा मनुष्यआश्री ए बार बोल क्यांइ पुछया वद्या नथी. जीहां जीहां बार बोलनी पुछा देवता आश्रीयज छे. सक्रेंद्रना बार बोल गौतमे पुछया भगवती सतक सोळमे उदेसे बीजे इसानेंद्रना बार बोल गौतमे पुछया सनतकुमारना बार बोल गौतमे पुछया भगवती सतक त्रीजे उदेसे पेहेले सुरियाभे पोते पुछया रायपसणीमध्ये इम जाव इन्द्रमध्ये बार बोलनी पुछा घणे ठामे कही छे, पण गणधर, साधु, श्रावक, मनुष्यना पुछया नथी एटलामाटे इम जाणजो जे वि

मानना धणीपणे पण धार घोलवाळा उपजे छे ते सर्व प्रतिमाने, दाढाने पुजे से माटे प्रतिमा, दाढानी पुजा संसारहेते जीतआचारमां जाणवी, पण धर्म, धर्म मध्ये नहीं

१४. वळी हींसाधरमी कहेछे जे, प्रतिमानी पुजा देवताने धर्मखाते छे उघर. प्रतिमा तो भगवतना शरीरथकी जुदी छे, पण साक्षात भगवंतनो तेहनो महोच्छव देवताना जीतआचारमध्ये कह्यो छे, तो प्रतिमानी पुजा धर्मारमध्ये क्यांथकी थाशे ? तेहनी साख जंबुद्वीपपन्नतीमध्ये छपन आधी तीर्हां जीतआचार कह्यो ते पाठ

उपन्ने खलु भो जबुद्दीवे२ भगव तिथयरे तं जीय मेयं तीय पच्चुपन्न मणागयाण अहोलोग वथव्वाणं अठन्ह दिसाकुमारीण भगवउ तिथयरस्स जम्मण महिम करित्तए

अर्थ—उ. उपनो. ख. नीश्चे भो भो ! इत्र आमंत्रणे ज जंबुद्वीप नामा द्वीपने विषे. भ. भगवत. ति तिर्थंकर तं ते भणी जी जीतआचार छे ए ए. अ अतीतकाळ थयो ५ हवणा वर्त्तमानकाल छे अ अनागतकाळे थाशे अ. अघोलोकनी वसनारी अ आठ दिशाकुमारी भ भगवंत ती तीर्थंकरनो. ज. जन्ममहोच्छव (महीमा) क. करवानो आचार छे

वळी रुषभदेवस्वामी नीरवाण समयने अधीकारे कह्युं छे. जंबुद्वीपपन्नती मध्ये सक्रेंद्रे एम वीचार्युं जे

परिनिव्वुए खलु जवुद्दीवे२ भरहेवासे उसभे अरहा कोसलीये तजीयमेय तीयपच्चुप्पन्न मणागयाणंसक्काणदेविंदाणं देवरायाणंतिथगराणपरिनिव्वाणं महिमं करीत्तए ॥

अर्थः—प परीनीष्टत मोक्ष पुहोता ख, नीश्च र्ज जंबुद्वीप नामा द्वीपने विषे. भ भरतक्षेत्रे उ रुषभदेव अ अरीहंत को. कोसलीक. तं ते माटे जीतआचार छे अ एह अतीत प वर्त्तमान अ. अनागत काळना स. सुधर्मेंद्र. दे देवतानो राजा होय ते. तीर्थंकरनो प. परीनीर्वाण म महीमा. क करे

एम सर्व इंद्रने वीचारणा सक्रमीपरे जो साक्षात जीनना सरीरनो महोच्छव जीतव्यवहारमध्ये कह्यो छे, तो प्रतिमानी पुजा धर्मव्यवहारमध्ये कीहांथी थाशे ?

जन्ममहोच्छव, दीक्षामहोच्छव, निर्वाणमहोच्छवे अनेक क्रोड देवता आवे ते सर्व जीतव्यवहार मध्ये गण्या जीतव्यवहार जीहां कह्यो तीहां समदृष्टी, मीथ्यादृष्टी, भव्य, अभव्यनुं शुं कारण कह्यु अने सक्रसुरीयाभ ददुरदेवता प्रमुख सहीत जे भगवतने वांदवा आव्या तीहां जीतव्यवहार न कह्यो, तो इम जाणजो जे देवता जे जे कर्तव्य करे नमो थुण, पुजा, जनममहोच्छव, दीक्षामहोच्छव, निर्वाणमहोच्छव, डाडा लेवी. थुम करावर्वा, ए सर्व काम जीतव्यवहार नाछे. जो धर्मववसायना होवे तो मनुष्य, श्रावक, समदृष्टी, राजा, सेठ, सार्थवाहादीक कीम न करे ?

हींस्याधरमी कहे छे रुषभदेव स्वामी तथा नवाणुभाइ मुक्ति गया तेहना चैत्य थुम भरथेशरे कराव्या इम कहे छे ते वात खोटी छे. जम्बुद्वीपपन्नतीमध्ये रुखभ देवनो थुम एक देवताये कीधो भरथेसरनो नाम पण नथी. अने त्रेवीस तीर्थंकरना थुम इंद्रे कीधां. पोताना जीतआचार माटे पीण कोइ मनुष्य श्रावक कीधां नथी कह्यां पोताना जीतआचार माटे पीण कोइ मनुष्य श्रावक कीधां नथी कह्यां इंद्र सरखे गर्भमां रह्या तीर्थंकरने नमोथुण कीधां, प्रतिमा आगळ कीधां पण श्री चित्त रागने वांदवा आव्या तीहां साक्षात भगवतने नमोथुण कोइ देवताये न कीधो तो शुं प्रतिमाथकी भगवत सरता हता ? पण देवतानो जीतव्यवहार एहवोज जणाय छे तथा भगवती सतक सतरमे उदेसे बीजे कह्यु जे,

जीवाणंभंत्ते किधम्मेठिया अधम्मेठिया धम्माधम्मेठिया पुछा गोयमा जीवाधम्मे विठिया अधम्मेविठिया धम्माधम्मोविठीया नेरइयाणपुछा गोयमा नेरइया नो धम्मोठिया अधम्मोठिया नो धम्माधम्मेठिया एव जाव चउरिंदियाण पंचदिय तिरिखजोणी याण पुछा गोयमा नो धम्मेठिया अधम्मेठिया धम्माधम्मेठिया मणुसाजहाजीवा वाणमतर जोइसिय वेमाणीया जहा नेरइया

अर्थ —जीव हे भगवत सु धर्मनेविपे रह्या कहीये, अथवा अधर्मने विपे रह्या अथवा धर्माधर्मनेविपे रह्या कहीये ? इति प्रश्नः उत्तरः हे गोतम जीव धर्मनेविपे रह्या कहीये. अधर्मनेविपे पण रह्या कहीये धर्मधर्मनेविपे पण रह्या कहीये नारकी हे भगवत इत्यादी प्रश्न उत्तरः हे गोतम नारकीने सर्ववीरतीना अभावथकी धर्मास्तिक नहीं, अधर्मास्तिक कहीये देसवीरतीना अभावथकी धर्माधर्मास्तिक पण नहीं एम

मानना धणीपणे पण धार बोलवाळा उपजे छे ते सर्व प्रतिमाने, डाढाने पुजे छे. ते माटे प्रतिमा, डाढानी पुजा संसारहेते जीतआचारमां आणवी, पण सुत्र, चारीत्र धर्म मध्ये नहीं

१४. वळी हींसाधरमी कहेछे जे, प्रतिमानी पुजा देषवाने छे तेनो उत्तर प्रतिमा तो भगवतना शरीरथकी जुदी छे, पण तेहनो महोच्छव देवताना जीतआचारमध्ये कह्यो छे वहारमध्ये क्यांयकी थाशे ? तेहनी साख आवी तीहां जीतआचार कह्यो ते पाठ

उपन्ने खलु भो जबुद्दीवे

पच्चुपन्न मणागयाण

भगवउ तिथयरस्स जम्मण

अर्थ—उ. उपनो. ख. द्वीपने विषे. भ. भगवत. ति अ अतीतकाळ थयो प. अधोलोकनी वसनारी अ. जन्ममहोच्छव (महीमा)

वळी रुषभदेवस्वामी सक्रेंद्रे एम बीचार्यु ते

परिनिवुए खलु

लीये तजीयमेय तीय

अर्थः—प. परीनीवृत्त मोक्ष भ भरतक्षेत्रे उ. रुषभदेव. अ छे अ. एह अतीत प वर्त्तमान राजा होय ते तीर्थंकरनो प. पर एम सर्व इंद्रने बीचारणा जीतव्यवहारमध्ये कह्यो छे, तो प्र

जन्ममहोच्छव, दीक्षामहोच्छव, निर्वाणमहोच्छवे अनेक क्रोड देवता आवे ते सर्व जीतव्यवहार मध्ये गण्या जीतव्यवहार जीहां कह्यो तीहां समदृष्टी, मीथ्यादृष्टी, भव्य, अभव्यनु शुं कारण कह्यु अने सक्रसुरीयाभ ददुरदेवता प्रमुख सहीत जे भगवतने वांदवा आव्या तीहां जीतव्यवहार न कह्यो, तो इम जाणजो जे देवता जे जे कर्तव्य करे नमो थुण, पुजा, जनममहोच्छव, दीक्षामहोच्छव, निर्वाणमहोच्छव, डाढा लेवी. थुम करावर्वा, ए सर्व काम जीतव्यवहार नाछे. जो धर्मववसायना होवे तो मनुष्य, श्रावक, समदृष्टी, राजा, शेठ, सार्थवाहादीक कीम न करे ?

हींस्याधरमी कहे छे रुषभदेव स्वामी तथा नवाणुभाइ मुक्ति गया तेहना चैत्य थुम भरथेश्वरे कराव्या इम कहे छे ते वात खोटी छे. जंबुद्वीपपन्नतीमध्ये रुखभ देवनो थुम एक देवताये कीधो भरथेसरनो नाम पण नथी. अने त्रेवीस तीर्थंकरना थुम इंद्रे कीधा. पोताना जीतआचार माटे पीण कोइ मनुष्य श्रावक कीर्धा नथी कर्या पोताना जीतआचार माटे पीण कोइ मनुष्य श्रावक कीर्धा नथी कर्या इंद्र सरखे गर्भमां रह्या तीर्थंकरने नमोथुण कीधां, प्रतिमा आगळ कीधां पण श्री विस्त रागने वांदवा आव्या तीहां साक्षात भगवतने नमोथुण कोइ देवताये न कीधो तो शुं प्रतिमाथकी भगवत उतरता हता ? पण देवतानो जीतव्यववाहार प्रत्यक्ष जणाय छे यथा भगवती सतक सतरमे उदेसे बीजे कह्यु मे,

जीवाणंभंत्ते किधम्मेठिया अधम्मेठिया धम्माधम्मेठिया पुछा गोयमा जीवाधम्मे विठिया अधम्मेविठिया धम्माधम्मोविठीया नेरइयाणपुछा गोयमा नेरइया नो धम्मोठिया अधम्मेठिया नो धम्माधम्मोठिया एव जाव चउरिंदियाण पंचादिय तिरिखजोणी याण पुछा गोयमा नो धम्मेठिया अधम्मेठिया धम्माधम्मेठिया मणुसाजहाजीवा वाणमतर जोइसिय वेमाणीया जहा नेरइया.

अर्थ —जीव हे भगवत सु धर्मनेविषे रह्या कहीये, अथवा अधर्मने विषे रह्या अथवा धर्माधर्मनेविषे रह्या कहीये ? इति प्रश्नः उत्तर हे गोतम जीव धर्मनेविषे रह्या कहीये. अधर्मनेविषे पण रह्या कहीये धर्मधर्मनेविषे पण रह्या कहीये नारकी हे भगवत इत्यादी प्रश्न उत्तरः हे गोतम नारकीने सर्वंवीरतीना अभावथकी धर्मास्तिक नहीं, अधर्मास्तिक कहीये देसवीरतीना अभावथकी धर्माधर्मास्तिक पण नहीं एम

माननां धणीपणे पण धार बोलवाळा उपजे छे ते सर्वे प्रतिमाने, दाढाने पुजे ते माटे प्रतिमा, दाढानी पुजा संसारहेते जीतआचारमां जाणवी, पण मुक्त, चारीत्र धर्म मध्ये नहीं

१४. वळी हिंसाधरमी कहेछे जे, प्रतिमानी पुजा देवताने धर्मखाते छे तेनो उत्तर प्रतिमा तो भगवंतना शरीरथकी जुदी छे, पण साक्षात भगवंतनो शरीर तेहनो महोच्छव देवताना जीतआचारमध्ये कह्यो छे, तो प्रतिमानी पुजा धरमव्यवहारमध्ये क्यांथकी थाशे ? तेहनी साख जंबुद्वीपपन्नतीमध्ये छपन दिसाकुमारी आवी तीहां जीतआचार कह्यो ते पाठ

उपन्ने खलु भो जवुद्दीवे२ भगव तिथयरे तं जीय मेयं तीय पच्चुपन्न मणागयाण अहोलोगं वथवाणं अठन्हं दिसाकुमारीणं भगवउ तिथयरस्स जम्मण महिम करित्तए.

अर्थ—उ. उपनो. ख. नीश्चे भो भो ! इस आमंत्रणे ज जंबुद्वीप नामा द्वीपने विषे. भ. भगवंत. ति तिर्थंकर तं ते भणी जी जीतआचार छे ए एअ अतीतकाळ थयो. प हवणा वर्त्तमानकाळ छे अ अनागतकाळे थाशे अ. अधोलोकनी वसनारी अ. आठ दिशाकुमारी भ भगवंत ती तीर्थंकरनो. ज. जन्ममहोच्छव (महीमा) क. करवानो आचार छे

वळी रुषभदेवस्वामी नीर्वाण समयने अधीकारे कह्युं छे। जंबुद्वीपपन्नती मध्ये सक्रेंद्रे एम वीचार्युं जे

परिनिव्वुए खलु जंबुद्दीवे२ भरहेवासे उसभे अरहा कोसलीये तजीयमेय तीयपच्चुप्पन्न मणागयाणसक्काणदेविंदाणं देवरायाणींतियगराणपरिनिव्वाणं महिमं करित्तए ॥

अर्थः—प. परीनीव्रत मोक्ष पुहोता ख, नीश्च जं जंबुद्वीप नामा द्वीपने विषे. भ भरतक्षेत्रे उ रुषभदेव. अ अरीहंत को. कोसलीक. तं ते माटे जीतआचार छे अ. एए अतीत प वर्त्तमान अ अनागत काळना स. सुधर्मेंद्र. दे देवतानो राजा होय ते तीर्थंकरनो प. परीनीर्वाण. म. महीमा. क. करे

एम सर्व इंद्रने वीचारणा समजनीपरे जो साक्षात जीनना सरीरनो महोच्छव जीतव्यवहारमध्ये कह्यो छे, तो प्रतिमानी पुजा धर्मव्यवहारमध्ये कीहांथी थाशे ?

इद वावी, हथीयार, प्रतिमा, हाडा, वृक्ष, वावडी, पुजवा कह्या नथी, जो सुतधर्म मध्ये एहवा बोल पुजवा कह्या होवे तो, मनुष्य, राजादीक श्रावके केम न पूज्या ? श्रुत, चारीत्र, धर्मना स्वामी तो मनुष्य छे, ते तो पुजता नथी. तथा सुरीयाभ श्री माहावीर स्वामी पासे आव्यो तीहां फुल, पाणी, वस्त्र, आभ्रणथकी प्रतिमा पुजी तीम महावीरने पुज्या कीम नहीं ? प्रतिमा आगल कह्युं छे जे, धुर्पदाहण जीण घरार्ण तीवारे साक्षात जीनवरने धुप कीम दीधो नहीं ? ते कहो तीवारे कहीस्ये जे, पहीलांथी सेवक देवता आव्या तेणे मांडलो पुज्यो, छांटयो, वरसाव्यो, धुप्यो एटला काम कीधा छे. ते उत्तरः तीहां तो इम कह्यु छे जे मांडलो सोध्यो, वरसात कर्यो, धुप घटीजोओ दीवंसुरामी गम्नजोग करेह कहेता देवताने आववा जोग्य करो इम कह्यो, पण इम नथी कह्युं जे, भगवंतने रहीवा जोग्य करो ए उत्तर प्रश्नोत्तरे करी एक सुरीयाभनो प्रश्न कह्यो.

---

२२ चीत्रामणनी पुतळी न जोवी कहेछे तेनो उत्तर.

हींस्याधरमी कहे छे जे, दसविकालीक आठमे अध्ययने कह्यो छे जे

चित्तभित्तिं ननिझाए ॥ नारी वा सु अलंकियं भखरपिव दठ्ठुणं ॥ दिठिपडीसमाहरे ॥ ५५ ॥

अर्थ—चीं भिते आलेखी स्त्रीना रुपने. न. जोइये नहीं तो ना. सचेत नी स्त्रीने वा अवधारणे सु. अलकार पहीरी वेसे करी सहीत स्त्रीने कीम जोइ सहीजे नजरे दृष्टे. भ सुर्यने अ जीम. द देखीने. दी आंखीने. प पाछी वाले तीम स्त्रीथी द्रष्टी पाछी वाले.

ए गाथामां एम कह्युं जे, भींते चीत्री भस्त्री ते जोवे नहीं काम राग उपजे ते माटे हवे जीम पुत्तळी दीठे राग उपजे तीम प्रतिमा दीठे वैराग उपजे ते माटे प्रतिमा वांदी नीकळी छे. तेनो उत्तरः प्रश्नव्याकरण मध्ये पांचमे संवरद्वारे तो प्रतिमा अने पुत्रीवेहु जोवी नीखेधी ते पाठ

बितिय चखुइदिएण पासिय रुवाणि मणुन्न भद्धकाइ सच्चित्ताचित्त मीसगाइ कठे पोथय चित्तकम्मे लेपकम्मे सेलय दतकमेय पचहिंवणेहिं अणेग सठाण सठियाइचीए गंथिम वेटिम

आवत पचरेंद्रिलगे केहेवो पचेंद्रि श्रीयचजोनीकनो प्रश्न कीधो उत्तर हे मोक्ष धर्मनेवीषे रह्या न कहीये अधर्मस्थीत कहीए धर्माधर्मनेवीषे पण देसवीरतीना समाव थकी मनुष्य जीव जीम कह्या तीम केहेवा वाणव्यतर, ज्योतीषी, वेमानीक, बीम नारकी कह्या तीम केहेवा

ए लेखे देवताने भगवंते अधर्मस्थिति कह्या ने कर्तव्यरुप धर्म नथी सम्यक आश्रीत शुभजोग आश्री देवता धरमी कहीये अने रायपसेणी मध्ये पुस्तक वांचीने देवता उठया वीचारे " धम्मीयं ववसाइ गीन्हीजा " वस्तु ए पाठ उपर हिंस्याधरमी कहेछे जे, प्रतिमा पुजी ते धर्मवीवसाय मध्ये छे. ते उत्तर ए धर्मव्यवसाय ग्रह्यो कह्यु ते प्रतिमा पुजवा आश्रीत नथी कह्यु. ए धर्मव्यवसाय ग्रह्यो वीचार पछे जे जे वस्तु पुजी ते पोताना जीतआचारनी विध ते सर्वे धर्मव्यपसायमध्ये आवी तोरण, खडग, प्रमुख पुज्या ते धर्मव्यवसाय ग्रह्या केहे तथा पुस्तक वांच्या केहे पुजी ते वस्तु तो धर्मव्यवसायमध्ये गणसो तो पुस्तक पुजवो वांचवो ए स्यामां गणवो ? धर्मव्यवसाय कह्यो ते मध्ये तो श्री ठाणांग दसमे ठाणे दस प्रकारे धर्म कह्यो छे.

दसविहे धम्मे पन्नत्ते तंजहा गामधम्मे नगरधम्मे रठधम्मे पासंडधम्मे कुलधम्मे गणधम्मे सघधम्मे श्रुयधम्मे चरीत्तधम्मे अथिकायधम्मे ॥

अर्थ—द दस. प्रकारे ध. धर्म पं. कह्या तं ते कहे छे गा ग्राम ते कोकोर्नु स्थानक तेहनो धर्मआचार ते स्थिति ग्राम ग्राम प्रति जुजुइ अथवा गाम इंद्रिय ग्राम तेहनो. १ नं नगरधर्म ते नगराचार ते नगर प्रति जुजुइ २ र राष्ट्र धर्म ते देसाचार ३ पा पासंडधर्म ते पासंडीनो आचार ४ कु. कुलधर्म ते उग्रादीक कुलनो आचार. ५ ग गणधर्म ते गच्छधर्म गच्छाचार ६ स. सघधर्म ते चतुरविध सघ तेहनो धर्म ७ सु सुतधर्म ते आचारांगादीक द्वादसांगीनो धर्म दुरगति पडतां प्राणी प्राणीने धरे ते भणी धर्म ८ च. चारीत्रधर्म ते पांच प्राराहत ९ आ अस्तिकायधर्म ते धर्मास्तिकायादीकनो स्वभावधर्म.

एह वावी, हथीयार, प्रतिमा द्वारा, प्रमुख पुज्या, ते सर्व कुलधर्म रीत मध्ये ते माटे धम्मीयं ववसाय कह्यो. पण कांइ श्रुतधर्म अधारुप धरम नहीं ए चारीत्रनी करणीरुप पण धर्म नहीं चारीत्रे धर्म अनुष्ठान पालवा चीरठीरुप, ते तो देवताने छे नहीं, अने श्रुतधर्म तो अधारुप, छे, कर्तव्यरुप नहीं, अने श्रुतधर्ममध्ये

वळाव. २९. व. फयारा. कु विकस्या उ नीलोत्पल प. वीजा पद्रकमळ तेणे करी प मढीत अ सोहामणा जळना आश्रय छे अ अनेक १०. स पंखीना. ग. समुह तेहना मी. स्त्री, पुरुषना जोडलां तेणे करी, वी. व्याप्या छे तेणे मं. मांडवा. ११. वी. नाना मकारना म मवन घर १२. वो. वारण १३. चे प्रतिमा १४ वी वस्त्रादीकना विभूषादीक सहीत पु पुर्वभवे. क. कीर्धा त तप प्प. तेहना जे प्रभावे करी. सो. सोभागे. सं सहीत. न. नटवा. न नचावणहार. ज जल, म. मल. मु. मुठीक वे वेलवक. क कथक. प प्लवग. ला लासक. आ. आख्यासक. लं. लख म मख तु. तृणइछ तुं तुंबनी विणा ता ताळाचर. एटलानी. प करवां य वळी ब. घणा मु रुद्रांकर्म अ. एवी अनेरा, ए. ए आदी देइने रु रुपने वीखे म मनोज्ञ म. कल्याणकारी न वे रुपने वीखे म मनोज्ञ. म. कल्याणकारी न. ते रुपने वीखे स साधुये न. स संबंध न करवो १ न राग न धरवो न. गृद्ध थावुं नहीं १ न. मोह धरवो नहीं. ४.।न. व्याघात अंतराय न आ न करवो. ५ न लोभ न करवो. न. संतोष न पामवो न. हसवु नहीं. न समारवो म. वीचारवो. त. कु, न करे

ए पाठ मध्ये इम कह्यो, एटला पदार्थ जोवां नहीं पुर्वे जोया होवे ते समारवा पीण नहीं, ते मध्ये चैत्य त प्रतिमा अने देवकुळ ते देहरां ते पण भेळां कह्यां, तो प्रतिमाने वांदवा कीहां रही ? एटली वस्तु जोवां करम बंधनो कारण कह्यो, अने स्त्रीनी पुतळी दीठे राग उपजे ते तो सुत्रमां पाठ छे,पण प्रतिमा दीठे वैराग उपनो तथा उपजे एवो सुत्र पाठ देखाडो अने पुतळीनो आंठो लइ प्रतिमा ठेरावो ते तो ठरीरे नहीं, स्या माटे जे पुतळी दीठे रोग उपजे एतो अनकालनो चाल जीवनो छे मोहनी कर्मथानने राग उपजे ए उदय भाव छे, अने वैराग उपजवो ते तो अपुर्व वात छे. खयोपसम भाव होवे धर्मबुद्धि उपजे कांइ वस्तु दीठे वैराग उपजे ? एम करतां प्रत्येक बुधी थया तेहने बाह्य कारण देखी ज्ञान उपज्यो. संजम लीधो, ते माटे कांइ बाह्य कारणने वांचो नथी, भरथेश्वरे अरीसाभवने वांधो नहीं. करकडुये दखभने वांधो नहीं, दुमुह राजाये थमने वांधो नहीं, नमीराजाए चुडीने वांदी नहीं, नीगाइ राजाए आंवाने वांधो नहीं खयोपसम जोग वाह्य कारण देखी ज्ञान उपजे पीण बाह्य कारण वदनीक नहीं ते माटे प्रतिमा देखी कोइ बुझयो,ज्ञान पाम्यो, संजम लीधो, ते वात सुत्रमां बयांय कही नथी.

पूरिम सघाइ मणि मल्लाई बहु विहाणिय अहिय नयण मण सुहकाराइ वणखडे पव्वएय गामागर नगराणिय खुडीय पुक्‍रिणी वावी दीहीय गुजालिय सर सरपंतिय सागर बिलसिंतिय खाइय नदी सर तलाग वप्पिण फुल्लुप्पल पउम परिमंडियाभिरामे अणेग सउण गण मिहुण विचरिंते महव विविह भवण तोरण चेइय॰ विभूसिये पुव्व कय तव प्पभाव सोहंगा संपउत्त नड नट्टग जल मल्ल मुठिय वेलवग कहक पावक लासग आइक्ख लख मेख तुणइल्ल तुबवीणिय तालायर पगरणाणि य बहुणि सुकरणाणि अणेसुय एवमाइएसुय रूवेसु मणुन्नभद्दएसु नतेसु समणेण सजियव्वं नरजियव्व नगज्झियव्वं नमुज्झियव्व एविणिग्घाय मावजियव्वं नलुभियव्व नतुसियव्व नहासियव्वं नसइंच मइच तथ कुजा ॥

अर्थ—बी बीजी भावनानुं स्वरूप. च चक्षु इंद्रीये करी पा देखीने रु. रुप केहेवां छे रुप. म मनोज्ञ भ कल्पाणकारी स. सचीत अ अचीत. मी मीश्र से कया रुप क. पोठीयाने चीते रुप तथा काष्टना १ पो वस्त्रने बांसे रुप वस्त्रना रुप २. ची चीत्राम रुप ३. ले. माटीनो रुप ४ से पाखाणना रुप ५ दं दांतना रुप ६. पं पांच वर्णे करी अ अनेक सहीत सं संस्थाने आकारे ६ स. सहीत. ७ गं माळाने गुंथीने नीपाया ८ वे भींटी वलावत. ९ पु भरी नीपजाव्यो पीतळनी प्रतिमा. १० सं अनेक वर्ण भेळठे नीपजाव्या पंचवर्णि फुल माळावत ११. ६ प. म. भास्म च घणा प्रकारना अ अत्यंत न. नयनने म मनने सु सुखना उपजावणहारा रुप व वनखंड वनसंडाटपश. १२ प. पर्वत. १३ गा. गाम १४. आ. आगर. १५ न नगर. १५ १६. खु जळाशय १७. पु. कमळ सहीत चाटखी वाव. १८. पा चोखुणी वाव १९ दी लांबी वाव २० गु वांकी नीकी २१. स. सरोवर २२ मे एक सरोवरमांहीथी बीजे स रोवरे पाणी जाय एहवी पंक्ति २३ सा समुद्र. २४ बी घातु खाणमानी पद्यति. २५. खा खाइ. २६ न नदी. २७. स अणखण्या तळाव. २८, स खण्या

तळाव. २९. स. फयारा. कु विकस्या उ नीलोत्पलं प. वीजा पद करी प महीत अ सोहामणा जळना आश्रय छे अ अनेक १०. ग. समुह तेहना मी. स्त्री, पुरुषना जोडलां तेणे करी, वी. व्याप्या मांडवा. ११. वी नाना मकारना म मवन घर १२. तो. तारण मतिमा १४ वी वस्त्रादीकना विभूषादीक सहीत पु पुर्वभवे क. की प्प तेहना जे प्रभावे करी सो. सोभागे स सहीत. न. नटवा. न म जळ, म. मल. मु. मुठीक. वे वेलवक. क कथक प प्लवग आ. आख्यायक. लं. लख म मख तु. तुणइल्ल तुं तुंबनी विणा वा एटलानी. प करवा य थली घ. घणा सु रुडाकर्मे अ. एयी आदी देइने रु रुपने वीखे म मनोज्ञ म कल्याणकारी न ते रुपने मनोज्ञ. म कल्याणकारी न. ते रुपने वीखे स साधुये न स संबंध १ न राग न घरवो न. गृद्ध थाउं नहीं १ न मोह घरवो नहीं. ४. अतराय न आ न करवो. ५ न लोभ न करवो. न. संतोष न पामवे नहीं. न संभारवो म. वीचारवो त क्रु, न करे

ए पाठ मध्ये इम कह्यो, एटला पदार्थ जोवां नहीं पुर्वे जोया होवे पीण नहीं, ते मध्ये चैत्य त मतिमा अने देवकुल ते देहरां ते पण भेलां मतिमाने वांदवा कीहां रही ! एटली वस्तु जोतां करम बधनो कारण स्त्रीनी पुतळी दीठे राग उपजे ते तो सुत्रमां पाठ छे,पण मतिमा दीठे वै तथा उपजे एवो सुत्र पाठ देखाडो अने पुतळीनो ओठो लइ मतिमा ठे ठहीरे नहीं, स्या माटे जे पुतली दीठे रोग उपजे एतो अनकाळनो च छे मोहनी कर्मवाळाने राग उपजे ए उद्य माव छे, अने वैराग उप अपुर्व वात छे खयोपसम भाव होवे धर्मबुद्दि उपजे कांइ वस्तु दीठे वैरा एम करतां मत्येक बुधी थया तेहने बाह्य कारण देखी ज्ञान उपज्यो सं ते माटे कांइ बाह्य कारणने वांधो नथी, भरथेश्वरे अरीसाभवने वांधो कडुये वृखभने वांधो नहीं, दुमुह राजाये धमने वांधो नहीं, नमीराज वांधो नहीं, नीगाइ राजाए आंबाने वांधो नहीं खयोपसम जोग थाय क ज्ञान उपजे पीण बाह्य कारण वदनीक नहीं ते माटे मतिमा देखी कोइ पाम्यो, समज कीधो, ते वात सुत्रमां कयांय कही नथी

पूरिम सघाइ मणि मल्लाइं बहु विहाणिय अहिय नयण मण सुहकाराइ वणखडे पव्वएय गामागर नगराणिय खुडीय पुक्करिणी वावी दीहीय गुंजालिय सर सरपतिय सागर बिलसिंतिय खाइय नदी सर तलाग वप्पिण फुल्लुप्पल पउम परिमडिया भिरामे अणेग सउण गण मिहुण विचरिंते मढव विविह भवण तोरण चेइय• विभूसिये पुव्व कय तव प्पभाव सोहंगा संपउत्ते नह नट्टग जल्ल मल्ल मुठिय वेलवग कहक पावक लासग आइ ख लख मंख तुणइल्ल तुववीणिय तालायर पगरणाणि य बहुणि सुकरणाणि अणेसुय एवमाइएसुय रुवेसु मणुन्नभद्दएसु नतेसु समणेण सजियव्वं नरजियव्व नगझियव्वं नमुझियव्वं एविणिग्धाय मावजियव्व नलुभियव्वं नतुसियव्वं नहसियव्वं नसईंच मईंच तथ कुज्जा ॥

अर्थ—बी बीजी भावनानुं स्वरुप. च चक्षु इंद्रीये करी पा देखीने रु. रुप करेवा छे रुप. म मनोज्ञ भ कल्याणकारी स. सचीत अ अचीत. मी मीश्र ते कया रुप क. पेठीयाने बीसे रुप तथा काष्टना १ पो वस्त्रने बींसे रुप वस्त्रना रुप २. ची चीत्राम रुप ३. ले. माटीनो रुप ४ से पाखाणना रुप ५ दं दांतना रुप ६. प पांच वर्ण करी अ अनेक सहीत सं संस्ठाणे आकारे ६ सं. सहीत ७ गं माळाने गुंथीने नीपाया ८ वे बीटी वडावत ९ पु भरी नीपमाव्यो पीतळनी प्रतिमा. १० सं अनेक वर्ण भेळठे नीपमाव्या पंचवर्णि फुल माळावत ११ ६ प. म. माळा. व घणा प्रकारना अ अत्यंत न. नयनने म मनने सु सुखना उपजावणहारा रुप व. वनखंड वनखंडादवत्रा १२ प पर्वत. १३ गा गाम १४. आ. आगर १५ न नगर. १५ १६ खु जळाशय १७. पु. कमळ सहीत वाटली वाव. १८ वा. चोखुणी वाव १९ दी लांबी वाव २० गु वांकी नीकी २१. स सरोवर २२ मे पक सरोवरमांहीथी बीजे सरोवरे पाणी जाय पहवी पंक्ति- २३ सा समुद्र २४ बी धातु खणवानी पहयति- २५. खा खाइ. २६ न नदी. २७. स अणखण्या तळाव. २८, त खण्या

ध्मळसहीत २ वा वाटली कपळ सहीत ३. व. नेत्रादिकना वधारा ४ कु. कुवा ५. स अगन्नपा सरोवर ६. त न्नगा तळाव ७ घी. हतकनी घरती सगवी ८ वे वेदीका कोरही ९ मो नगरनी म्हाड १० य बजी आ वाडी ११. वि क्रीडाना यान्क तथा योवादीकना थानक १२ थु मृतकना पगझा १३. पा गढ १४ श सागणा १५ गो गोस्कल्वाट १६ अ गढ उपरा कोठा १७. च गढ नाग चरयो ८ हायनो मार्ग १८. से पाज १९ म.हदरवानो मार्ग तथा पगथीयां २०. पा. राजाना मंदीर २१ वी. परना मेद २२ म घोसाळा घर २३ घ. सामान्य घर २४ स तृणाना घर २५ ले पर्वत उपर घर २६ आ हाट २७ छोवाडया चे थव छूनो चे प्रतिमा २८ चे मीन्दरस्य प्रासाद देहरां. २९ ची चीत्रामण्नी सभा ३० प पर्व ३१ आ देसना थानक. ३२ व तापासादीकना थानक. ३३ मृ मृहरा ३४ ध टुद भागळ मांडवो ए पुर्वोक्त सर्व वस्तुने अर्थे. ३५ तथा बत्री मा. भानुना भाजन ३६ भ माटीना पात्र. ट. घरवलरा उमळ मुसलादीकने अर्थे ए ३ बोल्ने अर्थे ३८ तथा वि. एम बीजीव प्रकारने. य बची अ अनेक प्रकारने अर्थे पु पृथवीकायने ही हणे. म माटी कुवीना घणी.

ए पाटे मध्ये देहेरा, प्रतिमा, करावे ते पण मेला मंदबुद्धिया कथा जो समदीठी पण पटला मातीला केटलाएक काम करे छे त्यारपना हीचा पण ते आरभने अनुमोदना नथी धमाग्रेनु जाणे छे, तेणे करीने मदबुद्धिया नथी निर्मळ बुद्धि छे, अने धर्मने अर्थे तो समदृष्टी आरंभज नज करे जो आरमर्मा धर्म जाणे तो दम्गष्टीपणोज जाय तथा आरमर्मा धर्म जाणे तो साधुने आधाकरमी आहार कां न आपे ? मोल्ये (वेचाती) आणी पण नथी आपता ते माटे मदबुद्धि नथी, अने देहरां, प्रतिमा, तो पर्हेलां आणदादीक श्रावकेज कराव्यां नहीं, तो बीजा साने करावे

वळी ईच्याघरमी कहेच्ये, मन्दबुद्धियामां चेउ, देवकुल कया ते, तथा पांचमे आश्रवद्वारे देवताना मन्य परीग्रहमा ते कया छे ते तथा पांचमे संवरद्वारे चेउ, देवकुल, जोता नोम्लिया ते, ए प्रणे ठामे देहरां प्रतिमा, अन्यदेवना जाणवा पण जीनप्रतिमा ने देहेरां नहीं, स्यामाटे जे त्रण ठामे देवकुल कह्या छे, ते माटे अने जीनना देहेरांने तो सीद्धायतन कया छे ए बोलीमां फेर पडो छे ने उत्तराध्ययना अध्ययन बीजे नागघरे नमधरे, भुतघरे, वेसमणघरे, ए केवताना घर तेहने घर कह्यां छे तीम तुमदीना देर राने पण जोगघरेज कयो छे, सीद्धायतन नथी कयो, तीर्थंकरना देहेराने सीद्धा

२१, देहेरां, प्रतिमा करे मंदबुधीया दसीणदसना नारकी थाय

हींस्याधरमी कहे, देहेरा, प्रतिमा करावे, मरावे पुज्ये, बारमे देवलोके जाय ते बात सुत्र वीरुद्ध कहे छे भगवंते राजा श्रेणीकने कह्युं चार बोलमध्ये एक कार्य करे तो तुमे नरके न जाय, काळ कशोकरीक भैसा न मारे, कपीला साधुने दान देवे, पुणीयो श्रावक सामायक तुमने आपे, तु नोकारसी मात्र पचखाण करे, तो नारकी न जाय एम कथा मध्ये कहे छे, पीण देहेरां प्रतिमा कराव्ये प्रतिमा पुज्ये, देवलोकमध्ये जाय, नारकी टळे ए कीम न कह्युं ? एमतो कोणीक, कृष्णादीकने पण नारकी टाळवी सहीत हती, पण ए मध्ये लाभ दीठा नहीं.

हवे प्रस्नव्याकरण प्रथम आश्रवद्वारे कह्युं, एटले काजे प्रथवीनो आरंभ करतो मंदबुधी कहीये ने फळ कहे दसीणदसीनी नारकीए जाय ते पाठ.

इमेहिं विविहेहिं कारणेहिं किंते करिसण १ पोखरिणी २ वावि ३ वप्पिण ४ कुव ५ सर ६ तलाग ७ चिनि ८ वेति ९ खोइ १० आराम ११ विहार १२ थुम १३ पागार १४ दारं १५ गोपुर १६ अट्टालग १७ चरिय १८ सेतु १९ सकम्म २० पासाय २१ विकप्प २२ भवण २३ घर २४ सरण २५ लेण २६ आवण २७ चेइय २८ देवकुल २९ चित्तसभा ३० पव्वा ३१ आयतणा ३२ वसह ३३ भूमिघर ३४ मंडवाणयकए ३५ भायण ३६ भंडो ३७ वकरणस्स ३८ विविहस्सय अठाण पुढविं हिंसति मंदबुधिया

अर्थ—इ ए कहीसु ते घी नाना प्रकारने का कारणे करीने इंद्रोने हणे छे. की कोण ते कारणे कहे छे क. खेत्र खेडवाने अर्थे करसणादीक सर्व पदार्थ ४ बोल मध्ये आवे ते ए हळनो खेडणहारो १ खेत्र खेडावणहारो घणी २ हणाइ पृथ्व्यादीक त्रस जीव ३ भोमनादीकने अर्थे ४ ए मध्ये आर्य, अनार्य, जातीना सर्व आव्या एमसघळे ठामे ४ बोल वीचारवा करणहार १, करावणहार २ अनुमोदनार ३ मंदबुधीया ३ अर्थे करवा, कोइ बोल अर्थे कामे, कोइ धर्मि ४ ए प्रम अर्थना घणी मंदबुधीया [माठीबुधीनां धणी] कह्या अतरंग रळीयायत थाय पणु जे मर्हु जाणे छे ते माटे. एम सर्व ठामे ए ४ वीचार करवा १ पो थे खुणी

कमळसहीत २ वा वाटकी कमळ सहीत ३. व. खेमादिकना वपारा ४. कु कुवा ५ स अणखण्या सरोवर ६. त. खण्या तळाव ७ चौ. हतकनी धरती खणवी ८ वे वेदीका कोरडी ९. खो नरगनी खाइ १० य. वळी आ वाडी ११. वि क्रीडाना थानक तथा चोपादीकना थानक १२ थु. मृतकना पगळां १३. पा गढ १४. दा. धारणा १५ गो गोछकखाट १६ अ. गढ उपला कोठा १७. च गढ नगर चलयो ८ हाथनो मार्ग. १८. से.पाज १९ स.चतरवानो मार्ग तथा पगथीयां २०. पा. राजाना मदीर २१ बी. घरना भेद २२ म. घोसाळा घर २३-घ. सामान्य घर २४ स तणाना घर. २५ छे. पर्वत उपर घर २६ आ हाट. २७ छोधादया. चे श्रय हतो चे. प्रतिमा. २८ दे सीखरबध प्रासाद देहरां. २९ ची चीम्रामणनी सभा ३० प पर्व ३१ आ देवना थानक. ३२ व तापासादीकना थानक. ३३ मू. भूइरां ३४ म गृह आगळ मांडवो ए पुर्वोक्त सर्व वस्तुने अर्थे. ३५ तथा वळी भा. धातुना भाजन. ३६ मं माटीना पात्र. उ. घरवखरा उखळ मुसळादीकने अर्थे ए ३ चोळने अर्थे ३८ तथा वि. एम वीवीध प्रकारने. य. वळी अ. अनेक प्रकारने अर्थे. पु पृथवीकायने ही. हणे मं माठी बुधीना धणी.

ए पाठे मध्ये देहेरा, प्रतिमा, करावे ते पण मेला मदबुद्धिया कह्या जो सम दीठी पण एटला माहीला केटलाएक काम करे छे स्वारथना लीधा पण ते आरभने अनुमोदता नथी. ससारहेतु जाणे छे, तेणे करीने मदबुद्धिया नथी. निर्मळ बुद्धि छे, अने धर्मने अरथे तो समदृष्टी आरभज नज करे. जो आरभमां धर्म जाणे तो समद्रष्टीपणोज जाय तथा आरभमां धर्म जाणे तो साधुने आधाकरमी आहार कां न आपे ? मोल्ये (वेचाती) आणी पण नथी आपता ते माटे मदबुद्धि नथी, अने देहेरां, प्रतिमा, तो पहीलां आणदादीक श्रावकेज कराव्यां नहीं, तो बीजा साने करावे.

वळी ईस्याधरमी कहेस्ये, मदबुद्धियामां चेइ, देवकुळ कह्या ते, तथा पांचमे आश्रवद्वारे देवताना चैत्य परीग्रहमध्ये कह्या छे ते तथा पांचमे सवरद्वारे चेइ,देवकुल, जोवा नीषेध्या ते, ए प्रणे ठामे देहरां प्रतिमा, अन्यदेवना जाणवा पण जीनप्रतिमा ने देहेरां नहीं, स्यामाटे जे प्रण ठामे देवकुल कह्यां छे, ते माटे अने जीनना देहेरांने तो सीद्धायतन कह्या छे ए बोलीमां फेर घणो छे ते उत्तराध्याता अध्ययन बीजे नागघरे जखघरे, भुतघरे, वेसमणघरे, ए देवताना घर तेहने घर कह्यां छे तीम द्रुपदीना देह रांने पण जीणघरेज कह्यो छे, सीद्धायतन नथी कह्यो, तीर्थंकरना देहेराने सीद्धा

यतन कहेस्यो ते नहीं त्यारे सीद्धायतन, देवकुल, देवालय ए सर्व रहीवानाम पर कहीए इहां देवकुल अने सीद्धायतननो चोज करे ते मुर्ख, पण परमार्थ एकज छे. जीनना देहेरां ते सीद्धायतन अने अन्यदेवना देहरां ते देवकुल कहीस्यो, तो द्रुपदीने अधीकारे जीनघरहीज कह्योछे, सीद्धायतन नथी कह्यों, ए लेखे द्रुपदीये प्रति मा पुजी ते अन्यदेवनी ठरसे, ते वीचारी जोजो

---

२४. साधु प्रतिमानी वयावच करे कहे छे तेनो उत्तर.

हींसाधरमी कहे छे ते प्रस्नव्याकरण त्रीजा संवरद्वारमां कह्युं जे, साधु प्रतिमानो वयावच करे ए वात सुत्र विरुद्ध करे छे. त्रीजा संवरद्वारनो पाठ

अहे केरीसए पुणाइ आराहए वय मीण जे से उवही भत्त पाण संगहणदाण कुशले अच्चंतबाल १ दुव्ल २ गालान ३ वुढ ४ खमगे ५ पवत्ति ६ आयरिय ७ उवझाय ८ सेहे ९ सा- हम्मीए १० तवस्सी ११ कुल १२ गण १३ संघ १४ चेइयठेय निजरठी वेयावच्च अणिसियं दसविह बहुविहं करेति

अर्थ—अ हवे प्रस्नः अदत्त न लागे अने व्रत आराधे ते करेछे? के. केहवो साधु पु वळी अर्थकारे. आ. आराधे व व्रत. इ ए मीणाने जे जे से. ते साधु उ वस्त्रादीक. भ भात अने पा पाणी देवाने परने स. निर्दोषी लेवाने. दा गुर्वादीकने देवाने विषे. कु डाह्यो ते आराधे अ. आठ वरस उपरांत बाळ १ रोगे दुबळो २ गा देखलीण पड्या ३ वु गरडा ४. ख मासखमणादीकनो कारक ५ सीखने प्रवरतावे ६ आ गणाधी ७. उ उपाध्याय सुत्रपाठी ८ से नवदीक्षित ९ सा एकसरखी समाचारी साधर्मि १० त घोय छठीओ ११ कु सघाडो १२ ग गणो संघाडो १३. स. सघ समुदाय ने चार तीर्थ सर्व साधुनो १४ चे. ज्ञानमो अर्थि साधु नी. निर्जरानो अर्थि साधु वे वेयावचने करे अ. नेआ रहित होय सीम द दश प्रकारे आचार्यादी सर्वपनी व, असन, पाणी भाव ओपधरुप वेयावच क करे

ए पाठ मध्ये तो इम कह्युं जे, केवो साधु मीणो व्रत आराधे ते करेछे? प्रति उत्तर ग्रहस्थना घरथकी उपध्य, भात, पाणी ए त्रण वस्तु आणीने बाळ दुर्बळा

दीक चउद जातना साधुने आपे, ते साधु श्रीमावतने आराधे ए दस प्रकारनी वया वंच स्याने काजे करे ? " चेइयठे " [ज्ञानने अर्थे;] " निजरठे " [निर्जराने अरथे.] ए बे जातना कुळने अरथे चउदने दस्नी वयावच करे ए शुद्ध अरथ जाणवो दसवीह कही ते ठाणांग दस्मे ठाणे ते पाठ.

दस विहे वेयावचे पनंते तजहा आयरिय वे० १ उवझाय वे० २ थेर वे० ३ तपसीय वे० ४ गीलान वे० ५ सेह० ६ साहम्मी वे० ७ कुलवे० ८ गण वे० ९ सघ वे० १०

अर्थ.—द. दस वि प्रकारे वे. वेयावच ते. प. कह्यो छे. त ते कहे छे. आ आचार्यनो वेयावच आहारादीके करे १. उ उपाध्यायनो वेयावच भात पाणी आपे २ थे. थीवरनो ३ त तपसीनो ४ गी. मंदवाडीयानो ५ से. नवा शीष्य नो ६ सा साधर्मिकनो ७. कु. कुळ ते एक गुरुनो परिवार. एक गण ते घणा गुणनो तथा सघाडाना सर्व साधुनो ८. ग गण, गच्छनो ९. सं, चतुरविध स घनो १०. ए दसनो वयावच करे.

इहां प्रतिमानी वेयावच करवानो नाम नथी वळी भगवती सतक बारमे उदेसे वीमे एहीज दस भेदे वेयावच कही, तीहां प्रतिमानो नाम पण नथी वळी उववाइ सुत्रे दस प्रकारनी एहीज वेयावच कही, पण प्रतिमानी वेयावचनुं ठामठीम नथी. वळी व्यवहार सुत्रमां दस प्रकारनी वयावच कही ते पण एहीज दस भेद तीहां पण प्रतिमानी वेयावचनु नाम नथी सुत्रमां प्रतिमानो नाम नथी, तो प्रश्नव्याकरणमां प्रतिमानी वेयावच कीहांथी आवी ? अने बहुवीह शब्द कह्या, ते एटला माटे जे चार सुत्रे दस दस भेद वेयावच कही अने इहां चउद भेद कह्या ते माटे बहुवीह कही तथा सीहे अणगारे रेवतीना घरयकी बीजोरापाक आणी आप्यो, श्री भगवंतने तथा गणी गणावछेदकनी व्यवहारसुत्रमां वेयावच कही ते आचार्य शब्दयकी जुदा शब्द छे, ते माटे चउद नाममां ए नाम न आव्यां तीवारे बहुवीह कह्यो तेमां सर्वे आव्या. हवे चउदनी वेयावच स्यायकी करे ते पुर्वे त्रण बोल कह्या छे जे सेठवहीं भत्त पाण सुगहणदाण कुसले ओपध्य, भात, पाणीयकी चउदनी वेयावच करे ते हवे जुओ के ए उपध्य, भात, पाणी प्रतिमाने स्ये कामे आवे ? अने खावी नथी, पाणी पीवी नथी उपध्य ओढती, पेहेरती, बीछावती नथी. इहां प्रतिमानी सी वयावच करे ते वीचारी जोजो.

२९ नदीसूत्रमां सर्व सुत्रनो नोंध तथा प्रकरणना वीरुद्ध

ढुंसाधरमी कहे छे तुमे तो सुत्र थोडां मानोछो जे मध्ये प्रतिमा प्रतापवी, मराववी, पुजवी, प्रतीष्टवी, संघ काढवो वीगेरे एहवां कार्य कीधे लाभ थाय ते अधीकारना ग्रंथ छे ते तुमे नथी मानता, प्रतिमाना अधीकार माटे, एम कहे छे ते उत्तर. जंघाचारण, वीद्याचारण १ सुरीयाभ २, वीजे पोळीयो ३, द्रुपदी ४ चेयनी वेयावच करे ५, चोभीस अतीस ६, आणंद ७, अंबड ८, चमरेंद्र ९ कयवळीकम्या १०. एटले ठामे तमे प्रतिमा ठरावोछो, ते सुत्र भगवती, राइपसेणी, जीवाभीगम, ज्ञाता, प्रश्नव्याकरण, समवायंग, उपासगदशा, उववाइ, ए सुत्र तो अमे मानीए छीए. प्रतिमानी थीके मुक्या तो नथी ए वात तमे खोटी कही जे प्रतिमा माटे सुत्र थोडां माने छे. पण एम छे जे नदी सुत्रमां जे जे सीद्धांतना नाम कह्या ते कहे छे तेमां प्रथम उत्कालीक सुत्रना २९ नाम. दसवीकालीक, कप्पाकप्पीय, चुल्लकप्पसुयं, महाकप्पसुय उववाइ, रायपसेणी, जीवाभीगम, पन्नवणा, महापन्नवणा, पमायपमाय, नदी, अनुजोगद्वार, देवेंदस्तव, तंदुलवेयाळीया, चंद्रविजय, सुरपन्नति पोरसीमंडल, मंडलप्रवेस, विद्याचारणविणीछीय, गणीवीज्जा, झाणविभत्ति, मरणविभत्ती, आयविसाही, वैरागसुय, सलेखण, व्यवहारकप्प, चरणविही, आउरपच्चखाण, महापचखाण, हवे कालीक सुत्रना ३१ नाम. उत्राध्ययन. दसासुतस्कंध, ब्रहत्कप्प, व्यवहार, निसीथ, माहानिसीथ, रुसीभासीत, जंबुद्वीपपन्नती, द्वीपसागरपन्नती, चंदपन्नती, खुडीयाविमाणपविभत्ति, महल्लीयाविमाणपविभत्ति, अगचुलीया, वगचुळीया, विवाहचुळीया, अरुणोववाइ, वरुणोववाइ, गुरुळोववाइ, धरणोववाइ, वेसमणोववाइ, वेलंधरोववाइ, देवींदोववाइ, उठाणसुय, समुठाणसुय, नागपरीयावणाया, निरयावळीया, कप्पीया, कप्पवेडसइया, पुप्फीया, पुप्फचुळीया, वन्हीदसा एव साठ. एक आवस्यक एकसठ ने बारे अंग एव बोहोंतेर तेथी बोहोंतर सुत्रना नाम नदीसुत्रमां कह्या छे ते मांहेथी घीछेद गया ते तो गया हमणाने समये सुत्र बत्रीस छे; ते तो अमे मानीए छीए ते उपरांत ढुंसाधरमी आज पीसताळीस आगम माने छे, ते बत्रीसथकी तेर अधीकां माने छे. ते मध्ये देवेंदथुओ, तंदुलेवेयाळीया, गणीवीजा, मरणविभत्ति, आउरपचखाण, माहानीसीथ, माहापचखाण, चंद्रवीज ए आठना नाम तो नदीसुत्रमां छे पण ए ग्रंथ मुळगां नथी ते केम जो मुळगा होवे तो आचार्यना कीधा कीम कहेवाय ? आचार्यना जोडया छे ते माटे एछे ओळखाणा जाणजो तीम द्वादसांगी भगवत गणधरनी

करी थकी छे, तेमां कोइ आचार्ये कर्या, एनुं नाम कोइ सीद्धांतमां नथी ते माटे ए आठ ग्रंथना नाम तो मुळगा रह्यां, पण ग्रंथ आचार्ये जोडया छे तीम महानसीथ नाम तो आगलो छे, पण आठे आचार्ये मळीने बांध्यो छे, सेस सुत्र वेर मांहीला रह्या ते कोण? तेना नाम. कचउसरणपइनो भत्तपइनो, सथारपइनो, जीतकल्प, पींडानिर्युक्ति.

ए पांच नाम तो मुदल कोइ सुत्रमां साखमात्र पण नथी, तो तेहने सुत्र जाणीने कीम प्रमाण कीजे ए पीसतालीस. वळी माहासुठीणभावना, चारणभावना तेयनासगण, आसीविसभावना, दीठीवीसभावना. ए पांच सुत्रना नाम व्यवहारसुत्रमां छे. ए ५ अने ७२ पुर्वला मळी ७१ थयां वळी ठाणांग दसमे ठाणे दस सुत्रना नाम कह्यां ते कर्मविपाकदशा ते तो विपाकसुत्र, उपासगदशा ते उपासगअंगमां आव्युं, अंतगडदसा ते आठमो अंगज, अणुत्तरोववाइदसा ते नवमो अंग, प्रश्नव्याकरणदशा दशमो अंग, आयरदसी ते दसासुतखंध १ खधदसा. २ दोगधीद्दसा. ३ दीर्घदसा ४ सखेवीयदसा ए चारना नाम तथा ग्रंथ अप्रसीद्ध छे. एम ब्यासी नामनो सुत्रमां नाम साख पामीए छीए सर्वाळे चोरासी कहे छे, पण त्रेवीस नाम तो लाभतां नथी ते मांहीयी जे पुर्वला गणधरकृत होवे तेटलानो प्रमाण छे तेसना कीधां ते एकांत सुद्ध नहीं. सुद्धासुद्ध मीश्र होवे ते सीद्धांत सरखा करी कीम मनाये? तीवारे हींसाधरमी कहे जे जो केटला आचार्यना कर्यां ग्रंथने सीद्धांत करी न मानो तो दसविकालीकसुत्र सीयभवआचार्यनी कीधी कीम मानो छो शुभ गणोछो सीयभव गणहरा जीणपडीमा दसणेण पडीबुधा ए पांचमे आरे थयो छे. ते उत्तरः दसविकालीक तो भगवत थकानी छे. नदीसुत्रमां साख छे जो पांचमे आरे थइ होवे, तो नदीसुत्र चोथा आरानो तेमां नाम पडीलांथी कीम घलाय?

वळी हींसाधरमी कहे छे जे, पन्नवणा तो पाट २१ मे सामाचार्य थया तेणे करी छे, ते पण जुठो कहे छे. जो त्रेवीशमे पाटे थइ होवे तो भगवती भगवतने गौतमनी करी तेमां पन्नवणाना छत्रीस पदनी भळामण कीम कीधी जो पछे थइ छे तो नदीसुत्रमां चोथेआरे नाम कीम नोंधाणो? सामाचार्ये विसमृत अधीकार काढीने लघुरुप कीधी छे पण नवो आलजुल कांइ घाल्यो नथी ते माटे पन्नवणा तो पुर्वला छे तथा हींस्याधरमी कहे छे नदीसुत्र देववाचकनो कर्यो छे ए पण खोटो कहे छे नदीसुत्र गणधरकृत छे नंदीमध्येज नदीनो नाम छे, नदीसुत्रने घुरे पचास गाथा छे, पांचमां आगला आचार्यना नामनी ए गाथा देववाचक कृत छे

पण नंदीसुत्र तो पुर्वलो छे तथा लघुसुत्र नीसीथ विसाखागणीनी कीधी कहे छे, ते पण असत्य कहे छे नंदी सुत्रे नाम नसीथनो छे इम पुर्वाचार्यना मान वधारे छे, जे सुत्र आचार्ये कर्यो छे ते मृखा कहे छे

वळी जीतकल्पग्रंथने छेदसुत्र कहे छे, तेनु नाम नंदीसुत्रमां सास्त्र मात्र पण नथी तेमां पोताना मत दृढ करवाने एहवा पाठ जोडया छे, ते कहे छे

से भयव तहारुव समण वा माहाण वा चेइ घरेगछेजा हंता गोयमा दिने२ गछेजा से भयव जठ दिने न गछेजा तउ पायछित हवेजा भयव किं पायछित्त हवेजा गोयमा पमाय प डुच्च तहारुव समण वा माहाण वा सो जिणघरं न गछेजा अ हवा दुवाल समं पायछित उवदंसेजा से भयवं समणो वासग स्स पोसहसालाए पोसहिए पोसह बभयारी किं जणहरर गछेजा हता गोयमा गछेजा से भयवं केणठेण गछेजा गोयमा नाण दसण ठयाये गछेजा जे केइ पोसहसालाए पोसह बभयारी जो जिणहरे न गछेजा तो पायछित हवेजा गोयमा जहा साहु तहा भाणियवं छठे अहवा दवाल समं पायछितं उवदसेजा ॥

एहवा कल्पीत पाठ जोडया छे, श्रावक प्रमादे श्री भगवंत तथा साधुने वांदी न सकयो तो तेहनो पश्चाताप करे, पीण प्रायच्छीत तो कोइ सुत्रमां कह्यो नथी. तथा ब्रहत्कल्प, व्यवहार, निसीथ, आचारंगमां साधुना आचार बताव्या तथा प्रायच्छीतनी वीधीयु वरणवी तीर्हां देहेरे न गयानो तो प्रायच्छीत कोइ सुत्रे कह्यो नथी, तो जीतकल्प प्रकरण जोडीने तेमां घाल्यो तथा प्रायच्छीत लघुमास, गुरुमास, लघुचौमासी, गुरु चौमासी, लघुछमासी, गुरुछमासी एहवे नामे प्रायच्छीतनी संज्ञा बांधी छे, पण उपाडो उपवास, छठ, अठम, आंबील, एकासणा, चोखो, पचोलो कह्यो नथी, पण सुत्रशीलीना अजाण, मीथ्यादष्टी नवा पाठ जोडे; पण डघडयाचगर न रहे तथा अभव्यकुलक ग्रंथ प्रमुख मध्ये हरीभद्रसुरी हता जेने चउदसें चमालीस मोघमतिने मंत्रने जोगे होम्या एहवा दयाचत माहामतना भणी। तेहनो कीधो छे ते कहे छे.

जेइ अभव्य जिवेद्दी ॥ न फासीया एवमाइया ॥ भावाइं दतंमणुत्तरसुर ॥ सिलाय नर नार दतच ॥ १ ॥ केवली गणहर इथे ॥ पव्वजातिथवछरंदाणं ॥ पवयण सूरी सुरत्त ॥ लोगतिय देव सामित्त ॥ २ ॥ तयातिसग सुरत ॥ परमहिम्मिय जुगल मणुयत्तं ॥ सभिन्नसोति तह ॥ पुव्वधराहार पुलायत्त ॥ ३ ॥ मइनाणाइं सलद्धी ॥ सुपत्त दांण समाहि मरणच ॥ चारण दुगमधुसिप्पिय ॥ खीरासवारखीण ठाणतं ॥ ४ ॥ तिथयर तिथ पडीमा ॥ तणुपरी भोगाइ कारणे ॥ विपुणो पुढवाईय भावंमिय ॥ अभव जीवेद्दीं नहुपत्त ॥ ५ ॥ चउदस रयणत्तपी ॥ नपत्त पुणोवि विमाण सामंत्तं ॥ समत्त नाण सयम ॥ तवाइ भावन भाव दुग्गे ॥ ६ ॥ अणुभवजूत्ता भत्ति ॥ जिणाण साहम्मियाण वाछल ॥ नयसाहेति अभावो ॥ सवेग तंनसुपख ॥ ७ ॥ जिण जणणी जाया ॥ जिणजखादीवगा जूम्मप्पहाणा ॥ आयरीय पयाइं दसग ॥ परमथ गुण दमपत्तं ॥ ८ ॥ अणुवध १ हेतु २ सरुवा३॥ तथ अहिंसा तिहा जिणु दिठा ॥ दव्वेणय भावेणय ॥ दुहावीं ते सिंन सपत्ता ॥ ९ ॥ इति अभव्यकुलक ॥

एमां कह्युं जे अभव्य जीव एटलावाना न पामे, तेमा उपसम न खायकभाव समथी सो वस्तु न पामे, ने उदयभावाशुभ वस्तु तो पामे नारदपणो, परमाधामी, जुगलीयो, तीर्थंकरनी प्रतिमाना भोगमां आवे पृथ्वी, पाणी वनस्पती तेमां चउद रतनमां वीमानना धणीमां, सासन देवी, चोवीस जक्ष, चोवीस जक्षणी, अभव्य जीव एटला वाना न पामे कह्यु अने सीद्धांतमां तो ए सर्व वस्तुमां भव्य, अभव्य उपनम पुवा असई अदुवा अणतखुत्तो कहेतां उपना छे अतीतकाळे वारवार निश्चे अनंती अनंती वार. तो जे मुळसीद्धांतथकी न मळे एवा भवणे जोडया तेह ग्रयने सीद्धांत करी केम मनाये ? वळी हींसापर्मि कहेछे

सुत्तगणहररइयतहेव । पत्तेय वुद्धि रइयच ॥ सुय केवलणा रइय । अभिन्नदस पुविणारय

पण नंदीसूत्र तो पुर्वलो छे तथा लघुसुत्र नीसीथ विसालागणीनी कीधी कहे छे, ते पण असत्य कहे छे नंदी सुत्रे नाम नसीथनो छे इम पुर्वाचार्यना नाम चाले छे, जे सुत्र आचार्ये कर्यो छे ते मृखा कहे छे

वळी जीतकल्पग्रथने छेदसुत्र कहे छे, तेनु नाम नंदीसुत्रमां सास नाम पण नथी तेमां पोताना मत दृढ करवाने एहवा पाठ जोडया छे, ते कहे छे

से भयव तहारुव समण वा माहाण वा चेइ घरेगछेजा हता गोयमा दिने२ गछेजा से भयव जठ दिने न गछेजा तउ पायछित हवेजा भयव किं पायछित्त हवेजा गोयमा पमाय प- डुच्च तहारुव समण वा माहाण वा सो जिणघरं न गछेजा अ हवा दुवाल सम पायछित उवदसेजा से भयव समणो वासग स्स पोसहसालाए पोसहिए पोसह वभयारी किं जणहरर गछेजा हता गोयमा गछेजा से भयव केणठेण गछेजा गोयमा नाण दसण ठयाये गछेजा जे केइ पोसहसालाए पोसह बंभयारी जो जिणहरे न गछेजा तो पायछितं हवेजा गोयमा जहा साहु तहा भाणियव छठे अहवा दवाल समं पायछितं उवदसेजा ॥

एहवा कल्पीत पाठ जोडया छे, श्रावक प्रमादे श्री भगवंत तथा साधुने वांदी न सकयो तो तेहनो पश्चाताप करे, पणि प्रायच्छीत तो कोइ सुत्रमां कह्यो नथी. तथा व्रुविकल्प, व्यवहार, निसीथ, आचारंगमां साधुना आचार बताव्या तथा प्रायच्छीतनी रीधीयुं वरणवी तीहां देहेरे न गयानो तो प्रायच्छीत कोइ सुत्रे कह्यो नथी, तो जीतकल्प प्रकरण जोडीने तेमां घाल्यो तथा प्रायच्छीत लघुमास, गुरु- मास, लघुचौमासी, गुरु चौमासी, लघुछमासी, गुरुछमासी एहवे नामे प्रायच्छी तनी संज्ञा बांधी छे, पण उपाडो उपवास, छठ, अठम, आंबील, एकासणा, चोथ्थे, पचोले कह्यो नथी, पण सुत्रसीलीमा अजाण, मीथ्यादृष्टी नवा पाठ जोडे; पण उघडयावगर न रहे तथा सम्यकुलक ग्रंथ मरुपक मध्ये हरीभद्रसुरी हवा जेणे चउदसें चमाळीस बोधमतिने भन्नने जोगे होय्या एहवा दयाधव माहात्मना धणी ! तेहनो कीधो छे ते कहे छे.

६. वळी गौतमस्वामीए अन्यतिर्थिनो प्रसंसा तथा परीचय करवाना समदृष्टीने तो पचखाण कराव्यां हतां अने पोते खधकने साहमा गया आववानो अनुमोद्यो. ए छद्मस्थपणानी भुल.

७ भगवती सतक पचीसमे पुर्वधर कषाय, कुसील तथा नीर्यंठायकी पडवाइ थाय ए छद्मस्थपणानी भुल

८ वळी पुर्वधरने पण भाषा चारना जोग कह्या ते असत्य ने मीश्र भाषा बोलाय छे ते छद्मस्थपणानी भुल.

९. पुर्वधर आहारक शरीर करे सका उपजे थके, ते भगवती सतक सोळमे उदेसे आहारक शरीरने अधीकरण कह्यो छे तथा पन्नवणा पद छत्रीसमें आहारक समुदघात करतां पांच क्रीया लागे ते आहारकलब्धी फोरवे ते छद्मस्थपणानी भुल.

१० पुर्वधर आहारकशरीरी अनता नीगोदमां पामीये, असलपाता नारकीमां पामीए ए छद्मस्थपणानी भुल.

११ सिंहाचरे पुर्वधरे गोसाळाने अंगीकार कीधो शीष्य थइने रह्या ए छद्मस्थपणानी भुल

१२ वळी दसविकालीक आठमे अध्ययने गाथा ५० मीमां कह्यु जे.

आयारं पन्नति धर ॥ दिठिवाय महिजग्गा ॥
वइ विखलिय नच्चा ॥ न त उवहसे मुणी ॥

अर्थ —आ. आचारंगना भणनार प विवाह पर्नति ष धरणहार दी. दृष्टिवादना आ भणनार साधु व. वचन. करी वी. खलणाने न. जाणीने त ते साधुने न उ. हसे नहीं मु. साधु

आचारंग भगवतीनो जाण, दृष्टी वादनो जाण, वचन बोलतां भुले तो तेहनो हास्य न करवो. एटले भुलपणे तो छे ए छद्मस्थपणानी भुल ए साम्य शुभयकी ते माटे पुर्वधरनो वचन, ग्रंथ, सर्वज्ञ समीपे गणधरना कह्या सरखो न मनाय अने पुर्वधरने कह्यो अभीणा जीणसकासा जीणाइवभहीत वागरेमाणा एहवा कह्या ते सत्य, पण जे जाण्या पदार्थ छे केवळी भाखीत अने पुरा धार्या छे उपगेग सहीत बोलतां मीन सरखाज कहीये वळी हींस्याधरमीने कहीए जे भगवंत निर्वाण पछी एक हजार वरश लगे पुरवानो ज्ञान रह्यो, पछी वीछेद गयो, सीळगाचार्य, अभय देवसुरी, मल्यागीरीसुरी, हरीभद्रसुरी एओ टीकाना करणहार थया पुर्वधारी हता?

गणधर, प्रत्येकबुद्धी, चउद, ११, १२, ११, १० पुर्वि, ए सात्तने कर्यो ते वचन सुत्र कहीये. ए वात तो ठीक छे ते माटे पुर्वाचार्य पुर्वधर हता तेहना कोन्बे ग्रंथ प्रमाण जाणवा, तेनो उत्तर: हींसाधरमी पुर्वधारी आचार्यनो तो ओठे कीधछे अने पछी तो विना पुर्वधारीना कीधा ग्रंथने पण सुत्र करी प्रमाण माने छे ते कीम कर्मग्रंथ, दीवार्थोनत्व, सेत्रंभा माहातम, संदेहदोलावळी, संघाचार, वीवेक विलास, प्रत्येसरवृत्ति, जोग शास्त्र. कल्पकीरणा, इत्यादीक ग्रंथ वीनापुर्वधारीना कीधां पण मानेछे अने पुर्वधारीना कीधां ग्रंथ प्रमाण ए वात सत्य छे, पण केवळीनी नेश्रा करी कीधां होवे उपयोग सहीतपणे मुळसुत्रथकी वीखवाद न पडे ते प्रमाण छे सीद्धांत गणधरना कीधां छे भगवतनी नीश्रायथकी थया, ते मांही संदेह नहीं अने टीकामां ठाम ठाम संदेह पडया त्यां तत्वतु केवळी गम्य कयु, ते इम जाणजो जे टीका नवी जोडी छे भगवंतने सन्मुख नथी जोडाणी. अनेरा पुर्वधरना वचन पण सका सहीत होवे, सत्यासत्य बहु होवे छद्मस्थपणा माटे छद्मस्थ पुर्वधर आगम व्यवहारी पण भापा चुके छे ते साख सुत्रथकी कहे छे.

१. श्री तीर्थंकरदेव छद्मस्थ होवे त्यां लगे सुत्र परुपे नहीं. केवळपाम्या केडे परुपे छद्मस्थपणामां तीर्थंकरने पण जोग ९ होवे—चार मनना, चार वचनना, ने उदारीक ते माटे असत्यना भयथकी सुत्र परुपे नहीं.

२ श्री नेमनाथस्वामीये श्री कृष्ण आगळे सोमल ब्राह्मणनो नाम न कह्यो, जे कृष्णने द्वेष उपजे ते माटे एहवो केवळीनो मार्ग जाणो छे अने धर्मगोस आचार्य पुर्वधारी हतो; तेणे नागेसरीने हेळावी, नंदावी, दुखी करी, ए छद्मस्थपणानी भूल

३. सुमंगला साधु अवधनाणी आगम व्यवहारी ते चार घोडा, रथ, सारथी ने वीमळवाहन राजा ए छने बाळशे, अने भगवंतना मुख आगळे गोसाळे बे साधु बाळ्या, पण भगवंते मनोमात्र द्वेष न कर्यो ए सुमंगळा अणगारने छद्मस्थपणानी भुल कोइ कहेसे सुमंगळासाधुने प्रायच्छीत कीम न कह्यो ते उत्तर प्रायच्छीत तो पर्वता मुनीने पण नथी कह्यो पण ए ठाम प्रायच्छीततु स्थे के अनुमोदवाजुं ते वीचारो

४. केसी कुमार चउनाणी, चउदपुर्वि तेणे प्रदेसीराजाने जड, मुर्ख, तुच्छ कह्यो, कठीन भापा बोल्या ए छद्मस्थपणानी भुल.

५. गोतमस्वामी मृगालोढीयाने देखवा गया, ए छद्मस्थपणानो उपयोगमात्र ते छद्मस्थपणानी भुल

३. समवायगसुत्रमध्ये रुखभदेव, भरथ, बाहुबळ, ब्राम्मीसुंदरी, ए पांचनो सरखो आउखो चोरासी लाख पुरवनो सुत्रपाठे कह्यो. अने आवश्यकनिर्युक्तिमध्ये कहेछे. रुखभदेव पोते नवाणु पुत्र भरथ वीना अने भरथना आठ पुत्र एवं एकसो आठ उत्कृष्टी अवगाहनाना धणी एक समये सीद्धा ते गाथा आवसकनिर्युक्तिनी नीचे मुजब

उसभो सवस्स सुया । भरहेण विवजियानव
नउ । भरहस्स वसुयासिद्धा । एगमिसमयंसे

हवे रुखभदेव ने बाहुबळ सरखा आउखाना साथे केम सीद्धा ए वीरुद्ध,

४ मल्लीनाथस्वामीने चारीत्र अने केवळकल्याण ज्ञाता सुत्र आठमे अध्ययने पोश शुद अगीयारसने दीने कह्यो अने आवस्यकनिर्युक्ति मध्ये मागशर शुद अगीयारश दीने कहे ए सुत्रविरुद्ध

५. आवस्यकनिर्युक्तिमां कह्युं साधु पचक्रमांही काळ करे तो पांच पुतळां डाभना करी भेळां बाळवां अने आम ग्रहस्थ भळा होवे ते पण डाभाना नथी करता नथी बाळतां ब्रुतिकल्पसुत्रमां तो एम कह्युं जे, साधु काळ करे त्यारे वांसनी झोळी करी साधु वनमां परठी आवे,

दुन्निपदविढपते ॥ दभमया पूतला कायव्व ॥
समखितमअड्ढको ॥ अवढ आभिन्न कायव्वो ॥

ए आवस्यकानिर्युक्ति पारी ढाषणीपा समीसनी कह्युं पुतळां करवां ए सुत्र विरुद्ध ए वचन पुर्वधरनां न होय.

६ भगवतीमां कह्युं एक पुरुषने उत्कृष्टा पुत्र होवे तो पृथक लाख होवे, पण आधिका न होवे. प्रकरणमां भरथने सवा क्रोड पुत्र कह्या ए वीरुद्ध

७ गोसाळो भगवतनो अपराधी बे साधुनो मारणहारो पण भगवते मार्यो तो नहीं पण मारवानी आज्ञा पण न कीधी अने पुळाकलीयगनी टीका तथा स घाचारनी टीका मध्ये कह्यु जे,

सघाइराणकज्जे ॥ चुनीजा चक्कवट्टी सेन ॥
पीक्कवितमुणीमहप्पा ॥ पुतायलद्धीसपन्नो ॥

चक्रवर्तिनीसेन्याचुरणी, विष्नुकुमारनी परे धर्म अपराधीने मारवो ते विरुद्ध

पटलाने पुर्वनो ज्ञान तो न हतो अने तेहना जोडया वृत्ति प्रमुख अनेक ग्रंथ छे. ते सीद्धांत बरोबर कीम होवे ! टीका तो सुत्रना शब्दनो अर्थ छे पण कीहांई सुत्रनो शब्द न होवे तीहां आव्जुल मतकल्पनानो धास्यो होवे ते सत्यनो मत जाणवो जीम पचदमे सतक सातमे उदेसे भगवंते गौतमने कह्यो, जे तारे मारे घणा काळनी प्रीती छे इहांथी चव्या बेहु तुल्य थाशु एहवो अर्थ टीकामां पण एहज छे, पण अष्टापद जाओ, भरथना कराव्या बींब वांदो, एटलुं टीकामां घाल्युं ते क्या मुळसुत्रना शब्द उपरे ? तीम टीकामां अनेरा ग्रंथमां जेटला अर्थ सीद्धांत थकी मीळता होवे ते प्रमाण पण टीका तथा अनेरा ग्रंथ मानतां सुत्रनो अर्थ विरुद्ध ते ग्रंथ अप्रमाण थाय. सीद्धांतना शब्द वीना टीकामां जे अर्थ फेलाव्यो तेहनो धणी कोण ? वळी टीका ते अर्थागम छे इम कहे छे, ते वात खरी छे, पण मुळ शब्द होवे तेहनी तो टीका खरी, पण सीद्धांतमां मुळगो शब्द नहीं ते टीकामां अर्थ कीहांथी आव्यो ?

वळी मुळसुत्र तो भगवंतना धाराना गणधरना कर्यां छे ते पछे काळप्रभावे घटयां छे, पण जे रह्यां ते तो शुद्ध छे. पण आगली धारानी टीका कोइ केम रही नथी, ने आचार्यने नवी जोडवी पडी ते माटे आगे वृत्ति,चुर्ण पुर्वे हती के न हती, सर्व नवीन थइ छे ?

आचारंगनी, सुगडांगनी वृत्ति, सीलांगाचार्ये कीधी, सेस नव अंगनी वृत्ति अभयदेवसुरे कीधी नंदी, अनुजोगद्वारनी वृत्ति मलयागीरी आचार्ये कीधी, दस विकालीकनी टीका हरीभद्रसुरे कीधी, आवस्यकनी वृत्ति भद्रबाहुये कीधी तो पुर्व काळनी टीका एकवी हुमारे सात भरथा कीम न रही ?

हवे सीद्धांत गणधर कृतथकी इत्यादी प्रकरणमां केटलाक पाठ, अर्थ विरुद्ध पडे छे. ते मानतां सुत्रनी असातना थाय छे, ते केटलाक बोल नीचे लखे छे

१ ठाणांगसुत्र मध्ये सनतकुमार चक्री अतक्रीया करी मुक्ति गया कह्या अने आवस्यनीर्युक्ति मध्ये त्रीजे देवलोके गया कहे छे, ठाणांगनी टीका मध्ये पण त्रीजे देवलोके गया कहेछे ए सुत्रवीरुद्ध

२ उववाइ, भगवती, पन्नवणामां कह्यु पांचमें धनुष्यनी अवगाहणाथी उपर होवे ते न सीझे तेने जुगळीयो कह्यो, मलक चोवीसमे अने आवस्यकनिर्युक्तिमां मरुदेवा सवा पांचसें धनुष्यनां सीद्ध थयां कहे छे ए वीरुद्ध

१२ भगवती मध्ये छठे अध्ययने छठो आरो वेसतां वैस्याढय परजी सर्व पर्वत वीछेद जास्ये कह्यु प्रकरणे कह्यो सेत्रुंजो सास्वतो ए सुत्र वीरुध

१३. भगवती अध्ययन आठेमे उदेशे नवमे कुसम वस्तुनी स्थीती संख्याता काल्नी कही प्रकरणे कह्यो सखेस्वरा प्रारसनायनी प्रतीमा आठमा चन्द्रप्रभ जीनना वारानी छे एम कहे छे ते शुत्र वीरुद्ध.

१४ ज्ञाता अध्ययन शोळमे पांच पांडवे सेत्रुंजा उपर संथारा कीधा प्रकरणमां कहे वीस क्रोड साधु साथे सीद्धा ए सुत्र वीरुद्ध

१५ भगवती मध्ये भगवतने सासने सातसें केवळी सीद्ध कह्या प्रकरणे पंदरसे तापस केवली वधार्या ए शुत्र वीरुद्ध.

१६. ठाणांग चोथे ठाणे मानुसोत्तर पर्वत चार कुट कह्या, इंद्रना आवास वीहां चार सीद्धायतन माने छे ए सुत्र वीरुद्ध

१७ सुत्रमां साधु, साधवीने मुल्ये आण्यो आहारादीक न कल्पे कह्यो. प्रकरणमां सात खेत्रमां साधु, साधवी गणी एहने काजे धन कढावे ते वीरुद्ध

१८ शुत्रमां रुचकाद्दिप पंदरमो कह्यो प्रकरणे तेरमो कहे छे ते वीरुद्ध

१९. शुत्रमध्ये छपनअतरद्विप जळथकी अतरीक कह्या. प्रकरणमां चार ढाढा उपर करेछे सुत्रमां ढाढानो नाम पण नथी. ए सुत्र वीरुद्ध.

२०. पन्नवणा पद अढारमे छद्मस्थ आहारकनी बे समयनी स्थीती कही प्रकरणे त्रण समा अणहारीक माने. सतक सातमे उदेसे पेहेछे चार समानी वीग्र हती कही, प्रकरणे पांच समा विग्रह उत्कृष्टी कहे. ते विरुद्ध

२१ समवायगमां आचारगनो माहापरीज्ञा अध्ययन नवमो कह्यो छे प्रकरणे सातमो कहे ए सुत्रविरुद्ध

२२. समवायगे चोपनमे समवाये चोपन उत्तम पुरुष कह्या. प्रकरणे त्रेसठ माने छे ए सुत्रविरुद्ध

२३ पन्नवणामां समुछिम मनुष्यने सर्व पर्योनो अपर्यापो कह्यो ने प्रकरणमां त्रण साढीत्रण पर्या माने ते सुत्रविरुद्ध

२४ भगवती सतक आठमे उदेसे दसमे सर्व सवेण वघइ वधु जीव प्रदेसे एकेको कर्म प्रदेश अनता आविभाग पळीच्छेद थकी ओवेष्टित कह्यो. सर्व प्रदेसे कर्म प्रदेसे अनता छे प्रकरणे आठ रुचक प्रदेस उदेस उघाडा माने ए सुत्रवीरुद्ध

८. सुत्र मध्ये नारकी देवताने असपणी कह्या छे, अने प्रकरणमां सपेन मानेछे ए सुत्र विरुद्ध

९. पन्नवणा तथा भगवतीमां पांच थावरने एक मीथ्यात्व गुण ठाणो कह्यो. अने कर्मग्रंथ प्रकरणे पेहलो बीजो ए बे गुणठाणा मानेछे ते विरुद्ध

१० दसविकालीक आठमे अध्ययने अठावीसमी गाथामां कह्यु जे,

अथं गयमि आइचे । पुरथाय अणुगए ॥
आहारमइय सव्वं । मणसावि न पथए २८

अर्थ—अ, आथमेछते. आ आदित्य (सुर्य) पु पुर्व दीस सुर्य अनउगेछते (रात्रीए). आ आहारादीकमात्र. स. सर्व म. मने करी पण न. पार्थे नहीं. (पटले राखे कांये नहीं लीए नहीं राखे २८.

कह्युं अने व्रुचिकल्पनी व्रुचिमां, चुर्णमां साधुने रात्रीभोजन कह्युं ते पाठ

इदाणी कप्पीया भणई आणायोगे दार गाहा आणाभोगेणं वाराइमत्तंभुजे जागीलाण कारणेणवा अद्धापडी सेवणवादुलभ दव्वंइं तावा १ उत्तम मठ पद्दविन्नो राइमत्तं भुंजेज्जा पउसकालेमी गछाणु कपीया एवा राइमत्तंणुणा सुतथ विसारएवा राइमताणुं नाएससेवथो इदानी एकेक स्पद्धोरस्य विस्तारेण व्याख्या क्रीयते

ए रात्रीभोजन करवो कह्यो ते सुत्र विरुद्ध.

११. तथा व्रुतिकल्पनी चुर्णमध्ये साधुने कुशील सेवबा कह्या पण माहानीसीथमध्ये पण कुशील सेवबा कह्या. अने ठाणांग बीजे ठाणे सील राखवा माटे आपघात करी मरवो कह्यो ते पाठ.

दोठाणाइ अपढी कठाइ पनते तंजहा वेहानसे गिद्धपठे.

अर्थ.—दो बे मरण भागके करीसे ते कारण सीलादीक राखवाने नीमीते नीखेध्या नथी, तं ते कोहछे. बे आकाशने वीसे जपतु ते वेहायोस ते गलेपास छइने मरे गी. गंध फसवु छे जे मरणने वीसे ते प्रथ स्पष्ट अथवा ग्रंथने जे भखवा जोग्य जे स्पष्ट उदरादीक अव्यब हाथी उंटादीकना ते मांहि पेसीने जे महासत्वना भणी मरे ते गध स्पष्ट मरणे ते माटे कुसील सेवबा कह्या ते सुत्र वीरुद्ध

वजरीसह संघयणे जाव सेवठ सघयणे संपइ खलु आउ सोम-
णुयाणं छेवठ सघयणे वठइ

१४ भगवती सतक आठमे उद्देसे दशमे आराधना अधीकारे आराधकने उत्कृष्टा पंदर भव कह्या. अने चदावीजय पइनामां त्रण भवहीज कह्या ए सूत्रवीरुद्ध ए चंदावीजय पइनानी गाथा.

आराहणो चउतासम्माकाउणसु विहोकाल उक्कोसं तिन्नि-
भवे ॥ गतुणलभि जिनिवाण ॥

१५ सुधर्मा जीवने चक्रवर्तिपणो उत्कृष्टो बे वार पामवो कह्यो अने माहापच खाण पइनानी चोसठमी गाथामा अनतवार इद्र, चक्रवर्ति थयो इम कह्यो. ए सुत्र विरुद्ध. माहापचखाण पइनानी गाथा नीचे मुजब

इदंत्तय कवट्टीत तणाइ ॥ उत्तमाइ भोगाइं पत्तो अणंतखुतो
नहुतितिउ तेवी ॥ १ ॥

१६ भगवती सतक उद्देसे कह्यु जे.

केवळीण भंच हसेजवा उसुयाएजवा नोतिणठे समठे. केवळीने हसवो, रमवो, कधवो नाचवो, मोहणीजनीतकर्म, नहीं इम कह्यो ने प्रकरणमध्ये कहे कपील केवळीये भील (चोर) आगळे नाटक कीधो कहे ए सुत्र वीरुध

१७ दसविकाळीक पांचमे अध्ययने साधुने वेस्याने पाडे जावो नीखेध्यो ने प्रकरणे कहे थुल्मीभद्रे वेस्याने घरे चोमासो कीधो ते सुत्रविरुद्ध

१८. भगवत गर्भथी साहरवां आचारंगे कह्यु जे साहरीजमाणे जाणइ अने कल्पसुत्रमां कह्युं जे साहरीजमाणे नो जाणइ ए विरुद्ध

१९ घणे सुत्रे कह्यो छे जे मसआहार ते नारकीनो कारण तथा साधना वीरुद कह्यां उववाइ, मस्तव्याकरणे स्यां अमज मसासीए कया अने भगवतीनी टीकामां कुर्कट मस शब्दे कुर्कटनो मस, मंजार मम जेवो शुपर्माणहीज अर्थ सदहे भगवते मस, आहार कर्यो कहे ए सुत्रविरुद्ध

४० आचारंगे मंसखल वा मछखला वीहां मस अर्थ करे ते विरुद्ध

४१ सुत्रमां जीम मस निखेद छे तीम मदीरा पण नीखेध छे, अने ज्ञाता पांचमे सेळग राज रुपीये मधपान कीधो एम अर्थ करे ते सुत्र विरुद्ध.

२५. उत्तराध्ययन २८ मे छांयां, ताप, सब्द, अंधाकार, उद्योतना वीसा पुदगळ लीधा न आवे कद्दो. प्रकरणे गौतमे सुर्यकीरण पकडी कहे ते विरुद्ध.

२६. सुत्र ठाणांगे असीझाय बत्रीश कहि छे, प्रकरणे आपोआपने वेश माटे नव नव दीन ओळीना असीजाइ कहे ए सुत्र विरुद्ध

२७ अनुजोगद्वारे उछेदांगुलस्यकां प्रमाणु अंगुल हजारगुणो कह्यो ए छेले चार हजार गाउनो प्रमाणुं जोजन छे, प्रकरणे सोळसें गाउनो माने ए सुत्र विरुध

२८ भगवती सतक सोळमे उद्देशे छठे, ठाणांग दसमे ठाणे, श्री महावीरना दस स्वप्ना छद्मस्यपणानी छेली रात्रे दीठा कह्यां आवस्यके प्रथम चोमासे दीठा कहे तेनां फळ वळी उत्पल ब्राह्मणे कह्यां कहेछे, ते विरुध.

२९. सजम आदरतां समयमात्रनो प्रमाद न करवो उत्तराध्ययन दसमे अने गणीवीज्य पइनामां कह्यु श्रवण, धनीष्टा, पुनर्वसु ए त्रण नक्षेत्रमां दीक्षा न लेवी कहे छे. ते गाथा

श्रवणे धणीठा पुनर्वसु नकरिगनिखमणं ए सुत्रविरुद्ध

३० वळी चार नक्षेत्रे लोच करजवो कहे छे ए सुत्रविरुध.

कतियाही विसाहाहि मघाहि भरणीइ वाएणाहिं चउरसोंहि लोकमाइ वजए

३१ धणीठाहिं सभीभषासाई ॥ सवणोय पुणवसु ॥ एएसु गुरु सुसुषा चेइयाणंचपुयणं

ए पांच नक्षेत्र गुरुनी पुजा करवी सेस नक्षेत्रमां नहीं, जे कोकोत्तरपक्षे अने परमपक्षे ए बे पुजा छे तो पांच नक्षेत्रनुं शुं कारण? सदाए करवाम, सीद्धांत मध्ये तो गुरु, देवनी सेवा नीत्य करवी कही छे ए पांच नक्षेत्र कह्या तेसुत्रवीरुद्ध

३२ सुत्रमां पांचमे आरे छ संठाण, छ संठाण जंबुद्विपपन्नतीमां कह्या छे. अने तंदुलवेयालीपाइनामां पाठ छे ए सुत्रविरुद्ध

३३ आसीय मणूयाणं छविहे संगणे तंजहा समचउरंसे जाव हुंडे सपइपल्ल आउसोमणू याण हुंड संठाणे वठई

आसीय आउसोपुव्विं मणुयाण छविहे संघयणे तजहा

वजरीसह संघयणें जाव सेवठ सघयणे संपइ खलु आउ सोम-
णुयाणं छेवठ सघयणे वठइ

१४ भगवती सतक आठमे उद्देसे दशमे आराधना अधीकारे आराधकने उत्कृष्टा पंद्र भव कह्या. अने चदावीजय पइनामां त्रण भवहीज कह्या ए सूत्रवीरुद्ध ए चदावीजय पइनानी गाथा.

आराहणो चउतासम्माकाउणसु विहोकाल उक्कोसं तिन्नि-
भवे ॥ गतुणलभि जिनिवाण ॥

१५ सुत्रमां जीवने चक्रवर्तिपणो उत्कृष्टो बे वार पामवो कह्यो अने माहापचखाण पइनानी चोसठमी गाथामां अनतवार इंद्र, चक्रवर्ति थयो इम कह्यो. ए सुत्र-विरुद्ध. माहापचखाण पइनानी गाथा नीचे मुजब

इदंत्तंय क्कवट्टीत तणाइ ॥ उत्तमाइ भोगाइं पत्तो अणंतखुतो
नहुतितिउ तेवी ॥ १ ॥

१६ भगवती सतक उद्देसे कह्यु जे

केवळीणं भंत्त हसेजवा उसुयाएजवा नोतिणठे समठे. केवळीने हसवो, रमवो, ऊंघवो नाचवो, मोहणीअनीतकर्म, नहीं इम कह्यो ने प्रकरणमध्ये कहे कपील केवळीये भील (चोर) आगळे नाटक कीधो कहे ए सुत्र वीरुध

१७ दसविकाळीक पांचमे अध्ययने साधुने वेस्याने पाडे जावो नीखेध्यो ने प्रकरणे कहे थुलीभद्रे वेस्याने घरे चोमासो कीधो ते सुत्रविरुद्ध

१८. भगवंत गर्भथी साहरतां आचारगे कह्यु जे साहरीजमाणे जाणइ अने कल्पसुत्रमां कह्यु जे साहरजिमाणे नो जाणइ ए विरुद्ध

१९ घणे सुत्रे कह्यो छे जे मसआहार ते नारकीनो कारण तथा साधना वीरद कह्यां उववाइ, प्रस्नव्याकरणे त्या अभज मंसाधीए कह्या अने भगवतीनी टीकामां कुर्कट मस शब्दे कुर्कटनो मस, मंजार मम जेवो शुपमांणहीज अर्थ सदहे भगवते मस, आहार कर्यो कहे ए सुत्रविरुद्ध

२० आचारगे मसखळ वा मछखळवा सीहां मस अर्थ करे ते विरुद्ध

४१ सुत्रमां जीम मस निखेद छे तीम मदीरा पण नीखेध छे, अने ज्ञाता पांचमे सेळग राज रुषीये मद्यपान कीधो एम अर्थ करे ते सुत्र विरुद्ध

४२ सुत्रमध्ये मनुष्यनो जन्म एकवारे एक जोनीथी होवे तो भवक करे होवे कह्यो अने प्रकरण मध्ये सगरचक्रीने साठ हजार बेटा एकेवारे जन्म्या कहे छे ए सुत्रविरुद्ध.

४३. सुत्रे कह्यो सास्वति पृथवीनो दळ उतरे नहीं, अने प्रकरणे कहे छे सागर पुत्रे तोडयो भवपतिना घरमां गंगानो प्रवाह चाल्यो ते विरुद्ध

४४ सुत्रमध्ये आचार्य, उपाध्याय, तीर्थंकरनी तेत्रीस असातना टाळवी कही अने प्रकरणमां मतीमानी चोराशी असातना कहे ए वीरुद्ध

४५ उपवासमां पाणी पीना बीजो द्रव्य खावा निसेध्यो छे. अने प्रकरणे तमाकु, हरडे, बेहेडा, आंबळीया, दाडमना छोडा अणाहार कहे ते विरुद्ध

४६ सीद्धांतमां भगवंतने सहसमुधार्ण कह्या अने कल्पसुत्रमध्ये निवाळे भणवा मुक्या कहे ए सुत्रविरुद्ध

४७. सुत्रमां हाडनी असझाइ कही छे अने प्रकरणमां हाडकाना थापनाचार्य थापे छे ए सुत्रविरुद्ध

४८. सुत्रपन्नवणामां बीजे पदे आठसेजोजननी पोलाणमां वाणव्यंतर रहे छे इम कह्यो अने प्रकरणे अेंसीजोजननी पोल थीनी कहे ते विरुद्ध

४९ जीनमारगी जीव नरक जावाने नामे पण भय पामेछे अने प्रकरणे कहे के कोणीक राजा सातमीये जावा माटे कारमा रतन कर्या तो कोणीकराजा समदीष्टी जीनधरमनो जाण ने धेरमो चक्री कीम थासे ? थावानी हुंस कीम करे ? ए सुत्र विरुध.

५० कर्मापुत्र केवल पाम्या केडे छ मास घरमां रह्या कहेछे ते विरुद्ध.

५१ सुत्रमध्ये सवे दानमां साधुनो दान उत्कृष्टो श्याम कह्यो. अने प्रकरणमां विजयसेठ, सेठाणीने जमाडये चोरासी हजार साधुने दान देवे तेहनो फळ कहे ए सुत्रविरुद्ध

५२. भरथेश्वरे रुसमदेवनो ने नवाणुं भाइना १०० थुभ कराव्या प्रकरणमां कहे छे ए सुत्रविरुद्ध

५३ पांडवे सेत्रुंजा उपर सधारा कीधा छे. अने प्रकरणमां कहे छे जे सेत्रुंजा उपर पांडवे उधार कराव्या छे सुत्रमां तो उद्धार कराव्यां नथी कह्या ने देहरा प्रतिमा बांध्या पण नथी कह्या ने पुदगळ उधार कीधा कहे ते विरुद्ध

५४ पांचम मुकी चोथनी स्वछरी कहे छे ते सुत्रविरुद्ध.

५५. सुत्रमां २४ जीन वंदनीक मोक्षदायक कह्या छे. अने वीवेकवीलासमां कहे एकवीस तीर्थंकरनी प्रतिमा घरमां मांडवी त्रणनी न मांडवी मल्लीनाथ, नेमनाथ ने माहावीर ए त्रणने पुत्र न थया ते माटे एह लोक हेते पुजा ठहरी ए सुत्र विरुद्ध.

एहवा ग्रंथ पोतानी मतीथकी कल्पीने कर्या ते सुत्र प्रमाणे केम मनाय वळी प्रकरण, कोकीक, कुराण, पुराण जेटला ग्रंथ सीद्धांतसाथे मीले आर्य वचन होवे ते प्रमाण अने जे वचन सुत्रथकी वीघटे ए प्रमाण.

५६. आचारंग सुत्रपाठमां पचीस भावना पांच माहाव्रतनी कही. ने टीकामां पांच भावना समकीतनी वधारी तेमां ठाम ठाम तीर्थभूमीकाये जात्रा जावु घालयु. ए क्या पाठ उपरे ? पांच भावना वधारी ते सुत्र विरुद्ध.

५७ कर्मग्रंथ प्रकरणमां एक मोहनी कर्म आश्री नवमा गुणठाणालगे फेर छे ते कर्मग्रंथनो मत कहेछे.

पहीले गुणठाणे समकीतवेदनी, समर्मीथ्यात्ववेदनी. ए वेनो उदय नही ए सेख २६ नो उदय मीथ्यातमोहणी सममीथ्यात्वमोहनी त्रे अनुतानबंधीनी चोकडी ए छ वरजी सेख २२ नो उदय पांचमे गुणठाणे चोथानीपरे छ तेहांभ ने अपचखाणीनी ४ एव दश वर्जी १८ नो उदय छठे गुणठाणे ए दस प्रकृति अने चार पचखाणावरणी ए चउद वरजी सेख चउदनो उदय. सातमे गुणठाणे छठानीपरे चउदनो उदय आठमे गुणठाणे धुरली पद्दर प्रकृति वरजी सेख तेरनो उदय नवमे गुणठाणे संजल चार, वेद त्रण ए सात प्रकृतीनो उदय सेख एकवीसनो उदय नहीं ९, १०, ११, १२, १३, १४ मे गुणठाणे सुत्रवत छे

हवे सीद्धांतमां पहेले गुणठाणे वेनो उदय कह्यो ए विरुद्ध वीजे त्रण मोहनी दर्शननीनो उदय कह्यो. ए विरुद्ध त्रीजे वेनो उदय कह्यो ए विरुद्ध. ३, ४, ५, ६, ७, ८, गुणठाणे समकीत वेदनीनो उदय कह्यो ए विरुद्ध नवमे गुणठाणे चार संजलना त्रण वेद ए सातनो उदय कह्यो ए विरुद्ध माटे सीद्धांतमां कह्यु तेहीज सत्य जाणवु

तथा चुरणमां कटलाएक बोल विरुद्ध छे ते कहे छे

५८ कणेरनी कांय फेरवी, प्रत्रथकी समुनामना मार्या पाडवां ए आचारंगनी चुरणमां

५९. तथा नसीथचुरणमां हाथेवाहाथी (हथेली) खणवी.

४२ सुत्रमध्ये मनुष्यनो जन्म एकवारे एक जोनीथी होवे तो शतक जन्मे होवे कह्यो अने प्रकरण मध्ये सगरचक्रीने साठ हजार बेटा एकेवारे जन्या कहे छे ए सुत्रविरुद्ध.

४३. सुत्रे कह्यो सास्वति पृथवीनो दळ उतरे नहीं, अने प्रकरणे कहे एक सागर पुत्रे तोडयो भवपतिना घरमां गंगानो प्रवाह चालयो ते विरुद्ध

४४ सुत्रमध्ये आचार्य, उपाध्याय, तीर्थंकरनी तेंत्रीस असातना टाळवी कहे. अने प्रकरणमां मतीमानी चोराशी असातना कहे ए वीरुद्ध

४५ उपवासमां पाणी वीना बीजो द्रव्य खावा निखेध्यो छे अने प्रकरणे तमाकु, हरडे, बेहेडा, आंबळीया, दाडमना छोडा अणाहार कहे ते विरुद्ध

४६ सीद्धांतमां भगवंतने सहसखुभार्ण कह्या अने करपसुत्रमध्ये निलाडे न पथा मुक्या कहे ए सुत्रविरुद्ध

४७. सुत्रमां हाडनी असझाइ कही छे अने प्रकरणमां हाडकाना थापनाचार्य थापे छे ए सुत्रविरुद्ध

४८. सुत्रपन्नवणामां बीजे पदे आठसेजोजननी पोलाणमां वाणव्यंतर रहे छे इम कह्यो अने प्रकरणे ॲसींजोजननी पोल बीजी कहे ते विरुद्ध

४९ जीनमारगी जीव नरक जावाने नामे पण भय पामेछे अने प्रकरणे कहे के कोणीक राजा सातमीये जावा माटे कारमा रतन कर्यो तो कोणीकराजा समदीष्टी जीनवचननो जाण मे वेरमो चक्री कीम थाशे ? जावानी हुंस कीम करे ? ए सुत्र विरुध.

५० कर्मोपुत्र केवल पाम्या केडे छ मास घरमां रह्या कहेछे ते विरुद्ध

५१ सुत्रमध्ये सवे दानमां साधुनो दान उत्कृष्टो लाभ कह्यो, अने प्रकरणमां विमयबेठ, सेठाणीने जमाडये चोरासी हजार साधुने दान देवे तेहनो फळ कहे ए सुत्रविरुद्ध

५२. भरतेश्वरे रुखभदेवनो ने नवाणुं भाइना १०० थुभ कराव्या प्रकरणमां कहे छे ए सुत्रविरुद्ध.

५३ पांडवे शेत्रुंजा उपर सथारा कीधा छे अने प्रकरणमां कहे छे जे शेत्रुंजा उपर पांडवे उधार कराव्या छे सुत्रमां तो उद्धार कराव्यां नथी कह्या ने देहरा प्रतिमा थाप्या पण नथी कह्या जे पुद्गल उधार कीधा कहे ते विरुद्ध

५४ पांचमे मुकी चोथनी स्थापरी कहे छे ते सुत्रविरुद्ध.

कार्तिकसेठ, मडुक श्रावक, सोमील वीम, वरणनागनट्टुओ, १३. ५ श्रीज्ञातामां– पोट्टला, सेलग राजा, पयक मधान ममुख पांचसें मन्त्रीशर, सुदर्शन शेठ, अरणपक श्रावक, कुंभ राजा, प्रभावती राणी, जीतशत्रु राजा, सुबुधी मधान, नदमणीयार, तेतली मधान, कनकध्वज राजा, पुंडरीक राजा, ११३ ६ श्री उपासगदसामां– आणंद, कामदेव, चुळणीपीता, सुरादेव, चुलसयक, कुंडकुलीओ, सकडाल पुत्रे, माहासयक, नदणीपीया, तेतलीपीया, सीवानदा, अग्नीमीत्रा, १२ ७ अंतगडमां सुदर्सन, १ ८ श्री विपाकमां–बाहुकुमार, भद्रनंदीकुमार, सुजातकुमार, सुवास कुमार, जीणदासकुमार, वेसमणकुमार, माहाबळकुमार, भद्रनंदीकुमार, माहाचंद्र कुमार, वरदत्तकुमार, १० ९. श्री उववाइमां–अबड श्रावक ने तेना सातसें शीष्य, ७०१. १० श्रीरायप्रसेणीमां–रायप्रदेषी, चीतसारथी, २. ११ श्रीजंबुद्वीपपन्नती मां–श्रेयांसकुमार, भद्रा, २. १२ श्री नीरावलीयामां–सुभद्रा, सोमील ब्राम्हण, निषेध कुमार, अनीयीह कुमार, वेहकुमार, प्रकितकुमार, युक्तिकुमार, दसरथकु मार, द्रढरथकुमार, माहाधनुपकुमार, सतधनुपकुमार, ११ १३. श्री उत्राध्ययनमां पालक. १. १२७० तथा राजग्रही नगरी, चंपा, द्वारका, आलभीया, सावथि, वाणीग्राम, हथीणापुर, पोलासपुर, तुगीया, वनीता ए आदी घणी नगरीमां घणां श्रावक श्राविकाना वास छे. तीहां देहेरां प्रतिमा कह्यां नथी

वळी भरथेशर, बाहुबळ, श्रेयांसकुमार, कृष्णवासुदेव, श्रेणीक राजा, कोणीक राजा, ब्रह्मदत्त चक्री, पांच पांडव ए आदी रानानाराजा जीनमार्गना प्रभावीक थया तीर्थंकरना गाढा भक्तिवंत थया धरमने सहायना दातार थया. कोइये साधुने दान दीधां, कोइये सजम लीधा, कोइए अगीयार पडीमा आदरी, कोइये सामायक पोसाह कीधा, प्रश्न पुछ्यां, ए अधीकार सुत्रमां कह्या छे; पण धन खरची देहेरां, प्रतिमा कराव्यां, पुज्या, संघ काढया ते अधीकार सीद्धांतमां कह्या नथी सुत्रमां देहेरां, प्रतिमा कराव्यानी विधी, पुजवानी विधी पण कही नथी प्रतिमा पुजवी, देहेरां करावबां, संघ काढवाना लाभ पण सुत्रमां कह्यां नथी. जो सुत्रमां अकुरामात्र कह्यु होय तो प्रकरणमां घणो वीस्तार छे ते पण प्रमाण थाय; पण सुत्रमां अंकुरा मात्र नाममात्रही नहीं ते केम प्रमाण थाय

श्रीभगवती सतक उदेशे पांचमे तुगीया अधीकारे तथा सुयडांग सुत्रमां बीय पदने अधीकारे तथा उववाइ सुत्रमा श्रावकनी नित्यकरणीनो माळावो

अहिंगय जीवाजीवे उवलद्ध पुणपावा आसव संवर नि-

६० मैथुन सेववां ६१ रात्रीये आहार लेवो ६२ अनतकायनो दोवो ६३. मत्र भणवा ६४. केळां आदी फळ खावां ६५ काचु पाणी पीवुं ६६ अदत्त लेवुं ६७ खासडां पहेरवां. ६८ पान खावां ६९ लोहारनी धमण ७० फुल सुंघवां ७१. स्नान करवां ७२ अनतकायने झाडे ७३. आधाकरमी आहार लेवो. ७४ घृतादीक वासी राखवुं ७५ धात ७६ निधान उघाडवां ७७ अ पडीगीनो वेश करवो. ७८, थंभणीविद्या ७९. मृखावाद बोलवुं. ए बावीस चुरणना ते सुत्र विरुद्द छे.

८०. हवे भाष्यमां आवस्यकनी भापा अठावीश हजारीमां महावीरना २७ भव कह्या. तेमां कह्यु जे मनुष्य मरी चक्रवर्ति थयो. ए सुत्र विरुद्ध.

८१. भाष्यमां अरीष्टनेमीने गणधर अगीयार कह्या ने सीद्धांतमां अढार कह्या ए सुत्र विरुद्ध.

८२ पार्श्वनाथने सुत्रे गणधर २८ छे ने निर्युक्तिये १० छे ते विरुद्ध.

८३. साधु ग्रहस्थपणामां रह्या तीर्थंकरने वांदे कहे ते सुत्र विरुद्ध

८४ संथार पइनानी गाथा साठमी नीचे लखीछे

भालुकीए करुण षजतो ॥ घोर वेयणतोवी ॥
आराहणा पवन्नोझाणेण । अवंती सुकुमालो ॥

८५ चदावीजय पइनानी गाथा साठमी नीचे लखी छे

उजेणीनयरीए अवतिनामेण । विस्सुउंआसी ॥
पाउवग पवन्नो ॥ सुसाण मझिम एगंतो ॥

अवंती सुकमालना अधीकार माटे ए पइना चोथा आराना जोडया के पांचमा आराना जोडया ?

एवां एवां प्रकरणे अनेक विरुद्द छे ते जाणवा माटे थोडा लख्यां छे

---

२६. सुत्रमां श्रावक कह्या तेमां कोइये प्रतिमा पुजी न कही ते विषे सीधांतमां जे जे श्रावक श्रावीकां थयां तेनां सर्वोले नाम कहेछे

१ श्री आचारंगमां—सीधारथ राजा, त्रीसला राणी २ २ श्री सुगडांगमां—लेप—गाथापती १ ३ श्री ठाणांगमां—सुलसा ? ४ श्री भगवतीमां—जयंती, मृगावती, सुदर्शनसेठ, रुखीभद्रपुत्र, चउपना, संख, पोखळी, उदाइ राजा, अभीचकुमार,

सीद्वांत जीनमार्ग अ अर्थ (सार) छे. अ. परम (उत्कृष्टो) मोक्षनो अर्थ छे सेप पुत्र कलत्रादी. अ अनर्थ असार) छे; ए दर्शनगुण २. हवे चारीत्रगुण कहेछे— उ. ऊंची. फ. फीजे मोगळ अ उघाडां छे घरनां वारणां जेहनां. ची मतीत छे अतेउरने विषे ५, पारक्ता घरनेवीषे घणा आचार–सीयळव्रत नीयरतवु, त्याग, पोषह, देवसावगासीक. चा चउदस अ आठम उ अमावास्या. तथा कल्याणक तीर्थी पु पुनम भ्रण. चउमासा सवधीने वीषे मतिपूर्ण आठ पहर. पो पोषा म- श्वीपरे अतीचार रहित अ. पाळतायका स. श्रमण नि नीर्ग्रंथने फा अचीत दोषरहीत शुद्ध. अ. अन्न १, पा पाणी २. खा सुखडी, मेवो ३ सा. मुखवास ४ व. वस्त्र. ५ प पात्रा ६ क कांबळीनी भात ७. पा रजोहरणे करीने ८ पा. पाडीयारो (मागी लइ पाछुं देवुं) ९ पा बाजोट १०. फ. पाटीयां ११ से उपाश्रय तथा पाट १२ सं. सथारो (डाभ तृणादीक) १३, उ. ओषधभेष धादीक १४ प. मतीछाभता (मोहोरावता) थकां आ यथायोग्य (पोतानी शक्ति ममाणे) ते तपस्या करतायका. भा आत्माने भावतायका जीनमतने विषे वीचरे,

ए करणीना करणहार नित्यमत्ये एहवी करणी करेछे ते श्रावक कहीये. पण देहेरां कराव्यां नयी, मतिमा पुजी नथी, तेम सघ पण काढया नयी.

---

२७ सावद्य धरमकरणीमां जीन आज्ञा नथी ते विषे.

थळी सावद्य करतव्य सहीत धरमकरणी होवे तेमध्ये भगवंतनी आज्ञा नयी, करणहारनी इच्छा जाणवी ते करतव्य

१. सुबुधी मधाने जीतशत्रु राजाने शुद्धवधामाटे पाणी समर्यो ते आपणी इच्छा
२ श्री मल्लीनाथ स्वामीये मोहनघर कराव्यो ते आपणी इच्छा
३. आणद श्रावके न्यात जमाडी ते आपणी इच्छा.
४ कोणीक राजाये नगर सीणगार्यो ते आपणी इच्छा
५ धर्मगोख आचार्ये नागेसरीने हेळी ते आपणी इच्छा
६ मदेशीराजागे दानशाळा मडावी ते आपणी इच्छा
७ चीतसारथीये घोडानो मीस कर्यो मदेशीने आण्यो ते आपणी इच्छा
८. सुरीयाभ देवताये नाटीक कर्यो ते आपणी इच्छा
९ अभयकुमार, मरथेश्वर, पद्मोत्तरराजाये अटम कर्यो ते आपणी इच्छा
१० द्रुपदीये मतिमा पुजी ते आपणी इच्छा

जरा किरिया अहिगरण वंध मोख कुसला ॥ १ ॥ असाइजार देवासुर नाग सुवण जख रखस्स किंन्नर किंपुरिस गुरुल गंधव महोरग्गा दिएहिं देवगणेहिं निग्गथाउं पावयणाउ अणइक्कमणि जाउं ॥ ३ ॥ निगथे पावयणे निस्संकिया निकासिया निविति गिछा ४ लद्धठा गहियठा पुछियठा अभिगयठा विणिछियठ ५ अठमिं ज पेमाणु रागरत्ता ६ अयमाउसो निग्गथे पावयणे अठे अर्यपरमठे सेसे अणठे ७ उसिय फलीहा ८ एवं गुपडुवारा ९ चियत तेउर परघरप्पवेसा १० बहुहिं सीलवय गुण वेरमण पच खाण पोसहोववासेहिं चाउद सठ मुदीठ पुणमासीणीसु पडीपुन्न पोसहसम्मं अणुपालेमाणे ११ समणे निग्गथे फासु एसणीजेण असण पाण खाइमं साइमेण वथ पडीग्ग कबल पायपुछणेणं पादीयारु पीढ फलग सेजा सथारएण उसह मेसजेण पडीलामे माणा आहापडीग्गहिएहिं तवोकम्मेहिं अप्पाणभावेमाणा विहरंति ॥

अर्थः—ज जाण्या छे जी जीव अजीवना व जाण्या छे. पु. पुन्य पापना भेद आ. आश्रव सवर नि निर्जरा की क्रीया अ अधीकरण बं बंध मो. मोक्षने विषे कु डाह्या छे, ए ज्ञान गुण १ हवे दर्सनगुण कहेछे अ कष्ट छपने देवनी सहायने विषे दे देव–ज्योतषी, विमानीक, भवनपति ना नागकुमार सु सुवर्णकुमार ज जक्ष रा राक्षस कीं कींनर कीं कींपुरुष गु गरुड गं गंधर्व. म. महोरगा आ आदी दइने दे देवताना समुह नि नीर्ग्रंथना पा सीद्धांत थकी अ अतिक्रमावी (चळावी.) न शके. नि नीग्रंथना पा सीधांतना नि संका रहीत छे नि अन्यधर्मनी वांच्छा रहीत छे नि धर्मनो फळ ते सदेहरहीत छे. ल लाध्या छे सुमना अर्थ जेने ग ग्रह्या छे पु पुछया छे अर्थ जेगे अ जाणुक थया छे अर्थ जेणे वी. निश्चे कर्यां छे ए अर्थ जेणे अ जीव अजीवना प्रदेश प धर्मरुप रागे रंगेकरी रंगाणा छे जेहने. अ एह आउखावत नी नीर्ग्रंथनो भाख्यो. पा

धाररुप धुण मे गुंथटो तेहनी ति तिगीछा मोखधरुप काउसग ५. गु. छगने धीले मूळगूण, उत्तर गूणनु धरवु ते पचखाण ६ ए छ आवस्यक.

ए छ अध्ययनना नाम छ कह्या तेमा चोवीसस्तवना तो ठीक कहेछे एहनो नाम तो उत्तकीर्तन कह्यो छे ए उतकीर्त्तन जे तीर्थंकर हुवा छे के होवे छे तेटलाने बंदणा करे. चोवीशनो मेळ नथी. जे द्रव्यनीखेपो होवे, धारगतमां होवे, अव्रती अपचखाणी होवे तेहने त्रसवत, पांच छ गुणठाणावाळो कीम बांद्से ? अने चोवीस जीन बांध्या वीना चोवी सतो न थाय तो माहाविदेह खेत्रे तो चोवीसनो मेळ नथी। अनता थया ने थाशे धरतधाने तो वीनय दीठ अेकेक होवे तीवारे चोवीसनो मेळ न आवे ते माटे उतकीर्त्तन अध्ययनमां जे जीनराज वर्त्तमानपणे होवे तेहने वांदे जो माहावीदेहे एक जीन वांचे चोवीस सस्तव थाय, तो रुखवखेत्रने वारे रुखमदेव वांचाथी चोवीसस्तव कीम न थाय ? ते वीचारी जो जो, गण द्रव्य नीखेपो घालवानो ठाम नथी रह्यो

---

२९ स्थापना नीखेपा विषे

ईरयाधरमी कहे छे तुमे स्थापना नीखेपो न मानो तो आचार्य, उपाध्यायना उपगरणने सघटो केम नथी करता ? सुत्र दसविकाळीक नवमे अध्ययने बीजे उद्देशे अढारमी गाथामां कह्युं छे,

> सघट्टाइता काएण ॥ तहाउवहिणामवि ॥
> खमेह अवरा हमे ॥ वएजन पुणोतिय १८

अर्थ—स संघटो करीने. का कायाए करी त तीमहीज अवी वळी उ उपधीनो संघटो थयो होय तीवारे शीष्य एम कहे ख खमो अ अपराध मे मा हरो व वळी कहे नहीं करु बीजीवार इ ए संघट्टादीक अवीनय. ति. वळी

एमां उपगरणने तथा आचार्यने पगथकी सघटया तीवारे इम कहे. खमो माहरो अपराध हवे हुं नहीं करुं ए ठेकेखे उपगरण, पाट, सीज्या, सथारो थाप नानी आसातना टाळवी कही छे ते उत्तरः ए गाथामां तो सत्य कह्यु छे, जे उप गरण आचार्यनी जे आयमां छे जीम शरीर प्रयोग परणम्या पुदगळ छे तीम उपगरण पण प्रयोग परणम्या द्रव्य छे. तेहना भोगमां आवे छे आचार्य भावनीखेपे छे, तीम उपगरण भाव नीखेपाना भोगना छे

११. श्रेणीकराजाये सेवकसाथे साधुने थानकनी आज्ञा देवरावी ते आ० इ०
१२. कोणीकराजाये नीत्य वधाइ दीधी ते आपणी इच्छा
१३ दीक्षा मोहोच्छव ठाम ठाम कीधा छे ते आपणी इच्छा
१४. श्रीकृष्णे दीक्षानी दलालीकाजे द्वारकामां पडहो फेरव्यो ते आपणी इ०
१५ इंद्रे सघा देवताये जन्म, दीक्षा, नीर्वाणना महोच्छव कर्या ते आपणी इ०
१६ देवता अठाइ महोच्छव करे ते आपणी इच्छा
१७. जघाचारण प्रमुख साधु लब्धी फोरवे ते आपणी इच्छा.
१८. अंबड श्रावक सो सो घरे पारणो करे तथा वासो वसे ते आपणी इ०
१९. धर्मेंद्रे भगवंतनी वेभाव करी ते आपणी इच्छा.
२० संखश्रावके जमवो भेळो परठयो ते आपणी इच्छा
२१ माहाशतक श्रावक सथारामां स्त्रीने कठोर वचन बोल्यो ते आपणी इच्छा.
२२. तेतली प्रधानने पोटल देवताये माया करी समजाव्यो ते आपणी इ०
२३. तीर्थंकरने सवछरी दान आप्या ते आपणी इच्छा
२४. देवता प्रतिमा दाढाओ पुजे ते आपणी इच्छा.
एमां जीन आज्ञा नथी

---

२८. द्रव्य नीखेपा विषे

हींस्याधरमी कहे छे, तुमे द्रव्य नीखेपा वंदनीक न जाणो त्यारे रुखभदेवना साधुने चोथी संस्तव आवस्यक कीम थाशे? इसे तेवीस तीर्थंकर तो हजी थया नथी तेहने न वांदे त्यारे भावनिखेपे तो रुखभदेवहीज एकने वांदे चोथो संस्तव कीम थातो हसे, एम गुणरहीत द्रव्यनीखेपो मनावी पछे गुण रहीत थापना मनावे इम वेखास करे ते उत्तर: सुत्रमध्ये तो अनुजोगद्वारमां आवस्यकना छ अध्ययन कह्या छे.

सावज जोगवीरई १ उक्कीत्तण २ गुणवउंय पडीवत्ती ३
खलीयस्सयनदणा ४ वणातितिगछ ५ गुणधारणा चेव ६ ॥१॥

अर्थ—सा सावज्ज व्यापार पापने वीरेते मन जोग, वचन जोग, कायाजोग तेहनी वीरती ते समायक. १ उ. तीर्थंकरना गुणग्राम करवां नाम मणवां ते चोथी संथो २ ५. ज्ञान, दर्सन, चारीत्र गुणवंतनी भक्ति ते वांदवारुप जाणवा ३ ख व्रतने वीषे जे अतीचार तेहनो आलोववो ते पडीकमणारुप मंदे ए ४ आ अती-

चाररुप गुण जे गुंबडो तेहनी त्रि तिगीछा ओखधरुप काउसग ५. गु. एमने पीसे मूळगूण, उत्तर गूणनु धरवु ते पचखाण ६ ए छ आवस्यक.

ए छ अध्ययनना नाम छ कह्या तेमा चोवीसस्तवना तो लोक कहेछे एहनो नाम तो उतकीर्तन कह्यो छे ए उतकीर्त्तन जे तीर्थंकर हुवा छे के होवे छे तेटलाने वंदणा करे. चोवीशनो मेळ नथी. जे द्रव्यनीखेपो होवे, चारगतमां होवे, अव्रती अपचखाणी होवे तेहने व्रतवंत, पांच छ गुणठाणावालो कीम वांदसे ? अने चोवीस र्भन बांध्या वीना चोवी सतो न थाय तो माहावीदेह खेत्रे तो चोवीसनो मेळ नथीं अनंता थया ने थाशे वरतमाने तो वीजय दीठ भेकेक होवे तीवारे चोवीसनो मेळ न आवे ते माटे उतकीर्त्तन अध्ययनमां जे जीनराज वर्त्तमानपणे होवे तेहने वांदे जो माहावीदेहे एक जीन वांधे चोवीस सस्तव थाय, तो रुखवदेवने वारे रुखमदेव बांधाथी चोवीसस्तव कीम न थाय ? ते वीचारी जो जो, गण द्रव्य नीखेपो घालवानो ठाम नथी रह्यो

---

२९ स्थापना नीखेपा विषे

हीरयाधरमी कहे छे तुमे स्थापना नीखेपो न मानो वो आचार्य, उपाध्यायना उपगरणने संघटो केम नथी करता ? तुम दसविकालीक नवमे अध्ययने बीजे उद्देशे अढारमी गाथामां कह्यु छे,

संघट्टाइता काएण ॥ तहाउवहिणामवि ॥
खमेह अवरा हमे ॥ वएजन पुणेतिय १८

अर्थ—स संघटो करीने का काया फरी त तीमहीज अवी वली उ. उपधीनो संघटो थयो होय तीवारे शीष्य एम कहे ख खमो अ अपराध मे मा हरो व वली नेहं नहीं करु बीजीवार इ ए संघट्टादीक अवीनय. ति. वली.

एमां उपगरणने तथा आचार्यने पगथकी संघट्या तीवारे इम कहे खमो माहरो अपराध हवे हुं नहीं करुं ए छेखे उपगरण, पाट, सीज्या, संथारो थाप मानी आसातना टालवी कही छे ते उत्तरः ए गाथामां तो सत्य कह्यु छे, जे उप गरण आचार्यनी ने भायमां छे जीम शरीर प्रयोग परणम्या पुदगल छे तीम उपगरण पण प्रयोग परणम्या द्रव्य छे तेहना भोगमां आवे छे आचार्य भावनीखेपे छे, तीम उपगरण भाव नीखेपाना भोगना छे

शरीरनी परे वळी कह्यो खमो अपराध वळी नहीं करुं, ए आचार्यवकी मधक छे उपगरण अचेतन खमाव्यो न खांचो सु जाणे ? ए उपगरणनी असातना आचार्य सहीत उपगरणनी असातना टाळी छे ए थापना करे थाय नहीं तो कहीए,जे आचार्य तो गया अने तेहना उपगरणनी पछे असातना टाळे जे था पना कहीये,पीण आचार्यना सयण,आसण शीष्य न भोगवे,असातना लागे ते पछे आचार्य वीहार कर्या केडे तेहीज सयणासण शीष्य सुखे भोगवे.जीम चंपानगरीने बागमां मयधीशीलापट्ट छे ते उपर भगवते बेशीने उपदेश दीधो. ए उववाइ सुत्रमां कह्यो छे पछे भगवते विहार कीधो पछे तेहीज पृथ्वी सीलापट उपर गौतम,सुधर्मा स्वामी समोसर्या ते बेठा के न बेठा! जो न बेठा होय तो उपगरणनी असातना टाळी कहीये, अने बेठा वीचारे तो भगवतनी भाव नीखेपानी असातना टाळी करी. एम आचार्यना उपगरण पण जाणजो, तथा तमारे मते उपगरणनी, थापनानी, मोटेरानां पगलां थाप्या होय तेहनी असातना टाळवी कहोछो ए छेल्ले तो गुरुना छांयडानी छांया पडे छे, ते उपर पण पग देवो न घटे, जे छाया गुरुनी ठहरी ते माटे तमा गुरु केडे शीष्य चालतो होय तेहने गुरुना पगनी छांया पडी ते उपर पण पग देवो न घटे. जो मुआ गुरुना पगलां पुजोछो, तो जीवता गुरुना पगलानी तो असातना टाळो, पण एटलो वीवेक नथी

---

१० धर्म अपराधीने मारे लाभ कहे छे. ते उत्तर

वळी हींस्याधर्मि कहेछे, उत्तराध्ययन बारमे गाथा बत्रीसमीमांहि ब्राह्मणना पुत्र देवताये मार्या त्यारे ब्राह्मणने हरकेसी मुनीये कह्यु जे,

पुव्विंचइहंच अणागयं च ॥ मणंपदोसोन मे अथिकोइ ॥
जक्खाहु वेयाव पडिय करेति ॥ तम्हाहु एए निहया कुमारा ॥३२॥

अर्थः—पु पुर्वकाळ, वर्त्तमानकाळ. अ अनागतकाळ च पुरणे म मद्वेष. मे मुजने अ छे नहीं कोइ अल्पमात्रपण. ज जक्ष जे मणी बे वेयावंच क. करेछे. तं ते माटे. ए तेमज ए नि. हण्या, कु कुमार.

जे मारे तो त्रण काळमां ए छोकरा उपर द्वेष नथी पण जक्ष मारही वेयावंच करेछे तेणे ए कुंवर मार्या जुवो ए कामने हरकेसीमुनीये वेयावंच करी बोलावी. ते माटे अपराधीने हणवां दोष नहीं, एम करीने साबद भक्ति ठरावे छे ते उत्तर एहवी मनुष्यने मार्ये भक्ति जाणोछो, तो तुमारे मते जु, लीख, चांचड, मांकड,

डांस, धीछी, सर्प, खुद्रजीव साधुना उपगरणमाहीला बाधाकारी होवे तेहने तावडे नाखवा, मारवा सुखे कल्पे खरा ? अपराधीने मारीने साधुने साता उपजावे तेहनो पाप तो नथी, तो खुद्रा पाणीने मारवां शंकायो कीम छो ? एहवी भक्ति तो अन्य तीर्थि सुलभबोधी होवे ते पण नथी करता. केवल पापथी बीए छे अने गणधरे तो सुत्रमां भक्ति कही थोडावी ते तो हरकेसीनु कहांण कह्यु छे जे हरकेसीये एम कह्यु ने हरकेसीमुनी तो छद्मस्थ छे चार भाषाना बोल्णहार छे माटे ते माण्य नीकळी केवळी भगवत ए कामने भक्ति न जाणे. एहवी भक्ति जीनमारगमां करवी कही होय तो गोसाळो जीवतो केम जाय ? ते वीचारो तथा आचारंगमां कह्युं साधु नावाये बेठा छे अने नावडीयो रीसाणोथको पाणीमां घोळे तो ते समये भगवंतनी आज्ञा ए छे जे,

तनो सुमीणे सीया दुमीणे सीया नो उचाययं मणं नियछेजा नो तेसिंवालाण घायाए वहाएसमुठेजा ॥

अर्थ.—त से. नो. नही सु भर्लु मन करे नहीं. तेम. दु माठु मन पण करे नहीं. जे हु मरी जइश. नो तेम ऊचा मननो पण वीचार करे नहीं नो ते बाळअज्ञानी (नाखवावाळो) तेनी घात पण चीतवे नहीं व तेम तेने पकडीने युद्ध करु एम पण चीतवे नहीं

मनमां पण भेरव न आणवो कह्यो तेना पुत्रादीकनी घात न चीतवे तो पचेंद्री मार्येथके विचराग भक्ति करी केम जाणे ? ए तो मीथ्यातमोहनीकर्मनो उदयज कर्मनो उदयज मारेछे, जे अनार्यनीपरे जीवहींसानी सुग गणता नथी

---

३१. वीस वेहरमानना नाम विषे

हींसाधर्मि कहे छे, तमे सुत्र ३२ मानोछो तो कहो वीसवेहरमानना नाम क्या सुत्रमां छे ? ने सुत्रमां नथी तो मानोछो कीम ? ते उत्तर सींद्धांत जंबुद्वीपपन्नती मध्ये कह्यु छे, जंबुद्वीपमां जघनपदे ४ तीर्थंकर होयज. ने अढी द्वीपमां २० होयज एटलु कह्यु छे ते वीस सासवता होवेज तेखना भजना ने श्री मंदीर प्रमुख नाम कहे छे ते तो सुत्रमां नथी अने सुत्रथकी मळतां पण नथी ते कीम वीपाकसुत्रे सुख विपाकमध्ये ते अध्ययने कह्यु छे, भद्रनंदीकुमार पुर्वभवे माहाविदेह खेत्रमां पुंडरगणी नगरीने विषे जुगवाहु जीनने मतिलाभ्या ससार परीत कर्यो मनुष्या

शरीरनी परे वळी कह्यो खमो अपराध वळी नहीं करु, ए आचार्यवकी भक्त छे उपगरण अचेतन खमाव्यो न थायो सु जाणे ? ए उपगरणनी असातना टाळी आचार्य सहीत उपगरणनी असातना टाळी छे ए थापना करे थाप नहीं तो कहीए,जे आचार्य तो गया अने तेहना उपगरणनी पछे असातना टाळे तो था पना कहीये,पीण आचार्यना सयण,आसण शीष्य न भोगवे,असातना लागे ते कहे पछे आचार्य वीहार कर्या केडे तेहीज सयणासण शीष्य सुखे भोगवे.जीम चंपानगरीने बागमां मयथीशीलापट छे से उपर भगवते वेशीने उपदेश दीधो. ए उववाइ सुत्रमां कह्यो छे पछे भगवते विहार कीधो पछे तेहीज पृथ्वी सीलापट उपर गौतम,सुधर्मा स्वामी समोसर्या ते बेठा के न बेठा? जो न बेठा होय तो उपगरणनी असातना टाळी कहीये, अने बेठा वीचारे तो भगवतनी भाव नीक्षेपानी असातना टाळी कही. इम आचार्यना उपगरण पण जाणजो, तथा तमारे मते उपगरणनी, थापनानी, मोटेरानां पगलां थाप्या होय तेहनी असातना टाळवी कहोछो ए लेखे तो गुरुना छांयडानी छांया पडे छे, ते उपर पण पग देवो न घटे, जे छाया गुरुनी ठहरी ते माटे तथा गुरु केडे शीष्य चालतो होय तेहने गुरुना पगनी छांया पडी ते उपर पण पग देवो न घटे. जो मुवा गुरुना पगलां पुजोछो, तो जीवता गुरुना पगलानी तो असातना टाळो, पण एटलो वीवेक नथी

---

१० धर्म अपराधीने मारे लाभ कहे छे ते उपर

वळी हींस्याधर्मि कहेछे, उत्तराध्ययन बारमे गाथा बत्रीसमीमांहि ब्राह्मनना पुत्र देवताये मार्या त्यारे ब्राह्मणने हरकेसी मुनीये कह्यु जे,

पुव्विचइह्हच अणागय च ॥ मणंपदोसोन मे अथिकोइ ॥
जक्खाह्रु वेयाव पडिय करेति ॥ तम्हाह्रु एए निहया कुमारा ॥३२॥

अर्थः—पु पुर्वकाळ, वर्त्तमानकाळ. अ अनागतकाळ च. पुरणे म. प्रद्वेष मे मुजने अ छे नहीं कोइ अल्पमात्रपण. ज जक्ष जे मणी वे वेयावच क. करेछि तं ते माटे. ए तेमम ए नि हण्या, कु कुमार.

जे मारे तो त्रण काळमां ए छोकरा उपर द्वेष नथी पण जक्ष माहरी वेयावच करेछे तेणे ए कुंवर मार्या जुवो ए न्यायने हरकेसीमुनीये वेयावच करी बोलावी. ते माटे अपराधीने हणवां दोष नहीं, एम करीने सावद्य भक्ति ठरावे छ ते उपर एहवी मनुष्यने मार्ये भक्ति जाणोछो, तो तुमारे मते गु, कीस, चोवट, मांकड,

इहां चार नाम साधुना ते माटे अत्र चैत्य शब्दे साधु जाणवा.

२. श्री ठाणांग श्रीजे ठाणे पहेले उद्देसे शुभ दीर्घ आउखो बांधे तीहां

तहारुवं समणवा माहाणवा वंदीत्ता नमं सित्ता ससक्कारेत्ता सम्माणेचा कल्लाण १ मंगल २ देवय ३ चेइय ४ पुजवासीत्ता.

अर्थ—त. तथारुप स. श्रमण. मा. माहणने. वं वांदे नं. नमस्कार करीने स वस्त्रादीक सत्कार देइ. स. सनमान देइ. कल्याणकारी. मं मंगळकारी. दे. धर्मदेव, चे ज्ञान सहीतछो प सेवाकरे चैत्य साधु.

३. ठाणांग श्रीजे ठाणे श्रीजे उद्देसे देवता थइ धर्माचार्यने वांदवा आवे

आयरिएतिवा १ उवझायतिवा २ पवतिए तिवा ३ थेरेतिवा ४ गणीतिवा ५ गणधरेतिवा ६ गणावच्छेदतिवा ७ वदामी नमंसामी सक्कारेमी समाणेमी कल्लाण १ मंगल २ देवयं ३ चेइय ४ पज्जुवासामी ॥

अर्थ—आ. धर्माचार्य छे १ उ उपाध्याय छे. २, प धर्मना प्रवर्तावणहार छे ३ थे. थीवर साधु छे ४ ग गर्णी गच्छाधीपती ५. ग गणधर ते भगवंतना शीष्य ६, गच्छनो अंस वेटलोपक समुदाय ते लेइ वीचरे ७. ए सातने वं. वांदु छु न. नमस्कार करु. स सत्कार दऊ स सन्मान देउ क. कल्याणकारी. म मंगळकारी. दे. धर्मदेवने. चे. ज्ञानवंत ५ सेवा कर्रु एम जाणीने आवे अत्र चैत्य केतां साधुम

४. चोथे ठाणे वांदवा आवे तीहांपण ए सातने पाठ एहीज छे.

५. भगवती सतक बीजे उद्देसे पहेले खधके एम वीतव्यु.

समण भगव महावीर वदीत्ता नमसित्ता सक्कारेमी समाणेमी कल्लाण मगल देवय चेइय पज्जुवासामी ॥

अर्थ—स श्रमण म भगवत म. महावीर व. वांदुछुं न. नमस्कार करु स. सतकार करीने स सनमान करीने क कल्याणकारी म मगळकारी दे. धर्मदेव. चे ज्ञानवत. ५. मत्ये सेवा करुछुं इहां अरीहत ते चैत्य रुप के मतिमा नथी समारी

ओए निश्चे इहंउपमे एम माहावीर स्वामीये गौतमने कह्यु ते जीवे (भद्रनंदी कुमारे), माहावीर पासे संजम पण लीधो इम इहां पुखलावती वीजयमां श्री मंदीर नामे तीर्थंकर तो नथी कह्या जुग बहु नामे कह्या छे, तुमे कहो छो श्रीमंदीरस्वामी सतरमां, अढारमा जीननां अंतरे जनम्या छे वीसमाने वारे दीक्षा लीधी छे आवती चोवीसीमां मुक्ति जशे, पण ए लेखे नाम मळयो नथी. वळी वीस नाम नियमा एहीज छे तेम नथी ए नामनी भजना छे ज्ञानी जाणे ते स्वरू. वीस नाम परंपराथी कहेछे. ए वातनो पक्षपात अमारे नथी ते जाणजो

३२. चेत्य शब्दे सुत्रमां कह्या ते ठाम कहे छे

१. चेइयं शब्दे तीथकर तथा साधु कह्या छे. प्रथम तो श्री सुयगडांगने बीजे सुतखंधे सातमे अध्ययने गौतमे उदकपेढालने कह्यु

आउसतो उदग्गा जेखलु तहारुवस्स स मणस्सवा माहणस्सवा अतिए एगमवि आ यरिय धाम्मियं सुवयण सोचा निसम्म अप णो चेव सुहुमाए पडीलेंहाए अणुत्तर जोग खेम पय लभिएसमाणे सेवि तावि त अढाइ परीयाणइ वंदइ नमंसइ स कोरेइ समाणेइ कल्लाणं १ मगल २ देवयं ३ चेइय ४ पजुवासई

अर्थ—आ अहो आवस्वावंत उ उदक. जे जे नीश्चे ते तथा रुप. स. श्रमण मा ब्राह्मणनी अ समीपे ए एकपणे आ आर्य ध धर्मसंबंधीयो. सु. रुडुं वचन. सो सांभळीने नि. सम्यक प्रकारे हृदये धारीने अ आपणथकी सु कुसाग्रनी परे तिक्षण बुद्धे करी प आलोचीने शुभो हु पण एहवुं प्रधान अ सर्वथी ख स्थाए जो. रुडुं मुक्ति साधवा जोग्य प पद लाधु एतावता एहथकी में एक पद रुडुं लीधुं से ते पुरुषने पण तो पहीलो लोकीकपणे तं ते उपदेशनो देणहारनो अ. आदर करे, प. ए पुन्य ए सु करी जाणे वं तेहने वांदे तेहने आगळे अं जळी करे. न मस्तक नमाडे स वस्त्रादी पडीलाभे स. अजयुस्थानादीक सनमान दइ क. तथारुपे मोटुं कल्याण नीपनु म मंगळीक. दे धर्मदेव चे चत्य मनने मस्नाकरी साधुने प सेवा करे सामान्य लोक पण हीतोपदेश दातारने पुजे कीधुं कहेवो अनुत्तर धर्मना उपदेशना दातार कोइक वंदनादीक वांच्छे नहीं, तथापी तेणे सांभळनारे ते परमार्थोपकारी भणी यथाशक्ति विनयादीक समाचरवुं

सणीनाचे कर्यु ते देखी मूलबुनही पुर्वभद्र जसने पण असणीजाओ जाव पजुवा णीजाओ एटला बोल कह्या छे ते लोकीक सबधी कल्याणं प्रमुख जाणवा तीम प्रतिमाना पण इह लोक संबंधी कल्याणं प्रमुख जाणवा. पुर्वे साधु तथा भगवतनी परे कल्याण प्रमूख लोकोत्तरपक्ष जेवा नहीं ते केम जे भव्य, अभव्य, समदृष्टी, मीथ्यादृष्टी सर्व पुजेछे. ते माटे लोकीक कल्याण

१९. दसाश्रुतखधमां दसमा अध्ययने राजा श्रेणीके चेलणाने कह्या

तहारुवाण अरहताण भगवताणं जाव वदामी नमसामी सक्कारेमी सम्माणेमी कल्लाण मगल देवय चेइय पजुवासामी एयण इहभवे परभवेइ हियाए ५ बोल ॥

अर्थ—त तथारुप अ अरीहतने महीमावतने भ. भगवतने. जा. जावत. वं आपणे स्तवीए न आपणे प्रणमीये कायायकी. स आपणे सतकार करीए स. आपणे सनमान दइए. क. कल्याणना हेत ते कल्याण म दुरीत टाळे ते मगळ. दे देव छे चे ते चैत्य चीरचीत्त प्रसन्न करीए एहवाने प. पर्युपासना ते सेवा कर्ये ए ए भगवंतने वदनादीक आपणने इ. इह भवने विषे प. पर भवने विषे. ही हीतने पथ्य तेहने १ सुखने अर्थे २ क्षमाने अर्थे एटले संगते ३ मोक्षने अर्थे. ४ जावत आनुगामीकर ते भवनी परंपराइ सुमार्गु धधनो कारण होसे ए पांच बोल अत्र चैत्य श्री महावीर.

२० उववाइमां घणा लोक एम कहे. समण भगवं महावीर वंदामी जाव पजुवासामी कहेतां श्रमण भगवंत श्री महावीरने आपणे स्तवीए जावत पर्युपासना ते सेवा करीए. अत्र चैत्य ते साधु जाणवा

२१ रायप्रसेणी मध्ये केसवाइसई अत्र चैत्य ते साधु जाणवा.

२२ वळी प्रदेसीए धर्माचार्यनी भक्ति वखाणी तीहां कह्यु जे जयेव धमारिय पासेजा तयेव वंदिजा जाव पजुवासेजा कहेतां जीहां हवे धर्माचार्यने देखे तीहां वांदे जावत पर्युपासना करे. अत्र चैत्य ते साधु

२३. उपासगदसामा आणंदे कह्यु अन्यतीर्थिना देव १, अन्यतीर्थिना गुरु २ अन्यतीर्थिये ग्रह्या जीनना चैत्य ३ ते वांदु नहीं बोलावु नहीं दान दऊ नहीं इहां अन्यतीर्थिये ग्रह्या चैत्य ते साधु पण प्रतिमा नहीं जो प्रतिमा चैत्य होवे तो बोले कीम ? दान लीए कीम ? ते माटे चैत्य ते साधु जाणवा

६. वळी स्वधके प्रत्यक्ष भगवतने वदना कीधी. त्यां पण ते पाठ छे.

७ वळी सतक बीजे उदेसे पांचमे तुगीयाना श्रावके एम वीतम्बु वेरे समणं वंदामी नमंसामी जाव पजुवासामी अत्र थीवर भगवत ते चैत्य जाणवा.

८. ९. सतक अगीयारमे उदेसे नवमे सीवराजरुषी; तथा सतक अगीयारमे उदेसे अगीयारमे पोगलनामे परीव्राजके इम कह्यु.

तंगछामीण समण भगव महावीर वदामी जाव पजुवासामी एयणे इहभवे परभवे हियाए जाव भवीस्सई ॥

अर्थ–तं ते भणी हुं जाऊ स श्रमण. भ भगवते म श्री महावीरप्रत्ये व वांदु. जा. जावत प. सेवा करुं. ए. ए टाणे. क्षमाने इणभवने विषे तथा परभवने विषे इत्यादी अणुगामीपताये हुसे पठजाल्गे कहेवो अत्र चैत्य ते श्री महावीर जाणवा.

१० –११ सतक नवमे उदेसे तेत्रीसमे रुखमदत्ते देवानंदाने कह्यु सतक बारमे उदेसे बीजे जयतीये मृगावतीने कह्यु ते पाठ पण एमज

१२. सतक अगीयारमे उदेसे बीजे आलभीगा नगरीना श्रावके भगवतने वांद्या, तुंगीया नगरीना श्रावकनी परे

१३ सतक बारमे उदेसे पेहेले सख श्रावके आलभी।याना श्रावकनीपरे वदणा कीधी ए तेर ठाम मळता कह्यां.

एयंणं इहभवे परभवे हियाए भाव अणुगामीयत्ता ॥ ए रुगे पूरा पाठना आलापा कह्या ए चार ठामे माहावीरने चैत्य कह्या

वळी सतक सोळमे उदेसे पांचमे गगदत देवताए चीतम्बु
समण भगवं महावीर वंदामी जाव पजुवासामी ॥

१५. सतक ८ मे उदेसे दसमे सक्रेंद्रे श्री महावीर वांद्या त्यांपतेपाठ छे.

१६ रायप्रदेसी अमलकपा नगरीये रह्यां , " "

१७ अभीयोगी देवताये कह्यु तथा पोते सयमेव आल्या "

१८ सुरीयाभे तथा विजयपोळीये तेमज अनेरा देवताये प्रतिमा पूजी दाढा पुजी तथा अभीयोगी देवताये प्रतीमा पूजी बताबी जे सीद्धायतनमां एक सोने आठ जीनपडीमा ने दाढाए तुमने तथा सुरीयाभे विमानवासी देवताये अचणीजाई वंदणीजाई जाव पजुवासणीजाई कह्यु तेमां पण कल्लाण मगल देवय चेइय पजुवा

सणीआर्ड कहुं ते देसी मूळसूत्रनही पुर्वभद्र जसने पण अचणीजाओ जाव पज्जुवा-णीजाओ एटला बोल कह्या छे ते लोकीक सबंधी कल्याणं प्रमुख जाणवा तीम प्रतिमाना पण इह लोक संबंधी कल्याणं प्रमुख जाणवा पुर्वे साधु तथा भगवंतनी परे कल्याण प्रमुख लोकोत्तरपक्ष सेवा नहीं ते केम जे भव्य, अभव्य, समदृष्टी, मीथ्यादृष्टी सर्व पुजेछे. ते माटे लोकीक कल्याण.

१९. दसाश्रुतखंधमां दसमा अध्ययने राजा श्रेणीके चेलणाने कह्यु

तहारुवाण अरहंताण भगवंताणं जाव वंदामी नमंसामी सक्कारेमी सम्माणेमी कल्लाण मगल देवयं चेइयं पज्जुवासामी एयण इहभवे परभवेइ हियाए ५ वोल ॥

अर्थ—त तथारुप अ अरीहंतने महीमावंतने भ. भगवंतने. जा. जावत. वं आपणे स्तवीए न आपणे प्रणमीये कायायकी. स आपणे सतकार करीए स. आपणे सनमान दइए. क. कल्याणना हेतु ते कल्याण मं दुरीत टाळे ते मंगळ. दे देव छे चे ते चैत्य चीरचीत्त प्रश्न कहीए एहवाने प. पर्युपासना ते सेवा करीये ए ए भगवंतने वदनादीक आपणने इ. इह भवने विषे. प. पर भवने विषे. ही हीतने पथ्य तेहने १ सुखने अर्थे २ क्षमाने अर्थे एटले संगते ३ मोक्षने अर्थे. ४ जावत आनुगामीकर ते भवनी परपराइ सुमार्नु बंधनो कारण होसे ए पांच बोल अत्र चैत्य श्री महावीर.

२० उववाइमां घणा लोक एम कहे. समण भगवं महावीर वंदामी जाव पज्जुवासामी कहेतां श्रमण भगवंत श्री महावीरने आपणे स्तवीए जावत पर्यु-पासना ते सेवा करीए. अत्र चैत्य ते साधु जाणवा

२१ रायप्रसेणी मध्ये केसवाइसई अत्र चैत्य ते साधु जाणवा.

२२ वळी प्रदेसीए धर्माचार्यनी भक्ति वखाणी तीहां कह्यु. जे जथेव धमारिय पासेजा तथेव वंदिजा जाव पज्जुवासेजा कहेतां जीहां हवे धर्माचार्यने देखे तीहां वांदे जावत पर्युपासना करे. अत्र चैत्य ते साधु

२३. उपासगदशामां आणंदे कह्युं अन्यतीर्थिना देव १, अन्यतीर्थिना गुरु २ अन्यतीर्थिये ग्रह्या जीनना चैत्य ३ ते वांदु नहीं. बोलावु नहीं दान दऊ नहीं इहां अन्यतीर्थिये ग्रह्या चैत्य ते साधु पण प्रतिमा नहीं जो प्रतिमा चैत्य होवे तो बोले कीम ? दान लीए कीम ? ते माटे चैत्य ते साधु जाणवा

६. वळी खधके प्रत्यक्ष भगवतने वदना कीधी. त्यां पण ते पाठ छे.

७ वळी सतक धीजे उदेसे पांचमे तुंगीयाना श्रावके एम चीतव्यु बेरे भगवंत वंदामी नमंसामी जाव पजुवासामी अत्र थीवर भगवत ते चैत्य जाणवा.

८. ९. सतक अगीयारमे उदेसे नवमे सविराजरुषी; तथा सतक अगीयारमे उदेसे अगीयारमे पोगलनामे परीव्राजके इम कह्यु.

तगछामीण समण भगव महावीर वदामी जाव पजुवासामी एयणे इहभवे परभवे हियाए जाव भवीस्सई॥

अर्थ–तं ते भणी हु जाऊ स श्रमण. भ भगवंते म श्री महावीरप्रत्ये व. वांदु. जा. जावत ५. सेवा कर्रु ए. ए ठाणे. क्षमाने इहभवने विषे तथा परभवने विषे इत्यादी अणुगामीपणाये हुसे एठकाळगे कहेवो अत्र चैत्य ते श्री महावीर जाणवा.

१० –११ सतक नवमे उदेसे तेत्रीसमे रुखभदत्ते देवानंदाने कह्युं सतक बारमे उदेसे बीजे जयंतीये मृगावतीने कह्युं ते पाठ पण एमज

१२. सतक अगीयारमे उदेसे बीजे आलभीया नगरीना श्रावके भगवंतने वांद्या, तुंगीया नगरीना श्रावकनी परे.

१३ सतक बारमे उदेसे पेहेले सख श्रावके आलंभीयाना श्रावकनीपरे वंदणा कीधी ए तेर ठाम मळता कह्यां.

एयंणे इहभवे परभवे हियाए भाव अणुगामीयत्ता ॥ ए लगे पूरा पाठना आळावा कह्या ते चार ठामे महावीरने चैत्य कह्या

वळी सतक सोळमे उदेसे पांचमे गंगदत्त देवताए चीतव्यु

समण भगवं महावीर वंदामी जाव पजुवासामी ॥

१५. सतक ८ मे उदेसे दसमे सोंकेंद्रे श्री महावीर वांद्या त्यांपणपाठ छे.

१६ रायप्रश्नेसी अमलकपा नगरीये रह्या „ „

१७ अभीयोगी देवताये कह्यु तथा पोते सयमेव आण्या „

१८. सुरीयामे तथा विजयपोळीये तेमज अनेरा देवताये प्रतिमा पूजी दाढा पुजी तथा अभीयोगी देवताये मतीमा पुजी बताबी जे सीद्धायतनमां एक सोने आठ जीनपडीमा ने दाढाए तुमने तथा सुरीयाभे विमानवासी देवताये अचणीजाई वंदणीजाई जाव पजुवासणीजाई कह्युं. तेमां पण कल्लाण मगळ देवय चेइय पजुवा

सक्कारणिजे णं मंगलं देवयं चेइय पज्जुवासणिजे ॥

अर्थ–स साचा छे स. साचो प. उपाय छे. व घणा ज. लोकने अ अरचवा योग्य छे. वं. वांदवा योग्य छे पु. पुजवा योग्य छे स. सत्कार करवा योग्य छे. क. कल्याणकारी. म. मगळीकनो करणहार. दे मत्यक्ष देवरुप चे. देवतानी प्रतिमा प. सेवा करवा योग्य.

१० आरंभने ठामे प्रतिमाने पण चैत्य कह्या छे.

११ पुढवी हिंशति भद्युधिया कहेतां पृथ्वीकायने हणे माटी बुद्धीवाळा; तथा पांचमे आश्रवद्वारे चैत्य परीग्रहमां कह्या तीहां; तथा पांचमे संवरद्वारे प्रतिमा जोवी नीखेधी त्यां ए त्रणे ठामे प्रतिमाने चैत्य कह्या

३१. देवलोकमां चैत्यवृक्ष कह्यां छे. ते प्रतिमा नीश्रत छे माटे.

एम सीद्धांतमां चैत्य शब्द घणा ठामे कह्यो छे पछे जेहवो ठाम होवे तेहवो "चैत्य शब्दनो" अर्थ जाणवो

---

३१ धर्म करणीना फळ कह्या ते विषे.

सीद्धांतमां दस समाचारीना फळ उत्राध्ययन छवीसमे कह्यां. तीर्थंकरगोत्र बांधवाना वीस प्रकार ज्ञाता आठमे अध्ययने कह्यां. तप, संजमना फळ तुंगीया अधीकारे कह्यां तीवेर वोलना फळ उत्तराध्ययन ओगणत्रीसमे कह्यां तपस्याना फळ उत्तराध्ययन त्रीसमे कह्यां प्रवचन माता पाळवना फळ उत्तराध्ययन चोवीसमें कह्यां, ब्रह्मचर्यना फळ उत्तराध्ययन सोळमे कह्यां दस वेयावचन फळ ठाणांग, भगवती, उववाइ, विवहारसुत्रे कह्यां, प्रतिमा घडाव्या, संघ काढवाना फळ तथा धीधी कोइ सुत्रे कही नथी जे ते मनुष्य लोकमध्ये सुत्रमां प्रतिमा पुजी एक द्रुपदी कहोछो ते पण निर्णय नथी करता के, कया तीर्थंकरनी, कोणे करावी, कये वारे करावी ते मांहीलो नाम ठाम पण नहीं अने पुजानी वीधी ते पण अविरती देवतानी भळामण दीधी. आणंद कामदेवादीक श्रावकनी भळामण पण नथी. पुजा पण छकायना वध सहित भगवतने न कल्पे तेहथी. वळी तुमे आज प्रतिमा पुजो छो तेने वस्त्र, स्त्रीनो फरस नथी करता जे अभोगी देवनी प्रतिमा माटे त्यारे एटलु नथी वीचारता जे स्त्री, वस्त्रना तो भगवंत अभोगी छे, तो शु फुल, पाणी, दीप, धुपना भोगी छे ? भगवंतने तो एके वस्तु न कल्पे, त्यारे शु जाणीने नतीवा

२४ एम उववाइमां अंबडने अधीकारे त्रण बोल बोमराव्या. ते आणंदमीत्ते सो राख्या ते बोल आणद्यकी जुदा कीम पडे ? ते माटे अरीहत ते वाते तो अरी हंतनी मातिमा ए बे देवमध्ये आव्या तो गुरु (साधु) वांदवानो पाठ कीहां ? ते माटे अम्र चैत्य ते साधु.

ए चोवीश सास्त्र चैत्यनी कही तेमां अरीहंतने साधुने चइत्य कह्यां ते ज्ञानवंत माटे ते भणी कह्या छे.

२५. ज्ञानने चैत्य समवायगे कह्यो छे ते कहे छे. एए सिण चोवीसाए तिथ मराण चोवीसं चेइ रुखा पन्नता चोवीस चैत्यद्वस हुआ जे वृक्ष हेठे केवलज्ञान उपनो ते वृक्ष चैत्यवृक्ष कहीए. इस्यर्थ ते क्यां ?

जे वृक्षहेठे केवळज्ञान पाम्या ते ज्ञानचैत्यनी नेभाए वृक्षने चैत्य कह्यां

२६ वळी सतक वीसमे उदेसे नवमे चेइयाइ वंदीतए कह्यं तीहां श्री विच राग चइत्यने वांद्या छे. मानुखोत्तर पर्वते मतिमांना सीद्धायतनना कुट मुळथी नथी कह्या ते माटे.

२७ तथा चमरेंद्रने आळावे अरीहतेवा अरीहतचेइयाणिवा अणगारेवा भावी अप्पणो निसाए उठ उप्पयति कह्युं इहां पण " अरीहंताणं भगवताण अणगाराणं " सब्दे एकज अरीहतज जाणवा. पाछो सक्रेंद्र वीचर्यो त्यां चेइ नाम मुळगोजनथी. " अरीहंताण भगवंताणं अणगाराणं ", सब्दे एकज अरीहंतज जाणवा पाछो सक्रेंद्रे वीचर्यो त्यां पण चेइ नाम मुळगोज नथी. ए.अण सब्दे अरीहंतज जो चैत्य सब्दे प्रतिमानी नेभाय होय तो चमरेंद्रना भवनमां सारस्वती हती तीछेलोके, द्वीप, समुद्रे पण सारस्वती मतिमा हती, ऊंचु मेरुपर्वते प्रमुखे तथा सुधर्मविमाने सीद्धायतनमां नजीक हती तेहने सरणे कीम न गयो ? प्रतिमानी नेभाय ठरी नहीं.

२८ वळी उत्तराध्ययने वनवृक्षने पण चैत्य कह्यो अध्ययन नवमे गाथा नव मीना चेरेस बे पदमां मिहीलाए चइएवछे ॥ सियछायमणोरमे कहेतां मीथीला नगरीनेविषे उद्यानमांहि वृक्ष हतो, सीतळ छांया छे जेहनी तेवो, मनने रमणीक तथा उत्तराध्ययन २० मे वीजी गाथाना चोथा पदमां मंडी कुछिसी चेइए कहेतां मंडी कुक्षी नामा वनने वीषे

२९. ज्ञानवंत माटे जक्षने पण चैत्य कह्यो उववाइमां पुर्णभद्रयक्षतरनुं स्थानक छे

सचे सचोवाए वहु जणस्स अचणिजे वदणीजे पुजणिजे

सक्कारणिजे णं मंगलं देवयं चेइयं पज्जुवासणिजे ॥

अर्थ–स साचा छे स. साचो प. उपाय छे. ब घणा ज. लोकने अ भरचवा जोग्य छे. वं. वांदवा योग्य छे पु. पुजवा योग्य छे स. सत्कार करवा योग्य छे. क. कल्याणकारी. म मगळीकनो करणहार. दे प्रत्यक्ष देवरुप चे. देवतानी प्रतिमा प. सेवा करवा योग्य.

१० आरभने ठामे प्रतिमाने पण चैत्य कह्या छे.

११ पुढवी हिंसति भदबुधिया करेतां पृथ्वीकायने हणे माठी बुद्धीवाळा; तथा पांचमे आश्रवद्वारे चैत्य परीग्रहमां कह्या चीहां, तथा पांचमे संवरद्वारे प्रतिमा जोगी नीखेधी त्यां ए प्रणे ठामे प्रतिमाने चैत्य कह्या

३१. देवलोकमां चैत्यवृक्ष कह्यां छे. ते प्रतिमा नीश्रत छे माटे.

एम सीद्धांतमां चैत्य शब्द घणा ठामे कह्यो छे पछे जेहवो ठाम होवे तेहवो " चैत्य शब्दनो " अर्थ जाणवो

---

३१ धर्म करणीना फळ कह्या ते विषे.

सीद्धांतमां दस समाचारीना फळ उत्राध्ययन छवीसमे कह्यां. तीर्थंकरगोत्र बांधवाना वीस प्रकार ज्ञाता आठमे अध्ययने कह्यां तप, संजमना फळ तुंगीया अधीकारे कह्यां तीवेर बोलना फळ उत्तराध्ययन ओगणत्रीसमे कह्यां तपस्याना फळ उत्तराध्ययन त्रीसमे कह्यां प्रवचन माता पाळवना फळ उत्तराध्ययन चोवीसमें कह्यां, ब्रह्मचर्यना फळ उत्तराध्ययन सोळमे कह्यां दस वेयावंचन फळ ठाणांग, भगवती, उववाइ, विवहारसुत्रे कह्यां, प्रतिमा घडाव्या, संघ काढवाना फळ तथा वीधी कोइ सुत्रे कही नथी जे ते मनुष्य लोकमध्ये सुत्रमां प्रतिमा पुजी एक द्रुपदी कहोछो ते पण निर्णय नथी करता के, कया तीर्थंकरनी, कोणे करावी, कये वारे भरावी ते मांहीलो नाम ठाम पण नहीं अने पुजानी वीधी ते पण अविरती देवतानी भळामण दीधी. आणंद कामदेवादीक श्रावकनी भळामण पण नथी पुजा पण छकायना वध सहित भगवतने न कल्पे तेहवी वळी तुमे आज प्रतिमा पुजो छो तेने वस्त्र, स्त्रीनो फरस नथी करता जे अभोगी देवनी प्रतिमा माटे त्यारे पटलु नथी वीचारता जे स्त्री, वस्त्रना तो भगवत अभोगी छे, तो सु फुल, पाणी, दीप, धुपना भोगी छे ? भगवतने तो एके वस्तु न कल्पे, त्यारे सु जाणीने चढीमा

पुजो छो ? साहमो भगवतने कळंक लगावो छो जे अभोगीने भोग करावोछो ते सारुं करता नथी

---

१४ महीया शब्दे फुलथी पुजा करेछे ते विषे.

हींसाधरमी कहेछे लोगसमध्ये कीत्तिय वदीय महीया पाठ छे ते "महीया" शब्दे फुलथी पुज्या कह्या छे एवो खोटो अर्थ करेछे ते उत्तर.

ए लोगसना करणहार तो गणधरदेव छे; साधु, साधवी, श्रावक, श्राविकाने सीखववो सजमी, वीरती, सामायक, पोषाना धर्मी सावद्यकरणीनो उपदेश न दीये. अने तुमे "महीया शब्दे" फुलपुजा कोना कह्याथी जाणी ? गणधरना कह्याथी जाणी छे? गणधरने पुछे जे फुलनी पुजा करुं? तीवारे हा तथा ना शुं कहे? जे काम गणधर पोते न करे ते कामनी बीजाने आज्ञा केम दीये? गणधरने तो नवकोटीये पचखाणछे सावद्य करणी त्रीवधे त्रीवधे करवाना पचखाण छे, ने महीया शब्दे तो भावपुजा कही छे. जे पुजाने भगवंत सत्कारेछे ते करवी कही छे अने फुलथकी भगवतनी पुजा गणधरे बतावी होय तो पांच अभीगम साचवतां सचीत वस्तु समोसरणमां आणवांनी ना केम कहे ? ते वीचारजो.

---

१५. छकायना आरंभ निखेधनो आळावो.

श्री आचारंगने प्रथम सुतस्कंधे सस्त्र परीज्ञा अध्ययने छ उदेसा छे, तेमां छकायनो आरंभ निखेध्यो छे तीहां एम कह्यु छे जे,

तथ खलु भगवया परीन्ना पवेवेइ इमस्स चेव जीवीयस्स १ परिवंदणा २ माणण ३ पुयणाए ४ जाइ मरण मोयणाए ५ दुख पडीघायहेउ ६ ॥

अर्थ–त त्यां (कर्मबंधनना कारणने विषे) ख निश्चे भ भगवंत प ज्ञान बुद्धीये प हींसाये कर्मबंध, दयाये करे निर्जरा ए प्रज्ञा कही इ इमे चे पुरुषे. जी जीवतव्यना अर्थे १ प प्रसंसाने अर्थे २. मा मानवाने अर्थे ३ पु पुजा सळाघा पामवाने अर्थे ४ जा जन्म म मरण. मो मुकवाने अर्थे ५ दु संसारी दुःख. प टाळवाने अर्थे ६.

ए छ कारणे छकायनो आरंभ करेछे तेहने ए फळ लागशे जे,

सं से अहियाए तं से अबोहिए कहेतां ते पृथ्वीना आरंभ ते पुरुषने अहीतनो अर्थ होइ, ते आरंभ तेने बोधबीज अणपामवानो अर्थ होय, अहीतना कारण थासे. वळी एस खलु गंथे १ एस खलु मोह २ एस खलु मारे ३ एस खलु नीरए ४ कहेतां ए पृथ्वीनो आरंभ, नीश्चे कर्मबधनुं कारण १, ऐ नीश्चे अज्ञानपणानु कारण २, ए नीश्चे अनंत मरणनु वधारनार ३, ए पृथ्वीनो आरम नीश्चे नरकनुं कारण ४

ए छ कारणनी हींसा कही तमे धर्महेते हींसा करो छो ते छ कारण मांहि छे के बाहेर छे ? सातमु कारण तो हींसानु भगवते कह्यु नथी. ए लेखे पुजानीं हींसाना फळ लागे के न लागे ? अने समदृष्टी संसार हेते छ कारणमां अर्थपाप करेछे, पण पांडुओ जाणे छे तेणे करी एहवां फळ न लागे ने तमे तो पुजाहेते आरभ करीने अनुमोदोछो आरम वधारवाना कामी छो तमारी सी गती थासे ते सुत्रन्याये वीचारी जोजो

वळी एहीज पांचमे उदेसे वनस्पति ने मनुष्यनो तुल्यपणो कह्यो ते

इमंपि जाइ धम्मिय एयंपि जाइधम्मियं १ इमपिवुढी धम्मिय एयपिवुढि धम्मिय २ इमपि चित्तम तय एयपि चित्तमं तय ३ इमपि छिन्नलो मितिय एयपि छिन्नलो मितिय ४ इमपि आहारग एयपि आहारग ५ इमपि अणिच्च एयपि अणिच्च ६ इमपि असासय एयपि असासय ७ इमंपि चयावच्चय एयपि चयावच्चय ८ इमपि विपारिणाम धम्मिय एयंपि विपरिणाम धम्मिय ९ ॥

अर्थ–इ जेम मनुष्यने शरीर. जा जेम जन्मने ध स्वभावे जन्मा छे. ए ए मनुष्यनु शरीर जा जन्मनुं ध स्वभाव छे. १ इ ए मनुष्यनु शरीर वु द्ध स्वभाव पामे छे ए ए वनस्पतीनु शरीर पण वु द्ध पामे छे, २ इ इम मनुष्यनुं शरीर चि चेतनावंत छे ए एम ए पण चेतनावंत छे ४ इ ए मनुष्यनु शरीर जेम छो छेद्यो मि मुकाय ए तेम ए पण छेद्यो मुकाय ४ इ ए मनुष्यनु शरीर जेम आ आहार लीये ए तेम ए आहार लीये ५ इ, ए मनुष्यनु शरीर अ अनित्य अथीर ए एम ए पण अनीत्य अथीर ६ इ ए मनुष्यनु शरीर जेम अ असास्वतु (सीण सीण आवाची मरण). ए तेम ए पण असास्वतु ७ इ. ए मनु

व्यतु शरीर जेम. ए पुष्ट अ हीणु थाय ए तेम ए वण जुइ, हीणुं थाय ८. १- ए मनुष्यनुं शरीर जेम, वि. रोगादीके वणसवानो स्वभाव छे. ए तेम ए वन रोगादीके करी. वि वीणसे ९

ए आळावे "इमंपी" कह्यु ते वनस्पती आश्रे अने "एयपी" कह्यु ते मनुष्य आश्रे सरखु उपजवु, वधीं पामवु, रोगपणु, वीणसवु, मरवूं सरखुं देखाडयुं ते वृक्ष देहरामां उग्यु होय तो साधु हाथे छेदे छतां दुषण नहीं एवु कहेतां परभ्रेकनो भय नथी गणता ते रुड्ड नथी. वनस्पतीनो संघटो करे तो सुत्रमां प्रायश्चित कह्युं छे अने तमे वृक्षने हणतां पण वीचारता नथी एहवा अधर्म करो छो

---

१६. जीव दयासारु साधु खोटु बोले कहे छे ते विषे.

हींसाधर्मि कहे साधुने विहार करतां वचमां कोइ वद्धवा गुरुने पुछे जे तमे क्यांइ मृगादीक दीठां? तीवारे आचारंगने भाषा अध्ययने पेहेले उदेसे कह्यो छे जे, जाणेत्तिवा नोजाणंति नोवदेजा तीहां इम अरथ करे छे जे जाणतोथको (साधु) नथी जाणतो एम दयाने अर्थे जुठु बोले, ए वात सुत्र विरुद्ध कहे छे सुत्रमां तो पांचे आश्रवना फळ सरखां कह्यां छे जीव उगार्यानो जुठो बोल्या पेठां साधुने बीजु व्रत तो न रह्यु साधु जुठु बोले नहीं "जाणतीवा" कहेतां साधु जाणतोथको मृगादीकने, "नोजाणती" कहेतां जाणु छु एम "नोवदेजा" कहेतां न कहे, एटले मौन करी रहे. तीवारे हींसा न जुठ ए बे दोष टाळ्या, ने बीजुं व्रत पण पाळ्यु एम शुद्ध अर्थ जाणवो जुठं बोलवानुं सु काम छे ने एम सीद्धांतना अर्थ फेरव्ये स्यो काम छे? दसविकाळीक ७ मे अध्ययने पेहेली गाथामां कह्युं छे जे

पउन्ह खलु भाषाण । परीसषाय पन्नव ॥ दोन्हं तु विणयसिखोदोन भासे जसव्वसो

अर्थ—च चार. ख भीबे मा भाषाना स्वरुपने ९ जाणीने ९ प्रज्ञावंत साधु दो सत्यमसत्य १, असत्य २, ए बे भाषाने तु पुरण बी बोलवाना उपयोगने सि. सीखे दो असत्यबी भाषाने १. सत्या असत्या २ ए बे भाषा न बोले स सर्वथा प्रकारे

एमां असत्य अने मीश्रभाषा बे कारणे नीकारणे पण बोलवी निखेधी छे, वळी पन्नवणा अगीयारमे पदे कह्यो छे,

सरीर प्पभवा भाषा दोहि समएहि भासए भासं भासा चउप्पगारा दोनिय भापा अणुमयाउं ॥

अर्थ—स. सरीर प्रभावथा पुर्वे कही छे. पण इहां काययोगे भापा पुद्गळ ग्रहेछे "आहच्च भद्रबाहुस्वामी गीणेये कायेण निसरे तहय वाइएण जोगेण इति" एक समे कायाये ग्रहे बीजे समे बचन नीसरे एठले बे समये भापा एक समये भापाना पुद्गळ ग्रहे, बीजे समये भापा परीणमावी नर्संगे. ए भापाना चार भेद कह्या तेमां साधुने बे भापा अनुमत छे ते कही सत्यभापा १ असत्यासत्या २ ए बे भापा.

एमां पण सत्य, व्यवहार ए बे भापानी अणुआज्ञा तीर्थंकरे दीधी तथा आ चारंग बीजे श्रुतस्कंधे भापाअध्ययने पहेले उदेसे कह्यु छे जे

अतीता जेय पडुप्पन्ना जेय अणागया अरहंता भगवंता सव्वेते एयाणिचेव चत्तारी भाप एजाताइ भासिसुवा भासतिवा भासस्सतिवा ॥

अर्थ—ए. ए. च चार भापानी जातने अमे एम न कह्यु जे तीर्थंकर चार भापा बोले. ता ते भा० सरुपने भाखताहुवा. भा भाखेछे वर्त्तमान जीन भा० आगळे तीर्थंकर भाखशे (अर्धमागधी भापाये).

इहा हींसाधरमी कहे, तीर्थंकर पण चार भापा बोले एम करी जुठुं बोलवु जाणे ठरेछे, जेम तेम करी जुठुं बोलवुं ठरे तो पछी हींसा पाठ ठरे पण एम नथी जाणता जे थी तीर्थंकर जुठु बोले ए वात केम बोले इहां तो एम कह्यु छे जे त्रण काळना तीर्थंकर चार भापाना सरुपने परुपे छे. जे ए सत्यभापादीक इम चार ओळखावे छे जेम बे भभापी, बे अभभापी; बे बोलवी, बे न बोलवी तथा ४२ भेद करीने ओळखावी एम कह्यो छे, पण तीर्थंकर जुठो बोले ए अर्थ नथी तथा समदृष्टी चार भापा बोलतां आराधक पन्नवणा पद अगीयारमे कह्यो छे अने अस जती चार भापा बोलतां पण विराधक, तेमांही हींसाधरमी कहे सासननो उढाह थयो होवे, चोथो आश्रव सेव्यो होय, तो जुठ्ठ बोलवो, टांकशो एहवे समदृष्टी जुठु बोले. ए अर्थ खोटो कहे छे समदृष्टी चार भापाना सरुपने जयार्थ जाणनोथको बोलेछे ते माटे जथार्थभापी थयो, आराधक कह्यो. अने मीथ्यात्वी चार भापा

सरुपथकी जाण्याविना बोलेछे ते माटे वीराधक कह्यो. वीम जाणवुं ते तो ज्ञान छे पण मीथ्यातनीं नेथाये तण ज्ञान कह्या तीम समदृष्टी यथार्थ जाणतो चार भाषा बोले तेणे आराधक. अने मीथ्याती सरुप जाण्या वीना बोले ते कारणे चार बोल तो वीराधक कह्या इहां चार भाषा समदृष्टीने बोलवानी भगवंतनी आज्ञा नथी.

---

३७ आज्ञाये धर्म (दयाये नहीं) कहेछे ते विषे

हींसाधर्मि कहेछे जे आज्ञाये धर्म कहीये, पण दयाये धर्म न कहीये अनुथे दयायकी द्वेषभाव छे दयाये धर्म कहेतां तो देहरां कराववां, मतिमा पुजवी, सघ काढवा ए काम अटकाइ जाय. ते माटे दयाये धर्म न कहीए आज्ञाये धर्म कहीये. पण इस्युं एम नथी जाणता जे भगवंतनी आज्ञा दयामांज छे, ने हींसामां तो आज्ञा नथी. धर्मरुची अणगार ज्ञाता अध्ययन सोळमे कह्यो; धर्मगोस गुरुए कह्युं जे, ए कडवो तुंबडो "स्नेहवगाढ" निर्दोष थंडीले जइने परठवो. ए आज्ञा गुरुनी हती. पछे सीष्ये तेहवो ठाम न देख्यो, तीवारे सर्व पोतेज आहार कीधो इहां कीडीनी दया पाळवां गुरुनी आज्ञा रही के भांगी ? ए साक खावानी तो गुरुनी आज्ञा हती नहीं एणे कर्षण्ये धर्मरुची अणगारे गुरुनी तथा तीर्थंकरनी आज्ञा राखी के भांगी ? जो आज्ञा वीराधक होय तो स्वारथसीद्ध केम जाय ? ए लेखे दया पाळी तेणे आज्ञा आराधीज कहीये. आज्ञा ने दया ते एकज छे तीवारे हिंसाधरमी कहेसे, जो आज्ञा अने दया एकज छे तो नदी उतरवां आज्ञा तो छे, पण दया कीहां रहेछे ते उत्तर. साधु नदी उतरेछे ए तो असक्यपरीहार छे. अने आकुटी जाणीने उतरेछे. पण भगवंतने अनाकुटी कही छे तथा तेहनो परमाण पण बांध्यो छे. समवायग सुत्रे एकवीसमे समवाये कह्यो छे जे,

अंतो मासस्सतउ उदग लेवे करेमाणे सबले अने अंतो संवछरस्स उदग लेवे करे माणे सबले ॥

मासमां बे तथा वरसमां नव उतरवानी आज्ञा नथी जो होय तो 'कप्पइ अंतोमासस्स दो उदग लेवा' एम नथी एक भण लेप करे तो सबळो दोष लागे एम वीक देखाडी वळी उतरता साधु हर्ष नथी पामता जेम तमने पुज करतां हींसा थाय छे ते हींसा तमारे तो अनुमोदवा लागे छे अने साधुने नदीनी हींसा ते नींदवा लागे छे, साधु नदी अणउतर्यां पश्चाताप न करे अने तमे पुज

अणकीधे पश्चाताप करो छो. साधुनी नदी, ने तमारी पुजा एकसरखी नथी पुजा उपर नदीनो द्रष्टांत मळग्ये नथी ते जाणजो

---

१८. पुजा ते दया कहे छे ते विषे.

हींसाधरमी कहेछे अमारे पुजा करता हींसा थाय ते दयाज छे परीणामने सुद्धपणे करीने आगळ भावनानो लाभ घणो थाय. जेम कुवो खोदतां धुळ लागे पण पछे भावना मळयी मेल उतरी जाय. ते उपर ज्यांथी देहेरांनी नीव खोदाय. इटा चढे, पुजा थाय, नाटीक करे तीहांलगे तो हींसारुप धुडनी धुड नीकळे तीवारे तमारी पुजा वध थाय. ए लेखे तो धुडज नीसरे छे. कुवाना खोदवानो द्रष्टांत पुजा उपर मळयो नहीं धुडयकी पाणीनी प्रकृति भीन्न छे तेम पुजायकी दयानी प्रकृति पण भीन्न छे तीवारे हींसाधरमी कहे प्रश्नव्याकरण पहेले सवरद्वारे दयानां साठ नाम कह्यां छे, तेमां "पुया" एहवो दयानो नाम छे, ते माटे पुजा ते दया जाणवी. तीवारे कहीये जो हींसासहीत पुजा तेने दया ठसावसो तो, ए साठ नाम दयाना छे तेमां "जणो" (यज्ञदेवनी पुजा) एहवो नाम पग दयानो छे ए लेखे पशुवद्धकरी यज्ञ करेछे ए पण दयामांज ठरशे दयानो यज्ञ तो हरकेसी मुनीये ब्राह्मणने उत्तराध्ययन बारमामां ४१–४२ गाथामां कह्यो ते यज्ञ दयामांज गणीये जेमां कांइ हींसा न आवी ते.

छजीवकाए असमारभता । मोस अदतच असेवमाणा ॥
परीगह इथिउं माण माया एव परीणायचरेज दता ॥ ४१ ॥
सुसवुडा पचहि सवरेहि । इह जीवियं अणवकंखमाणा ॥ वोसिठ काया सुइचत्त देहा । माहा जय जयइजन्नसेठ ॥ ४२ ॥

अर्थ–छ छ जीवनी कायाना आ आरमने अणकरतोयको मो असत्यने. अ अदत्तने. पुन अ अणसेवतोयको प परीग्रहने. इं स्त्रीने. मा. मान. मा मायाने ए ए पूर्वे कह्या तेने प मार्गजाणीने पचखीने मर्जे द इन्द्री दमतोयको ४' सु भलीपरे सवर्यां छे आश्रव जेणे. प पांच,सवरे करी इ ए मनुष्यलोकने विषे जी असजमी जीवतव्यने अ अणवांछतोयको वो ममताभावने करवे करी वोसराबी छे काया जेणे सु मनजोगे करी पवीत्र सुमुखा अणकरवेकरी तज्या छे देह जेणे, एवा साधुते म. मोटाछे कर्मशत्रुनो जय जेहने विषे जे एहवा जन्नपाटे.

थेए मधान जाइने य. जे जे क्रीया बहु बचनने ठामे एक बचन छे इत्यादीक व्यय ते माटे. ४२

ए यज्ञ दयामां; पण द्रव्ययज्ञ दयामां कीम ठरे ? तमे कहोछो पुजानाम दय-नो छे त्यारे ब्रह्मा, विष्णुनी पुजा सेमां छे ? ए पण तमारे मते दयामांज आवे. तथा साधुने " समणा माहण " कह्या, समण माहण ते साधु कहीवे तमारे केले समण साक्यादीक तथा माहण जेटला ब्राह्मण तेटला सर्वे साधुज थास्ये. एम पुन्यउपयोगी यका केम बोलो छो. दयानो नाम मगळ पण छे तमारे केले आठ मंगळीक तथा आंबाना पाननी मानरवाळ बांधे ए पण दयाना साठ नाम थावे. एम लोकीक पक्षनां रुडां नाम दयाने कह्यां पण करतब्य लोकीकनां नथी मन्या. दयानुं नाम " ओसवो " कह्यु ते ओच्छव ते पण दया ए केले नाटीक ओच्छव ते दया होय तो सुरीयामने आज्ञा कीम न दीधी ? तथा पुजा तेहीज तमारेमते दया छे तो साधु पुजानी आज्ञा कीम न दीये ? दयानी तो आज्ञाज छे

वळी हींसाधर्मि पोतेज जे मानसीत सुत्र माने छे तेना त्रीजा अध्ययनमां द्रव्यपुजा, भावपुजा, ने सावज पुजाना अधीकार छे तथा धम्य पुजाना ने साव-जपुजाना फळ देखाडयां छे ते पाठ त्रीजा अध्ययनथकी.

भावच्चण चारीत्ताणुठाण कट्ठुग्ग घोर तव चरण दच्चच्चरणं वीरय सीलपुया सकार दाणादिचोक गोयमा भावच्चण मुग्गविहारी आयदवच्चणतु एयच गोयमा केई अमणीय समय सझावे उस नाविहारी नियवासिणो आहिठपरलोगपचखाए सयमती इङ्गिरस सायागारवाइमुछीए रागदोसा मोहाहकार ममकारीयं सजम सद्धम्मपरंमुहे निदयं अकलुण एगतेण रोदक्क राभीग्गाहिर्ठ मि-छदिठीणो कयसावजजोग पचखाणविप्पमुका सेसगारंपरीगाहे दव्व त्तातए भावत्तातए नाममेत्तं मुंडे अणगारे महव्वयधारी स-मणे वीभवीत्ताण एवंमन्न माणे अमहे अरहंताणं भगवताणं गध मल्लं यदीव धुया पुयासकारेहिं अणुदियह पक्कव्वाणाति छुछम्पण करेमित्तं तहचिउतच गोयमा समणुनजाणेजा सुविदी-

छकायहीयं तु संजमवीउनकप्पए सव्वहाअविरए सुउणसे कसीणठकम्मपयकारियतु भावछयमणुठे गोयमा मनीसेसयदे सविरयअविरयाणतु भयछ अवोछीन्नघोरदुपगिदावय जलिउउव्वेवेयसंसत्तो अणतखुत्तो दुगधा खार पीत वसजलुसपुय कढकढत खटलटलस ह्मंतो गोयमा ॥

अर्थ—(इवे भावपुजा तीर्थंकरनी) चा. चारीत्र अनुष्टान. क उग्रघोर. त. तप च चारीत्रने वांदवु नमस्कार करवो ते भावपुजा द इवे ध्रव्यपुजा कहे छे वी व्रत आदरवां ते सी. सील आचाररुप पुजा. स. सतकार करवो ते दा. दान, सीयल, तप, भाव ते सरवे ध्रव्यपुजा गो. अहो गौतम वळी भावपुजा ते मा. भावपुजा वळी मु उग्रवीहारी मणी होय आ. ध्रव्यपुजा ते जतीने देवुं ते. ए. जीनसासनने विषे गो. अहो गौतम के कोइक अमुनी स सीद्धांतना भाव जाण्या नथी. च सजमथी पडया वी वीयारथी थाक्या हारी नी. मतिबंधन वास सहीत अ. जेणे परलोकनी पीडादीठी नथी जाणता नथी स. पोताने मते चाले छे इ रीधी, रस, गारव सातागारवे करी मुरछाणा थका रा. राग, द्वेषेकरी सहीत. मो मोह अपकारेकरी सहीतं म. ममताने विषे प्रावे बध सहीत स. सजमथी मळा धरमथी उपरांठा नि. दया रहित त्रास रहीत पापनी सुग रहीत अ. करुणा रहीत अे अेकांतपणे रो रुद्रकरमना करणहार पाप करमे करी सहीत अभीग्रहीत मी. मीथ्याद्दष्टीनो धणी क सावज जोगना पचखाण करी वेगळां मुक्यां से. आरंभ परीग्रहना सग श्रीविषे अगीकार करीने. द ध्रव्यमात्र. भा भावमात्र. ना नाममात्र मु मुंड अणगारनाम. म. माहाव्रत धारी साधु अेहवू मनमां स समणे म धारसे अे. अेम मानतायका अ अमे अ अरीहतने भ भगवतने गं गंधेकरी म फुलेकरी. दी दीवेकरी धु धुपेकरी पु पुजा सत्कारेकरी अ दीन दीनयकी उपम करतायका प पक्षात्कारे अमे तिर्थंकरनी स्थापना करसुं ते सरवे ध्रव्यर्लींगानु वचन त तेहेव नहीं गो अहो गौतम स ध्रव्यलींगीनु वचन भलुं पण न जाणवुं सु. तीर्थंकर छकायना हेतकारी धरम कहे माटे. स सजमना जाण थे पुफादीक पुजा करे नहीं अणुमोदे नहीं तो श्रावकने सावजपुजा केम कहे स सर्वथा अवरतीने पण आदरवा जोगप नहीं, पुजा करवा जोगप नहीं क करम खप करवा काजे आठ करम खप करवा काजे भा सज

जमरुप भावपुजायकी करम क्षय थाय गो. अहो गौतम म अणुव्रती, देसव्रती. म. समद्रष्टी, अव्रती सर्वेने. म भावपुजा आदरवा जोग्य म हवे सावज प्रव्य-पुजाना फळ देखाडे छे ज तेणे दीरघदुःख स्वरुप अगननु बळर्यु ते दुवेदु नथी. म. अनंतीवार दुख पामशे दु वळी दुरगप मद्दे फरी खरडया. खा. खार पी. पीतोडा सळखम तेनो समोह छे. व परवी रुधीर तेनो समोह छे. क दुमनीपरे एकाळो एकळे तेम दुख गाढो. छ दाझगरा रोगनी परे बळबळता उळबळाट बच्च करे. गो अहो गौतम सावज ध्रव्यपुजाना एहवां फळ पामे.

ए वीगेरे माहानसीतसुत्रना त्रीजा अध्ययनमां अधीकार घणा छे ते ग्रंथ वधी जवाना सबबथी आंही सारांसमात्र खुलासा करेलछे जेथी वधु अधीकार माहानसी तथी जोइलेवा. सीवाय तेज सुत्रना पांचमा अध्ययनमां पण तेवा अधीकार छे ते पण जोवा

(रुदरहु माहानशीतनो विषय आ ग्रंथ छपाववो शरु कर्या बाद श्री भाव-नगरना सुज्ञ श्रावकोए तरफथी रूखाइ आव्यो तो तेओ साहेबोना आग्रहथी तेमन मानखावर कींचीतमात्र खुलासा करवामां आव्यो छे.)

---

१० प्रवचनना प्रतिनिकने हणवां दोष नथी कहेछे ते विषे

हींसाधर्मि कहेछे प्रवचनना प्रतिनीकने हणवो तेनो दोष नथी, तेनी साख नसीतचुर्ण मध्ये कही छे जे, वाटमां वाघनो भय हतो तीहां आचार्य घणे परीवारे आव्या वाघनो भय जाणीने सीष्योने कह्यु गच्छने राखो तीवारे सीष्ये कह्यु केम राखीये, तीवारे गुरु कहे परीक्षा अविराधवे पछे विराधवे राखो. पछे सीष्ये राखे मण सींह मार्यो सीष्ये प्रायच्छीत माग्यु गुरु कहे तु सीद्ध छे तने प्रायच्छीत न आवे. ते माहा फळ उपायो एम कही आगळाना हस्यावकी दया काढी तेनो उत्तर जो सींह मार्ये प्रायच्छीत नथी, तो गोसाळे बे साधु मार्या तो, एहवा अपराधीने हण्यो नहीं केम ? भगवंते हणवानो पण उपदेश केम दीधो नहीं ? अने पोतानुं मत भांगीने आगळाने उगारे तेनुं पाप नहीं तो अंबडना सातसें सीष्य तृषा परीसहे पराभव्या मुवा. तेमां एक जण आज्ञा देव साव सें जीवत पण विचारागनी आज्ञा एम नथी जे पोतानां मत भांगीने आगळाने उगारवो इ सुत्रविरुद्ध कहे छे भगवंतनो मारग तो ए छे जे अंतगडसुत्रे मध्ये श्री कृष्णे पुछर्यु जे गजसुकमाळ कीहां ? त्यारे भगवंते कह्यु, " साहिय अठे " सुकि

गमनरुप कार्य अर्थ साध्यो त्यां भाइना वद्धक उपर कृष्णने द्वेष आव्यो त्यारे भगवंते कह्यु.

माणं तुम्म कन्हा तस्स पुरिसस्स पउभावजहिं एव खलु कन्हा तेणं पुरीसेण गयसुकमालस्स अणगारस्स साहिजे दिन्ने॥

अर्थ–मा. रखे तु तुम्हे. क. हे ! कृष्ण त ते पु. पुरुष उपरे. प. द्वेष करशो तेम द्वेष म करो. ए. एम ख. नीश्चे. क हे ! कृष्ण ते. वे. पु पुरुषे ग गजसुकमाल अ अणगारने सा साह्य्य दी. दीधी

जेम तमे वृद्धपुरुषना इटवाळा फेरा टाळ्या तेम ते पुरुषे गजसुकमालना फेरा भवटाळया. त्यारे कृष्ण कहे ते पुरुषने हु केम जाणीश ? तीवारे भगवंते कह्यु तमने द्वारकामां जातां साहमा देखी ठीयाचेव ठिइभेएण काल करिसइ कहेतां उमोन थयो थीती भेद करीने. काळ करशे

एम इसारतमां ओळखाव्यो. जे तमने देखी उमोयको हेठो पडीने मरशे तीवारे तु जाणीस जे ए पुरुष गजसुकमाळने मारणहारो छे, पण प्रगट नाम भगवंते कह्यु नहीं प्रतिनीकने मारवो, हेरवो एवो कर्म जीनमारगमां केम होवे ? ते वीचारी जोजो

४० गुरु माहाव्रती ने देव अव्रती कहे छे ते विषे

हींसाधर्मि आवस्यक करे त्यार थापनाचार्य कांटा हाडकाना करी गुरु ठरावी तेने खामणा देवे, पण ते थापनाचार्यने पुष्प, पाणी, धुप, दीप कांइ न करे, ते केम जे गुरु माहाव्रती छे. तेने सचीतनो संघट घटे नहीं पण विवेक विगर एटलु न जाणे जे गुरु माहाव्रती छे त्यारे देव सु अव्रती छे ? ए सचीतनो संगट देवने केम घटसे ? एम तो विचारो ?

---

४१ जीनप्रतिमा जीनसरखी कहे छे ते विषे.

हींसाधर्मि कहे जे जीनप्रतिमा जीनसरखी छे देवलोक पर्वते ते जघन्य ७ हाथ उत्कृष्टी ५००) धनुष्य प्रमाणे ते तीर्थंकरना ऊपपग प्रमाण छे पुजा करतां नमोथुण पण करे छे, त्यारे पुछीये जे अवगाहनातु तो सरीखपणु छे, पण गुणनो सरीखपणो केम नथी ? ज्ञान, दर्शन, विगेरे केम नथी तथा जीनवरने मुख आगे पांच अभीगम साचवे छे अने ए प्रतिमाने फुल, पाणी, वस्त्र, आभूपण, धुप, दीप,

गीत, नृत्य, भोग केम करावे छे ? संसारमां मनुष्यलोको पण जेहवो पुरुष होय तेवी छबी चीतरे छे. ने मलेच्छलोक मंस, सुराना भोगी छे, तो तेना देव पण मंस, सुरा स्वादेछे माता, भेरु, हनुमान, जोगणी प्रमुख आगळे अजा, महीष मारेछे. विष्णु, देव ब्रह्मा, सीव, साम, कार्तिक गणेश, सरस्वती, ए उज्वळ देव छे, तो तेहनी पुजामां पान, फुल, धुप, दीप, होय पण मस सुरादीक न होवे. जे वस्तुना भोगी देवता होय ते वस्तु तेहनी प्रतीमाने पण पुजामां काम आवे. तीम जे वस्तु विचरागने कल्पे ते वस्तु विचरागनी प्रतिमाने चडवता होय तो एम जाणीये जे प्रतिमा विचरागनी होय. पण जे जीवननी रक्षा श्री वितराग करे, अने ते जीवना वदयकी विचरागनी प्रतिमा पुजीये ए वात केम मळे जो विचराग फुल, पाणी, धुप, दीप वस्र, भूषणना भोगी होय तो तो पुजामां निर्जरा होय, करनारो पण ससार समुद्र तरे, एटलो लाभ होय पण विचरागे जे वस्तु त्यागी ते जो भोगवे तो तो माहा पाप लागेज, पण आमत्रे तोपण पाप लागे. उत्तराध्ययन वीसवे अनाथी मुनीने राजाये अजाणपणे भोग आमंत्या पछे समकीत पाम्यो तीवारे(पुर्वे भोग आमंत्या) ते अपराध खमाव्यो. ते गाथा सतावनमां जे

पुच्छिऊणं मए तुम्भं झाण । विग्घोय जोकउं ॥
निमंतियाय भोगेहिं । तं सव्व सिरसेहि मे ॥

अर्थ–पु पुछीने. म. में तु. तुमने. झा धर्मध्याननुं वि विघ्न भाव जो जे कीधु. नि आमंत्रण दीधुं. मो. भोग करु, हे संजती हुं भोग भोगव इत्यादीक. तं. ते सर्वे सि. मस्तके करी खमावुं छउ. मे. माहरो अपराध सर्वे

तो श्री विचरागने (वोसराव्या) भोग केम काम आवे. तथा देवतानी रीते भक्तिपुजा करोछो तो देवताए वस्र पेहराव्यां छे ते तमे केम नथी पेहरावता. एवडुं जोगीपणु वळी केम राखी रह्या छो ?

वळी जीनप्रतिमा जीनसरीखी छे तो केम नथी केता ? जे भरत, तिर्थंकर सास्वता छे, तिर्थंकरनो वरहो हुं करवा करोछो ? वळी बळदेवे वासुदेवे वासुदेव, चक्रवर्तिए चक्रवर्ति, तिर्थंकरे तिर्थंकर, ए एक क्षेत्रमां बे थाय नहीं एवो अनादीकाळनो थीतीभाव छे अने जीनप्रतिमा जीनसरखी कहो छो, तो एक क्षेत्रमां सेंकडा गमे प्रतिमा भेळी केम थइ ? ए अछेरं केम कर्युं वळी तिर्थंकर वीचरे त्यांथी फरता पचीस पचीस जोयणलगे मार,मरकी, सचक्र

चक्रना भय वीगेरे भगवंतना पुन्यने अतीसेकरी घणा उपद्रव नहीं अने जीनप्रतिमा जीनसरखी छे तो तेमांनो एक पण भय केम टळतो नयी ? माटे भ्रमनाथे मुलोमां

---

४२. हींसाधर्मि अने गोसाळामतिनो मुकाबलो.

गोसाळामतीनो मत कहे छे—सुयगडांग बीजे सुतस्कंधे छठे अध्ययने कह्यु

सीउदगंसिवउ वीयकायं ॥ अहायकम्मं तह इथियाउ ॥
एगंत्तचारीसिह अम्म धम्मे ॥ तवस्सिणो णाभिसमेतिपावं ॥७॥

अर्थः—स सचीत पाणी सेववुं (पीवुं) बी. साळ, गोधमादीकनो उपभोग करवो अ. आधाकरमी अहार लेवो त. तेमज तथा. इ स्त्री नो प्रसंग पण करवो ए. एकाकी विहारनेविषे उद्यमवतने ३. इ इणे प्रकारे आपणने परने उपकार हुइ इम कहेछे अ अमारा धर्मने विषे. प्रवर्तताने. त तपस्वीने णा. पाप लागे नहीं यद्यपी सीतोदकादिक कांइएक कर्मबंधनो कारण छे तथापी धर्मधार शरीरने राखवाने अर्थ. करतां थकां एकलविहारी तपस्वीने बंधन नथी ७

१. अद्रकुमारने गोसाळे कह्यु शरीर रक्षणे धर्म अमारो छे. सीतोदग पाणी बीजकाय, फळ, फुल, आधाकरमी आहार, अने स्त्रीने सेववो कारणे पटदर्शनाना भोगववा तेहनो दोष नहीं, ते सरधा तमारी पण छे आद्रकुमारे पाछुं कह्यु तेज सुत्रमां तेज ठेकाणे नवमी गाथामां.

सिवाय वी उदग इथियाउ ॥ पडीसेवमाणा समणाभवति ॥
जागारीणोवि समणाभवतु ॥ सेवतिउतेवि तहप्पगार ॥९॥

अर्थ—सि कदाची बी. बीज, साळ, गोधुमादीक. उ. सचीत पाणी. इ स्त्रीयादीक. प पटदर्शनानां परिभोग करतायकां स. तपस्वी हुइ आ तो गृहस्थ पण देसांतरने विषे विचरतां स. साधु तपस्वी हुई (थाय) से. सेवे, भोगवे. अ ते पणे त तथाप्रकारे जेम व्रतीने एकल विहारादीक तेम गृहस्थने पण धनाधिपार्गे ने अवस्थाये आसावतने बधन पण एकाकी विहारपणु हुइ क्षुधा तृषादीकना कष्ट सही पणे कारणे ते पण तपस्वी गण्यो. ९.

२. भगवती सतक १५ मे गोसाळानो मत कह्यो त्यां सीदा वेगेरेयकां.

गीत, नृत्य, भोग केम कराये छे ? संसारमां मनुष्यलोको पण जेहवो पुरुष छबी चीतरे छे. ने मलेच्छलोक मंस, सुराना भोगी छे, तो तेना देव पण मंस, सुरा स्वादेछे माता, भेरु, हनुमान, जोगणी प्रमुख आगळे अजा, महीष मारेछे. विष्णु, देव ब्रह्मा, सीव, साम, कार्तिक गणेश, सरस्वती, ए उजळ देव छे. जे तेहनी पुजामां पान, फुल, धुप, दीप, होय पण मस सुरादीक न होवे. जे वस्तुके भोगी देवता होय ते वस्तु तेहनी मतीमाने पण पुजामां काम आवे. तीम जे वस्तु विधरागने कल्पे ते वस्तु विधरागनी प्रतिमाने चडवता होय तो एम जाणीये जे प्रतिमा विधरागनी होय. पण जे जीवननी रक्षा भी वितराग करे, अने ते जीवना वद्धयकी विधरागनी प्रतिमा पुजीये ए वात केम मळे जो विधराग फुल, पाणी, धुप, दीप वस्त्र, भूषणना भोगी होय तो तो पुजामां निर्जरा होय, करनारो पण ससार समुद्र तरे, एटलो लाभ होय पण विधरागे जे वस्तु त्यागी ते जो भोगवावे तो तो माहा पाप लागेज, पण आमंत्रे तोपण पाप लागे. उत्तराध्ययन वीसवे अनाथी मुनीने राजाये अजाणपणे भोग आमंत्या पछे समकीत पाम्यो तीवारे(पुर्वे भोग आमंत्या) ते अपराध खमाव्यो. ते गाथा सत्तावनमां जे

पुछिऊणं मए तुझं झाण । विग्घोय जोकउं ॥
निमंतियाय भोगेहिं । तं सव्व सिरसेहि मे ॥

अर्थ–पु पुछीने. म. में तु तुमने. झा धर्मध्याननुं वि विघ्न थाव जो जे कीधुं नि. आमंत्रण दीधुं भो. भोग कर, हे संमती तुं भोग भोगव इत्यादीक. तं. ते सर्वे सि. मस्तके करी खमावुं छउ. मे. माहरो अपराध सर्वे

तो भी विधरागने (वोसराव्या) भोग केम काम आवे. तथा देवतानी रीते भक्तिपुजा करोछो तो देवताए वस्त्र पेहराव्यां छे ते तमे केम नथी पेहरावता. एवुं जोगीपणु वळी केम राखी रह्या छो ?

वळी जीनप्रतिमा जीनसरीखी छे तो केम नथी केता ? जे भरत, इर्वतमां तिर्थंकर सास्वता छे, तिर्थंकरनो वरहो सुं करवा कहोछो ? वळी बळदेवे बळदेव वासुदेवे वासुदेव, चक्रवर्तिए चक्रवर्ति, तिर्थंकरे तिर्थंकर, ए एक क्षेत्रमां वे थाय नहीं एवो अनादीकाळनो थीतीभाव छे अने जीनप्रतिमा जीनसरखी कहो छो, तो एक क्षेत्रमां सेकडा गमे प्रतिमा भेळी केम थइ ? ए अछेरं केम कर्युं । वळी तिर्थंकर वीचरे त्यांथी फरता पचीस पचीस जोयणलगे मार, मरकी, सचक्र

चक्रना भय वीगेरे भगवंतना पुन्यने अतीसेकरी घणा उपद्रव नहीं अने जीनम विमा जीनसरखी छे तो तेमांनो एक पण भय केम टळतो नथी? माटे भ्रमनाये मुक्योमां

---

४२. हींसाधर्मि अने गोसाळामतिनो मुकाबलो.

गोसाळामतीनो मत कहे छे—सुयगडांग बीजे सुतखंधे छठे अध्ययने कह्यु

सीउंदगंसिवउ वीयकाय ॥ अहायकम्मं तह इथियाउं ॥
एगंत्तचारीसिह अम्म धम्मे ॥ तवस्सिणो णाभिसमेतिपावं ॥७॥

अर्थः—स सचीत पाणी सेववुं (पीवुं) वी. साळ, गोधमादीकनो उपभोग करवो अ. आधाकरमी आहार लेवो त. तेमज तथा. इ स्त्री नो प्रसंग पण करवो ए. एकाकी विहारनेविषे उद्यमवंतने ड. इ इणे प्रकारे आपणने परने उपकार हुइ इम कहेछे अ अमारा धर्मने विषे. प्रवर्त्तताने. त तपस्वीने णा. पाप लागे नहीं यद्यपी सीतोदकादिक कांइएक कर्मबंधनो कारण छे तथापी धर्माधार शरीरने राख वाने अर्थ. करतां थकां एकलविहारी तपस्वीने बंधन नथी ७

१. आद्रकुमारने गोसाळे कह्युं शरीर रखणे धर्म अमारो छे. सीतोद्ग पाणी बीजकाय, फळ, फुळ, आधाकरमी आहार, अने स्त्रीने सेववो कारणे एटलांवाना भोगववां तेहनो दोष नहीं, ते सरधा अमारी पण छे आद्रकुमारे पाछुं कह्युं तेज सुत्रमां तेज ठेकाणे नवमी गाथामां.

सिवाय वी उदग इथियाउं ॥ पडीसेवमाणा समणाभवति ॥
जागारिणोवि समणाभवतु ॥ सेवतिउतेवि तहप्पगार ॥९॥

अर्थ.—सि कदाची बी. बीज, साळ, गोधुमादीक. उ. सचीत पाणी. इ स्त्रीयादीक. प एटलावानां परिभोग करतायकां स. तपस्वी हुइ आ तो गृहस्थ पण देसांतरने विषे विचारतां स साधु तपस्वी हुई (थाय) से सेवे, भोगवे. अ ते पणे. त. तथाप्रकारे जेम नतीने एकल विहारादीक तेम गृहस्थने पण धनादि मार्गे ने अवस्थाये आसातनने बंधन पण एकाकी विहारपणु हुइ क्षुधा तृषादिकना कष्ट सही पणे कारणे ते पण तपस्वी गण्यो. ९.

२. भगवती सतक १५ मे गोसाळानो मत कह्यो. त्यां सीदा वेठांयकां.

वेसायाएणं वाल तपसीने संताप्यो किंमवं मुणी मुणी तिउदाहु जुएसे जायरीए

तीम हींसाधरमी ते दयाधरमीने देखीने सतावे पण छे

१ वळी गोसाळे पळनामां नपवडपरीहार मनथकी जोडीने कह्या. तेम हीं-साधरमी नवा ग्रंथ सेत्रजा माहात्म तथा वीवेकविळास आदी सोमले ग्रंथ जोडया छे. देहरां प्रतिमा जोडया करावयां संघ काढवाना लाभ देखाडवा माटे.

४. वळी गोसाळामधीए इमोए

अणति कम्माणि जाइंछ वागरणाइ वागरेतीतं लाभं अलाभं सुहदुह जीवीयमरणा

तेणेकरी भाणीवसमत कहाणो तीम हींसाधरमी पण लाभ, अलाभ, सुख, दुःख, जीवीत, मरणं मंत्र, जंत्र, जोतीप, वैदककरी आजीवीका करे छे.

५. वळी गोसाळे बे साधु बाळ्या, भगवतने तेजुलेसा मुकी पण पापथी न डर्यो. तेम हींसाधरमीये पण चदद सेंह चमाळीस बोधने होम्या. वळी दमामारगी साधुने मारे तेने पाप सवा मांसवीनो बतावे छे

६ गोसाळोने शरीरे दाधज्वर थयो तेवारे मोटी मीभीत पाणी छांटयो "अवकुणग हथगए" अबफळ हाथमां लीधां, कायथा आंबाना फल खावा मांडयां ते पाप ढांकवाने.

तस्स वियणं वजस्स पछाइण छयाए इमाइ अठ चरीमाइ पन्नवेतित चरिमे पाणे चरिमेगेय चरिमे नद्दे चरिमे अंजली कम्मे चरीमेपोखल सवट्टए माहामेहे चरिमे सेएण गधहथी चरीमे माहाशीलाए कठए संगामे अवचण इमीसे उसप्पिणीए चउविसाए तिथयकराण चरिमे तिथयरे सीझीसई ॥

अर्थः—तेने पण मद्यपानने आछान नीमीते मद्यपानोदी पापने नीमीते इत्यर्थ. एव समाण आठ चरीम मते परुपे वळी ए नहीं हुवे इम करीने ते करे छे चरीम पान १, चरीम गान २, चरीम नाटक ३, चरीम अंजली कर्म ४, चरीम पुष्कळ सवर्तमेघ ५, चरीम सेचनक हस्ती ६. चरीम माहासीलाकंटकनामासंग्राम ७, अ

ईनामहुपपुनः एहीज अवसर्पिणीने विषे चोवीश तीर्थंकरमांही चर्म तीर्थंकर हुं सीझीस, जावत अंत करीश तीहां पानकादीक चारने पोतानी अपेक्षाये चरमपणो एहवो पोताना निर्वाण गमने करी वळी भणकस्त्रायकी ए जीन निर्वाणकाळे जी नने अवस्ये हुवे एहने विषे दोष नहीं तथा नहीं एहने दाहोपसमने काजे सेवुंछुं एहने प्रकाशवानेअर्थे तथा अवघ ढांकवाने अर्थे हुवे. इम कह्युं तेम ढीसाधरमी पण पोते आचार कुसीळ सेवीने शास्त्रना पाठ जोडीने नवा देखाडे छे.

७. गोसाळे पोतानो नाम तीर्थंकर धराव्यो जे त्रेवीस पुर्वळा अने चोवीसमो हु, तीम ढींसाधरमी पण कहे माहावीरथकी अमे आटलीमे पाटे " गोयम सोहम " मंधुने पाटे अमे एम कहेछे

८ गोसाळे मरणांतवेळा कह्युं, माहारो महोच्छव सीवका (पालखी) करी घणा आडंबरथी काढजो चोवीसमा जीन मुक्ति गया एम कहेजो. तीम ढींसाधरमी पण कही कहीने मांडवी करावे, जय जय नदा, जय जय भद्दा कहावे. मुवाकेडे देरडी, पगलां करावे छे.

९ " अत्तीमराइय सीपरिणममाणासि पडीलद्ध समत्त " कहेतां: पछी गोशाळे सातमी रात्रीने परीणमतांयकां, नीवर्तंतांयकांने वीषे पाम्यो समकित तीहां कह्यु हा ! हा ! हु तो गोसाळो ? (मंखलीपुत्र) समणघाती. अरीहंतनो अवर्नीत पोताना शीष्य, श्रावकने तेडीने कह्युं जे डावे पगे जेवडी (दोरडी) बांधी सावथी नगरीमां—राजपंथ चौवटा सेरी, सर्व ठामे ताणी घसजो, मुखमांथुकजो ने कहेजो जे गोसाळो मखलीपुत्र श्रमणघातक, महा पापी, पाखंडी, छद्मस्तथको मुवो इम न करो तो तमने मारा सम छे, एम कहेतो काळगयो पछे सीष्य, श्रावक लोकमां लाजतांयकां उपाश्रयना कमाड दइ सावथी नगरी चीतरी थापना नीलेपो मांडी हळवे हळवे बोल्या राडुं डावे पगे बांधी ताणी कीधो. घस्यो, एम करीने सम मुकयो पण सावत्थी नगरी सावत्थी चीतरी थापना करी ए बरोबर जाणी तेम ढींसाधरमी पण थापना जीन जेवी मानेछे

१० उपासगदशा छठे अध्ययने कुडकोलीया श्रावकने गोसाळामती देवताये कह्यो " उठाणकर्म " (अणउद्यमे थाण करवे) पळवीर्यने कीधो कांइ नथी थावो थानार होय ते थाय. तीम ढींसाधरमी पण कहेछे, जो क्रीया कर्ये मुक्ति नथी मळती. भवस्थीति पाक्से त्यारे उद्यमविना मुक्ति मळशे.

११. १५ मे सतके गोसाळानो मोटो श्रावक अयपुलनामे राखे पोतने के जे माहारो धर्माचार्य गोसाळो मखलीपुत्र सर्व ज्ञानी, सर्व दर्शनी, सर्व देखणहार " तीय पडुप्प भ्रमणागय सव्वनु सव्वदर्सि " तेहने काके कांखाो प्रश्न पुछ्यु. ए गुरखे अजीनने जीन करी मान्यो; तेम ढूंढीयाधरमी पण ज्ञान, दर्शन धारीम, मतीग्रय पाणीवीना प्रतिमा अजीनने जीन करी माने छे. ए आदी ने पाठ जोतां ढूंढीयाधरमी गोसाळाना केडायतहीन जाणवा गोसाळाने माने ए पना माने छे.

---

४१. मुहपति सदाकाळ राखवा विषे

वळी ढूंढीयाधर्मि दयाधर्मिने कहेछे के तुमे मुहपति सदाकाळ केम राखो छो ! गोतम स्वामीये तो विजय रामानी राणी (गाराणी) तेने मृगालोडीयो मोटो पुत्र छे तेख चार पुत्र माहा सुंदराकार छे ने मृगालोडीयो माहा दुर्गंध छे. भोंयरामांहे राखे छे. राणी वेस पालटी, गाडलीमां आहार भरी तेहने देवा जाय छे ते देखवा माटे गौतमस्वामी गया राणीए वांघा. पुछ्युं के केम पधार्या छो ? गौतम कहे तमारो पुत्र जोवा त्यारे राणीए चार पुत्र सीणगार्या गौतमने पगे लगाड्या. गौतम कहे भोंयरामां राख्यो छे ते देखवो छे राणीये वस्त्र पाटख्यां भोंयराने, द्वारे गइ वीहां महा दुर्गंध जाणी राणीए गौतमने कह्यु, स्वामी दुर्गंध घणी छे ते माटे मुख बांधो तीवारे राणीनुं कहेण राखवा माटे " मुहपोतीयाये मुह बंधे " कह्युं. पण गौतमस्वामी तमारीपरे सदा मुहपति हेता नहीं. ते उत्तरः जो गौतमस्वामीये भोंयरा आगळ राणीना कह्याथी मोडे मुहपति बांधी मानोछो, तो राणीबळीवार करी चार कुंवर तो देखवा नथी आव्यो तारो पुत्र भोंयरामां राखे छे ते देखवा माटे आव्योछुं एटली वात शुं उघाडे मोडे करी ? मुहपति हती के नहीं ? तमारे केखे तो उघाडे मोडे बोल्या ठर्या. मुहपति ते भुंयरा आगळ दीधी ते पहेलां मोडे हाथ पण दीधो नथी कह्यो त्यारे उघाडे मोडे गौतम स्वामी बोल्या के कीम कीधो ते कहो ? देवाणुपीया ! साधुनो वेषज रजोहरणोनें मुहपति छे, जीम ब्राह्मणने जनोइ होवे ते रीते मुहपति तो गौतमने छेज पण भोंयराने द्वारे दुर्गंध जाणीने राणीना कहीण राखवा माटे नाके दुर्गंध न आवे तेम कर्यु ए तो समयामाथी माहा पुरुष छे, पण एटलो मक्तिवंतनो वचन राख्यो जीम रीखवदेवस्वामी लोच करतां इन्द्रना कह्याथी सीखा राखी थीम पण गोतम उघाडे मोडे बोलेज केम !

वळी कोइ कहे बराळ वायु निकळे तेणे वायुकाइया जीव मरे तेहनी जतनाने काजे मुहपति साधु देवे छे तो वायुबराळ नाकथी नथी नीकळतो ? नाकनो वायु केम नथी रोकता ? ते उत्तर. जेटलो रोकाय तेटलो रोकीये छीये सुत्रमां मुहपति कही छे पण नकपति नथी कही तीवारे हींसा धरमी कहे नाक पण मुखमर्यादामांही छे, तो पुर्णचद्रमा सरखो मुख कह्यो तीवारे नाक भेळो आव्यो के नहीं ? तेवारे कहीये जे पुर्णचंद्रमुख गणीये तीवारे नेत्र पण मुखमर्यादामां आव्या ते पण ढांकवा पण सुत्रमां मुहपति कहीछे ते मुख ढांकवा माटेज कही छे ते जाणजो.

---

४४ देवता प्रतीमा पुजे ते कोकीकखाते ते विषे

सोहम्म कप्पवासी देवो ॥ सक्कस्सउमरीस्सेणं ॥ सामाणिम संगमउ ॥ वेइ सुरिंदपडीनिविठो ॥१॥ तिल्लोक असम थाति ॥ पेहय तस्स चालण कार्उ ॥ अवज पासह हम ॥ ममशरगं मठ जोगंच ॥२॥

ए बे गाथा आवसकनी निर्युक्तिनी छे. सक्रेंद्रनो सामानीक सगामो देवता अभव्य मीथ्यादृष्टी विमाननो धणी तेणे प्रतिमा पुजी कही जो समकितखाते प्रतिमानु पुजवु होय तो मीथ्याती अभव्य कीम पुजे ? नमोथुणं कीम कहे ? अभव्येपहु पुजे तेणे प्रतिमा संसारहेते नतु मोक्ष

---

४५. श्रावक सुत्र न वांचे कहेछे ते विषे.

केटलाएक हींसाधरमी कहेछे जे, श्रावकने सुत्र वांचवा नहीं, ते उपर सुत्रना नामनी खोटी सासीओ देखाडे छे तेहनो उत्तर. तुंगीयाना श्रावकने आळावे "लदठा" कह्या पण "लदसुत्रा" नथी कह्या तेहना उत्तर ज्ञाता अध्ययन पेहेले तथा भगवती सतक अगीयारमे उदेसे अगीयारमे स्वप्नपाठकने "सुतय विसारए" कह्या ने "स्वप्नशास्त्रना लदठा" पण कह्या माटे सुत्रनो नीखेद नथी कर्यो वांप श्रावकने पण समवायंग तथा नंदीसुत्रमां, उपासगनी हुंडीमां "सूयपरीगाहा" कह्या ने तुंगीया अधीकारे "लदठा" कह्या स्वप्नपाठकने न्याये तथा श्रावकने पण "आ गमे तीवीहे पन्नते. तंजहा सुत्तागमे अथागमे, तदुभयागमे" छे के नथी ते कहो ?

तथा श्री प्रस्नव्याकरणना बीजा सवरद्वारना पाठ देखाडे छे " ते देविंद नरींद भासीयर्थ माहारीसीण समयप्पादिन " जे सत्यवचन भगवंते देवताने, मनुष्यने अर्थरुपे दीधु छे ने मोटारुषी साधुने सुत्ररुपे दीधुं एम घो पस्न प्राणीने अर्थ करे छे पण ए तो सहीज पाठ छे. इहां कांइ उथाप नथी उन्वाइमां श्री माहावीरे उपदेश दीधो अर्थ मागधीभाषाये सुत्ररुपे दीधुं तीहां देवींद्र ने नरींद्र पण हता ने रुषी, मुनी, जती, पण हता सर्वेने सुत्रार्थ दीधुं देवींद्रने, मनुष्यने, माहारुषीने जुदुं वस्तु नथी. तथा देवींद्र नरींद्रने अर्थरुपे कह्युं वळी उत्तराध्ययन तेरमे चारमी काव्ये कह्यु. महय रुत्ता वयण व्पसुवा माहणु गेया नरसघमज्ञे " इहां मनुष्यने सुत्ररुपे दीधु अने मोटारुषीने सुत्ररुपे दीधुं ते पण सामान्य वचन छे गणधर माहारुषीने अर्थरुपे दीधु कह्यु " अथ माहा मराहए " अनुजोगद्वारे सास्त्र तथा कोइ हठ वादी सुत्राक्षर प्रमाणेज अर्थ माने तेहने एम कहीये एहीज सत्यने अधीकारे प्रस्नव्याकरणे सत्य वरणव्यो तीहां एम कह्यु " मणुय गणाणं वंचदणीज अमरगणाणंच अचणीज असुरगणाणंच पुजणीजं " ए पाठनो हठ ताणे तेहने छेल्ले ए सत्यवचन मनुष्यगणने वंदनीक पण देवता असुरने वंदनीक नहीं अने देवताना गणने अर्चनीक पण मनुष्यने असुरने अर्चनीक नहीं असुरने पुजनीक पण मनुष्य, देवताने पुजनीक नहीं एवो सहीज वचन छे, तेम देवता, मनुष्यने अर्थरुपे ने साधुने सुत्ररुपे सत्य दीधुं ए सहीज वचन छे ए शब्द उपर हठ न करवो तथा श्रावक सीद्धांत वांचतां अनंत संसारी थाय ए पाठ क्या सुत्रनो छे ? देसव्रती श्रावक निर्मळ बार व्रतधारी, प्रतिमाधारी, ब्रह्मचारी अनेक गुण भडार " धम्मीयाधम्माणु " आदी बिरदनां धणी सुत्र वांचतां अनंत संसारी थाय तो अव्रती देवताइ " धम्मीय सयं पोथरण्णं वाएइ " कह्युं, ए देवता अनंत ससारी केम न थाय ? तेथी ए " धम्मीएसवे " ते लोकीक के लोकोत्तर ते कहो. जो लोकोत्तर छे तो देवता वांचे ने श्रावक अनंत संसारी थाय ए स्यो अन्याय ? अने लोकीक छे तो जीनपुजानी वीधी कीहांथी ? ते कहो लोकीकदेवनी पुजावीधी लोकोत्तरसास्त्रमां होय एहना यथार्थ उत्तर कहो.

निर्ग्रंथना प्रवचन ते सीद्धांतहीज कहीए उववाइ साधुना वरव कह्यो तीहां " एणमेव निगांथे पावयणं पुरस्काउ विहरती " एम कह्यो तथा भगवतीमध्ये जमालीनी माता कह्यो " एणमेव निगांथे पावयण सच अणुत्तरं " कह्यो तथा आवसकमध्ये " एणमेव निगांथे पावयण सच्चं अणुत्तरं " कह्यो ए त्रम सास्त्र,

सीद्धांतने प्रवचन कह्यां. तथा उत्तराध्ययने एकवीसमे पालक श्रावकने निर्ग्रंथना प्रवचनमां कोवींद जाण कह्यो निर्ग्रंथना प्रवचन ते सीद्धांतहीज छे अनेरु कांइ नथी. तथा ज्ञाता बारमे अध्ययने सुबुधी प्रधाने जीतशत्रु राजाने "सताण तहीयाण तथाण सब्भुयाणं" जीनप्रणीत सीद्धांत कह्यो ए चीरद सीद्धांतनाम छे. तथा राजे प्रतिबे संजम लीधो तीहां सीखवता बहु सुया कही ते संजम तो ततकाळ लीधो छे परमां तो सुत्र भण्यानी तमे ना कहोछो तो ए बहुसुया कीवारे थइ?

वळी कोइ कहे श्रावक सुत्र भणे ते आवसक सुत्र आश्री भणवो कह्यो छे तेहने एम कहीए जे आवसक उपर सुत्र भणवानी ना कहीं ते केसाहो तथा आ वसकमध्ये श्रावक "दुवागमे अथागमे" कहे छे ते सुत्र भण्यावीना शुं अतीचार आलोवे छे? गाम नाम्ही कु तो सीम तथा आवस्यक तो अनुजोगद्वारे "अतो अहोनिसेस" अकाळ वेळामां ने असज्झाइना दीवसमां पण करवो कह्यो एहने तो "अकालेकउ सज्झाय प्रमुख अतीचार नथी लागता ने जेहने अकाळ असज्झाइ लागे छे ते सुत्र भणवा तमे निखेधोछो त्यारे "अकालेकउ सज्झाओ" प्रमुख चार अतीचार लागता केम कह्या? ते कहो. तथा उववाइ मध्ये कोणीक राजा सुभद्रा प्रमुख राणी अनेरा पण लोके ज्ञातामध्ये मेघकुमार भगवती मध्ये खंधक सन्यासी, जमाळी प्रमुख रायपसेणीमध्ये रायप्रदेसी, चीत्तसारथी उपासगमध्ये आनंदादीक श्रावक उपदेशने अंते कह्यो जे "सद्दहामीणं भंते निगथं पावयणे पत्तियामीण रोएमीणं भंते निगथं पावयण" जो प्रवचन सीद्धांत सांभळ्यां नहीं तो समजाव्यां नहीं तो सर्दहा प्रतितरोच्या शुं? ए लेखे देवींद्र नरींद्रने प्रवचनरुपे सत्य दीठुं छे छे के नहीं? नर, सुरने अर्थ रुपेज दीठु ए हठ न करवो वळी भगवती सतक नवमे उद्देसे षत्रीसमे असोचाकेवळीने अधीकारे एम कह्यो छे जे.

असोचाणभंते केवलीसवा१ केवलीसावगसवा२केवलीसावीयाएवा३ केवलीउवासगसवा४ केवलीउवासीयासवा५ तपखीयसवा६ तपखीयसावगासवा७ तपखीयउवासगसवा८ तपखीयसावीयाएवा९ तपखीयउवासियाएवा १०

अर्थः—म अणसांभळीने धर्मफळनु फल वचन पुर्वकम धर्मनी रागथी भगवत केवळी जीन भगवतनो १ केवळीनीन पुछया तेणे केवळीनु वचन सांभळ्

ते केवळी श्रावक कहीए २ केवळीनी श्रावीका तेहनो ३ केवळीनी उपासना करनार तेहनो ४ केवळीनी उपासनानी करनारी तेहनो ५ केवळी पासीक श्रावक ते स्वयंबुध कहीए तेहनो ६ ते स्वयंबुधीनो श्रावक तेहनो ७ ते स्वयंबुधीनी सेवा करनार ८ ते स्वयंबुधीनी श्रावीका तेहनो ९ ते स्वयंबुधीनी सेवा करती बाई स्वयंबुधे अन्यने कहीवा सांभळ्युं ते पुरषे १०

ए दसने समीपे केवळी परुप्यो धर्म सांभळी कोइ केवळज्ञान पामे ते सोचाकेवळी कहीये. ए दसने समीपे केवळी परुप्यो धर्म सांभळ्या वीना केवळज्ञान पामे ते असोचा केवळी कहीए ए छेल्ले केवळी परुप्या धर्मना कहीनहार ए दसे श्रावक केवळी "पंमतधर्म्म" ते सीद्धांत के कांइ बीजुं होस्ये ? एटली सुत्रसाखे नर, सुर, मुनी, रुषी सर्व सुत्र, अर्थ भणे तेहने कांइ ना नथी कयु वळी कोइ नसीतनी साख कहे जे "भीखु अणउथी याणवा गारथीयाणवा वाएइवायं तवासाइज्ज" तेहने कहेवो जे ए पाठमां सत्रुचे वांचणी नीखेधीछे. सुत्र भणावयुंज नथी नीखेध्युं ते अन्यतिर्थिने अन्यतिर्थिना ग्रहस्थ निखेध्या छे समणोपासक नथी निखेध्या उपासगमां भगवंतने वांदवा जातां आणंदने गाहावइ कह्यो. ने व्रत लेइने घरे पाछा वळता "आणंदे समणोवासए" कह्यो. तीम नसीतमध्ये समणोपासक (श्रावक)ने वंचाववो वरज्यो नथी तथा समवायंगमध्ये चोत्रीस अतिशयमां कह्युं "भएवंचणं अधमागही भासाये धम्मपरीकहेइ" त्यां देवता, मनुष्य, ढोरने जुदोजुदो भाख्य नथी कह्यु, एम घणी युक्तीओ छे.

४६. देव, गुरु, धर्म ए त्रण तत्वनी ओळखाण विषे चोपाइ

परम पुरुष परमेश्वर देव ॥ तेहतणी नीत कीजे सेव ॥ भवदुःख भंजन श्री अरीहंत ॥ राग द्वेषनो कीधो अंत ॥ १ ॥ चोत्रीस अतीशे सोभीत काय ॥ श्री त्रोलोक्ये जगनायक जीनराय ॥ पांत्रीस वाणी वचन रसाळ ॥ सीवसुख कारण दीन दयाळ ॥ २ ॥ सुरीनर कींनर वंदीत पाय ॥ जय जगदीश्वर श्रीभगतराय ॥ सीद्धपुरुष धर्माचळ सुख घणी ॥ सेवकरो भवीयण ते तणी ॥ ३ ॥ आठ करम दळ कीधां चुर ॥ चीदानद सुख लीधे भरपुर ॥ अनंत ज्ञान दर्शन आधार ॥ इंद्री देह रहीत निराकार ॥ ४ ॥ तेहने जन्म जरा नहीं रोग ॥ नहीं तस दारा नहीं तस भोग ॥ नहीं तस मोह नहीं तस मान ॥ नहीं तस माया नहीं अज्ञान ॥ ५ ॥ नहीं तस वेरी नहीं तस मीत्र ॥ ज्ञान सरुप अमंमाय पवित्र ॥ ते सम नहीं सरखे

संहरे ॥ राग द्वेष ते चीत नवी धरे ॥ ६ ॥ ते प्रभु नवी पामे अवतार ॥ आद्य अंत नहीं तेनो पार ॥ ते प्रभु लीळा चीत नवी धरे ॥ ते प्रभु हांस क्रीडा नवी करे ॥ ७ ॥ ते प्रभु नवी नाचे नवी गाय ॥ ते प्रभु भोजन कांइ न खाय ॥ ते प्रभु पुष्प पुजा सुं करे ॥ ते प्रभु चक्र, गदा नवी धरे ॥ ८ ॥ ते प्रभु त्रीशुळ धरे नहीं पाण ॥ साचा जगदीश्वर ते जाण ॥ वेद पुराण सीद्धांत विचार ॥ एवा जगदीश्वर नहीं संसार ॥ ९ ॥ ए जगदीश्वर माने जेह ॥ निराबाध सुख पामे तेह ॥ एह तजी बीजो कोण ध्याय ॥ अमरत छांडी विष कोण खाय ॥ १० ॥ रतनचींतामणी नाखी करी ॥ कोण ग्रहे कर काच ठीकरी ॥ पोळी मुठी दीसे असार ॥ पथ्थर बांदे नहीं भव पार ॥ ११ ॥ अथवा मोहग्रंथीळ नवी कहे ॥ देखी पथ्थर सोवन कहे ॥ नेत्र रोग पीडीत होय जेह ॥ पीत श्वेत नर भांखे तेह ॥ १२ ॥ सतगुरु मळे जो पुन्य संजोग ॥ तो मिथ्यामत जाये रोग ॥ सतगुरु तारे ने पोते तरे ॥ उपकार नावतणी परे करे ॥ १३ ॥ क्रोध, मान, माया, परीहरे ॥ त्रस, थावरनी रक्षा करे ॥ सत्यवचन मुखथी ओचरे ॥ कुड कपट ते चीत नवी धरे ॥ १४ ॥ अणदीधुं ते गुरु नवी ग्रहे ॥ दयाधरम भवीयणने कहे ॥ नारीतणी सगत परीहरे ॥ ब्रह्मचर्य चोखुं आदरे ॥ १५ ॥ नव विध वाड विशुद्ध मत धरे ॥ ए गुरु तारे ने पोते तरे ॥ काम भोग लाळच परीहरे ॥ सीळां गरथ गुण ते आदरे ॥ १६ ॥ ब्रह्मचर्य पाळे जो गुरु होय ॥ तो गुरु थाये जग सहु कोय ॥ ग्रहस्थ गुरु ग्रहीने सु करे ॥ लोहसंग पथ्थर केम तरे ॥ १७ ॥ तारे श्री गुरु माहाव्रत धार ॥ पंडीत जन एम करे विचार ॥ कनक रजत धन ममता तजे ॥ लोभ छांडीने सीद्धने भजे ॥ १८ ॥ ऐणीपरे पच माहाव्रत धरे ॥ चार कखाय मुनीवर परीहरे ॥ सास्त्रतणो नीत्य दीये उपदेश ॥ सतगुरु टाळे सकळ क्लेस ॥ १९ ॥ राग द्वेषमोहटाळी करी ॥ एवा मुनीवर कहे सीवपुरी ॥ तरवा जो वन्छो ससार ॥ तो आराधो गुरु व्रतधार ॥ २० ॥ दयाधर्म उपदेसे सार ॥ जीव सहुने करे उपकार ॥ दयाधर्मजग मोटो सही ॥ जेथी दुख्ख कोइ पामे नहीं ॥ २१ ॥ केजन दया दया मुख भणे ॥ धर्म कार्य त्रस थावर हणे ॥ बोले साधु पण नवी करे ॥ कहो ते भवसागर केम तरे ॥ २२ ॥ दया वीना जो थाये धरम ॥ तो हींसाये नवी लागे करम ॥ जो तपस्या घेर बेठां थाय ॥ तो घर छोडी वन कोण जाय ॥ २३ ॥ शास्त्रतणो ते अनुभव सही ॥ दया वीना धर्म थाये नहीं ॥ ज्यां हींसा त्यां पातीक दोष ॥ परीत शास्त्र विचारी जोय ॥ २४ ॥ प्रथवी, पाणी,

अही, वाय ॥ वनस्पति छठी तसकाय ॥ बे, त्री, चोरंद्री, पचेंद्री, सार ॥ ए थावर आगम विचार ॥ २५ ॥ जैन, शीव पण एह, जीव कहे ॥ एहने राखे शीवसुख लहे ॥ एह वचन नवी माने जेह ॥ भव बंधन नवी छुटे तेह ॥ २६ ॥ हरी, हर, ब्रह्मा बुध, जीनराय ॥ तेहतणा जे सेवे पाय ॥ ते पण धर्म करे तो तरे ॥ पाप करे तो भवमां फरे ॥ २७ ॥ देव नीरंजन गुरु ब्रतधार ॥ परम दयामय धर्म सुखकार ॥ ए त्रण तत्त्व समकित कहेवाय ॥ जेह आराध्ये शीवसुख थाय ॥ २८ ॥ भवीयण पामी मनुष्य अवतार ॥ ए समकित आराधो सार ॥ कवी कहतणे पसाय ॥ राम मुनी एम कहे सझाय ॥ २९ ॥

प्रतीमा पुजवा विषे.

मनहर छंद

छाकवांमी असीकेह, सुरो सेनामांही जह,
कहो एते शुरो सेना, केटली संहारशे;
चीतारे चीतरी सर्प, पुतळीओ सदनमां,
कहो एते सुंदरी, अर्थ कथो सारशे;
कदोइनी कारीगरी, खांडनी बनावी गाडी,
कहो एते बोम पंथ, केटलो वीदारशे;
तेम करी पाषाणनी, प्रतिमाने पुजे जन,
अमरपद कहे एवो, केम करी तारशे
मांदाने मोकल्यो वळी, सेना मांही सज करी,
कहोएतो मांदो, अरी मारशे के मरशे,
सीलतणु नाव करी, तरवाने बेठोनर;
कहो एते नाव, एने तारशे के तरशे,
चोरतणो संग करी, धर्म हरवाने धारयो.
कहो एने धर्मप, हरावशे के हरशे.

इंद्रवीजय छंद

सीरमटा धरवे सूख थायज तो वड व्रत जटाज धरेछे,
वानी भूख्यायी मळे कदी मोक्षज तो खरा कामम एज करे छे;
सिर मुंडयायकी सांधी मळे कदी गाडरडां सिर मुंडी फरेछे,
डाढी धरे दुख दुर रहे कदी ढाढी सही बकरांज मरेछे.
ठंडक ताप खमेयीं मटे अघ तोतरु ठंडक ताप सहेछे,
अबुज स्नान थकी अघ जायज तो मछ अंबुज मांहीज रेहेछे;
जागण नींदी कर्यायी मळे शीव तो धुड वंधज स्याग करेछे,
आसना सर वंधेयी मळे शीव तो वड पांदरी एम करेछे.
सीळक वाणे भीवीवी टळे कदी तोज मुनीव्रत केम धरेछे,
आंग मांही बळवायी दहे अघ तो तन पतंग त्याग करेछे;
सारु थशे जन जेनीज कामम जे सत नीमीत बाह चहेछे,
अमरचंद कहे नकी एकज दया थकी अघ दूर रहेछे.
बहु धन्या एक अवनीमां तेने पंथ प्रगटा नवीन हजारो
फेक तो स्वादथें धर्म ग्रहे अने सिरापुरीथी करे पथ सारो;
ताळ कुटी दीन रात गुमावे ने खावा पीवा थकी लागेम प्यारो,
साधु कहे सुर इंद्र सुणोमन ग्नेरविना उगरवानो न आरो

निति वचन लीख्यते

१ कृपणने दान देवुं दूकर.
२ कायरने व्रत पचखाण पाळवां दूकर
३ मोटाने क्षमा करवी दुकर
४ योवन अवस्थामां शियळ पाळवुं दूकर,
५ आठ कर्ममां मोहनी कर्म जीतवु दुकर.
६ पांच इंद्रीमां जीभ्या इंद्री जीतवी दुकर.
७ चार कषायमां लोभ कषाय जीतवो दुकर.
८ त्रण योगमां मनयोग जीतवो दुकर.

---

१ श्री वितरागनी वाणी सांभळतां पाप नासे.
२ क्षमा करतां कलेश नासे
३ धर्मनो विचार उद्यम करतां दाळीद्र नासे
४ जागतो रहे तो चोर नासे

---

१ समकीतनो भाजन जीव
२ जीवनो भाजन शरीर
३ शरीरनो भाजन लोक.
४ लोकनो भाजन अलोक.
५ अलोकनो भाजन केवळ ज्ञान

१ धर्मनुं जाणपणुं होय तो दया पाळे.
२ ज्ञाननुं बळ होय तो थोडुं बोले
३ बुद्धीवंत होय तो समा जीते.
४ साधुनी संगत होय तो संतोष पामे.
५ वैराग होयतो इंद्री दमे
६ सुमसिद्धांत सांभळ्यां होयतो थिरजपणुं पामे.
७ प्राणी जीवनी हिंसा न करे तो निर्भयपणु पामे
८ मोह मच्छर छांडे तो देवनी पदवी पामे.
९ चार तिर्थने साता उपजावे तो सातां पामे.
१० न्याय मार्गे चाले तो शोभा पामे
११ दया शीयळ पाळे तो मोक्षना अनंता सुखने पामे

---

१ कलेश घटाडयो घटे ने वधार्यो वधे.
२ हास्य घटाडी घटे ने वधारी वधे
३ आहार घटाडयो घटे ने वधार्यो वधे
४ मैथुन घटाडयुं घटे ने वधार्यु वधे.
५ लाज घटाडी घटे ने वधारी वधे.
६ शोक घटाडयो घटे ने वधार्यो वधे.

७ चिंता घटाडी घटे ने वधारी वधे.
८ भय घटाडयो घटे ने वधार्यो वधे.
९ नींद्रा घटाडी घटे ने वधारी वधे
१० त्रष्णा घटाडी घटे ने वधारी वधे.

---

१ दया पाळे तो दानेश्वरी
२ धर्म विचार आणे तो ज्ञानी
३ पापथी बीए तो पंडित
४ कुळमां खापण न लगाडे तो चतुर
५ पांच इंद्री दमे तो सुरो.
६ सत्य वचन बोले तो सिंह समान.
७ धर्म वधारे तो धनेश्वरी.
८ निर्धन शुं नेह करे तो अजर अमर

अथ मिथ्यातको वर्णन.

मनहर छंद.

मिथ्याति कुमति कोस, हींसातणी अती होंस;
अदत्त मैथुन मोष, दोष भरपुरजी;
मद मगरुर अंध, करे पापका प्रबंध;
जुठ बचाईको धंध, करवेमां सुरजी;
व्रत पचखाण हीण, विषय प्रमाद छीन;
नाचत खुंदत कर्म, करत करुरजी;
हींसामें धरम बाल, करत अधम ख्याल,
खोडीदास कहत, मिथ्याति ऐसा सुरजी १
झुक्यो राग द्वेष मुढ, गहत भरम रुढ;
पापमें अरुढ अहो-निश जिव घातकी,
धुप, दीप, पुष्प, फळ, जळमें कीछोल भवे;
गावत धवल बे, मिथ्याति महा पातकी;

पुजे पथ्थरका देव, करे कुगुरुकी सेव;
हींसामे धरम गम, नाहीं दीन रातकी,
मोहमें छकेछ छेछ, करत मंडप खेळ;
खोटीआस मेळ मेळ, सोवत मिथ्यातकी. २

समकितसार भाग २ जो.

" श्रीजैनधर्मजयति "

मगळाचरण

शार्दुलविक्रिडितवृत्तम्

श्रीआदी जिन गुणनीधि थिरता तीर्थादि धुरेकरता,
इत्यादी वृद्धमान नाण विमळा स्याती धर्मो वाम्रता,
दाता सात सुथाज सूमतिकळा श्रीरत्न वदु मुदा,
भक्तीभाव जनो सदा चितरमे वीघ्नो न आवे कदा १

मनहर छद

जयजय जगपति समरु हु अंतरयी अकळ अगमगति नयी जन[1]मरना,
सकळ करमवार परिब्रम निराकार चिदानंद परवार भव भय हरना;
लोकालोक चरी सब अजाण न रहे कब्र ही गुणकी[2]एह दव न्य गत चरना[3],
एसाहे अगमनाय त्रिहु तन[4]विरल्यात जीह वासे तुज ख्यात करीलीयु चरना २

दुमीला छद

चरणांबुज[5]आपतणे नीज शेवक नामि सदा शिर काज सर,
तुम नाम तणी गुण कीर्ति तणी शुद्ध बोध तणी चित आण धर,
समकीत तणो गुण सार चही[6]भुज भाग थुणे जडताज हर,
घन र धन र त्रिहुलोक धणी तुज ग्रान सुणी हटवादि हर ३
जीनकार[7]करी खट काय हणे न गणे परपीर भवा रटवा,
जिन घात करी मतिमाद धरी परपच करी धनन मस्त्रा,

---

१ जनम २ नान, दरसन ३ क्षय थया गनीमा चाल्याना ४ ग्रण शरीर ५ कमळ ६ ग्दर ७ आज्ञा

गुणहीण समोः[१]भरपुर तमो[२]नहि खति[३]स्वभाव तपा फल्वा,
त्रस थावर देख न मेर धरे मुरुको[४]पर ज्युं[५]मिनकी ल्ल्वा[६]

मतगयद छद

ध्यानपरे मुखसु प्रतिमा मति ग्रंथ भसि रसि मुग्ध फसावे,
देव कुगरुकि भक्ति तणाफळ मोक्षरु ल्क्षमि मोग वसावे;
संप्रति [७]नाम ल्जावत पारधी दुरती पुजन पाप रचावे,
तस सभावि भया मृग शेवक दौरही दौरत मांहि धसावे [५]

मनहर छद

समकीत सल्योद्धार रच्यो ए मपचगार हिंसातणी दृष्टी लार परीक्षाच्यो आदरु,
ठामठाम निंदायुक्त भ्रम्द धरी वुघलुस[८] मानत हे अह मुक्त तेतो महापातकु;
एसो नाही ज्ञानमेद जेथी लहे सवखेद आणाल्या तणो छेद कीयो मीथ्या दातकु,
वीप्र सुणो मेरी ल्या [९]चाहो जो आणाने दया परीहरो सल्योद्धार पथ महाघातकु [६]

दयाधर्म स्थापनार विषे,

मनहर छद

चित्या जेने रागद्वेश मोह नै अंतरे लेश केवळ नाणने दर्स लेइ वदे ज्ञानकु,
स्याद वाद निरापक्ष सग्रही आतम ल्क्ष खटकाय जंतरक्ष दीए अमेदानकुं;[१०]
आप दया करी पर दयासें उमंग धरी निरधार वदेच री सुख सब जानकुं,[११]
एसा ए आगमनाथ आणाकुंही दया साथ स्व धरो एही वात हणो मत माणकु [७]

दयाधर्मीओने सुचना

मनहर छद

खटकाय अतको उगारनार भविवंधु वाचि समकितसार दया करो सबकी,
दया सुख सिंधु सही भवमें भमत नहीं शीवगत गह[१२] वही फेरी मंटे कबकी;
विगुत्यो[१३]अनतकाळ हिंसा मिथ्यातणी झाळ खोल्या नेन द्रिग[१४]अब मागो जागो सबकी
दयाहीको धर्मद्वार खोल्यो जीनज्ञान लार प्रगो समकीत सार तजो चिंता जगकी [८]

---

१ बगला २ तमागुण ३ क्षमा ४ उंदर ५ बिल्ली ६ नम्र ७ समभाव ८ अलोप ९ वाणी १० वाणी ११ प्राणी १२ सागर १३ भीज १४ गमाव्यो १५ नेत्र

प्रथम आ ग्रथना प्रारभमा परमेश्वर जगत त्राता, भक्तजनोने ध्यान समरणा पल्यन* भुत एवा भजनानदिना भजनथी भव दवाग्निनी विकट झाळथी मुक्त थइ जवाने माटे जीनेश्वर देवना ध्यान समरणरुप पुष्कळ सम्रत मेघनी धारा, ए सर्व भव जीवोना अत'करणने पर्भ शितळ करनार छे ते परमेश्वर केवा छे ? अकळ एटले कोइना कळवामा आवे नहीं, ने अगम्य एटले ज्ञानविना जेने ओळखवानो सुगमता पडे नहीं एवा जे अविनाशी नाथ, जेना नाश पामेला छे जन्म मर्ण, अने सर्व कर्मरुप वादळ विखराइ जवाथी परिब्रह्म निरावरण एटले आवरण रहित प्रगट थयेलो छे ज्ञानरपी सुर्य जेने ते ज्ञानरुपी सुर्यना प्रकाशथी लोकालोकनु स्वरुप अवलोकन करी पर्मपद पाम्या छे वळी फरीने आ जग्तमा जेने देह धरवापणु रह्युं नथी, एवा विश्वानदी पर्म देवना सकळ गुणनी स्तवना करीने आ " समक्तिसार भाग बीजो " दया धर्मनी वृद्धि थवा अने हिंसा बुद्धियी मुक्त थइ जवा माटे मारा स्वआत्मधर्मी विवेकी वीरनरोनी शुद्ध श्रद्धानी पुष्टिनी खातर अर्पण करिए छीए, तो सर्व जैनी जीवदया प्रतिपाळ साहेबो वाचीने तेनो लक्ष लइ दया धर्मनी वृद्धि करवामा काइपण खामी न राखता आत्मसुधारो करी अहीं' कंचुकी'ने न्याये दुर थइ जवु एज ज्ञान धर्मीओनो मुख्य विवेक छे.

आत्मबोध परिक्षा

अरे धर्माभिलापि वीरनरो ! प्रथम आपणा शुद्ध अत करण सहित प्रवर्ती सबध मुकीने निवृत्तिनी साथे एक चित्तथी निर्वंध' वाणी गुरुमुखथी श्रवण करीने उपयोग करोजे आ आत्मा आजगतने छादे केम चाले छे ? ते विषे देव' चक्षु' उघाडीने जाशो के तरत जणाइ आवशे, जे अनादि काळथी आजपर्यंत सुधी रागद्वेषादिक ममतारुप फासीना बधनमा फसाइ जइने महा विटवना पाम्योछे वळी पोताना तत्वरमणिक स्वरुपने भुलीजइने पुद्गळीक भावमा रमणता पामी, चौदराज लोकमा सूक्ष्म अने बादरपणे चार गतिओना स्थानको नवनव भवे जन्ममर्ण करीने फरसी मुक्याछे वळी त्या अनता दुःख सह्या तेनो मुळ हेतु एमज जणाइ आवछे के वितराग भाषित दयाधर्म तथा समक्तिज्ञान सहित धर्मथी उल्टी रीते चाल्ले तेथी विरुद्ध एवा जे मिथ्यात्वधर्म अज्ञान बुद्धिथी आचरण करी ससार भ्रमण कर्यु

* आधार १ सर्प २ कांचळी ३ प्राण दुखाय नहीं तेवी ४ ज्ञान ५ आंख,

गुणहीण समो.¹भरपुर तमो²नहि ग्वति³रयभाव तपा फग्त्रा,
त्रस थावर देख न मर धर कुरुणा⁴पर जु⁵मिनर्था ग्टला⁶

मतगयद छद

ध्यानपर मुग्वमु मतिमा मति ग्रथ भसि भसि मुग्ध फसाये,
देव कुगरुपि भक्ति तणाफळ मोक्षरु लभमि भाग वसाय;
सम्रति ⁹नाम ग्जावत पारथी दुरती पुजन पाप ग्चाय,
तस सभावि भया मुग शेवक टोरही ग्गरत मारि घसाय.

मनहर छद

समकीत सल्योद्वार रच्यो ए मपचगार हिसारणी छूटी ल्गार परीक्षाच्यो आप्पक,
ठामठाम निन्दायुक्त शब्द धरी मुघलक्ष मानत ह अह मुक्त तेतो महापातक;
एसो नाही ज्ञानमेद जेथी ल्हे सयलेद आणाज्या तणो छेद कीयो मीथ्या टाकक,
पीम्र सुणो मेरी ल्या ⁹चाहो जो आणाने दया करीइरो सल्योद्वार पथ महाघातक ६

दयाधर्म स्थापनार विषे,

मनहर छद

वित्या जेने रागद्वेस मोह नै अतर लेश केवळ नाणने दर्स लेइ षदे ज्ञानक,
स्याद वाद निरापक्ष सम्रही आतम लक्ष खटकाय जतरक्ष दीए अमेदानक;¹⁰
आप दया करी पर दयासें उमग धरी निरवद्य वदेन्री सुख सव जानक,¹¹
एसा ए अगमनाथ आणाकुही दया साथ रुदे धरो एही बात हणो मत प्राणक ७

दयाधर्मीओने सुचना

मनहर छंद

खटकाय जतको उगारनार भविबंधु वांचि समकितसार दया करो सबकी,
दया सुख सिंधु सही भवमें भमत नहीं भीवगत गहे¹² वही फेरी मटे कबकी;
विगुत्यो¹³अनतकाळ हिसा मिथ्यातणी बाळ स्वोल्गे देव द्रिग¹⁴अब जागो जागो अबकी
दयाहीको धर्मद्वार स्वारयो ओनमान ल्गार ग्रहो समकीत सार तजो चिता जगकी ८

---

१ इगलो २ तमागुण ३ क्षमा ४ उदर ५ बिल्ली ६ कपट ७ समभाव ८ अलोप ९ वाणी १० वाणी ११ प्राणी १२ सागर १३ छीर १४ गमाय्यो १५ नेत्र

दोहरो,

ज्युरत्नवरयणादिकघर, महिविनऔरनकोय,
त्युसिवसुखरयणेभरी, तुजआतमामनमोय

भावार्थ—जेम सर्व जातना रत्नने उपजवानु घर एटले ठेकाणु मही एटले पृथ्वी सिवाय बीजु छेज नहीं, तेमज शीव एटले मोक्ष रुपी जे रत्न ते सर्व तारा आत्मामा भरेलाछे पण अर वेघक[1] विर ! ते रत्नोनो मुक्ता तारा सिवाय बीजो कोइ दृष्टीमा आवतो नथी

दोहरो,

ज्युअंकुरेमहिभरी, जलविननहिप्रगटाय,
त्युतुजगुणअंकुरसने प्रवचनविनसवछाय

भावार्थ—जेम महि एटले पृथ्वीमा सर्व जातना तृणाना अंकुरा भरलाज होय छे, पण ग्रिष्मरुतुमा प्रबळ तापनी आकृतिथकी सताप पामीने घहारथी सुकाइने जमीनमा छुपी जायछे तेमज अर शुद्धआत्मि ! मोक्ष सुखना अंकुरा जे शुद्ध ज्ञानादिक ते सर्व तारा अमुल्य आत्मानी अंदरज भरलाछे पण आ जुल्मी जगत जाळमा भयानक पाप कर्मरुप तापनो सताप घणो लागवाथी छुपी रहला छे तेना उपर प्रवचन कहता पचमज्ञानीना ज्ञानरुप वर्षादनी झपट लागवाथी आपेज प्रगट लागवाथी आपेज प्रगट थशे द्रष्टात जेम अषाढमासमा वर्षादनी झपट लागवार्थी तृणना अंकुरा आपेज प्रगट थाय, तेमज आत्मगुण पण प्रगटे

दोहरो

ज्युसारगलखेनहीं, भरीसुगधनिजदेह,
त्युतुनिजगुणनहींलखे, शुक्लध्यानवीनतेह

भावार्थ—जेम सारग एटले मृगलो, तेनी देहमा नाभिस्थळे कस्तुरी पामेछे, ते कस्तुरीनी पास तेन आयछे, त्यार पोतानी अजाणताने आधिनथइ अन्य स्थान ढुंतो फरछे जे आथी अभिनव एटले नवीन तरहनी सुगधनी लहेर क्य तरफथी आय छे; परतु ते अज्ञानताना स्वभाव छे तेमज अहो ज्ञमनि आत्मार्थीओ !

---

[1] कहापणदार

छे वळी ज्यासुधी ज्ञान दर्शनना उपयोगमा स्थिरताभाव नहीं पामे, त्यासुधी चार गतिना बंधनथी मुक्त थइ जवु मुश्केल्छे माट अहा धर्मात्मा ! आ दुर्लभ जगतने विषे मनुष्य जन्म पामीन पोताना अमुल्य आत्मानु सार्थक करवाने माट प्रथम महद् विनयादिक गुणोने अनुसरीने ज्ञान सागर शुद्ध धर्माचार्यना वितने विनयादिक गुणोथी संतोष पमाडी तेमना मुखथी वितरागभाषित निर्दोषज्ञान श्रवण करीने यथाशक्ति ज्ञान अभ्यास करवो वळी तेज ज्ञान शक्तिथी सत्यासत्य पदार्थनो निश्चय करवो एम करतिने ज्ञानवृद्धिना कारणथी समकितनी पुष्टि थताज स्वपरनी वहेंचण करवाने शक्तिवान थशो वळी अनादिकालथी स्वभावने छांडी परभावमा अहपद मानेलुछे, तेनु निराकरण थशे. ते नीचे मुजब

दोहरो.

तजविभाव होजेमगन, शुद्धातमपदमाह,
यकमोक्षमारगइह, अवरदुसरोनाह

भावार्थ—अरे विज्ञपति ! बीभाव एटल जगत आत्मा पुद्गळ धर्मनी वस्तु तेने नाशवत जाणीने तजीदे अने तारा शुद्धात्मारुप रत्नत्रय अर्थात, ज्ञान, दर्शन अने चारित्रमा सदा मग्नरहे मतलब के रत्नत्रय सिवाय बीजु कोइ मोक्षमार्ग मेळववानुं साधन नथी

दोहरो

जेपूर्वकृत्योदये, रुचिशुभुजेनाह,
मगनरहेआठोपेहर, शुद्धातमपदमाह

भावार्थ—अरे सुज्ञ ! ज्यारे पोतानी शांत दशामा आवीने अनुभव गुणना आधारथी आत्मिक उपयोगमा स्थिर थवानो वखत आवी मळ्यो, ते वखते जेजे शुभाशुभ कर्मो प्रगटे, तेते नीर्मोहपणे भोगवे परतु ते पुद्गलिकाभावमां रुचि न उपजे अने आठ पहोर शुद्ध आत्मउपयोगमांज वर्ते तेज धर्मपामवानुं प्रमाण छे मतलबके आत्मा अनंतज्ञाननो भंडारछे सदा परमानंद स्वरुपी, आप कर्ता अने आप मुक्ता छे, अने आपज पोतानी शक्तिए मोक्षपद पामवा सामर्थ्यवान छे पण पोताना शुद्ध उपयोगनी शक्तिसिवाय कोइ अन्यपुरुष मोक्ष आपवा सामर्थ्य छेज नहीं तेना दृष्टांतमा नीचे दर्शेलो दोहरो.

ए तो केवळ मूर्खाइ समजवी अने परभवे अत्यारना करेला आरभनी स्थापनानो बदलो भोगववानो वखत ज्यार आवी मळशे त्यार नातजात, भाइ, बाप ने पापा-णादिकनी मुर्त्तीओ विगेरे आडी पडीने सहाय नहीं कर शके अवश्य छे परतु अज्ञानतानेविषे जीवतरनी वान्छना करनार अनाथ प्राणीओना प्राणने सताप उप-जावीने मोटा कर्मनो सग्रह करेलो छे, तेना लाभमा अधोगतीनी राजधानीना अम-लदारो तो पापी प्राणीओनी खातरी वरदाश्त करवामा घट नहीं राखे, ए खातरी-पुर्वक समजवा लायक छे मतलब के जैन शास्त्रमा सर्वज्ञ पुरुषोए भव्य प्राणीओने धर्म उपदेश्यो छे, ते वखते शिष्ये प्रश्न कर्यु जे स्वामि! केटली रीतथी नर्कनु आयुष्य अज्ञानीओ बाधे छे ? तेविषे ठाणायग सूत्रना चोथा ठाणानो मुळ पाठ

चउहिंठाणेहिंजिवानिरयाउपयपकरतिमहाआरभीयाए महापरीगहियाएकूणीमहारेणपंचदियवहेण ॥

भावार्थ—चार प्रकार जीव नार्कीनु आयुष्य बाधे छे १ जुल्म छकायनो आरभ कर ते २ घणो परिग्रह मेळवनार ३ कुणामासनो भोगवनार ने ४ पचेंद्रि प्राणीनी हिंसा करनार ए चार प्रकार नर्कनी स्थिती बधावनार छे एवा पाठ जाणता छता अज्ञानी जनोनो विचार मजबुर कारणोथी पाछो हटतो नथी पण एम समजवु के " यत कडाणकमाणनमोखअथी " मतलब जे बाधेला कर्मो भोग-व्याविना बधनथी मुकाय नहीं माटे आश्रवमति मित्रोने कहेवानु एटलुज के तमो नात जात अने मत भगनी भरम न राखता निरपक्षपणे विचार करो जेआ प्रयोमा धार्मीक[1] बुद्धिथी हिंसा वृद्धि करली छे अने तेमा कल्पित देवोनी सेवा भक्ति या पुजा लगाया सारंभी सावद्य खट मर्दन करवामा माटा लाभना लाकदा भरावीने अज्ञाननी दाळउपर चढावी दीधा छे माटे अरे पामर प्राणीओ ! ते पीळा वस्त्र धरनार भेषधारीओना वचन रूप महारार्थी न हणाता तेओनी शरमनो टाळो करी पोताना अमुल्य आत्मानी न्यानी खातर, आ नीचे लखेली बाबतो या पदार्थो उपर खुब ध्यान आपी खोटाना त्याग करी सत्यनु ग्रहण करो ने खराने खरो अने खोटाने खोटो जाणो तेनी मतलब ए के जेथी आमा पाछो दुखरूपी समुद्रमा घसडाइ न जाय, एम सन्धाश उत्साह राखो, अने आ जगतमा धर्मनु अवलोकन करवामाटे मुख्य त्रण तत्व छे

[1] धार्मी

मोक्षरुपी सुगधतो आत्मामाहज भरेला छे पण सुपत्र एटले शुद्धज्ञानथी उप ध्यान आव्या सिवाय ते वस्तु देखवामा आवती नथी अने पोताना मतमां थइने महा खटकाय[1] मर्दन[2]ना धर्म चलावी पहाडे पहाड ने डुगर डुगर त्या अनेक आरंभना ओधवाळीन एम मानाछा जे (अहनुक्त धर्म) ए मुर्खाइ छे ! ! अररर ! काइ विचारज परता नथी ! तो आगमन काळे शा हाल थशे ! पण अर ! पने माट तो ज्ञानी पुरुषोनेज फिकर थाय छे

दोहरो

माखणघृतवतजाणीए, विमलअग्निसजोग,
शुद्धादसाविधतापता, होयआतमअमोग

भावार्थ—जेम माखण छे ते तदन घृत छे, पण तेने ज्यार अग्निना तापउपर मुकीए त्यारज विमळ एटले निर्मळ घृत थाय, तेमज अरे भोळानरो ! आत्मा छे तेज माखणना पिंडरुप छे पण धार भेदे द्रव्यभाव तपरुप अग्निना तापउपर मुका-यतो कर्मरुप मेल बळीने शुद्ध आत्मारुप घृत थाय अनेक प्रकारनी मिथ्यात्व बुद्धिथी अनत प्राणीने परिताप करी आत्मकल्याणनो लाभ लेवा धारे, ते तो खरडेलु लुगडु रुधर्मा धोवाजेवु छे

अरे ज्ञानार्थी बंधुओ ! मोघसज्ञामा गुचवाइने भसकी विकलेंद्री समान मिथ्यात्व बुद्धिथी पुष्ट थयला जनोने कहेवानु एटलुंज के निरापक्ष अने निर्मळ सुत्र सिद्धांत वाचता छता भव लरतानी[3] वृद्धि करवा माटे खटकाय मर्दन करीने अज्ञान स्वभा-वथी मोक्ष लेवाने इच्छो छो, ते कया शास्त्रनो न्याय छे ? अरे विचार तो करो! आ उत्तम नरभव आर्यकुळ क्षेत्र पामीने हारीजवुं ए परी कया मळवानु छे ? परंतु आ आर्य मनुष्य जन्ममा आववानी धर्म साधन करवा माटे समकित देव देवेंद्रो पण संच्छा करे छे तो कहेवानु ए जे एवो आर्य मनुष्य जन्म सर्वोपरी छे ते मनुष्य जन्मनो लाभ तमोने मळ्याछता न मळ्याजेवो गणाय छे मतलब के अमुल्य मनुष्य भवमा आवीने कुळाचारनी शरमे शरमे या नाम जातनी शरमे शरमे खोटा हिंसा-मार्गने खरो ने खरो दयामार्ग छे तेने खोटो कहोछो ते कांइ थोडी दिलगीरी!!! वळी केटलाक न्हाला अज्ञान साहेबो समजता छता पण हठवादथी हिंसाधर्म पकडी राखे छे अने आवो रत्न जेवो मनुष्य जन्म तेने काकराना भावमां रोळी नाखे छे,

---

१ प्रथमव्यादी छकाय २ हणवानो ३ वळगी

ए विगेरे अनेक पदार्थो जगतमा छे ते एकबीजा पदार्थोना प्रतिपक्षि छे. माटे ज्ञानपणानी अने चतुराइपणानी एज फरज छे दृष्टात जेम कोइ झवेरी परीक्षासिवाय हिरा हाथमा लेज नहीं तेमज पारेखु सळेला दाणाने चाचमा लइने तरत परिक्षा करीने पडतु मुके, पण कदी भक्ष करज नहीं तेमज सुज्ञपुरुषोने लाजम ए छे जे आ जगतना निवासमा रहेता घणु दुःख पामे छे एवा दुःखनु भजन अने कर्मना बधनथी मुक्त करनार एक दयाधर्म छ तेनी परिक्षा करीनेज ग्रहण करवो जाइए

आ उपरनी जे बाबतो लखी छे ते नानीसुनी समजवी नहीं अर्थात जे तेना विस्तार करीने लखीए तो अकेक बाबतना सेंकडो पाना भराय, पण ग्रथ वधीजवाना भयथी विवेकी ने सुज्ञपुरुषोने दुकामा कुल्भावार्थ समजाव्यो छे, माटे ते पदार्थोनो खरखर उपयोग करताज मालुम पडशे, केम जे प्राचिनकाळथी जैनधर्म आद्य, मध्य ने अते दयाथीज भरपुर छे, एम जैनशास्त्रोमा केवळज्ञानी महाराजे प्रगट कहेलु छे, एमा भव्य प्राणीओने निःशकपणु छे एटलुज नहीं पण जैन धर्मना प्रतिपक्षीआ एटले बीजा धर्मवाळओना शास्त्रोमा पण दया धर्म सिद्धकरी रतव्या छे ते विषे शाखीआ नीचे मुजब

" दयाआज्ञा ए धर्म "

महाभारतनो श्लोक

योदद्यातकाचनमेरु, कृत्स्नाचैववसुधा,
एकस्य जीवितदद्यात, नचतुल्ययुधिष्टिर

भावार्थ—कोइ पुरुष सोनाना मेरु अने आखी पृथ्वी दानमा आपीदे, एने एक पुरुष एक प्राणीने त्याना अकुरथी जीवितदान आप्यु, तो हे युधीष्टिर प्रथमनु दान जीवतरदाननी तुल्यमा आवे नहीं एम महाभारतमा कह छे माटे ए वाक्यमा सर्व प्राण भुत, जीव, सत्वना अणओळखीता छता दया धर्मनु स्थापन कर छे तो अर विषयगत महात्माओ जैनधर्ममा शु दयाधर्मनी वृद्धि करवान मुळ शास्त्रोनी खामी छे ? के नवा कल्पित धार्मीक ग्रथोना आधारथी खटकाय मर्दन करीने जन्मातरनो वृद्धिनो लाभ मेळवे ? वळी आपनी अज्ञानताना वधारामा मुळ

तेने जाणीने यथायोग्य ग्रहण करो ते तत्वना नाम " हेय, ज्ञेय अने उपादेय ए त्रण तत्वनीमाहे (हेय) एटले आ जगतमा जेटली असत्य अने भावजीव छे तेने छाडवी (ज्ञेय) एटले आ जगतमा सर्व वस्तुओ जाणवाजोग, (उपादेय) एटले आ जगतने विषे सत्य वस्तुओ होय तेज आदरवा जोग. त्रण तत्व सिवाय आ जगतमा चोथो तत्व छेज नहीं माटे नीचे मलेली मजकुर त्रण तत्वनी साथे जोडीने यथास्थित करवु, एज विद्वतानु लक्षण छे

त्रण तत्वनी साथे जोडेला पदार्थो

शुद्धज्ञान १, सुधर्म २, सुदेव ३, सुगुरु ४, समकित ५, सुमार्ग ६, ७, न्याय ८, तत्व ९

अशुद्धज्ञान १, कुधर्म २, कुदेव ३, कुगुरु ४, मिथ्यात्व ५, कुमार्ग ६, ७, अन्याय ८, अतत्व ९

पुन्य १, पुन्यानुपाप २, पुन्यानुपुन्य ३, द्रव्य ४, ध्रुय ५, क्षय ६, ७, भव्य ८, मोक्ष ९

पाप १, पापनुपुन्य २, पापानुपाप ३, अद्रव्य ४, अध्रुय ५, अक्षय अलोक ७, अभवी ८, नर्क ९

सज्जन १, मित्र २, त्रस ३, भूचर ४, स्थळचर ५, कर्मी ६, धर्मी ७, ८, आश्रव ९, बंध १०, निर्जरा, ११

दुर्जन १, शत्रु २, स्थावर ३, खेचर ४, जळचर ५, अकर्मी ६, अधर्मी ७, अजीव ८, संवर ९, मोक्ष १०, अनिर्जरा ११

उदय १, अल्पसंसारी २, कवी ३, सुकाळ ४, कर्मभूमी ५, उर्धलोक ६, सकामी ७, रागी ८,

उदीरणा १, अनंतससारी २, कुकवी ३, दुकाळ ४, अकर्म ५, अधोलोक ६, अकामी ७, वैरागी ८

सरागी १, भोगी २, साधु ३, धर्मज्ञान ४, नितिज्ञान ५, अमृतज्ञान ६, तारकज्ञान ७

निरागी १, अयोगी २, गृहस्थ ३, अधर्मज्ञान ४, अनितिज्ञान ५, विषज्ञान ६, बोळकज्ञान ७

तरण तारकज्ञान १, डुबणडुबावणज्ञान २

ए विगेरे अनेक पदार्थो जगतमा छे ते एकवीजा पदार्थोना प्रतिपक्षि छे टे ज्ञानपणानी अने चतुराइपणानी एज फरज छे दृष्टात जेम कोइ झवेरी परी- ासिवाय हिरा हाथमा लेज नहीं तेमज पारखु सळेला दाणाने चावमा लइने तरत रेक्षा करीने पडतु मुके, पण कदी भक्ष करेज नहीं तेमज सुज्ञपुरुषोने लाजम ए जे आ जगतना निवासमा रहेता घणु दु:ख पामे छे एवा दु:खनु भजन अने मैना बधनथी मुक्त करनार एक दयाधर्म छे तेनी परिक्षा करीनेज ग्रहण रवा जोइए

आ उपरनी जे वाबतो लखी छे ते नानीसुनी समजवी नहीं अर्थात के ना विस्तार करीने लखीए तो अकेक वाबतना सेंकडो पाना भराय, पण ग्रथ धीजवाना भयथी विवेकी ने सुज्ञपुरुषोने टुकामा कुलमावार्थ समजाव्यो छे, माटे पदार्थोनो खरखर उपयोग करताज माल्म पडशे, केम जे प्राचिनकाळथी जैन- र्म आद्य, मान्य ने अते दयाथीज भरपुर छे, एम जैनशास्त्रोमा केवळज्ञानी महा- जे प्रगट कहलु छे, एमा भव्य प्राणीओने निःशकपणु छे एटलुज नहीं पण जैन र्मना प्रतिपक्षीओ एटले वीजा धर्मवाळओना शास्त्रोमा पण दया धर्म सिद्धकरी तव्या छे ते विषे शाक्षीआ नीचे मुजब

" दयाआज्ञा ए धर्म "

महाभारतनो श्लोक

योदद्यातकाचनमेरु, कृत्स्नाचैववसुधरा,
एकस्य जीवितंदद्यात, नचतुल्ययुधिष्टिर

भावार्थ—कोइ पुरुष सोनाना मेरु अने आखी पृथ्वी दानमा आपीगे, पण के पुरुषे एक प्राणीने त्याना अकुरथी जीवितदान आप्यु, तो हे युधीष्टिर प्रथमनु ान जीवतदाननी तुलयमा आवे नहीं एम महाभारतमां कहे छे माटे ए [illegible] ा सर्व प्राण भुत, जीव, सत्वना अणओळखोता छता दया धर्मनु [illegible] ा अरे विवेकगत वहालाओ जैनधर्ममा शु दयाधर्मनी वृद्धि [illegible] ार्नी खामी छे ? के नवा कल्पित कार्मीक ग्रथोना आधारथी [illegible] रीन मन्मातरनी वृद्धिनो लाभ लोछो ? वळी आपनी अज्ञानता [illegible]

तेने जाणीने यथायोग्य ग्रहण करो ते तत्वनां नाम " हय, गेय अने
ए त्रण तत्वनीमाह (हय) एटले आ जगतमा जेटली असत्य अने नाशवंत
छे तेने छांडवी (गेय) एटले आ जगतमा सर्व वस्तुओ जाणवायोग्य,
(उपादेय) एटले आ जगतने विषे सत्य वस्तुओ होय तेज आदरवा
त्रण तत्व सिवाय आ जगतमा चोथो तत्व छेज नहीं माटे नीचे लखेली
मजकुर त्रण तत्वनी साथे जाणीने यथास्थित करवु, एज विद्वानु लक्षण छे

त्रण तत्वनी साथे जोडेला पदार्थो

शुद्धज्ञान १, सुधर्म २, सुदेव ३, सुगुरु ४, समकित ५, सुमार्ग ६,
७, न्याय ८, तत्व ९

अशुद्धज्ञान १, कुधर्म २, कुदेव ३, कुगुरु ४, मिथ्यात्व ५, कुमार्ग ६,
७, अन्याय ८, अतत्व ९

पुन्य १, पुन्यानुपाप २, पुन्यानुपुन्य ३, द्रव्य ४, ध्रुव ५, क्षय ६,
७, भव्य ८, मोक्ष ९

पाप १, पापनुपुन्य २, पापानुपाप ३, अद्रव्य ४, अध्रुव ५, अक्षय
अलोक ७, अभवी ८, नर्क ९

सज्जन १, मित्र २, त्रस ३, भूचर ४, स्थळचर ५, कर्मी ६, धर्मी ७,
८, आश्रव ९, बंध १०, निर्जरा, ११

दुर्जन १, शत्रु २, स्थावर ३, खेचर ४, जळचर ५, अकर्मी ६, अधर्मी
अजीव ८, संवर ९, मोक्ष १०, अनिर्जरा ११

उदय १, अल्पसंसारी २, कषी ३, सुकाळ ४, कर्मभूमी ५, उर्ध्वलोक
सकामी ७, रागी ८,

उदीरणा १, अनंतससारी २, कुकषी ३, दुकाळ ४, अकर्म ५,
६, अकामी ७, वैरागी ८

सरागी १, भोगी २, साधु ३, धर्मज्ञान ४, नितिज्ञान ५, अमृतज्ञान
तारकज्ञान ७

निरागी १, अयोगी २, गृहस्थ ३, अधर्मज्ञान ४, अनितिज्ञान ५,
६, मोळकज्ञान ७

मरण तारकज्ञान १, डुबणडुबावणज्ञान २,

**पढमंनाणंतउदया, एवंचिठइसव्वसजए
अन्नाणीकिंकाही, किंवानाहीसेयपावग १०**

भावार्थ—अरे शिष्य ! प्रथम गुरु मुखे ज्ञान अभ्यास करीने स्वपरनु जाणपणुं करे तो त्यारपछी स्व ने पर दया प्रगट थायछे माटे तेज प्रमाणे वितरागनी आज्ञाए दया धर्म पाळनार सर्व सजती थीरता भावमा आनंद मग्न रहेछे. परतु जेणे ज्ञान दर्शने जाणेली नथी, ते अज्ञानी शु जाणशे के दयाधर्म ने कल्याण मार्ग कहेने कहेवाय छे माटे ज्ञानथी दयाज पळेछे ए सत्यमेव

हवे ते दयानु मुळ तो ज्ञान छे तेनो घणो विस्तार तो श्री नंदी सुत्रमा छे, तेथी आ ठेकाणे सविस्तर न लखता तेना जुज नाम मात्र आ लखाणमा दाखल कर्या छे ते निचे मुजब

१ मतिज्ञान ए जे बुद्धि या अक्कलपणु ते सर्व मनुष्य या जानवरोमा पोतपोताना पुन्य प्रमाणे स्वभावेज उपजे छे तेना अठाविश भेद छे तेने सविस्तर करवा त्रणसें चाळीश भेद पण कहेछे तेनु नाम मतिज्ञान

२ सुत्रज्ञान के जे भणवाथी तथा सामळवाथी सर्वने पुन्य प्रमाणे उपजे छे. तेना चौद भेद छे अने वीश भेद पण कहेछे

३ अवधिज्ञान के जेना मुख्य तो छ भेद कहवाय छे

४ मन पर्यवज्ञान के जेना बे भेद कहवाय छे

५ केवळज्ञान के जे अनत शक्तिवत छे ते जे मनुष्यने उपजे ते चौदराज्य लोक पोतानी हथेलीमा जेम वस्तु देखे तेम देखे अन सर्वत्र जगतना जीवोना परिणाम उपयोग दीधा वगर हमेशा जाणी देखी रहे तेनु नाम केवळज्ञान

ए पाच ज्ञान छे तेमा प्रथमना बे ज्ञान तो स्वभाविक छ तेतो थोडा या घणा सर्वने होय पण त्रीजु, चोथु अने पाचमु ए त्रण ज्ञान छे, तेतो आत्मिक छे ते ज्यार आत्मा कार्मीक स्वभावथी खसीन स्व स्वभावमां आवे त्यार आप वकीज उपजे, पण ते कोइना शिखव्या या भणाव्याथी आवेज नहीं एवा सदगुरु कहेला ज्ञानना लाभ सिवाय स्व अने परन्या पळेज नहीं माट धर्मनु मुळ ते स्व अने परदयारूप ज्ञान छे अने ज्ञाननु मुळ विनय एटले नम्रता करवी तेना तो अनेक भेद छे ते गुरुगमे जाणवा पण विनय छे तेज जैन धर्मनु मुळ छ तेने विशे शास्त्रोक्त गाथा निचे मुजब.

सिद्धातोनी आस्था नथी के शु ? पण अर जराक विचार तो करो ? जे सर्व धर्मनु मुळ तेज दया कही छे अने विद्वान लोकोए पण तेनुज प्रमाण करेलु छे अने निर्दय स्वभाव तेज अधर्मनु मुळ छे माटे अर धर्म इच्छको ! एवी जे अमुल्य दया तेना स्वरुपनो लक्ष करवो ते धर्मीजनोने घणारत छ केम जे ते अमुल्य दयाना जे सिद्धातमा अनेक भेद छे पण ग्रथ वाण वधी जवाना सभवथी टुकामा समजण आपवामा आवेछे के धर्मनी मुख्यताए दयाना बे भेद छे तेमा पहली स्वदया, एटले पोतानो आत्मा अनत अने अक्षय सुखनो भडार छे तेने आठ कर्मरुप ताळां जडेलां छे ते ताळांओने खोलीने अनत आत्मिक शक्तिरुप लक्ष्मिनो भुक्ता थवा माटे सहज स्वभावे करीने पुद्गळ विभावी सुखथी निर्मोहि थवु तेनुं नाम स्वदया.

बीजी परदया ते ससारिक सुखनु निदान छे, एटले वहेवारीक सुख आप नार छे पण स्वदया प्रगट करवाने परदया ते मुख्य कारणभुत छे अने जेना पसायथी देव मनुष्यना अत्यत महत सुख भोगवी अते स्वदया गुण पामीने मोक्ष पद पमाय छे पण परदयानु विशेषण एछे जे आ जगतमां पाचसें त्रेसठ भेद जीवना छे तेओने ओळखीने ते उपर सम्य रहेम ने करुणाबुद्धिथी उगारवा तेनुं नाम परदया कहीए परतु ते दया पाळवाथी केटलाएक देहार्थी फायदा थाय छे तेनी साक्षी नीचे मुजब

दीर्घमायु परुप मारोग्य श्लाघनी नीयता,
अहिंसाया फल सर्वंकिमन्य त्कामदेवता

भावार्थ—सर्व प्राणीओने जीवितदान देवाथी दिर्घ एटले मोटुं आयुष्य पामे अने उत्कृष्टरुप तथा आरोग्यता तथा सर्व लोकने प्रशशा करवायोग्य ए चार तथा बीजा घणा फायदाओ अहिंसा एटले दया पाळवाथीज मळे छे ए सिवाय अरे जगतवासी मित्रो ! वांछीतार्थ पुरनारो क्यो देव श्रेष्ट छे? छेज नहीं माटे अरे जंतुद्रोही अज्ञान नरो ! ज्ञान द्रीग खोलीने जोशो के तरतज सर्वत्र दया उपयोगमा आवी जशे अने अमुल्य दयाधर्म रुचमान थइ पडशे

धर्मार्थीवाच अहो विज्ञपवी आत्माने तरवा माटे धर्मनु मुळ दया कही, तेतो सत्यमेव छे परंतु ते दया केम समजाय ?

गुरुवाच अरे भद्र अमुल्य दयानु मुळ ते ज्ञान छे के जेनी सहायताथी दया पुष्टी पामी शके छे हवे दया पाळवा माटे ज्ञाननुं विवेचन आपे छे दशवीकाली-कना चोथा अध्ययननी दशमी गाथा.

पढमंनाणतउदया, एवंचिठइसव्वसंजए·
अन्नाणीकिंकाही, किंवानाहीसेयपावग १०

भावार्थ—अरे शिष्य! प्रथम गुरु मुखे ज्ञान अभ्यास करीने स्वपरनु जाणपणु करे तो त्यारपछी स्व ने पर दया प्रगट थायछे. माटे तेज प्रमाणे वितरागनी आज्ञाए दया धर्म पाळनार सर्व सजती थीरता भावमा आनद मग्न रहेछे परतु जेणे ज्ञान दशाने जाणेली नथी, ते अज्ञानी शु जाणशे के दयाधर्म ने कल्याण मार्ग कहेने कहेवाय छे माटे ज्ञानथी दयाज पळेछे ए सत्यमेव

हवे ते दयानु मुळ तो ज्ञान छे तेनो घणो विस्तार तो श्री नदी सुत्रमा छे, तेथी आ ठेकाणे सविस्तर न लखता तेना जुज नाम मात्र आ एखाणमा दाखल कर्या छे ते निचे मुजब

१ मतिज्ञान ए जे बुद्धि या अक्कलपणु ते सर्व मनुष्य या जानवरोमा पोतपोताना पुन्य प्रमाणे स्वभावेज उपजे छे तेना अठाविश भेद छे तेने सविस्तर करता त्रणसें चाळीश भेद पण कहेछे तेनु नाम मतिज्ञान

२ सुत्रज्ञान के जे भणवाथी तथा सामळवाथी सर्वने पुन्य प्रमाणे उपजे छे. तेना चौद भेद छे अने वीश भेद पण कहेछे

३ अवधिज्ञान के जेना मुख्य तो छ भेद कहवाय छे

४ मन पर्यवज्ञान के जेना बे भेद कहवाय छे

५ केवळज्ञान के जे अनत शक्तिवत छे ते जे मनुष्यने उपजे ते चौदराज्य लोक पोतानी हथेलीमा जेम वस्तु देखे तेम देखे अन सर्वत्र जगतना जीवोना परिणाम उपयोग दीधा वगर हमेशा जाणी देखी रहे तेनु नाम केवळज्ञान

ए पाच ज्ञान छे तेमा प्रथमना बे ज्ञान तो स्वभाविक छे तेतो थोडा या घणा सर्वने होय पण त्रीजु, चोथु अने पाचमु ए त्रण ज्ञान छे, तेतो आत्मिक छे ते ज्यार आत्मा कार्मीक स्वभावथी स्वलीन स्व स्वभावमा आव त्यार आप थकीज उपजे, पण ते कोइना शिखव्या या भणाव्याथी आवेज नहीं एवा सदरहु पहला ज्ञानना लाभ सिवाय स्व अने परदया पळेज नहीं माटे धर्मनु मुळ ते स्व अने परज्यारुप ज्ञान छे अन ज्ञाननु मुळ विनय एटले नम्रता करवी तेना तो अनेक भेद छे ते गुरुगमे जाणवा पण विनय छे तेज जैन धर्मनु मुळ छे तेने विषे शास्त्रोक्त गाथा निचे मुजब.

शिद्धांतोनी आस्था नथी के शु ? पण अर जराक विचार तो करो ? जे शास्त्र धर्मनु मुळ तेज दया कही छे अने विद्वान लोकोए पण तेनुज प्रमाण करेलु छे अने निर्दय स्वभाव तेज अधर्मनु मुळ छे माटे अर धर्म इच्छको ! एवी जे अमुल्य दया तेना स्वरुपनो लक्ष करवो ते धर्मीजनोने घटारत छे कम जे ते अमुल्य स्याना व सिद्धांतमा अनेक भेद छे पण लखाण वधी जवाना संभवर्थी टुकामा समजण आपवामा आवेछे के धर्मनी मुख्यताए स्याना बे भेद छे तेमा पहेली स्वदया, एटले पोतानो आत्मा अनंत अने अक्षय सुखनो भंडार छे तेने आठ कर्मरुप ताळां जडेला छे ते ताळाओने खोलीने अनत आत्मिक शक्तिरुप रुद्धिनो भुक्ता थवा माटे सहज स्वभावे करीने पुदगळ विभावी सुखथी निर्मोहि थवु तेनुं नाम स्वदया

बीजी परदया ते ससारिक सुखनु निदान छे, एटले वहेवारीक सुख आप नार छे पण स्वदया प्रगट करवाने परदया ते मुख्य कारणभुत छे अने जेना पसायथी देव मनुष्यना अत्यत महत सुख भोगवी अंते स्वदया गुण पामीने मोक्ष पद पमाय छे पण परस्यानु विशेषण एछे जे आ जगतमा पाचसें श्रेसठ भेद जीवना छे तेओने ओळखीने ते उपर सत्य रहेम ने करुणाबुद्धिथी उगारवा तेनु नाम परदया कहीए परंतु ते दया पाळवाथी केटलाएक देहार्थी फायदा थाय छे तेनी साक्षी नीचे मुजब

दीर्घमायु पररुप मारोग्य श्लाघनी नीयर्ता,
अहिंसाया फलं सर्वकिमन्य त्कामदेवता

भावार्थ—सर्व प्राणीओने जीवितदान देवाथी दिर्घ एटले मोटुं आयुष्य पामे अने उत्कृष्टरुप तथा आरोग्यता तथा सर्व लोकने प्रशंसा करवायोग्य ए चार तथा बीजा घणा फायदाओ अहिंसा एटले दया पाळवाथीज मळे छे ए सिवाय अरे जगतवासी मित्रो ! वांछीतार्थ पुरनारो क्यो देव श्रेष्ट छे ? छेज नहीं माटे अरे जगद्रोही अज्ञान नरो ! ज्ञान द्रीग खोलीने जोशो के तरतज सर्वत्र दया उपयोगमां आवी जशे अने अमुल्य दयाधर्म रुचमान थइ पडशे

धर्मार्थीवाच अहो विश्वपती आत्माने तरवा माटे धर्मनु मुळ दया कही, तेतो सत्यमेव छे परंतु ते दया केम समजाय ?

गुरुवाच अरे भद्र अमुल्य दयानु मुळ ते ज्ञान छे के जेनी सहायताथी दया पुष्टी पामी शके छे हवे दया पाळवा माटे ज्ञाननु विवेचन आपे छे दशवीकाली-कना चोथा अध्ययननी दशमी गाथा

आपनारो दातार ए बे सुपात्र होय, एटले वस्तु पण शुद्ध ने देनार पण शुद्ध होय एना अनेक भेद छे ए बीजो सुपात्रदान जाणवो

३ हवे त्रीजो अनुकपादान धर्म छे ते पण महापुन्य बंधननो हेतु छे. ते दानथकी देव तथा मनुष्यना अत्यत सूख पामीने छेवट तेआनी सहायताथी तेने अभयदान अने सूपात्रदान ए बेनो रस्तो मळे के जे बे दान महानिर्जरा हेतु छे ने तेथी मोक्ष पद पामे तेवा बे दान अनुकपादानथी प्राप्त थाय छे

४ हवे चोथो किर्तीदान एके जे भाट भवैया विगेरे याचकोने देवु तेनो हेतु एके एवा लोको किर्तीदानना लाभमा जगत लोकोनी पासे जरा किर्ती बोले, पण ते सकामनिर्जराहेतु नहीं पण अल्पलाभ वेळना फळनी पेठे मेळवी शके

५ पाचमु उचितदान एछे जे पोताना नोकरो चाकरो, सगासबधी, नातजात, कुटुबकबिला, विगेरने देवु तेमां तो आत्माने व्यवारीकज लाभ प्राप्त थाय छे उपर मुजब सरागी धर्मना मुख्य चार भेदछे ते माह आ प्रथम दानधर्मनो भेद कह्यो

भेद बीजो

ब्रह्मचर्य तेना मुख्य भेद नव छे, ते नववाडे विशुद्ध ब्रह्मचर्य आराधन करवु अने तेना गुरुगमताए सविस्तर अढारहजार भेद थाय छे ए धर्मनो बीजो भेद

भेद त्रीजो

हवे त्रीजो तपधर्म एटले कर्मीक मूखथी नि(श्री(णे[1] तप करवो तेना बहाज्य[2] अने अभ्यतर[3] मळीने बार भेद थाय छे ते धर्मना त्रीजो भेद

भेद चोथो

सूभाव एटले सारोभाव, तेना चार तथा आठ भेद छे माटे आ चोथो भावधर्म भेद सर्वोपरी छे अने महा मोटा सुखनु निशान छे, अने सर्व जगत एनी प्यासनो स्वकार करीनेज रहयु छे ते सुग्मासावार गुरुमुखे विशेषीओान धारवा अमारी विनति छे

अर धर्मार्थी नरो! मजकुर करला चार भेद धर्मनाअमुल्यकार्य सिद्ध करनार छे तेथी तेनी याचना पण हमेंशा धर्मार्थीओने लागु पडनी छे पण जे अधर्म धुरंधर आश्रव मार्गमा भुल्ला पडल्याछे ते खटकाय मर्दन धमनी उकती बधारवा सदा

---

१ शरीरक दूरनी आशारहीत २ दृश्यन दरुवामां आव ३ श्रीनान दरुवामां न आव

विणउजीणसासणमुल, विणउनीव्वाणसाहगो,
विणउवीप्पमूकस्स, कउधम्मोक्रउतवो

भावार्थ—विनय एटले सर्वगुणी वडीलोने नम्रतार्थी दश वदनार्थीक आसन सन्मान सहित आदर दइ त्रिकरण शुध्धे शेवना करवी तेज नम्रताना लाभमां आचार्य ज्ञानदान आपे ते विनयथी निर्वाण एटले मोक्षनी प्राप्ति थाय माटे विनय करवो अने जे माणसना अतःकरणमा स्वअभिमानथी विनय अने नम्रता नाश पामी गयेली छे ते माणस अभिमानाश्रित धर्मकृत्य करे तोपण शु ? अने अनेक तप क्रियाओना ओघ वाळीदे तोपण शु ? ए सर्व तेनु निष्फळ थाय छे माटे धर्म दया अने ज्ञान मेळववा माटे विनय एटले नम्रता राखवी ए धर्म आराधनारने माटे चार हेतुभेद कह्या छे, ते धर्म अधिकार माटे सुचना मात्र लख्युछ

दयाधर्म अने दाननु विवेचन

धर्मना मुख्यतो बे भेद छे एक साधु धर्म अने बीजो गृहस्थ सागार धर्म, अथवा एक निराग धर्म ने बीजो स्वराग धर्म निरागी धर्मतो उत्कृष्ट दशाए जाणवो, अने जीवनमुक्त थइ विदेहमुक्त पद पामे परतु सरागी धर्ममां असख्य भेद छे तेमा मुख्यत्वे चार भेद छे, तेना नामनी मात्र सुचना लख्युछ

१ अभयदान जेना बे भेद छे, तेमा प्रथम पोताना आत्माने अभय करवो एटले भयरहित करवो ते भय कोण छे के आत्माने जन्म अने मरणतुल्य अन्य कोइ भय नथी ते भयानक भयथी बचवाने माटे प्रयत्न करवो तेनु नाम स्व अभयदान कहीए एज मुख्यत्वे मोक्ष मार्ग छे परतु तेना सहस्रो भेद छे ते सविस्तर गुरु गमताए धारवा बीजो पर अभयदान, तेनो भावार्थ एम छे के जेटला जगतमां त्रस अने स्थावर छे ते सर्वेने पोतानी तरफथी अभय करवु, एटले कोईपण प्राणीओने पोतानी तरफथी मन, वचन अने कायाये प्रणति भय न उप जाववो तेना अनेक भेद छे ते बीजा धर्मनी मुख्यताए मोक्ष सार्थक छे

२ हवे बीजो सुपात्रदान ते पण मोक्ष पदनुं निदान समजवुं तेना अनेक भेद छे परतु तेना मुख्य बे भेद छे ते एके जे प्राणी सुपात्र होय एटले स्व अभय अने पर अभय सयुक्त होय, एवा प्राणीने परिक्षीने कोमळ्यामहणे अंश वक्तानिक तेना योग्यतेमु ए प्रथम भेद हवे बीजो भेद एवे दानदेवानी दरतु तथा ठाम

ज्यारे धर्मात्मा पुरुषो गणाइने तेना अंत:करणमाथी कृपा एटले दयारुप प्रवाहनु सुकावापणु थई जाय त्यारे तेओना धर्मनो निर्वाह क्यासुधी थई शके ? अर्थात निर्दयपणु छे ते मोक्ष मार्गनो शत्रु स्वभाव छे माटे तम स्वभावि गुणसपन्न नामदारोने केहेवानु के अन्य धर्मीओ एम हिंसानो निच्छेद करीने दयानु प्रतिपादन करे छे पण तमो श्या दया एवा शब्दो तो बोली जाणो छो पण धर्मार्थे हिंसे आश्रवरुपी तोपनो अवाज करोछो तेथी तमारो दयारुप अलोप थइ जाय छे कारण केटलाएक प्राणीओने मुखे दया शब्द बोलवानो वखततो आवी मळे छे, परंतु अनाथ प्राणीओ छकायजीव तेओनी द्रष्टीतळे आवे के तरतज पुर्वना शत्रुभावे मुंशक मिनकीनो दाखलो तेओने लागु पडी जाय छे तेथी खटकायनो विनाश करवा सदा सतोषमेर रहेता हशे एम समजे छे परतु तेओने केहेवानु एटलुज के अहो विभ्रमि ! जो हिंसाथीज धर्म होय तो विषमाथी अमृतनी उत्पत्तिनो संभव थाय, अग्निमांथी शितळ जळ पेदा थाय, सर्पना मुखमाथी अमृतनो रस उत्पन्न थाय, खळना मुखमाथी परगुणनो उच्चार थाय, समुद्रना जप सरीखा जळमाथी दुध पेदा थाय, कादवनो कपुर थाय, सोमलनी साकर थाय, गळीना तिलकथी केशरनु तिलक थाय ने मृतकमाथी सजीवनपणु देखाय, पण एम तो कदी थतुज नथी कदाचित्त कोइ देवना सान्निध्यथी एम बने तो नास्तिक नहीं, पण हिंसा करता मोक्षफळ ने धर्मनो संभवतो भुत, भविष्य ने वर्तमान काळमा नज होय आ सत्यबोधनो तमारा अत करणमा खातरी तो थएली हशे, पण जेम हारलो जुगारी बमणुं जुगटु रमे तेमज पापाश्रवना आधारी प्राणीओ पुर्वे जन्ममा क्रुर कर्मना उदयथी दयारुप लक्ष्मि हारी जइने आगरमा पापस्थानकना प्राधीन पणाथी आश्रवरुप जुगार रमीने कोटीध्वज थवा धारे छे ए केवी अचंबानी वात छे ! ! ! माटे अरे भ्रमित जनो ! तमारा अंत:करणमा जरापण विचारतो करो ! के आ जगतमा क्या क्या प्राणीने मर्ण वल्लभ छे ? अने क्या क्या प्राणीने जीवतर ने सुख भोगवबु अप्रिय छे ? ते जाणवा शास्त्रोक्त रीते आपवी जोइए जीवतर ने सुखनी आशाने माटे हाम समुचय ग्रथमा कह्यु छे के,

अमेध्यमध्येकीटष्य, सुरेन्द्रस्वसुरालये,
समानाजीविताकांक्षा, सममृत्युभयद्वयो

भावार्थ–सेतरखानु एटले पायखानानी गंदी वस्तुमा रहनारा जीवडाने तेमज देवलोकमा वास करनार सुर तथा इद्रने जीववानी इच्छा सरखी छे अने मृत्युनो

उत्साहमेर साहसीकपणु धरीने प्रभुनी तथा गुरुनी भक्तिनी कारणोने माटे बिचारा अनाथ प्राणीओना प्राणनो लुसन करी निर्जरा हतु माने छे ने अल्पपाप ने बहु निर्जरानी स्थापना करीने कर्मवसे मरला जेवाज त्रस स्थावरना उपर धोत पेपधारी राजाओ पीळा तिलक करनारी निर्दय-हृदयनी फोज लइने अनेक क ल्पित ग्रंथोरुप हथिआरोथी सनद्धबद्ध थइने केवळ मतमारुप मदो रोपण करीने छ कायनी साथे पुर्वना वेर सबध शोधीने तेओने पचारी पचारी मर्दन करीने अघा गत नामनी राजधानीना लाभनी फतेह मेळवेछे एम दया धर्मनी प्रनाळकाथी सा तरी थायछे परतु दिर्घाऽधी* मनुओना अतःकरणमातो बीजी रीते ठसावेल जणाय छे

केम जे तेओ धर्मने माटे छ कायने नाश करी एम माने छे जे एवा सारको कार्य करता अमने निर्जराकारक गुण प्रगट थायछे परतु अर भोळा प्राणीओ ! एम पण नथी जाणता के मोक्षने मल्ले मोहोड एटले कर्म करीने काच नथी जवातु छे माटे तेनो वखत आवशे ते वखते तेनो अनुभव खातरीछे वळी कहेवातु जे निर्मळ बुद्धि वापरीने सर्व प्राणीओनु रक्षण करवु एवा वखतनीतो आरंभ करना रानी तरफमा मोटी खामी रहेलीछे कारण जे पुर्वजन्मना बांधेला अतराय कर्मनी प्रबळताने लीधे आश्रवमार्गनो त्याग अने सवर मार्गनु आचरण ते क्याथी बने!!!

केटलाएक मति भ्रमनावाळा एम बोलेछे जे अमो धर्मकार्य करतां आरंभ करीए छीए ते बीजाओने हिंसारुप देखायछे पण अमने तो हिंसा लागेज नहीं एवु बोलनाराना वचन ऊपर ज्ञानी पुरुषो आश्चर्य पामेछे के अहोहो ! ! ! केवु अजाणतापणु ! ! ! हवे धर्मना अभिलाषीओने कहेवानु एटलुज के आ जनआस्तिक धर्ममातो वितराग देवे आद्य, मध्य ने अंते दयारुप बोधनोज प्रवाह चलावेलोछे ए सुलभ बोधी जनोए निःशंकपणे समजवु पण अन्य धर्मना शास्त्रोमा पण सत्यतानां वाक्यो रहेलाछे, कारण के तेओ जीवादिक पदार्थोना अजाणछतां दयानी हवा बतावेछे ते विषे सोमसुंदरनो श्लोक

> कृपानदीमहातिरेसर्वेधर्मतृणाङ्कुराः
> तच्छोषेशोषमायातितस्वरप्वोवृद्धिमान्युयु ॥

भावार्थ—कृपारुपी नदीने कांठे सर्वे धर्मो तृणाङ्कुरासमान सुशोभित छे अने

*मोटा कर्मनी आवादानीवाळा

तेनु नाम द्रव्य अने भाव तप कहीए ए त्रण भेद मुळ धर्मनी आधमा कह्या छे. ते अहिंसा, सजम अने तप, ए त्रणने त्रिकरणशुद्धे आराधना करनार पुरुषोने देव आदि सर्व मनुष्यो तेना पद वदन करी सतोष पामे छे ते पुरुष केवा छे? जेनुं सदा सर्वदा मजकुर धर्मनी आराधना करवामा मन, वचन ने कायाना योग्य थीरता पामेला होय छे तेज देवादिकने अर्चवा लायक छे, पण जे खटकाय मर्दनादिक सारभमा मतावलवित थइने पोते आश्रव करे, परने उपदेश करे तथा कर्चाने भलु जाणे, एवा अज्ञानदशावाळाओनी पण पदर जातना अधोगतस्वामि, देवो शेवाभक्ति करवा चुकशे नहीं एम सिद्धातोमा मत्यक्ष ज्ञानीपुरुषोए कहलु छे हवे मजकुर गाथामातो अहिंसा एटले स्वदया तथा परदया एज धर्म कह्यो छे तो एवी गाथाओनो उपदेश सवेगी नाम धरावनार जनो पीळातिह्लकनी सभाने केवी रीते करी बतावता हशे? ए सर्व विचारवा जेवु छे परतु कुमतावम्वित बाळमित्रोने हितेच्छु तरिके बोध करवा जरुर एटलीज के तमारी कर्मोपार्जित वे चक्षु तो उघाडी छे परंतु ज्ञानरुप चक्षुने मृषावाक्योथी रचीत ग्रथीरुप पडळ आवी जवाथी जैन शासनरुप आर्यभुमी उपर दयारुप अकुरा, ज्ञान, बोध मेघनी धाराथी मगट थएला छे ते गणधर महाराजे अनतज्ञानी तिर्थकरदेवनी सहायताथी सुत्रार्थमा रचीने सर्व भव्यजीवोना हितने माटे मगट करलु छे, तेम छता तमारा पाषाणरुपी कठोर हृदयमा ते नजर आवतु नथी, तथा ते वाक्यो रुचमान न थता तेओना शत्रु भाये नवीन ग्रथोना मबध रचीने खटकायने खपाववा हुशिआर थया परतु अनतज्ञानीना निरापक्ष सुत्रोनु उल्घन करवा धारो छो, तो शु? एवी मुखाइ, ने अज्ञानरुप ल्हानथी दया धर्मनो नाश थशे? पण अरे बाळ मित्रो! दयारुप सुर्यना मयर मकाशनी आगळ अज्ञानरुप हिंसा, मृषादिक अंधकार, कदी रहवानो छेज नहीं मतलब के सर्वना माणीओना रक्षणन माटे पुन अन्य धर्मीओना शास्त्रनी केटलीएक शाक्षिओ लखी छे श्रीमहाभारते शाती पर्वणी मथम पदे तथा विष्नु पुराणादिक मध्य पण दया धर्म निरुपण करेल छे

श्रीमहाभारते व्यासोवाच ॥

सत्येनोराध्यतेधर्मं दयादानेनवर्धते,
क्षमयास्थाप्यतेधर्मक्रोधलोभाद्विनश्यति

भावार्थ—सत्य धर्मी धर्मनी उत्पत्ति थाय छे ने ते धर्म दया न दानथी

भय पण अनेन सरखो छे एम केटलाएक अर्थो पण मार्णाना बचाव माटे [illegible] रीतथी साक्षि आपेज छे वळी जैन शास्त्रमा केवळी महाराजे [illegible] अध्ययननी अगियारमी गाथामा पण उपरनी रीते सुल्लु कहलु छे के,

सव्वेजीवावीइच्छति जीवींउनमरीजीउ,
तम्हापाणवहघोर निग्गथावज्जयतिण ॥ ११ ॥

भावार्थ—केवळी महाराज केहछे क अर भव्यजीवो ! आ जगतवासी स्थावर जंगम सर्व प्राणीओ इच्छा कर छे जीवतरनी, तथा सुखनी, पण न इच्छे मर्णने के दु:खने ते माटे अहो सुज्ञ नरा ! प्राणवध एटला जीव हिंसाना कर्म आत्माने महा रौद्र भयना देनार जाणीने निग्रथ एटले परिग्रह रहित साधु चारित्रीया तेना परित्याग कर छे ए उपरनी गाथा आघमा लइने वीशमी गाथा सुधी साधुना पांच महाव्रत अने छट्ठु रात्रीभोजन तेनु वर्णन करलु छे तेमां पाच माहाव्रतनी आघमा साधुजी नवकोटीए जीवहिंसा कर नहीं, करावे नहीं अने जीवहिंसा कर्ता ने भलु पण जाणेनहीं एम साधुओना सर्वव्रतो निर्वध छे, एम सिद्धांतोमा प्रत्यक्ष पाठ छे तेम छतां पण मुग्ध* जनोना अंत करणमां महा हिंसारुप रोद्रमणानो† संभव थयो छे हवे एवी अज्ञाननी वाळउपर चढावनारनो जन्मातर दु:खे दु:खे पण बांधेला कर्मोथी छुटको थवो मुश्केल छे मतलबके निर्लेप मोक्षमार्गने हिंसारुप कर्दम चढावीने सलेप करवा धारोछो ए केवी भुल छे ? कमजे दशवीकालीक सुत्रना प्रथम अध्ययनमा पेहेली गाथा कही छे, ते नीचे मुजब

धम्मोमंगलमुक्कठ, अहिंसासजमोतवो,
देवावितंनमसंति, जस्सधम्मेसयामणो ॥ १ ॥

भावार्थ—जैन आत्मिक धर्म मोक्षनी साधना करवामा परम मगळिक छे मतलब के ते आ जगतना अनेक कार्मीक धर्मोथी सर्वोपरी उत्कृष्ट छे एनीतुल्य बीजो कोइ थकातो नथी ते श्रेष्ठधर्म केने कहिए ? अहिंसा एटले न हणवा प्राणीना प्राणने, तेनु नाम जीवदया एज धर्मनो प्रथम पायो समजवो, अने ते दया नी प्राप्तिना लाभमा सत्तर प्रकारनो सजम प्रगट थाय छे एटले आश्रवनो निग्रह× थाय ते आश्रव रोकवाथी निर्जरा प्रगट थाय छे, ने ते पुर्व कृत्य कर्मोनो सोस न करवाने माटे छे निर्जराना छ अभ्यंतर अने छ बाह्य एम बार भेद छे

* मुरख † रूधीर जमा × रोकवापणु

विश्नुपुराणश्लोके.

अहिंसासर्वजीवेषुतत्वज्ञेपरिभाषिता
ईदहिमुलधर्मस्यशेषतस्यैवविस्तर

भावार्थ—सर्व जीवविषे ज्ञानी पुरुषोए दया करवी जोइए अने दया तेज धर्मनु मुळ छे ने दान, शिळ, तप, भाव ते दया धर्मनी शाखाओ जाणवी. माटे मत हणो कोइ पण प्राणीना प्राणने

अहिंसासत्यमस्तेयब्रह्मचर्यसुसयमं,
मद्यमासमधुत्यागोरात्रीभोजनवर्जन

भावार्थ—अहिंसा एटले जीव दया तथा सत्य वोलवु तथा चोरीनो त्याग करवो तथा ब्रह्मचर्य पाळवु तथा सुसजम एटले पाच इद्रीओना विषयनु रुधन करवु तथा चार महा विगय ते मदिरा, मास, मध ने रात्रीभोजन ए सौनो त्याग करवो ते सर्वनो मुख्य हेतु दया होय तोज ते सर्व त्याग थाय छे

प्राणीनारक्षणयुक्तमृत्युभिताहीजतव
आत्मोपम्येनजान हीइष्टसर्वस्यजीवित

भावार्थ—धर्मार्थीओने प्राणीनी रक्षा करवी ते योग्य छे मतलब के मर्णथकी सर्व जीवो सदा भय पामे छे माटे सर्व जगम ने स्थावर प्राणीओने आपणा प्राण शद्रस पर प्राणने जाणवो केम जे सर्व जीवोने जीवतर वाहालु छे ने मर्ण अळखामणु छे

उद्यतशस्त्रमालोक्यविपादयतिवह्यला
जीवा कपन्तिसत्रस्तानास्तिमृत्युसमभयं

भावार्थ—आ जगतमा मति भ्राति निर्नय स्वभावी अज्ञान जनोए पापबुद्धिथी परमाण हरवाने माटे घडावेला शस्त्र, ते तथा ससारमा लावा वखतसुधी जन्म मरणना त्राभ मेळववा माटे अज्ञान बुद्धिथी त्रस स्थावर प्राणीना प्राण हणवानी खातर रचेला हिंसानी विधाना शास्त्र तेनु नाम शास्त्र तो नहीं परंतु तेने शस्त्र सरीखे गणवा एवा उजळा हिंसारुप शस्त्र उचा उपाडया देखीने विपवाद पामीने थरथर कपायमान थाय छे, सर्व त्रसने स्थावर प्राणीओ मतलबके देह धरनार प्राणीओने मृत्यु समान वीजो भय नथी, एम ज्ञानीओ कहे छे

वृद्धि पामे छे अने क्षमा करवाथी धर्म स्थिर थाय छे अने क्रोधादिक सर्व नाश पामे छे, ए अवश्य छे.

अहिंसासत्यमस्तेयमत्यागमैथुनवर्जनम् ,
पचस्वेतेपुवाक्येपुसर्वेधर्मा प्रतिष्ठिता,

भावार्थ—अहिंसामा एटले दयामा, सत्यमा, अदत्त त्यागमा, दानमां, मैथुन त्यागमा, ए पाच प्रकारना धर्मोने विषे जे जे विवेकीओ प्रवर्ते ते ते सज्जनोना आत्मामा सर्व प्रकारना धर्मोनो लक्ष प्रगट थाय छे.

सर्वेवदान्तत्कुर्य सर्वेयज्ञाश्चभारत,
सर्वेतिर्थेभिषेकाश्चयत्कुर्यातप्राणीनांदया ॥

भावार्थ—सर्वे वेद भणो या अनेक यज्ञ करो या सर्वे तिर्थोमां स्नान करी, परतु जेनो सदाय प्राणीओ उपर निर्दय भाव छे ने हिंसा करे छे तेना मजकुर कृत्यो सर्व वृथा थाय छे अर्थात दयानी तुल्य न थाय

अहिंसालक्षणोधर्म अधर्म प्राणीनावध
तस्मात्धर्मार्थीभिलोकैःकर्तव्याप्राणीनःदया ॥

भावार्थ—अहिंसा अर्थात दया तेज धर्मनुं लक्षण छे ने सर्वे आत्मधर्मनी आद्यमां स्वदया अने परदया होवी जोइए एज धर्मनु लक्षण छे अने स्व तथा परप्राणीनी घात करवी तेज अधर्मनु लक्षण छे, माटे अरे धर्मार्थी बंधुओ ! सर्व प्राणीनुं रक्षण करवु !

शोणितार्द्रतवस्त्रंशोणितैनैवशुध्यति,
शोणितार्द्रतयद्वस्त्रंशुद्धंभवतिवारिणा

भावार्थ—लोही यकी खरडाएलु वस्त्र, लोहीथी धोतां कदी साफ थतु नथी तेमज हिंसा करता एटले परप्राणीओना प्राणनो अपहार करवा अनादि काळना लागेला भयानक पाप कदी धोवायज नहीं अर्थात लोहीथी रंगाएलु वस्त्र जेम पाणीथी शुद्ध थाय छे तेमज दयारुप जळथीज मेल धोवाय छे, एम श्री कृष्ण महाभारतमां कहे छे

वहुनिर्जेरा" एटले अल्प कर्म लागे छे ने घणा कर्म निर्जरे छे एवी भ्रमना राखीने पोताना आत्माने पोतेज शत्रु थइने ठगी रह्या छे माटे तेओ भयानक जन्मथी कम छुटी शकाशे ? अने आ जगतमा तेओने शरणभुत कोण थनारु छे ? कारणके "थेराणुवधानिरिया हवयति" अर्थात जे परमाणीओनु दयाधर्मी थइने रक्षण करवा मददगार न थाय ने विरुद्ध रीते दयाधर्मी एवु अमुल्य नाम स्थापी परमेश्वरने माटे अथवा गुरुभक्तिने माटे कल्पना करी करी त्रस स्थावरना प्राण हणीने पेरमेरनी पुष्टि करता पाछी पानी भरता नथी पण काळांतरे कृत्यकर्मना उदयना वखतमा हिंसा करनार प्राणीओनी थरदाश्त करवा माटे पेली पदर जातनी काळी पल्टणो तैयार थइ बेटेली छे तो त्यानी न्यायकोरटमा करेला करमोनो जवाब देवो मुश्केल थइ पडनारो छे वळी आत्मकार्यनो सुधारो करवाना वखतमा पोतानी कुबुद्धिना कारणथी पोताना लाभमा गेरहासल करनारा जडमतिओने विपत्तिना वखतमा केवो पश्चाताप करवो पडशे ? कारणके निति ज्ञान ने दर्शनननो लाभ लइ निरमळ दयाधरमनु आगेवानी पणु धरावीने धरम संबधी सर्व कार्योमा प्राणवध करता जरापण अशंका पामता नथी, ते केवी जुल्मनी वात छे ? तेनु द्रष्टांत नीचे मुजब

संवत १९४०ना फाल्गुन मासमा भावनगरमा जैनधर्मनाम धरावनार तपाल्लोकोए एक समोसरण करेलु ते वखतमा एक तपा सावजनी स्त्रीए एक गायने घी पीवाना अपराधमा मर्णांत सजा करी हती ते गोहत्यानु पाप अगणित छे तेमज संवत १९४१ना पजुसण अगाउ भावनगरी तपानी सुधरेली सभामा शास्त्रज्ञाननो अभ्यास करनारे एक बकराने पोतानी मतलबनी खातर होमीनाख्यो ते तमारी खुसपीली ज्ञातमा बकरा विषेनी अफवा चालेली ते सांभळवामा आवी हती ते विषे खरु खोटु तो परमेश्वर जाणे, पण तेवाकृत्य जैनीनाम धरावीने करवा ते काइ जैनधर्मनो कोमळवाळा गणाता नथी वळी एवा बिचारा अनाथ पचेंद्रिजीव गाय तथा बकरु पोताना पुर्व कृत्यथी जन्म हारीजइने तिर्यचनी योनीमा जइ फसायाते पुर्व कृत्यथी मरीतो रहत्याज हता पण तमारा जेवा जुल्म करनार जनोना हाथे पडता निरापराधि ये जीवोनो नाश करी नाख्यो ते काइ कर्मपुर्व जन्मांतरतो भावी भुल्नार नथी परतु आधुनिक जमानाना बहवार प्रमाणे तमारी सज्ञातीए ते जुल्म गुनो उपार्जीन सुधरेली सभ नी मन्न खातर तेनो बीन्कुल तपास न करता उल्टी रीते माया कपटथी साम्रित थइने आनंद मंगळ वतावोछो परतु ते बाबत

कटकेनापिविद्धस्यमहतीवेदनाभवेत,
चक्रकुंतासियष्ट्याद्येर्मार्यमाणस्यकिंपुन'

भावार्थ—पगमा मोजडीओ पहेया विना पर्ये चाल्ता कांटार्थी विधाएला प्राने अत्यत वेदना थाय छे ते खमी शकाती नथी तो पर प्राणीओने हणवाने माटे द्रव्य शस्त्रो जेवा चक्र, भाला, तरवार, लाकडी विगेर मारता तेओने वेदना न थाय ! अर्थात थायज परंतु ए मजकुर कहेला शास्त्रोना प्रतिपक्षी हिंसाचार्य इंद्रियमां लुब्ध थइ गएला ने नास्तिक जगत बंधननी फासीना पराधीन पणामा फसाइने पोताना देहार्थी साधनो साधवा माटे अनेक कपोळ कल्पित कुतर्कोथी भरपुर दिर्घ आश्रवना समावेश साथे कुशास्त्ररुप शस्त्र तेनी परुपणा करता थका शु पर प्राणी ओना प्राणने कुशळ रहेवानु छे ? ना ना एम नहीं पण एमतो खरु के हिंसा कर नार प्राणीओ तो बीजा त्रस स्थावर प्राणीओने वागवा माटे शस्त्ररुप कांटानी माळ बांधीने आ जुल्मी कळिकाळमां जन्म लीधो छे तो ते कांटारुप शास्त्रोना वचन- रुप तिक्षण अणीओने चूरण करीनाखवा माटे ज्ञानोदयथी दयावाक्योथी भरपुर शास्त्रना बोधरुपी मोजडीओ पहेरीने धर्मधरा एटले धर्मरुप पृथ्वी उपर थइने दया- मार्गे चाली मोक्षरुप शहेरमा पधारवा माटे निर्भय थइने सदा आनंद उत्साह भेर रहेवु

इत्यादिक श्री महाभारते तथा विष्णुपुराणे दयाधर्मनी पुष्टि करेली छे एट लुज नहीं पण बीजा अन्यदर्शनीना शास्त्रोमां पण दरेक ठेकाणे दयाधर्मविषे दरेक रीतथी विवेचन आपेलु छे कारणके दयानु स्थापन कर्यासिवाय जेजे धर्मशास्त्रो छे ते सर्व स्थळ विनाना क्षयोपमिक थइ जाय छे माटे अन्य दर्शनीओ जीवदया जाणे या न जाणे पण दरेक शास्त्रना मध्यमा लावे त्यारे ते शास्त्र मान्यपुज्य थाय छे परतु एवा धर्मशास्त्रना रचनाओ पोते बहिरात्मा छतां विभग ज्ञानावलबनथी जाणे तेटली परदयानु स्थापन करीशकया छे कारणके स्वदयाना स्वरुपनु तेओने लक्ष ज्ञान न थतां एकतरफी बोध निरुपण करेलो छे पण स्वदयालक्षी तो अतरात्मा परमात्मा सिवाय स्वप्नमां लइ शकेज नहीं तथापि परदया छे ते पण महा पुन्यनु निदान छे, अने जैन स्वदयानु आलबन छे परंतु स्व अने परपक्षनी दयाविना जे जे पुरुषो धर्म कर्णीमान्य करी रह्या छे तेतो केवळ तम स्वभावी आभुप्रमतिओ एक तरफी निर्दयपणामां बोलेछे क भक्तिने माटे आश्रव थाय तेमा " अघ्रकर्म

वहुनिर्जेरा" एटले अल्प कर्म लागे छे ने घणा कर्म निर्जर छे एवी भ्रमना रार्खाने पोताना आत्माने पोतेज शत्रु थइने ठगी रह्या छे माटे तेओ भयानक जन्मथी केम छुटी शकाशे ? अने आ जगतमा तेओने शरणभुत कोण थनारु छे ? कारणके "वेराणुवधानिरिया चवयति" अर्थात जे परप्राणीओनु दयाधर्मी थइने रक्षण करवा मददगार न थाय ने विरुद्ध रीते दयाधर्मी एवु अमुल्य नाम स्थापी परमेश्वरने माटे अथवा गुरुभक्तिने माटे कल्पना करी करी त्रस स्थावरना प्राण हणीने वेरझेरनी पुष्टि करता पाछी पानी भरता नथी पण कालातरे कृत्यकर्मना उदयना वखतमा हिंसा करनार प्राणीओनी बरदाश करवा माटे पेली पदर जातनी काली पलटणो तैयार थइ वेठेली छे तो त्यानी न्यायकोरटमा करला करमोनो जवाव देवो मुश्केल थइ पडनारो छे वली आत्मकार्यनो सुधारो करवाना वखतमा पोतानी कुबुद्धिना कारणथी पोताना लाभमा गेरहासल करनारा जडमतिओने विपत्तिना वखतमा केवो पश्चाताप करवो पडशे ? कारणके निर्ति ज्ञान ने दर्शननो लाभ लइ निरमळ दयाधरमनु आगेवानी पणु धरावीने धम्म सवधी सर्व कार्योमा प्राणवध करता जरापण अशका पामता नथी, ते केवी जुल्मनी वात छे ? तेनु द्रष्टात नीचे मुजव

सवत १९४०ना फाल्गुन मासमा भावनगरमा जैनधर्मनाम धरावनार सपाल्ेकोए एक समोसरण करलु ते वखतमा एक तपा सावजनी स्त्रीए एक गायने घी पीवाना अपराधमा मर्णात सजा करी हती ते गोहत्यानु पाप अगणित छे तेमज सवत १९४१ना पजुसण अगाउ भावनगरी तपानी सुधरली सभामा शास्त्रज्ञाननो अभ्यास करनारे एक वकराने पोतानी मसलचनी खातर होमीनाख्यो ते तमारी कुसपीली ज्ञातमा वकरा विषेनी अफवा चालेली ते सामळवामा आवी हती ते विषे खरु खोटु तो परमेश्वर जाणे, पण तेवाकृत्य जैनीनाम धरावीने करवा ते काइ जैनधर्मनो कोमळवालो गणातो नथी वली एवा विचारा अनाथ पचेंद्रिजीव गाय तथा वकरु पोताना पुर्व कृत्यथी जन्म हारीजइने तिर्यचनी योनीमा जइ फसाया ते पुर्व कृत्यथी मरीतो रहेवाज हता पण तमारा जेवा जुल्म करनार जनोने हाथे पडता निरापराधि वे जीवोनो नाश करी नाख्यो ते काइ कर्मपुर्व ज मातरमा भावी भुल्नार नथी परतु आधुनिक जमानाना वहवार प्रमाणे तमारी सभाओए ते जुल्म गुनो छुपावीने सुधरली सभ नी मन्द खातर तेनो मो कूल तपास न करता उलटी रीते माया कपटथी साप्रिन थइने आनन्द मगळ वतावोछो परतु ते वावत

तमोए लोकापवादथी पण डर न राखता अपराध छुपावी राख्यो छे, तो एटलुज के शु तमारा पीळा वस्त्रवाळा यपधारीओनी पासे ते बाबतनु या आळोयण लइने शास्त्रोना रिवाज प्रमाणे शुद्ध थइ गया हशो के शु ? ना तेमपण खातरी थती नथी कारण के लोको अपवाद टाळवाने तथा ज्ञाती धर्म राखवानी खातर नवराश लीधी होततो धर्मापराध टाळवामा पण नवराश लीधी समजाय पण ते बे तरफना अपवादथी निरापराधि न थाय माटे एम समजाय छे के ए जीवर्मिसानां लागेला कर्मोथी तमो सुधरेला वकीलनो कायदा कलमो लख करी करीने दुर्गतिना स्वामिओनी झपटमाथी छुटी जवा धारो छो क केम !! अरे बाळ मित्रो ! तमारा कठोर अने पाषाणरुपी हृदयमा स्वप्ने पण धारशोमा के नर्काधिपति पासेथी छुटी जइए केम जे तमारी डाहापणदार ज्ञातीए मजकुर प्राणीओना मर्ण सामे ध्यान न आपता केवळ तमारीज दयाथी यवनधर्म साचव्यो छे पण जन्मातरे नर्काधिपतितो लाच न लेता या सिपारस न राखता कायदानी रीतेज मर्ण पामनार प्राणीओनु करज तमारी पासेथी लेशे एम खातरीथी समजजु अने एवा मोटा प्राणीओना प्राणवधनो तमारी पाषाणरुपी हृदयमा कांइपण शोच थता नथी; तो बिचारा पृथ्वीआदि असन्नी पचेंद्रिओनावध सुधीनो आरंभतो तमो मोक्ष अने महानिर्जरा हेतुज गणोछो, तो अरे दयाधर्मीओना प्रति पक्षीओ ! तमने पुछवानु एटलुज के तमो ठाम ठाम ग्रंथोमा तथा चोपानीआमां दया, दया, दया, एम ख्यान करोछो, माटे ते दया ते कया प्राणीनी पाळवी ? ते प्राणीना नामठामसो बतावो ? वळी दरेक ठामे हिंसा करवाथी नर्के जाय एम कहोछो ते कया जीवनी हिंसाकरवाथी नर्के जाय ? अने ते कोण जशे तेनो खुलासो आपवो जोइए ते सिवाय पुछवानु के अन्य धर्मवाळा तेओना शास्त्रनी रीत प्रमाणे दया पाळवानो उपदेश करता हशे ? अने तमे कया प्राणीओनी दया पकडी छे ते कहो! परतु अन्य दर्शनीओ साव्द्यानावलंबनथी आश्रव शेवी सटकायना अजाणपणामां आरंभ करछे तेने कहोछो जे ते भारे कर्मीछे अने तमे कहोछो के अमो सर्वोपरि शास्त्रना पारावारीछीए तेमज छकायने ओळखीए छीए एम जाणपणानु खोटु डोळ घालीने धर्मार्थे प्राणीओना प्राणनो नाश करो तो तमने आश्रव थोडो लागे अने प्रति पक्षिओने वधारे लागे तेनु केवी रीतेछे ? ते लखीतवार सुत्रना मुळ पाठ साथे जवाब आपवो जोइए परतु मिथ्यात्वि तथा समकिना करेला आरंभविषे घटबध थाय छे ते अमो जाणीए छीए केमजे भगवतिजीमां कह्यु छे जे काइ अनार्थे पुरुषे

क्रोधाकुळ यइने कोइ स्थळ थाळी मुकवानी खातर अग्नि मुकी, ते अनार्यना वि-
चारमातो सर्व प्राणीओनो नाश करवानी बुद्धि छे इये तेज वखतमा एक आर्य
पुरुषे ते लाय लागती देखी सर्व प्राणीओना बचाव माटे अग्नि ओल्व
वानी बुद्धिए प्राणी विगेरे छकायना आरंभथी सळगावेली अग्नि बुझावी
ए बे जणाए महा आरम करेलोछे पण तेमा अग्नि सळगावनारने चिकणा कर्म
अने बुझावनारने स्थळ कर्म लाग्या छे ए बेहनु समाधान वितरागे करेलुछे पण
तमो तमारा धर्मना आरंभ उपर न ताणी जता वितरागना वचनने अनुसरीने
जवाब आपवो जोइए अन्यदर्शनीओने छकाय जीवोनु जाणपणु नहीं होवाने लीधे
सारंभी धर्म मानेछे, तो तेने तमे दुर्गत दायक गणो छो अने तमो सर्व प्राणीओने
ओळखी शास्त्र आधारथी प्राण, भजा, इद्री, जीग, सन्ना, परखी परखीने धर्मनी
खातर तिव्र रससाथे हणोछो माटे प्रति पक्षीओनी अपेक्षाए धर्म जाणो हिंसा कर-
नार केटलामा ? पाताळ सुधी पहोंचवा धारेल्य छे ? ए विचारतो करो ! वळी क-
हेवानु के केटले प्रकारे अज्ञान प्राणीओ नर्कनु आयुष्य बाधे छे ? ते सुत्र पाठ
साथे बतावबु जोइए वळी पीळा वस्त्रवाळाओने पुछवानु के तमो श्रावकोने पुरे-
पुरा सूत्रनु जाणपणु करावो छो के एकला गपोड प्रयोजीज कान भरी दीओ छो?
ते शी रीते छे ? केमके आ अमूल्य दया धर्म शुद्ध छे तेम छता हिंसा रोपण
करोछो ए काइ जैन धर्मीओनो वव्यहार या आचार जणातो नथी परतु अन्न
दर्शनीओ तो कहेछे के अमारा शास्त्रोमा दया पाळवा विषे महान पुरुषोए घणुज
विवेचन आपेलु छे, पण अमो लाचार के ते प्रमाणे न चाल्ता वव्यहारना परा-
धिनपणाथी पळी शकतु नथी एम ए लोको कबुल करीने पण निराश्रयीपणु
गणावेछे परतु तमो दयाधर्मीओनु ढोळ घाल्नाराओ अनता प्राणीओने धर्मनी
खातर हणीने दया मान्य करोछो ते दया शास्त्रनी रीते प्रमाणीक केम थाय ?
माटे अरे दिर्घाथवी प्याराओ ! आज पर्यत सुधी सिद्धातोनु श्रवण करीने पछी
दयानो पोकार करो तो व्याजबी कहवाय, पण हाल तो मजबूर प्रति पक्षीओना
धर्मीओनी रीते दिनपणे आरंभनो गुनो माफ मागवो जोइए, जे अमारा दयाध-
र्मना नामगुणनी रीते चाल्नी न शकता आरम्भ मार्गनी र्म्गमा फसाया छीए, एवी
रीते तमो उदासीभाव आणशा त तेज वखते करल्ना आरंभना धर्मनी ढहुळता थएली
हशे ते सरतज घटवा माडशे, अने ते धर्म घटवाना लाभ ग वितराग मर्णीत धर्मनी
रुचीथी दयारुपी स्वभाव थशे ए निःसदह छ कारण क वितरागे सिद्धातोमा आज

पर्यंत सुधी हिंसा करवाथी ससार तर एवु वाक्य काइपण स्थळे वापरलु नथी परतु अगियार अग,बार उपागादि सुत्रोमा हिंसा करनारनी कर्णी या तेनी सावद्य क्रिया बतावी छे, पण एवी क्रिया निर्जरा हेतु गणवी एम काइ सिद्धातमा नथी परतु एवी सावद्य क्रिया अधर्म निर्जराहतु गणाय छे ए सिद्धांतोमा जोसो तो तरत जणाइ आवशे तेमज श्री उत्तराध्ययनना छठ्ठा अध्ययननी सातमी गाथा नीचे मुजब.

अझथ्थंसव्वउसव्वदिस्सपाणेपियायए,
नहणेपाणिणोपाणेभयवेराउउवरए

भावार्थ—सर्वे प्रकारे इष्टना सजोगथी उपज्यु सुख ते सर्वेन वल्लभ छे एम शास्त्रोक्त रीते देखीने जियत्व वहालु छे प्राण धरनारा प्राणीओने माटे न हणो न हणो । प्राणीओना प्राणने अर्थात दया पाळो ने तमारी तरफना भयानक सात भयथी तथा वरभावथी निर्भय करी अभयदान आपो तो तमे पण अभयपदजोग थशो वळी तेज सुत्रना अढारमा अध्ययनमां कह्युं छे के,

सगरोवीसागरंतभरहवासंनराहियो,
इसरियकेवलहीच्चादयाएपरिनिवुडो ॥ ३५ ॥

भावार्थ—सगरनामा चक्रवृतीए त्रण दीसे समुद्र लगे आण वरतावी अने उत्तरे लघु हेमवंत लगे आण वरतावी ते भरतक्षेत्रनो राजा केवळ या सपुर्ण ठकराय छाडीने स्व अने परदया सजमे करी व्रतक्रियाने योग्ये सिद्ध पद पाम्या ते दयानो प्रभाव छे

॥ काव्य ॥ नतअरीकठछेत्ताकरेई,
जसेकरेअप्पणियादुरप्पा
सेनाहिमच्चुमुहतुपत्ते,
पछाणुतावेणदयाविहुणो ॥ ४८ ॥

भावार्थ—तेज सुत्रना विशमा अध्ययनना काव्यमां कहेलु छे जे जैननो वेष धरीने पोते इंद्रियोना पराभिनपणाथी मिथ्यात्व सेवना करीने पछी पोतानी सहायता माटे परने मिथ्यात्वे शेवरावे ए महा अपराधी गणवा योग्य छे, मतलब

के जेटलु प्राणनो हरनार अने वेरी न करे तेथी वधार मुड्ड ते वेप लजावनारो करे अर्थात पोते वेपधारी हिंसा मार्ग आदरीने शर्णागतने पण तेमज वरतावधा धारेछे तो पोतानु अने परनु कार्य विनाश कर्यु माटे मर्णाते ते असजमीओ मोटा पश्चातापमा पडनारा छे

गाथा ॥ इदिअथेवीवजितासझायचेवपंचहा
तमुतितपुरकोरेउवउतेरियरीए ॥ ८ ॥

भावार्थ—तेज सुत्रमा चोवीशमे अध्ययने कहेलु छे जे अर सजमार्थी ! तु पांच इद्रीओना विकारने वरजीने तथा पाच प्रकारनी सझाय, ए दश बोल्ने वरजीने शुद्धात्म उपयोगे इरिया एटले पथे चालता सुमती एटले ज्ञान बुद्धी लावीने चार हाथ प्रमाणे द्रष्टी आगळ करीने खटकाय प्राणीनु रक्षण करजे. अर्थात दयानी खातर सावधान थइ चाल्जे एम दया पाळवा आज्ञा कही छे

गाथा ॥ एवमेयाणिजाणीतासव्वभावेणसजए
अप्पमत्तोजयेनिच्चमठिंदिएसमाहिए ॥ १६ ॥

भावार्थ—दशविकालीक सुत्रना आठमा अध्ययननी सोळमी गाथा अगाउ भगवते छकाय जीवने ओळखवानु स्वरुप बताव्यु, त्यार पछी मजकुर गाथामा कह्यु जे अर संजमार्थीओ ! छकायना जीवनु स्वरुप जाणीने पछी पोताना आत्म सुधारा माटे मन, वचन, अने काया स्थिर करीन सजति कहला आठ स्थानकनी रक्षा करे अप्रमाद[1]पणे अर्थात दया पाळे पोतानी पाच इद्रीओनो निग्रह[2]करीने ज्ञानवत सजति एम कह्यु माटे सर्वथा दया पाळे ने परने पण पळाववा चुकेज नहीं पण कोइ कारणे हिंसा करवा आज्ञा नथी ते अवश्य छे.

गाथा ॥ सएसाहूधम्मचपावधम्मनिराकरे,
उवहाणविरिएभिख्खु, कोहमाणचविवज्जए

भावार्थ—सुयगडाग सुत्रना अगियारमा अध्ययनमा पात्रिशमी गाथामा कह्यु छे के अर सजतिओ ! भला धर्मनी साधना करीन हिंसा धर्मने तजो अने उत्कृष्ट तप करीन क्रोधाग्नि ट्याटा कारण के क्रोधाग्निथी तपनो नाश थाय छे एमज हिंसा करवाथी भलो धर्म एटले मुक्तिना साधननो नाश थाय छे माटे

१ सावधान २ वश

पर्यंत गुधी हिंसा धर्मार्थी ससार तर णु धाय माहण म्हटे वासरनु नथी परतु अगियार अग, बार उपागादि सुत्रामा हिंसा धरनारनी वर्णा या तेनी भावक्रिया मतारी छे, पण एवी क्रिया निर्जरा हतु गणरी एम शाट सिद्धान्तमा नथी परतु एवी सावद्य क्रिया अनाम निर्जरानु गणाय छे ए सिद्धानोमा जामा तरत जणाइ आवशे तेमज श्री उत्तराध्ययनना छट्ठा अध्ययननी सातमी गाथा नीचे मुजब

अज्झत्थसव्वउसव्वदिस्सपाणेपियायए,
नहणेपाणिणोपाणेभयवेराउउवरए

भावार्थ—सर्व प्रकार इष्टना संजोगथी उपज्यु सुख ते सर्वन वल्लभ छे एम शास्त्रोक्त रीते देखीने जिवत्व वहालु छे प्राण धरनारा प्राणीओन माटे न हणो न हणो। प्राणीओना प्राणने अर्थात दया पाळो ने तमारी तरफना भयानक सात भयथी तथा परभवथी निर्भय करी अभयदान आपो तो तमे पण अभयपदजोग थशो वळी तेज सुत्रना अग्यारमा अध्ययनमा कह्यु छे के.

सगरोवीसागरतभरहवासंनराहियो,
इसरियकेवलहीच्चादयाएपरिनिवुडो ॥ ३५ ॥

भावार्थ—सगरनामा चक्रवर्तीए त्रण तीसे समुद्र लगे आण वरतावी अने उत्तरे लघु हेमवत लगे आण वरतावी ते भरतक्षेत्रनो राजा केवळ या सपुर्ण ठकराय छाडीने स्व अने परदया सजमे करी अव्रक्रियाने योग्ये सिद्ध पद पाम्या ते दयानो प्रभाव छे

॥ काव्य ॥ नतअरीकउछेत्ताकरेई,
जसेकरेअप्पणियादूरप्पा
सेनाहिमच्चुमुहतुपत्ते,
पछाणुतावेणदयाविहुणो ॥ ४८ ॥

भावार्थ—तेज सुत्रना विशमा अध्ययनना काव्यमा कहेल छे जे जैननो वेष धरीने पोते इन्द्रिओना पराधिनपणाथी मिथ्यात्व सेवना करीने पछी पोतानी सहायता माटे परने मिथ्यात्व सेवराये ए महा अपराधी गणना योग्य छे, मतलब

थांग सिचाणाने भक्षण करवा अर्पण कर्यु तो कुदरती साचा प्राणीओने वचाववा दया धर्मीओ शु न करे ? जे धार ते करवा कदी चुके नहीं ए सर्व दयानोज प्रभाव छे परतु तेमा काइ हिंसानो प्रभाव नथी

प्रश्न—व्याकरणना छठ्ठा अध्ययनमा कह्यु छे जे अहो पुज्य ! दयाना वीरद्ध धरनार कोण कोण पुरुष छे ? ते पाठ जगनायकेहत्रिलोयमहिएह भावार्थ—सर्व जगतना नाथ अने त्रण लोकना महिए एटले यथागुणे पुजनिक एवा तिर्थंकर महाराज पोते दया पाळवा उद्यमवत थया तेमज सामान्य केवळी, तथा मनपर्य वज्ञानी तथा अवधज्ञानी तथा मतिश्रुती ज्ञानी तथा लब्धिधर विगेर जे जे दया धर्ममा उत्तम पुरुष थया ते सर्व दया धर्मनीज वृद्धि कर्तांछे एम सर्व सुत्रार्थमा खुलीरीते निरापक्षपणे पाठ छे वळितिर्थंकर चक्रवर्ती वासुदेव, वळ्देव, ए पद्वी-धर थया, ते सर्व सजम दयाना प्रभावछे, हिंसाना कृत्यथी कोइ पण सिद्धातमां उत्तम कार्यनी फतेह मेळवी, तेवु द्रष्टि गोचर आवतु नथी तेथी ए खातरीवध दयाधर्म सर्वोपरी छे, अने आत्मगुणना मुळभेद खोलववानी दयारुप कुची सम-जवी केमजे दशवीकाल्नीक सूत्रना छट्टा अध्ययननी नवमी गाथामा कह्यु छे ते नीचे मुजब

तथ्थिमपढमठाणंमहाविरेणदेसिय
अहिंसानिउणादीठासव्वभुएसुसजमो ९

भावार्थ—तेज मोक्ष साधना करवाना वखतमा प्रथम धर्मनु स्थानक ते अ-हिंसा अर्थात दयाज दीठी एटले सर्व प्राणीभुतनु रक्षण करवु तेज सजमगुण धर्म वृद्धि करनार छे एम जाणीने केवळज्ञानना टटयकाळमा भव प्राणीने बोध निचे मुजव कर्यो छे

गाथा जावंतिलोयपाणातस्साअदुवथावरा
तेजाणंमजाणवानहणेनोविघायए १०

भावार्थ—वळी दसमी गाथामा कह्यु छे जे अर धमार्थी आ लोकमां जेटला प्राणी छे, ते त्रस तथा स्थावर ये जातना छे ते सर्वने जाणता या अजाणता कोइ कार्य कल्पिने न हणा न हणो मतलव क दया करो वळी उत्तराध्ययन सतरमानी गाथा छट्ठीमा कह्यु छ जे साधपणु नाम धरावीन हिंसानो बोध कर तेन महापापी.

तेहनो त्याग करो एम कह्युछे एवी रीते तीर्थंकर महाराजे सर्व मुनीर्ओने हिंसा धर्म छोडवानी आज्ञा करेली छे, पण हिंसा करवा आज्ञा करेली नथी भूत काल, भविष्य ने वर्तमानकाळे हिंसानो त्याग बतावशे. पण हिंसा स्थापन माटे कोइ बोध नहीं करे एम जैनशास्त्रो साक्षि पुरे छे

गाथा ॥ गारपिआवसेनरेअणुपुव्वपाणेहिंसजए समयासव्वथसुव्वएदेवाणगछेसलोगय ॥ १३ ॥

भावार्थ—वळी तेज सुत्रना बीजा अध्ययनमां त्रीजा उदेशानी तेरमी गाथामां एम कह्यु छे जे गृहस्थ घासमा वसनारा श्रावको अनुक्रमे शक्ति प्रमाणे यथाशक्ति जीवनी जतना करी रुडा व्रत पाळीने सरव जीवन पाताना आत्मा तुल्य गणी दया, धरम, सवर, सामायक, पोषण करीने देव लोकमा जाय एम कर्यु छे वळी उत्तराध्ययनना अढारमा अध्ययनमा सक्रेंद्रनी प्रेरणाथी दसारण भद्र राजाए कार्मीक रिद्धिनु अभिमान तजी धरमाभिमान राखवा माटे दया धरम एटले सरव तथा परनी दया तेज सजम आराधना करी, एटले तेज वखते इंद्रे आवी सरव देव रिधि साथे नमन कर्युं, ए सजम दयानो प्रभाव छे

श्री ज्ञातासुत्रना प्रथम अध्ययनमा मेघ कुमारे पुर्व जन्मातर तिर्यंच हाथीना भवमां भद्र प्रणामे वनमां दावानळना प्रज्वलित तापथी भय पामता एक ससलाने बचाववानी खातर पोतानो पग उंचो तोळी राखीने पोताना भार शरीरने महा सस्दी आपी ते कारणथी पोतानो प्राण त्याग थइ गयो, त्या भद्र स्वभावे मनुष्य भवनु आयुष्य उपार्जीने मेघ कुमार थया पछी सजमजोगे मर्णांतकार्य साधीने विजय वैमानमा बत्रिस सागरोपमनी स्थिति भोगवी महाविदेह क्षेत्रे मनुष्यभव प्राप्तना वखतमा सजमानुष्ठान साधीने मोक्ष प्राप्त थशे ए सर्व दयाधर्मनोज प्रभाव छे

एमज सोळमा शांतिनाथ तिर्थंकरनु पुर्वे जन्मातर एटले दशमा भवमा मेघरथ राजा एवुं नाम हतु त्यां कार्मीक देवकृत्य पारेवानो बचाव करवा माटे कार्मीक देवकृत्य सिचाणाना कहेवाथी पोताना शरीरनु मांस कापीकापीने त्राजवे भर्यु तेम छतां सिचाणानी धारेली मुराद हासल न थतां पोते सर्वांगे सिचाणाने अर्पण थया त्यां दयाना परिणामथी तिर्थंकर गोत्र उपार्ज्यु छे ते पण दयानोज प्रभाव छे जेम ए देवकृत्य पारेवानो बचाव करवानी खातर मेघरथ राजाए पोतानुं स

थीग सिचाणाने भक्षण करवा अर्पण कर्यु तो कुदरती साचा प्राणीओने बचाववा दया धर्मीओ शु न करे? जे धार ते करवा कटी चुके नहीं ए सर्व दयानोज प्रभाव छे परतु तेमा काइ हिंसानो प्रभाव नथी

प्रश्न—व्याकरणना छठ्ठा अध्ययनमा कह्यु छे जे अहोपुज्य! दयाना वीरद्ध धरनार कोण कोण पुरुष छे? ते पाठ जगनायकेहत्रिलोयमहिएह भावार्थ—सर्व जगतना नाथ अने त्रण लोकना महिए एटले ययागुणे पुजनिक एवा तिर्थकर महाराज पोते दया पाळ्वा उद्यमवत थया तेमज सामान्य केवळी, तथा मनपर्य वज्ञानी तथा अवधज्ञानी तथा मतिश्रुती ज्ञानी तथा लब्धिधर विगेरे जे जे दया धर्ममा उत्तम पुरुष थया ते सर्व दया धर्मनीज वृद्धि कर्त्ताछे एम सर्व सुत्रार्थमां खुलीरीते निरापक्षपणे पाठ छे वळितिर्थंकर चक्रवर्ती वासुदेव, बळदेव, ए पदवी-धर थया, ते सर्व सजम दयाना प्रभावछे, हिंसाना कृत्यथी कोइ पण सिद्धातमां उत्तम कार्यनी फतेह मेळवी, तेवु द्रष्टि गोचर आवतु नथी तेथी ए खातरीबध दयाधर्म सर्वोपरी छे, अने आत्मगुणना मुळभेद खोलववानी दयारुप कुची सम-जवी केमजे दशवीकालीक सुत्रना छठ्ठा अध्ययननी नवमी गाथामा कह्यु छे ते नीचे मुजव

तथ्थिमंपढमठाणंमहाविरेणदोसिय
अहिंसानिउणादीठासव्वभुएसुसजमो ९

भावार्थ—तेज मोक्ष साधना करवाना वसतमा प्रयम धर्मनु स्थानक ते अ-हिंसा अर्थात दयाज दीठी एटले सर्व प्राणीभुतनु रक्षण करवु तेज सजमगुण धर्म वृद्धि करनार छे एम जाणीने केवळज्ञानना उदयकाळमा भव प्राणीने बोध निचे मुजब कर्यो छे

गाथा जावंतिलोयपाणातस्साअदुवथावरा
तेजाणंमजाणवानहणेनोविघायए १०

भावार्थ—वळी दशमी गाथामा कह्यु छे जे अर धमार्थी आ लोकमा जेटला प्राणी छे, ते त्रस तथा स्थावर बे जातना छे ते सर्वने जाणता या अजाणता कोइ कार्य कल्पिन न हणो न हणो मतलब क दया करो वळी उत्तराध्ययन सतरमानी गाथा छट्ठीमा कह्यु छे जे साधपणु नाम धरावीने हिंसानो बोध करे तेज महापापी.

तेहनो त्याग करो एम कह्युं छे एवी रीते तीर्थंकर महाराजे सर्व सुत्रमां दया धर्म आदरवानी आज्ञा करेली छे, पण हिंसा करवा आज्ञा करेली नथी वळी भूत भविष्य ने वर्तमानकाळे हिंसाना त्याग बतावशे. पण हिंसा स्थापन माटे कोई बोध नथी कर एम जैनशास्त्रो साक्षि पुरे छे.

गाथा ॥ गारंपिआवसेनरेअणुपुव्वपाणेहिंसजए समयासव्वथसुवएदेवाणगछेसलोगय ॥ १३ ॥

भावार्थ—वळी तेज सुत्रना बीजा अध्ययनमा त्रीजा उदेशानी तेरमी गाथामा एम कह्यु छे जे गृहस्थ वासमा वसनारा श्रावको अनुक्रम यत्नि करीने यथाशक्ति जीवनी जतना करी शुद्ध व्रत पाळीने सर्व जीवने पोताना आत्मा तुल्य गणी दया, धरम, सवर, सामायक, पोषण करीने देव लोकमा जाय एम कह्युं छे वळी उत्तराध्ययनना अढारमा अध्ययनमा सक्रेंद्रनी प्रेरणाथी दसार्ण भद्र राजाए कार्मीक रिद्धिनु अभिमान तजी धरमाभिमान राखवा माटे दया धरम एटले स्व तथा परनी दया तेज सजम आराधना करी, एटले तेज वख्ते इंद्रे आवी सरव देव रिधि साथे नमन कर्यु, ए सजम दयानो प्रभाव छे

श्री ज्ञातासुत्रना प्रथम अध्ययनमां मेघ कुमार पुर्वे जन्मांतर तिर्यंच हाथीना भवमां भद्र मणामे वनमां दावानळना प्रज्वलित तापथी भय पामता एक ससलाने बचाववानी खातर पोतानो पग उंचो तोळी राखीने पोताना भार शरीरने महा तस्दी आपी ते कारणथी पोतानो प्राण त्याग थइ गयो, त्या भद्र स्वभावे मनुष्य भवनुं आयुष्य उपार्जीने मेघ कुमार थया पछी संजमजोगे मर्णांतकार्ये साधीने विजय वैमानमा बत्रिस सागरोपमनी स्थिति भोगवी महाविदेह क्षेत्रे मनुष्यभव प्राप्तना धरवसमा सजमानुष्टांन साधीने मोक्ष प्राप्त थशे ए सर्व दयाधर्मनोज प्रभाव छे

एमज सोळमा शांतिनाथ तिर्थंकरनु पुर्वे जन्मांतर एटले दशमा भवमा मेघरथ राजा एवुं नाम हतु त्यां कार्मीक देवकृत्य पारेवानो बचाव करवा माटे कार्मीक देवकृत्य सिचाणाना कहेवाथी पोताना शरीरनु मास कापीकापीने त्राजवे भर्यु तेम छतां सिचाणानी धारेली मुराद हासल न थतां पोते सर्वांगे सिचाणाने अर्पण थया त्यां दयाना परिणामथी तिर्थंकर गोत्र उपार्ज्यु छे ते पण दयानोज प्रभाव छे जेम ए देवकृत्य पारेवानो बचाव करवानी खातर मेघरथ राजाए पोतानु स

थायछे. माटे ए मजकुर गायानो मतलब ए छे के हिंसाबोधकनी सोबतथी तरी चालजु तेथी अर धर्मना अर्थीओ ! हिंसाथी आरंभ कर्त्तानो संग तजी दयामार्गे शुद्ध करो ! वळी वितराग देवे मोक्षमार्ग प्राप्त करवाने आद्ये छकाय जीवना हितवन्छक थइने दयाधर्ममा पोतानी तथा परप्राणीओनी दया बतावीने ते पछी श्रावकधर्म तथा साधुधर्मना भेद बताव्या छे तेमा दयाना भेदनो कुल समावेश आवी गएलो छे परंतु एकली दयाज एम नहीं धारता सर्व सिद्धांतोनो सार आयाभावजाणतीतसव्वजाणई जेणे पोताना आत्मानु स्वरुप जगत कार्मीकथी शुद्ध जाण्यु तेणे सर्व जाण्यु, अने जेणे पोताना आत्मिक भावने न जाण्यो ते सर्व वस्तु थकी अजाण थइनेज जगतनापर पुद्गलिक भावमा भमे छे माटे अरे भोळा प्राणीओ ! जे वितरागे जगतना भवजीवोने तारवानी बुद्धिए प्रथम दया धर्मनो उपदेश कर्यो छे, ते सर्व तमारा जोवामा आवता छता आम एकदम अवळी भवर्तीमा फसाइ जइने महा आरंभनी आवृतिमा आरंभ साधनानी कल्पना करवा उत्साह धरोछो, ए केवु आश्चर्यकारक ! ! ! वळी दशवीकालिकना चोथा अध्ययनमा कयु छे जे

गाथा जयचरेजयचिठेजयमासेजयसए,
जयभुजतोभासतोपाव्वकम्मनबधइ ८

भावार्थ—आठमी गाथामा संजम धरनार मुनीने कयु छे जे अर धर्मार्थी छकाय जीवोना प्राण राखवानी खातर अने तारा आत्माने कर्मरुप बंधनाथी मुक्त करवाने माटे मोक्ष मार्गमा जतना करीने चालजे, या उभो रहजे, या बेसजे, या सथार सयन करजे, या निर्दोषी भोजन करजे, या निर्दोषी भाषा बोलजे, एवी रीते सदा उपयोगमा वर्तशो तो पाप एटले जीवहिंसारुप कर्मना बंधनमा नहीं बधाओ ए मजकुर गाथाना अर्थनो फन्नाव करता पार आय तेम नथी माटे सुलभबोधी सज्जनोए खरु ध्यान आपीने समजवु एवी रीते सर्व गणधर माहाराजे सर्वज्ञ केवळी भगवतनी साक्षि साथे सिद्धांतो गुथेला छे ते सर्वना भावार्थ आद्य पर्यंत सरखावता एक अणुमात्र पण फरफार न थाय एम सिद्ध थएलु छे

परंतु कालांतर केवळज्ञानी महाराजना विरह काळ पछी जे जे आचार्ये सिद्धांतोना आधार उपर ध्यान आपीने पोतानी नामनागीन माटे ग्रथना प्रबंध बाधेला छे तेमां केटलोक भाग तो मुळ शास्त्रने अनुसरीने रचेला छे, अने केटलोक भाग

गाथा. समदमाणीपाणाणीनियाणिहारियाणिय;
असजएसजयमनमाणेपावसमणेतिवुच्चई ६

भावार्थ—जे पुरुष साधपणु कहने पान, फळ, पुष्प, हरीकाय तथा बीजनी जात विगेरनी हिंसा पर या करावे या करताने भलु जाणे तेने पापी समन कह्या छे माटे दया श्रेष्ट छ

गाथा ताणिठाणाणिगछंतिसिखितासजमतव,
भिख्खाएवागिहथेवाजेसतिपरिनिव्वुडा २८

भावार्थ—उत्तराध्ययन पाचमानी अठावीसमी गाथामा कह्यु छे जे धर्मार्थी साधु तथा गृहस्थी ए बेउ मोक्षार्थी सजम तपनी आराधना करीने मुक्तिने योग्य थाय

एम गृहस्थाने पण तप सजमनी दयाकरणी वताबी छ, अने आश्रव त्याग करवानु कह्यु छे, अने जीनश्वर देवनी आज्ञा तो एकान्त निर्वद्य छे, अन भुत भविष्य अने वर्तमान काळे पण तेज संवरकर्णीना बोध थने, पण आश्रव स्थापवा कोइ तिर्थंकर कहेलु नथी, सर्व स्थळे दया स्थापित छे

गाथा सवणेनाणेविनाणेपचख्खाणेयसजमे,
अणन्हएतवेचेववोदाणेअकीरियासिद्धि १

भावार्थ—भगवतिजीमा कह्यु छे जे साधुमुनी राजनी सगत करतां सुत्र साभळवा पामे १ अने सांभळता ज्ञान प्राप्ति थाय २ पछी विज्ञान एटले अनुभव प्रगट थाय ३ पछी यथायोग्य पचखाण आवे ४ पछी तेहनु फळ संजम गुण प्रगटे ५ तेहनु फळ जीनआज्ञा प्रमाणे अन आश्रवी[१] थाय ६ पछी बार भेदे तप करे ७ एमज निश्चे कर्मना बधनोने निर्कंदन करे ८ पछी अकीरिए एटले क्रिया रहित थाय ९ प छी सिद्धि गइ एटले सिद्धपद पामे छे १० एम साधु महाराजाओना प्रसंगथी दश फळ मळे छे तेथी कहेवानु के ज्ञानी पुरुषना समागमनो लाभ ज्ञान वृद्धिनी साथे आत्मकल्याणिक दया, संजमने तपनो लाभ मळे ए सुत्रवाक्य अवश्य छे अने अज्ञानी वेषधारी मायी, कपटी, पडवाइ, रसना लोलपी छकायना अहित वछक एवा विर्याभवी एटले मोटा आश्रव आरंभ करवा वाळाओनी सगत करवाथी मजकुर दशगुण नाश पामीने अवळी रीतना दशगुण दुर्गतिदायक प्रगट

१ आश्रव रहित

निर्वद्यवोत्र करीने धमे दीपावे, तेमज दयानो फेलाव करे माटे ते समकित, नीश्रित वेद, पुराण, कुरान विगेरे समकित सुत्र समजवा, ए नि'सदेह परतु जे अगियार अग तथा वार उपागादिक जैनधर्मना समकित सूत्रछे ते अन्य दर्शनीना हाथमा जाय, त्यार ते घणिज निर्वद्य भाषायी भरपुर होय पण अन्यदर्शनीओ ते सुत्रोना सावद्य भाषायी वोध वापरण करछे तेवा हेतुयी ते सुत्रोने मिथ्यात्व निश्रित मिथ्यात्व सुत्र कहीए माटे अरे मित्रो ! जे जे शास्त्रोना वाक्यथी निर्मळ गुण, या ज्ञान, दर्शन, चारित्र ने तपनी पुष्टि थाय, ते सर्व वाक्यो मान्य पुज्य योग्य छे सवत्र के वितरागे सर्व सुत्रोनोतो निर्वद्य बोध करेलोज छे परतु अन्य मतना शास्त्रमा शुद्ध धर्मनु साधन करवा माटे श्रीमद भगवतगीताना वारमा अध्यायना त्रीजा ने चोया श्लोकमा कयु छे के

येत्वक्षरमनिर्देश्यमव्यक्तं पर्युपासते,
सर्वत्रागमचिंत्यचकूटस्थमचलध्रुव ३
सन्नियम्येंद्रियग्रामसर्वत्रसमवुद्धय
तेप्रा्नुवतिमामेवसर्वभूतहितेरता ४

भावार्थ—जे सर्व प्राणीनु भलु इच्छवामा सदा तत्पर ने इंद्रिय समुदायने नियममा राखीने सर्व ठेकाणे समवुद्धि सहित अक्षरनी देस्य, अव्यगत, सर्वव्यापक, अचित्य, कुटस्थ अचळ, ध्वरु, एवा स्वरुपने चि ! रमे, ते परमात्माना पदने पहोंचे एमा शु आश्चर्य छे ! !

श्रेयोहिज्ञानमभ्यास्याज्ज्ञानाद्ध्यानविशिष्यते,
ध्यानात्कर्मफलत्यागस्त्यागाच्छातिरनतरम् १२

भावार्थ—श्रेष्ट जन्म एनो के जे आत्मिक सार्थकने माटे ज्ञान अभ्यास करे छे; अने ते ज्ञान वृद्धिना त्राममा महत्शुद्ध ध्यान प्रगट थशे, तेमज ते शुद्ध ध्यान प्रभावथी जन्मातरना उपाजन्म कर्मोना फळनो त्याग थशे अर्थात त्याग धर्म प्रात्वाथीज मोक्ष धर्मना मळी जवाय छे, माटे ज्ञान अभ्यासमा शान्त दशानो स्वभाव छे ने ते स्वभावथी पोतानु तथा सर्व जनुआनु रमण कर, ते नीचे मुजव

अद्वेष्टासर्वभूतानामत्र करुणएवच,
निर्ममोनिरहकार समदु खसुख क्षमी १३

देशकाळ प्रवर्तावरा माटे या पचमा कालना उन्मादन लोभे वृद्धिमा न
या पोताना भरणपोषणमा दुष्यमो न आवनारनी एवा अनेक विचारोनी
प्रपंची शब्दाना समापनार्थी मिश्रित करीन मूळ शास्त्रथी बहार बीजा ग्रंथो आशरे
एक लाख अने आठत्रिस हजार रचाया छे, तेमा केटलाएक ग्रंथोमा तो त्रसकाय
आरंभ समारंभथी पुजानाज पाठ समावेश करेला छे तेमज केटलाएक ग्रंथमां
सारंभथि, गुरुभक्तिनाज समावेश करेला छे तेमज केटलाएक ग्रंथोमा एकला
पहाड पर्वते तिर्थ कहिने देरा बणावीने पाषाणादिकनी प्रतिमा बेसाडवा माटे ब
दफळ बतावी महा आरंभनाज समावेश करेलो छे तेमज केटलाएक ग्रंथोमा ब
मजकुर तिर्थाए जात्रा जवु, तेना आरंभमा वधता लाभनोज समावेश करेलो छे
एवी रीते जे जे ग्रंथ कर्त्ता आचार्योए कालना माहात्म्य प्रमाणे पोताना तथा अन्
कोना मनन मसन करवाना कारणो सुझता गया तेवी तेवी बाबतमा ग्रंथो स्वा
च्छाए रची रचीने तेनु महात्म्य वधारता गया परंतु तेमा लोकोपयोगी मनरंजन
करवाना वहेवारोनी पुष्टिना ग्रंथो रच्या, तेमज पोताना शारिरीक सुखनो लाभ मळ
तेवो बोध करता गया, ते समयथी मूळ सूत्रोना भाग अल्प रह्यो, ने ग्रंथोनो भाग
वधी गयो माटे आ ठेकाणे धर्मीजनोने जाणवानु एटलुज के ते आचार्योना करेला
मिश्र ग्रंथने तथा गणधर महाराजे केवळज्ञानी महाराजनी शाखिथी गुथेला मूळ
सूत्र, ते बंनेने सरखावता परस्पर भेद पडेलो छे, ते सरत मालम पडी आवशे
मतलब के अनंत ज्ञाननी शक्तिए जे सुत्रो रचेला छे, तेमां आद्य पर्यंत, निर्वद्य
अने निर्लेपबोध मळी आवे छे; अने कळीकाळना आचार्योए रचेला ग्रंथो छे, तेमां
ज्या सुधी मूळ सूत्रोनो आधार राखीने रच्या त्यां सुधी निर्वद्य अने निर्लेपबोध
दाखल कर्यो छे परंतु कळीकाळना प्रवर्तमाननो स्वभाव उदय थयो, त्यार सूत्रथी
उलटी रीते हिंसा बोधकमा उतरी पडीने मजकुर ग्रंथोमां दयारुप वाक्यतो जुज
वापरेला छे, ने हिंसा वचनमातो काइ खामीज राखेली नथी तो अहो मित्रो!
तेवा ग्रंथोने सिद्धांतोरुप केम कहेवाय? ते विवेकीजनोए वहारिक ज्ञानचक्षुथी वि
चारी लेवु परंतु आ स्थळे अमारे कहेवानो हेतु एटलोज छे के जे जे ग्रंथोमा जे
जे वात, जे जे अर्थ, ने जे जे शब्द मूळ शास्त्रना बोधने विरुद्ध पडता न आवे,
तेमज निर्वद्य वचन वितरागना बोध प्रमाणेज मळी आवे, त सर्व प्रमाण करवु, ए
विद्वता तथा स्वधर्मनी पुष्टि कर्त्ता छे मतलब के आचारंग सूत्रमां तथा नंदी सूत्रमां
कह्यु छे जे मिथ्यात्व सूत्र समकितीना हाथमां आवे त्यारे ते उपरथी समकिती जीव,

निर्वद्यवोध करीने धर्म दीपावे; तेमज दयानो फेलाव कर माटे ते समकित, नी-श्रित वेद, पुराण, कुरान विगेरे समकित सुत्र समजवा, ए नि.सदेह परतु जे अ-गियार अग तथा बार उपागादिक जैनधर्मना समकित सूत्रछे ते अन्य दर्शनीना हाथमा जाय, त्यार ते घणिज निर्वद्य भाषाथी भरपुर होय पण अन्यदर्शनीओ ते सुत्रोना सावद्य भाषाथी बोध वापरण करछे तेवा हेतुथी ते सुत्रोने मिथ्यात्व नि-श्रित मिथ्यात्व सुत्र कहीए माटे अरे मित्रो ! जे जे शास्त्रोना वाक्यथी निर्मळ गुण, या ज्ञान, दर्शन, चारित्र ने तपनी पुष्टि थाय, ते सर्व वाक्यो मान्य पुज्य योग्य छे सवव के वितरागे सर्व सुत्रोनोतो निर्वद्य बोध करेलोज छे परतु अन्य मतना शास्त्रमा शुद्ध धर्मनु साधन करवा माटे श्रीमद भगवतगीताना बारमा अध्यायना त्रीजा ने चोथा श्लोकमा कह्यु छे के

येत्वक्षरमनिर्देश्यमव्यक्तंपर्युपासते,
सर्वत्रागमचिंत्यचकूटस्थमचलध्रुव ३
सन्नियम्येंद्रियग्रामसर्वत्रसमबुद्धय
तेप्राप्नुवतिमामेवसर्वभूतहितेरता ४

भावार्थ—जे सर्व प्राणीनु भलु इच्छवामा सदा तत्पर ने इंद्रिय समुदायने नियममा राखीने सर्व टेकाणे समबुद्धि सहित अक्षरनी देश्य, अव्यगत, सर्वव्यापक, अचिंत्य, कुटस्थ अचळ, ध्वरु, एवा स्वरुपने विचरमे, ते परमात्माना पदने पहोंचे एमा शु आश्चर्य छे ? ?

श्रेयोहिज्ञानमभ्यास्याज्ज्ञानाध्यानविशिष्यते,
ध्यानात्कर्मफलत्यागस्त्यागाच्छांतिरनतरम् १२

भावार्थ—श्रेष्ट जन्म एनो के जे आत्मिक सार्थकने माटे ज्ञान अभ्यास करे छे; अने ते ज्ञान वृद्धिना लाभमा महत्शुद्ध ध्यान प्रगट थशे, तेमज ते शुद्ध ध्यान प्रभावथी जन्मातरना उपार्जन्य कर्मोना फळनो त्याग थशे अर्थात त्याग धर्म प्रगटवाथीज मोक्ष धर्मना मळी जवाय छे, माटे ज्ञान अभ्यासमा शान्त दशानो स्वभाव छे ने ते स्वभावथी पोतानु तथा सर्व जतुओनु रक्षण कर, ते नीचे मुजब

अद्वेष्टासर्वभूतानामैत्र करुणएवच,
निर्ममोनिरहकार समदु खसुख क्षमी १३

भावार्थ—जे ज्ञानी धर्मीपुरुष छे तेने द्वेष नथी, अने ते सर्व भुवना मित्र दयावान स्वभावमा मग्न रहे छे, तथा अहंकारादिक ममता रहित रहे छे अने जेने सुख अने दुःख समान छे ने सदा ध्यान समाधी निग्रह करनारछे, एवा, पुरुषने ससारमांथी तरी जवु सुगमछे वळी गिताना तेरमा अध्यायनो सातमो श्लोक नीचे मुजब

अमानित्वअदंभित्वमहिंसाक्षानिराजवम् ॥
आचार्योपासनशौचस्थैर्यमात्मविनिग्रह ॥७॥

भावार्थ—इय ज्ञानी आत्मा केम केहवाय ? अहो अरजुन ! जेमा निराभिमानपणु तथा अदंभिपणु तथा अहिंसापणु तथा क्षांती एटले क्षमापणु तथा पोताना आत्मानुंसदा निर्मळपणु तथा जेणे धर्मना रस्तो बताव्यो ते आचार्यनी यथायोग्य भक्ति त्रिकर्णशुद्धे करवी, तथा आत्माना मुळ, गुणोने आधार अशुद्ध कर्मोथी जव पामवु ते ए सर्व गुणज्ञानी आतमामाटेज घटेछ ने तेना सर्व गुण सिद्धि छे तेमज तेरमा अध्यायनो अगियारमो श्लोक

अध्यात्मज्ञाननित्यत्वतत्त्वज्ञानार्थदर्शन ॥
एतज्ज्ञानमितिप्रोक्तमज्ञानयदतोन्यथा ॥ ११ ॥

भावार्थ—जेने अध्यात्म ज्ञानमा नित्य विचार छे, अने तत्व ज्ञानना अर्थनु सर्वदा जोवापणु छे; तेनु नाम ज्ञान कहेवाय माटे ए विना जे जे अनेक कार्यो छे तेने अहो अरजुन ! अज्ञानतानुजरूप समज ! वळी पदरमा अध्यायनो अगीयारमो श्लोक

यततोयोगिनश्चैनपश्यत्यात्मन्यवस्थितं ॥
यततोप्यकृतात्मानोनैनपश्यत्यचेतस ॥ ११ ॥

भावार्थ—स्व तथा पर आत्माना यत्न करनारा जोगी पुरुष पोतानी ज्ञानबुद्धिमां रहेला जीवने सदाय जुवे छे तेवा पुरुष आ जगतमां सर्वोपरी छे परतु जेणे ज्ञानीपणु धरावीने पोताना चित्तनु साधन करेलु नथी, तेवामूढ जडबुद्धिवाळा अतनावत नाम धरावता छता पण पोताने तथा परने देखवा सामर्थ्य थता नथी एवा अजाण प्राणी मोक्ष लायक पण नथीज वळी सोळमा अध्यायना बीजा श्लोकमां ससार तारनार सदगुणी पुरुषना लक्षण बताव्या छे, ते निचे मुजब.

अहिंसासत्यमक्रोधस्त्याग शांतिरपैशुनम् ॥
दयाभूतेष्वलोलुप्त्वमार्दवंह्रीरचापलं ॥ २ ॥

भावार्थ—अहिंसा एटले जीवदया, सत्य, अक्रोधीपणु, त्यागपणु, शांत स्वभाव तथा अपैशुन्य एटले चाडीयापणु जेणे छांडेलु छे तथा सर्व भूतनी दयापाळे तथा अलुब्धपणु, मार्दव एटले सदा नीराभीमानीपणु, सदा लज्जावतपणु तथा स्थिर स्वभावथी अचपळतापणु, ए सर्व गुण संपन्न होय ते पुरुष तरण तारण समजवो ते सिवाय कोइ पुरुष तरवानो रस्तो बतावबा सामर्थ्य नथी एवा निरापक्षी बोधरुपी वाक्यो परधर्मीओना दरक शास्त्रमाथी मळी आवे छे तेम मजकुर श्लोकोनो बोध जैन धर्मना मुळ सिद्धांतोनी साथे परस्पर मळता जाणी ते वाक्यो धर्मीजनोने आचरण करवा योग्य छे माटे जेटला वाक्यो निरापक्षी छे तेओने समकितसुत्रनी सायेज समजवा परंतु जे जे वाक्यो समकित ज्ञानशास्त्रना मतने अणमळता होय ते सर्व हेय एटले त्यागवा एम शास्त्र अनुसार ज्ञानदृष्टीथी विचारता मालम पडे छे पण कोइ धर्ममा न्याथी उल्टी रीते थइने हिंसा बुद्धियी जीवनु कल्याण थशे, एम कहवानु नथी ता तमे न्या धर्मी एवु नाम धरावीने सर्व धर्मीक कार्योमा प्रथमथीज हिंसानु प्रति पादन करीने स्वआत्माना कल्याणनी धारली मुराद हासल करवा धारो छो तो ए काइ जैन धर्मना शास्त्रोने अनुसार समकीती कही सकाय नहीं कारण के समकित सहित ज्ञान धरनार पुरुषानु सदा वैराग्ययु चित्त सर्व प्राणीओना रक्षणने माटेज होय परंतु कोइपण प्राणीना प्राणना बचावमा गेरहासलरूप न होय, एम तो शास्त्रमा खुल्लु मालम पडेलु छे पण तपामति घणाज ताता एटले गरम उग्रस्वभावना वाक्योथी दयारुप घोषना करनार उत्तम धर्मीओनी सामे हिंसानु प्रतिपादन करवा अनेक कुतर्को सहित बाथो लेवा तत्पर थाय छे, अने स्व अभिमानथी हिंसा धर्मनी पुष्टि करवानी खातर जिनराग भाषित मुळ शास्त्रोनु उल्घन कर छे एवी अज्ञान बुद्धि राखनार हिंसामतवाळाओने जैनना मुळ शास्त्रोनी महत्वता जोताती संसारीक दु खथी मुक्त थ जवु ए सदा मुश्केल छ परंतु अन्य धर्मना शास्त्रोमा पण स शि छ ते नीचे मुजब

गीताना सोळमा अध्यायनो अरमा श्लोक

अहङ्कारंबलंदर्पकामक्रोधंचसंश्रिता
ममात्मपरदेहेषुप्रद्विषंतोभ्यसूयका ॥ १८ ॥

भावार्थ—आ जगतमा आ प्राणीजनना मन पण्ने अकोर्थी भरपुर रहे छे, ते एम कहे छे, जे अमारी प्रार्तो उर्गी ने मार्गी, अमार कुन श्रेष्ठ न अमा माग दय तथा अमो घणा नाग्रामां पारागत थया, ए विगेर अनेक गते फरीने तेमज काम रागथी पुष्टि पामेलु सन्ताप जेनु अन करण छे, तेमज जननी नीर्ना बुद्धिथी ग्रहण करम्नो गुर्दथ तेनु महाम मधाग्या माट सर्व जनोनी साथे क्रोधाकुळ थइने मजबुर कहना दुराद्रणोना आश्रय कर्ग शुद्ध, श्रेष्ठ अने निरपक्ष मार्गनी निन्दा कर छे एवा पुरुष पोते द्वेषरूप समुद्रमा घमडार जता उत्तम ओने पण तेमज करवा धार छे तरा मार्णी अहा अर्जुन! पुरपुरा मारा द्वेषी छे एम अन्य शास्त्रोमाथी पण नीकळ्नी आय छे, ता तेवा पुरुषोनी बाबत जैन शास्त्रे धिक्कारेली होय, तेमा शु नवाइ छे ? ? ?

हवे आ प्रसगे कहेवानु के आ पहला प्रश्नमा दया पाळवानु विवचन शास्त्रोना आधारथी आपेलु छे तेमा केटलाएक अन्य शास्त्रोना श्लोको जैन शास्त्रना वाक्योने मळता जाणी सुत्र वचननी पुष्टि माटे स्थापन करेला छे परंतु तेहनो हेतु एटलोज के जैन धर्मना मुळशास्त्रोतो निर्वद्य बोधमा रचाया छे पण अन्य दर्शनीओ छकायना सारंभे वर्तता छता तेमणे बनावेला ग्रथमा केटलेक स्थळे निरापक्ष बुद्धिथी जाणे तेटली दया पाळवा विषे बोध करलो छे तो कहेवानुं एटलुज के वितराग देव छकायना बचावनी खातर सिद्धातोनो निरापक्ष बोध करवामां काइपण घट राखेली नथी एम सुत्रना दयारुप वाक्योने सुत्रना आधारथी तथा अन्य दर्शनीना शास्त्रो थी पुष्टि मळे छे माटे वितरागनी आज्ञा न्यायमय छे, पण हिंसा करवानी नथी

कयबळीकम्मानु प्रश्नोत्तर

१ प्राचिन काळमा घणा धनवान श्रावक गृहस्थो तथा घणा देशाधिपति जैन धर्मी राजाओ हता तेओ सदगृहस्थाइना कारणथी पोताने रहेवाना मकानो चणा वता त्यार सुवाना, बेसवाना, स्नानमजन करवाना, आभुषण पोशाक पहेरवाना ए विगेरे घणा जुदां जुदां खातानां मकानो चणावीने गृहस्थाइ चलावता तेमज ते गृहस्थोने अमुक अमुक मागळिक कार्यनो वखत आवतो, त्यार दरेक गृहस्थ प्रथम स्नानमजन करवाना घरमां जइने स्नान करवाना आसनपर बेसे, ते वखते तेने स्नान विधि करावनारा शेवको अनेक प्रकारना उत्तम द्रव्योथी मिश्रीत पीठी तेल विगेरेथी मर्दन करावे त्यारबाद अनेक जातोना पाणिथी स्नान करावे, ते स्नाननी विधिनो हेतु एटलोज के शरीरनी शुद्धताने माटे, तथा बळ, पुष्टि, पराक्रम वृद्धि

पमाडवाना हेतुए ते विधिनो जे जे सुत्रमा अधिकार छे, त्या " कयवळीकम्मा " एवो पाठ छे हवे ए पाठनो अर्थ शरीरनु बळ पुष्टि करवानो छे, त्या केटलाएक मतावलंबीत पुरुषो मिथ्यात्वोदयथी आश्रव मार्गनी पुष्टिनी खातर टीकाना करनारे एम अर्थ कर्यो छे, जे घरना देवनी पुजा करवी एटलोज अर्थ कर्यो छे परतु केटलाएक पोताना मतजगथी ऐवी कुयुक्ति मेळवे छे जे समकिती श्रावकने घरेतो तिर्थकरनी मतीमा छे, माटे श्रावकने घरना देव ते तिर्थकरनी पुजाओ कहेली छे, एम अर्थ करछे तेओने कहेवानु एटलुज के टीकाना करनाराए तो तिर्थकरनी मतिमा पुजवी, एम मुळगोज अर्थ कर्यो नथी तो तमोए आवु डहापण क्याथी कहाडयु ? मतलब के टीका करनारनो तथा तिर्थकर ठरावनारनो परस्पर मत मळतो आवतो नथी, तेज अघटित छे

हवे आ मसगे अल्पमति मित्रोने कहेवानु जे तिर्थकर महाराजे व्यवहार सबंधी भोगावळी कर्मने अते वैरागदशाना लाभमा कार्मीक जगत जनोए चणेला घर बार विगेरे सर्वने छोडीने दीक्षा लीधी त्यारबाद चार घनघाती कर्मक्षय थइ जयार्थी केवळज्ञान मगट थया पछी चार तिर्थ स्थापीने तेओना हेतने अर्थ उपदेश दइने व्यवहारीक घरना बधनमाथी छोडावे छे अने सासवतु सिद्धपदरूप घर त्या पहोंचाडवानो बोध करीने पोते वायुनी पेठे निर्बंधन रहेछे पण कोइना मोहरुपी बधनमा नथी हवे तेवा तिर्थकर महाराजने गृहस्थपणानी अवस्थामा पोताने रहेवाने माटे घर नहोतु ? के ते तमारा भुडा कुवामा आवी जुल्मी पराधिनपणामा रही तमारा वज्ररूपी आगळीना धोका खावा घरना देव थइ रहे ! ! एम कदी कोइना तावामा रहेम्गाज नथी मतलब के तेओना नाम वितराग कहेवाय छे एटले क्षय थइ गया राग बधन तो ते केना घरना देव छे ? वळी जेणे मात, पीता, स्त्री, पुत्रादिकनु पण बधन राखेलु नहोतु, तो तमा शु बधार तेमना खान दान हतार्थ हता के तमारा घरना देव तरीके बसे ! एम कदी होयज नहीं परतु घरबारीना घरनरा बंधइ जइने जे देव घरमा बिराजे छे, तेतो पित्र, सत्ति कुळदेव या कुळदेवी विगेर व्यवहारना भार्गादेव होय, तेज घरमा बेसे छे वळी कदाच कोइ न बेसार तो केटलाएकना घरना माणसने धुणावी धकावीने पण घरमा बेसे छे माटे ए तमारा घरना देव होय तो ना कही नथनी नथी पण वितरागने माटे तो एम छे जे, जे दीवसथी तिर्थकर घर छाटलु हतु, ते दीवसथी ज्या ज्या विहार करीने गया त्या त्या शहेरमा अने बहार या कोइनी शाळामा या परियाणानी अवस्था

या राज सभामा, एवा मासुग निर्ग्रंथ मुनिमा श्रीकृष्ण, नारद, [illegible] स्वाधिनपणे निर्बंधन थइ समवसरणे बिराजेला छे, पण ज्यारे रहीने त्याग अ भागी थयाना स्वाधिनपणामा तेना घरमा बिराज्या नथी [illegible] मुक्त थाय्या छ परंतु ज्यारथी संजम लीधो त्यारथी [illegible] पधार्या वहारना मकान रह्या, पण पाछा गृहना घरमा आवी बेठा नथी तो तेम पणा बेसाडवाना अर्थ करोछो तो तेमा पुण्यानु कारण दव केवी अवस्थाना छे ? ते वळी तिर्थंकरनी त्याग अवस्थान घर भळावशो तो तेमा पडशाइ थइ जवानो संभव धारता हो तो घरमा घसे, पण अमारा ध्यानमा तो एम छे के अनंतज्ञानी तिर्थंकर महाराज अपडवाइ छ माटे घरमा केम रहे ? वळी तमारा घरमा बठेला तेने प्रतिमा तो कहवाय, परतु तिर्थंकर देव केम कहवाय ?

२ विशेष मजकुर शब्दनो अर्थ तमारा मानवा प्रमाणे देव पुजा थतो होय तो कुळदेवादिक देवाने समकिती श्रावको जगतनो व्यवहार राखवा माटे पूजे अर्थे तो तेमा शु आश्चर्य छे ? पण एमता खरु के मोक्ष धर्मने हते न पुजे दृष्टात जेम हा लमा केटलाएक श्रावक व्यव्हारी लोको जगत व्हेवार खाते विवाह विगेरे प्रमोद महोत्सवमा गणेश भेरव, नवग्रह तथा दीवाळीमा लक्ष्मी तथा सरस्वती पुजन कर छे, तेमा काइ मोक्ष खातु जणता नथी पण व्यव्हारीक सुखमाटे कर छे, एटले प्रति बंधन गणवु, पण निर्जराहतु न समजवु

३ जेम भरत चक्रवर्ति चक्ररत्ननी पुजा कर छे ते सर्व व्यव्हारीक खाते छे ते पुजानो पाठ जंबुद्वीप प्रज्ञप्ति सुत्रमा जोइ लेवा

४ ज्ञाता सुत्रना आठमा अध्ययने अरणक श्रावकनो अधीकार छे, तेमां ते अरणक श्रावक मुसाफरीने माटे वहाणमां बेसती वखते भागी देवोने बळ बाकळा दीधा ते विगेरे केटलाएक व्यव्हार कारणा करला छे, ते पण व्यव्हारीक सुखने अर्थेज करेला छे परतु निर्जराहेतु नथी

५ अंतगड सुत्रमां त्रीजा वर्गना आठमा उद्देशामा भदलपुर नगरना रहिस नागशेठनी स्त्री सोळसाजीए पुत्रनी वंछा माटे घणा दीवस हरणमेसी देवनो पुजा करी हती, ते पण ससारीक सुखार्थे एम घणे ठेकाणे ससार व्यव्हारने अर्थे सा र्थी देवोनी गृहस्थो पुजा करे छे पण तिर्थंकर तो सारमथी कदी पुजाय नहीं मतलब के मुळमांतो " कयबलिकम्मा " शब्दनो अर्थ देव पुजा करवानो थतो नथी परतु एनो अर्थ तो न्हावाना घरमां शरीरनी विभुषा, शोभा, तिलकादिक

फळ, पुष्टिन माटे छ ते सुत्र साक्षीए कहे छे

६ भरतेश्वरना स्नानाधिकार त्विरतार्थी पाठ छे त्या " कयवलीकम्मा " शब्द बीलकुल नथी तो शु ते टेकाणे तेने घरना देव नहोता ? जरा विचार करीने अर्थ करो तो समजण पडे

७ उववाइ सुत्रमा कोणीक राजाना स्नानाविकारे पण मजकुर पाठ नथी अने कोणीक राजाने " पेमाणुरागरता " एटले तणा प्रेमथी भक्ति करवामा रगाइ गएलो छे एम कह्यु छे पण " कयवलीकम्मा " नो पाठ नथी तो तेणे पुजा पण शेनी करी हशे ? कारण के सिद्धातोमा ज्या ज्या स्विरतरे स्नान मजननो अधीकार चाल्या छे, त्यातो मजकुर पाठ नथी अने ज्या ज्या त्रिधिवार पाठ नथी त्या त्या मजकुर पाठ छे तो अवश्य छे के ए शब्दनो अर्थ शरीरना फळ, पुष्टिने माटे छे

८ ज्ञाताजीना बीजा अध्ययनमा भद्र सार्थवाहनी स्त्रीना अधीकारनो पाठ छे तेमा ते सार्थवाहनी पुत्रनी इच्छाए नगर बाहारना नाग भुतादिकनी शेवा मानताने अर्थे पुजापो लइ गइ छे त्या स्नानने अवसर सर्व पुजापो वाव्यने कांठे मुकीने पोते वावडीमा गइ ने स्नान करती वखते " कयवलीकम्मा " नो पाठ छे तो त्या कया तीर्थंकर या देवने पुज्या ? ने पुज्या कहो तो शेने करीने पुज्या ? केमके पुजापो तो सर्व बहार मुक्यो छे ने पुजाविधी पुजापथीज बने छे एम कहो छो वळी आप वखते तमो पाणीनी अजळी अर्पण करी पुज्या एम ठरावो छो ते क्यी बुद्धी कल्पो छो ? परतु जळ अजळी अरपण करता पुजा कबुल राखो छो तो तमारा देवळमा तथा घरमा जे देव कल्पी बेसाडया छे तेने पण जळ अंजळी अरपण करीने वोसिरावता केम नथी ? अने आवडा छकायना प्राण हरवानो जुल्म कम गुजारो छो ? कारण के एक अजळी जळना आरंभ करवो शास्त्रमा धर्म खाते कयो नथी तो पण आप बाळ मित्राए छकाय जीवनी पासे फाळातरतु पुरपुर घर शाथवा माड्यु छे एम समय छे परतु त्या वाक्यमा मजकुर शब्द माटे भद्रा सार्थवाहनीने वैष्णवना नावरा आ या छे पण तमारामा तथा वैष्णव धर्मीओनो पुजनमा शु तफावत छ क तेनो नावरा आपवा पडे छ आ जवाबमा ता मा पण भद्रानी रीते घर देवने जळ मर्जन करवत साचवना होगो ! ! एम तमारा केहवा प्रमाणे समपे छे

९ ज्ञाताजीने अध्ययन सोळमे द्रौपदीना स्नानाधीकार नन भाव " कय-

वळीयम्मा " नो पाठ छे त्या पाठना व्याख्यानाथा पाण ईश्न करवा व्यवहारीय स्नान मजन ते, पर पुर्णनी इद्धि करवाने माटे अनेक आपना मजन करी मगळीप व्यवहारीक दग्र पहगीने निशान पवनीघ्रुराट हासम घरना व्यवहारीय जीन दरनी पूजा परवा गइ छे परतु नावाना " कयबलीयम्मा " न रेयाणे निर्णयर या अन्य रेवनी पूजा कर छे ते केम मळ ? पूजा परवा गइ ते रेयाणानो पाठ एक पर्णा पुदतनी रूखाणमां जीना मुळ पाग्मा तो नीन रूखया मुजब छे.

जीण पदीमाण अचण करेइ करेइत्ता

ए पाठ सिवाय छुव्मा नमोथुण या चेयवदन या मगसिणा या तीसुत्त ? त्यान्कि सुरीआभ देवनी मल्गमणनो पिनिस पाठ नथी कारण क स्थिळी श्री रमा उदयचंन्जी जति छे तेनी पासे छसें वरसनु ज्ञातासुत्र रूखाएलु छे तेमज फतेयाग्लाल्जी गृहस्थ पासे घणा वरसो उपर रूखाएली कुनी ज्ञाताजी छे तेवे सुत्रोनो पाठ परस्पर मळतो छे, एटलुज नहीं पण ते सुत्रो त्याज हाजर छे वळे आ फासावाळाओए जोइ लेवु त्यार पछीनी रूखावेलमां आदेली थोडा वरसो उप रनी ज्ञाताजीनी मतोमा आवदो फेर थयो छे, तो तेमा थएलो फेरफार कलिन संभवे छे राजमश्री सुत्रमा वेशी स्वामिए प्रदेशी राजाना करेला प्रश्नना जवाबमां फठीआरानो न्यासलो आप्यो छे, ते फठीआर जगल्मा आखो दीवस काष्ट कार वाना परिश्रमे थाकीने रसोइ कर्या अगाउ यथा योग्य रीते स्नान मंजन कर्यु त्यां " कयवळीकम्मा " नो पाठ छे हवे त्या घरदेव, के परदेव कोण आवीने बेठो हसो ? क तेनी तेणे पुजा करी आ पाठनो उत्तर आश्रयमति एम आपे छे के त्या तेना मान्य पुज्य देवने पुज्या हशे एमा शु आश्चर्य छे ? एम मोटेथी वकीलात करी कुतर्को वापरवा, ते रीतसर नथी आ सघळु जोतां एम जणाय छे के आश्र यमतिओए छकाय जीवोना प्राण भेदवा माटे भयानक शास्त्ररुप जुलमी जन्म धारण कर्यो हसे कारण के दरेक वातमां हिंसानी पुष्टिवाळो मत आगळने आगळ चलावे छे ए काइ ओछु अचबायुत नथी

दिक्षा महोत्सवविशे प्रस्नोतर

केटला एक मतजंगी हिंसानी पुष्टि खातर एम बोले छे जे भाविन काळमां अनेक गृहस्थोए घणा द्रव्य खरचीने दिक्षा महोत्सव कर्या त्यां दिक्षा लेनारना भावन पुष्टिकारक टेको आप्यो. ते लाभनु कारण छे माटे दरेक दिक्षा महोत्सवे

घणु धन खरचवु ने एवा महोत्सवथी सजमार्थीनी भक्ति थाय एम कहे छे, ते वृथा छे कारण के परिग्रह खरचीने भावनी गोत करवा चाहे छे, पण एम काइ भावनी वखारो भरी नथी, के आरभथी निर्जरारुप भावनो लाभ मळी जाय ! ! एम तमारी अल्पमतिने अनुसरीने कदी समजता नहीं कारण के शुद्ध भाव या शुद्ध ध्यान ए ते तो ज्ञानदर्शनना उपयोगथीज वनवाना छे माटे परिग्रहथी आरभ मेळवीने सजमार्थीनी भक्तिने माटे मजकुर भावनी आशा राखे छे, ते वाळ अज्ञानीओनी भुल छे केमके व्यव्हारी लोको गृहस्थाश्रमा शक्तिवान होय तो धारला विचारनी साथे दिक्षा महोत्सवमा धन खरचीने गमे तेवो व्यव्हारीक लाव लइ शके तेमा गृहस्थोनी स्वइच्छा होय तेम कर, पण ए काइ शास्त्ररिवाज प्रमाणे निरजराहतु न समजवो वळी वैराग दशावाळा पुरुषोने माटे दिक्षा महत्व करे या न कर तो पण शु ! मतल्ब के जे दिक्षाना मोटा महत्सव विना सजम ले तेना चरित्रमां शु घट थाय ? अने जे मोटा महत्सवथी दिक्षा ले तेना चरित्रमा शु वृद्धि थाय ? एम काइ छे नहीं केमजे सजती राजा, दसारण भद्रराजा, गौतमादिक अगियार गणधर भरतेश्वर, मरुदेवा, रिखभदत्त, देवानदा, विगेरे अनेक साध साध्वीओ तथा अतगड केवळज्ञानी थया, तेना दिक्षा महत्सव सिद्धातोमा चालेल्ा नथी पण तेमणे ज्ञानदर्शनना आलवनथीज आत्मसाधन करेलु छे भगवतीजीमा नवमा सतकना तेत्रीसमा उद्देशामाज माळीनो दिक्षा महत्सव थयलो छे पण आखर पडवाइ थया ते सर्व पुण्याारजीत कर्माधिन छे माटे महत्सवादिक व्यवहारो संसार व्यव्हारना लाभे वृद्धि गग्ता छे ते नि सदेह

श्रावक तिर्थंकरना दरशन करवा जाय त्यारे स्नान करीने जाय एम कहेछे त प्रश्नोतर

केटलाएक मतिभ्रमित एम कह छे जे भगवानना दर्शन करवा श्रावको जाय त्यार स्नानमजन करीने जाय, नहींतो जवाय नहीं एम कह छे तेने केहवानु क अहो आश्चर्यमति ! जे माणस समकितीया मिथ्यात्वी समोसरणे जवाना प्रसगमा स्नानादिक शरीरनी शुश्रुषा विभुषा कर छ ते पोतानी गृहस्थाश्रना व्यवहार माट छे, मतल्ब के गृहस्थन सदाय व्यवहार शणगार शोभामाज छे परतु निर्जराहतु नथी केमजे सिद्धातना अधिकारोमा जे जे श्रावकोए यथाउचितए वृत नीधा, त

वखते ससार व्यवहारमां रहता न चाल्ये तेवी वातनो कुतर्क करी छो पण ते करेली कुप्रने धर्म खाते मानता नथी, तो स्नान करीने जाय तेमां शुं आश्चर्य छे !! तेमज जो धर्मनी माहात्म्य पोई पण पाता पास अगजाय न होय तो स्नान कर्या विना शुं हरकत छे ? तेनो विचार ना करो ? वळी वहवातुं एके भगवंत श्री महावीर स्वामीना पहले उद्देशे सावत्थी नगरीना रहिन सखनाम श्रावक पाप रातना पोसहशाळाए पोपासहित श्री वीर स्वामीना समोसरणमां वांदवा गया हता, त्या भगवंत समरीने उत्तम जागरका जागनार कथा छे ते अगत नाम श्रावकनी स्नान मज्जन कर्या विनाज गया हता, ते विचारी जुओ ? विशेष वहवातु के श्रावक धर्म पाळनारा गृहस्थाए जे जे सागारी धन आरंभ्या छे ते श्वाने शुद्ध श्रद्धाथी आराधना करीने पछी गखेल्नी पुत्रोना आरंभन त्यान प्रतिदिन छोडवा विचार करे पण ते आरंभन वृद्धि न कर परंतु विनाकारणे निरारंभीपणे रही शकाय तेवा विचारो गोठववा करी चुके नहीं तेमज ते गृहस्थो घणा वरससुधी सामान्य श्रावकपणुं पाळे, तेम छता उत्कृष्टी श्रावकनी करणी करवा धार त्यार अगियार श्रावकनी पडिमा आदर ते वखते विशेषण ए जे भारव्रत आदरती वखते छ छींडीना आगार राखेला हता तेनी पण पहेली पडिमा आदरता वखते करी लेछे एम पडिमा माहे चडते नियमे चडता चडता छट्ठी पडिमाना वखतमा स्नानादिक केटलाक छुटा व्यवहारोने वधीमां आणीने श्रावकपणानी करणी करे छे एवा पडिमाधारी गृहस्थोने स्नानादिकनी वधी थइ तो तमारा कहेवा प्रमाणे तेमनुं समोसरणे जवुं बंध थइ गयुं के शुं ? आ ठेकाणे तमारा अवळा विचारनी श्रधाथी जणाइ आवे छे के एवा निराधनी पाठना दाखला देवाने तमो घणीज शरमथी लज्जा पामी जता हशो कारण के जे जे गृहस्थोए व्यवहारने अनुसरीने ससार खाते करेला आरंभोना रिवाजना पाठ आगळ धरोछो ते वेळाएतो तमारा स्वभावनो विचार एम जणाय छे के जाणे छकाय जीवने ओळखताज नहीं होय तो केम जे वखतो वखत जेम आरंभ वधे तेम करवा धारोछो परंतु भाविनकाळना श्रावक गृहस्थोए ज्ञान वैरागथी केटलीक वस्तुओनो करेलो त्याग तथा धर्म ध्यान साधवाना वखतमा देवतादिकना करेला परिसह सहन कर्या ए विगेरे केटलीएक रीतथी श्रावकपणानी उत्कृष्ट करणी करेली तेम करवा तो कदी धारता नथी ने नाचवुं, खुदवुं, खावुं, पीवुं, गावुं, वजावबुं, शोभा शणगार रचवो एम करवा सदा विचार रहेछे तो शुं एकला ससारनाज लाभनी इच्छाछे के ?

॥ दोहरो ॥

जबलगतेरापुन्यका, पुगेनहींकरार,
तबलगगुन्हामाफहे, अवगुणकरोहजार.

भावार्थ—अरे अज्ञान मित्रो! तमारा मनमा खातरी तो हशे पण इय विशेष राखवी जोइए ज्या सुधी पुर्वोपार्जीत पुन्योदय छे त्या सुधी जडमतिओ स्वइ-च्छाए धर्म विरुद्ध चालता चुक्ता नथी केम जे करेला कर्मोनो गुनो माफी थइ गयो एमज गणता हशो पण ज्यारे खरी मुदत पाकशे त्यारे वितरागना अमुल्य दयारुप वाक्यो याद हास्तीमा आवशे

प्रतिमा देखवा वादवाथी समकित प्रगटे छे ते प्रश्नोत्तर

केटलाएक विवेकहीन मिथ्यात्वोदयथी एम कहे छे के प्रतिमा देखवा, वादवा अने पुजवाथी समकित प्राप्त थाय छे पण एम कहे छे ते वृथा छे मतलब के समकित पामवानो रस्तो तो शास्त्रोमा ज्ञान भेदथी बतावेलो छे ते विगत आ जुल्मी जगत झाळमा अनता काळथी समकितविना मिथ्यात्व धर्मनी प्रबळतथी जन्म जरा ने मर्णेकरी परिभ्रमण कर्यु एम अनत कोटी जन्मातरमा रडण करता अनेक जातना कष्टोथी अकाम निर्जरा करता करता यथा प्रवर्तीकरण नो लाभ मळ्यो त्यार बाद अनत कोटी अशुभ कर्मोनो नाश थता अपुर्व करण नो वखत मळ्यो ते अपुर्व करणनी उत्पत्तीमा व्रयीमेद करीने त्रीजा अनिवर्तीकरण प्राप्तिना काळमा द्रव्य भाव गुरुना आश्रयथी सासवादान समकित वरजीने रहेला चार समकितोमाथी अमुक समकित उत्पन्न थाय परतु ते वखतमा प्रतिमा वादवाथी समकित थाय एवु तो काइ जाणवामा आव्यु नथी

उपासक सुत्रमां आणन्द श्रावकने प्रथम मिथ्यात्व वोसीराववाना अवसरमा श्री महावीरनो मेळाप थयो छे ते वखते यथायोग्य रीते पच्चक्खन करी, श्री शुद्ध शेवा करीने सागार अणगार धर्मना भाव सामळ्या ते पछी उठीन विनय नम्रता साथे भगवतने कहे जे अहा भगवान! मैं निग्रथना प्रवचन "सद्दहामीजाव-रुयमि" एम कहान "एव्वमेयभतेतहमयमते" अथात अहा भगवान! जेम तमे कहो छो तेमज निगग्रर्थी निग्रथना धर्म छे एमज निर्वद्यमार्ग प्रभु छु, एम कहीन कहजे "देवाणुपियाण अतिएगहयजावमुडमविता, अगारवुकइनागममना-

एमि " अर्थात. आपनी पासे घणा इकुवर्मी निसा ले छे तेम करवा हुं छुं माटे हुं आपनी पासे श्रावकना बार व्रत आदरवा इच्छु छुं एम कही पुर्वेक सर्वव्रत आदर्या पछी "आण ... ... । ... । । पुन्नपाये " अर्थात समकित सहित बार व्रत आदर्या त्यारबाद जगप्रत थई आणद श्रावकनो जन्म थयो पछी मिथ्यात्वमांथी शुद्ध समकित धर्ममा आव्यो, अने जीवादिकना नव पदार्थ जाण्या छे एम सर्व सागार पछी .. चलाववाने योग्य आगार राखीने श्रावक धर्मन योग्यव्रत आचरण कर्या ते बारमाव्रतमा मुनीने अहारादिक फन्पताटान देउ ए विगेरे सर्व नियमो धारण कर्या ए सिवाय आश्रवमत सारभ धर्माथ काइपण देरा मतिमा कर या या करनाने भलु जाणु एवी रीते व्रत लेनारा आणद श्रावके काइ पण मर्यादा करी नहीं, अने द्रव्य तथा भावथी समकित आराधन कर्यु

वळी सातमा व्रतमा छवीस बोलनी प्रतिदिन मर्यादा श्रावक धर्मने वस्तुओ भोग उपभोगने माटे करी पण घरदेरासर या बहार देरासर खाते काई पण मर्यादा करी नथी कारण के समकित धर्मीओने निर्थक आरभ अनर्थादण्ड हेतु जाणीने न राखी तेमां कोई वखत कुळाचार कुळधर्मना देवाना कारण जाणी अवसरे भोग उपभोगथी शेवा साचवे परतु ते कुळ धर्मना निरापराधी देवोने वभारी रीते दररोज सतावे नहीं माटे ए आणद श्रावक नकामो आश्रव यथायोग्य रीते वोसीरावीने नित्य कर्म एटले सदाय सत्यधर्म सामायकादिक पोषह विधीओ ए सर्व निर्जराहेतु करवा चुकेला नथी एमज मणोंते सर्व आश्रव वोसीरावी पहेले देवलोके पहोंच्या तेमज पछातना नव श्रावकोनी वीगत जाणी विवेकीओए मान्य करवी कारण के आणद श्रावकनी रीते समकित प्राप्त थाय

तेमज भगवती सुत्रना अढारमा सतकना दशमा उद्देशामा सोमल ब्राह्मण तेमज सावथी नगरीना रहिश श्रावको, तथा तुगिया नगरीना रहिश श्रावको तथाराय पसेणीमां चित्तसारथी तथा परदेशी राजा, तेमज राजग्रही नगरीमां सुदर्शनादिक अनेक श्रावको, द्वारावती नगरीमा जादववशीओ श्री कृष्णादिक, तेमज विशाला नगरपति चेडाराजा विगेरे काशी कोशाळादिक अढारदेशना राजाओ, एमज जँती सोळसा मृगावती विगेर अनेक श्रावक तथा श्राविकाए जेजे समये समकित तथा व्रतआदर्या ते सर्वश्रावक श्राविकाना नियमो या समकितनी विधिओ पोतानी .. बोध पामेला धर्माचार्यो पासे बोध उपदेश पामीने आचरण करेली छे, अने

बोधी तिर्थंकरे पोते आपे बोध लीधो छे, अने प्रत्येक बोध थया ते चर्मशरीरी छे माटे तेणे अमुक वस्तु प्रत्यक्ष देखी समकित पामीने तरतज आश्रवमार्ग छाडीने साधुपणु आदरी धर्म साधन कर्यु छे अने श्रावक श्राविकाओ समकित रत्न पा म्याथी सदा धर्मोपदेश सामळी घनतो आश्रव छोडीने पोसा, पडिकमणा, उपवा-सासादिक उत्तम करणी करी मनुष्य जन्मनो लाभ लेवा चुकता नहीं ए सर्व ज्ञाननी प्रबळताना लाभमा समकित सहित निराश्रवी करणी करीने पामेला समकितनी मुराद हासल करेली छे परतु मजकुर श्रावक श्राविकाओए समकित पामवाना छामथी तमो हठवादीओनी रीते आश्रव मार्गनी पुष्टि करेली नहोती. वळी तेमणे समणोपासक नाम धराव्यु ते प्रमाण छे, एमतो सुत्रोमा विवेचन सविस्तारपणे छे. परतु कोइ सुत्रोना मुळमा या अर्थमा या टीकाचुरणी, भाषनिर्युक्ति, न्याय, भेट, सगित तथा सस्कृत प्राकृतमा एम नथी जे मदीरोपासक या पाषाणोपासक तो कहेवानु एटलुज के तमारी मान्गी मतिमा शो कोप छे के समणोपासक नाम छतां मतिमा देराओना आश्रव स्थापवाने माटे समकितनी प्राप्ति उलटी रीते ठरावो छो.

समकित पामवाना सडसठ भेद कथा छे, तेमातो काइ देरा प्रतिमाना कारण बताव्या नथी, तेमज पूर्वाचार्योना रचित आगम सारादिक ग्रथोमा जेटलो निरापक्ष बोध सुचव्यो छे, तेमा समकितनो उदय केवी रीते कह्यो छे ? ते विचारी जुवो ? अने तेज आचार्यो सावद्यमार्गनु स्थापन करवा तैयार थया त्यार भवभ्रमणना हा-सलने माटे पाषाणादिकना सत्य पक्षेप्या, ते वेळाए तेओ केवी दशामा आवी गयेला हशे ? ते विषे सिद्धात पाठ तथा निरापक्ष ग्रथना आधारथी तथा स्वपक्ष ए सर्व खुली रीते बताववु जोइए

वळी भगवतीजीना अढारमा सतकने सातमे उद्देशे मदुक श्रावके समकित आ दर्यु तेमज उत्तराध्ययन वीशमाने मध्ये अनाथी मुनीना बोधथी श्रेणीक राजाए मिथ्यात्व वोसीराव्यो ने समकित आदर्यु, त्यापण श्रेणीक राजाए गुरु मुखना धर्म-बोधनो महिमा कर्यो छे, ते विचारता मालम पडशे अने तेज राजाए समकित पा-म्या अगाउ अनाथी गुरुना नाथ थवा विगेर जे जे वचन मुखथी कह्या छे, तेना थएला अपराधनी माफी मागी छे मनुष्य के त्यागीने भोगामत्रण करवु ए सर्व अयोग्यज छे माटे खमाव्या छे, एविशे प्रभार व्याख्याण आगळ आवशे

वळी ज्ञातासूत्रना बारमा अध्ययनमा जितशत्रु राजा, सुबुद्धि श्रावकनी सहायथी समकिती थया छे. ते राजाए धर्म इच्छाना वचनमा सुबुद्धि श्रावकने कह्यु छे,

एमि " अर्थात आपनी पासे घणा हळुकर्मी दिक्षा ले छे तेम करवा हुं असमर्थ छुं माटे हु आपनी पासे श्रावकना बार व्रत आदरवा इच्छु छुं एम कही विधि पुर्वक सर्वव्रत आदर्या वळी "आणंदेसमणोवासगणजाणअभिगयजीवाजीवउवलद्ध पुन्नपावे " अर्थात समकित सहित बार व्रत आदर्या त्यारबाद जगवत कहे छे के आणंद श्रावकनो जन्म थयो एटले मिथ्यात्वमार्थी शुद्ध समकित धर्ममा आव्या, अने जीवादिकना नव पदार्थ जाण्या छे एम सर्व सागार एटले गृहस्थाश्रमने चलाववाने योग्य आगार राखीने श्रावक धर्मने योग्यव्रत आचरण कर्या ते "जाव" धारमाव्रतमा मुनीने अहारादिक फल्पतादान देउ ए विगेरे सर्व नियमो धारण कर्या ए सिवाय आश्रवमत सारंभ धमाथ कांइपण देरा प्रतिमा करु या करावुं या करनाने भलु जाणु एवी रीते व्रत लनारा आणंद श्रावके काइ पण मर्यादा करी नहीं, अने द्रव्य तथा भावथी समकित आराधन कर्यु

वळी सातमा व्रतमां छवीस बोल्नी प्रतिदिन मर्यादा श्रावक धर्मने लायक वस्तुओ भोग उपभोगने माटे करी पण घरदेरासर या बहार देरासर खाते कांइ पण मर्यादा करी नथी कारण के समकित धर्मीओने निरर्थक आरंभ अनर्थादंडनो हेतु जाणीने न राखी तेमां कोइ वखत कुळाचारे कुळधर्मना देवाना कारण जाणी अवसरे भोग उपभोगथी शेवा साचवे परन्तु ते कुळ धर्मना निरापराधी देवोने तमारी रीते दररोज सतावे नहीं माटे ए आणंद श्रावक नकामो आश्रव यथायो ग्य रीते वोसीरावीने नित्य कर्म एटले सदाय सत्यधर्म सामायकादिक पोषद विधीओ ए सर्व निर्जराहेतु करवा चुकेला नथी एमज मणंति सर्व आश्रव वोसी रावी पहेले देवलोके पहोंच्या तेमज पछावना नव श्रावकोनी कीगत जाणी विवे कीओए मान्य करवी कारण के आणंद श्रावकनी रीते समकित प्राप्त थाय

तेमज भगवती सुत्रना अढारमा सतकना दशमा उद्देशामां सोमल ब्राह्मण तेमज सावथी नगरीना रहिश श्रावको, तथा तुंगिया नगरीना रहिश श्रावको तथाराय पसेणीमा चित्तसार्थी तथा परदेशी राजा, तेमज राजग्रही नगरीमा सुदर्शनादिक अनेक श्रावको, द्वारावती नगरीमां जादववंशीओ श्री कृष्णादिक, तेमज विशाळा नगरपति चेडाराजा विगेरे काशी कोशाळादिक अढारदेशना राजाओ, एमज जैंती सोळसा मृगावती विगेरे अनेक श्रावक तथा श्राविकाए जेजे समये समकित तथा व्रतआदर्या ते सर्वश्रावक श्राविकाना नियमो या समकितनी विधिओ पोतानी मेळे बोध पामेला धर्माचार्यो पासे बोध उपदेश पामीने आचरण करेली छे, अने सर्व

वोधी तिर्थंकरे पोते आपे वोघ लीधो छे, अने मत्येक वोघ थया ते चर्मशरीरी छे. माटे तेणे अमुक वस्तु मत्यक्ष देखी समक्ति पामीने तरतज आश्रवमार्ग छाडीने साधुपणु आदरी धर्म साधन कर्यु छे अने श्रावक श्राविकाओ समकित व्रत पाम्यायी सदा धर्मोपदेश सामळी धनतो आश्रव छोडीने पोषा, पडिकमणा, उपवासादिक उत्तम करणी करी मनुष्य जन्मनो लाभ लेवा चुकता नहीं ए सर्व ज्ञाननी मबळताना लाभमा समकित सहित निराश्रवी करणी करीने पामेला समकितनी मुराद हासल करेली छे परतु मजकुर श्रावक श्राविकाओए समकित पामवाना लाभथी तमो हठवादीओनी रीते आश्रव मार्गनी पुष्टि करेली नहोती वळी तेमणे समणोपासक नाम धराव्यु ते प्रमाण छे, एमतो सुत्रोमा विवेचन सविस्तारपणे छे. परतु कोइ सुत्रोना मुळमा या अर्थमा या टीकाचुरणी, भाषनिर्युक्ति, न्याय, भेद, सगित तथा सस्कृत पाकृतमा एम नथी जे मदीरोपासक या पाषाणोपासक तो कहेवानु एटलुज के तमारी माटगी मतिमा शो कोप छे के समणोपासक नाम छतां मतिमा देराओना आश्रव स्थापवाने माटे समकितनी प्राप्ति उलटी रीते ठरावो छो.

समकित पामवाना सडसठ भेद कथा छे, तेमातो काइ देरा मतिमाना कारण वताव्या नथी, तेमज पूर्वाचार्योना रचित आगम साराढिक ग्रंथोमा जेटलो निरापक्ष बोध सुचव्यो छे, तेमा समकितनो उदय केवी रीते कयो छे ? ते विचारी जुवो ? अने तेज आचार्यो सावद्यमार्गनु स्थापन करवा तैयार थया त्यारे भवभ्रमणना हासलने माटे पाषाणादिकना सल्य पसेय्या, ते वेळाए तेओ केवी दशामा आवी गयेला हशे ? ते विष सिद्धात पाठ तथा निरापक्ष ग्रथना आधारथी तथा स्वपक्ष ए सर्व खुली रीते बतावचु जोइए

वळी भगवतीजीना अढारमा सतकने सातमे उद्देशे मदुक श्रावक समकित आदर्यु तेमज उत्तराध्ययन वीशमान मध्ये अनाथी मुनीना बोधथी श्रेणीक राजाए मिथ्यात्व वोसीराव्यो ने समक्ति आदर्यु, त्यापण श्रेणीक राजाए गुरु मुखना धर्मबोधनो महिमा कर्यो छे, ते विचारता मालम पडशे अने तेज राजाए समक्ति पाम्या अगाउ अनाथी गुरुना नाथ थवा विगेर जे जे वचन भुल्थी कथा छे, तेना बदला अपराधनी माफी मागी छ मतलब के त्यागीने भोगामत्रण कर्यु ए सर्व अयोग्यज छे माट खमाव्या छे, एविशे वधार लखाण आगळ आवशे

वळी ज्ञातासूत्रना बारमा अध्ययनमा जातशत्रु राजा, सुबुद्धि श्रावकनी सहायथी समकित थया छे. ते राजाए धर्म इच्छाना वखतमा सुबुद्धि श्रावकने कयु छे,

एमि " अर्थात, आपनी पासे घणा श्रावकों दिक्षा ले छे. तेम करवा हुं
छु माटे हु आपनी पास श्रावकना बार व्रत आदरवा इच्छु छुं एम कही विधि
पुर्वक सर्वव्रत आदर्या. पछी " आणंदेसमणोवासगएजाएअभिगएजीवाजीवजाव
पुन्नपावे " अर्थात समकित सहित बार व्रत आदर्या त्यारबाद जगवत कहे छे के
आणंद श्रावकनो जन्म थयो एटले मिथ्यात्वमार्थी शुद्ध समकित धर्ममां जन्म,
अने जीवाजिकना नव पदार्थ जाण्या छे एम सर्व सागार एटले गृहस्थावासने
चलाववाने योग्य आगार राखीने श्रावक धर्मने योग्यव्रत आचरण कर्या ते "जाव"
बारमाव्रतमा मुनीने अहारादिक कल्पतादान दउ ए विगेर सर्व नियमो धारण
कर्या ए सिवाय आश्रवमत सारंभ धर्मार्थ कांइपण देरा प्रतिमा करू या करावुं
या करतांने भलु जाणु एवी रीते व्रत लेनारा आणंद श्रावके काइ पण मर्यादा
करी नहीं, अने द्रव्य तथा भावथी समकित आराधन कर्यु

पळी सातमा व्रतमा छव्वीस बोलनी प्रतिज्ञान मयादा श्रावक धर्मने लगती
वस्तुओ भोग उपभोगने माटे करी पण घरदेरासर या बहार देरासर खाते कांइ
पण मर्यादा करी नथी कारण के समकित धर्मीओने निर्थक आरंभ अनर्थादंडनो
हेतु जाणीने न राखी तेमा कोइ वखत कुळाचार कुळधर्मना देवोना कारण जाणी
अवसरे भोग उपभोगथी सेवा साचवे परतु ते कुळ धर्मना निरापराधी देवोने
तमारी रीते दररोज सतावे नहीं माटे ए आणंद श्रावक नकामो आश्रव यथायो-
ग्य रीते वोसीरावीने नित्य कर्म एटले सदाय सत्यधर्म सामायकादिक पोषा
विधीओ ए सर्व निर्जराहेतु करवा चुकेला नथी एमज भणीने सर्व आश्रव वोसी
रावी पहेले देवलोके पहोंच्या तेमज पछाडना नव श्रावकोनी वीगत जाणी विवे
कीओए मान्य करवी कारण के आणंद श्रावकनी रीते समकित प्राप्त थाय

तेमज भगवती सुत्रना अढारमा शतकना दशमा उद्देशामा सोमल ब्राह्मण तेमज
सावथी नगरीना रहिश श्रावको, तथा तुंगिया नगरीना रहिश श्रावको तथाराय
पसेणीमां चित्तसारथी तथा परदेशी राजा, तेमज राजग्रही नगरीमां सुदर्शनादिक
अनेक श्रावको, द्वारावती नगरोमा जादववंशीओ श्री कृष्णादिक, तेमज विशाळा
नगरपति चेडाराजा विगेरे काशी कोशाळादिक अढारदेशना राजाओ, एमज जैंती
सोळसा मृगावती विगेरे अनेक श्रावक तथा श्राविकाए जेजे समये समकित तथा
व्रतआदर्या ते सर्वश्रावक श्राविकाना नियमो या समकितनी विधिओ पोतानी मेळे
बोध पामेला धर्माचार्यो पासे बोध उपदेश पामीने आचरण करली छे, अने सर्व

एमि " अर्थात. आपनी पासे घणा श्रावकर्मा दिशा ले छे तेम करवा हुं असमर्थ छु माटे हु आपनी पासे श्रावकना बार व्रत आदरवा इच्छु छु पम करी विधि पुर्वक सर्वव्रत आदर्या. पछी " आणंदेसमणोवासएजाए अभिगएजीवाजीव-उवलद्ध पुन्नपावे " अर्थात समकित सहित बार व्रत आदर्या त्यारबाद जगवत कहे छे के आणंद श्रावकनो जन्म थयो एटले मिथ्यात्वमार्थी शुद्ध समकित धर्ममा जन्म, अने जीवादिकना नव पदार्थ जाण्या छे पम सर्व सागार एटले गृहस्थाश्रमने चलाववाने योग्य आगार राखीने श्रावक धर्मने योग्यव्रत आचरण कर्या ते "आन" बारमाव्रतमा मुनीने अहारादिक कल्पतादान देउ ए विगेर सर्व नियमो धारण कर्यां ए सिवाय आश्रवमत सारभ धर्माथ कांइपण देरा प्रतिमा करु या करावु या करनारने भलु जाणु एवी रीते व्रत लेनारा आणंद श्रावके काइ पम मर्यादा करी नहीं, अने द्रव्य तथा भावथी समकित आराधन कर्यु

पछी सातमा व्रतमा छवीस बोलनी मतिज्ञीन मयादा श्रावक धर्मने लायक वस्तुओ भोग उपभोगने माटे करी पण घरदेरासर या बहार देरासर खाते कांइ पण मर्यादा करी नथी कारण के समकित धर्मीओने निरर्थक आरभ अनर्थादडनों हेतु जाणीने न राखी तेमा कोइ वखत कुळाचार कुळधर्मना वेषोना कारण जाणी अवसरे भोग उपभोगथी शेवा साचवे परतु ते कुळ धर्मना निरापराधी देवोने तमारी रीते दररोज सतापे नहीं माटे ए आणंद श्रावक नकामो आश्रव यथायो ग्य रीते वोसीरावीने नित्य कर्म एटले सदाय सत्यधर्म सामायकादिक पोषा विधीओ ए सर्व निर्जराहेतु करवा चुकेला नथी एमज मणीते सर्व आश्रव वोसी रावी पहेले देवलोके पहोंच्या तेमज पश्चातना नव श्रावकोनी बीगत जाणी विवे कीओए मान्य करवी कारण के आणद श्रावकनी रीते समकित प्राप्त थाय

तेमज भगवती सुत्रना अढारमा सतकना दशमा उद्देशामां सोमल ब्राह्मण तेमज सावथी नगरीना रहिश श्रावको, तथा तुंगिया नगरीना रहिश श्रावको तथाराय पसेणीमा चित्तसार्थी तथा परदेशी राजा, तेमज राजग्रही नगरीमां सुदर्शनादिक अनेक श्रावको, द्वारावती नगरीमां जादवपक्षीओ श्री कृष्णादिक, तेमज विशाळा नगरपति चेडाराजा विगेरे काशी कोशाळादिक अढारदेशना राजाओ, एमज जैती सोळसा मृगावती विगेरे अनेक श्रावक तथा श्राविकाए जेजे समये समकित तथा व्रतआदर्यां ते सर्वश्रावक श्राविकाना नियमो या समकितनी विधिओ पोतानी मेळे बोध पामेला धर्माचार्यो पासे बोध उपदेश पामीने आचरण करेली छे, अने सय

वोधी तिर्थंकरे पोते आपे वोघ लीधो छे, अने प्रत्येक वोध थया ते चर्मशरीरी छे. माटे तेणे अमुक वस्तु प्रत्यक्ष देखी समकित पामीने तरतज आश्रवमार्ग छाडीने साधुपणु आदरी धर्म साधन कर्यु छे अने श्रावक श्राविकाओ समकित व्रत पाम्यायी सदा धर्मोपदेश सामळी वनतो आश्रव छोडीने पोषा, पडिक्रमणा, उपवासादिक उत्तम कर्णी करी मनुष्य जन्मनो लाभ लेवा चुकता नहीं ए सर्व ज्ञाननी प्रबळताना लाभमा समकित सहित निराश्रवी कर्णी करीने पामेला समकितनी मुराद हासल करेली छे परतु मजकुर श्रावक श्राविकाओए समकित पामवाना लाभथी तमो हठवादीओनी रीते आश्रव मार्गनी पुष्टि करेली नहोती वळी तेमणे समणोपासक नाम धराव्यु ते प्रमाण छे, एमतो सुत्रोमा विवेचन सविस्तारपणे छे. परतु कोइ सुत्रोना मुळमा या अर्थमा या टीकाचुरणी, भाषनिर्युक्ति, न्याय, भेद, सगित तथा सस्कृत प्राकृतमा एम नथी जे मढीरोपासक या पाषाणोपासक तो कहवानु एटलुज के तमारी मादगी मतिमा शो कोप छे के समणोपासक नाम छता प्रतिमा देराओना आश्रव स्थापवाने माटे समकितनी प्राप्ति उलटी रीते ठरावो छो.

समकित पामवाना सडसठ भेद कह्या छे, तेमातो काइ देरा प्रतिमाना कारण वताव्या नथी, तेमज पूर्वाचार्योना रचित आगम सारादिक ग्रथोमा जेटलो निरापक्ष बोध सुचव्यो छे, तेमा समकितनो उदय केवी रीते कह्यो छे ? ते विचारी जुवो ? अने तेज आचार्यो सावद्यमार्गनु स्थापन करवा तैयार थया त्यार भवभ्रमणना हासलने माटे पाषाणादिकना सल्य पक्षेप्या, ते वळाए तेओ कवी दशामा आवी गयेला हशे ? ते विषे सिद्धात पाठ तथा निरापक्ष ग्रथना आधारथी तथा स्वपक्ष ए सर्व खुली रीते वतावव्रु जोइए

वळी भगवतीजीना अढारमा सतकने सातमे उद्देशे मदुक श्रावक समकित आदर्यु तेमज उत्तराध्ययन वीशमाने मध्ये अनाथी मुनीना वोधथी श्रेणीक राजाए मिथ्यात्व वोसीराव्यो ने समकित आदर्यु, त्यापण श्रेणीक राजाए गुरु मुखना धर्मसाधनो महिमा कर्यो छे, ते विचारता मालुम पडशे अने तेज राजाए समकित पाम्या अगाउ अनाथी गुरुना नाथ थवा विगेर जे जे वचन भुलथी कह्या छे, तेना थएला अपराधनी माफी मागी छे मतलब के त्यागीने भोगामत्रण करयु ए सर्व अयोग्यज छे माटे खमाव्या छे, एविशे वधार लखाण आगळ आवशे

वळी ज्ञातासूत्रना वारमा अध्ययनमा जातशत्रु राजा, सुबुद्धि श्रावकनी सहायथी समकितो थया छे. ते राजाए धर्म इच्छाना वखतमा सुबुद्धि श्रावकने कयु छे,

एमि " अर्थात. आपनी पासे घणा इछुक्मी दिसा ले छे. तेम करवा हुं छु माटे हु आपनी पासे श्रावकना बार व्रत आदरवा इच्छु छुं. एम कही पुर्वक सर्वव्रत आदर्या पछी " आणदसमणोवासएजाए अभिगएजीवाजीव उवलद्ध पुन्नपावे " अर्थात समकित सहित बार व्रत आदर्या त्यारबाद जगवत कहे छे के आणद श्रावकनो जन्म थयो एटले मिथ्यात्वमाथी शुद्ध समकित धर्ममा जन्म्यो, अने जीवादिकना नव पदार्थ जाण्या छे एम सर्व सागार एटले गृहस्थाश्रमने चलाववाने योग्य आगार राखीने श्रावक धर्मने योग्यव्रत आचरण कर्या ते "अस" बारमाव्रतमा मुनीने अहारादिक कल्पतादान देउ ए विगेर सर्व नियमो धारण कर्या ए सिवाय आश्रवमत सारभ धर्मार्थ काइपण देरा प्रतिमा करु या कराउं या करावने भलु जाणु एवी रीते व्रत लेनारा आणद श्रावके काइ पण मर्यादा करी नहीं, अने द्रव्य तथा भावथी समकित आराधन कर्यु

वळी सातमा व्रतमा छवीस बोलनी प्रतिदीन मर्यादा श्रावक धर्मने लगती वस्तुओ भोग उपभोगने माटे करी पण घरदेरासर या बहार देरासर खाते काइ पण मर्यादा करी नथी कारण के समकित धर्मीओने निर्थक आरंभ अनर्थादडनो हेतु जाणीने न राखी तेमा कोइ वखत कुळाचार कुळधर्मना देवोना कारण जाणी अवसरे भोग उपभोगथी शेवा साचवे परतु ते कुळ धर्मना निरापराधी देवोने तमारी रीते दररोज सतापे नहीं माटे ए आणद श्रावक नकामो आश्रव यथायो ग्य रीते वोसीरावीने नित्य कर्म एटले सदाय सत्यधर्म सामायकादिक पोषध विधीओ ए सर्व निर्जराहेतु करवा चुकेला नथी एमज मर्णांते सर्व आश्रव वोसी रावी पहेले देवलोके पहोंच्या तेमज पश्चातना नव श्रावकोनी वीगत जाणी विवे कीओए मान्य करवी कारण के आणंद श्रावकनी रीते समकित प्राप्त थाय

तेमज भगवती सुत्रना अढारमा सतकना दशमा उद्देशामां सोमल ब्राह्मण तेमज साधर्मी नगरीना रहिश श्रावकों, तथा तुगिया नगरीना रहिश श्रावको तथाराय पसेणीमा चित्तसारथी तथा परदेशी राजा, तेमज राजग्रही नगरीमा सुदर्शनादिक अनेक श्रावको, द्वारावती नगरीमां जादववंशीओ श्री कृष्णादिक, तेमज विशाळा नगरपति चेडाराजा विगेरे काशी कोशाळादिक अढारदेशना राजाओ, एमज जैंती सोळसा मृगावती विगेरे अनेक श्रावक तथा श्राविकाए जेजे समये समकित तथा व्रतआदर्या ते सर्वश्रावक श्राविकाना नियमो या समकितनी विधिओ पोतानी मेळे बोध पामेला धर्माचार्यो पासे बोध उपदेश पामीने आचरण करली छे, अने सर्व

" इच्छामिणदेवाणुपियाणतवअतिएजिणएणनिसामित्तए " अर्थात अहा देव छुम । तमारि पासे केवळी परुप्यो धर्म साभळ्या इच्छुं एम राजाना कहवाथी हवे श्रावक धर्मोपदेश कर छ

तएणसुबुद्धिअमचेजियसत्तुस्सरन्नो चित्तिकेवळी,
पन्नतचाउजामंधम्मपरीकहेइतमाईखेईजहाजीवा,
बुझतिजावपंच अणुवयायतएणजियसत्तुराया,
सुबुद्धिस्सअंतिए धम्मसोचाजावसेजहेथतु भवेदह

भावार्थ—ते सुबुद्धि श्रावकना वाचन अते जातशत्रु राजा कह छे सरदहा अहो श्रावक । तमारा वचन ए विगेर सर्व सबध कहीने राजाए सुबुद्धि श्रावक पासे समकित धर्म पामी यथायोग्य रीते आश्रव मार्ग वोसीराव्यो परतु तामस गुणीओनी रीते आश्रवनो वधारो कर्यो नहीं

श्री सुयगडांग सूत्रना बीजा सुतस खधना सातमा अध्ययनमा श्रावकना गुण विशे मूळ पाठ कह्या छे

अप्पारंभाअप्पिच्छाअप्पपरिगहाधम्मियाधम्मयाधम्माणुया,
सामाइयंदेसावगासियपुरथापाइणपडिणदाहिणउइण,
तावजावशव्वपाणेहंजावसव्वसतेहदहेनिखितेसव्व,
पाणभूयजीवसतेहखेमकरेअहअंसि

भावार्थ—श्रावक ज्यारे समकित दशामां आवे त्यारे व्रत पचखाण आदरीने निर्ममत्व दशामां सतोषमान थाय छे, त्यार अल्प इच्छा, अल्प परिग्रह, सुशिपक, सुवर्ती, धर्मीष्ट धर्मवर्तीय, सामायक तथा दशमु दिशावगासिव्रत आदर, त्यार पुर्वादिक चारे दिशाओना क्षेत्रनी मर्यादा बाधीने पछी धर्म ध्यान करे अने कोइ प्राण, भूत, जीव अने सत्वने पाते हणे नहीं हणावे नहीं ने मनवचन कायाएकरी यथा योग्य कोटीए सर्व जीवउपर क्षमा कर एवा समकित व्रति श्रावकोनो धरम छे एम श्रावकोने वैरागथी भरपुर कह्या छे तेम छतां तमो " देवानु प्रिय " स्नेहीओना छटकायना प्राण हरवा माटे एटला उत्साही थइ पडेला छोक ते मजकुर गुणना भरनार श्रावको तमारा अघोर कर्मनी करणी जोइने महा अचंबा पामे, केमजे कुमी

काळना जनोनी कर्मकरणी आगळ तेओनी राखेली छुटनो आश्रव कोण मात्र छे, ए तमारा आश्रव स्वभावमा आश्चर्य कारक छे !

समकित ने मिथ्यात्वीनुं अल्प बहूत्व

केटलाएक अजाण नरो कहे छे के अमारा सत्य धर्मना प्रभावथी अमारा धर्ममा घणा जणनो समुह छे ने घणाजण भळे छे तेना जवावमा कहेवानु के आ एक चोवीशी वाबत सहज दाखलो ले ते उपर लक्ष लगाडशो पहला रुषभदेव ते महावीर स्वामि पर्यंत तथा त्रीजा आराथी ते पाचमा आरासुधीमा समकिती जीव थोडा अने मिथ्यात्वी जीव अनतगणा हता तो सर्व सूत्रोनी प्रहेळीकाना मत साथे विचार करीए तो भुत, भविष्य अने वर्तमान काळमा समकिती जीवोथी मिथ्यात्वी अनतगणा मालम पडशे कारण के पाच स्थावर, त्रण विगलेंद्रि, छ मुर्छीम पचेंद्रि ए सर्व मिथ्यात्वी छे परतु गर्भज तिर्यचमा समकित धारक थोडा अने मिथ्यात्वी असख्यातगणा एमज नर्कमा तथा चार जातना देवतामा समकितीथी मिथ्यात्वी असख्यातगणा तथा एकसोने एक क्षेत्र मनुष्यना तेमा छपन अतर्द्वीपना जुगलीआ वर्जिने पछात रहला अकर्मभोमी तथा कर्मभोमीमाह समकित लाभे छे तेमा समकिती करता मिथ्यात्वी सख्यातगणा छे एम सर्व काळमा मिथ्यात्वीनो वधारो अने समकितनो अल्प भाग छे अर्थात आश्रम मार्गनोतो सदा वधारोज होय, दृष्टात नेमनाथ भगवाननी वारे जादव वशमा छपनकोटी जादव अने साडा त्रण क्रोड कुमार ए दसारोना परिवारमा एटला पुरुषो छे तो त्रिभादिक सर्वेनी मळीने घणी स्त्रीओमा समकितना धणी अल्प ने मिथ्यात्व रमणी सख्यात गणा छे केमजे जादवो मदिरापान करी द्विपायाण रुपिने सतापीन द्वारकाना अतनो वखत लावी मुक्यो

वळी वीर परमातमा केवळज्ञान सहित निर ससयीक बोधना करनार हता तेना बोधनी तुल्य बीजा सन्ग्रहस्तोनो बोध किंचित न आवे एम एमनु मबळ प्रभाव छता विरना रागी श्रावक एक लाख अने ओगणसाठ हजार समदृष्टि थया, अने गाशाळाने अगियार लाख शेवक साभळवामा आव्या छे आहा मिथ्यात्वनी विशेषता बधी छ ! ! ! माटे वितरागना वचनने अनुसरीने चाल्नार उत्तम जैन दयाधर्मीओना अल्प भाग प्रत्यक्ष देखवामा आव छे तेमज आश्रवनिपुण विकर स्वभावीक खटकायमर्दन करनार तस स्वभावीआ आप टेठ निगोदताइ अनंतगणा समजवा. मतलब के ने तत्व मार्ग ए, तेमांतो तदकिरानो

रस पीनाराज पीने लीन थइने रहे अने आश्रमर्तीआना सचळ विषने घाविश परिसह तेनी झपाटोथी पाछो पानी न भर तेमज निर्मळ मतिवाळे चित्तथी, समकित मार्गने अनुसरीनज चाले छे माटे तेनो जुज भाग समजवो ये मिथ्यात्वमतिओनो प्रभाग थवानु कारण ए के उक्त कारणथी स्वच्छंद तेजु, या त पथमा कोईपण जातर्थी परिसहनो उपसर्ग नहीं, तेमज कल्पित मनो पभोग लेवानी आज्ञाए घणा भोळा माणीओ ते मार्गमा अनादि कालथी रहेला हता, ने हालपण तेमज जणाय छे एमा आश्चर्य शु छ ? ! ! दृष्टांत जेम गदियाणा सोनाना रुपिआ दश, अरधा रुपिआ वीश, पावला चाळीस, बेआनीओ अेंसी अने तेना आना एकसोने साठ. ए रीते जेम निच वस्तु छे ते वधि पामे ए प्रत्यक्ष छे पण स्वाभिमानीओ कहे छे के, अमारा धर्मनो फेलावो घणो छे, माटे अमारो धर्म उत्तम छे ! एतो फक्त पोतानु पोते कहवु एटलुज परंतु शास्त्राधारे तो एम छे के दीनप्रतिदीन सु शास्त्रो, सु साधुओ तेमज शुद्ध दया धर्म कालना महात्म प्रमाणे अल्प थतो जशे, तेमज कुशास्त्रो फीतुरी कुसाधुओ तथा आश्रव धर्मनो विशेष विस्तार पांचमा आराना बीजा पहोरसुधी रहेशे अने उत्तम जिनराज प्रणित धर्मना आराधिको भर्तक्षेत्रमां पहेला पोहोरमाज लय थइ जशे, एम शास्त्राधारे रीते समजवु माटे अरे ग्रंथावलंबित बाळमित्रो ! नाहक गर्व छोडो अने स्वकल्याणनो रस्तो पकडो

नमोथुणमां भेद कहे छे ते प्रश्नोत्तर.

केटलाएक अनाणाभवी हिंसाल्वीने सिद्ध करी आपवा माटे एम कहे छे के जीणपडिमानी पूजा करतां द्रौपदीए नमोथुण कह्यु छे, माटे समकिती हती, ने निर्जराहेतुए पूजा करी छे कारण के परणवाना अवसरमा ससारीक हतुना कारणथी प्रतिमा पूजीने नमोथुण भणी होततो आ रीते पाठ भणत "लछीदयाणरज्जदयाणजस्सदयाणसुखभोगदयाण" अर्थात् लक्ष्मि, राज, सुजश, तेमज व्यवहारी सुखने मनगमता विषय सुखना दातार छो एवो पाठ द्रौपदी भणत, पण एवु न भणी ने समकिती छे माटे सुबुद्धिए पाठ भण्यो छे

हवे दयाधर्मीओ कहे छे के अरे विकळमति बंधुओ ! तमारा बोलवा प्रमाणे एम ठर छे के, समकिती तथा मिथ्यात्वी, भवी तथा अभवि, ए सर्व नमोथुणंना पाठ जुदा जुदा भणता हशे, पण एम नहीं समजता सघळी दशामां सरखो के ते बाबत प्रमो "कयबळीकम्मा" ना अधरमां

लखी गया छइए के, जुनी प्रतमा द्रौपदीने नमोथुण विगेरे "जावसुरि आभे" ए टली भलामण लखी छे ते वील्कुल नथी, अने नवी प्रतोमा ते भलामण घोची घाली सभवे छे एम तमोए केटलाएक मुळ सुत्रोने कल्पित पाठनी एव वेसाडेली जणाय छे केमजे द्रौपदीए नमोथुण विगेर सुरिआमदेवनी रीत प्रमाणे काइपण कर्यु होय एम सभव थतो नथी, तो तमो सुरिआभनी भलामण देता या नवीन पाठ प्रक्षेपता विचार करेलो जणातो नथी वळी देवकाळे सुरिआभदेवने विजय पोळिआना नमोथुण विगेर पाठ भणता ठरावीने समकितीमा अने मिथ्यात्विमा भेद पाडो छो तो केम वारु ? समकिती तथा मिथ्यात्वीए नमोथुण भणता तमारी रीत प्रमाणे पाठ फेरवेलो छे के जेथी विरुद्ध रीते भेद पाडो छो ? पण शास्त्र रीते एम जाणजो जे सुरिआभ वैमानमा वार वोलना सुरिआभ उपजे छे, ते भवि अभवि इत्यादिक वार वोल्वाळा सरखुज नमोथुण भणे छे ने त्या काइपण समकिती मिथ्यात्वी माटे भेदाभेद नथी पण मजकुर लखाणनी रीते जोतातो तमारो मत तथा तमारु नमोथुण पण जुदु मजकुर शब्द प्रमाणे जणाय छे माटे अर भ्रमित बधुओ ! जे कृत्यने बीजा विशेप कृत्यनी साथे भलामण करवी होय तो ते भलामण करवानी वस्तु सामी वस्तुने जोग होय तोज भलामण करी गणाय केमजे गणधरने उपमा गणधरनीज देवाय, सामान्य साधुने उपमा सामान्य साधुनीज देवाय, तिर्थंकरने तिर्थंकरनीज देवाय, सिद्धने सिद्धनीज उपमा देवाय, तेमज चक्रवर्तिने चक्रवर्तिनीज, वासुदेवने वासुदेवनीज बळदेवने बळदेवनीज देवाय ए सर्व उपमाना धणीओना सरखी आकृति या कृतव्यता होय तो तेमज उपमा देवाय, पण द्रौपदीए जे कृत्य न कर्यु, ते सुरिआभे कर्यु छे मेटले तेणे वत्रिसवानानु पूजन कर्यु छे अने द्रौपदीए ते कर्यु नथी अने तमे कहो छो जे कर्यु ए सवध केम मळे ? माटे भोळा लोकोने नवा पाठ प्रक्षेपमानी खवर न होय तो अवश्य भ्रातिरुप पासमा पडी जाय ने समकितसहित करणी करता हिसारुप आवरण आवी जाय माटे तेम भ्राति न आणता नमोथुण एक रीतेज सिद्ध थाय छे न समकिती मि थ्यात्वीना नियमन माटे काइ जुदा नमोथुण शास्त्रमा छेज नही

१४ आ प्रश्नोत्तर मतिविभ्रमिजनो शका कर छ जे, नमोथुणना पाठ शु न जोइए ? अन नमोथुण कह ते समकिती विना बीजा कोण कह ? माट छना पाठ छे अन केम उथापो छो ?

अर विवर्दी जनो ! तेना जवाबमा एटलुज कहवानु क यथार्थ सद्हिणा-

विना नमोथुण माटे समकिती न कहीए एम जे समकित सद्दहणा विना जाणनार ता घणा देखाय छे माटे तेवा नमोथुण भणनारने तमारी कहे प्रमाणे समकित दृष्टि मानोछो के ? पण एम न होवु जोइए मतलब के एकला नमोथुण भणवाथी शास्त्र रीते करी समकित ठरी शकतु नथी अनुयोगद्वार सुत्रमां एम कहेलु छे के

जेईमेसमणगुणमुक्कजोगीछकायानिरणुकपा,
हयाईवउद्दामागयाईवनिरकुसाघट्ठामट्ठातु,
पोंढापंडुरपडपाउरणाजिणाणअणाणाएसछंद,
विहारिणोउभउकाव्‌मावसगाउवठवंति

भावार्थ—जे कोइ साधुपणाना मुळने उत्तरगुण महाव्रत सुमति गुप्तिआदिक सर्व नियमो आदरीने पछी पुर्वो पार्जीत कर्मना उदयथी पडवाइ थइने मुकी देइ तेनु कारण ए के परिसहथी हायमान परिणाम करीने सजमथी उलटी रीते वरते ते वेषधारीना अतःकरणमाथी छकायनी दया गइ तेमज घोडानी रीते पग पग हतो इरिया समति छोडीने चाले तेमज वक्रहाथीनी रीते वितरागनी आज्ञारूप अकुशनो डर न राखवा पोतानी स्वइच्छाए वस्त्रादिक शरीरनी ससुका शोभा विगेरे माथाना केश समारीने कसुबाना फूलनी रीते पीळे रगे सुशोभित रहेछे, तेओने जीनआज्ञा बहार समजवा

एवा पडवाइ बे वखत नमो कारादिक छ आवश्यक कर छे तोपण ए निर्गुण पुरुष आज्ञाविरुद्ध छे तो कहेवानु के द्रव्य आवश्यक करनारनुं नमोथुण विगेरे सर्व कृतव्य साधुधर्मनी रीते करता छता पण समदृष्टि न कह्या तो एकला नमोथुणना शब्दने पकडीने हिसानु स्थापन करवा धारोछो, ते केटली मुर्खाइ छे ?

वळी श्री नंदिसुत्रमा कह्यु छे जे दसपुर्वआदि चौदपुर्व भणनारनी मति सवळी होय अने नव पुर्व भणनारने सवळी या अवळी बेउ होय एम कहेवाथी एम सम जवु के घणु सूत्रज्ञान विगेर भणे तोपण मिथ्यात्व बुद्धि होय तेमां शुं आश्चर्य छे

वळी देवताओ जीन पडिमानी पासे नमोथुण विगेर व्यवहार क्रिया करे छे, तेमज द्रौपदीए पण परणवाना उत्साहमां व्यवहार क्रिया करी तेनुं कृत्य देखी देखीने मुग्ध दशाना डोळमां स्निग्धमुढ केम थाओ छो ?

वळी कहेवानु के समकिती देवताओ जीन पडिमाना पुजन वखते नमोथुण

काइ छे ? अने मिथ्यात्वी देवो वेद, पुराण, कुरान तथा चदी पाठ भणे एम भेद परस्पर जुदो पडेलो छे के शु ? एमतो कोइ पण जैनशास्त्रोमा नथी तोपण तमारो मत हिंसा दृढ करवानो थाय छे माटे अहो कर्म ! तारा कृतने धीक्कार छे

वळी तमो अबुधजनोने कहवानु के जीन पडिमादिक नमोथुण विगेरे शब्दोने देखीने जो भडकी जताहो तो जैनशास्त्रमा शब्द तो अनेक जातना छे माटे भान भुल थइने प्राणीओना प्राण लेवा तैयार थइ जवु ए काइ जैन धर्मीओनु लक्षण नथी केम जे व्यवहारीक क्रियामा सिद्धातना पाठ घणा लागु पडे छे पण नि-र्जराहेतुतो समकित अवस्थामा कर्म निर्जरवा धारे त्यारेज लागु पडे छे अने प्रा-चिनकाळमा कोइ गृहस्थोए ससारीक व्यवहार साधवा माटे शास्त्रना पाठ भणेला छे, तेने मोक्ष हते गणी काढवा ते काइ योग्य नथी केमजे भगवतीजीना वारमा सतकने पेहले उद्देशे शख श्रावकजीए निर्जराहतुए पोपह कर्यो छे, तेनो पाठ

जेणेवपोसहसाळातेणेवउवागछ्ईपोसहसाळअणुपविसतिपो-सहसाळापम्मज्जइपम्मजित्ता उच्चारपासवण भूमीओपडिलेहईरत्ता-दभसथ्थारगसथ्थरईरत्ता दभसथ्थारगदुरुहईरत्तापोसहसाळाए-पोसहि ए ब्रभयारीउमुकमणीसुवर्णववगयमालावणगविलेवणेनि-खित्तसथ्थमुसलेपगे अविएदभ सथ्थारो उवगएपखियपोसहपाडि जागरमाणेविहरई

भावार्थ—ज्या पोपहशाळा छे त्या आवी पोपदशाळामा प्रवेश करीने पोप-दशाळा विगेर लगनीत, वृध नीतनी भुमी सर्व पुजीने दाभनो सथारो पर्डी लही पाथरीने वेठा ते शाळामा ब्रह्मचर्यसहित पोपह करती वखते मणी सुवर्णादिक पुष्प सचेत ने अचेत अणकळपता सर्व सावद्य शस्त्रादिक तजीने एकला निर्भयपणे दाभने सथारे वेसी पक्ष सबधी पोपह पचखीने धर्म जाग्रिका जागता विचरे ए सर्व कर्मनो निर्जराहतु जाणवो पण ए शख श्रावकन व्यवहार सबधी काइपण कल्पना नथी

हय तेज पीपह विधीना पाठने अनुसरीन कहवानु जे जबुद्वीप पनती सूत्रमा भरत महाराजना आळावामा जोइ लेवु के ज्यार मागधादिक तिर्थोना देवने साध वानी खातर अठम पोपह करी पेसवानी वखत मजकुर विधीसहीत पाठ छे माटे ते पाठनी विधीनो सकल्प ससार खातामा समजवो

तेमज कृष्ण वासुदेवे हरिणे गमेषी देवने आराधतां तथा गजसुकमाल
रना जन्म अगाउ तथा द्रौपदीनी वार जता समुद्रकिनारे लवणाधिपतिने
अठ्ठम, पोषहविधी करी छे ते ज्ञाता सूत्रमा तथा अंतगड सुत्रमा जोइ लेवुं तेमज
ज्ञाताजीना पहेला अध्ययनमां अभय कुमार धारणी तुल्य माताने मेघनो दोहद
रवानीखातर पूर्व संबंधी मित्र देवने आराधता अठ्ठम पोषहविधी करी, तेपण सर्व
विधी सख श्रमणो या सजनीक रीते क्रियासहित पोषह कर्यो, ते शुं तमारे
शख श्रावकनी क्रिया जेवा पाठ जोइने नीर्जराहतु ठरावशो के लौकिक व्यवहार
खाते ठरावशो ? ते कहो ? एम चक्रवृति आदे पोषह कर्या, ते देवोने आराधना
खातर विशेष अभिग्रह समजवा, परतु विधीनी रीत एक जोइन निर्जराहेतु कहे
वाय नहीं केमजे ते मजकुर चक्रवृति आवे केटलाएक गृहस्थो समकिती क्यां
ससारीक कारणोने माटे देवताओनी आराधनामा घणी कष्टक्रिया करे छे
तेमज शख श्रावके निर्जराहेतुए उत्तम करणी करी छे परतु तेओनी विधीना
पाठ एकज रीते भणेला छे माटे एवा पाठ जोइने विचार करता मालम पडी आवशे
तेमज द्रौपदी तथा सुरिआत्मादिकनो पुजा वखते नमोथुण पाठ निर्जराहेतुए ठरा
वीने मुग्ध जनोना मढळने भ्रमापेला छे माटे मतिभ्रमित जनोनी जडता पडे छे
तोपण कहेवानु के नमोथुण कहेवा माटे एकला समदृष्टी समजवा नहीं कारणके
भगवती सतक बारमे अनंत स्तुताने आळावे सर्वजीव भवनपतीयकी नवग्रैवेयक
सुधी अनंतवार उपज्या तेमा बारमा देवलोकसुधी राजनिती साधता अनेकवार
नमोथुणंना पाठ बार बोलना देवपणे भण्या छे, तो नमोथुणं माटे एकात समकिती
न ठरे वळी मनुष्य भवमां अभवि तथा मिथ्यात्वी बहोतेर कळा भणीने तथा
स्त्रीओ चोसठ कळा भणीने जैन शास्त्रनी तथा मिथ्यात्वशास्त्रनी केटलीएक रीत
जाणे, तेमा नमोथुण आवे ते भणे माटे समकिती केम गणी शकाय ? तथा आ
धुनीक जमानाना केटलाएक इंग्रेजो जैन शास्त्रनुं सोधन करी एटलुं जाणपणु मेळ
वेलु छे के जैनी जनोथी इंग्रेजोना करेला प्रश्नना जवाब देवा मुश्केल थइ पडे
माटे एवी बारीक बुद्धिथी मेळवेली विद्वतावाळा तेने तस स्वभाविओ साधर्मी तरीके
गणता हशो के शुं ? पण दरेक जातथी मेळवेला सुत्रज्ञाननेमाटे समकिती ठरे नहीं
तेमज द्रौपदी तथा सुरिआत्मादिक देवो पण नमोथुण भणवा माटे एकात समकिती
कही शकाय नहीं

वळी आठेकाणे कहेवानु के ज्ञाताजीनी नवी प्रतोमां वाचनांतरे द्रौपदीना

अधिकारे नमोथुणनो पाठ जोवामा आवे छे परतु श्री भरुच शहेरना भंडारमा ताडपत्र उपर लखेली ज्ञाताजी सवा आठसें वरसनी छे ते मध्ये पण " कयबळीकम्मा " ना प्रश्नोत्तरमा लख्या प्रमाणे पाठ छे माटे जुना पुस्तकोना आधारथी मालम पडे छे के, विशेपण पाठ छे ते कल्पना करी नाख्यो जणाय छे. तेमज नमोथुणनो पाठ भणता समकितनो पण निश्चयार्थ थइ जाय तेम छे नहीं केमजे दिल्लीवाळा उदेचदजी गोरजीनी प्रत, छसें वरसनी, तेमज कनैयालाल श्रावकपासे पण तेवीज जुनी प्रत पण ते वे करता वधारे वरसोनी ताडपत्र उपर लखाएली ज्ञाता भरुचना भंडारनी छे ए त्रण प्रतो पुरातननी छे, तेमा तो द्रौपदीविषे मजकुर पाठ छे माटे सुरिआभनी भलामण केम समवे ? वळी देवताओना नमोथुण जीत व्यवहारमा गणवा, तेमज द्रौपदीनी पुजा कुळ धर्ममा गणवी. माटे शब्दने जोइने छळाइ जाय तेथी अजाण वीजो कोण कहेवाय ? कारण के सवर करणीनी रीतना पोषा तथा व्यवहारना पोषा, तेमज सवरना नमोथुण तथा व्यवहारना नमोथुणना पाठ सरखीज रीते भणाय छे परतु निरजरानो मार्ग तो जुदोज छे ए तमारा मतने मळतो नथी केमजे तमारे आश्रवथी कर्मवधन वाधीने नाटकशाळामा नाटक करवु तेमज निरजरावाळाने व्यवहारीक कारणो सर्व वोसीरावीने एक आसनथी धर्म ध्यान करवु, ए वे विचारोमा परस्पर भेद छे माटे धर्मात्मानी करणी अने तप्त स्वभावीओनी करणीनो कदी मेळाप थायज नहीं सवव दरक वातमा द्रौपदी सुरिआभादिकना आधार लइने आरभ समारभनु निरुपण कर छे पण विचार तो करो ? जे द्रौपदीने परण्या अगाउ समकिती शी रीते ठरावो छो ? केम जे द्रौपदीने परणवा अगाउ पुजानी वखते समकित नहोतु ने आश्रवमतीओ कह छे के हतु ए अघटित छे, कारणके ज्ञातासूत्रमा तेने श्राविकातो कहीज नथी. केमजे कुमारीकापणे नाम देती वखते " दोवईदारीया " एवो पाठ छे. तेमज प्रतिमा पुजताना वखतमा तथा स्वयवर मडपमा आवी त्या " दोवईरायवरकन्ना " एवो पाठ छे तेमज पाच पाडवोने वरी त्या " दोवईदेवी एवो पाठ छे त्यार वाद ससार व्यवहारना भोगन अते दिक्षा लइ ससार त्याग कर्यो ते वखते " दोवईअज्जा " एवो पाठ छे परतु " दोवईसमणोवासीया " एवो पाठ नथी ते कारणथी प्रतिमानी पुजाना वखतमा द्रौपदी समकिती होय तो " सावीया " एम पाठ जोइए कमजे पुर्व काव्यमा जे जे स्त्रीओए गुरु तथा गुरुणी पासे समकितसहित व्रत आदर्या ते ते वखते " सावीया " एवा

पाठ सिद्धांतोमा छे. तेमज पुरुषन पण " समणोवासय " एवो पाठ छे ते वाचु जे द्रोपदीनी पुजा विगर सर्व व्यवहारा लोकिकखाते गणवा योग्य छे लोकोत्तर व्यवहारखाते गणाय नहीं अने परण्या पछी तो समकितनो संभव छे. विशेष द्रौपदीनी पुजा माटे तमो जे जे दाखला आपो छो, तेमा सुरिआम देवनी कल्पित भलामण आपो छो, पण चोवीस तीर्थंकरना सख्याता श्रावक श्राविका थया तेओमी भलामण जोग कोइ पण दाखलो तमने मळ्यो जणातो नथी अने सुरिआभ अव्रती अपचखाणीनो दाखलो मळ्यो माटे कहवानु जे आ चोवीसमां प्रतिमा पुजनारी द्रौपदीज तमारी नजरे आवी चडी छे के शु ? ते आडा अवळा फाफा मारीने सावद्य कर्मनी पुष्टि करवा धारो छो पण शास्त्रमा कहे छे के हिंसा करनारना कृत्यनु फळ उदे आववाना वखतमा महा सोचना करशे, एम कह्युं छे एवु जाणवा छता हिंसापुष्टि करवामा काळाचर शु फायदो मळशे ? तेनो विवेकीओए शास्त्र रीते विचार करवो जोइए

पहाड पर्वते जात्राजवी कहेछे ते प्रश्नोत्तर

केटलाएक भान भुळेला तप्त स्वभावी सज्जनो कहे छे के शेत्रुजा, गिरनार, आबु, तारगा, गोडीचा, समतशिखर, केसरीआजी, विगेरे तिर्थोए संघ कहाडीने सर्व भुमीए जात्रानी खातर अटन करवु ए महा निर्जरानु कारण छे तेमज मनुष्य जन्म जीवीत्वनु सार्थक ए जात्रायकी सफळ थाय छे पण एम कहे छे ते ह्या छे

एवी भ्रमना करनाराओने कहेवानु जे, एवी मुसाफरी करी तिर्थ यात्रानुं फळ लेवानु कहेछे, ते तो अन्य दर्शनमां छे वळी अन्यदर्शनमा वेद धर्मना श्रुती वाळा पंडितो ते थावतने नास्ति पण कहेछे केमके केटलाएक अन्यदर्शनना मुळ शास्त्रोनी रुक्ति जोता सिद्ध थाय छे दृष्टांत पाच पाडवोए श्रीकृष्ण पासे आवीने माग्यो जे राजमान साहेब शिरछत्र आपनो हुकम होय तो अडसठ तिर्थो करवा जइए एम पुछवाना जवाबमा श्री कृष्णे ज्ञानदशाथी विचारीने कह्यु जे एक मारी तुबडीने यात्रा करावजो एम कहीने एक कडवी काची तुबडी आपी ते तुंबडी लइने पाडवो सर्व तिर्थोए रटण करीने पाछा श्री कृष्ण पासे हाजर थइने तुबडी आपी ते वखते सज्जन मडळनीसाथे सभा पुरीने बेठेला श्रीकृष्णमीए पांच पांडवोने बोध आपवानी खातर ऋषथी मजकुर तुंबडीनु समण करीने पाडवो विगेरे सर्व सभाने प्रसादी दाखल वहेंची आपी अने पोते थोडुक हथेळीमां लइने न खातां गुप्त कर्यु पछी पांडवो विगेर सभाना सज्जनोए तुंबडीनो प्रसाद मुखमां

नाखता कडवाशना हेतुथी थुकी नाख्यु त्यारे पाडवोने कृष्णजीए कयु के अरे अविवेकीओ ! जात्राळु पवित्र तुवडीने थुको ना ? त्यारे पाडवो कहे जे महाराज घणी कडवाश माटे थुकी नाखी छे ते वखते श्रीकृष्ण कहे जे तमोए तेने जात्रा ना करावी ? के हजु सुधी कडवाश मटी नहीं त्यारे पाडवो कहे जे साहेब ! अमारा करता तुवडीने अनेक तिर्थोनी यात्रा, जळमजनादिक कराव्या छता तेनो अभ्यतरगुण कदु माटे कडवाश न गइ, तेमा अमारो शो वाक ? त्यारे श्रीकृष्णजी कहे जे तुवडी जड छे, तेमाथी कडवाश न गई तो शु तमो विवेकीओना अतरमाथी कडवाश न गइ तो शु तमो विवेकीओना अतरमाथी कडवाश गइ के रही ? पण विचारता मालम पडे छे के तमारा अतरनी कडवाश गइ जणाती नथी माटे अरे सुज्ञ पाडवो ! कासटी करी अनेक घाटमा अटण करता यात्रानु फळ प्रगट थतु नथी अने मुसाफरीमा नदी, द्रह तथा सरोवरमा पडीने अनेक प्राणीओना नाश करीने पग्ये चालवाना श्रमथी लागेलो थाक या मेल या परसेवा विगेर जे बहारथी लागेली गदकी तेनो सुधारो थाय, पण अभ्यतरना भरला मळ, मुत्र, सुक्र, रुधीर रसी विगेरे अनेक जातनी गदकी, तेतो तिर्थ जळमा सोवार या लाखवार मजन करे तोपण टळे नहीं माटे शरीर सदा अशुद्ध छे कारण के तिर्थोना जळथी गदु शरीर शुद्ध न थयु तो अज्ञान आत्मा सदा क्रोध, मान, माया, लोभ, राग, द्वेषादिक अनेक विकारोना बधनमा सपडाइ गएला छे तो जात्राओ तथा तिर्थोना जळथी शुद्ध थायज क्याथी ?

हवे पाडव कहे जे अहो कृपानाथ ! यात्रास्नाननु फळ सफळ केम थाय, ते कहो ?

आत्मानदीसयमतोयपूर्णासत्यावहाशीळतटादयोर्मि,
तत्राभिषेककुरुपाडुपुत्रनवारिणाशुद्धतिचातरात्मा १

भावार्थ—" श्री महाभारते तिर्थाधीकारे अस्मिन श्लोके "

आत्मारुप नदीने सजम एटले पाप टाळवाना नियमोरुप जळथी भरपुर तेमा सत्यरुप प्रवाह चालेछे ने तेन शियळरुप तट एटले बे काठा छे तेमा अहो पाडुपुत्र युधिष्ठिर ! स्नान करो ! पण पाणीना मजनथी अतरआत्मा शुद्ध न थाय

चित्तमतर्गतदुष्टतिर्थस्नानैर्नशुध्यति
शतशोपिजळेधौतसुरामाडमिवाशुचि २

भावार्थ—अहो युधिष्ठिर ! अतरमा चित्त दुष्ट छे, ते तिर्थोदक एटले पाणीथी सोवार स्नान करता पापरुप मेलथी कदी शुद्ध न थाय. दृष्टांत मदिरा एटले दारुना वासणने सोवार जळमा धोतापण शुद्ध न थाय, तेमज सदा अशुद्धज रहे छे

मृदोभारसहस्रेणढलकुभशतेनच;
नशुद्धातिदुराचार स्नातातिर्थशतैरपि

भावार्थ—हजारभार माटीनो लेप करीने पछी सो घडा पाणी भरी तोपण ते माटी पुरी धोवाय नहीं ने पवित्र शरीर न थाय, तेमज माठा घणी नीर्दय स्वभावे सोवार तिर्थे स्नान कर पण कदी शुद्ध न थाय.

आरंभेवर्तमानस्यमैथुनाभिरतस्यच,
कुतःशोचभवेतस्यब्राह्मणस्ययुधिष्टिरं

भावार्थ—प्राणवधना आरंभमा सदा प्रवर्ते तेमज सदा मैथुनना तत्पर होय, एवा ब्राह्मणोने अहो युधिष्टिर ! क्याथी शुद्धता थाय

कामरागमदोन्मत्तोयेचस्त्रीवशवर्तिनः
नतेजलेनशुध्यतेस्नातातिर्थसतैरपि

भावार्थ—अहो युधीष्टिर ! कामराग मदे करीने मतगयद एटले हाथीनी रीते मदोन्मत्त थइ गएला, तेमज सदा स्त्रीनेवशे वर्तीने विषयसुखनी लोलुपतानी इच्छा करे छे, तेवा दुष्टो कदापि सोवार तिर्थयात्रा या स्नान करे तोपण शुद्ध न थाय दृष्टात जेम सोवार गर्धवी एटले गधेडी गंगाना जळमा स्नान करतां घोडी न थाय, तेमज अज्ञानीओ दुष्ट स्वभाव न छोडता तिर्थ विगेरे स्थळे रटण कर छे, ते फोगट खेप जेवुं गणाय

एम अन्यदर्शनीओ पण यथायोग्य ज्ञानअभ्यासना लाभथी तिर्थोनी करणी फासदीने अमान्य करे छे तेमज मजकुर बोध प्रमाणे तेओनी यथामतिए आत्म सुधारो करवा घतावे छे

वळी तेज अन्यदर्शनीओमा उत्तम स्वभावीओना मित्र बंधुओ पण छे केमजे ते अन्यदर्शनीओ उत्तम स्वभावीओनी पंठे कासीदुकरीने दुष्ट स्वभाव न छोडतां तिर्थ विगेरे सर्वस्थळे नदी नाळांओमां आत्मकल्याणनी खातर दोडी दोडीने डुबकी

मारी आवे छे, तेमज घणा पैसानो खरचपण करे छे परतु तेओना मुळ ज्ञान-धर्ममा तो दे ाटन करीने तिर्थ यात्राओ करवानी सख्त मना छे

हवे जैन धर्मीओने माटे सिद्धात शास्त्रोमा वितराग देव निरापक्ष आत्मकल्याणनो रस्तो वताव्यो छे तेना उपर आ अवोधी पुरुषो ध्यान न आपता अवळे मार्गे जाय छे, ते केवी भुल छे ? केमजे ज्ञातासूत्रने पाचमे अध्ययने सुखदेव सन्यासीए थावरचा मुनीने प्रश्न करेलु के, स्वामी ! तमारे यात्रा छे ! एम पुछवाना जवावमा थावरचा अणगारे कह्यु जे, अहो सुखदेवजी !

" जणममनाणदंसणचरित्ततवसज्जममाई हिंज्जोएहिंजवणासेनज्जत्ता "

भावार्थ—जे श्रमण एटले सर्व प्राणीओ उपर सरखु दयारुप मन वर्ते छे, ते सर्व सजतिओने ज्ञान, दर्शन, चारित्र अने तप ए चारमा सजमपणु आदरीने सदा सर्वदा यतना एटले दयाभावे उपयोग सहित निश्चळतापणे आत्मधर्मनु आराधन करे, तेज शुद्ध यात्रा छे एम थावरचा अणगार नेमेश्वर गुरुना बोध प्रमाणे सुखदेवजीने कह्यु पण पहाड पर्वतोना पापाणोसाथे शिर अफाळता यात्रा सफळ थाय, एम मुळ सूत्रोमातो कोइ स्थळे विवेचन आपेलु नथी

तेमज आवश्यक सूत्रे श्रीजा गुरु वादणाना आवशकमा कह्यु छे के, " जता, मे, जणी, जवमे " भावार्थ—अहो गुरु ! तमो जात्रासहित छो हे पुज्य ! जवणी एटले जीत्या छो पाच इद्रिओना विकारने एम शिष्ये गुरुज्ञानीने बहुमान भक्तिसाथे करेला गुना खमाव्या, तेमा जात्रा एटले हे गुरु ! तमो ज्ञानेश्वरीने सुशोभीत छो के तमारी कृपाथी मने ज्ञानदशा प्रगट थइ, तेमज तमे दरशनना निश्चळ छो, ए शुद्ध सदहणा आस्था तणा जीनआज्ञामा स्थिर आत्मवत छो, तेमज मने स्थिर कर्या ,वळी अहो गुरु ! आपे चारित्र गुणे करीने सावद्य आश्रवनो रुध कर्यो, तेमज मुजने आश्रव रुधवा उपदेश दइ न्याल कर्या छे; तेमज अहो गुरु ! तमो तपगुणे करीने पुर्वोपारजीत कर्मोने भजळीत करो छो, तेमज मने मारा पुर्वोपारजीत कर्मोने भजळीत करावता उद्यमवत थया छो तमज अहो गुरु ! तमे पोते पाच इद्रिओना विकारनो निग्रह कर्या छ, तेमज मने निग्रह करवा शुद्धबोध कर्यो, एवा आप मने उपगारी छो, तेम छता तमारी आसातना अभक्ति थइ होय तो मारी यथाशक्ति प्रमाणे क्षमा मागु छु इय एवा निरापक्षी पाठमा गुरुगुणनो

भावार्थ—अहो युधिष्टिर ! अतरमा चित्त दुष्ट छे, ते तिर्थोदक एटले पाणीथी सोवार स्नान करता पापरुप मेलथी कदी शुद्ध न थाय. दृष्टांत. मदिरा एटले दारुना वासणने सोवार जळमा धोतापण शुद्ध न थाय, तेमज सदा अशुद्धज रहे छे

मृदोभारसहश्रेणद्दलकुमशतेनच,
नशुद्धतिदुराचार स्नातातिर्थशतैरपि

भावार्थ—हजारभार माटीनो लेप करीने पछी सो घडा पाणी भरी तोपण ते माटी पुरी धोवाय नहीं ने पवित्र शरीर न थाय, तेमज माठा घणी नीर्दय स्वभावे सोवार तिर्थे स्नान कर पण कदी शुद्ध न थाय

आरंभेवर्तमानस्यमैथुनाभिरतस्यच,
कुत शोचभवेतस्यब्राह्मणस्ययुधिष्टिरं

भावार्थ—प्राणवधना आरभमा सदा प्रवर्ते तेमज सदा मैथुनना त्तत्पर होय, एवा ब्राह्मणोने अहो युधिष्टिर ! क्याथी शुद्धता थाय.

कामरागमदोन्मत्तोयेचस्त्रीवशवर्त्तिन
नतेजलेनशुध्यतेस्नातातिर्थसतैरपि

भावार्थ—अहो युधीष्टिर ! कामराग मदे करीने मतगयंद एटले हाथीनी रीते मदोन्मत थइ गएला, तेमज सदा स्त्रीनेवशे वर्तीने विषयसुखनी लोलुपतानी वृद्धि करे छे, तेवा दुष्टो कदापि सोवार तिर्थयात्रा या स्नान करे तोपण शुद्ध न थाय द्रष्टांत जेम सोवार गर्धभी एटले गधेडी गंगाना जळमां स्नान करता घोडी न थाय, तेमज अज्ञानीओ दुष्ट स्वभाव न छोडता तिर्थ विगेरे स्थळे रटण करे छे, ते फोगट खेप जेवु गणाय

एम अन्यदर्शनीओ पण यथायोग्य ज्ञानअभ्यासना लाभथी तिर्थोनी करेली कासदीने अमान्य करे छे तेमज मजकुर बोध प्रमाणे तेओनी यथामतिए आत्म सुधारो करवा बतावे छे

वळी तेज अन्यदर्शनीओमा तप्त स्वभावीओना मित्र बंधुओ पण छे केमके ते अन्यदर्शनीओ तप्त स्वभावीओनी पेठे कासीदुकरीने दुष्ट स्वभाव न छोडतां तिर्थ विगेरे सर्वस्थळे नदी नाळांओमा आत्मकल्याणनी खातर दोडी दोडीने डुबकी

त्माओनु मर्ण स्थानक छे, एम कहेलु छे अने जैन शास्त्रमा ज्ञाताजी अतगड विगेरे केटलाएक मुळ सूत्रोमा अतक्रियाना वखतमा " जावसितुज्जेसिद्धा " एटले जे नर्मे शरीरे महात्माए ससार छोडयो तेथी उत्कृष्ट ज्ञानदर्शन, चारित्र, तप, नियम, विगेरे सर्व आत्मिक धर्मनु आराधन करीने छेवट शरीरथी हालता चालता पाराह पहोंचता श्वासनी धमग चडे एवा अशक्तवान शरीर थवाने वखते साधुओ रात्रे धर्म जाग्रिका करता सथारो करवा मुकरर करीने सवारमा गुरुआज्ञा लइ शेत्रुजा पर्वते सथारो करीने अतसमे केवळ ज्ञानदर्शन पामी सिध्या, जाव शब्द एटले थावरचावत सुखदेवजी सिध्या एम कहवाय. माटे अतक्रियाना वखतमा शेत्रुजे सथारा करवा जवानु वताव्यु छे, ते योग्य छे मतलब के एकात भुमीविना शुद्ध ध्यान वनीशकतु नथी माटे वस्तीथी अलग जवु, एमतो शास्त्रोमा छे परतु पीळा रगीत वस्त्रवाळा वेषधारीओ खटकायना वाधो पोते पहाडे पर्वते भटके ने मद बुद्धि वाळाओने भटकावे तेवी पुर्व काळना महान पुरुषोए पोतानेमाटे तथा परनेमाटे अज्ञानता वापरी सावद्य वोध करेलो नथी केम जे ते पुर्व काळना महात्माओ आत्मसाधनामा ज्ञान दर्शनना उपयोगथी सदा जाग्रावतज हता, तेमज तेओना उपयोगथी क्षणमात्र शुद्ध जात्रानो विजोग पडतो नहीं एम पुरेपुरी शास्त्रोनी साक्षीछे तेनु कारण एके पुर्व जे जे वितरागदेव आदे सर्व धर्मधुरिधर पुरुषोए आत्मकल्याणने माटे उपयोग करीने पोतानी अनादि काळनी अज्ञानता विगेर राग द्वेषादिक सर्व मिथ्यात्व जडता हती, ते सर्वथी मुक्त थवाने माटे एकाग्र ध्याने ज्ञान, दर्शन विगेर आत्मिक गुण आराधनानी यात्रा करी अने ते निर्विघ्न यात्रा करता कोइ पण मर्णात उपसर्ग आय तो महा सुरवीर अने साहसिकपणु केवळीने हायमान प्रणाम न करता मेरुनी पर अडोल रहता, एम शास्त्रोमा कह्यु छे अने तमारी मान्य करली यात्रा सावद्यछे अने तमारा वज्र पाषाणरुप राग द्वेषी निर्दय स्वभाव अने सदा तपा एटले तपी गएला गण टरला नहीं, एवा अनेक अवगुणावाळा पित सवर्गाओनी या तेमना शेवकोनी यात्रा असत्य छे कारण के यात्राना स्थानको उपर जता कोइ वखते परिसह आवी उपनेंवा ते स्थळनी जात्राए जता नथी जेम हाल थोडीक मुदत उपर पालीताणा राजा तरफथी केट लीक जातनी हरकता हती, ते वखते केटलाएक जणाएतो पालीताणाना परगणामा अमुक कामे जता भय पामता तो जात्राए जवानु तो वयाधीज वन, ते वखते न जवाय तेनुज कारण हतु ते विवेचन आपवानी काइ जरुर नथी पण एटलुतो खरु

समावेस छे, तेमा जात्रा विगेरनी रुक्ति, छता भाव प्रमाणे सभवीत छे. तेम छतां अहो पहाडावलवीत यात्राळु कार्सादो ! जात्राना गुण जाण्या विना देशाटन स्वच्छाए छफायनो आरम करो छो, ए कया सत्य सिद्धातना आधार प्रमाणे दोडी जाओ छो ? एमज भगवतीजीना अढारमा सतकमा सोमल ब्राह्मणने महावीरे तेवीज रीते निर्वद्य यात्रा वतावी छे

तेमज श्री निरयावळीका सूत्रमा त्रीजा वर्गमा सोमल ब्राह्मणने श्री पार्श्वनाथजीए तेवीज रीते निर्वद्य यात्रा वतावी छे पण देशाटण करवामा यात्रानुं फळ घताव्यु नथी. तेम छता अरे वजरकर्मी वधुओ ! पामर अजाण पीळा सिद्धकना टोळाओने कार्मीक तिर्थोना पराक्रम फळ वतावीने पहाडोमा रखडावो छो तो ते परभवे अवगुण कर्त्ता थशे क नहीं ? तेनो विचारतो करो ?

वळी एवी कार्मीक यात्राने द्रढ करवा माटे शेत्रुजा पर्वतनो महिमा वधारी शेत्रुजा महात्म नामनो ग्रथ रचीने भोळा शेवकोने भरमाव्या छे ने ते ग्रथमां रुषभदेव तथा महावीरना नाम घालीने कहेछे जे पुडरिक गणधरे शेत्रुंजानो महिमा पुछयो ने रुषभदेवे उत्तर आप्यो तेमज जाव चोवीशमा महावीर गौतमनी आगळ शेत्रुजा महात्म कही देखाडयु ते तथा रुषभदेवे शेत्रुजानी नवाणु यात्रा करी, ते तथा शेत्रुजो पर्वत सासवतो छे ते तथा आखो पर्वत अनत गुणनो भडार तथा तिर्थोनो राजा छे ते तथा प्रथम पचाश जोजन हतो अने शिखरे दश जोजन हतो अने छठे आरे सुंवाहाय प्रमाणे रहेशे, ए विगेरे केटलीक रीते फावती कल्पना करीने ग्रंथ बांधीने शेत्रुजानी यात्रानो महिमा वधार्यो छे ते कांइ मुळ सूत्रोमां छे नहीं मुळ सूत्रोमां तो हस्तिकल्प नगरथी " अदुरसामते " एटले अति दुकडो नहीं अति वेगळो नहीं, एवी रीते शेत्रुंजो पर्वत वर्णवेलो छे त्यां तिर्थयात्रा करवी एमतो काइ कह्यु नथी पण त्यां साधु महा पुरुषो सथारा करीने मोक्ष देवलोके पहोंच्या, ते वात कबुल छे परतु ते पर्वते पांचपांडवो वीसक्रोड साधुसाथे सी ध्या, एम घणा रकमवधी सिधेला, ते तथा सर्व साधु श्रावको त्या यात्रा करवा गया, एवी शाक्षीओ मुळ शास्त्रना पाठ साथे कोइ तरफथी मळी आवती नथी, तेम छता ते सबधी कोइ दाखलो पुछ्मा धारीए तेना बदलामां तप्त स्वभावीजो कळेशरुपी दाखलो करवा तैयार थाय छे, ते सघुं अज्ञानतानो वधारो छे वळी इंग्रिज लोकोएण जैन धर्मना घणा पुस्तकोनो समग्र करीने संसोधन करतां तेओ जानी वावतमा एम लखे छे के ते शेत्रुजो जैन धर्मीओना प्राचिन काळना महा-

त्याओनु मर्ण स्थानक छे, एम कहेलु छे अने जैन शास्त्रमा ज्ञाताजी अतगड विगेरे केटलाएक मुळ सूत्रोमा अतक्रियाना वखतमा “ जात्रसितुज्जेसिद्धा ” एटले जे सर्व शरीरे महात्माए ससार छोडयो तेथी उत्कृष्ट ज्ञानदर्शन, चारित्र, तप, नियम, विगेरे सर्व आत्मिक धर्मनु आराधन करीने छेवट शरीरथी हालता चालता पाराइ पहोंचता श्वासनी धमग चडे एवा अशक्तवान शरीर थवाने वखते साधुओ रात्रे धर्म जाग्रिका करता सथारो करवा मुकरर करीने सवारमां गुरुआज्ञा लइ शेत्रुजा पर्वते सथारो करीने अतसमे केवळ ज्ञानदर्शन पामी सिध्या, भाव शब्द एटले थावरचावत सुखदेवजी सिध्या एम कहवाय. माटे अतक्रियाना वखतमा शेत्रुंजे सथारा करवा जवानु वताव्यु छे, ते योग्य छे मतलब के एकात भुमीविना शुद्ध ध्यान बनीशक्तु नथी माटे वस्तीथी अलग जवु, एमतो शास्त्रोमा छे परतु पीळा रगीत वस्त्रवाळा वेषधारीओ खटकायना घाथो पोते पहाडे पर्वते भटके ने मद बुद्धि वाळाओने भटकावे तेवी पुर्व काळना महान पुरुषोए पोतानेमाटे तथा परनेमाटे अज्ञानता भरी सावद्य बोध करलो नथी केम जे ते पुर्व काळना महात्माओ आत्मसाधनामा ज्ञान दर्शनना उपयोगथी सदा जात्रावतज हता; तेमज तेओना उपयोगथी क्षणमात्र शुद्ध जात्रानो विजोग पडतो नहीं एम पुरेपुरी शास्त्रोनी साक्षीछे तेनु कारण एके पुर्वे जे जे वितरागदेव आदे सर्व धर्मधुरंधर पुरुषोए आत्मकल्याणने माटे उपयोग करीने पोतानी अनादि काळनी अज्ञानता विगेरे राग द्वेषादिक सर्व मिथ्यात्व जडता हती, ते सर्वथी मुक्त थवाने माटे एकाग्र ध्याने ज्ञान, दर्शन विगेर आत्मिक गुण आराधनानी यात्रा करी अने ते निर्विघ्न यात्रा करता कोइ पण मर्णात उपसर्ग आय तो महा सुरवीर अन साहसिकपणु केवळीने हायमान प्रणाम न करता मेरुनी पर अडोल रहता, एम शास्त्रोमा कह्यु छे अने तमारी मान्य करली यात्रा सावद्यछे अन तमारा वज्र पाषाणरुप राग द्वेषी निर्दय स्वभाव अने सन्ग तपा एटले तपी गएला गण टरला नहीं, एवा अनेक अवगुणोवाळा पित सवगीओनी या तेमना शेवकोनी यात्रा असत्य छे कारण के यात्राना स्थानको उपर जता कोइ वखते परिसह आवी उपनेतो ते स्थळनी जात्राए जता नथी जेम हाल थोडाक मुदत उपर पालीताणा राजा तरफथी कटलीक जातनी हरकतो हती, ते वखते केटलाएक जणाएतो पालीताणाना परगणामा अमुक कामे जता भय पामता तो जात्राए जवानु तो वयाथीज वन, ते वखते न जवाय तेनुन कारण हतु ते विवचन आपवानी काइ जरूर नथी पण एटलुता खरु

जे " खातां पीतांहर मळेतो अमारकु कर्यो, सीरसाटे मळेतो थुप कर राखे अर्थात जात्रानो खरो लाभ जाणता होतो परिसहना वखतमा हायमान थवु न जोइए. माटे जात्रा करवानु स्थानक बताय छ ते तथा जात्रा जनारा सर्व शास्त्रथी विरुद्धज गणाय छे केमजे सत्य कल्पनी जात्रासाथे सरखावतां स्पर भेद पडीजायछे. ते विप दृष्टात अतगड सूत्रमा कह्यु छे राजग्रही रहिस सुदर्शन शेठे महावीरनुं आगमन जाणी मात पीतादिकनी आज्ञा लेइ रने वादवा जता जक्षाधिष्टित अर्जुनमाळी सामो आवतो देख्यो ने मर्णात जाणी सागारी सथारो करी निर्भय विचार साथे कावसग कर्यो, पछी पासे अर्जुनमाळी आवी परिसह आपवानो विचार कर्यो पण शेठना पुन्योदयथी तेनी कारी न चालतां मोग्र माणी जक्ष स्वस्थानके गयो छेवट शेठे अणसण करीने अर्जुनमाळीसाथे महावीरना चरणमां जइ पहोंच्यो ए दृष्टांतनो मुळ हेतु ए के शासनवीर भगवाननी यात्राए जता मर्णात उपसर्गथी हायमान परिणाम न ते शास्त्रोक्तरीते सत्य छे हवे हठवादीओनी यात्राने मजकुर शेठनी जात्रा साथे सरखावतां तदन विरुद्ध छे केमजे शेत्रुजा विगेरे पर्वतोनी कल्पित जात्रा करवाने माटे शेत्रुजा महात्म विगेरे नवा ग्रंथो मुळ शास्त्रोथी विरुद्धने आरभना वाक्योथी भरपुर रचीने भोळा लोकोने फसाव्या छे ते माहेलों थोडोभाग अहिंआ लखवानी मरुर छे, ते वाची जोता विवेकीओने मालुम पडीआवशे.

सेत्तुज्जेपुंडरीओसिद्धोमुणिकोडिपचसज्जूतो,
चितस्सपुणीमाएसोभन्नईतेणपुंडरीओ

भावार्थ—शेत्रुंजा पर्वत उपर रुपभदेवना परला पुंडरीक नामे गणधर पांच क्रोड मुनीसाथे सिद्धि पाम्या छे चैतरशुद पुनमने दीवसे, ते माटे शेत्रुजानुं नाम पुंडरीकगिरि कहीए

नमिविनमिरायाणोसिद्धाकोडीहिदोहिंसाहुणं,
तहदविडवाल्लीखिल्लानिव्वुआदसयकोडीओ

भावार्थ—नमि विनमि बे भाइ विद्याधरना राजा ते सिद्ध थया, बे क्रोड मुनीसहित तेमज द्राविड ने वाळी खिल्ल बे भाइ मुनी सिद्ध थया दशक्रोड साधु साथे,

पज्जुन्नसंवपमुहाअधुठाओकुमारकोडीओ,
तहपडवाविपचयसिद्धिगयानारयरिसिय.

भावार्थ—प्रदुमनकुमार सावकुमार प्रमुख साडासाड करोड कृष्ण पुत्र कुमर-सहित सिध्या, तेमज पाच पाडव पण वीसकरोडसाथे सीध्या, तेमज सिद्धि पाम्या नारदरुपि एकाणु लाख साथे.

थावच्चासुयसेलगायमुणिणोवितहरामसुणि,
भरहोदशरहपुत्तोसिद्धावदामिसेत्तुजे

भावार्थ—थावरचा मुनी एक हजारथी शुकमुनी एकहजारथी, पाचसेंथी से-लगमुनी प्रमुख, मुनीओ सिध्या तेमज रामचद्रमुनीने भरतजी ए बे दसरथ राजाना पुत्र त्रणकरोड साधुसहित सिद्धि वर्या तेमने वादु शेत्रुजा उपर.

अन्नेविखवियमोहाउसभाइविसालवंससंभुआ,
जेसिद्धासेत्तुजेतंनमहमुणिअसंखिज्जा

भावार्थ—ए आदी बीजा घणा मुनीराज मोहनो क्षयकरी रुपभादिकना मोटा वंशमाहे उत्पन्न थया ते सिद्धपद पाम्या शेत्रुजा उपर ते मुनी असख्याता मत्ये हु वादु छु.

पनासजोयणाइआसिसेत्तुजेविथ्थडोमूले,
दसजोयणसिहरतलेउच्चत्तजोयणाअठ

भावार्थ—पचास जोजन प्रमाणे मुळमा शेत्रुजो पहोळपणे हतो ने दस जो-जन शिखरे पहोळो हतो अने आठ जोजन उचपणे हतो.

जंलहइअन्नतिथ्थेउग्गेणतवेणबंभचेरेण,
तलहइपयत्तेणसेत्तुजगिरिम्मीनीवसतो.

भावार्थ—जे फळ अन्यतिथ आकरातप तथा उत्कृष्ट ब्रियच्र्यते करीने पामी-ए, तेज फळ उद्यमे करीने तत्काळ विमळगिरीमा वस्याथी पण प्राप्त थाय छे.

जंकोडीएपुन्नकामियआहारभोइआजेउ,
जलहइतथ्थपुन्नएगोवासेणसेत्तुजे.

पडिमंचेइहरवासितुंजगिरीस्समथ्थएकुणइ;
मुत्तुणभरहवासवसईसग्गेणनिरुवसग्गे

भावार्थ—शेत्रुजा पर्वतउपर प्रतिमा या देरासर करे अथवा कराये ते पुरुष भरतक्षेत्रनुं राज भोगवीने चक्रवृतिपणु मुकी स्वर्गलोके तथा मोक्षे जाय,

नोकारसि, पोरसि, पुरीमढम, एकासणु अने आवेल एटला पचखाण करता पुंडरीक तिर्थ संभारे तो जे फळ पामे ते कहे छे नोकारसी ए छठनु फळ पोरसिए अठमनु फळ, पुरीमढमे चार उपवासनु फळ, एकासणे पाच उपवासनुं फळ, आवेले पदर उपवासनु फळ अने उपवासे मास खमणनु फळ एम मन, वचन ने कायाना शुद्धजोगे आराधे ते फळ पामे ते फळ एक शेत्रुजानु ध्यान, स्मरण करताज पामे चउवी आहारना पचखाण करीने सात यात्रा शेत्रुजानी करे ते त्रीजें भवे मोक्षे जाय

अज्जविदीसइल्लोएभत्तचईउणपुडरीयनगे,
सग्गेसुहेणवच्चइसीलविहूणोविहोऊणं

भावार्थ—आजपण देखाय छे के, लोकमा अहार पाणी तजी पुंडरीक पर्वते संथारो करे ने सीलव्रत विगेरे शुद्ध आचार रहित होय तोपण सुखे करीने स्वर्गे जाय

चरणरहीयाइसजइविमलगीरीगोयमस्सगणीओ,
पडिलाभेयमेगसाहुणोअढीदीवसाहुपढीलभइ.

भावार्थ—जेने साधुपणानो वेश छे परतु सर्व चारित्र रहित छे, ते शेत्रुजा पर्वतउपर चढे तो तेने गौतम सरीखा जाणवा अने तेज वखते तेने आहार पाणी आपे तो अढी द्वीपना साधुओने दान दीए तेटलु फळ थाय धनेश्वर सुरीजीए पण एज रीते कयु छे

मेगसावयपुडरीयोपाणभोयणाईभुज्जसी,
आणदकामदेवायच्चढीदीवसव्वसावगाणभुजसी

भावार्थ—एक श्रावकने विमळगिरी उपर जमाडे तो आणद कामदेव आदि अढी द्वीपना श्रावकोने जमाडयानु फळ थाय

छत्तज्झयपडागचामरभिंगारथालदाणेण,

भावार्थ—जे काइ करोड जणने वंछित भोजन जमाडी पुन्य थाय ते सर्व पुन्य शेत्रुंजे एक उपवास करता थाय छे

जंकिंचीनामतित्थंसग्गेपायालेमाणुसेलोए,
तंसव्वमेववदिठपुंडरिएवंदिएसंते

भावार्थ—जे कोइपण नाम मात्र तिर्थ, स्वर्ग, पाताळ ने मनुष्यलोक में तिर्थोने दीठा फळ पामे, ते पण पुंडरिक तिर्थ वांदताम फळ मळे.

पडिलाभंतेसंघदिटमदिठेयसाहूसेत्तुंजे,
कोडीगुणचअदिठेदिठेयअणंतएहोइ.

भावार्थ—शेत्रुंजानी साम जातां शेत्रुंजो दीठ अणदीठे करोड गुण फळ थाय, तेमज शेत्रुंजान देखतां तो अनंत गुण फळ थाय

केवलनाणुप्पत्तीनिव्वाणआसिजथ्थसाहूण,
पुंडरिएवंदित्तासव्वेतेवंदियातथ्थ.

भावार्थ—ज्या केवळज्ञाननी उत्पती थइ तथा ज्या मुनीओने निर्वाण मार्गनी प्राप्ति थइ छे, ते सर्वने वांदवानु फळ एक पुंडरीक तिर्थ वांदे थके पुर्वोक्त सर्व मुनीने वांदवानु फळ मळे

अठावयसमेएपावाचंपाइउज्जतनगेय,
वंदितापुन्नफलसयगुणतंपिपुंडरीए

भावार्थ—अष्टापद पर्वतउपर रुषभदेव मोक्षे पधार्या समेतशिखर तिर्थ वीस जीननु सिद्धक्षेत्र छे पावापुरीए वीरनु मोक्ष ठाम, चंपानगरी ए वासुपुज्यनु सिद्धक्षेत्र ने गिरनार तिर्थ नेमनाथनु मोक्ष ठाम ए तिर्थोने वांदे जेटलु पुन्य थाय ते करता सोगणु फळ पुंडरीक तिर्थे भेटता थाय

पुयाकरणेपुन्नंएगगुणसयगुणचपडिमाए
जिणभवणेणसहस्सणंतगुणपालणेहोइ

भावार्थ—पुजा कीधे जे एकगणु पुन्य थाय तेथी सोगणुं पुन्य प्रतिमा भरावी तथा पुजे थाय ते करतां पण जीनभुवन करावे हजारगणुं पुन्य पण अनंतगणुं पुन्य शेत्रुंजानु रक्षण करवाथी थाय.

पडिमंचेइहरवासितुंजगिरीस्समथ्थएकुणइ,
मुत्तुणभरहवासवसईसग्गेणनिरुवसग्गे

भावार्थ—शेत्रुजा पर्वतउपर प्रतिमा या देरासर कर अथवा करावे ते पुरुष भरतक्षेत्रनु राज भोगवीने चक्रवर्तिपणु मुकी स्वर्गलोके तथा मोक्षे जाय,

नोकारसि, पोरसि, पुरीमढम, एकासणु अने आवेल एटला पचखाण करता पुडरीक तिर्थ सभारे तो जे फळ पामे ते कहे छे नोकारसी ए छठनु फळ पोरसिए अठमनु फळ, पुरीमढमे चार उपवासनु फळ, एकासणे पाच उपवासनुं फळ, आवेले पदर उपवासनु फळ अने उपवासे मास खमणनु फळ एम मन, वचन ने कायाना शुद्धजोगे आराधे ते फळ पामे ते फळ एक शेत्रुजानु ध्यान, स्मरण करताज पामे चउवी आहारना पचखाण करीने सात यात्रा शेत्रुजानी करे ते त्रीजें भवे मोक्षे जाय

अज्जविदीसइलोएभत्तचईउणपुडरीयनगे,
सग्गेसुहेणवच्चइसीलविहूणोविहोऊण

भावार्थ—आजपण देखाय छे के, लोकमा अहार पाणी तजी पुडरीक पर्वते सथारो करे ने सीलव्रत विगेर शुद्ध आचार रहित होय तोपण सुखे करीने स्वर्ग जाय

चरणरहीयाइसजइविमलगीरीगोयमस्सगणीओ,
पडिलाभेयमेगसाहुणोअढीदीवसाहुपढीलभइ

भावार्थ—जेने साधुपणानो वेश छे परतु सर्व चारित्र रहित छे, ते शेत्रुजा पर्वतउपर चढे तो तेने गौतम सरीखा जाणवा अने तेज वखते तेने आहार पाणी आप तो अढी द्वीपना साधुओने दान दीए तेटलु फळ थाय धनेश्वर सुरीजीए पण एज रीते कह्यु छे

मेगसावयपुडरीयोपाणमोयणाईभुज्जसी,
आणदकामदेवायथ्थअढीदीवसव्वसावगाणभुजंसी

भावार्थ—एक श्रावकने विमळगिरी उपर जमाडे तो आणद कामदेव आदि अढी द्वीपना श्रावकोने जमाडयानु फळ थाय

उत्तछ्रयपडागचामरभिंगारथालदाणेण,

विज्जाहरोअहराइतहचणीहोरिरहदाणा.

भावार्थ—छत्रदाने, ध्वजादाने न पताका चामरथी थाय ते विद्याधरनी पदवी पामे, तेमज रथदानथी चक्रवर्तिना पदवी पामे.

दसवीसतीसचत्तालस्सपन्नासापुप्फदामदोणण,
लहईचउथछट्ठमदसदुवालसपलाइ.

भावार्थ—दसलाख, वीसलाख, त्रीसलाख, चालीसलाख, ने पचासलाख, एटला फुलनी माळा चढाववाथी फळ थाय ते कहे छे. दसलाखे एक उपवासनुं फळ, वीस लाखे छट्ठनु फळ, त्रीसलाखे अट्ठमनुं; चालीसलाखे चार उपवासनुं ने पचासलाखे पांच उपवासनु फळ थाय.

त तिथ कृष्णागरआदि उत्तम धुप दे तने पदर उपवासनु फळ थाय वळी अन मासनो धुप दे तेन मासखमणनु फळ थाय

बीजा तिर्थोए सोनानु तथा आभुषणनु तथा रोकडनाणानु तथा भूमीनुं दान देव करी जेटलु फळ पामे, ते करता पण शेत्रुंजा उपर पुजा, न्हावण करवाथी विशेष फळ मळे, तेमज ते पर्वतने भेटता आठ भयथी मुकाय ए सर्व संबंध लघु शेत्रुंजा कल्पमा छे परतु ते करता पण घणाज विस्तारनी साथे जात्रा करवाविषे तथा देरा, प्रतिमा करावबाविषे तथा संघेगीओ तथा तेमना शेवकोने जमाडवाविषे तथा नाणा विगेरनु अर्पण करवा विषे तथा असजतिओनु मान वधारवाविषेना फळना ग्रंथो एटला मोटा थयेला छे के वांचनार या सांभळनार महा मोटा आर भमा भराइ जइने बिचारा लाभ लेवानी आशाए छकायनो कुटो करतांज धराय नहीं एवा आरभी पुस्तकोना आधारथी जात्राओना फळ लेवा भार छे, तेमज सर्व प्राणीना प्राण हणीने मोक्षफळ इच्छेछे तेने समजाववानुं एटलुज के जुलमी ग्रंथना आधार प्रमाणे चालनारा अज्ञान प्राणीनो भवभ्रमणनो निच्छेद केवी रीते थशे ए आश्चर्यकारक छे ! कारण के जगत व्यवहारना सुख, विषय विगेरे आरंभमां लुब्ध थइ गयेला अबोध प्राणिओ; तेने ज्ञान, बोध, त्याग; वैराग प्रमाडवो ने तेनु भलु इच्छवु तेतो एक तरफ रह्यु, परतु बिचारा पशु समान जडबुद्धिवाळा पुरुषोने शास्त्रथी तद्दन उलटी रीते ग्रंथोना निर्बंध रची लाभ बताबी महा मोटा भेजाळमां धकेली मुकया, ते पीळा वस्त्र धरनार "देवानां प्रियनो" छुटको थवो मुश्केल छे हवे आ प्रसंगे सर्व जैन दयाधर्मी बंधुओने कहेवानुं जे मजकुर ग्रंथकर्त्ता

जात्राळु कासिदोना कृत्य कर्मना रिवाज प्रमाणे न चालता एक वितराग देवे जे ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप, नियम, इद्रिओनो निग्रह* करवाथी आत्मसाधन करवानी शुद्ध यात्रा वतावी छे तो ते उपर शुद्ध ध्यान आपी ज्ञानदर्शनना उपयोगसाथे जगत ज्ञाळना ममत्व उपरथी यथाशक्ति मनसा खेंची लइने सर्व आश्रव छाडी तिकर्णशुध्धे अशुद्ध व्यवहारमांथी शुद्ध व्यवहारमा स्थिर थइने निर्वद्य स्वभावे निर्वेधक यात्रा करो एवी यात्राथी सर्व कार्य सिद्ध थशे अनत भवभ्रमणमां अशुद्ध व्यवहारना योगथी अनंत कर्मनी वर्गणाओ खीर नीरनी पेर लोलीभुत थएली छे, ते सर्व परोक्षभावे जाणी स्वपरनी वहेंचण करीने स्वस्वरुपनी रमणतानो लाभ मेळवषो, ते शुद्ध निर्वद्य यात्राथी थशे.

प्रतिमापुजनथी मोक्षफळ कहेछे, ते प्रश्नोत्तर

केटलाएक मतिविकळ पुरुषो एम कहे छे जे, पापादिकनी प्रतिमा श्रावको तिर्थंकर गोत्र बाधे तथा त्रीजे भवे मोक्ष जाय, एम प्रतिमानी पुजानो लाभ बतावे छे तथा कहे छे जे, तिर्थंकरोनेवारे श्रावकोए प्रतिमा पुजीने मनुष्यजन्म सफळ करलो छे. एम बोलनारनु वचन वृथा छे

श्री उपासग दशाग सूत्रमा वाणीज गामना रहिस आणद श्रावक " महीढीएअपरीभुया " एवो गृहस्थ, ते श्री महावीरनु पधारवु जाणी वादवा गयो त्यार बाद धर्मोपदेश साभळीने मिथ्यात्व वोसीरावी समकित सहित वारव्रत आदर्या ते अगाउ मिथ्यात्वदशामा जे गृहस्थाइ हती तेटली मोकळ राखीने नवी समृधी मेळववानी बधी करी त्या " खेतवथुनुप्पमाणंविहिंकरेई " एटले खेतर ते उघाडी जमीन तथा वथु एटले ढाकी जमीन ते घरदिक वखारो प्रमुख घर खाते वावरवाने मोकळा राखीने बकातना रहेला आरभना पचखाण कर्या ए पाचमु व्रत विधीसहित आदरीने एमज छठा व्रतमा छ दिशाए वेपारादिके जवानु प्रमाण कर्यु एमज सातमा व्रतमा छवीस बोल विगेरे नित्य नियमनी साथे पन्र कर्मादाननो वपार पचखे एमज " जाव " सथारा सुधी विधीग्रहण करी तेमा जेटला ससारीक व्यवहार खाता मोकळा राख्या, तेटलाज खप एम पोते बोलता गया ते सिवायना बीर परमात्मानी पास पचखाण कर्या इय आश्रव रुधीन सवरकरणी करवा माटे नवमु दशमु ने अगियारमु व्रत आदरवानी विधी धारीन ए त्रण व्रतोमा

* वशकरवु

सर्व आरंभनो निषेध करता मनता यतार्थी छे त्यारबाद वाचवा वाचवी विचार श्रमण निग्रंथन " फासुएसणीज्जेणअसणपाणखाइमसाइमेणवच्छपडिग्गहकंबल पयुउणण "

भावार्थ—फासु सुजतो आहार साधुओने सत्ता जोग, तेमज मार गतिवाला जोग ते अन्ननी जात, पाणीनी जात, सुखडीना जात, मुखवासनी जात, वस्त्रनी जात, पात्रमुख कांबल तथा पथरणु तथा रजोहरण विगेरे उपर थार्थी तेवा नहीं एवी वस्तुओ तथा " पाडिहारियपीढफलगसेज्जासंथारएणओसहभेसज्जेणपडिलाभेमाणे विहरामी "

भावार्थ—पात्रमुख ओठींगण देवानु पाटीयु तथा बाजोठ तथा स्थानक ते मज पाच जातना पराळना संथारामाथी अमुक संथारा तथा एक बोजो नीपजे ते ओषद तथा घणा द्रव्य भळीने नीपज्यु ते भषद एटले चुरण ते साधुओने मति लाभीने फाळतर पाछो लेवाय एम मति भावता थको रहु, एम सर्व जातना दा- नादिकनी मापणी विधीपूर्वक ग्रही छे एवी रीते श्रावक धर्मनी आराधना करवा विष सूत्रोमा विवचन आपेलु छे परतु जैन मतिमाना पुजननी विधी श्रावकोए कोर मुल्सुत्रोमा पुछी नथी तो विधी पुछ्या विना पुजन केम कर ? वळी ते श्रावके व्रत लीधा सिवाय तिर्थंकरनी समक्ष एम बोलेला छे जे, अन्यदर्शनी तथा अन्यदर्शनीना देवने तथा अन्यदर्शनीए ग्रहण करेला जैनना द्रव्यलींग ए सर्वने वादवा तथा नमस्कार करवाना नीम करु छु, तेमज ते बोल्या अगाउ मार बोलावता या विशेष बोलाववा या तेओने गुरु तथा धर्म बुद्धिथी आहारादिक देवो या देवराववो, ए सर्व आज पछी हु आणद श्रावकन न कल्पे विशेष अन्य तिर्थीओना वेष ते साक्यादिक तथा अन्य तिर्थीओना देव ते हरीहरादिक मत्यक्ष वरतेछे तेने तथा जैनना पडवाइ वेषधारीओ स्वधर्मथी नीकळी जइने अन्य दर्शनीमा भळी गयला ले ते श्रण अस्नादिकना भोगी छे, माटे तेओने गुरुदेवने, धर्मनी, बुद्धिए अस्नादिक आपु नही, अने निग्रंथ गुरुने धर्मनी इच्छाए चौद प्रकारनु दान आपु ए निग्रंथ साधुओ आस्नादिक वस्तुना छ कारणथी मुक्ता छे तो आणद श्रावके आपवा कबुल राखेलुं छे अने मिथ्यात्वीना ग्रहेला वेषधारी विगेरे पडवाइ " चइत " एटले द्रव्य ज्ञान संयुक्त जैनसाधु ए श्रणे जण पण कहेली वस्तुना भोगी छे माटे तेओने निरजराहेतुए न-आपुं एम कयु छे एम पाठनी ठक्ति जाणतां छतां तमो चैत एटले मतिमा करो छो तो पुण्याडु केमजकर

कहेली वस्तुओ खावा पीवाविगेरे तेने भोगववा जोग नथी केमजे ए एक इंद्री-दळ मजकुर वस्तु जोग नथी एम छता अनेक जातना कुतर्को करो छो, ते काइ सुझवाने योग्य नथी वळी चैत शब्दने माटे आणद श्रावकनी उत्तम करणीने सावद्य करववा धारो छो पण ते उत्तम श्रावके वोसीरावेला आश्रवोने आचरण करे नहीं

वळी जेसलमीरना भंडारमा ताडपत्र उपर लखेली उपासगनी प्रत छे ते संवत ११८६ नी सालमा लखाएलो छे ते प्रतमा " अणउथ्थियपरिग्गहीयाइ चेइयाइ " एटलाज पाठ छे पण " अणउथ्थियपरिग्गहीं याइअरिहंतचेइयाइ " एवो पाठ तो मूळल नथी अने त्यार पछीनी उपासगनी प्रतोना उतारा थया छे, तेमा अरिहंत शब्द नवो प्रक्षेप्यो एम समजे छे माटे कल्पित वळाने देव पण न पोहोंचे केमजे शास्त्रअनुसारे शास्त्रनो मूळ जवाब मागे तो मळे पण कपोळ कल्पित शब्दनो मेळ शास्त्रआधार प्रमाणे क्याथी मळे ? ने पोतानो मत दृढ करवा माटे नवा शब्दा घालेला, ते प्राचिनकाळना ताडपत्र उपर लखेला सूत्रउपरथी साबित थइ आवे छे तो कहेवानु के अरे अज्ञान साहेबो ! खातरीथी समजो के, आणद श्रावके जेटलो आश्रव छोडीने जे जे व्रत धर्या छे ते निर्वद्य करणीने माटे समजवा पण ते वखते तेणे प्रतिमापुजन विग्रेनो काइपण अर्थ पुछयो नथी तेमज तमारी रीते आणद श्रावके शेत्रुंजा महात्मनो आधार न राखता एक वीर परमात्माना वचन उपर आधार राखीने कल्याणीक जीव त्या धर्म आराधन कर्यु छे एमज सर्व श्रावको एक विधीए धर्म आराधी देव लोके पहोंच्या पण प्रतिमा पुजनना आधारथी मोक्ष इच्छा करी नथी

श्री प्रश्न व्याकरणना छठ्ठा अध्ययनमा दयाना साठ नाम चाल्या छे तेमा दयाने पुजा कही छे ते सत्य छे ने तेज अध्ययनमा दयाने यज्ञ कहेल छे ते पण बराबर छे ए दयानी पुजा तथा दयारुपी यज्ञ ए बे अमार आदरवा योग्य छे मतलब के धर्मदेव तथा देवाधीदेवनु पुजन निर्वद्य एटले हिंसा कया विनाज थाय छे ने एकाद तमारी मान्य करेली प्रतिमानी रीते एक इंद्री नथी के छकायनो भाग मागे ! कमजे एतो स्वशरीर पचेंद्री छे, तमज निर्वद्य करणीथी निरारंभे वरते छे तेथा ते निरारंभी देवनी आज्ञाए चालनारा सर्व साधुओ करुणारसथी भरपुर छे तथी ते देवना यथायोग्य गुण समृतिमा लावी वचनविलासे स्तवना करीने तेमज निराभिमानथी काया तथा आत्मान नमाडी भावपुजा करीन जन्म सफळ करवो, एवी रीत तिर्थंकर विगेर चार तिर्थोए करलु छ, ते सत्य छे कारण क ते

सर्व आरभनो निसद करवा मनता मनर्ता छे त्यारबाद आगमा समर्क विषेश श्रमण निग्रंथन " फासुएसणीजेणभसणपाणखाइमसाइमेणवत्थपडीग्गहकंबल यपुंछणेण "

भावार्थ—फासु सुजतो आहार साधुभान लेवा जोग, तथा चार प्रतिलाभव जोग ते अन्ननी जात, पाणीना जात, सुखडीना जात, मुखवासनी जात, वस्त्रनी जात, पात्रमसुख काम्बळ तथा पगरणु तथा रजोहरण विगेरे अने पाछी लेवा नहीं एवी वस्तुओ तथा " पांडहारगपीठफलगसेज्जासंथारगउसहभेसज्जेणपडीलाभमाणे वीहरामी "

भावार्थ—पाटमसुख ओठींगण देवानु पाटीयु तथा बाजोठ तथा स्थानक ते मज पाच जातना पराळना संथारामांथी अमुक संथारा तथा एक बीजथी नीपजे ते ओषद तथा घणा द्रव्य मळीने नीपज्यु ते भेषद एटले सुरण ते साधुओने प्रति लाभीने काळांतर पाछा लेवाय एम मति लाभतो थको रहु, एम सर्व जातना दा नादिकनी मापणी विधीपूर्वक ग्रही छे एवी रीते श्रावक धर्मनी आराधना करवा विष सूत्रोमा विवचन आपलु छे परंतु जैन प्रतिमाना पुजननीविधी श्रावकोए क्यां मूळसुत्रोमा पुछी नथी तो विधी पुछ्याविना पुजन केवु कर ? वळी ते श्रावके व्रत लीधा सिवाय तिर्थंकरनी समक्ष एम बोलेला छे जे, अन्यदर्शनी तथा अन्यदर्शनीना देवने तथा अन्यदर्शनीए ग्रहण करेला जैनना द्रव्यलींग ए सर्वने वादवा तथा नमस्कार करवाना नीम करु छुं, तेमज ते बोल्या अगाउ मार बोला ववा या विशेषे बोलाववा या तेओने गुरु तथा धर्म बुद्धिथी आहारादिक देवो या देवराववो, ए सर्व आज पछी हु आणद श्रावकने न कळपे विशेष अन्य तिर्थीओना वेष ते साक्यादिक तथा अन्य तिर्यीओना देव ते हरीहरादिक प्रत्यक्ष वरतेछे तेने तथा जैनना पडवाइ वेषधारीओ स्वधर्मथी नीकळी जइन अन्य दर्श नीमा मळी गएला छे ते श्रण अस्नादिकना भोगी छे, माटे तेओने गुरुलेखनें, धर्मनी, बुद्धिए अस्नादिक आपु नही, अने निर्ग्रंथ गुरुने धर्मनी इच्छाए चौद प्रकारनु दान आपु ए निग्रंथ साधुओ आस्नादिक वस्तुना छ कारणथी भुक्ता छे तो आणद श्रावके आपवा कबुल राखेलुं छे अने मिथ्यात्वीना ग्रहेला वेषधा री विगेरे पडवाइ " चइत " एटले द्रव्य ज्ञान संयुक्त जैनसाधु ए श्रणे जण एम कहेली वस्तुना भोगी छे माटे तेओने निरजराहेतुए न-आपु एम-कबु छे एम पाठनी युक्ति जाणतां छता तमो चैत एटले प्रतिमा करो छो तो पुछ्वानुं केमजरुर

कहेली वस्तुओ खावा पीवाविगेर तेने भोगववा जोग नथी केमजे ए एक इद्री-दळ मजकुर वस्तु जोग नथी एम छता अनेक जातना कुतर्को करो छो, ते काइ सुज्ञताने योग्य नथी वळी चैत शब्दने माटे आणद श्रावकनी उत्तम कर्णीने सावद्य करावना धारो छो पण ते उत्तम श्रावको वोसीरायेला आश्रवोने आचरण करे नहीं

वळी जेसलमीरना भंडारमा ताडपत्र उपर लखेली उपासगनी प्रत छे ते सवत ११८६ नी सालमा लखाएलो छे ते प्रतमा " अणउथ्थियपरिग्रहीयाइ चेइयाइ " एटलोज पाठ छे पण " अणउथ्थियपरिग्गही याइअरिहतचेइयाइ " एवो पाठ तो मुळल नथी अने त्यार पछीनी उपासगनी प्रतोना उतारा थया छे, तेमा अरिहत शब्द नवो प्रक्षेप्यो एम सभव छे माटे कल्पित फळाने दैव पण न पोहोंचे केमजे शास्त्रअनुसारे शास्त्रनो मुळ जवाव मागे तो मळे पण कपोळ कल्पित शब्दनो मेळ शास्त्रआधार प्रमाणे क्याथी मळे ? ने पोतानो मत दृढ करवा माटे नवा शब्दो घालेला, ते प्राचिनकाळना ताडपत्र उपर लखेला सूत्रउपरथी सावित यइ आवे छे तो कहवानु के अरे अज्ञान साहेबो ! खातरीथी समजो के, आणद श्रावके जेटलो आश्रव छोडीने जे जे व्रत धर्या छे ते निर्वद्य कर्णीने माटे समजवा पण ते वखते तेणे प्रतिमापुजन विशेनो काइपण अर्थ पुछयो नथी तेमज तमारी रीते आणद श्रावके शेत्रुंजा महात्मनो आधार न राखता एक वीर परमात्माना वचन उपर आधार राखीने कल्याणीक जीव दया धर्म आराधन कर्यु छे एमज सर्व सावको एक विधीए धर्म आराधी देव लोके पहोंन्या पण प्रतिमा पुजनना आधारथी मोक्ष इन्छा करी नथी

श्री प्रश्न व्याकरणना छठा अध्ययनमा दयाना साठ नाम चाल्या छे तेमा न्याने पुजा कही छे ते सत्य छे न तेज अध्ययनमा न्याने यज्ञ कहल छे ते पण बराबर छे ए दयानी पुजा तथा दयारुपी यज्ञ ए बे प्रकार आदरवा योग्य छे मतलब के धर्मदेव तथा देवाधीदेवनु पुजन निर्वद्य एटले हिंसा कया विनाज थाय छे ने एवा तमारी मान्य करली प्रतिमानी रीते एक इद्री नथी क छकायनो भाग माग ! कमजे एतो स्वशरीर पचेंद्री छे, तेमज निर्वद्य कर्णीथी निरारभे वरते छ तेथी ते निरारभी देवनी आज्ञाए चालनारा सर्व साधुआ करुणारसथी भरपुर छ तेथी ते देवना यथायोग्य गुण समृतिमा लावी वचनविलासे स्तवना करीने तेमज निराभिमानथी काया तथा आत्मान नमावी भावपुजा करीन जन्म सफळ करवो, एवी रीत तिर्थंकर विगेर चार तिर्थोए करलु छे, ते सत्य छ कारण क ते

रमरुप रतमा दोडावी मार्या छे, ते केवी जुल्मनी वात छे!! वळी एवा ग्रथोनु मान वधारवा माटे एवा कुमह रचे छे के जे मुळशास्त्रथी वैराग थाय तेवा मुळसूत्रोथी शेवकोने अजाण राखीने कुतर्क करे छे के श्रावकने मुळसूत्र वचाय नहीं माटे गुरुनी तथा देवनी भक्ति विशेना ग्रथ वाचीने ते प्रमाणे चालता श्रावकोने अनतो लाभ मळशे, एम कहीने पीळा वस्त्रवाळे पोतानो लाभ सुधार्यो ने शेवकोने सावद्य पुजामा फसाव्या छे, ते शास्त्रथी विरुद्ध छे अने निर्वद्य पुजा कही ते सत्य छे तो एवा वितरागना निर्वद्य वचनने अनुसरीने पुजा नहीं मानो अने सावद्य पुजाने मान्य करशो तो ते प्रश्न व्याकरणने छठे अध्ययने दयाना नाममा यज्ञ करवो कह्यो ते केवी रीते मान्य करशो ? तमारा कृत्यनी पुजामा आरभ करशो पण यज्ञविधीतो अन्य धर्मीओना शास्त्रोने मान्य करनारने माटे छे ने तेमा अजामेध, अश्वमेध गौमेध, गजमेध, ने नरमेध यज्ञ सावद्य छे ता तेना धर्मना आचरणनी रीते तेने पण तमारे दयामा प्रमाण करवु पडशे अने ते तमारी सावद्य पुजानी रीते करवु पडशे अने ते यज्ञाधीकार भाव यज्ञनो मेळ लइने निर्वद्य वाणीमा गणशो तो पुजा पण निर्वद्य करवी पडशे माटे अर अज्ञानव्यापक अजाण नरो ! एम जाणो के जे दया एज पुजा छे, तेमज दयारुप यज्ञ सूत्रोमा तथा अन्य धर्मीओना शास्त्रोथी सिद्ध थाय छे ते विषे विवचन निचे मुजब

उत्तराध्ययन बारमे हरकेशी अणगार यज्ञ पाडाना विप्रोने बोध करीने कहु छे अर मुर्ख विप्रो ! अग्निहोत्र तथा जळ स्नान करीने आत्मकल्याणना वच्छक थाओछो, ते सर्व जडता छे त्यारे ब्राह्मण कहजे स्वामि ! कये यज्ञे तथा कये स्नाने कल्याण थाय छे ने तमे कया यज्ञ मान्य करलो छे ? त्यार मुनी कह छे अर महानुभावो ! पच आश्रवने पचखीने इंद्रि दमन करतोथको सवर गुण सहित एटले मनुष्यादिक व्यवहारी सुख असजमथी निरवच्छकपणे शरिरआदि ममत्वभाव छाडी मोटा कर्म शत्रुओथी जय पामवाने हु माटा यज्ञ करुछु

तेमा मारा जीवनो शुद्ध उपयोग ते कुड तेमा निर्वद्य तपरुप अग्नि, तेने दीप्त करवा माटे शरीर तेज गोर उश्केरणी करीने कर्मरुप काष्टोने सळगावीने पछी शुद्ध श्रीविगी जोग रुप चाट्य करी विपआ न्य विकारोन हामुछु, अन ते वखते सतर सजमने आराधवाविष आत्मान जोडवो तेज स्वाती पाठ भणुछु एम सर्व रुषीश्वरोने भलु छे, ए निर्वद्य आत्मयज्ञ

फाइ तथा तुच्छ नर ते सार ए दृष्टांते जे निर्ग्रंथ ते [illegible] ज्या, तेम तेना शासनमा चालनारा पण पताय छे धर्मा ते [illegible] आरंभ [illegible] छे, तेमज चार निर्ग्रंथ दया [illegible] आरंभ [illegible] करनारां [illegible] ए उत्तमपक्ष [illegible] जगत [illegible] छे

[illegible] महानु ते [illegible] नार पुरु छे ना तेमां चालनार पण पुरु छे तेम जे दाने तथा गुरुना [illegible] भाग [illegible] छे ना तेमाना [illegible] रा शेरकान पण भागनेज [illegible] जेम आरंभ करनारना मोंघते आरंभ करे, तेमज दुराचारीनी माथते दुराचार करे एमां काइ नवाइ नथी तो [illegible] नरा ! वितराग देव दयास्वरूप जाण्या बाद छकायनो [illegible] एम जे " महणोमहणोमहणो " ए शब्द सर्व श्रोताजनोना हितनच्छक थइने करता छे, ते तो सत्य छे पण एज तिर्थंकरदेव काइ वखत एम न कहे जे अहो भव्य प्राणीओ ! तमारा कल्याणार्थे तिर्थंकर गोत्र बांधवा माटे हुं स्थापी छकाय जीवने हणीने मारी सेवा पुजा करजो एटले तमाने अनंतो लाभ मळशे ने त्रीजे भव मोक्ष जशो, एम कोइपण दीवस वितरागनुं सावद्य वाक्य होय नहीं न कोइ हिंसार्थी पोतानी पूजा मनावता नथी तेमज मुळ सूत्रोमा आरंभथी पुजन कर्ये मोक्ष लाभ लेवाने समकितने कहु नथी एवी रीते जाणता छता तम स्वभावीओ कल्पित पुजा अन्य दर्शनीओनी देखादेखी लइबेठा छे तेमा एम खातरी थाय छ के, स्वामीनारायणना मतनी रीतेज ते धर्म चलावे छे जेम स्वामीनारायणना भगतो तेमना देवळमा चेटेला पाषाणोना नामथी एक इंद्रीआदि पचेंद्रिसुधी जीवोना प्राण लइ पछी साजे तथा सवार ते लागेलुं पाप स्वामीने चरणे अर्पण कर छे ने एम कल्पे छ क ए सर्व कार्य महाराजने अर्थे करीए छीए तेमा अमने रति पाप न लागे वळी श्रे वधार नाणा खरची महाराजना धामनी तथा शेवापुजानी स्मृधी वधारे तेने महाराजना वैमान तेडवा आवे, तेमज महाराजना धाममा सोनाना महेल मळे एम लाभ बतावे एटले भोळा प्राणीओ कुशलम महेनत करी मरे छे तेज दृष्टांते पीळा वस्त्रवाळा वेषधारीओए नवा ग्रंथो जोडीने आरस पहाणनी मुर्तीओनो महिमा वधारवा माटे पुजा, दरशन, तथा देरा चणाववाना, फळ तथा फुल चुटी चडाववाना तथा जमाडवाना तथा संवेगीओने बहु मान आपवाना फळ, एम अनेक दाखलाओ सघीने करेला ग्रंथोनी भाक्षी दे पीळा चांदलावाळा भोळा वणिकोने समजावीने तेओना पोला पेटोने फुलावी मा

ध्यानाग्नौजीवकुंडस्थेज्ञानमारूतदीपित,
असत्कर्मधनक्षिप्येअग्निहोत्रकुरूत्तम

भावार्थ—अहो युधीष्टिर ! ध्यानरुप अग्नि करवी अने जीवरुप कुंड करवो, ते माहे असत्य कर्मोरुप काष्टोने प्रजवळीत करवा, तेज अग्निहोत्र सर्वोपरी जाणवो

एम अन्य दर्शनीओना शास्त्रोमा विभगानाणी यथास्थित दयारुप यज्ञ स्थापन कर छे तो तप्तस्वभावीजनोने कहेवानु के अर हिंसामान पुजनकारको ! तमारा अतरनी दिव्य चक्षुतळे निरापक्ष पुजनयज्ञ केम आवतो नथी ? ए आश्चर्य छे जेम गर्धव उपर अमुल्य वस्तु भर तोपण तेनो गुण न जाणे, तेमज भेंस आगळ भारत ने पावाने पानना वीडादेवा ए वृथा सेवा भक्तिमा गणाय छे, कारणे महिष, महिषी खोळ खावामातो घणाज तत्पर रहे तेमज अज्ञान स्वभावीओ पण आत्मज्ञान न जाणता अज्ञानतामाज तत्पर रहेछे अने आ निर्वद्य ज्ञाननो बोधतो वेद्यक होय ते वेद्यक ज्ञानने अमृततुल्य मान्य करीने अनुभवरस पीए छे

वळी उत्तम धर्मीओ दयायज्ञने, मान्य करे छे, ते विषे जैनधर्मी धनपाळ पंडि-तना वाक्य नीचे मुजव

एक वखते श्री भोजराजा शिकार करवा गया ते वखते केटलाएक कविओ राजाना घळनी प्रसंसा करता हता, ते वखते धनपाळ पंडित निरापक्षपणे राजाने बोधनी खातर दयानी उन्नति करवा एम कहतु के,

रसातलयातुतदत्रपौरुषकुनीतिरेषाशरणोह्यदोषवान्,
प्रहन्यतेयद्वळिनातिदुरवलोहाहामहाकष्टम

राजकजगत्

भावार्थ—अहो भोज ! तमारु पुरुषार्थपणु रसातळ जाओ, आतो मोटी कु-नीति छे मतलब के आ अनाथ प्राणीओने कोइ शरणज नथी तम तेनो काइ दोष-पण नथी अने तमारा जेवा बळवान पुरुष अति दुर्बळ प्राणीओने मारी नाखे छे, तेथी आ जुल्मी जगत अरा कष्टथी भरलु अने राजा विनानु छ ! कमजे जगत्-वासी प्राणीओ तमारा विकट रचना भयथी त्रास पामीने मोतमा तरणा ले छे तोपण तमने महर आवती नथी ए आश्चर्य छ !

हवे विप्र पुछे के अहो दया गुननार ! एवा निर्दोष यज्ञन भाव कई स्नान कराणो ? मुनी कहे अहो विप्रा ! शुद्ध दयारुप भर्युं द्रह छे, तथा निर्मल आत्मानां गुणरुप लसारुप जल भरलु छे तेमा स्नान करीने त्यारबाद नरवाद शुद्ध ब्रह्मचर्यरुप तिर्थ करीने धर्मरुप मल टालीने अतिनिर्मल भुत थइ गयेलुं सर्व क्षेत्रोमां एवं उत्तम निर्दोष स्नान, ज्यारा तथा यज्ञ निर्मल रुप कर्या ते, कर्म मल रहित थईने शीवपद पाम्या तेमज हुं करुं छु

एम जैन मार्गमा निर्दोष द्रहमा मजन करी त्याकरा यज्ञ करवा तिर्थंकर उपदेश बतावना छे वली तेमज उत्तराध्ययनना पचीसमा अध्ययन जयघोष नाम साधु भावयज्ञना करनार थयो तेणे विजय घोषनामना ब्राह्मणने निर्दोष यज्ञ करवानो बोध कर्यो छे ए व अध्ययननो पाठ अहिंआ लख्या नथी पण विवेकीओने उपयोगथी सारी माहतगार थता मालम पडशे एम जैन मार्गमा पुजा तथा यज्ञ ए व भाव निर्दोष छे, तेम छता उन्मार्ग गत सावद्य तथा अपार आरंभ करीने पुजा तथा यज्ञ स्थापन करे छ तमाने अज्ञानताथी बांधेला कर्मना बंधनाथी मुक्त थवु मुस्केल छ कारण के जाणकार थवाना वखतमा अजाणपणानो नेसाव बहार पाडवो, एवा मुर्खोथी बीजा काण जगतमा श्रेष्ट मुर्ख होय ? ते मुर्खपणाना गुण तो तस स्वभावीआ नज घटे छे वली आ ठेकाणे निर्दोष यज्ञन माटे अन्य दर्शनीओना शास्त्रनो दाखलो शाक्षिरुप लेवा जोग छ ते नीचे मुजब

श्रीमहाभारतेकृष्णोवाच

ध्रुवप्राणवधोयज्ञेनास्तियज्ञस्त्वहिंसक
ततोऽहिंसात्मकोकार्यसदायज्ञोयुधिष्टिर

भावार्थ—जे माणस यज्ञ करवा इच्छेछे पण तेमा प्राणवधविना यज्ञ थायज नहीं वली यज्ञना कारणथी प्रथमज परमाण नाश थाय छे ते माटे अहिंसारुप आत्मयज्ञ करवो सदा अहो युधिष्टिर !

इन्द्रियाणिपशुन्कृत्वावेदिंकृत्वातपोमयिं,
अहिंसामाहुतिंकृत्वाआत्मयज्ञयजाम्यहं

भावार्थ—अहो युधीष्टिर पचेंद्रिरुप पशु करवा अने तपरुप गुणो विगेरेनी वेदीका करवी अने दयारुप आहुती देवी ए प्रमाणे आत्मयज्ञ करवो

भावार्थ.—अहो महाराजा ! यज्ञस्थमने छेदीने तेमज पशुओने हणी रुधीरनो कादव करीने जो स्वर्गेज जवातु होय तो पछी नर्कमा कोण जशे ?

एम धनपाळना मुखथी सामळी राजा भोज कहे छे अहो पंडित ! शास्त्ररीतथी कल्याणीक यज्ञनो भेद कहो ? त्यारे धनपाळ पंडित कहेछे

सत्ययुपतपोह्यग्नि प्राणाश्वसमिधोमम
अहिंसामाहुतिंदद्यातएषोयज्ञ सनातन

भावार्थ—अहो महाराजा ! सत्य बोलवु एज मोटो यज्ञ स्थम छे तप करवो एज अग्नि छे पोताना प्राण तेज काष्ट छे अने दयारुपी आहुती आपवी तेनेज खरो यज्ञ जाणवो एवा यज्ञोने शास्त्रो प्रमाणिक कर छे एम ए सघळु भोज राजाए मान्य कर्यु

एमज हर्ष नामना कविए नैशध नामना महाकाव्यना बावीसमा सर्गना छो-तेरमा श्लोकमा यज्ञविषे हिंसाना दोपहेतु बताव्या छे, ते जाणी मोक्षाभिलापी सत्यग्रही पुरुषोए हिंसारुपी यज्ञनो त्याग करवो एम कह्यु छे

वळी वेदात शास्त्रोमा एम बताव्यु छे के अहो मुमुक्षो ! जे तत्वज्ञ थइ स्वस्व-रुपनु अवलोकन करे, तेमज देहआदि सारी जगतने वृथा समजे तेने ज्ञानी कहीए

श्लोक—अहसाक्षीतियोविद्याद्विविच्यैवपुन पुन
सएवमुक्त साविद्वानितिवेदातर्डिंडिम

भावार्थ—त्रण देह तथा त्रण अवस्था पचकोश भोक्ता भोग्यआदि सर्वनु वारवार विवेचन करीने ते सर्व देहादिक दृश्य छे अने हुतो तेनो दृष्ट साक्षि आत्मा छु एम जे पुरुष निश्चयथी जाणे छे, तेज पुरुष मुक्त छे अने तेज विद्वान छे एम कहीए एवु वेदातशास्त्रनु नगारु छे, ते खुल्ली रीते कह छे

हव आ प्रसगे दियाधर्मीओने कहवानु जे अन्यदर्शनीओ सर्व प्राण, भुत, जीव, सत्वने न जाणता मजकुर रीते निरारभ यज्ञ बताव छे ते सत्य धर्मना पक्षने परस्पर मळतो जाणी निर्विघ स्वभावी दयाधर्मीओन मान्य करवा योग्य छे तेमज जैन शास्त्रोमा तेवा सदया कृत्यथी पुजा, यज्ञो करवाविशे विवचन आपवा काइ खामी राखेली नथी परतु तमो कल्पित ग्रथोना आधारथी ने हिंसाबुद्धिना व्यापारथी सावद्य पुजा करोछो पण सावद्य यज्ञ करता नथी कारण जे सावद्य यज्ञने हिंसामा गणता हशो अने सावद्य पुजान दयामा गणता हशो पण दयाधर्मीओन

वैरिणोपिहिमुच्यतेप्राणान्तेतृणभक्षणात्
तृणाहाराःसदैवैतेहन्यन्तेपशवः कथम्

भावार्थ —प्राणांते पागनु तरणु मोढामा लेता शत्रु पण सनवारी पुरुषे छोडी देछे तो जे अनाथ प्राणीओ जगल्मा रही सदा घासनोज आहार करे छे, तेवा पशुओने न्यायी पुरुष केम हणी शके ?

एम धनपाळ पंडितना अमूल्य रत्न सांभळीने राजा भोजने क्रूरतारस उत्पन्न थयो ने तेज वखते शिकार करवानो निग्रह कर्यो अने त्यारी नइ पाछा नगरमा आवता एक यज्ञ करनारना यज्ञ स्थानकविषे भोज राजाए एक बकराने बांधेलो दीठो ते वखत ते बकरानु मांदु थयु दिन अने निस्तेजशरीर जोइने तमाम तेनो शोकथी भरपुर पोकार सांभळीने धनपाळ पंडितने राजाए पुछयु जे, अरे पंडित! आ बकरो शु कहेछे ? त्यारे धनपाळ पंडिते कयुके " हे स्वामिन ! मरणना भयथी ए बकरो लाचारी करी कहेछे के "

शार्दुलविक्रिडितवृतम्

नाहंस्वर्गफलोपभोगतृषितोनाभ्यर्थितस्त्वंमया
संतुष्टस्तृणभक्षणेनसततंसाधोनयुक्तंतव
स्वर्गेयान्तियदित्वयाविनिहतायज्ञेध्रुवंप्राणिनो
यज्ञंकिंनरोपिमातापितृभिः पुत्रैस्तथाबांधवैः

भावार्थ —मारे स्वर्गना फळनो उपभोग करवानी वीलकुल तृष्णा नथी तेमज में काइ ते संबंधी तमारी पासे मागणी पण करी नथी पण मने सदा तृण भक्षथी संतोष छे अहो सत्य पुरुष ! एम मने मारवो ते तने योग्य नथी जो यज्ञनी अंदर होमेला प्राणीओ स्वर्गमांज जता होयतो तमारा मातापिता ने पुत्र तथा बांधवोनो यज्ञ केम करता नथी

वळी धनपाळ पंडित कहेछे के अहो महाराजा ! ए यज्ञ करनार अजाणपणाना लाभमां शास्त्रथी उल्टी रीते अनाथ प्राणीओना प्राण हणी यज्ञ करेछे ए सांभळी भोज राजा पुछेछे के, अहो पंडित ! तेनु फळ शुं थशे ?

यूपंछित्वापशूनहत्वाकृत्वारुधिरकर्दमम्
यद्येवगम्यतेस्वर्गेनरकेकेनगम्यते

रमे छे तेमा विषयरुपी किलोल उपडी रह्यो छे पापरुप जळथी भरपुर छे तेना प्राणाति पाताद्रिक पाच गरनाळा छे तेमा पहलु जीवहिंसा ते त्रस स्थावरनो नाश कर, ते धर्मार्थ या संसारार्थे ते आश्रव कहीए अहीं कोइ वादी शका कर जे धर्मार्थे हिंसा थाय ते पापमा गणाय नहीं ? तेना जवाबमा प्रश्न व्याकरण सूत्रमा धर्मार्थ हिंसा कर्त्ताने महामन्द बुद्धिने दुष्ट कह्या छे अने दशवीकाळीक विगेर सर्व मुळ सूत्रोमा जयणा एटले दया पाळवी, तेज धर्म कह्यो छे अने जे अज्ञानी धर्मने अधर्मनी हालतमा करी धर्मपोकारे छे ने हिंसा करे छे, ते सत्य शास्त्र जोता तो अधोगतगामी थशे एम सिद्धातोमा प्रत्यक्ष छे कारण के जे धनना लाभनी आशाए पुजा प्रतिष्ठा स्नात्रे व्रत पचखाण कराव छे ते सर्व पापाणना नाव सरखा छे ते बुडे ने बुडाडे छे अर्थात ते अज्ञानी पोताना पेट गुजाराना बदोबस्त आगळ धर्म तथा पाप आश्रव सवरादिकनी ओळखाण न छता हिंसाबोध कर छे अने कदापि कोइ वे शास्त्र वाचेल होय तो तेओने पोताना वधन व्यवहारना अर्थ सारवा आगळ शास्त्रने पण एक तरफ राखे छे तो बुडे या बुडाडे एमा शु अचबो छे ! तेथी हिंसा त्या आश्रव छे अर्थात बार अव्रत कह्या छे त्या छकायनु अव्रत एटले हिंसा कही छे त्या कांइ एम नथी, जे धर्मार्थ हिंसा ते पापमा नहीं कारण के जाणता या अजाणता सोमलादिक झेर खाय ते सर्व दु ख पामे एमज धर्मार्थ या ससारार्थे हिंसा कर ते सर्व भार कर्मनु कृत्य छे परतु नहीं धमार्थी वळी कोइ प्राणी एम न कहजे अर धमार्थीओ ! तमो तमारा कल्याणनी खातर अमारा प्राण हरीने तिर्थकर गोत्र बाधा एम कोणे तमने आदेश करलो छे ? ते जुल्म गुजारवा ओसरता नथी ! अने फोगट गाल वगाडो छो पण एम जाणो क सर्वने सुख अने जीवबु वह्लभ छे न मर्ण तथा दु ख अनिष्ट छे माटे अर चेतन ! त्रसस्थावरना प्राणनु रक्षण करता अनत जीव सुख थशे अने हिंसा करनार पचावन दु'ख विपा कियावत भ्रमण करशे ए प्रथम आश्रव थयो तेमज ए पुस्तकमा आश्रव भावना अधीकार बीजो कृपावान एटले जुठा विवाद तेनु विवचन आपलु छे तेमा केटलाएक अज्ञानी एम कह छे जे धर्म अथ जुठु बोल्ना पाप नहीं ए असत्य कल्पना छे तेज पुन्तकने चारसें न साटमें पाने शिष्य पुछे छ स्वामी जमाळी विगेर जेणे जीनवचन उथाप्या होय ते रखडे परतु आपणे तो हाल्मा कोइ जीनवचन उथापक नथी तो तेनो परिसह धर्ममा केम न गवेल्यो ?

गुरु कह अहो भद्र तरणाना चोरने गुर्दीना हुकम थया तो करोडो रुपिआनो

पुजा तथा पछ निरवद्यनीमान छे तेमनें ना नमन ग्रहण करलु छे परंतु जे
पुजायज्ञमां परस्पर दृषा कल्पना करी छे ते सिद्धांतमां मोक्ष मार्ग मान्य कर्या
छे पण हिंसापुजन करवाथी कांइ शास्त्र अनुसार मोक्ष थाय नहीं वळी प्रति-
मापुजन करनारने चोथा गुणस्थानना संभव नथी मतलब के चोथा गुणस्थानक
अविरति समकितनी मान्यता स्वरूपमां निरर्थक एवा उपयोग करे छे एम ना
आश्रव स्थानका तत्पर ने थाय, तेथी प्रतिमापुजन छे ते समकितनो सीधो कारण
नथी तेविना सघळा सूक्ष्म मूर्तीअध्यात्म प्रकरण नामनु पुस्तक तेमां तत्व सारोद्धार
ग्रंथ छे तेने शास्त्रें एकनाळायमें पाने लख्युं छे के स्थावर तिर्थनी यात्रा करवा प्र-
तिमापुजन करवु ए कांइ समकित धर्मना नथी मतलब के ते प्रतिमा तथा तिर्थोमां
उत्तम गुणस्थानोनी कोइपण अपभाषी करणी धर्म नथी एम गुरुए शिष्यने उप-
देश आप्या त्यारे शिष्य कहे स्वामी ! तिर्थ, यात्रा, पुजन ए चोथा गुणस्थाननी
करणी छे अने तमो सम्यक्त्व द्वारग्रंथमां तथा मन्दिरस्वामीनी ढाळा प्रमुख घणा ग्रं-
थोमां प्रतिपादन करलु छे अने तमो अहींया ना केम कहो छो ?

गुरु कहे माहानुभव ! अमो ते स्थळ लाव्या ते योग्य छे एकतो कल्प व्य-
वहार आवर्तमान काळना घणा लोकोए मान्य करलु छे तेथी तथा जैन लोको
निरजरा हेतुमां प्रतिमा अप्रमाण करी बेठा छे माटे आपणा पक्षने मान, बुद्धि
देखाडवानी खातर तथा बीजु कारण ए छे के, आपणो शासन सारो दीपे ने
जगतमां आपणी प्रख्याति थाय एवा हेतुथी अमोए ते ग्रंथमां दाखल करलु छे

हवे अमे चोथा गुणस्थाननी करणीमां स्थावर तिर्थ अमान्य कर्युं तेनो हेतु
ए छे जे लोकोने सुरिआभ देवनो तथा द्रौपदी प्रमुखनो अधीकार देखाडीए छीए
पण ते करणीमा विचार घणो छे कारण के विजय देवता विगेरे घणा देवताओए
उपजती वखते पुजा करी छे पण ते पुजाना कृत्यमां तेम भगवाने तेने समकिती
कह्या नथी माटे मिथ्यात्वीज होय मतलब के ते देवताओ नवा उपजीने पुजा
करे छे पण कल्याणअर्थ होय तो मनुष्य लोको भ्रमणाथी फरी फरी करछे, तेम
होवु जोइए ने तम नहीं तो सूत्र जोता ते समकित ठरतांज नथी परंतु कांइ सम
किती मिथ्यात्वीनो नियम नथी तो फरी पूजा करवाना हक कोइने छे नहीं माटे
आज काळमां विवेक विकळनरो जुष्प्म आश्रव भावना केने कहीए ? एम
शिष्य कहेयके

गुरु कहे काया ते आश्रवरुप सरोवर छे तेमां इन्द्रिओने मनरुपी मच्छ कच्छ

रमे छे तेमा विषयरुपी किलोल उपडी रह्यो छे पापरुप जळथी भरपुर छे तेना प्राणाति पातादिक पाच गरनाळा छे तेमा पहलु जीवहिंसा ते त्रस स्थावरनो नाश करे, ते घमार्थे या ससारार्थे ते आश्रव कहीए अहीं कोइ वादी शका कर जे घमार्थे हिंसा थाय ते पापमा गणाय नहीं ? तेना जवाबमा प्रश्न व्याकरण सूत्रमा धर्मार्थे हिंसा करनारने महामन्द बुद्धिने दुष्ट कह्या छे अने दशवीकालीक विगेरे सर्व मुळ सूत्रोमा जयणा एटले दया पाळवी, तेज धर्म कह्यो छे अने जे अज्ञानी धर्मने अधर्मनी हालतमा करी धर्मपोकार छे ने हिंसा करे छे, ते सत्य शास्त्र जोता तो अधोगतगामी थशे एम सिद्धांतोमा प्रत्यक्ष छे कारण के जे धनना लाभनी आशाए पुजा प्रतिष्ठा स्नात्रे व्रत पचखाण कराय छे ते सर्व पाषाणना नाव सरखा छे ते बुडे ने बुडाडे छे अर्थात ते अज्ञानी पोताना पेट गुजाराना बंदोबस्त आगळ धर्म तथा पाप आश्रव सवरादिकनी ओळखाण न छता हिंसाबोध कर छे अने कदापि कोइ ते शास्त्र वाचेल होय तो तेओने पोताना वचन व्यवहारना अर्थ सारवा आगळ शास्त्रने पण एक तरफ राखे छे तो बुडे या बुडाडे एमा शु अचबो छे ! तेथी हिंसा त्या आश्रव छे अर्थात चार अव्रत कह्या छे त्या छकायनु अव्रत एटले हिंसा कही छे त्या काइ एम नथी, जे धर्मार्थे हिंसा ते पापमा नहीं कारण के जाणता या अजाणता सोमलादिक झेर खाय ते सर्व दु'ख पामे एमज धर्मार्थे या ससारार्थ हिंसा कर ते सर्व भार कर्मनु कृत्य छे परतु नहीं धमार्थी वळी कोइ प्राणी एम न कहजे अर धमार्थीओ ! तमो तमारा कल्याणनी खातर अमारा प्राण हरीने तिर्थकर गोत्र बाधा एम कोणे तमने आदेश करलो छे ? ते जुल्म गुजारवा ओसरता नथी ! अने फोगट गाल वगाडो छो पण एम जाणो क सर्वने सुख अने जीवबु वल्लभ छे ने मर्ण तथा दु ख अनिष्ट छे माटे अर चेतन ! त्रसस्थावरना प्राणनु रक्षण करता अनत जीव सुख थशे अने हिंसा करनार पचावन दु'ख विपा कियावत भ्रमण करशे ए प्रथम आश्रव थयो तेमज ए पुस्तकमा आश्रव भावना अधीकार बीजो मृषावाद एटल जुठो विवाद तेनु विवचन आपलु छे तेमा केटलाएक अज्ञानी एम कह छ जे धर्म अथ जुठु बोलता पाप नहीं ए असत्य कल्पना छे तेज पुस्तकन चारसें न साठमें पाने शिष्य पुछे छ स्वामी जमाळी विगेर जेणे जीनवचन उथाप्या होय ते रखड परतु आपणे तो हाल्मां कोइ जीनवचन उथापक नथी तो तेनो परिसह धर्ममा केम न गवस्यो ?

गुरु कह अहो भद्र तरणाना चोरने शुळीना हुकम थयो तो करोडो रुपिआनो

चोर थाय तेने शु दड देवाय ? विचार करो ? कमके तेनो दड तो हवे समकत मळी
मतल्व तरणा साथे गुथो थइ ना गुठीयो अधिक थीजु शु छे ? तेमज मारो शि
ष्य ! जमाली तो मात्र चार छे भगवाने कह्यु जे " जे करवा मांड्यु ते कर्यु
कहीए " एटलुज मथमथी रान फरव्यु तेथी घणो ससार वधार्यो अने हालमां
सर्व मुळसूत्रो उथाप्या छे कमके मारगथी पडु कह्यु छे के काना मात्र विंदु
उथापवो नहीं पण हजार विधान सिद्धान मारगद्वारमार्गी जाणवु ते हालमा अ
हिया प्रवर्तन छे ते गणु करीने भारेकर्मी जीवोथी छे परतु सूत्रने मळतु कारक
वचन छे ते शुद्ध विचारी जोवो पण मन्याय सर्व मूळ सूत्रनो लोप करीने आत्म
फर्नी टीका मानीए छीए ते विचारता नेवु छे तेमज हालना करता मतवन,
सजाइओनो आधार राखीने मूत्रने उथापी नाखीए छीए, तेने हवे शो दड ठरशे !
केम जे घणो ससार तो जमालीने ठराव्यो छे ने अहीआ तो उत्थापकनु परिमाण
कह्यु नथी तो उत्थापकमा ज्ञानीपणु शु जाणवु ? ते ज्ञान दृष्टिए विचारता
मालूम पडशे

तेज ग्रथने पाचसें न चापनमें पाने कह्यु छे जे आत्मधर्मना द्वेषी छे तेने हजी
समकित गुणस्थान आव्यु न कहीए एम कह्यु छे तो हाल्मा तमे स्वइच्छाए गम
तेम करो ! पण एम कह्यु छे के जेम काष्टनी पुतळीने वर बनावी जान जोडी मा
ढये जाय पण तेने कन्या परणाय नहीं अने पुतळु न्हइ जनारा लाज गुमाव तेम
ज आत्मज्ञानहिण पण अनंतो ससार रखडशे न तेओनो उपदेश साभळनारा
पण अनतो ससार रखडशे त्यार महाज आदवरी बोल्या के तमारा घणा कठोर
वचन छे पण अमे तो महु पडितना वचन कह्या छे ते आधारे चालीए छीए तो
अमार रखडवापणु क्याथी होय ?

उत्तर—अरे ! जो तमे पडितना वचन प्रमाणे चालीए छीए एम कहो छो तो
कहवानु के कोइ आत्मार्थी पडितना वचन बंधनकारक न आश्रवी नहोय मतलब
के जे खातामां महाज क्रियानो उपदेस छे तथा कर्म बंधननो उपदेश करनार पडित
छे पण धर्म उपदेशक पंडित नथी ने पडित होय त्यां आत्मस्वरुप ग्रहीने सबर
भावनी परुपणा कर एवा पडित तो मुळ शास्त्रमां अनेक ठेकाणे मालुम पडे छे
ते शास्त्रना नाम अमे पुर्वे कह्या छे

प्रश्न —ते शास्त्रना वांचनार पंडित सत्य अने बीजा शास्त्रना बाधनार
पडित असत्य छे ?

उत्तर—जे ते कथा ते पढित प्रत्यक्ष असत्य छे कारण के आचार दिनकरण ग्रंथमा एम कह्यु छे के गृहस्थना छोकराने साधु परणाववा जाय एवा वचन कहनारने पडित केम कहीए ? पण एवा वाक्योथी एम जणाय छे के प्रत्यक्ष पोता विगेर परिवारने माटे अजीवीका धार्यी छे ते प्रत्यक्ष उघाडु छे वळी तप उजवणाना ग्रंथ वाचनारने पुछवानु के एकावळ, कनकावळ विगेर तप मुळ सूत्रमा छे तेना तो कोइ सूत्रमा उजमणा करवा कह्या नथी अने तमोए जे नवा तप उत्पन्न कर्या ते तप सूत्रमा न छता उजमणानो नियम धार्यो उदर पुर्णा पुष्टि करी के बीजु कर्यु तथा एवा प्रकरण ग्रंथो भाख्या छे के श्रावकने उपध्यान वह्या सिवाय नौकार गणवा ते गुणकारक न थाय, एवा वाक्यो कया शास्त्रना आधारपरथी मेळव्यो छो ? सवत्र के उपासक दशागने विशे आणद श्रावकआदि दश श्रावकनो अधीकार छे तेमणे अग्रमार्गीपणे तुरत धर्म साभळी समकित मुळ बारव्रत उचर्या, तेमज अगियार पडिमा श्रावकनी वही ते समावशमा उपध्यान वह्या एमतो साक्षी नथी एमज सर्व श्रावकोने आणद नीज मलामण छे ते अधीकार विचारी जोता मालम पडशे

वळी तमो कहा छो के साधुआने जोग वह्या सिवाय सूत्र वचाय नहीं तेना उत्तरमा कहवानु के भगवतीजीमा खंधक तापसे सजम लइ तरत अगियार अग भण्या एम अनेक गृहस्था दिक्षा लइ कोइ अगियार अग या द्वादशागी भण्या वळी अनुतरावबाइ सूत्रमा घना अणगार नव मासना सजम पाळ्यो तेमा आठ मास तपना अने एक मास अतक्रिया सथारामा रह्या ने ते अगियार अग भणेला छे तो तेमणे जोग क्ये दिवस वह्या ? मतलब के एक भगवतीजीनो जोग वहता छ मास जाय एम कहो छो तो माडलीआ तथा आचारना तथा अगना जोग वहता केटला वरस जोइए ? तेना विचार करो ? पण खातरी थायछे के ए ग्रंथोना रचनार आ जीविका सिवाय धर्म मार्गमा समजता नहोता एम सभय छे तथा आचारविधी विगेर ग्रंथोमा कटलाएक वखत लईने आचार्योए अगीग सबधी व्यवहारोना पाधा बाधल्या छे तेमा वर्दानीत, लघुनात तथा दातण, नावण, धोवण, खावा पीवा विगेरना आचार बाधेल्ग छ तेने शु आत्म धर्म कहीए के पापोपार्जित कहीए ? हव आ बाबतमा ज्ञानचक्षुथी विनाग्तो एम समजाय छे के तेवा ग्रंथकारान पढित कहता विद्वानोनी सुमतिने एव लाग छ

वळी दूषम मुनीकृत्य तेज पुस्तकने चारसे मातेरमे पाने नन्दिसुत्रनी साखे

चार थाय तेन शु कद तेराग ? विचारशो ? तेमन तेना दृढनो हवे समवशो नहीं मतलब करणा साथ गुमे थह तो गुल्लाणी अर्थात बीजु शु छ ? तेमज वळी किप्य ! जवाळी तो मात्र चार छे भगवान कयु छे " जे करवा मांड्यु ते कर्यु कहीए " एवडुन मथमथी वचन फरव्यु तेथी घणा ससार वधाथा अने हाल सर्व मुखमुद्रा उथाप्या छे तमने मादार्थी पु कयु छे के कानो मात्र विगर उथापवा नहीं पनु मचार विनान सिद्धान गागदागमार्थी जाणनु ते हालमां अ हिया मवर्तन छे ते पण करीने आत्मकर्ता गीतार्थी छे परंतु मूसन मत्रतु काइक वचन छे ते शुद्ध विचारी जोशो पण मत्यभ सर्व मूळ मूत्रनो लोप करीने आत्मकर्ता शीक्षा मानीए छीए ते विचारवा जेवु छे तेमज हाल्ना करना सतन, सजाइभोना आधार रार्खान मूत्रन उथापी नाखीए छीए, तेने हवे शो दृढ टळशे ? केम जे घणो ससार तो जमालीन ठराव्यो छे ने अहींआ तो उत्थापकनु परिमाण रखु नथी तो उत्थापकमा ज्ञानीपणु शु जाणवु ? ते ज्ञान दृष्टिए विचारता मालम पडशे

तेज ग्रथने पाचसें न चापनमें पाने कयु छ जे आत्मधर्मना द्वेषी छे तेने हजी समकित गुणस्थान आव्यु न कहीए एम कयु छ तो हाल्मा तमे स्वइच्छाए गमे तेम करो ! पण एम कहयु छ क जेम काष्टनी पुतळीने वर बनावी जान जोडी मां डये जाय पण तेने कन्या परणाय नहीं अने पुतळु लइ जनारा लाज गुमावे तेमज आत्मज्ञानहिण पण अनतो ससार रखडशे न तेओनो उपदेश साभळनारा पण अनतो ससार रखडशे त्यार महाज आडपरी बोल्या के तमारा घणा कठोर वचन छे पण अमे तो बहु पडितना वचन कह्या छे ते आधार चालीए छीए तो अमार रखडवापणु क्याथी होय ?

उत्तर—अर ! जो तमे पडितना वचन प्रमाणे चालीए छीए एम कहो छो तो कहेवानु के कोइ आत्मार्थी पडितना वचन बधनकारक ने आश्रवी नहोय मतलब के जे खाताना बहार क्रियानो उपदेस छे तथा कर्म बधननो उपदेश करनार पडित छे पण धर्म उपदेशक पंडित नथी ने पडित होय त्या आत्मस्वरुप ग्रहीने सखर भावनी परूपणा कर एवा पडित तो मुळ शास्त्रमा अनेक ठेकाणे मालम पडे छे ते शास्त्रना नाम अमे पुर्वे कह्या छे

प्रश्न —ते शास्त्रना बांचनार पडित सत्य अने बीजा शास्त्रना वाचनार पडित असत्य छे ?

कहे छे के पुर्वेतो भणेला नहोता पण तमो तेमनु अपमान करोछो तो कहवानु के तम जेटलु ए नहोता भण्या ? वळी कोइ शास्त्रमा मजकुर व्यवहार दीठेलो हशे त्यार लावेला हशे एम उत्तर आपीने क्लेश करवा धारे पण रीतसर न्याये उत्तर न आपे ने उलटी रीते कहे के तमे अल्प ज्ञानी शु जाणो ? एवु बोलनारने माटे कहेवानु एके द्रव्य वेषधारी तथा तेना शेवको असजतनी हालतमा रही महा आरंभ अने परिग्रहना लोभथी तेमज कुशियळ आदि दुरगुणोथी भरपुर शून्य उपयोगी तेओना करेला स्तवन सजाय विगेरे ग्रंथो तेने सिद्धातनी रीते केम मनाय ? न माने तो आज्ञा असत्य केम न थाय ?

प्रश्न—अहींआ कोइ कहे जे मजकुर ग्रंथ कर्त्ताओमा असजतीपणु या अव्रतीपणु होय तो तेओना कर्म तेने सर परतु तेओए शास्त्रनो निरापक्ष निर्बंध वाक्यथी रचेला छे ना ?

उत्तर—अहो वादी ए मृषा वचन छे सबब के जेम वेश्याओ जारी कर्म करे तो तेनी सगत करनार सखीओने शियळ पाळवानो बोध क्यार्थीज कर ? वळी चोरीनो करनार पोताना सघातीने अदत्तादाननो निग्रह क्यार्थी करावे ? तेज दृष्टाते ग्रथकर्त्तानी कल्पित बुद्धियी सत्य मार्गने मुळ सुत्रार्थनो बोध निरापक्षपणे करो तो तेओथी मिष्टान भोजन विगेर लक्ष्मि मेळववी ए केम मेळवी शकाय ? पण एम जाणो के ज्या घणो परिग्रह मेळवेलो होय त्या मृषावादतो अवश्य होय छेज तो एवा बोधीक ग्रथकारोने उत्तम पदित केम मनाय ? सूत्रमा निग्रथना वचन मान्य करवा कह्या छे परतु धन हरनारना वचन मान्य करवा कह्या नथी

निग्रथना वचन मान्य करवा माटे शाक्षि भगवतीजी तथा ज्ञाताजी विगर सूत्रोमा जे जे श्रोताजनोए स्वगुरुपासे धर्म उपदेश साभळ्यो त्या त्या ए गृहस्थोनु एम बोल्यु थयु छे जे अहोभते ! एटले हे पुज्य ! हवे ए भगवान ! पदनी आगळ सर्व पद जोडया जे हय मने श्रद्धा छे एक निग्रथना वचन उपर, तेज निग्रथना वचननी प्रतित छे ने तेज निग्रथना, वचन मन रुच्य छ तज वचन कायाए फरीन फरशुछु तेज निग्रथना वचन प्रमाण करवाने उद्यमवत थयाछु वळी तेज निग्रथ वचन निश्चय छे ए काइ काळे जुठा न पडे, तेज निग्रथ वचन रुष्ट एटल वल्लभ छ तनज इच्छुछु ए निग्रथ वचन सिवाय सर्व अनर्थ मुळ छे ते हु मानपणे इन्दु एवी साधु तथा श्रावकधर्मना पाठछे तमानो निग्रथ सिवायना वचन अमान्य तमज

एम कह्यु छे के दशपूर्व धरनारना बनावेल तथा तेना उपरना शास्त्र सुधर्मा स्वा
प्रमाणिक कहीए अने तेथी ओछुं भणनारना रचेल सिद्धांतने अनुसार होय ते
सर्व मान्य छे अने शुद्धविरुद्ध होय तो अननुसारी थाय एवा एम कहुं छुं. माटे
दशपुर्वथी ओछा भणतरवाळाना बनाया गा रचेला प्रयोग सूत्र न कहेता ग्रंथ
कहेवा परन्तु तेमा निर्दोष रीत होय ता मनाय तेम नहीं तो ते प्रथना त्याग करवा
आ प्रसंगमा केटलाएक कहेछे के पागमी प्रमाण करवी ने केटलाएक कहे छे
पांच गाथानु स्तवन रचाय होय तेने प्रमाणगणवु तेम मानवु मिथ्यात्वरूप छे,
मतलब के सिद्धांतथी विरुद्ध बारयना प्रकरणो मानना शुद्ध सत्यमार्ग लोप थाय
ने ते ठ यगा धता मोक्षना यथार्थ जीन आज्ञा रहेती नथी सबब के सर्व
भगवतीजी तथा उववाइ विगेर मुळ सूत्रोमा एम कह्यु छे के " असहेज्जदेवा "
धर्मार्थी श्रावक कोइ देवतानी सहाय न वच्छे] तेमज आवता भवना सुखनी
चाहना न करे ते श्री ठाणांगजी विगेर सूत्रोथी जाणवु पण हालमा तो सेवा,
पुजा, जात्रा, तप विगेर करो या करावो छो तेमा तो भवोभवनी मागणी करोछो
माटे तमारा मागवा प्रमाणे घणाभव मळी शके एम संभव थायछे वळी केटलाएक
द्रव्य वेषधारीओ तथा तेमना बोध सांभळनारा श्रावको प्रतिक्रमणादिक करता मागे
छे एमज वेषधारीओ देवी देवताओनो सहाय मागे छे एमज वेषधारीओ देवी-
देवताओनी सामे हाथ जोडी नमन करे छे ते क्यु असत्य छे ! मतलब के सिद्धां
तोमा श्रावकोने तो अव्रतीओने नमवानी ना पाडी छे तो साधुओए अव्रतीओने
वंदन करवु एम होयज क्याथी ? सबब के साधु मुनीतो पंच परमेष्ठी नौकारमां
छे ने पोताना नामनु पांचमु पद छे जेथी अव्रती देवी देवो साधुनेज वंदन करेछे
तेथी मुनी अव्रतीओने नमस्कार न करे पण हालमा द्रव्य वेषधरनारा देवदेवीने
वंदन करे छे ते शास्त्र रीते देखीतुज अघटित छे तेनो हेतु एजे सूत्रकार साधुने
गुणवंत भगवंत कहीने बोलाव्या छे तेम छतां अव्रतीओनी गुलामी करवानु शुं
कारण छे ? वळी सूत्रमां एमपण कह्यु छे के साधुओए गृहस्थनी संगत न करवी
तेम छता हालमां गृहस्थोना अंगरक्षक थइने पोताना हक सुधारवा ग्रंथोपरुपी तथा
अनेक कपोलकल्पित वारताओ कही पेट गुजारा करछे तो शुं शास्त्रमान्य
साधु गणाय ?

वळी पुछवानु के मजकुर व्यवहारी ग्रंथो रचनारा पुरुषो केटला पुर्व भणेला
हता ? तेमज हालमां केटला पुर्व भणेला छे ? तेना मथाळमा कळेशी मित्रो एम

कहे छे के पुर्वेतो भणेला नहोता पण तमो तेमनु अपमान करोछो तो कहवानु के तम जेटलु ए नहोता भण्या ? वळी कोइ शास्त्रमा गजकुर व्यवहार दीठेलो हशे त्यार लावेला हशे एम उत्तर आपीने क्लेश करवा धार पण रीतसर न्याये उत्तर न आपे ने उलटी रीते कहे जे तमे अल्प ज्ञानी शु जाणो ? एवु बोलनारने माटे कहेवानु एके द्रव्य वेषधारी तथा तेना शेवको असजतनी हालतमा रही महा आरम अने परिग्रहना लोमथी तेमज कुशियळ आदि दुरगुणोथी भरपुर शून्य उपयोगी तेओना करला स्तवन सजाय विगेर ग्रथो तेने सिद्धातनी रीते केम मनाय ? ने माने तो आज्ञा असत्य केम न थाय ?

प्रश्न—अहींआ कोइ कह जे मजकुर ग्रथ कर्त्ताआमा असजतीपणु या अव्रतीपणु होय तो तेओना कर्म तेने सर परतु तेआए शास्त्रनो निरापक्ष निर्वेध वाक्यथी रचला छे ना ?

उत्तर—अहो वादी ए मृषा वचन छे सवब के जेम वेश्याओ जार्ग कर्म कर तो तेनी सगत करनार सत्रीओने शियळ पाळवानो बाध क्यार्थीज कर ? वळी चोरीनो करनार पोताना सथातीने अदत्तादाननो निग्रह क्यार्थी कराव ? तेज दृष्टाते ग्रथकर्त्तानी कल्पित बुद्धिथी सत्य मार्गने मुळ सुत्रार्थनो बोध निरापक्षपणे करो तो तेओथी मिष्टान भोजन विगेर लक्ष्मि मेळववी ए केम मेळवी शकाय ? पण एम जाणो के ज्या घणो परिग्रह मेळवलो होय त्या मृषावादतो अवश्य होय छेज तो एवा बोधीक ग्रथकारोने उत्तम पडित केम मनाय ? सूत्रमा निग्रथना वचन मान्य करवा कह्या छे परतु धन हरनाराना वचन मान्य करवा कह्या नथी

निग्रथना वचन मान्य करवा माटे नाक्षि भगवतीजी तथा ज्ञाताजी विगेर सूत्रोमा जे जे श्रोताजनोए स्वगुरुपासे धर्म उपदेश साभळ्यो त्या त्या ए गृहस्थानु एम बोल्यु थयु छे जे अहाभते ! एटले ह पुज्य ! हय ए भगवान ! पदनी आगळ सर्व पद जोडवा जे हये मने श्रद्धा छे एक निग्रथना वचन उपर, तेज निग्रथना वचननी प्रतित छे ने तेज निग्रथना, वचन मन रुच्य छे तेज वचन कायाए करीने फरशुछु तेज निग्रथना वचन प्रमाण करवान उद्यमवत थयाछु वळी तेज निग्रथ वचन निश्चय छे ए काइ काळे जुठा न पड, तेज निग्रथ वचन इष्ट एम्ल वल्लभ छ तनज इच्छुछु ए निग्रथ वचन सिवाय सर्व अनर्थ मूळ छे ते हु जाणपणे इच्छु एवी साधु तथा श्रावकधर्मना पाठछे तेमाना निग्रथ मिथ्यागना वचन अमान्यन तमज

अनर्थ मुळ कथा छे ते दुरबुद्धिआओनि कहेवानुं के एवा निग्रंथ सिवायना ध-
नोने तमे सत्यपरुपक ठरावीने ते प्रमाणे मान्य करी चालाछो ते शुं तमारा मन
भवनी परंपरा वृद्धि करवानी खातर ठीक वातु लागेछे ? पण खरेखर मुमुक्षु ज
तेने एम समजवुं के आत्मार्थी पुरुषोए निर्ग्रंथ वीतरागथी रचेला सिद्धांतो तेनज स
र्वोए अने तेज निर्ग्रंथ मुनिओना शुद्ध उपदेशथी आत्म उपयोगी पुरुषोए मिथ्यात्व
वोसीरावावाना वखतमा समकित सहित ज्ञानक्रिया धारण करीने दयारुप निर्ग्रंथ
पुजाने दयारुप निर्ग्रंथ यज्ञ करवाछे ते सिवाय सार्थी पुजन यज्ञ ज्ञानीओना म
विरुद्ध छे

प्रतिमामति प्रतिमाने शुभाशुभ कहेछे ते प्रश्नोत्तर

मतावलंबितजनोए पोताना मान्य करेला देवोनु स्थापन करता ते प्रतिमाओमां
शुभ तथा अशुभ करता एम कल्पना करेछे ते विश विवेचन नीचे मुजब

मुळ शास्त्रोथी विरुद्ध एक प्रतिमानी स्थापना खातर जीतकल्प नामना ग्रं
थमा केटलीएक जातना शुभाशुभ दाखलाओ मेळवी विषयगत शेवकोने अंधकुवा
उतारी मुकेला छे सबब के ते विचारा लखपति धवान तथा पुत्र पुत्रादिकथी वंश
वधारवानी खातर व्यवहारिक सुखथी निरविघ्न पामवानी आकांक्षाए आरसपहा
णना कन्डारला पुतळाओने शुभाशुभ संकल्पिने देवळोमा तथा घरोमां बेसाडेलाछे
ने तेमाज पोतानु आत्मकल्याण इच्छेलु छे ते कयु आश्चर्य छे ! ते ग्रंथमा एम कहयु
छे जे मल्लीनाथ, नेमनाथ, तथा महावीरजी, ए त्रण तिर्थंकरोनी प्रतिमा ग्रहस्था
पोताना घरमा बेसाडेतो कुळनी तथा धननी हाणी पामे अर्थात भीखारी थइ जाय
तथा सर्वदाकाळ कंगाळ अवस्थामा आवी जाय माटे ते प्रतिमाने शेवकोए घरमा
मढन करी पुजवी नहीं हवे बकातना एकवीस तिर्थंकरोनी प्रतिमा कुळ तथा धननी
वृद्धि करताछे तेथी शेवकोए घरमा मढन करी पुजवी एम एक वेषधारी जोतसी
भाखी गयो छे

वळी ते ग्रंथमा प्रतिमानी अवगाहनानु परिमाण करेलु छे के, एक, त्रण, पांच,
सात, नव, अगियार, एटला आगळनी आरसपहाणनी प्रतिमा शुभकारक छे ने
बे, चार, छ, आठ, दश आगळनी प्रतिमा अशुभ अने नाशकारक छे ए विगेरे
ते ग्रंथमां घणुज विवेचन छे

हवे एवी कल्पना करनारा दक्षोने कहेवानुं के अरे भो तमे परमेश्वरना नामने
शुभाशुभ मानोछो तो शु तमारा मतमां आत्म धर्मसाधन करवानी कोइ प्रतिमा ग्रह

राखो छे के शु सबब के तमारी समासदनी कल्पना उपरथी एक तर्क थाय छे के एकी आगळना प्रतिमा पुजवाना लाभमा तो सर्व जातना द्रव्यनी वृद्धि थाय तो महा आरभ कर्याविना धन प्राप्त न थाय तेथी ते आरभफळनेज आपनारी छे तेमज ते प्रतिमाओनी पुजा कुळवृद्धि करनारी छे अर्थात कुळवृद्धिनु कारण तो शियळ-व्रतना त्यागथी नीपजे छे माटे कुशिळरुप गुणनी आपनारी थइ केम जे तमारी धनविषेनी तथा कुळविषेनी कल्पना उपर एवोज अर्थ लागु थायछे तेथी कहेवानु के सिद्धातविरुद्ध चाल्वाथी ससार तो वधेलोज हतो अने तेमा मजकुर जातना वे फळनी पुर्णी मळी तो काइ खामीज न रही ! ! !

वळी तमारा ग्रथमा एम कयुछे के मजकुर त्रण प्रतिमा घरमा पुजवाथी तथा मजकुर रहेली बेको आगळनी प्रतिमा स्थापि पुजन करवाथी धन तथा कुळनो नाश थाय छे हवे आ प्रसगे कहेवानु के एवी प्रतिमा पुजनथी निर्धन थइ ज्वाय तो ठीक छे एटले निग्रथपणु उदे आवे ने शुद्ध कर्णीथी कर्म खप वळी ते प्रतिमापुज-नथी कुळक्षय थाय ते पण फायदाकारक वात छे मतल्ब के कुळक्षय थवामा तो नवा कुळ उपारजवा न पडे ने तेज भवे सिद्धपद पामी जवाय माटे ए निर्धनपणु तथा कुळक्षयपणु ज्ञान, दर्शन अने चारित्रना आधारयीज थाय छे पण तेवी रीतना शास्त्रबोध उपदेश त्याग, वैराग्य, ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप विगेर आराधना विधी ता तमारा हिंसा मृपाना आचरणथी उदय थवा मुश्कल छे परतु नाशकारक प्रतिमा पुजनथी निर्धनपणु तथा कुळक्षयपणु थइ जवाथी पराधीनपणामा अकाम निर्जरा थशे ने ते अकाम निर्जराना हासल्मा अनरी जातना वाणवतर देवनो भय प्रगट थशे माटे अशुभ प्रतिमापुजननु ए फळ मळनारु छे अन शुभ प्रतिमापुजनथी ससार वृद्धि थशे वळी कहेवानु जे केवळज्ञानीए मुळ शास्त्रोमा ससार घटवानो हेतु ता ज्ञान, दर्शन, चारित्र ने तपथी ज बताव्लो छ पण बीजी बहाज क्रियाथी शुद्ध निर्जरारुप काइ गुण प्रगटे या कर्म खप तेम कयु नथी माट अर अविवकी मित्रो ! खोटी कल्पनाथी भुल्ल खाइन पाप पिंड न भरता ज्ञान आराधना करवा उत्साह करा के, जेथी तमारा करल्ग आश्रवना बधननो नाश थाय पण जीतकल्प, महा कल्प तथा वियकविल्गस विगर ग्रथोनी रुचीरुप स्वरपुत्र ग्रहण करीने प्रतिमाना मडनविग ग्रहस्थोन शुभाशुभ बतावीन आगारुप पासलामा नाखोठा त काइ पंचें-द्रियणानो गुण सभवतो नथी

वळी केटलाएक ठेकाणे एमपण कह्याछा क, चावास निर्थकर मोक्षहतु छे पण

मुर्तीमंडननी खातर काइ अपेक्षाना योग वार्तीने जवाब आपोछो ते बेदरकारी जणाय छे केमके श्रण मतिमार्नी तथा वळी आगळनी प्रतिमानी पुजा करवानी धन तथा फुळनो खप थइ जवानो डर छे ते मुळ विचार प्रसिद्ध न थवाना इच्छी रीतना जवाब आपवा ते काइ सत्यधर्मनी रीतमा नथी पण खरेखर एम धारो के मोक्षना कारण सिद्धांतमा ज्ञान, दर्शन, चारित्र ए तपने भळाव्या छे पण पुजा शुभ मतिमापुजन भळाव्यु नथी तोपण तमारी मति भ्रमनाने लीधे हिंसापुष्टी कर वानी खातर मजकुर श्रण प्रतिमा अमगळीक ठरावो छो ने बकातनी एकवीसने मगळीक ठरावो छो, ए परस्पर कल्पना भेद करी जे तिर्थंकर निर्वाण पहोंच्या तेना नामने दरेक रीतना कुविचारोथी एम लगाडो छो कारणे नेमेश्वर बाल ब्रह्मचारी कुमार अवस्थामां जोग साधन करी मोक्ष पधाया ते सर्व नर, देव तथा मुनीजनोना वंदनीक छे, ते सत्य छे अने तमारी कल्पनामा तो एम छे जे स्पर शरीक भोगना असमर्थी पुत्र नथी माटे अमगळीक गणोछो तो तमारा विचार प्रमाणे हवे सपुत्रपणे यथार्थी थाय ? हवे तेम नहीं छता ते वंदनीक सिद्धनी कु क्तिथी आसातना करोछो, तेथी एम जणाय छे के निर्लज अने बेशरमा जेवा जणाइ आवोछो वळी तेमज मल्लीनाथ तथा महावीरने अमगळिक ठराववानो मुख्य हेतु पोताना मनमा अवळीज रीते समजे छे अने ते विगेना सामा उत्तर मागनारने जवाब आपो ते दुर्लज रीतना छे माटे कुडी कल्पनाथी कचेरीमा प्रतिमाना आधार लइने सत्यपुरुषो भगवतनी हासी करवा धारोछो तेथी तमारो कुल व्यवहार कल्पित छे वळी छळभेदथी एम कहो छो जे पतो विद्वजनोने समजवा योग्य छे एम कहेछु ते पण कल्पनाथीज कहो छो

दिगंबर, वीसपथी, तेरापथी तथा सेताबरने परस्पर विरुद्ध ते प्रश्नोत्तर

मतिमाग्राही दिगवरना वे पक्ष खुल्ला जणाय छे ते वीसपंथी अने तेरापंथी ए वे छे तेमा वीसपंथीवाळाए प्रतिमा पुजनमां पान, फळ, फुल, बीज, हरीकाय विगेरे तथा केशर, चंदन, धुप, दीप, आर्ती विगेरे घणा छकायना आरंभ करी पुजा कबुल राखेली छे अने तेरा पंथी दिगबर कहे छे के, मजकुर रीते आरंभ करीने पुजा मान्य करनार वीसपथीओ मिथ्यात्व दृष्टिओना आचरण करे छे माटे ते प्रतिमा पण कुलिंगमा गणवी ने वे कुलिंगनी प्रतिमा जाणी अमोए त्याग करेलो

छे मतलब के तिर्थंकर महाराज आप स्वशरीर सजम सहित विचरता ते वखते फळ, फुल, धुप, दीप विगेरे व्यवहारीक भक्तिना भोगी नहोता तेमज आरभना योग्यथी पुजा एमने योग्य नहोती तेम छता तेओना नामनी प्रतिमाने वीसपथीओ अनेक आरभ करी पुजा करे छे, ते शास्त्र विरुद्ध छे

वळी अमो तेरापथी सत शास्त्रोना आधारथी प्रतिमा पुजन करीए छीए के जेम भगवत निर्वद्य पुजा सन्मान सहित हता अने दया मार्गनो बोध करता हता ते आधार राखी अमोए ते तिर्थंकरना नामथी प्रतिमा करी पुजीए छीए अने ते तिर्थंकरो निर्वद्य पुजार्थी पुज्यमान हता, तेमज तेनी प्रतिमाने निर्वद्यथी पुजा करीए छीए सयम के सजम आराधनाना वखतमा ते तिर्थंकर सर्व सावद्य कृत्य वोसी-रावलो हतो ते निरारभी थइ विचरता हता तेवीज रीते प्रतिमा पुजननी स्थितीमा पण निरारभीपणु कल्पवु जोइए ने ते प्रमाणे निर्वद्य पुजा करता भव भ्रमणा मटे छे एम तेरापथी प्रतिमामतिओ मान्य कर छे अने प्रथमनी रीते वीसपथी मान्य कर छे तो केहेवानु के ए बेउनो मत प्रतिमा मानवानो छे तेम छता परस्पर भेदमा रमे छे ने सावद्य निर्वद्य पुजापरुपे छे इस मजकुर विवादीओने सुचना आपवानी क वितराग भापित जैन शास्त्रोमा देशव्रति श्रावकोने एक इद्रीदळनी प्रतिमाना पुज-नविषे काइपण विवेचन आपेलु नथी तेम छता विरुद्ध रीते प्रतिमा स्थापी सावद्य निर्वद्य पुजानी कल्पना करो छो ते तदन हासी भरलु छे

इस वितरागनी आज्ञा प्रमाणे चालनारा जैन दयाधर्मीओ सत्य शास्त्रना आधारथी प्रतिमानो तथा आरभ समारभनो त्याग करी निरापक्षपणे आर्यधर्मनु आराधन करी सवर निर्जरारुप करणी कर छे तो ए पुरुषो मजकुर विवादीओना सारभी कृत्यनो निस्छेद कर छे ते सत्य शास्त्रना आधारथीज समजवु

वळी विशेप के वीसपथी, तेरापथी अने सेताबर मुर्तीमान ए त्रण मत-वाळाओना शास्त्रमा एम लखे छे क प्रतिमा देरामा या घरमा बसाडवाने माटे घडते भाव खरीद एटले यचाती लीधी पण ते ज्या सुधी पडतर रह ने प्रतिष्टा तथा होम स्नान विगेर सर्व पुजाविधी मकुरा न जोया ने ते प्रतिमाना कानमा मत्र न सभळाव्या होय त्या सूधी तेनामा तिर्थंकरपणानो गुण नथी तेमज अवदनीक छ अन मजकुर विधी करीने पछी कानमा मत्र सभळाव त्यार पछी तिर्थंकर गुणसयुक्त पूजन वदनमान्य करवा योग्य छे एम कह छे त विकळोने जैन दयाधर्मी पूछे छे के अर प्यारा अज्ञान साइबो ! तमारी मान्य करली प्रतिमाना कानमा तमोए गुरु

मुर्तीमदननी खातर काइ अपभानो गोम पार्मान जवाब आपोछा ते केमजाणी जणाय छे रमके श्रण मतिमानी तथा पर्सी आंगळनी प्रतिमानी पुजा करवामां धन तथा कुळनो क्षय थइ जवानो डर छे ते मुळ विनार प्रसिद्ध न चालना जवी रातना जवाब आपवा ते काइ सत्यधर्मनी रीतमा नथी पण स्वरस्वर एम धारो के मोक्षना कारण सिद्धानमां ज्ञान, दर्शन, चारित्र ने तपने भळाव्या छे. पण क्यां शुभ मतिमापुजन भळाव्यु नथी तापण तमारी मति भ्रमनाने लीधे हिसावृद्धी कर वानी खातर मजकुर श्रण प्रतिमा अमगळीक ठरावो छो ने वकातनी एकवीसने मगळीक ठरावा छा, ए परस्पर कल्पना भद करी जे तिर्थंकर निवाण पहोच्या तेना नामन दरक रीतना कुविचारोथी एब लगाडो छा कारणे नेमेश्वर बाळ ब्रह्मचारी कुमार अवस्थामा जोग साधन करी मोक्ष पधार्या ते सर्व नर, देव तथा मुनीजनोना वदनीक छे, ते सत्य छ अन तमारी कल्पनामा तो एम छे जे ज्यार शरीक भोगना असमर्थ पुत्र नथी माटे अमगळीक गणोछो तो तमारा विचार प्रमाणे हवे सपुत्रपणे स्यार्थी थाय ? हय तेम नहीं छता ते वदनीक सिद्धनी क्रुर क्तिथी आसातना करोछो, तेथी एम जणाय छे के निर्लज्ज अने बेशरमा जेवा जणाइ आवोछो वळी तेमज मल्लीनाथ तथा महावीरन अमगळिक ठरावानो शुं हतु पोताना मनमां अवळीज रीते समये छे अन ते विगना सामा उत्तर मागनारने जवाब आपो ते गुर्जीज रीतना छे माटे कुडी कल्पनाथी कर्सरीम मतिमाना आधार लइने सत्पुरुषो त्रिजगतनी हासी करवा धारोछो तेथी तमारो कुल व्यवहार कल्पित छे वळी छळभेदथी एम कहो छो जे एतो विद्वजनोने समजवा योग्य छ एम कहेवु ते पण कल्पनाथीज कहो छो

दिगवर, वीसपथी, तेरापथी तथा सेतावरने परस्पर विरुद्ध ते प्रश्नोत्तर

मतिमाग्राही दिगवरना बे पक्ष सुद्धा जणाय छे ते बीसपथी अने तेरापथी ए बे छे तेमां बीसपथीवाळाए मतिमा पुजनमां पान, फळ, फुल, बीज, हरीकाय विगेरु तथा केशर, चंदन, धुप, दीप, आर्ती विगेर घणा छकायना आरभ करी पुजा कबुल राखेली छे अने तेरा पंथी दिगबर कहे छे के, मजकुर रीते आरभ करीने पुजा मान्य करनार बीसपथीओ मिथ्यात्व दृष्टिओना आचरण करे छे माटे त प्रतिमा पण कुलिंगमा गणवी ने ते कुलिंगनी प्रतिमा जाणी अमोए त्याग करेलो

छे. मतलब के तिर्थंकर महाराज आप स्वशरीरे सजम सहित विचरता ते वखते फळ, फुल, धुप, दीप विगेर व्यवहारीक भक्तिना भोगी नहोता तेमज आरभना योग्यथी पुजा एमने योग्य नहोती तेम छता तेओना नामनी प्रतिमाने वीसपथीओ अनेक आरम करी पुजा करे छे, ते शास्त्र विरूद्ध छे

वळी अमो तेरापथी सत शास्त्रोना आधारथी प्रतिमा पुजन करीए छीए के जेम भगवत निर्वद्य पुजा सन्मान सहित हता अने दया मार्गनो बोध करता हता ते आधार राखी अमोए ते तिर्थंकरना नामथी प्रतिमा करी पुजीए छीए अने ते तिर्थंकरो निर्वद्य पुजाथी पुज्यमान हता, तेमज तेनी प्रतिमाने निर्वद्यथी पुजा करीए छीए सवब के सजम आराधनाना वखतमा ते तिर्थंकरे सर्व सावद्य कृत्य वोसी-रावेलो हतो ते निरारभी थइ विचरता हता तेवीज रीते प्रतिमा पुजननी स्थितीमा पण निरारभीपणु फळपणु जोइए ने ते प्रमाणे निर्वद्य पुजा करता भव भ्रमणा मटे छे. एम तेरापंथी प्रतिमामतिओ मान्य करे छे अने प्रथमनी रीते वीसपथी मान्य करे छे सो केहेवानु के ए बेउनो मत प्रतिमा मानवानो छे तेम छता परस्पर भेदमा रमे छे. ने सावद्य निर्वद्य पुजापरुपे छे. हवे मजकुर विवादीओने सुचना आपवानी के वितराग भाषित जैन शास्त्रोमा देशव्रति श्रावकोने एक इद्रीदळनी प्रतिमाना पुज-नविषे काइपण विवेचन आपेलु नथी तेम छता विरूद्ध रीते प्रतिमा स्थापी सावद्य निर्वद्य पुजानी कल्पना करो छो ते तदन हांसी भरेलु छे

हवे वितरागनी आज्ञा प्रमाणे चालनारा जैन दयाधर्मीओ सत्य शास्त्रना आधारथी प्रतिमानो तथा आरभ समारमनो त्याग करी निरापक्षपणे आर्यधर्मनु आराधन करी सवर निर्जरारुप करणी कर छे तो ए पुरुषो मजकुर विवादीओना सारभी कृत्यनो निन्छेद करे छे ते सत्य शास्त्रना आधारथीज समजवु

वळी विशेष के वीसपथी, तेरापथी अने सेतावर मुर्तीमान ए त्रण मत-वाळाओना शास्त्रमा एम लखे छे के प्रतिमा देरामा या घरमा वेसाडवाने माटे पडते भावे खरीद एटले वेचाती लीधी पण ते ज्या सुधी पडतर रहे ने प्रतिष्टा तथा होम स्नान विगेर सर्व पुजाविधी मझुर्त न जोया ने ते प्रतिमाना कानमा मत्र न सभळाव्या होय त्या सूधी तेनामा निराकारपणानो गुण नथी तेमज अवदनीक छे अने मजकुर विधी करीने पछी कानमा मत्र सभळाव त्यार पछी तिर्थंकर गुणसयुक्त पूजन वदनमान्य करवा योग्य छे एम कहे छे त विश्र्ञोन जैन दयाधर्मी पूछे छे के अर प्यारा अज्ञान साहवो ! तमारी मान्य करेली प्रतिमाना कानमा तमोए गुरु

मुर्तिमडननी खातर कोइ अपशाना गाम गामीने जवाब आपोछो ते मेरवानी जणाय छे केमके त्रण प्रतिमानी तथा नवी आंगळनी प्रतिमानी पुजा करवाथी धन तथा कुळना क्षय थइ जवानो डर छे ते मुळ विचार प्रसिद्ध न थवानी उपली रीतना जवाब आपवा ते काइ सत्यधर्मनी रीतमा नथी पण परस्पर एम थाय के मोक्षना कारण सिद्धांतमा ज्ञान, दर्शन, चारित्र ने तपने भळाव्या छे पण शुभा शुभ प्रतिमापुजन भळाव्यु नथी तोपण तमारी मति भ्रमनानर्थे हिंसापुर्ण कर वानी खातर मजकुर त्रण प्रतिमा अमगळीक ठरावो छो ने बकातनी एकवीसने मगळीक ठरावो छो, ए परस्पर कल्पना भेद करी जे तिर्थकर निर्वाण पदोच्या तेना नामने टरक रीतना कुविचारोथी पण लगाडो छो कारणे नमेश्वर बाल ब्रह्मचारी कुमार अवस्थामा जोग साधन करी मोक्ष पधार्या ते सर्व नर, देव तथा मुनीजनोना वर्णीत छे, ते सत्य छे अने तमारी कल्पनामा तो एम छे जे व्यव हारीक भोगना असमर्थथी पुत्र नथा माटे अमगळीक गणोछो तो तमारा विचार प्रमाणे हव सपुत्रपणे क्याथी थाय ? एम तेम नहीं छता ते वर्णीक सिद्धनी कु क्तिथी आसातना करोछो, तेथी एम जणाय छ के निर्लज अने नेत्ररमा जेवा जणाइ आवोछो वळी तेमज मल्लीनाथ तथा महावीरने अमगळिक ठराववानो कुल हतु पोताना मनमा अवळीज रीते समये छे अने ते विगेना सामा उत्तर मागनारने जवाब आपो ते दुर्जन रीतना छे माटे कुडी कल्पनाथी कर्त्तरीम प्रतिमाना आधार लइने सत्पुरुषो भिवगतनी हासी करवा धारोछो तेथी तमारो कुल व्यवहार कल्पित छे वळी छळभेदथी एम कहो छो जे एतो विद्वजनोने समजवा योग्य छे एम कहेवु ते पण कल्पनाथीज कहो छो

दिगवर, वीसपथी, तेरापथी तथा सेतावरने परस्पर विरुद्ध ते प्रश्नोत्तर

प्रतिमाग्राही दिगबरना बे पक्ष सुद्धा जणाय छे ते वीसपथी अने तेरापथी ए बे छे तेमा वीसपथीवाळाए प्रतिमा पुजनमा पान, फळ, फुल, बीज, हरीकाय विगेरे तथा केसर, चदन, धुप, दीप, आर्ती विगेरे घणा छकायना आरंभ करी पुजा कबुल राखेली छे अने तेरा पंथी दिगंवर कहे छे के, मजकुर रीते आरंभ करीने पुजा मान्य करनार वीसपथीओ मिथ्यात्व दृष्टिओना आचरण करे छे माटे ते प्रतिमा पण कुलिंगमा गणवी ने ते कुलिंगनी प्रतिमा जाणी अमोए त्याग करेला

छे. मतलब के तिर्थकर महाराज आप स्वशरीर संजम सहित विचरता ते वखते फळ, फुल, धुप, दीप विगेर व्यवहारीक भक्तिना भोगी नहोता तेमज आरभना योग्यथी पुजा एमने योग्य नहोती तेम छता तेओना नामनी प्रतिमाने वीसपथीओ अनेक आरभ करी पुजा करे छे, ते शास्त्र विरूद्ध छे

वळी अमो तेरापथी सत शास्त्रोना आधारथी प्रतिमा पुजन करीए छीए के जेम भगवत निर्वद्य पुजा सन्मान सहित हता अने दया मार्गनो बोध करता हता ते आधार राखी अमोए ते तिर्थकरना नामथी प्रतिमा करी पुजीए छीए अने ते तिर्थकरो निर्वद्य पुजाथी पुज्यमान हता, तेमज तेनी प्रतिमाने निर्वद्यथी पुजा करीए छीए सबब के सजम आराधनाना वखतमा ते तिर्थकरे सर्व सावद्य कृत्य वोसी-रावेलो हतो ते निरारभी थइ विचरता हता तेवीज रीते प्रतिमा पुजननी स्थितीमां पण निरारभीपणु कल्पवुं जोइए ने ते प्रमाणे निर्वद्य पुजा करता भव भ्रमणा मटे छे एम तेरापथी प्रतिमामतिओ मान्य करे छे अने प्रथमनी रीते वीसपथी मान्य करे छे तो केहेवानु के ए बेउनो मत प्रतिमा मानवानो छे तेम छतां परस्पर भेदमा रमे छे. ने सावद्य निर्वद्य पुजापरुपे छे हवे मजकुर विवादीओने सुचना आपवानी के वितराग भाषित जैन शास्त्रोमा देशव्रति श्रावकोने एक इद्रीदळनी प्रतिमाना पुज-नविषे काइपण विवेचन आपेलु नथी तेम छता विरूद्ध रीते प्रतिमा स्थापी सावद्य निर्वद्य पुजानी कल्पना करो छो ते तदन हासी भरेलुं छे

हवे वितरागनी आज्ञा प्रमाणे चालनारा जैन दयाधर्मीओ सत्य शास्त्रना आधारथी प्रतिमानो तथा आरभ समारभनो त्याग करी निरापक्षपणे आर्यधर्मनु आराधन करी सवर निर्जरारुप करणी करे छे तो ए पुरुषो मजकुर विवादीओना सारभी कृत्यनो निच्छेद करे छे ते सत्य शास्त्रना आधारथीज समजवु

वळी विशेष के वीसपथी, तेरापथी अने सेतावर मुर्तीमान ए त्रण मत-वाळाओना शास्त्रमां एम लख्ये छे के प्रतिमा देरामा या घरमा बेसाडवाने माटे पडते भावे खरीद पटले वेचाती लीधी पण ते ज्या सुधी पडतर रहे ने प्रतिष्टा तथा होम स्नान विगेरे सर्व पुजाविधी महुर्त न जोया ने ते प्रतिमाना कानमा मत्र न सभळाव्या होय त्या सुधी तेनामा तिर्थकरपणानो गुण नथी तेमज अवदनीक छे अने मजकुर विधी करीने पछी कानमा मत्र सभळावे त्यार पछी तिर्थकर गुणसयुक्त पूजन वदनमान्य करवा योग्य छे एम कहे छे ते विषळोने जैन दयाधर्मी पूछे छे के अरे प्यारा अज्ञान साहेबो ! तमारी मान्य करली प्रतिमाना कानमा तमोए गुरु

मुर्तिमदननी खातर कोइ अपशानो गोग धार्मीने जवाब आपोछो ते बेशरमाइ जणाय छे. एमज वळी प्रतिमानी तथा चरी आंगळनी प्रतिमानी पुजा करवानी धन तथा कुळनो क्षय थइ जवानो डर छे ते मुळ विचार प्रसिद्ध न थाय तेवा रीतना जवाब आपवा ते काइ सत्यधर्मना रीतमा नथी पण खरेखर एम थाय के मोक्षना कारण सिद्धांतमां ज्ञान, दर्शन, चारित्र ने तपने भळाव्या छे पण पुजा शुभ प्रतिमापुजन भळाव्यु नथी तोपण तमारी मति भ्रमनाने लीधे हिंसावृद्धी कर वानी खातर मजकुर त्रण प्रतिमा अमंगळीक ठरावो छो ने बाकीना एकवीसने मंगळीक ठरावो छो, ए परस्पर कल्पना भेद करी जे तिर्थंकर निर्वाण पदोच्या तेना नामने दरेक रीतना कृत्रिमागेथी एव लगाडो छो कारण नेमेश्वर बाळ ब्रह्मचारी कुमार अवस्थामा जोग साधन करी मोक्ष पधाया ते सर्व नर, देव तथा मुनीजनोना वंदनीक छे, ते सत्य छे अने तमारी कल्पनामा तो एम छे जे ज्यारे शारीक भोगना असमर्थ(पुत्र नथी माटे अमंगळीक गणोछो तो तमारा विचार प्रमाणे हवे सपुत्रपणे यथार्थ थाय ? हवे तेम नहीं छता ते वंदनीक सिद्धनी कु क्रिथी आसातना करोछो, तेथी एम जणाय छे के निर्लज अने बेशरमा जेवा जणाइ आवोछो वळी तेमज मल्लीनाथ तथा महावीरने अमंगळिक ठराववानो मुख्य हेतु पोताना मनमा अवळीज रीते समजे छे अने ते विगेना सामा उत्तर मागनारने जवाब आपो ते दुर्बीज रीतना छे माटे कुडी कल्पनाथी कर्त्रीम प्रतिमाना आधार लइने सत्यपुरुषो शिवगतनी हासी करवा धारोछो तेथी तमारो कुल व्यवहार कल्पित छे वळी छळभेदथी एम कहो छो जे एवो विद्वजनोने समजवा योग्य छे एम कहेलु ते पण कल्पनाथीज कहो छो

दिगंबर, वीसपंथी, तेरापंथी तथा स्वेतांबरने परस्पर विरुद्ध ते प्रश्नोत्तर

मतिमाग्राही दिगंबरना बे पक्ष खुल्ला जणाय छे ते बीसपंथी अने तेरापंथी ए बे छे तेमां बीसपंथीवाळाए प्रतिमा पुजनमां पान, फळ, फुल, बीज, हरीकाय विगेरे, तथा केशर, चंदन, धुप, दीप, आर्ती विगेरे घणा छकायना आरंभ करी पुजा कबुल राखेली छे अने तेरा पंथी दिगंबर कहे छे के, मजकुर रीते आरंभ करीने पुजा मान्य करनार बीसपंथीओ मिथ्यात्व दृष्टिओना आचरण करे छे माटे ते प्रतिमा पण कुलिंगमा गणवी ने ते कुलिंगनी प्रतिमा जाणी अमोए त्याग करेलो

छे मतलब के तिर्थंकर महाराज आप स्वशरीर सजम सहित विचरता ते वखते फळ, फुल, धुप, दीप विगेर व्यवहारीक भक्तिना भोगी नहोता तेमज आरभना योग्यथी पुजा एमने योग्य नहोती तेम छता तेओना नामनी प्रतिमाने वीसपथीओ अनेक आरभ करी पुजा करे छे, ते शास्त्र विरुद्ध छे

वळी अमो तेरापथी सत शास्त्रोना आधारथी प्रतिमा पुजन करीए छीए के जेम भगवत निर्वद्य पुजा सन्मान सहित हता अने दया मार्गनो बोध करता हता ते आधार राखी अमोए ते तिर्थंकरना नामथी प्रतिमा करी पुजीए छीए अने ते तिर्थंकरो निर्वद्य पुजाथी पुज्यमान हता, तेमज तेनी प्रतिमाने निर्वद्यथी पुजा करीए छीए सवद्य के सजम आराधनाना वखतमा ते तिर्थंकरे सर्व सावद्य कृत्य वोसी-रावेलो हतो ते निरारभी थइ विचरता हता तेवीज रीते प्रतिमा पुजननी स्थितीमा पण निरारभीपणु कल्पवु जोइए ने ते प्रमाणे निर्वद्य पुजा करता भव भ्रमणा मटे छे एम तेरापथी प्रतिमामतिओ मान्य कर छे अने प्रथमनी रीते वीसपथी मान्य करे छे तो केहेवानु के ए बेउनो मत प्रतिमा मानवानो छे तेम छता परस्पर भेदमां रमे छे. ने सावद्य निर्वद्य पुजापरुपे छे हवे मजकुर विवादीओने सुचना आपवानी के वितराग भापित जैन शास्त्रोमा देशव्रति श्रावकोने एक इंद्रीदळनी प्रतिमाना पुज-नविषे कांइपण विवेचन आपेलु नथी तेम छता विरुद्ध रीते प्रतिमा स्थापी सावद्य निर्वद्य पुजानी कल्पना करो छो ते तदन हासी भरेलु छे

हवे वितरागनी आज्ञा प्रमाणे चालनारा जैन दयाधर्मीओ सत्य शास्त्रना आधारथी प्रतिमानो तथा आरभ समारभनो त्याग करी निरापक्षपणे आर्यधर्मनु आराधन करी सवर निर्जरारुप करणी करे छे तो ए पुरुषो मजकुर विवादीओना सारंभी कृत्यनो निच्छेद करे छे ते सत्य शास्त्रना आधारथीज समजवु

वळी विशेप के वीसपथी, तेरापथी अने सेतांबर मुर्तीमान ए त्रण मत वाळाओना शास्त्रमा एम लखे छे के प्रतिमा देरामां या घरमा बेसाडवाने माटे पडते भावे खरीद एटले वेचाती लीधी पण ते ज्या सुधी पडतर रहे ने प्रतिष्टा तथा होम स्नान विगेरे सर्व पुजाविधी मढुर्त न जोया ने ते प्रतिमाना कानमा मत्र न समळाव्या होय न्या सुधी तेनामा तिर्थंकरपणानो गुण नथी तेमज अवंदनीक छे अने मजकुर विधी करीने पछी कानमा मत्र सभळावे त्यार पछी तिर्थंकर गुणसयुक्त पूजन वदनमान्य करवा योग्य छे एम कहे छे ते विफळोन जैन दयाधर्मी पूछे छे के अर प्यारा अज्ञान साहवो ! तमारी मान्य करली प्रतिमाना कानमा तमोए गुरु

मुर्तीमदननी खातर कोइ अपशानो गोरो गाल्नीने जवाव आपोछो ते मरवासमी जणाय छे एमज प्रण मतिमानी तथा वळी आगळनी मतिमानी पुजा करवामां धन तथा कुळना क्षय थइ जवानो डर छे ते मुळ विचार प्रसिद्ध न थवामां जेवी रीतना जवाब आपवा ते काइ सत्यधर्मनी रीतमा नथी पण परस्पर एम भाग्य के मोक्षना कारण सिद्धांतमा ज्ञान, दर्शन, चारित्र ने तपने भळाव्या छे पण मुक्ता शुभ मतिमापुजन भळाव्यु नथी तोपण तमारी मति भ्रमनाने मार्गे हिंसापुष्टी कर वानी खातर मजकुर प्रण प्रतिमा अमगळीक ठरावो छो ने बकातनी एकवीसने मगळीक ठरावा छा, ए परस्पर कल्पना भेद करी जे तिर्थंकर निर्वाण परोष्या तेना नामने दरक रीतना कुविचारोथी एव लगाडो छा कारणे नेमेश्वर बाळ ब्रह्मचारी कुमार अवस्थामा जोग साधन करी मोक्ष पधार्या ते सर्व नर, देव तथा मुनीजनोना वदनीक छे, ते सत्य छे अने तमारी कल्पनामा तो एम छे जे स्पष्ट हारीक भोगना असमर्थथी पुत्र नथा माटे अमगळीक गणोछो तो तमारा विचार प्रमाणे हवे सपुत्रपणे पयार्थी थाय ? इय तेम नहीं छता ते वन्दनीक सिद्धनी इम क्तिथी आसातना करोछो, तेथी एम जणाय छे के निर्लज अने बेशरमा जेवा जणाइ आवोछो वळी तेमज मल्लीनाथ तथा महावीरने अमगळिक ठरववानो मुख्य हेतु पोताना मनमा अवळीज रीते सभव छे अने ते विर्गेना सामा उत्तर मागनारने जवाब आपो ते दुर्जन रीतना छे माटे कुडी कल्पनाथी कचेरीम मतिमाना आधार लइने सत्यपुरुषो भिवगतनी हासी करवा धारोछो तेथी तमारो कुल व्यवहार कल्पित छे वळी छळमेदथी एम कहो छो जे एतो विद्वजनोने समजवा योग्य छे एम कहेछु ते पण कल्पनाथीज कहो छो

दिगबर, वीसपथी, तेरापथी तथा सेताबरने परस्पर विरुद्ध ते प्रश्नोत्तर

मतिमाग्राही दिगंवरना बे पक्ष खुल्ला जणाय छे ते वीसपंथी अने तेरापंथी ए बे छे तेमा वीसपथीवाळाए मतिमा पुजनमा पान, फळ, फुल, बीज, हरीकाय विगेरे तथा केशर, चदन, धुप, दीप, आर्ती विगेरे घणा छकायना आरंभ करी पुजा कबुल राखेली छे अने तेरा पंथी दिगंवर कहे छे के, मजकुर रीते आरंभ करीने पुजा मान्य करनार वीसपंथीओ मिथ्यात्व दृष्टिओना आचरण करे छे माटे ते मतिमा पण कुलिंगमा गणवी ने ते कुलिंगनी मतिमा माणी अमोए त्याग करेला

छे. मतलब के तिर्थंकर महाराज आप स्वशरीरे सजम सहित विचरता ते वखते फळ, फुल, धुप, दीप विगेरे व्यवहारीक भक्तिना भोगी नहोता तेमज आरभना योग्यथी पुजा एमने योग्य नहोती तेम छता तेओना नामनी प्रतिमाने वीसपथीओ अनेक आरभ करी पुजा करे छे, ते शास्त्र विरूद्ध छे

वळी अमो तेरापथी सत शास्त्रोना आधारथी प्रतिमा पुजन करीए छीए के जेम भगवत निर्वद्य पुजा सन्मान सहित हता अने दया मार्गनो बोध करता हता ते आधार राखी अमोए ते तिर्थंकरना नामथी प्रतिमा करी पुजीए छीए अने ते तिर्थंकरो निर्वद्य पुजाथी पुज्यमान हता, तेमज तेनी प्रतिमाने निर्वद्यथी पुजा करीए छीए सबब के सजम आराधनाना वखतमा ते तिर्थंकरे सर्व सावद्य कृत्य वोसी-रावेलो हतो ते निरारभी थइ विचरता हता तेवीज रीते प्रतिमा पुजननी स्थितीमा पण निरारभीपणु कळपवु जोइए ने ते प्रमाणे निर्वद्य पुजा करता भव भ्रमणा मटे छे एम तेरापथी प्रतिमामतिओ मान्य करे छे अने प्रथमनी रीते वीसपथी मान्य करे छे तो केहेवानु के ए बेउनो मत प्रतिमा मानवानो छे तेम छतां परस्पर भेदमा रमे छे ने सावद्य निर्वद्य पुजापरुपे छे. हवे मजकुर विवादीओने सुचना आपवानी के वितराग भाषित जैन शास्त्रोमा देशवृति श्रावकोने एक इंद्रीदळनी प्रतिमाना पुज-नविषे काइपण विवेचन आपेलु नथी तेम छता विरूद्ध रीते प्रतिमा स्थापी सावद्य निर्वद्य पुजानी कल्पना करो छो ते तदन हासी भरेलु छे

हवे वितरागनी आज्ञा प्रमाणे चालनारा जैन दयाधर्मीओ सत्य शास्त्रना आधारथी प्रतिमानो तथा आरभ समारभनो त्याग करी निरापक्षपणे आर्यधर्मनु आराधन करी सवर निर्जरारुप करणी कर छे तो ए पुरुषो मजकुर विवादीओना सारभी कृत्यनो निच्छेद करे छे ते सत्य शास्त्रना आधारथीज समजवु

वळी विशेप के वीसपथी, तेरापथी अने सेतावर मुर्तीमान ए त्रण मत-वाळाओना शास्त्रमा एम लखे छे के प्रतिमा देरामा या घरमा बेसाडवाने माटे पडते भावे खरीद एटले बेचाती लीधी पण ते ज्या सुधी पडतर रहे ने प्रतिष्टा तथा होम स्नान विगेरे सर्व पुजाविधी महुर्त न जोया ने ते प्रतिमाना कानमा मत्र न सभळाव्या होय त्या सूधी तेनामा तिर्थंकरपणानो गुण नथी तेमज अवदनीक छे अने मजकुर विधी करीने पछी कानमा मत्र सभळावे त्यार पछी तिर्थंकर गुणसयुक्त पूजन वदनमान्य करवा योग्य छे एम कहे छे ते विकळोने जैन दयाधर्मी पूछे छे के अरे प्यारा अज्ञान साहेबो ! तमारी मान्य करली प्रतिमाना कानमा तमोए गुरु

मुर्तीमिदनना खातर कोइ अपराना गोंगे गार्जीन जनाव आपोछो ते केरवानी जणाय छे केमके श्रण मतिमानी तथा वळी आगटनी मतिमानी पुजा करवानी धन तथा मुळनो क्षय थइ जवानो दर छे ते मुळ रिवार मसिद्ध न थान्या उक्त रीतना जवाब आपवा ते काइ सम्यग्धर्मनी रीतमा नथी पण खरेखर एम धारो क मोक्षना कारण सिद्धांतमा ज्ञान, दर्शन, चारित्र ने तपने भळाव्या छे पण पुजा शुभ मतिमापुजन भळाव्यु नथी तोपण तमारी मति भ्रमनानमांथे हिंसापूर्ण कर वानी खातर मजकुर श्रण मतिमा अमगळीक ठरावो छो ने बकातनी एकवीसने मगळीक ठरावो छो, ए परस्पर कल्पना भेद करी जे तिर्थकर निर्वाण पहोंच्या तेना नामन दरक रीतना कुविरागेथी पत्र लगाडो छो कारणे नमेश्वर बाळ ब्रह्मचारी कमार अवस्थामा जोग साधन करी मोक्ष पधार्या ते सर्व नर, देव तथा मुनीजनोना मन्नीक छे, ते सत्य छे अने तमारी कल्पनामा तो एम छे जे ज्यार शरीर भोगना असमरथी पुत्र नथी माटे अमगळीक गणोछो तो तमारा विचार ममाणे हवे सपुत्रपणे मयाथी थाय ? इय तेम नहीं छतां ते मन्नीक सिद्धनी कयु क्तिथी आसातना करोछो, तेथी एम जणाय छे के निर्लज्ज अने बेशरमा जेवा जणाइ आवोछो वळी तेमज मल्लीनाथ तथा महावीरने अमगळिक ठराववानो मुळ हतु पोताना मनमा अवळीज रीते समय छे अने ते विगना सामा उत्तर मागनारने जवाब आपो ते कुर्बीज रीतना छे माटे कुडी कल्पनाथी फक्त शरीर मतिमाना आधार लइने सत्यपुरुषो जिनगतनी हासी करवा धारोछो तेथी तमारो कुल व्यवहार कल्पित छे वळी छळभेदथी एम कहो छो जे पतो विद्वजनोने समजवा योग्य छ एम कहेवु ते पण कल्पनाथीज कहो छो

दिगवर, वीसपथी, तेरापथी तथा सेतावरने परस्पर विरुद्ध ते प्रश्नोत्तर

मतिमाग्राही दिगंबरना बे पक्ष सुद्धा जणाय छे ते वीसपथी अने तेरापथी ए बे छे तेमां वीसपंथीवाळाए मतिमा पुजनमा पान, फळ, फुल, बीज, हरीकाय विगेरे तथा केशर, चंदन, धुप, दीप, आर्ती विगेरे घणा छकायना आरंभ करी पुजा कबुल राखेली छे अने तेरा पंथी दिगवर कहे छे के, मजकुर रीते आरंभ करीने पुजा मान्य करनार वीसपथीओ मिथ्यात्व दृष्टिओना आचरण करे छे माटे ते मतिमा पण कुळिंगमा गणवी ने ते कुळिंगनी मतिमा जाणी अमोए त्याग करेलो

र्म छे अने वितराग भाषित मुळ सूत्रोमा तो पाचमनो प्रगट महिमा छे माटे जैन दयाधर्मीओने अवश्य पाचम पडीकमवी मान्य छे

हवे मिथ्या, स्वाभिमानी चोथ धर्मवाळाओने कहेवानु के वितरागना अमुल्य वचनने उलघन करी काळकाचार्यना ग्रथोने मान आपी सूत्र विरुद्ध चालो छो तो एम खातरी थाय छे के तमारो मत सूत्राधारे तो नथीज ने एम जणाय छे के कोइ सिद्धातद्वेषी बाळ तप करतो करतो तपागच्छनु स्थापन करी उत्सूत्र परुपला छे केमके पाचम पडीकमवाने माटे श्री समवायग सूत्रमा भगवते कह्यु छे के अषाढशुद पुनमनी सध्याना पडीकमणाथी माडीने पचाशमे दीवसे सवत्सरी एटले भादरवाशुद पचमी पडीकमवी वळी जो तीथी घटी होय तो ओगणपचाशमे दीवसे पडीकमवी पण एकावनमे दीवसे तो नहींज वळी कल्पसूत्रकर्त्ताए पण समवायग सूत्रनी अपेक्षा लइ सवत्सरी पडीकमणु करवु मान्य करलु छे ते पाठ " यत.आषाढचतुमासक प्रतिपद्दिनारभ्य सविंसतिरात्रेमासेव्यति क्रातेभगवान पर्युषणामकार्षित् तथैवगणद्वराप्यकार्षुरित्यादि "

भावार्थ—वीसदीन सहित एकमासे पडिकमणु करवु इतिभाव.

वळी मुळ सूत्रोमा पुनमने पाखी कहे छे ते माटे पडवाइ आपरवा कह्या छे. थी ओगणपचाश तथा पचाशमे दीने पचमी पडिकमवि सत्य छे तेमज कोइ कहेवते पडिकमणा वेळाए तथा सपुर्ण पंचमी होय तो पडिकमवी एम कहे छे तेनो उत्तर सवायग सूत्रमा घडीनो मेळसो भगवते सूचव्यो नथी पण ओगणपचाश तथा पचाशमे दीन पडिकमवा माटे कहेलु छे

हवे आ प्रश्नमा कोइ तस स्वभावी कोइक युक्ति करी कह के बे श्रावण आवे त्यार बीजा श्रावण मासमा पर्युपण करवा; सबब के, भादरवा मासनो मेळ करी सवत्सरी पडिकमवी एम कहे तेने कहेवानु के, श्री जैन सास्त्रने हिसाबे बे श्रावणमास कदी आवता नथी

तत्रयुगमध्येपौष युगांतेचाषाढएववर्द्धतेनान्ये मासास्तच्चिंदानिनतसम्यग्ज्ञायतेअतोदिनपचाशतैवपर्यूपणासगतेतिवृद्धा

एटले सिद्धातने न्याये पोषने अषाढ ए बे मास अधिक आवे छे पण तेनी गणतरीने माटे जैन टीपणु वर्तमानमा छे नहीं तो पण सिद्धातने आधार ओगणपचाश तथा पचाशमेदीने पाचम पडिकमवी ए सूत्रनो न्याय सत्य छे.

मत्र सभळाव्यों माटे ते तमारा शिष्य तरीके गणाय छे. न त्या तमारं तिर्थंकरना गुण याग्य करी छे तथी तमारा भक्तिप त तिर्थंकर पद पामी छे माट ते सर्व तमारी भक्ति वधार जणाय छ !!' त पण दृष्टांतना कानमा मत्र सभळावी निर्थ कर आपवानी ज्यारे तमाराभा शक्ति नथी त्यार विराग तमारां टीआ पण तमारा पितारुरी गुरुओ तथा तमो सर्व अन्याअन्य कानमा मत्र भणी भणीन सभळावो अने साभळो क जेथी तमोपण प मिथ्यात्व गुणठाणाना पत्थरनी पासाण प्रतिमानी रीते तिर्थंकर थइ जाशो ! पत्ल भाइनी पुजारी त्यकारज रह नही अर विरुद्ध नशे ! मुर्तीना माननाराओमा पण अनेक विरुद्धता प्रत्यक्ष देखाइ आव छे माटे सत्य सिद्धात सिवाय कल्पित ग्रथकारोनो एक मत क्याथी होय ? वळी मंत्र भण नाथी ते प्रतिमामा शु गुण प्रगट थया ते करो ?

भादरवा शुद पाचमविरुधी चोथ माने छे, ते प्रश्नोत्तर

पाषाणमतिओ पचमकाळमा सावद्याचार्योना करल ग्रथोना आधारथी एम कहे छे पे भादरवाशुद चोथ पडीकमे ते सत्य धर्मना आधार प्रमाणे वासनारा समजवा आ बोलवु ते केवळ असत्य छे

तेना जवाबमा एटलुज कहेवानु क अनादी काळथी मुळ सूत्रोना आधार प्रमाणे खातरी थाय छे के भादरवाशुद पाचमे साधु तथा श्रावक सवत्सरी पडीकमे छे एम सिद्धातोमा प्रत्यक्ष छे तेम छता पाषाणपथी पाचम विरुधी चोथ मान्य करे छे, ते मुळ शास्त्रोथी तो विरुद्ध छे पण अखिल जगतथी पण विरुद्ध छे सबब के अगियार महिनानी सर्व पाचमोने लोक लज्जाथी मानेछे अने ते एकज पाचम ते ओने द्वेपकारक थइ पडेली छे एवा कारणथी एम खातरी थाय छे के अनतज्ञानी तिर्थंकरना वाक्यथी मुळसूत्रो रचाया छे ते करता पण विशेष काळकाचार्य विगे रेना रचित ग्रथो प्रमाण करे छे ! कदापि जो सूत्रोनो आधार राखता होय तो पांचमनी चोथ केम थाय ? वळी पांचमनी चोथ थइ तो थइ पण एकज पाचम जे के सर्वथी मोटी पांचम जेने तमाम हिंदुवर्ण पण रुषीपचमी कहे छे ते पांचम विरुधी चोथ मानीने त्रेवीस पांचमो प्रमाणिक रही वळी एक चोथ पडीकमे छे तेमज कुल चोथ पडिकमी होत तो एम कहेवानु थात के पीळा वस्त्रधारी चोथीआ मतवाळाज छे एम एक जुदो वर्ग गणो शकात पण तेम न थता एक रुषि पचमीनो विरुद्ध करीने पोते चोथपाळे तेमज अन्यदर्शनीओने पळावबा महेनत ले छे, ते मिथ्या कु

र्म छे अने वितराग भापित मुळ सूत्रोमा तो पाचमनो प्रगट महिमा छे माटे जैन दयाधर्मीओने अवश्य पाचम पडीकमवी मान्य छे

हवे मिथ्या, स्वाभिमानी चोथ धर्मवाळाओने कहेवानु के वितरागना अमुल्य वचनने उलघन करी काळकाचार्यना ग्रथोने मान आपी सूत्र विरूद्ध चालो छो तो एम खातरी थाय छे के तमारो मत सूत्राधार तो नथीज ने एम जणाय छे के कोइ सिद्धातद्वेपी बाळ तप करतो करतो तपागच्छनु स्थापन करी उत्सूत्र परुप्या छे केमके पाचम पडीकमवाने माटे श्री समवायग सूत्रमा भगवते कह्यु छे के अपाढशुद पुनमनी सध्याना पडीकमणाथी माडीने पचाशमे दीवसे सवत्सरी एटले भादरवाशुद पचमी पडीकमवी वळी जो तीथी घटी होय तो ओगणपचाशमे दीवसे पडीकमवी पण एकावनमे दीवसे तो नहींज वळी कल्पसूत्रकर्त्ताए पण समवायग सूत्रनी अपेक्षा लइ सवत्सरी पडीकमणु करवु मान्य करलु छे ते पाठ " यत.आपाढचतुमासक प्रतिपद्दिनारभ्य सविसतिरात्रेमासेव्यति क्रातेभगवान पर्युपणामकार्पित् तथैवगणधराप्यकार्पुरित्यादि "

भावार्थ—वीसदीन सहित एकमासे पडिकमणु करवु इतिभाव.

वळी मुळ सूत्रोमा पुनमने पाखी कइ छे ते माटे पडवाइ आपखा कथा छे. तेथी ओगणपचाश तथा पचाशमे दीने पचमी पडिकमवि सत्य छे तेमज कोइ पखते पडिकमणा वेळाए तथा सपुर्ण पचमी होय तो पडिकमवी एम कहे छे तेनो उत्तर सवायग सूत्रमा घडीनो मेळतो भगवते सूचव्यो नथी पण ओगणपचाश तथा पचाशमे दीन पडिकमवा माटे कहेलु छे

हवे आ प्रश्नमा कोइ तत्व स्वभावी कोइक युक्ति करी कह के बे श्रावण आवे त्यार बीजा श्रावण मासमा पर्युपण करवा; समय के, भादरवा मासनो मेळ करी सवत्सरी पडिकमवी एम कहे तेने कहेवानु के, श्री जैन शासने हिसाबे बे श्रावणमास कदी आवता नथी

तत्रयुगमध्येपौप युगातेचापाढएववर्द्धतेनान्ये मासास्तच्चिदानिनत्सम्यग्ज्ञायतेअतोदिनपचाशतैवपर्यूपणासगतेतिव्रध्दा

एटले सिद्धातने न्याय पोषने अपाढ ए बे मास अधिक आवे छे पण तेनी गणतरीने माटे जैन टीपणु वर्तमानमा छे नहीं तो पण सिद्धातने आधार ओगणपचाश तथा पचाशमेदीने पाचम पडिकमवी ए सूत्रनो न्याय सत्य छे.

वळी सवत्सरी पछी दीन सीतेरमे कार्तीक चामासानो पाखी पडिकमणु क-रवु ए सत्य छे कारण के जैन शास्त्रमा ये अधीकमास कथा छे अने सितेर दी नतो प्राइक वचन कथा छे तमा एक तिथी तो अवश्य घट, तथा मस्ताव व पण घटे; तेथी सीतेर दिन छे ते व्यवहार यान सत्य छे परंतु तथी पहवाना साम्ये उगणोतेर अथवा अडसठ दिवस पण थाय छे माट गुरुन्यापे वर्तवु ए योग्य छे वळी सीतेर दीवस सवत्सरीना छे ते रपार्ती सामाचारीने माटे कथा छ तेमज म-थमना उगणपचाश तथा पचाश दीवस कथा छे ते चतुरमास स्थापवाने मस्ताव यार्चीने कथा छे ते सवत्सरीनी अगाउ पचासमे दिने एटले अषाढ शुद पुर्णीमा सीने दिने अवश्य अवग्रह याचवो पण उल्यघन करवु न कल्प वळी चोमासामां ये श्रावण मास आय ते जगत व्यवहारीक टीपणामा छे माटे बीजा श्रावण शुद पाचमे सवत्सरी पडिकमवी ए सिद्धातन हिसाबे भादरवोज गणाय छे अने वचला अधीक मासना कारणथी सवत्सरी पछी सोदीवसे कार्तीक शुद पुनम आवे छे ए लोकीक टीपणाने हिसाबे छे पण आसोशुद पुनम तेज जैन टीपणाने अनुसार कार्तीक शुद पुनम गणीने पडिकमणु करवु

प्रथमना बे अषाढ आवे त्या प्रथम अषाढ व्यतिक्राते बीजा अषाढ शुद पु नमे चातुरमास निरुपण करवु त्या द्रव्य, क्षेत्र, काळ, भाव जोइ सिद्धातानुसारे वर्तवु कदाच जेष्ठमास तथा प्रथम अषाढ मासमा वृषा रुतुना कारणथी रस्तामा अयत्ना होय तो शास्त्रानुसार स्थिर वास करवो योग्य छे ए सिद्धात प्रवचनना आस्तिक समज वो केमके अयत्ना पथने टाळवामाटे तो दरमासनो नियम नथी तेथी उपयोगे चारित्रना निर्वाहनी खातर विचरवा वितरागनी आज्ञा छे तोपण पितवस्त्रधारी कुलिंगो पोताना मस्तानी मदना पराधीनपणामा प्राचीन काळना सा चार्याचार्योने युग प्रधानो तरीके गणी तेना करला प्रकरणोनी भ्रमजाळ कुयुक्तिओ थी भरपुर बनावटोनु महात्म वधारवामाटे मोटी पाचम विरुद्ध करे छे ए काइ थोडो जुल्म नथी

वळी ए काळकाचार्ये पांचमने बदले चोथ पडिकमी ते जैनशास्त्रथी तो विरुद्ध छे सबब एकदा समयने विषे साध्वीनी सहाय करवानी खातर काळकाचार्ये राज विग्रहनो परिसह उत्पन्न थयो जाणी पोताना विचारमां थयु जे आ पाचमने बदले चोथनु पडिकमणु करवु ते काइ वितरागनी आज्ञा तो छे नहीं परंतु कार्या कारणने योगे चोथ पडिकमु छु पण आवती सालमा पाचम पडिकमशुं एवा इरा

दानी साथे चोथ पडिकमीने अन्यदेशे विहार करी गया एम तपामतीना ग्रथो जोता मालम पडे छे वळी ते चोथ पडिकमवानी अगाउ पाचम पडिकमता हता तेमज आवते वरसे पण पाचम पडिकमवी हती पण आवती सालमा मरण पामवाथी धारेलो विचार मनमा रह्यो ने तेना पछात रहेला शिष्योए गुरुनु माहात्म वधारवा माटे चोथनु पुछडु या नाडु पकडी राख्यु छे ने तेमज तेओने कोइ पुछे त्यारे क्रोधाकुळ थइ कहेजे अमारा वडिलोए शास्त्रानुसार वाजवी चोथ पडिकमी छे माटे तेमज अमो वरतीए छीए एम कहीने चोथ धर्मी पीळा वस्त्रधारीओ कुयुक्तिओ मेळवी ग्रथोनी शाखीओ आपे छे तेथी ओछी सज्ञावाळा अजाणा माणसो ते वेषधारीओनु मान वधारवानी खातर अंध थइने तेना कहवा प्रमाणे चाले छे परतु वितरागनी आज्ञा प्रमाणे चालनार जैन दयाधर्मीओ शास्त्रानुसारे पाचम पडिकमे छे ने द्रव्यलींगीआओनी कुयुक्तिनो श्रम वृथा गणे छे

चैत्यशब्दे प्रतिमा कहे छे ते असत्य छे पण चैत्यशब्दे ज्ञान छे

केटलाएक जडमतिओ तप्त स्वभावथी एम कहे छे जे सिद्धातोमा चैत्यशब्द छे माटे चैत्य एटले तिर्थंकरोनी प्रतिमा छे एम कहेनारानु वचन व्यर्थ छे सबब के चैत्यशब्दे ज्ञानधर साधुओनु नाम दरशायलु छे अर्थात चैत्य एटले आत्मज्ञान छे ते विषे वधारे विवेचन समकितसार भाग प्रथममा आपेलु छे तो पण विशेषार्थे कहवानु के सिद्धातअनुसार चैत्य एटले ज्ञानने पुष्टि करवानी खातर सारस्वतना सुत्रोथी तथा कविकल्पद्रुमना धातु पाठनी शाखि सहित तेमज हैम व्याकरणना पचमा अध्यायना प्रथम पदनी रीते चैत्य शब्दे ज्ञान एम सिद्ध करेलु छे ते नीचे मुजब

ज्ञानार्थस्यचैत्यशब्दस्यव्युत्पतिर्वभण्यते
चितीज्ञानेअयधातु कविकल्पद्रुमधातुपाठे
तकारांतचकारद्यधिकारेऽस्तितथ्याहि
चतेभूयाचेचितीज्ञानेचितञ्कचितीर्किं
स्मृतौइत्यादि ईकारानुबंध त्वाक्ययोरिण्निषेधार्थ
पश्चात्चितइतिस्थितेततोनाम्युपधात्क इति

वळी सवत्सरी पछी सीतेर दिन कार्तीक चोमासानी पाखी पडिकमणु ए खरु ए सत्य छे कारण के जैन शास्त्रामा जे अधीकमास कह्या छे अने सितेर दीनतो माइक वचन कह्या छ तेमा एक तिथी तो अवश्य घटे, तथा वस्तार एक घटे; तेथी सीतेर दिन छे ते व्यवहार वचन सत्य छे परतु तथी घटवाना थासे उगणोतेर अथवा अडसठ दिवस पण थाय छ माटे सुत्रन्याये वर्तवु ए योग्य छे वळी सीतेर दीवस सवत्सरीना छे ते कार्तीक सामाचारीने माटे कह्या छे तथा प्रथमना उगणपचास तथा पचास दीवस कह्या छ ते चतुरमास स्थापवाने अवकार्यार्थीने कह्या छे ते सवत्सरीनी अगाउ पचासमे दिन एटले अषाढ शुद पुर्णीमासीने दिन अवश्य अवग्रह याचवो पण उल्घन करवु न कल्प वळी चोमासामां बे श्रावण मास आव ते जगत व्यवहारीक टीपणामा छे माटे बीजा श्रावण सुद पाचम सवत्सरी पडिकमवी ए सिद्धातने हिसाबे भादरवोज गणाय छे अने एकज अधीक मासना कारणथी सवत्सरी पछी सोत्रदिवसे कार्तीक शुद पुनम आवे छे ए लौकीक टीपणाने हिसाबे छे पण आसोशुद पुनम तेज जैन टीपणाने अनुसारे कार्तीक शुद पुनम गणीने पडिकमणुं करवु

प्रथमना बे अषाढ आव त्या प्रथम अषाढ व्यतिक्राते बीजा अषाढ शुद पुनमे चातुरमास निरुपण करवु त्या द्रव्य, क्षेत्र, काळ, भाव जोइ सिद्धातानुसारे वर्तवु कदाच जेष्ठमास तथा प्रथम अषाढ मासमा वृषा रुतुना कारणथी रस्तामां अयत्ना होय तो शास्त्रानुसार स्थिर वास करवो योग्य छे ए सिद्धात प्रवचननो आस्तिक समज वो केमके अयत्ना पथने टाळवामाटे तो दरमासनो नियम नथी तेथी उपयोगे चारित्रना निर्वाहनी खातर विचरवा वितरागनी आज्ञा छे तोपण पितवस्त्रधारी कुलिंगो पोताना मस्तानी मदना पराधीनपणामा प्राचीन काळना सावद्याचार्योने युग प्रधानो सरीके गणी तेना करला प्रकरणोनी भ्रमजाळ कुयुक्तिओथी भरपुर बनावटोनु महात्म वधारवामाटे मोटी पाचम विरुद्ध करे छे ए कांइ थोडो जुलम नथी

वळी ए काळकाचार्ये पाचमने बदले चोथ पडिकमी ते जैनशास्त्रथी तो विरुद्ध छे सबब एकदा समयने विषे साध्वीनी सहाय करवानी खातर काळकाचार्ये राज विग्रहनो परिसह उत्पन्न थयो जाणी पोताना विचारमा थयुं जे आ पांचमने बदले चोथनु पडिकमणु करवुं ते कांइ वितरागनी आज्ञा तो छे नहीं परतु कार्यां कारणने योगे चोथ पडिकमु छु पण आवती सालमा पाचम पडिकमशुं एवा इरा

ने पहेला मिथ्यात्व गुणाठाणानी अपेक्षाए अज्ञान चैत्य एम सिद्ध थाय छे तेथी वितरागनी आज्ञा प्रमाणे चालनारा समकित पुरुषो तेने " गेय " एटले जाणीने, " हेय " एटले छाडीने " उपादान " एटले आदरवायोग्य पचपरमेष्टि चैत्य एटले ज्ञानचैत्य तेने गुणकारक जाणीने वदन पुजन निर्विघ्न रीते करता महा निर्जरा उपारजे एम जैन शास्त्रमा कहे छे

हवे एवा अमुल्य वाक्योथी भरपुर मुळसूत्रोना उपर आधार न राखता उल्टी रीते चालनारा मद बुद्धिवाळाने कहेवानु के निर्गुणी गुरु तथा देवनो त्याग करी सदगुणी गुरु तथा देव तथा धर्म तेने उपादन एटले ग्रहण करीने भवभ्रमणाना फेरायी छुटी जवाने सकाम निर्जरामा वळ, विर्य, पुरुषार्थ वापरो ? के जेथी सर्व सुकृत्योनी मुराद हासल थाय

विशेषार्थ पन्नवणाजी सूत्रना त्रेवीसमा पदमा कह्यु छे के, तिर्थंकरनाम कर्म उपार्जवानी सत्ता एकेंद्रि तिर्यंचने न होय सवब के तिर्थंकर नाम कर्म उपार्जवाना वीस स्थानक आर्यमनुष्यगति सिवाय बीजी गतिमा नथी ने प्रतिमा तो आरसपाहाण एकेंद्रितिर्यंच छे तो तेने आठ बोल उपार्जणा करवानी शक्ति क्यायी होय ते विषे भगवते कह्यु छे ते पाठ नीचे मुजब

नेरइआउएदेवाउएनेरइगईनामेदेवगइनामे
वेउव्वियसरीरनामेआहारगसरीरनामे
नेरइआणुपुव्विनामेतिथ्थयरनामएयाणि
पयाणिनबधई

भावार्थ—एकेंद्रि जीव नार्कीनु आयुष्य न बाधे तेमज देवतानु आयुष्य न बाधे वळी नर्कगतिनाम तथा देवगतिनाम न बाधे तेमज वैक्रय शरीरनाम आहारक शरीरनाम न बांधे तेमज नर्कमा जवाने माटे नर्कानु पुर्वीनाम तथा तिर्थंकरनाम कर्म एटला पद एकेंद्रि जातीना जीव न बाधे

ए पाठमा तथा तेनी वृतिमापण एकेंद्रि तिर्यंचने तिर्थंकरनाम कर्म उपारजवानी नास्ति बतावी छे सबब के ते एकेंद्रि पोताना कर्मनी बहुळता कापी तिर्थंकरपद उपारजन करवातो शक्तिवान न थया तोपण तमे तेना कानमा गुरुमत्र भणी फुक मारीने तमारी शक्तिए तेमा तिर्थंकर गुण प्रगट करवा धारोछो ए केवी

सारस्वतोक्तसूत्रेणकःप्रत्यय
तथाहेमव्याकरणपंचमाऽध्यायस्यप्रथमपादोक्त
नाम्युपान्त्यप्रीकृगृज्ञ्ञः कः अनेनापिसूत्रेणक
प्रत्ययः स्यात्ककारोगुणप्रतिषेधार्थ पश्चातचेतती
जानातिइतिचित ज्ञानवानित्यर्थ तस्यभाव
चैत्यज्ञानमित्यर्थे भावतद्धितोक्तयणप्रत्यय.

एम तेमना मान्य करेला इमाचार्य कृत व्याकरणमां शास्त्रोक्त रीते चैत्य श
ब्दने ज्ञान कहीए एम सिद्ध करी आपलु छे

वळी मुळ सिद्धांतामा तो चैत्यशब्दे ज्ञानधर, सजति एम खुल्ली रीते मा
लम पडेछे तेथी ज्ञान सहित साधुओने वदन नमन विगेर " जाव पुजवा स्वामि "
कहेवाय ते निवादक वचन छे एम छता पण पाषाणमति प्रतिमान चैत्य कह छे ते
केवी जडता छे ! केमजे ते एकेंद्रि पाषाणमा पहला मिथ्यात्व गुणठाणानी मवजताने
लीधे ज्ञानना तो अवश्य असभव छे पण एनी सत्तामा वे अज्ञान रहला छे ते अ
पेक्षाए तो एनो सर्वमुळ गुण मिथ्यात्व स्थानकमा मवर्चो छे हव तेवा एकेंद्रिपाषा
णने सलाटे टाकणे कहारीने पाच इंद्रीओना आकारमा मनुष्य जेवु रुप बनाव्यु
छे अने तेनो जन्मदातार सलाट छे तेणे पोतानी बुद्धि वापरीने एकेंद्रिपणामाथी
पाच इंद्रीओ सहित मनुष्यना जेवुं स्थुळ करी आप्यु तो ते (सलाट)ने मोटी श
क्तिनो धणी गणवो जोइए ? हवे एवी मुर्तीओने वेचाण लइने मोक्ष गएला ज्ञानधर
तिर्थकरोना नामथी मंडन कर छे माटे ते मुर्तीओ ज्ञानी पुरुष नहीं पण तेमना
नामना आधार सव (कळेवर) तो खरुं सवव के ज्ञानी तिर्थकरोनी साकार अव
स्थामा चैत्य एटले ज्ञान हतुं, तेतो तेमना आत्मगुणनी साथे लइने सिद्धपद पाम्या
हवे पछात रहेलु शरीर तो ज्ञानरहित थवेलुं हतुं ते ज्ञानरहितनो अर्थ तो अज्ञानस
हित होय एम समवे छे पण अजीवमां अज्ञानपणु नथी परंतु पाषाणनी मुर्तीमां
अज्ञान तो छे तेथी करीने ज्ञानचैत्य न कहेवाय पण अज्ञान चैत्य कहेवाय सबब
के जेनामा जेवो मुळ गुण होय तेमां तेवीज रीते सरधे तेने समकित द्रष्टी कहीए
द्रष्टात जेम सलाटे ते एकेंद्रिने पचेंद्रिना रुपमा घडीने तैयार करी पण तेमां पचें
द्रिनो गुण नहीं तोपण स्थुळ गणाय तेथी काइ आत्मानो कल्याण अर्थ सरे नहीं

फलपज्जवसाणपन्नत्ता

भावार्थ—यथारुप अहो भगवान ! श्रमण माहाण एटले समभावी ब्रह्मचारी साधुनी प्रयुपासना शेवा यथास्थित कर तो शु फळ उपराजे, अहो गौतम ! ज्ञानबोध साभळ्वा पामे अने साभळता ज्ञान वृद्धिनु फळ अने ज्ञान वृद्धिथी विज्ञान एटले जाणवा जोग, आन्रवा जोग अने छाडवा जोग ए गुण प्रगटे अने तेनु फळ तप गुण प्रगटे अने तेनु फळ वोदाण एटले पुर्वना कर्मोने खपाधे अने तेनु फळ जीवनमुक्त अकिरिए एटले चौदमु गुणस्थान प्रगटे अने तेनु फळसिद्ध एटले विदेहमुक्त ते पाच शरीरक्षय थाय अने अक्षय स्थित पद प्रगटे एम अनेक गुण प्रगट थवानो हेतु चैत्य एटले ज्ञानी, सद्गुणी ने सजमी साधुओनी शेवामा महा निरजरा अने महा कर्मक्षय थवानो अवश्य सभव छे माटे चैत्य शब्दे ज्ञान सिद्ध थाय छे आ मजकुर दस फळनी गाथा दया धर्मना बोधमा कही छे ते वेषधारीनी सोवत तजवा माटे कही छे तेज दसगुणनो पाठ अहींआ चैत्य एटले ज्ञानधर साधुनी उपासना करवा माटे तथा पाषाण पडिमानी सगतथी दुर थवा माटे कयु छे, परतु चैत्य शब्दे प्रतिमा करो छो तो तेनी सगते प्रथम काइ ज्ञान बोध साभळ्वापणु तो प्रगटे नहीं तो ते ज्ञान गुण प्रगट्या सिवाय पछात रहेला गुणोनु फळ क्याथी प्रगट थाय ? ने ते नहीं तो महा निरजराहतु शा आधारथी गणाय ? माटे विवेकीजनो हशे ते विचार करीने तेनो साराश समजशे वळी चैत्यज्ञानी साधुओनी सोवतथी सर्व आरभ घटवानो सभव थयो परतु चैत्य शब्दने प्रतिमा मानो छो तो तेनी सगत करता अज्ञानना वधाराथी महा आरंभ, महा परिग्रह ने दिर्घाभवनु फळ मळ्यु छे एम सिद्ध थाय छे

वळी मजकुर कहेला सदगुण चैत्य ज्ञानधर साधु सदा वदनीक छे कारण के जे जे आत्मिक वस्तुमा जे जे मुळ गुण छे ते ते सर्व निरजरा फळनी वृद्धि करता छे जेम तपनो गुण निरजरा हतु छे तो तेनो जेम जेम वधारो वधे तेम तेम वधारे निरजरा गुण करे छे सवत्र ते तपनो मुळ गुण कर्म बाळ्वानोज छे ते भगवतीजी सोळ्मा शतकना चोथा उदेसामा कयु छे के एक उपवासथी बीजे उपवासे सोगणु निरजरा फळ छे तेमज त्रण चार पाच विगेरे चढता चढता निरजरा वृद्धि थती जाय छे एमज आश्रव हिंसा घटती जाय छे तेज न्याये चैत्यज्ञानथी ज्ञानादिक गुण वृद्धि पामता जाय छे एम सिद्धात वचन छे परतु कोइ स्थळे सिद्धातोमा मुळ पाठमा एम नथी जे प्रतिमान वंदन करता अनत भवनी फासी

मुर्खाइ छे ! ! वळी कोइ शोइना कल्याणी मोह जगत वंदनीक थइ जाय तेम कांइ शास्त्रमा छे नहीं

वळी चैत्यशब्द देरासरने अहा भाळा मिश्रो ! मोटा भ्रमना सावे एकेन्द्रियां तिर्थंकरपद संकलित वेसीमा चैत्य एटल ज्ञानार्थात निग्रथोने कया छे, ते पाठ "चेईअ ठेनिज्जरठिवियावच्चअणिसियदसविहबहुविहकरइ"

भावार्थ—चैत्यसब्दे ज्ञानधर साधुनी वयावच निरजरा हतुए करवी कही छे तेनी विगत कुळ, गण ने सघ कुळ एटले एक गुरुना दिक्षित साधुओ, गण एटले एक मंडळमा जुदा जुदा गुरुना शिष्यो मळीने एक समुदायमा रही वीचरे ते अने सघ एटले सर्व साधुओ वितराग आज्ञाए वर्तनारा सरखी समाचारीए वरते छे ते ए सर्वन चैत्य कहीए वळी रायप्रश्रेणी सुत्रनी टीका करनार पण चैत्य शब्दनो भेद एमज खोल्येलो छे "चैत्यतुमशस्तमनोहतुत्वात" भावार्थ जेम भगवंत महावीरने दीठे मन प्रशस्त थाय तेमज कुळ, गणने सघने देखताज मन प्रशस्त थाय

प्रश्न व्याकरणनी टीका मध्य चैत्यशब्दे प्रतिमा लखी छ ते टीका करनारे पोतानी स्वइच्छाए प्रतिमा ठरावी एम सिद्ध थायछे मतलब के प्रश्नव्याकरणमां त्रीजा संवरद्वारना मुळ पाठमा कयु छे जे निरजरानो अर्थी कर्मक्षय थवानी अभिलाप धरतो छतो ज्ञान धरनार मुनीनी वयावच दस प्रकार करे परतु ते ठेकाणे चैत्य शब्दे प्रतीमानो काइपण देखाव दर्शावलो नथी तो प्रतिमा ठरावना माटे वृथा श्रम न करतां ज्ञान, दर्शन, चारित्र तथा तप धरनार चैत्यनु आराधन करो एम ज्ञानीओनी भलामण छे कारण के ज्ञानी साधुओनी सगत करवाथी महा निरजरा ते कर्मक्षय थाय छे एम भगवतीजीने सतक बीजे उद्देशे पाचमे अधीकार छे ते विचार करीने उपयोग करता समजण पडशे ते पाठ नीचे मुजब

तहारुवाणभंतेसमणंवामाहणंवापज्जुव्वा
समाणस्सर्किफलापज्जुवासणागोसवण
फलासेणभंतेसवणेकिंफलेनाणफलेनाणे
विन्नाणफलेविन्नाणेपच्चखाणफलेपच्चखाणे
सजमफलेसंजमेअणण्हयफले अ॰ तवफले
त॰ वोदाणफलेवो॰ अकिरियाअ॰ सिद्धि

केम थाय ? केमके जो तिर्थंकरना समोसरणमा बनेली हकीकत रीते करता होय तो कहेवानु के जे दीवस जे तिर्थंकर महाराजा आप विराजता ते तिर्थंकरना सर्व गुणे करीने शुशोभित हता ने तेमज तेओने वदन करनार भव्यजीवोनी श्रद्धामा पण तिर्थंकरना छता गुण स्तव्वानी विशुद्धता हती तेथी स्तुति करनारना तथा तिर्थंकरना छता गुण प्रत्यक्ष मळी आवे छे ते तो घटित छे परतु तेज आधार प्रमाणे प्रतिमाआगळ विधी करवा धारे छे तेमा निर्गुणछता सदगुणथी केवी रीते स्तवी शकाय ? माटे ए सर्व कल्पित छे

हवे आ ठेकाणे ग्रथकर्त्ताए प्रतिमा पुजननी विधीना फळनी विगत बतावी छे, ते सुज्ञजनो वाचीने मुळ शास्त्रोनी साथे सरखावशो तो परस्पर भेद मालम पडशे ते नीचेनी हकीकतथी जाणवु

प्रवचन सारोद्वार विगेरे ग्रथोमां सावद्याचार्यो कही गया छे के जे माणस प्रथम देरे जवानु मन करे त्या एक उपवासनु फळ थाय, दर्शने जवाने ऊठे तो छठनु फळ थाय, तेमज चाल्वा माटे पग उपाडे त्या अठ्ठमनु फळ थाय ने वगलु भरे त्या चार उपवासनु फळ थाय अने मार्गे चाले त्या पाच उपवासनु फळ थाय अने अर्धेपथे पहोचे त्यां पदर उपवासनु फळ थाय अने देराने देखे त्या मास खमणनु फळ थाय, ने देरानी नजदीक पहोंचे त्या छ मासी उपवासनु फळ थाय तेमज देराना पहेला द्वारमा पेसे त्या वर्षितपनु फळ थाय अने प्रदक्षिणा देता सो वर्षिउपवासनु फळ थाय, तेमज प्रतिमाने देखता हजार वर्षिना उपवासनु फळ थाय अने प्रतिमा उपर भाव राखी वदन करे तो अपार फळ थाय, अने प्रतिमानु पुजन करता करता तो तेथी चोगणु फळ थाय ते करता प्रतिमाने फुलनी माळा पहेरावता घणुज फळ थाय एम विधी करता छेवटमा वाजा, वार्जीत्र, नाटक, गीत, गायन, दीपमाळ विगेरे करता अनत फळ थाय छे एम एक जसोविजय नामनो कुकवि कहे छे के मारी एक जीभे ते फळना लाभनु वर्णन करी सकातु नथी एम प्रतिमाना आरण कारणमा अनता तपनो लाभ बताव्यो छे हवे एवी श्रद्धावाळा मुर्ख मित्रोने पुछवानु के अरे कल्पित ग्रथ फळना लेनाराओ ! तमारी कल्पित कल्पनाना विचार प्रमाणे एम ठर छे के पीळा वस्त्रवाळा वेषधारीओनो तो एक उपवासथी मांडीने पाषाणने दडवत करता फळ कह्यु तेटलुज एम समव थाय छे पण ते करतां पीळा तीडुम्बवाळा गृहस्थोने अनतो लाभ थयो जणाय छे सबब के ते शेवको वदन करता पुजा विगेर नायकानी पेठे नाच करी सर्व आश्रव कर

कपाय अन महा निरजरा उपराने एवी रीते न छता पाषाणमयीओ प्रतिमा वंद नमा निरजरा कल्प छ न ते कल्पनाने दृढ करवानी खातर ग्रथानी मेळवणी करी मोटा लाभ बतावी रच शल्य प्रक्षेप करला छे न तेना आधारथी तन, मन ने धनन अर्पण करी निर्थक श्रम ल छे तो कहवानु के तेवीज रीते निराग्भमा मन, वचन अने कायाना अशुभ जोगने रुधी स्थिरताभाव पाम्या होत तो तेओना वा छीतार्थ फळ थवाने बाधो कदी न रहत पण अज्ञानी मुर्खनरा सिद्धातोना आधा रथी विरुद्ध रीते कुतर्कोनो आधार लइ चैत्य, चैत्य एम्ल मतीमाने अर्थे जे जे सारंभथी कृत्य करीए ते सर्व निरजरा हतु छ एम कह छे तेमा पुछवानु क ते सावद्यनु कर्म तमने न लागे तो शु ते बाधेला कर्मनो बदलो प्रतिमा भोगवशे के केम ? पण सिद्धातनी रीते तो एम छे के जे करता तेज भुक्ता एम जाणीने सुज्ञ जनोए चैत्य एटले ज्ञान आधारथी निर्विघ कृत्यमा उपयोग चालवु

सावद्याचार्योना कृत्य ग्रथोने सिद्धात रीते मानी प्रतिमा पुजे ते प्रश्नोत्तर

सावद्याश्रवी कुबोधजनो एम कहे छे के प्राचीनकाळमा मोटा आचार्यो थया तेमणे कळीकाळना स्वभावे मतीवीसरजन थइ जवाना भयथी सर्व शास्त्रो कागळ तथा ताडपत्रोमा लख्या ते वखते प्रतीमा पुजन वीधीना शास्त्रो वीतरागना बोध करला ते पण मुळ सूत्रोने अनुसरीने लखेला छे ते शास्त्रोना आधारथी अमो प्रतिमा पुजनविधी करीए छीए एम कहे छे ते तद्दन वृथा छे

पण तेना जवाबमां कहेवानु के पे जे वितरागभाषित मुळ सूत्रो छे तेमातो देवताओना जीत व्यवहारनी पुजा विधी करेली छे वळी साधु तथा श्रावकोनी वैरागदशाथी करेली ज्ञान समकित सहित निरारभो क्रियानी विधीओ कहेली छे पण मनुष्यश्रावकोने प्रतिमापुजन वीषे कांइ विवेचन आपेलुं नथी ते अवश्य छे

पण पंचम काळना सावद्याचार्योए पोताना पेट गुजारानी खातर प्रतिमा पु-जननी विधीना ग्रथो रच्या छे तेमां एवो ठाठ मेळव्यो छे के जे वखते तिर्थंकर महाराज निरागतापणे समोसरणमां हयात बिराजमान हता तेनी समक्षमां यथायो ग्यरीते भव जीवोए विनयमार्ग साचव्यो हतो तेवीज रीते हालना पाषाणमतिओ प्रतिमानी आगळ कल्पित विधी करे छे ते वृथा छे सबब के ते प्रतिमा एकेंद्रिमां तिर्थंकरनी रीते गुण न छतां तेनी पुजा करनाराओज सकल्पे छे तो ते गुणकर्त्ता

केम थाय ? केमके जो तिर्थंकरना समोसरणमा वनेली हकीकत रीते करता होय तो कहेवानु के जे दीवस जे तिर्थंकर महाराजा आप विराजता ते तिर्थंकरना सर्व गुणे करीने शुशोभित हता ने तेमज तेओने वदन करनार भव्यजीवोनी श्रद्धामा पण तिर्थंकरना छता गुण स्तक्वानी विशुद्धता हती तेथी स्तुति करनारना तथा तिर्थंकरना छता गुण प्रत्यक्ष मळी आवे छे ते तो घटित छे परंतु तेज आधार प्रमाणे प्रतिमाआगळ विधी करवा धार छे तेमा निर्गुणछता सदगुणथी केवी रीते स्तवी शकाय ? माटे ए सर्व कल्पित छे

हवे आ ठेकाणे ग्रथकर्त्ताए प्रतिमा पुजननी विधीना फळनी विगत बतावी छे, ते सुज्ञजनो वाचीने मुळ शास्त्रोनी साथे सरखावशो तो परस्पर भेद मालम पडशे ते नीचेनी हकीकतथी जाणवु

प्रवचन सारोद्धार विगेरे ग्रथोमा सावद्याचार्यो कही गया छे के जे माणस प्रथम देरे जवानु मन करे त्या एक उपवासनु फळ थाय, दर्शने जवाने ऊठे तो छठ्ठनु फळ थाय, तेमज चालवा माटे पग उपाडे त्या अट्ठमनु फळ थाय ने डगलु भरे त्यां चार उपवासनु फळ थाय अने मार्गे चाले त्या पाच उपवासनु फळ थाय अने अर्धपथे पहोंचे त्या पदर उपवासनु फळ थाय अने देराने देखे त्या मास खमणनु फळ थाय, ने देरानी नजदीक पहोंचे त्यां छ मासी उपवासनु फळ थाय तेमज देराना पहेला द्वारमा पेसे त्या वर्षितपनु फळ थाय अने प्रदक्षिणा देता सो वर्षिउपवासनु फळ थाय, तेमज प्रतिमाने देखता हजार वर्षना उपवासनु फळ थाय अने प्रतिमा उपर भाव राखी वदन करे तो अपार फळ थाय, अने प्रतिमानु पुजन करता करता तो तेथी चोगणु फळ थाय ते करता प्रतिमाने फुलनी माळा पहेरावता घणुज फळ थाय एम विधी करता छेवटमा वाजा, वाजींत्र, नाटक, गीत, गायन, दीपमाळ विगेर करतां अनत फळ थाय छे एम एक जसोविजय नामनो कुकवि कहे छे के मारी एक जीभे ते फळना लाभनु वर्णन करी सकातु नथी एम प्रतिमाना आरण कारणमा अनता तदनो लाभ बताव्यो छे हवे पथी श्रद्धावाळा मुर्ख मित्रोने पुछवानु के अर कल्पित ग्रथ फळना लेनाराओ ! तमारी कल्पित कल्पनाना विचार प्रमाणे एम ठर छे के पीळा वस्त्रवाळा वेषधारीओनो तो एक उपवासथी मांडीने पापाणने दक्वृत करता फळ कह्यु तेटलुज एम समव थाय छे पण ते करता पीळा तीह्कवाळा गृहस्थोने अनतो लाभ थयो जणाय छे समज के ते शेवको वंदन करता पुजा विगेर नायकानी पठे नाच करी सर्व आश्रव कर

कषाय अने महा निरजरा उपराते एवी रीते न छता पाषाणमूर्तीओ प्रतिमा मंद
नमा निरजरा फळप छे न ते फ्लनाने दृढ करवानी खातर ग्रंथानी मतवर्णी कर्त
मोग लाभ बतावी उच्च शल्य प्रक्षेप करेला छे ने तेना आधारथी तन, मन ने
धनने अर्पण करी निर्थक श्रम ले छे तो महरानु के तेवीज रीते निरारभमा मन,
वचन अन कायाना अशुभ जोगने रुंधी स्थिरताभाव पाम्या हात तो तेओना था
छीतार्थ फळ थवान बाधो कदी न रहत पण अज्ञानी मुर्खजनो सिद्धांतोना आधा
रथी विरुद्ध रीते कुतर्कोनो आधार लइ चैत्य, चैत्य एटले प्रतीमान अर्थ जे जे
सारभथी कृत्य करीए ते सर्व निरजरा हेतु छे एम कहे छे तेमा पुछवानु के ते
सावधनु कर्म तमने न लागे तो शु ते बापेला कर्मनो बदला प्रतिमा भोगवशे के
केम ? पण सिद्धांतनी रीते तो एम छे के जे करता तेज भुक्ता एम जाणीने मुम
जनोए चैत्य एटले ज्ञान आधारथी निर्वद्य कृत्यमा उपयोगे चालवु

सावद्याचार्योना कृत्य ग्रंथोने सिद्धांत रीते मानी प्रतिमा पुजे ते प्रश्नोत्तर

सावद्याश्रवी कुबोधजनो एम कहे छे के प्राचीनकाळमा मोटा आचार्यो थया तेमणे कळीकाळना स्वभावे प्रतीवीसरजन थइ जवाना भयथी सर्व शास्त्रो कागळ तथा ताडपत्रोमा लख्या ते वखते प्रतीमा पुजन वीधीना शास्त्रो वीतरागना बोध करेला ते पण मुळ सूत्रोने अनुसरीने लखेला छे ते शास्त्रोना आधारथी अमो प्रतिमा पुजनविधी करीए छीए एम कहे छे ते तद्दन वृथा छे

पण तेना जवाबमां कहेवानु के जे जे वितरागभाषित मुळ सूत्रो छे तेमातो देवताओना जीत व्यवहारनी पुजा विधी करेली छे वळी साधु तथा श्रावकोनी वैरागदशाथी करेली ज्ञान समकित सहित निरारभो क्रियानी विधीओ कहेली छे पण मनुष्यश्रावकोने प्रतिमापुजन वीषे कांइ विवेचन आपेलुं नथी ते अवश्य छे

पण पंचम काळना सावद्याचार्योए पोताना पेट गुजारानी खातर प्रतिमा पु-जननी विधीना ग्रंथो रच्या छे तेमा एवो ठाठ मेळव्यो छे के जे वखते तिर्थंकर महाराज निरागतापणे समोसरणमां इयाव बिराजमान हता तेनी समक्षमां यथायो ग्यरीते भव जीवोए विनयमार्ग साचव्यो हतो तेवीज रीते हालना पाषाणमतिओ प्रतिमानी आगळ कल्पित विधी करे छे ते वृथा छे सबब के ते प्रतिमा एकेंद्रिया तिर्थंकरनी रीते गुण न छता तेनी पुजा करनाराओज संकल्पे छे तो ते गुणकर्ता

दसथी ओगणसाठ सुधीनो मध्यम अवग्र ठरावेलो छे हवे आ त्रण अवग्रह ठराव-वानी मतलब एम सभये छे के प्रतिमा वदन करवा आवनार स्त्रीपुरुषोए प्रतिमाथी ओछामा ओछा नव हाथ दुरथी ते छेवट साठ सुधी, दुरथी वदन करवु एम कहेलु छे

हवे देराना आद्यद्वारमा प्रवेश करताज पाच अभिगमन साचववा कहे छे तेमा पहेला बीजा अभिगमनमा सचित द्रव्य बहार मुकवु तेमा पोताने वापरवानी वस्तु, पान, फळ, फुल विगेरे तेमज असनादिक, चार अहार अदर लइ जवा नहीं परतु प्रतिमानी पुजा निमितना पान, फळ, फुल तथा नैवेदादिक सर्व सचित लइ जवामा जरा पण वाद नथी एम कहेछे वळी अचित द्रव्य बहार न मुकवु कहे छे

हवे सचित अचित ए बे अभिगमन सिवाय पछातना त्रण अभिगमन तेमा एक साडी, उत्तरासन तथा एकाग्र चित्त तथा अजळी बद्धप्रणाम ए त्रण रगमडपमा प्रवेश करती वेळा कहेला छे ए पाच अभिगमन सामान्य गृहस्थ पुरुषोने साचववा ठराव्या छे अने जो कोइ राजा पडिमाना दर्शन करवा आवे त्यारे ते पोताना खडग, छत्र, उपांन, मुगट, चम्मर, ए पाच राजचिन्ह बहार मुकीने देरे दर्शन क-रवा प्रवेश करे छे वळी मुख्य दर्शन करता प्रतिमा सामे नजर राखी एकाग्रचिते दर्शन करवा पछी जरा पाछा हठीने चैत्यवदन करवाने स्थानके बेसी अक्षतनो स्वस्तिक या नदावृत् करीने उपर फळ तथा नैवेद मुकी अग्रपुजा करवी कहेछे त्यार पछी पोताने पग मुकवानी जमीनने त्रण वखत पुजीने त्रण खमासमणा दइ श्रीजी निस्सही कहीने आलबन त्रिक साचवता चैत्यवदन करवु ते त्रण आलबन साचववानी विगत

वर्णनु आलबन, अर्थनु आलबन ने प्रतिमानु आलबन ए त्रण आलबन क-ह्या छे तेमा वर्णनु आलबन एटले चैत्यवदनना नमोथुण विगेर शुद्ध बोल्वा अर्थालबन एटले कथित सूत्रोनो अर्थ हृदयमा चितवन करता जवु प्रतिमा आल-बन ते प्रतिमा सामेज जोइने स्तवनो विगेर कहेवा एम प्रतिमापुजन विधीवार करता मोक्षनो लाभ उपार्जे छे एम ते ग्रथोमा प्रतिमानी सेवा भक्ति माटे गलदर चलवेला छे वळी ते भक्तिने माटे नावण धोवण पुजनविधीमा तथा पान, फळ, फुल, धुप, दीप नैवदादिक करवु तथा सवालखी, नवलखी पुष्पोनी विधीसहित आगी रचवी विगेर सचितादिकनो आरभ थाय छे, तेन प्रतिमानी पुजामा महा

छे माटे ते पीळा चादलावाळा पीळा वस्त्रधारी करता मार्ग भांगनार घणी अवगति छे अने संवर्गी पुजा विगेरे नथी करता तो बीजे पक्षने तुज स्थाम पामवानुं पण संभव थाय छे तो वस्त्रधारी करता रह्या तो खरा ! ! आ ठेकाणे कहेवानुं के पीळा वस्त्रवाळा ते मुर्ख शेरफोने आरंभनो अनंतो लाभ न बताव तो पातानी आ जीवीकामां दरक वावतनी दरकतो आवे माटे शेरफोना मन प्रसन्न करवानी मरा आरंभनुं फळ तेमने भळाव्युं परंतु जन्मअभाओनी आस उपदेश क्यायो !

वळी देरामां पेसतां त्रण वखत निस्सही कहे छे

तेमां पहेली निस्सही तो देराने पहेले द्वार ग्रह संबंधी कार्य त्याग करवा नीमित्ते कहे छे

बीजी निस्सही देराने मध्यद्वार रंगमंडपमां प्रवेश करता प्रतिमाना दर्शन माटे कहे छे

त्रीजी निस्सही प्रतिमापुजनने माटे सर्व अन्यकार्य त्याग करवानी कहेछे

तेमां पहेली निस्सही कही देरामां पेसी मुळ पडिमाना दर्शन करवानी विधी मा त्रण प्रदक्षिणा करी जीवरक्षाने माटे नीची द्रष्टी राखीने प्रणाम करवा कहेछे हवे ते प्रणामना भेद छे बे हाथ संपूट करी नमस्कार करवो ते अंजलीबंध प्रणाम, अर्धशरीर नमावी फर ते अर्धावनत प्रणाम बे हस्त, बे ढीचण ने मुस्तक ए पचांगभुमीए लगावी वंदन करे ते पंचांगप्रणाम कहेवाय ए त्रण प्रदक्षिणा ज्ञान, दर्शन ने चारित्रनी सूचवना करावनारी छे अने प्रतिमानी प्रदक्षिणा लेता रत्नत्रयनो लाभ थये छे अने प्रतिमाने त्रण प्रदक्षिणारुप भ्रमण करता संसार भ्रमण नाश पामे छे अने ते प्रमाणे प्रदक्षिणा देवाथी चार बाजुनी स्थापित प्रतिमानुं दर्शन थाय छे ते सर्व सफळ छे एम कहे छे

वळी मुळ प्रतिमाना सन्मुख द्वारथी निस्सही कहीने प्रतिमा सामी द्रष्टी मेळवी एक साडी उत्तरासन करी, बे हाथ माथे लगाडीने अंजलीबंध प्रणाम करी हृदयमां पडिमाना गुणनुं स्मरण करतां एकाग्रचित्ते रंगमंडपमां प्रवेश करवो तेमां पुरुषवर्गे प्रतिमानी दक्षिण दिशा तरफ रहीने अने स्त्री वर्गे उत्तर दिशा एटले डावी बाजुए उभा रहीने दर्शन करवा ए प्रमाणे प्रवचन सारोद्धार तथा श्राद्धविधी विगेरे ग्रंथोमां सावद्याचार्यो कथन करी गया छे

वळी त्यां दर्शन करवानी क्षेत्रमर्यादा बांधी छे तेमां जघन्य, मध्यम अने उत्कृष्ट एवा त्रण अवग्रह ठराव्या छे जघन्य अवग्रह नव हाथ, उत्कृष्ट साठ हाथ ने

जी निस्सहीनो स्वीकार कोण कर छे ? वळी त्रीजी निस्सहीमा पुजा निमिते घरना कार्य तजुछु एम कह छे तो शु ते प्रतिमाए एम जाण्यु जे आ विचारो शेवक हु एकेंद्रि पाषाणने माटे सर्व घर तजी वेठो छे एमतो ए असन्नी छे माटे कदी स्वीकारती नथी तो ए त्रण निस्सही पोते बोलीने पोते स्वीकार करोछो तो कहेवानु के पोते एकात स्थळे वेसीने पोतानीमेळे निस्सही का न कहे ? ने पोते बोलतो अबोल्नो आदेश मागे छे तो ए कल्पना केवी असभवीत छे ?

तिर्थंकरना समोसरणमां भवजीवो तिर्थंकरनी सन्मुख विनयपुर्वक प्रदक्षिणा दइने वदन करति वखते जीवरक्षाने माटे जमीन उपर द्रष्टी राखता ने ते समोसरणमा दयाधर्मनोज बोध थतो एम तो सुत्रसुत्रोमा छे ते सत्य छे पण प्रतिमावदन माटे पहेली निस्सहीनी वखते त्रण प्रदक्षिणा दइने जीवरक्षणनी खातर जमीन उपर द्रष्टि राखवी कबुल करे छे अने कोइ पुछे तेने एम कहे छे जे पुजा तथा दर्शननिमिते प्राणी हणाय ते हिंसामा न गणाय एवी अवळी श्रद्धा छे तो दयानी खातर नीची द्रष्टी राखवी तेपण देरानीज अदर राखवी ते तमारो मान्य करेलो निराश्रव तेमा आश्रव कयाथी थइ पडयो ? माटे तदन असत्य कल्पना जणाय छे

वळी त्रण जातना प्रणाम छे ते विधी तो तिर्थंकरादिक सर्व सजतिओने माटे छे मतलब के तेओमा छता गुण छे अने तेओने वदन करवा आवनार भवजीवो नम्रतापुर्वक तेओना नेत्रो आगळ करी बतावे छे ते वखते ते ज्ञानी पुरुषो समभावमां रहे छे पण विनय करनारने एम सकल्पे छे जे ए भवीआत्मा वनित अने श्रधावान छे एम तो समजे छे पण अरे दुर्ख जनो ! प्रतिमामा तेटला गुण न छतां तिर्थंकरादिकनी रीते त्रिविध वदन करवा धारोछो ने स्वीकारनार पण समोछो वळी ते प्रतिमाने तमे नमस्कार करतां तमारा उपर पुर्वोक्त कल्पना करवा अशक्त छे तेथी तमारी कल्पना नाहक छे

तिर्थंकरना समोसरणमा भवजीवो तिर्थंकरादिक सर्व सजतिओने त्रण प्रदक्षिणा करता रत्नत्रय प्रगट थाय छे ते भगवती सूत्रमा पण कह्यु छे ए वात तो सत्य छे सबब के तेओनी सगतथी ज्ञानादिक दश बोलनी सिद्धि थाय छे परंतु प्रतिमानी प्रदक्षिणा करता रत्नत्रय केवी रीते प्रगटे ? ते संभवीत वात छे वळी रगमडपमा पुरुषवर्गे प्रतिमानी जमणी बाजु रहीने तेम्ज स्त्रीवर्ग डावी बाजु रहीने दरशन करवा तेमा नव हाथथी साठ हाथ दुधी दुर रहेवु बताव्यु छे तो कहेवानु जे भगवतने समोसरणमां वदन करवा जनारा भगवंतथी " अदुसामत "

निर्जराहेतु गणवु कह छे एम सर्व विधाननुं मरूपण सारोद्धार विगेर ग्रंथोमां करेलु छे वळी ते ग्रंथोमां मतिमापुजन विगेर आरंभो करवानी कर्मी प्रवृत्ति मेळवली छे के ते आ स्थळे दाखल न करता थोडामांज सूचना आपवामां आवे छे जे पाषाणोपासक पीळा वस्त्रवाळा वेषधारीओए संसारमा लाखो रूपैया खरचवानी खातर देवळमा बेसारेल एकेंद्रिआर माणधारकनी बहुमानविधीपुर्वक स्नान, स्तव ने पुजनना मोटा ग्रंथो बांधेला छे अने तेमां थता आरंभनुं अर्थाकारीपणुं पोते माथे न धरावता मोटा लाभनी भ्रमणा बतावीने अमारा पुर्व संबंधी अज्ञान मि ग्रोने फसावी मार्या छे अर्थात मुद्रष्टिथी जुवतां हिंसा देखाय पण अनुबंधे दया थाय छे एम अवळ चक्रमा चडाव्या छे परंतु ते अविवेकीओने माणघातना फळ तो बीलकुल बताव्याज नथी अफसोस ! अफसोस ! ते बिचारा पामरनी शी गती थशे !

हवे मजकुर ग्रंथकर्त्ताओनी मतिमापुजननी विधीने मुळशास्त्रनी साथे सरखा-वता परस्पर भेद पडे छे ते नीचे मुजब

सत्य विनयनी विगत

कोइपण गृहस्थ हयात तिर्थंकर महाराजना समोसरणमा वंदन करवानी खा तर गयो त्या कोइ पण ठेकाणे एक उपवासथी माडी हजार वर्षनी तपस्यानु फळ बताव्यु नथी तेथी एम समजाय छे के ग्रंथकर्त्ताए भोळा प्राणीओने मतिमा बाब ताना लाभमां दोडावी मार्या छे

वळी तिर्थंकर तथा आचार्य तथा उपाध्याय तथा गुरुना चरणमांथी विनित शिष्यो अमुक कार्यने माटे गमन करे छे, त्यारे एम कहे जे अहो गुरु ! " आव सही " एटले अवश्य कार्यने माटे जाउछुं एम कही अगत्यना कार्यो गुरुनी आ-ज्ञाए करी पाछो हजुरमा आवे त्यारे करेलां कार्यनी सूचना आपवा माटे कहे जे अहो गुरु ! " निस्सही " एटले कार्य करी तमारा चरणमां आव्यो छु एमतो सि द्धांतोमा छे परंतु पाषाण मतिमा आगळ निस्सही कहे छे जे प्रह संबंधी कार्य मुकी आव्योछुं एम समजे छे तेमां पुछवानुं के देरामांथी घेर गया त्यारे आव सही कही मतिमानी आज्ञा मागीने संसार व्यवहार करवा गया हता के शुं ? के आ स्थळे निस्सही कहीने मतिमाने चेतवणी आपो छो

वळी बीजी निस्सही मतिमा दर्शनने माटे कहे छे तेमां एम थयु के हे देव ! तमारा माटे सर्व बीजा वेपार तजुछुं एम मतिमाने संभळावे छे तो पुछवानुं के बी

न कळपे तो सचित वस्तु खपज शानी ? तेवा हतुथी त्या पाच अभिगमन गृहस्थो योग्य रीते साचवीने वदन करी बोधनो लाभ लेता एवी रीते मत्यक्ष छता पाषाण मतिओ देरामा जता प्रथम पोताना उपभोगना सचितद्रव्य, पान, फळ, विगेरे सर्व देवळ बहार मुके छे तेने सचित जाणीने मुकता हशे के शुं ? तेमज प्रतिमानी खातर करवाने अनेक जातीना पान, फळ, नैवेद विगेरे सचित ने अचित वस्तुओ प्रतिमाने चडाववा या मुख आगळ धरवा लइ जाय छे, ते अचित जाणीने लइ जता हशे के शु ? पण कहेवानु के सचित चिजनु कारण जणातु नथी पण देरामा बेठला भोगी देवनी प्रतिमाने कोइ वस्तुनो त्याग नथी एतो जेम " बावो बेठो जपे ने जे आवे ते खपे " सबब के पुर्वोक्त रीते तिर्थंकरना समोसरणमा करला कृत्यो तथा देरामा करला कृत्योने परस्पर सरखावता त्यागी भोगीनो फारतो मत्यक्ष जणाय छे.

वळी देरापथीओ प्रथम दरशन करता प्रतिमा सामे एकाग्रभावे दरशन करीने पछी चैत्यवदनने ठामे जई साथीओ करी ते उपर फळ तथा नैवेद धर छे, ते सर्व कल्पना असत्य छे मतलब के समोसरणमा तिर्थंकरान्कि श्रमणने वदनवि-धीए एकाग्रभाव राखवो तेतो ठीक छे परतु साथीआ, फळ विगेरे नैवेद कोइए धर्या नथी ने ते भगवान नैवेद्यादिकना भोगी नथी तो आ तमारा कल्पित देवोनी आगळ नैवेद धरो छो तेवा भोगना अर्थीतो अन्यधर्मीओना देव छे या कुळ देवा-दिकनो विवरो शास्त्रोमा छे माटे ए भोगी देवोना भोगने जुल्म आरभ ससार व्यवहारनो हतो ते तमोए प्रतिमाने विसराग ठरावीने वितरागनी रीते भक्ति न करता उल्टी रीते तमारा ठाकोरजीना भोग मेळव्या माटे ए भोगीदेवोने अने तमो भक्तोने घटे तेवाज पीळा वस्त्रधारी वेरागीओए सर्वे मळी मान्य पुज्य करलु छे पण ते वितरागना नामथी प्रतिमा करीने भोगादिक धरो छो ते कदी न मळे ए सर्व अयोग्य छे परतु ए प्रतिमा आगळ नैवेद्यादिक धरी पछी आरमनी पुजा करो छो ते पण विरुद्ध छ अन त्यार पछी पग मुकवानी भुमी त्रण वखत जीव उगारवा माटे पुजो छो तेतो बहु सारु छ कमके एम करुणा राखशो तो तमने कोइ वखते समकितनो लाभ मळशे पण तमो प्रतिमा कारणे कोई प्राणी हणो त्या निरजरा बतावो छो अन अहींआ पुजवा तैयार थया माटे तमारा पेन्मातो दयाज जणाय छे परतु मात्र पोक जुठी मुको छो ए आश्चर्य भरलु छे ! हवे त्रण खमास-मण दइने श्रीजी निरसही कहे छे ते अणमळतु छे सबब के मुर्तीमा तेवा गुणनो

एटले अति वेगळा नहीं तेम अति डुकडा नहीं एम रहीने वन्दन करे छे माटे ...
तथा साठ हाथनी कल्पित गणतरी छ जेमने साक्षात तिर्थंकरादिक भगवान ...
नविधी मजकूर पाठनी रीते छ वळी साध्वीर्थी साडात्रण हस्त दुर रही पुरुषो
वदन करतु अन स्त्रीओए साध्वीने स्पर्श रहित यथायोग्य स्थळे रही दरशन करवा
मतलब के तिर्थंकरादिक साथ साध्वीओन गृहस्थाए संगमे न करवा, एम
मुळसूत्रमा प्रत्यक्ष छे परतु तमो प्रतिमामतिए प्रतिमार्थी नव तथा आठ हाथसुधी
दुर रही स्त्री पुरुषोए वन्दन कबूल राख्यु छे सबब के प्रतिमाने संकटो न थवा
माटे एम ठर्यु तेमां पुछवानु के तमो ते प्रतिमान नवरावता विगेरे पुजाविधी करता
आगळीर्थी प्रतिमाना कपाळमा चान्लो करवाने मसे धाको मारीलोछो ते तमारा
कहवा प्रमाणे तमने मोगी असातना न घणा भावनो लाभ मळे तेवु थयु ! तेमज
स्त्रीओए स्यात तिर्थंकरादिकने स्पर्शवदन करला नथी तेमज प्रतिमानो स्पर्श न
थवाना हतुए नव हस्तादिक क्षेत्र कल्प्यु छे, एम सिद्ध थयु तेमां पुछवानु
द्रौपदीनी पुजानी विधीमा सर्वंगे स्पर्श करी पुजा भळावो छो तो तमारा क्षेत्र
पवा प्रमाणे तो एम न थवु जोइए एम सिद्ध थाय छे वळी तमे प्रतिमाने तिर्थंक
रनी रीतेज मान्य करता हो, तो ते प्रतिमार्थी स्त्री पुरुषे दुर रहीने वदन
जाइए पण पुजा विगेरे न करवु जोइए वळी जो संकटो करवा धारो छो तो
प्रतिमा कोइ व्यवहारी भोगी देवोनी छे एम शास्त्रोक्तरीते खरेखर समजाय
तेथी तमारे स्पर्श करवापणु रहे छे

वळी देरामा प्रतिमा आगळ जती वखते पांच अभिगमन साचवे छे ते सर्व हवा
छे मतलब के स्याती तिर्थंकरादिक सर्व सजतीओ सचित्र द्रव्यना त्यागी हता
तेथी गृहस्थो वदन करवा जता कोइ पण सचित्र द्रव्य समोसरणमा लइ जता नहीं,
वळी समोसरणमा त्यागी पुरुषो गृहस्थो पासेथी अचित द्रव्य याचीने लेता एम
पण नहोतु

वळी तिर्थंकरादिक सर्व सजतीओने अर्थे भोगोपभोगादिकनी वस्तु कोइ पण
गृहस्थ तेना कल्पस्थळे लइ जता नहीं ए सत्य छे वळी समोसरणादिक गृहस्थो
वांदवा जतां सचितादिक पोताना भोगोपभोगनी वस्तुओ लइ जता हता तेने
समोसरणनी बहार यथायोग्य रीते मुकीने पछी समोसरणमां जता पण तिर्थंकरा
दिकनी भक्ति माटे कोइ पुजाआदिक नैवेद कांइपण लइ जता नहीं सबब के ते
महान पुरुषो गृहस्थनी आणेली वस्तुना त्यागी हता अचित वस्तुओ सामी लावेली

न कल्प तो सचित वस्तु खपेज शानी ? तेवा इतुर्धा त्या पाच अभिगमन गृहस्थो योग्य रीते साचवीने वदन करी बोधनो लाभ लेता एवी रीते प्रत्यक्ष छता पाषाण मतिओ देरामा जता प्रथम पोताना उपभोगना सचितद्रव्य, पान, फळ, विगेर सर्व देवळ बहार मुके छे तेने सचित जाणीने मुकता हशे के शु ? तेमज प्रतिमानी खातर करवाने अनेक जातीना पान, फळ, नैवेद्य विगेरे सचित ने अचित वस्तुओ प्रतिमाने चडाववा या मुख आगळ धरवा लइ जाय छे, ते अचित जाणीने लइ जता हशे के शु ? पण कहेवानु के सचित चिजनु कारण जणातु नथी पण देरामा वेठला भोगी देवनी प्रतिमाने कोइ वस्तुनो त्याग नथी एतो जेम " बावो बेठो जपे ने जे आपे ते खपे " सत्रत्र के पुर्वोक्त रीते तिर्थकरना समोसरणमा करला कृत्यो तथा देरामा करला कृत्योने परस्पर सरखावता त्यागी भोगीनो फरातरो प्रत्यक्ष जणाय छे

वळी देरापर्थीओ प्रथम दरशन करता प्रतिमा सामे एकाग्रभावे दरशन करीने पछी चैत्यवदनने ठामे जई साथीओ करी ते उपर फळ तथा नैवेद घर छे, ते सर्व कल्पना असत्य छे मतलब के समोसरणमा तिर्थकरादिक श्रमणने वदनविधीए एकाग्रभाव राखवो तेतो ठीक छे परतु साथीआ, फळ विगेरे नैवेद कोइए धर्या नथी ने ते भगवान नैवेद्यादिकना भोगी नथी तो आ तमारा कल्पित देवोनी आगळ नैवेद धरो छो तेवा भोगना अर्थीतो अन्यधर्मीओना देव छे या कुळ देवान्दिकनो विवरो शास्त्रोमां छे माटे ए भोगी देवोना भोगने जुल्म आरभ ससार व्यवहारनो इतो ते तमोए प्रतिमाने वितराग ठरावीने वितरागनी रीते भक्ति न करतां उलटी रीते तमारा ठाकोरजीना भोग मेळव्या माटे ए भोगीदेवोने अने तमो भक्तोने घटे तेवाज पीळा वस्त्रधारी वरागीओए सर्व मळी मान्य पुज्य करेलु छे पण ते वितरागना नामथी प्रतिमा करीने भोगादिक धरो छो ते करी न मळे ए सर्व अयोग्य छे परतु ए प्रतिमा आगळ नैवेद्यादिक धरी पछी आरभनी पुजा करो छो ते पण विरुद्ध छे अने त्यार पछी पग मुकवानी भुमी त्रण वखत जीव उगारवा माटे पुजो छो तेतो बहु सारु छे केमके एम करुणा राखशो तो तमने कोइ वखते समकितनो लाभ मळशे पण तमो प्रतिमा कारणे कोई प्राणी हणो त्या निरजरा धतावो छो अन अहींआ पुजवा तैयार थया माटे तमारा पेटमातो दयाज जणाय छे परतु मात्र पोक जुगी मुको छो ए आश्चर्य भरलु छे ! हवे त्रण खमासमण दइने श्रीजी निरसही कह छे ते अणमळतु छे सबब के मुर्तीमा तेवा गुणनो

समत्र नथी अने खमासमणा एटले अहो क्षमावंत ! श्रमण एटले सभार्या क्षमा मनना धरनार साधु !! हु इच्छु छु तमने वंदन करवा एम खमासमणनो अर्थ छ पण अहीआतो तेओ मतिमाने वदन करे छे. अने साधुना नामनो पाठ भणीने अ पराध माफ मागे ए केवी भुल छे ? कारण के साधु आगळ माफ मागवी एतो पा पोनिवारण करवानो रस्तो बतावी विनयमार्ग शीखवे पण पत्थिमा आगळ माफी कबुल करावे छे ते शु माफी शब्द चालशे ?

वळी खमासमणने अंते श्रण आलंबन साचववा चैत्यवंदन करे छ ते वृथा छे कारण के मतिमाने चैत्य ठरावीने अद्भुतागुण स्थापवा नमोथुण भणे छे तेमा नि र्वंधकर्णीवाळाने सभार छ, ने मान कल्प छ एकेंद्रिन ए केनो न्याय छे ? ए मति मानी माहे नमोथुणनी स्तुतिगुण मांहेलो एके गुण लागु पडतो नथी माटे आ स्थळे सूचववानु के द्रौपदी, सुरिआभ, गोशाळमति, जमाळमति, अभवी अने द्र व्यवेषधारी पाषाणमतिओ ए सर्व लौकिक नमोथुण भणनारनो मत बराबर आवी मळ्यो ए अवश्य छे वळी तेओ कहे छे जे पडिमानी माहे ते गुण नथी पण अ मारा भावमा सद्गुणनाज गुण स्तवीए छीए एम कबुल छे तो अरे अविवेकीओ ! आ निर्गुणनी सामे नाहक नमोथुण विगेर द्रव्य कल्पना करोछो ते अयोग्य छे अने श्रीजुं मतिमानु आलंबन लेवा कहे छे ते वृथा छे मतलब के एने आलंबने आत्म सिद्धता कदी नथी पण आत्माना आलंबनथी सिद्ध स्वरुप प्रगट थवानु छे ते मतिमातारक तथा तरवानी पण नथी वळी पाषाणमतिओ कहे छे जे ए सवि धीए मतिमानुं पुजन करतां आत्माने मोक्ष फळ मळे छे एम कहे ते वृथा छे म तलबके वितराग साक्षातने तो पान, फळ, फुल, नैवेदादिक पूजन काइ खपे नहीं तेथी तेमा कृत्यारंभ करनारने मंदबुद्धिवाळा ठराव्या छे माटे एवी पुजाथी तेमणे तो मोक्ष फळ निषध करेलुं छेज अने आ बिचारा जुल्मी कळीकाळमा उत्पन्न थ एल सावद्याचार्यो उदरपुर्णानी खातर अविवेकीओने वंचनमां फसाववा माटे विवेक विलास योग्यशास्त्र प्रवचन सारोद्धार, जीतकल्प, महाकल्प, वास्तुकशास्त्र, श्रेतल्जा कल्प, इत्यादिक अनेक ग्रंथो बाधीने तेमा गुरु भक्ति ने देव भक्तिना अनंता लाभ बतावी छकायना माणनो नाश करावे छे तेथी दक्षिण दिशाना पाताळ सिवाय बीजुं स्थानक मळ्यु मुश्केल छे हवे कहेवानु के मतिमा मंडननी खातर मुळ शा स्त्रोथी विरुद्ध रीते अनेक नवीन ग्रंथोना मबध बांधीने सावद्य धर्म चलाव्यो छे ने ते ग्रंथोने सूत्र करी मान छे तेमज सावद्याचार्योने गणधर तुल्य माने छे. ए मि

थ्यात्व रुढी समक्तिजनोने छांडवाजोग छे अने वितरागना निर्वद्य वचनने अनुसार गणधर महाराजे रचेला मुळ सूत्रो आदरवा योग्य छे सबब के ते मुळ सिद्धातोमा छकायनी रक्षा करवाने सुबोधधर्म निर्वद्यपुजन, निर्वद्ययज्ञ, निर्वद्ययात्रा, निर्वद्य तिर्था तथा निर्वद्यचैत्य तेमज निर्वद्य ने सदगुणी सर्वज्ञ तिर्थकरादिक श्रमण एटले समणामी वितरागनी आज्ञाए दयाधर्मनी उन्नती करनार साधुओ तेमनी क्रिया तथा तेमना उत्कृष्ट व्रतनो अधीकार ए सर्व निराश्रवी एटले आश्रवरहित करवाने मुळ-शास्त्रोमा भगवते सूचव्यु छे तेज प्रमाणे भव्यजीवा ज्ञान, दर्शन, चारित्र धर्मनी आराधना करी सिद्धिपद पाम्या हालमा महाविदेह आर्थी पामे छे तेमज अनाग-तकाळे पामशे एम मुळसुत्रोमा कहलु छे हवे ते सिवाय पुर्वाचार्योए रचेला ग्रथोमा जेटला निर्वद्य वाक्य छे तेनु ग्रहण करी सावद्य वाक्यनो त्याज करवो ए समकिती जनोनो विवेक छे द्रष्टात जेम डागर खाडीने चोखा काढी लइ फोतरानो त्याग करीए छीए तेमज सदगुण ग्रहण करीने दुरगुणी कृत्यनो त्याग करवो सबबके चोखानु भोजन करनार मनुष्य छे ते फोतरानु भक्ष करनार प्राणीओ मनुष्यना उत्तम वर्गथी जुदा तिर्यच छे तेवीज रीते चोखारुप निर्वद्य सिद्धात तथा दरेक ग्रथना नीर्वद्य वाक्य ते सर्व उत्तम भवजीवोने आदरवा योग्य छे ने सावद्य वा-क्यथी भरपुर प्रकरण ग्रथो फोतरारुप छे तेने मान्य करनारा अवीवेकीओने ती-र्यच गतीना प्राणीओना साधर्मी गणवामा आवे छे वळी केटलाएक सावद्याचार्यो भोळा मृगस्वभावी शेवकोने भ्रमणामा फसाववामाटे एम बोध कर छे के अर भो-ताजनो ! सवेगी साधुए तो वैरागदशार्थी सजम लइने नवकोटी छकायना आरभनो त्याग कर्यो छे तेथी छकायना आरंभसहीत पुजन करता सजममार्गनो लोप थाय तेवा हतुथी अमारे समसेगीनाम धरावनारने आरभथी पुजा न करवी मतलब के सीद्धातोमा ना कही छे पण साधुओनेआत्मानु साधन करवामाटे भावपुजा तो कही छे ते अमे करीए छीए

वळी श्रावकोए द्रव्यपुजा करवी अने द्रव्यपुजा करता अनेक रीतथी छकाय नो आरभ थाय छे ते नेर्खाती जुज हिंसा समजवी पण अनुबध महादयानु फळ छ माटे रती सशय न करवो ते सारभीपुजाथी तमो गृहस्थाने महा निरजरा ने महा लाभ थशे तेमज उत्कृष्टरस तिर्थकरगोत्र पण बाधशो एम शास्त्रमा कहलु छे एवी रीते छकायनो कुटो करवानी गृहस्थोने उश्केरणी करी छे एवा सावद्य वा क्यथी कुयुक्ति करी सिद्धातोने कलक चडाव छे ते मोटी विचारवाजेवी वात छे.

पण एवा असत्य वादीओने पुछवानु एटलुज के ते सावद्यपुजा करता संसारीओने संसारमा घुमी जवानो भय छ तो तेवीज हीसामय पुजाथी तेना शेवकाने संसार तरवानु बताव्यु छे ए केवु हासी भरलु छ ! ! तेना वीचार करताम मालम पडी आवशे

वळी कहेवानु के पीळा वेषधारीओ नवकोटीए पाच आश्रव करवाना पचखाण कर्या होय तो तेमणे शेवकोने हींसापुजननो बोध करवो कदी बन्ते नहीं मतलब के नवकार्टीमा तो एवा नीयम आव्या छे के पाच आश्रव शेवु नहीं, तेमज परपासे शेवरावु नहीं, तेमज कोइ अजाण शेवतो होय तेने भलुपण न जाणु हवे एवा नव कार्टीना नियमनो दरज्जो लइने पाच आश्रव पोते शेवे, शेवरावे ने शेवताने भलु जाणे छे, एम खुल्लु मालम पड छे माटे ते पाषाणपथी अथवारी ग थलोमीना बोधनो त्याग करी वितरागना निर्दोष बोधना आधारथी आत्मकल्याण करवा वियेकीओए जरुर राखवी

कवित

निर्तिको पक्ष अनितिका उपदेश कर
नितिछोड अनिति ग्रहीहे
अति अक्कल आपकी ठानत
अक्कल छोड मे अक्कल मोत लहीहे
सतसंगती छोड कुसगत ठानत
संगत साचकी वास नहीहे
कवीचंद कहे उनको मुख देखत
दोष लगे तनीष जु अहीहे

मुळसुत्रोथी ग्रथोमा केटलीएक विरुद्धता छे ते प्रश्नोत्तर

कटलाक भ्रमित मित्रो एम कहे छे जे तमाए बोत्राज सुत्र मान्य करला छे तेथी टीका, चुरण, भाष, निर्युक्ति, वृतिना भेदनी समजणविना मोक्ष मार्गनी तथा सत्य आचारनी खबर क्याथी पडे ? वळी पंचांगी आम्याविना वितरागना वचननी शैली तमो जाणता नथी अने अमेतो पचागी विगेर सर्व ग्रथो मान्य करीए छीए तेथी अमे खरखरो दयाधर्म समजीने सारी जगतमां प्रसिद्ध थएला छीए

इवे एवा मिथ्याभिमान करनारा जनोने कहवानु एटलुज के मुळसुत्रो तथा पचागी तथा ग्रथ कोप विगेर सर्व मान्य करवानो खुलासो प्रथम दयाधर्मनु विवेचन आपेलु छे तेमाज करी गएला छीए तेथी वधारे लखवा जरुर नथी पण अमोए सर्वने न्याय रीते सादृश्य करलु छे के मुळसूत्रोनो लोप न थाय तेमज आत्मकल्याणनो रस्तो निर्विधनपणे प्रगट थाय तेवु होय, ते पुस्तक सर्वने मानवु

परतु पचम काळना आचार्योए पोताना मतनी पुष्टि करवा माटे मुळसूत्रोथी उलटी रीते उतरी पडीने टीका, चुरण, भाप, निर्युक्तिमा सावद्य वाक्यनी रचना करी हिंसा स्थापन करलु, ते मिश्र ग्रथोने अमे सावद्यकर्णीरुपज जाणीए छीए वळी ते ग्रथोमा केटलीक जाणवा जोग वावतो जाणीने छांडीए छीए अने आदरवा योग्य निर्वद्य जाणीने आदरीए छीए माटे तेमा जेटली सत्यता होय छे तेनु अपमान करता नथी परतु असत्यतानुज अपमान करीए छीए ए खातरीपुर्वक समजवु

वळी अमो बत्रिश सूत्रनो खरा आधार राखी आज्ञाए दयाधर्मनो निश्चय कर्यो छे सबब के तेमा अन्य आचार्यनु मतभग नथी ते सत्य रीते निरापक्षीने निर्मळ छे परतु ते मुळसूत्रना पाठमा कोइ एक ठेकाणे मत पक्षवाळाए पोताना मतन पुष्टि करवानी खातर सासवती प्रतिमा तथा जर्मानी प्रतिमाना अधीकारमा सावद्य लखाणनो पाठ प्रक्षेप्यो होय तथा अर्थमा लखाण करी गया होयतो तेनो निश्चय करवा माट मुळशास्त्रनी पुरातनीक प्रतानो पाठ सरखावीए छीए, ते वखते लखनारनी कुयुक्ति द्रष्टिए मालुम पडी आवे छे ते पण यथायोग्यरीते निराकरण करवा योग्य छे सबब के वितराग भापित मुळसुत्रोमा जे जे निर्वद्य वाक्य छे, ते वचनने अनुसरीने करला ग्रथोमा पण एकजरुप देखावमा आवे छे ते सत्य शास्त्रनी रीते सत्य छे

वळी मतभेदथी सावद्यरीते कल्पित वचन प्रक्षेप्या होय तेना आग्र मध्य ने अंते जुदो जुदो अर्थ देखाइ आव छे तेने बत्रिश सूत्रनी साथे सरखावता केटला एक ग्रथोमा भेसाडाळ करला मालम पड छे तेनु द्रष्टात नीचे मुजब

कोइ सरोवरमा जळ थोड अन कादव घणोछे ते वखते मोटा रानमाथी एक बकरानु टोळु घणा तापथी परिश्रम पामीन जळ पीयाशाथी विरखना पामतु ते अल्प जळना सरोवरे आइ पहोंच्यु अन ते बकरा ते सरोवरन किनार हींचण ढाळीन चातुरीथी जळपान करवा लाग्या तेमाज वखतमा एक तृष्णा पराभवथी विरखना पा-

मेलां पाटो तेज सरोवरन किनारे आवीने जळ पीनारा बकराना टुपर्नी बचाव थइ गाथा मारी मळमुत्र करता करता सरोवरना आसरना पाणीमा प्रवत्न करीने कादवथी आसरला जळन डोळी नाख्यु वळी पोते जळ न पीता बकरांना टुके पण जळथी निराश कर्यु तेमज पोते ते जळकादवमा आळोटवा लाग्यो आ दृष्टांत नी रीते आ दुल्मी कळीकाळमा शुद्ध जैन धर्मरूप सरोवरमा मुळशास्त्ररूप अरू जळ तेना अनुभव लेनारा भवीमडळ सदा उत्साह साथे ज्ञान जळनु पान करता हता ते समे भस्म ग्रहरूप जगत्मा चार तथा सात दुकाळीरूप तापथी विटबना पामनारा सावद्याचार्यरूप पाटापटेल जैनदयाधर्मरूप सरोवरन किनार आवी पहाच्या ते वखतमा शुद्ध आहार पाणीनो जोग न मळता परिसहना भयथी मुळसूत्ररूप जळने गुप्त करीने कादवरूप ग्रथानो मवध रचता रचता मुळसुत्ररूप सावद्य वानय वापरीने ग्रथाना मवध बाध्या पछी पट गुजाराने माटे प्रतिमा स्थापी हिंसा धर्मरूप कादवमा आळोटी पडया वळी पोते जैनधर्मी एवु नाम राखीने भोळा प्राणीना मद्दळना सरदार थइ अहपदमा सदा मग्न थया हये बाळ बुद्धीजनोने कहवाडु के तेवा वेषधारीओए भेंसाडोळ करी सावद्य वाक्यथी रचीत ग्रथो अनेक कर्या छे, तेने मुळ शास्त्रनी रीते कम मनाय ?

शुद्ध सिद्धातनो बोध

निर्वद्य तथा सावद्य वाधनी सुचना नीचे मुजब छे ते मुळसुत्रो तथा ग्रथानी साक्षि साथे छे आवश्यक सुत्रमा एम कह्युछे के साधु आहारादिक निमित्ते गृहस्थने घेर जाय त्या अस्नादिक चार आतनो आहार जाचना करताना वखतमा निर्दोष भोजन जावे अने सदोष भोजन न वछे ते न्यायधर्मनी रीत छे

सकीए सहसागारे अणेसणाए पाणेसणाए
पाणभोयणाए बियभोयणाए हरियभोयणाए
पछाकम्मियाए पुराकम्मियाए अदिठहडाए
दगससठ्ठहडाए रयससठ्ठहडाए पारिसाड-
णियाए पारिठावणियाए उहासणभिखाए-
जउगमेण उपासणाए अपडिसुद्धपडिगाहीय
परिभूत्तवा जनपरिठविय तस्समिछामिदुकड

भावार्थ—स ग्रहस्यने तथा सजति पाताने अकल्पनीक आहारादीकनी शंका

डता छता लोलर्पी थको बळात्कार लीधु होय अ एखणाकरी न होय. पा विशेप एखणा करी न होय पा जीवहिंसा सहित भोजन लीधु होय वी सचित बीज सहित भोजन लीधु होय इ लीलोतरी सहीत भोजन लीधु होय प अहार वोहोर्या पछी कोइ दोप लगाडयो होय पु अहार वोहोर्या पहला काइ दोप लगाडयो होय अ नजरे नथी देखातु त्याथी आणी आपे ते लीधु होय ८ काचा पाणीनो स्पर्श करीने आपे ते लीधु होय २ सचित रजनो स्पर्श थएल लीधु होय पा वेचातु आपे ते लीधु होय पा आजो आहार लावीने नाखी दीधो होय च खावु थोडु ने नाखी देवु घणु एवो अहार लीधो होय ज जे उदगमनना दोप ते जे जे गृहस्थोथी लागे छे ते उ उत्पादनना दोप सहित भोजन लीधु होय तथा वारे वार गृहस्थ पासेथी वस्तु मागी लीधी होय अ ते जे जे पोताथकी लेप लागेला होय ते एवा अकल्पित अहार पाणी ५ लीधा होय ५ तेज भोगव्या होय ज जे नाखी देवा जोग होय ते नाखी न दीधा होय त ते पाप मारं निष्फळ थजो

एम सिद्धातोमा भगवते आराधीक साधुओने सजम जीवतव्य राखवानी खातर अकल्पनिक आहारादिकनी सख्त मनाइ करेली छे सबब के सचित आहार पाणी, पान, फळ, फुल विगेरे अने अकल्पनीक वस्तु सर्व त्यागवी कही छे तेमज सचित वस्तुनो सगटो करीने कोइ गृहस्थ वोहोरावे ते वस्तु न लेवी तो सचितादिक वस्तु तो क्यांथीज भोगवे ? एम आवसग सूत्रमा कह्युछे

इवे साधु धर्मना रक्षणने माटे सदोप भोजन मुनीजनोने त्यागवु कह्युछे तेमज बार व्रतधारी श्रावकने पण अहारादिक पदी लामवानी विधी विवेकसहित धारवा बतावी छे ज्यारे श्रावक बारमु व्रत आदर त्यारे शचितादिक अकल्पनीक अहार पाणी अफासुक, गुणवत मुनीओने वहोरावबाना पचखाण कर्या छ

बारमाव्रतनी विधी धार्यापछी तेना पाच अतिचार जाणे पण आदर नहीं ते निचे मुजब

सचितनीखेवणिया सचितपेहणिया, कालाइक्कमे परोवएसे मच्छरियाए तस्समिच्छामिदुक्कड

भावार्थ—सचित वस्तु उपर साधुने कल्प एवी वस्तु मुकी होय अथवा सचित वस्तुए करीने अचित वस्तु ढाकी होय तथा साधुन प्रति लामवानी वस्तुनो

फाळ वही गयो होय तेवी वस्तु तथा कोहाइ गएली वस्तु तथा वर्ण, गंध, रस, स्पर्श फरी जवाथी खोरी थइ गएली वस्तु वहोरावी होय, पोत आहारादिक वहो रावना योग्य सुझतो होय तेम छता परमाद फरीने बीजाने हुकम कर जे तमे वहो रावो एम कयु होय तथा साधुजीने प्रतिलाभीने अहंकार कर्यो होय ते सर्व बार निष्फळ थजो

एवी रीते आवसगसूत्रमा बारव्रतधारी श्रावको निर्दोष आहारादिक प्रतिला भवा उत्साह धरीने सावद्य आहारादिक रुडाव्रत धरनार मुनीने वहोरावाना नियम करला छे

वळी भगवती सूत्रमा गौतम स्वामीए करला प्रश्नना जवाबमा वीर भगवाने कयुछे जे अहो गौत्तम ! सजम मार्गनी आराधना करनार उत्तम सजतीने विवेकी गृहस्थे फासुक एखणीक सुझता आहारादिक वस्तु प्रतिलाभतो थको सजम सीच तव्यनो दातार समजवो

वळी दशवीकाळीक सूत्रना पाचमा अध्ययनना त्रीजा उद्देशानी चौदमी गाथा थकी चोवीसमी गाथा सूधीमा भगवते एम कयुछे क जे साधु आत्मार्थी होय ते छ कारणे भिक्षानेअर्थे गृहस्थने घेर गयो ते वखते कोइ अविवेकी गृहस्थ मुनीना आचारनो अजाण छे तेम छतां मुनीने आवता देखी भिक्षा आपवा उठवा धार छे ते वखते तेना हाथमा नीला, राता कमळ या कमुद जातीना कमळ, मग दती कमळ ए विगेर अनेक जातीना फुलो ने तोडतो थको उठीने साधुने आहारा दिक आपवा इच्छे तो ते वखते तेने साधु एम कहेजे अहो गृहस्थ ! नकल्पे मुजने एवा अकल्पनीक हाथे अहार लेवो

तेमज मजकुर कहेला फुलोने कोइ अविवेकी गृहस्थ पगे करीने गुणवान साधुने आहारादिक देवा धार तेने पण साधु एम कहे जे अहो गृहस्थ ! नकल्पे मुजने अकल्पनीकना हाथनो आहार

वळी उत्पल कमळादिकनी नाळ या कंद पळाशनो कंद तथा चंद्रविकाशी कमळनी नाळ एटले दांडली ए विगेरे फुल जातीना कट तथा दाडलीओने तथा शेरडीना काचा कटका तथा वनस्पतिमा पल्लव एटले कुपळ तथा टीसीओ तथा दरेक जातना वृक्षादिकना पान, तृणा, काची हरिकाय, कुणी चोळादिकनी काची फळीओ शेकया वगरनी, अनेक जातना सचेत काचा फळ तथा काची तलपापडी तेमज चोखानुं पीठ तथा निर्मळ, अन्य स्पर्शरहित काचु पाणी तथा नवशेकु एटले

फाइक तातु अने काइक ठडु पण बराबर अचित न थयु होय तो मिश्रपाणी तथा तल्वट तथा रसचळीत कोहाइ गएली वस्तु एटलावाना काचा लेवानो साधु त्याग कर छे तथा कोठ, विजोरा, दिकना फळ तथा पाढडासहित मुळा या तेनी काची टाढली तेमा अन्य शस्त्र मगम्यु नथी तेवी वस्तु मुनीने श्रीकर्ण वान्छता करवी नफल्पे तेमज फळनु चुरण तथा वेहाना फळ तथा रायणना फळ ए विगेरे अनेक जातनी सचित वस्तु अफासूक अणेसणीक गृहस्थ आपे तो पण जेनामा मुनीना गुण होय तेने न कळप वळी पोते साधु महा क्षुधा वेदनाना पराभवथी पण कोइ वखत अकल्पनीक वस्तु आयुष्यपर्यंतसुधी श्रीविधे श्रीविधे न वान्छे एम सिद्धातोमा भगवते कयु छे ए विगेर साधु धर्मना प्रयत्नने माटे वितरागभाषित मुळसूत्रोमा अनेक मंद, युक्ति, न्याय, हतु द्रष्टात बतावला छे पण कोइ ठेकाणे मुळसूत्रोना पाठोमा मजकुर कहेली अकल्पनीक वस्तुओनो भोगी आत्मार्थी भावी अपा ने ठरावेलो नथी

हवे पापाणमतिओने कहेवानु के तमारा कलीकाळना सावद्याचार्योए परिस्थी हायमान प्रणाम करीने जे जे ग्रथोनुं प्रवध बाध्यु छे तेमा तो वेह रखती धर्म बताव्यो छे एम सिद्ध थाय छे सबबके ते ग्रथोमा कार्याकारणोना गोटा घालीने अनेक जातना सावद्य वाक्योथी साधुओना व्रतोमां आहारादिकनी चुट मेली ज णाय छे ते दाखला नीचे मुजब

नीसीथसूत्रनी चुरणीमा लख्यु छे के साधुओने रस्ते चालता क्षुधानो पराभव थयो होय अथवा गृहस्थने घेरथी आहारादिकनो योग न मळ्यो तेथी क्षुधानो महट परिसह थयो जाणी केळ उपरथी केळा उतारी अवसर जोइने जतना सहित भोग ले तेनु कारण ए के साधपणु राखवानी खातर कार्याकारणे कल्पे छे एम कहे छ ते केवु असम छे ?

वळी साधुने कोइ वखते गृहस्थने घेरथी फासुक पाणी जाचता न मळे ते वखत तथा दुजे गाम विहार करता तपानो परिसह उपज्यो होय तो सजममा थती अवाधा एटले सजममां पहोंचती हरकतोनु निवारण करवाने माटे रस्तामा आवलु सचित पाणीनु स्थळ ते माहेथी पोतानु पात्र भरीने रक्षा विगेर वस्तुथी मिश्रित करीने जतना सहित ते पाणी पीए तो सजम जाय नहीं

एवी रीते क्षुधाना पराभवथी सचित फळ, फुल, पात्रादिक बीज हरिकायनु भाजन करवानी छुट मुकी तेमज तृपाना पराभवथी स्व तथा पर हस्ते फासुक

करीने जळ पीवानी छुट मुकी ए विगेर सानयानार्यना रचेला ग्रथामां अनेक स्तोनी विधीमा छुट मुकेली छे तेथी वितरागभाषित मुळसुत्रानी साथे ते ग्रंथोना वाक्यने सरखावता कोइ वाते सबध मळतो नथी इय ते विषे वधार विस्तार तो प्रथम भागमां आपेलु छे तेमाथी जोइ लेवु. पण जे ग्रथोमा साधुना आचार सबंधी छुटो राखी कार्याकारण वतावे छे ते तत्व शास्त्रोक्त रीते विरुद्ध छे सबब के सुयगडाग सुत्रना सातमा अध्ययननी बीजी काव्यमा कयु छे ते नीचे मुजब

एयाइकायाइपवेदिताइएएसुजाणेपडिलेहसायं
एएणकाएणयआयदडेएएसुयाविप्परियासुविंति २

भावार्थ—ए ए पुर्वोक्त प्रथिव्यादिक छजीवनी काय श्री तिर्थंकर देवे कही छे ए ए छ जीवनी काय छे ते शाता सुखने वाच्छे छ एटले सर्व जीव सुखा भिलाषी छे ए ए छकाय प्राणीआने जे अज्ञान प्राणीओ दडे छे तथा घात कर छे तथा दिर्घकाळ पीडा आपे तेने जे फळ थाय ते कहे छे ए हिंसा करनारो, जीव एज छकायने विषे फरी उपजीने विनास पामी परीभ्रमण कर एम कयु छे

वळी तेज अध्ययननी नवमी काव्यमा कयु छे ते नीचे मुजब

जाइंचवुड्ढिंचविणासयतेवीयाइअसजयआयदडे
अहाहुसेलोएअणजधम्मेबीयाइजेहिंसइआयसाए ९

भावार्थ—जा उत्पत्ति एटले मुळादिक कोमळ तथा वु व्रद्धि एटले शाखा प्रतिशाखादिक जे वनस्पति तेनो वि विनाश करतो होय तथा बी बीजादिक एटले तेना फळनो विनाश करतो होय तेने अ असजत एटले गृहस्थ अथवा परिव्राजक अन्यलिंगी अथवा द्रव्यसलिंगी आत्माना दडनार कहीए सबबके पोतानु शरीर राखवा माटे परप्राणीने हणे छे तेथी पोताना आत्मानो पण उपघात करेछे अ वळी जे आत्मसुखने हेते हरीकायने छेदे तेने लोकमाहे अनार्य, अधर्मी श्री तिर्थंकर गणधर कहे छे बी वळी प्राणीओ पोताना आत्मधर्मने अर्थे बीज आदे दइ, वनस्पति कायनेछेदे, छेदावे ने अनुमोदे एवो बोध करे तेने अनर्थ पाखंडी जाणवो

वळी जेवी अवस्थाए वर्तती वनस्पतिने छेदे तेवीज अवस्थामां छेदनारो पोते मर्ण पामे, ते दशमी काव्यथी जाणवु

चोया पदमा पाठातर " पोरसाय " एम पण कहेवाय छे भावार्थ ग वनसपतिकायना विनाश करनारा प्राणीओ धणा जन्मसुधी गर्भादिक अवस्थाने विषे वर्ततांज मर्ण पामशे एटले केटलाएक गर्भमा उपज्या पछी थोडाक दीवसे मर्ण पामशे, केटलाएक जन्म्या पछी मर्ण पामशे सु केटलाएक बोलता, सु ने केटलाएक अणवोलता मर्ण पामशे न अन्य मनुष्य सि एटले नानी चोटलीना धणी कुमारावस्थाए स्थितथका मर तथा जु जुवानवय तथा म मध्यमवय थ एटले वृधावस्थाए च मर्ण पामे आ आयुष्यना क्षयनेविषे. ५ एटले स्वकर्म भोगवता दीन, दुखी, भुख, तृषादिक सहन करता ते हिंसा करनार जीवो शरीर त्याग कर ने जेवु पाप कर तेवु भोगवे

हवे क्षुधा तृपादिकना परिसहथी डरी चालनारा पाषाणमतिओने कहेवानु जे तमारा ग्रंथोमा कार्या कारणे क्षुधा तृषादिक परिसह टाळवाने अकल्पनीक वस्तुनु वापरण करवा कह्योछो पण मुळसुत्रमा विरुद्ध कार्य करनारने अनार्य ठराव्या छे वळी तेने घणा जन्म मर्णनो लाभ बताव्यो छे तेथी तमारा हीतनी खातर सूचववानु के वितरागना मुळशास्त्रने अनुसारे चालीने आत्मासार्थकने माटे अकल्पनीक कार्योंथी दुर थवु ए श्रेष्ट छे वळी भगवते कह्युछे पे पाच आश्रव छांडे त्यार मुळ चारित्रना पाच संवर प्रगट थाय छे ते पाच सवरथी नवा कर्म रुधन करीने पुरातन कर्मोने तप कर्णाथी खपाववानो निरजरा गुण प्रगट थाय छे कमजे नव कोटीए पाच महाव्रत आदरवाना वखतमा " सव्वाउप्पाणाई वाइया-ओवेरमणजावपरीग्गहाओवेरमण " अर्थात सर्वथा प्राणाती पातादीक छठा रात्री भोजनना वेरमणा एटले छाडवासुधी आदर छे त्यार चारित्रियानो मुळगुण प्रगट थाय छे एम वितराग धर्मनी आज्ञा पाळनार जैन मुनीओ तो एज प्रमाणे प्राणा-ससुधी पाळता विचर छे

परतु तमो पीळावस्त्रवाळा वेषधारीओ छ मुळ व्रतमा कार्याकारण कल्पीने प्राणवध विगेरे रात्रि भोजन सुधीनी छुट राखी छे तो शु वेषव्रत आदरयापणु थयु छे के केम ? वळी साधुओना सर्व मुळव्रतमा कोइ कार्याकारणथी छुट ठरावशो तो " सव्वाउपाणाइवाइयाउवेरमण " विगेरना पाठमां " थुलाउपा० " एम संभव थशे तेथी साधु श्रावकपणाना व्रतामा निरविशेष गणाशे माटे तमारा वास्ते तेम सिद्ध थायज छे तेवा कार्याकारणो बतावयाथी साधु कोण कहछे ने काण कहेशे तेनो जरा विचार तो करो ? वळी कहेवानु के कविमनोना करेला

ग्रथोना आधारपरथी स्पष्ट खातरी थाय छ के पाळा वस्त्रना धारणनाराओए जेवे मुळ्यव्रतो लीघा छे, तेमा दरेक रीते कायाकारणथी छुट बताय छे माटे तेमना मतथी एमज जणाय छे वळी देशव्रती श्रावकना व्रतामा जेम अणछुटक छ छींडी नो आगार राखेलो छे, ते तो गृहस्थाश्रममा रही बनतो लाभ मेळवी शकाय तेम करवा धारलु छे परतु साधुपणानु नाम पाडी व्रत लीधा कहे छे तेमज अणछुटक आगार बताये छे तेथी एम सभवे छ के साधु क्रियाना अनुसार तेने साधु न कहेवा जोइए, तेमज श्रावकपणामातो ते छ नहीं माटे तेने पहला गुणस्थानना धणी उत्कृष्ट रीते पुरपुरा कही शकाय

वळी कवी कल्पनाना ग्रथाधारथी केटलाएक भ्रमित जनो कहे छे के वृद्ध, तपसी तथा रोगीने माटे तेमज नव दिक्षित शिष्यने माटे तथा आचार्य उपाध्याय तथा गच्छने माटे कोइ कार्याकारणे अल्पनीक एटले साधुओने न खप एवी वस्तु अवसर जोइने लेवायतो वितरागनी आज्ञा उलघी न कहवाय एम तमारा ग्रंथो शाखी पुर छे पण ए तदन मुळ्सूत्रोथी विरुद्ध समजवु कारण के जे अकल्पनीक वस्तुथी सजम सहित पोतानो आत्मधर्म नाश पामी जाय माटे मुळ व्रत आदर वामा कोइ कारणनी भगवते छुट बतावी नथी परतु शरीर धर्मना रागीओने छुट वगर छुट कांइ कही शकाय नहीं

वितरागदेवे आत्मिक धर्मसाधन करनारा मुनीजनोने अढार बोल अखंड पा ळवानी आज्ञा बतावी छे ते दशविकाळीक सुत्रना छठ्ठा अध्ययननी पहेली गाथाथी सातमी गाथासुधीमां एम कहुछे जे कोइ राजा इश्वर सेनाधीपतिआदि प्रधान तथा ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य विगेर केटलाएक पुरुषो गाम, नगर, पुर, पाटण विगेरेना रहेनारा छे तेओना नगरना परिभ्रमणमां काइवखते वितराग आज्ञाना पाळनार म हाव्रतधारी आचार्यो पधार्या ते वखते मजकुर जणाए पुछा करेली के अहो भिक्षु ! तमारा साधपणाना आचारनो केवो समोह छे ? वळी तमो सर्व साधुओने माटे तमारा धर्मोमा व्रतो पाळवानी एक रीत छे के कांइ परस्पर भेद छे ?

हवे मजकुर रीते पुछनार राजादिक गृहस्थोना जवाबमां निश्चळ चित्तना धणी साधु दमत इंद्रि सर्व प्राणीने सुखनो करनार मारोषण ग्रहण शिक्षाए करीने न्या यधर्मनी रीते उत्तर आपे छे

अहा राजादिक गृहस्था ! अमारा सर्व साधुओना आचार विचार तो पुर्वमा लागेला कर्म वेरीनो नाश करनार छ तेमज सर्व प्राणीओनी रक्षा करनार छे तेवो

आचार अन्यधर्ममा नथी वळी ए आचार कायर ने राक पुरुषोने आचरता दुष्कर छे एवो आचार अमारा धर्मनी शुद्ध समाचारीना सर्व साधुओने सरखो ग्रहण करवा योग्य छे ते नव वर्षनी उम्मरे दिक्षित आदे क्रोड पुर्वना दिक्षित सुधीने, तेमज वृद्ध अवस्थाना धणीने तथा गिलान एटले रोगी साधुने तेमज तपसी साधुने ते सर्वने देशथी तथा सर्वथी अतिचार रहित पाळवु एम छठ्ठा अध्ययननी सातमी गाथासुधी सुचना आपी छे ते आचार पाळवानी विधीना अढार बोलनी आठमी गाथा नीचे मुजब

वयछक्कंकायछक्कंअकप्पोगिहिभायण
पलियकनिसिझाएसिणाणसोभवज्जण ८

भावार्थ—व जीवहिंसा १, मृषावाद २, अदत्तादान ३, मैथुन ४, परिग्रह ५, रात्रीभोजन ६ ए छ बोल जाव जीवसुधी त्रिविधे त्रिविधे त्याग कर तेमज का पृथ्वी १, पाणी २, तेउ ३, वाउ ४, वनस्पति ५, त्रुप ६, ए छकायना प्राणने पोताना प्राणसमान जाणी जाव जीव सुधी न हणे, न हणावे ने हणताने रुडु न जाणे ए वार गुण थया अ तेरमा बोलमा सर्वथा अकल्पनीक एटले साधुओने न खपे एवी आहारादिक कोइ पण चीज मर्णातसुधी न ले १३ गी गृहस्थोना वासणमा भोजन करवु न कल्पे १४, ५ गृहस्थने सुवा बेसवाना पल्ग, ढोलीआ विगेर ते सर्व साधुओने वावरवा न कल्पे १५ नि गृहस्थने आगणे यथा शक्तिए कदी साधु बेसे नहीं १६ सि सर्व साधुओए शरीरनी सस्रुका माटे स्नान मजन न करवुं १७ सो सर्व साधुओए शरीरउपर कोइ जाते ममत्व धरीने शोभा शणगार न करवो १८

ए अढार अवगुण छाडे त्यार अढार गुण प्रगट थाय छे ते सर्व साधुओने सरखीज रीते पाळवा कह्या छे परतु तेमा लघु या वृद्धने माटे कार्याकारण बसापलु नथी माटे एवा निरापक्ष शास्त्रो आत्म कल्याण हित कारकना वाक्योने एक तरफ राखीने प्रथाधारथी वधी थावतोनी छुट राखी बतावो छो तो तेने मुळ शास्त्रोनी रीते केम मनाय ? वळी जैन धर्ममा पुरवापरथी अयाग्य रीते विरुद्धता था लेली नथी तेमज चालशे पण नहीं ते सबवथी तमारा कृत्यथी एम समय छे के तमे खरखर जैन मुनीना प्रतिपक्षी छो ने वितराग भापित मुळ शास्त्रोथी विरुद्ध प्रथाधारी प्रथल प्राणी उत्पन्न थया छो सबव क ज्या त्याग वैराग विगेर आ

प्रयोना आधारपरथी स्पष्ट खातरी थाय छे के पांच महाव्रतना धरनाराओए जेवे मुळव्रतो लीधा छे, तेमा तरफ रीत कार्याकारणथी छुट बताय छे माटे तेमना मतथी एमज जणाय छे वळी देशवृती श्रावकना व्रतोमा जेम अणछुटक छ छींडी नो आगार राखेलो छे, ते तो गृहस्थाश्रममा रही धनतो लाभ मेळवी शकाय तेम करवा धारलु छे परतु साधुपणानु नाम पाडी व्रत लीधा बद छे तेमज अणछुटक आगार बतावे छे तेथी एम समये छे के साधु क्रियाना अनुसार तेने साधु न कहेवा जोइए, तेमज श्रावकपणामातो ते छे नहीं माटे तेन पहला गुणस्थानना धणी उत्कृष्ट रीते पुरपुरा कही शकाय

वळी कवी कल्पनाना ग्रंथाधारथी केटलाएक भ्रमित जनो कहे छे के वृद्ध, तपसी तथा रोगीन माटे तेमज नव दिक्षित शिष्यने माटे तथा आचार्य उपाध्याय तथा गच्छने माटे कोइ कार्याकारणे अल्पनीक एटले साधुओने न खपे एवी वस्तु अवसर जोइने लेवायतो वितरागनी आज्ञा उलघी न कहेवाय एम तमारा ग्रंथो शाक्षी पुर छे पण ए तद्दन मुळसूत्रोथी विरुद्ध समजवु कारण के जे अकल्पनीक वस्तुथी सजम सहित पोतानो आत्मधर्म नाश पामी जाय माटे मुळ व्रत आदर वामां कोइ कारणनी भगवते छुट बतावी नथी परतु शरीर धर्मना रागीओने छुट वगर छुट कांइ कही शकाय नहीं

वितरागदेवे आत्मिक धर्मसाधन करनारा मुनीजनोने अढार बोल अखंड पा ळवानी आज्ञा बतावी छे ते दशविकाळीक सुत्रना छठा अध्ययननी पहली गाथाथी सातमी गाथासुधीमा एम कहुछे के कोइ राजा इश्वर सेनाधीपतिआदि प्रधान तथा ब्राह्मण, क्षत्री, वैश्य विगेरे केटलाएक पुरुषो गाम, नगर, पुर, पाटण विगेरेना रहेनारा छे तेओना नगरना परिभ्रममा कोइवखते वितराग आज्ञाना पाळनार म हाव्रतधारी आचार्यो पधार्या ते वखते मजकुर जणाए पुछा करली के अहो भिखु ! तमारा साधपणाना आचारनो केवो समोह छे ? वळी तमो सर्व साधुओने माटे तमारा धर्मोमां व्रतो पाळवानी एक रीत छे के कांइ परस्पर भेद छे ?

इवे मजकुर रीते पुछनार राजादिक गृहस्थोना जवाबमां निमळ चित्तना धणी साधु दमत इंद्रि सर्व प्राणीन सुखनो करनार माशेषण ग्रहण शिक्षाए करीने न्याय धर्मनी रीते उत्तर आपे छे

अहो राजादिक गृहस्था ! अमारा सर्व साधुओना आचार विचार तो पुर्वमा लागेला कर्म वेरीनो नाश करनार छे तेमज सर्व प्राणीओनी रक्षा करनार छे तेथी

वेलु घणु विवेचन आपता ग्रथनु वधारापणु थइ जवाना सभवथी अहींआ नामनीज मात्र सूचना आपीए छीए

श्री वितरागदेवे विवेकी समकितधारी उत्तम जनोने मोक्षनु आराधन करवा माटे जीवादिक नव पदार्थनो बोध कर्यो तेमा जाणवा जोग, आदरवा जोग, छांडवा जोग, भेट वताव्या, ते नव पदार्थोमा जाणवा, आदरवा, या छाडवा, जोग ते सर्वने पचवीस बोलोनी साथे चितव्याथी विस्तार रुचीनी शक्ति प्रमाणे सदहणा थइ गणाय तेमज नि श्चे ने व्यवहार ए बेनुं परिमाण थाय अने तेवीज रीते समकित गणी शकाय ते समकित विषे विवेचन नीचे मुजव

दोहरा

देवधर्म अरु आसता, तजे कुदेव कुधर्म,
ए व्यवहार सम्यक्त कही, व्राह्यधर्मनोमर्म १
नि·श्चेसम्यक्तनोसही, कारणछेव्यवहार,
ए सम्यक्त आरावतां, नि श्चेपणअवधार २
नि श्चे सम्यक्त जीवने, परपरिणति रस त्याग,
निज स्वभावमे रमणता, शिवसुखनो ए भाग ३
ए बेहु सम्यक्तन दूलेह, समजे नवतत्व ज्ञान,
नयनिक्षेप परमाणसु, श्यादवाद परमाण ४
द्रव्यक्षेत्र इणहि तणा, काळभाव विज्ञान,
सामान्य विशेष समजतें, होय न आत्मज्ञान ५

हवे एवी रीते आत्मज्ञाननी विशुद्धता करवा माटे समकित जनो जीव १, अजीव २, पुन्य ३, पाप ४, आश्रव ५, सवर ६, निर्जरा ७, बध ८, मोक्ष ए नव पदार्थनु जाणपणु कर वळी श्री ठाणायग सूत्रना वीजा ठाणामा नवतत्वनी अविशेषपणे एक जीवराशी अने बीजी अजीवराशी ए बे राशी कही एटले मुळ जीव अजीवना बे भेद कया ते नव पदार्थनु वधार विवेचन न आपता ते नव पदार्थ उपर पचीस बोल लगाडवा कहे छे ते नीचे मुजब

नि श्चेथी १, व्यवहारथी २, द्रव्यथी ३, भावथी ४, सामान्यथी ५, विशेषथी

करी क्रियानो बोध आपे त्या मौन धइ रहोछो अने मत्राइ सम्रह प्रवना आचरणी दाढीआरस विगेर नाटक करवानो बोध देवामा साहसिकपणु धरावो छो, ते कांइ थोडी हासीनी वात नथी मतलब के धर्मथी उलटा तेमज अधर्मना सात्रीतोने माटे सुयगडाग सूत्रे प्रथम अध्ययनना वीजा उद्देशानी अगियारमी काव्यमा कयुछे के.

धम्मपनवणाजासातंसकिंतिमुढगा
आरंभाइनसंकिंतिअविअत्ताअकोविआ ११

भावार्थ—ध जे क्षातादिक दशविध धर्मनी परुपणा छे त तेथी ते अज्ञानी शका पामी जाय छे ने कहे छे के ए अधर्मनी परुपणा छे, वळी आ. आरंभादिक पापना कारणोथी, न न शकाय ने तेनेज धर्म करी देखाडे छे माटे ते केवा छे ! अ अव्यक्त, मुग्ध विवेकविकळ तथा अ अपंडित छे

इवे सत्य धर्मनी रीते न चालनारने अधर्म कृत्यना पंडित कीधा पण सत्य कृत्यना पंडित न गण्या माटे मुळ सुत्रना आधारथी निरापक्ष रीते न्याय मार्गनु आचरण करीने घणा ग्रथोना सावद्य वाक्योने निराकरण कर्या छे ते न्याय धर्मनी वृद्धिनीज खातर छे

मुग्ध जनो कहे छे के तमे स्थापना नक्षेपो नथी मानता ते प्रश्नोत्तर

अमारा पुर्व भवांतरना केटलाएक बाळ मित्रोनु बोलवु एम थाय छे के तमो स्थापना नक्षेपो मानता नथी माटे तमो शास्त्रोथी विरुद्ध चालो छो एम कहेनाराने नीचे मुजब उत्तर

अरे मारा अविवेकी वहाला मित्रो ! धीक्कार छे तमारी अजाणतारुप बुद्धिने के अमो चार नक्षेपा मान्य करनारने शिर अभ्याख्यान चडाववा धारो छो ! अने तमारा पाषाणरुपी हृदयमां जेटली मुरखाइ छे तेटली बहार न पडतां नीचेनी हकीकत ध्यानमां लेशो

श्री जीनराजदेवे मोक्ष साधन करवाने माटे नव पदार्थ जाणवानु विवेचन समकितीजनाने आपेलु छे तेमां " हयगेय, उपादान " ए त्रण भेदनो विवरो विस्तार रुचीथी जाणवो ते विषनी वधारे हकीकत उत्तराध्ययनने अठावीसमे अध्ययने छे तेमज भगवतीजी तथा अनुयोग्यद्वारसूत्र विगेरे घणा सूत्रमां कयुछे पण आ स्थळे

तेमा असत्य कृत्यनी वस्तुमा असत्य कृत्यरुप भाव नीक्षेपा अवगुण करता सोमल-
नी रीते समजवो अने सत्य कृत्यनी वस्तुमा सत्य कृत्यरुप भाव नीक्षेपो गुण
करता समजवो ते जेम अरीहत तथा साधुमा चार नीक्षेपा लामे छे तेमा तेमनो
जे मुळज्ञान दर्शननो गुण स्वभाव छे या मुळ आत्मिक दशा छे तेज भाव नीक्षेपो
छे वळी ते मुणथीज तेओ पोताना जन्मातरोना वाधेला कर्मोना बन्धनथी छुटेला
छे माटे तेज तेमना भाव नीक्षेपारुप भाव गुणने बहु माने स्वीकारी त्रिविधे त्रि
विधे वदन करवु वळी तेमना भाव नीक्षेपानु कृत्य आपणा कर्मो निरजरवा माटे
यथास्थित आदरी ने तेमनु पद पामवा एटले सिद्धपद पामवा उद्यमी थइ जवु ए
भाव नीक्षेपानो गुण छे वळी बकातना रहेला त्रण नीक्षेपा ते जाणवा रुप छे पण
वदनरुप नथी एम समजवु सबब के प्रथमना त्रण नीक्षेपा ते पुदगळीक वस्तु छे
तेतो मुळज्ञान दर्शनना स्वभावथी विरुद्ध छे ने समेसमे क्षिणवृद्धि दशाने पामे छे.
माटे अवदनीकने एक भाव नीक्षेपो दुष्ट स्वभावी छे तेज वदनीक छे माटे ए
भेद ज्ञान तो सुपात्र लक्षग्रही होय तेनेज आदरवा योग्य छे

वळी प्रतिमानी माहे चार नीक्षेपा लामे तेपण मुळ धर्मनी रीते सत्य छे केमजे
तेना प्रथमना त्रण नीक्षेपा तो तेमज छे परतु चोथो तेनो मुळगुणरुपी भाव नी-
क्षेपो अज्ञान ने मिथ्यात्व छे सबब के ते एकेंद्रि पाषाणमा मिथ्यात्वगुण ठाणु छे
तेथी तेनो मुळ गुण छे तेज आपणा उपयोग्यमा आवी रहे छे केम जे पाषाणनो
प्रत्यक्ष एवो गुण छे के जेना उपर तेनो प्रहार थाय तेना शरीरने नुकशान थाय
या प्राण त्याग थाय तेनु दृष्टात निचे मुजब

खभात शहेरमा एक जीलार पाडा नामना महेलामा तप्त स्वभावीओनु एक
देवळ छे तेमा पुजारा विगेरे माणसो हता ते देवळ समारवानी खटपटमा रह्या
हता ते वखते बे चार छोकराओ रमता रमता ते देरामा आवी पहोंच्या अने ते
देवळमा बेठेली प्रतिमाओने पुष्पादिकना हार गजरा विगेरेथी सुशोभित दीठी ते
वखते एक छोकराए फुलना हार काढी लेवानी खातर पुजाराने गफलतमा जाणी
एकदम मुर्ती उपर हाथ नाखी हार खेंच्या, ते फुलना हार खेंचताज आरसपहा-
णेश्वर महाकोप करीने एकदम लोढाना खीला उपरथी लागलाज अपराधी छोकरा
उपर कुदी पडया अने ते छोकरानी छातीमा महा जुस्साथी घेटानी रीते एवी धीक
मारी के छोकरानी छातीना पाटीआज तोडी नाख्यां ने ते छोकराने शुक्र रुधीरनो
आहार करावा माटे बीजी जणेताने पट पहोंचतो कीधो तेमज बीजा उभेला

६, नाम नीक्षेपार्थी ७, स्थापना नीक्षेपार्थी ८, द्रव्य नीक्षेपार्थी ९, भाव नीक्षेपार्थी १०, द्रव्यर्थी ११, क्षेत्रर्थी १२, काळर्थी १३, भावर्थी १४, तथा चार प्रमाणथी, प्रत्यक्ष प्रमाणर्थी १५, अनुमान प्रमाणर्थी १६, आगम प्रमाणर्थी १७, उपमा प्रमाणी १८, हवे सात नयर्थी नयगम नयर्थी १९, सग्रह नयर्थी २०, व्यवहार नयथी २१, रुजुसुत्र नयर्थी २२, शब्द नयर्थी २३, समर्भीरुढ नयथी २४, एव भुत नयथी २५, ए पचीश वोल अकेका तत्वउपर सजोगवाने सट द्रव्यना गुण परयाय आदि सर्वे जाणी स्वस्वरुपनो तथा पर परीणतीनी वहेचण करीन स्वस्व रुपनो निश्चार्थ साधी शकाय छे एम सिद्धातोना निर्बेध वाक्यर्थी प्रत्यक्ष जणाय छे तेमा आ, जगतना जीव अजीवनी सर्वे वस्तु उपर चार नीक्षेपा लागु छे ए वितरागनु वचन सत्य छे

हवे सुमतगत मित्रोने कहवानु के मुळसूत्रोनी रुक्ति प्रमाणे अमो चार नीक्षेपाने मानताछता आपणी सर्व अज्ञानता वहार पाडीने कहोछो जे स्थापना नीक्षेपो नथी मानता ए सर्व तमारुं बोलवु व्यर्थछे केमजे दरक स्वरुप अरुप वस्तुमा मजकुर कहेला पचीश बोल अवश्य समवेछे तेमाथी एकपण बोल ओछो अथीकोने विपरीत थपे तेने मिथ्याद्रष्टि कहेवो ए सुत्रनो न्यायछे माटे सर्व जैन दयाधर्मीओने पचीश बोलनी रुक्ति प्रमाणे भवा सहित चार नीक्षेपा मान्यछे वळी ए चार निक्षेपा तमारी कल्पित मतिने अनुसरीने बनावेली पाषाण मुर्त्तीनेज माटे कहेला समजवा नहीं सबब के आ लोक जीव द्रव्य अजीवद्रव्यें परिपुरण भरेलोछे ते सर्वने माटे चारे निक्षेपा कह्या छे तेमां पे जे वस्तुमा नाम, स्थापना अने द्रव्य ए त्रण निरुपण कर्या पछी छेवटनो चोथो भाव नीक्षेपो ते ते वस्तुओनो मुळगुण समजवो तेनी खुल्ली हकीकत नीचे मुजव

जेम सोमलना चार नीक्षेपा तेना नाम, नाम सोमल स्थापना सोमल, द्रव्य सोमल ने भाव सोमल हवे सोमल्नो भाव नीक्षेपो तेज मुळ गुण छे ते महा आतस के जेने खावाथी सर्व प्राणनो अंत लावी आपे एवो एनो भावगुणछे ने जे माणस तेने नजर वेसे त्यांथी खातरी थाय छे पे सोमलथी प्राण त्याग थाय छे

वळी साकरना चार नीक्षेपा तेमा मुळ भाव गुण मधुरता एटले मीठाश, ते जेने अनुकुळ पडे तेना शरीरने ते पुष्टि कर्त्ता छे एवो तेनो मुळगुण छे एम सर्व वस्तु उच नीच मध्यममा चारे निक्षेपा छे अने तेओना जे जे मुळ गुण होय ते ते भाव नीक्षेपा समजवा तेमज एकेंद्रि आदिपंचेंद्रि पर्यंत सर्वमां चारे नीक्षेपा गणवा,

तेमा असत्य कृत्यनी वस्तुमा असत्य कृत्यरुप भाव नीक्षेपा अवगुण करता सोमल-
नी रीते समजवो अने सत्य कृत्यनी वस्तुमा सत्य कृत्यरुप भाव नीक्षेपो गुण
करता समजवो ते जेम अरीहत तथा साधुमा चार नीक्षेपा लामे छे तेमा तेमनो
जे मुळज्ञान दर्शननो गुण स्वभाव छे या मुळ आत्मिक दशा छे तेज भाव नीक्षेपो
छे वळी ते गुणथीज तेओ पोताना जन्मातरोना वाघेला कर्मोना बंधनथी छुटेला
छे माटे तेज तेमना भाव नीक्षेपारुप भाव गुणने बहु माने स्वीकारी त्रिविधे त्रि
विधे वदन करवु वळी तेमना भाव नीक्षेपानु कृत्य आपणा कर्मो निरजरवा माटे
यथास्थित आदरी ने तेमनु पद पामवा एटले सिद्धपद पामवा उद्यमी थइ जवु ए
भाव नीक्षेपानो गुण छे वळी बकातना रहला त्रण नीक्षेपा ते जाणवा रुप छे पण
वंदनरुप नथी एम समजवु सबब के प्रथमना त्रण नीक्षेपा ते पुदगळीक वस्तु छे
तेतो मुळज्ञान दर्शनना स्वभावथी विरुद्ध छे ने समेसमे क्षिणवृद्धि दशाने पामे छे
माटे अवदनीकने एक भाव नीक्षेपो द्रुपद स्वभावी छे तेज वदनीक छे माटे ए
भेद ज्ञान तो सुपात्र लक्षग्रही होय तेनेज आदरवा योग्य छे

वळी प्रतिमानी माहे चार नीक्षेपा लामे तेपण मुळ धर्मनी रीते सत्य छे केमजे
तेना प्रथमना त्रण नीक्षेपा तो तेमज छे परतु चोथो तेनो मुळगुणरुपी भाव नी-
क्षेपो अज्ञान ने मिथ्यात्व छे सबब के ते एकेंद्रि पाषाणमा मिथ्यात्वगुण ठाणु छे
तेथी तेनो मुळ गुण छे तेज आपणा उपयोग्यमा आवी रहे छे केम जे पाषाणनो
प्रत्यक्ष एवो गुण छे के जेना उपर तेनो प्रहार थाय तेना शरीरने नुकशान थाय
या प्राण त्याग थाय तेनु द्रष्टात निचे मुजब

खबात शहेरमा एक जीलार पाडा नामना महेलामा तप्त स्वभावीओनु एक
देवळ छे तेमा पुजारा विगेर माणसो हता ते देवळ समारवानी खटपटमा रया
हता ते वखते वे चार छोकराओ रमता रमता ते देरामा आवी पहोंच्या अने ते
देवळमा बेठेली प्रतिमाओने पुष्पादिकना हार गजरा विगेरथी सुशोभित दीठी ते
वखते एक छोकराए फुलना हार फाडी लेवानी खातर पुजाराने गफलतमा जाणी
एकदम मुर्ती उपर हाथ नाखी हार खेंच्या, ते फुलना हार खेंचताज आरसपहा-
णेश्वर महाकोप करीने एकदम लोढाना खीला उपरथी लागलाज अपराधी छोकरा
उपर कुदी पडया अने ते छोकरानी छातीमा महा जुस्सार्थी घेटानी रीते एवी धीक
मारी के छोकरानी छातीना पाटीआज तोडी नाख्या ने ते छोकराने शुक्र रुधीरनो
आहार करावा माटे बीजी जणेताने पट पहोचतो कीधो तेमज बीजा उभेला

छोकराओने पण जुस्साना आवेशमा घायल करी नाख्या हता एवी रीतनुं छोकरा अने पहाणेश्वर वच्चे युद्ध थइ पडयु हतु वळी ते पहाणेश्वर एटला तो निर्दय थइ गया हता क ते छोकरानो प्राण जवानो वखत आव्यो त्यासुधी खसवा इरादो करलोज नहीं ते वखते वकातना छोकराना सुमराणथी पुजारा विगर आवी प होंच्या ने घणा श्रमथी जुदा पाडी पाणेश्वरने टेकाणे बेसाडया आ टेकाणे कहे वानु के बराबर लोइना खीलानी साथे सज्जड न करवाथी तेने पचेंद्रि जीवनो प्राण लेता वार न लागी तो ते पाहाणेश्वरनी भक्तिमा एकेंद्रि बेइद्रि आदिक त्रसकायना प्राणनो नाश थाय तेमा शु आश्चर्य छे!! एम एकेंद्रि पाषाणादिकनो मुळ गुण तो सर्व आश्रव भरलोज छे तेथी तेमा वंदनगुणनी वस्तु तो स्पष्ट रीते कांइपण जणाती नथी वळी तेना चार नीक्षेपानो विचार पण तेना गुण उपरज उतारी श काय छे एम छता पण तमो सदगुणना नामथी चार नीक्षेपा निर्गुण एकेंद्रिमा नीरुपण करीने महा आरभ लइ बेसो छो, तेमा सद्गुणी शिरोमणी तिर्थंकरोने तो कलंक नथी परतु तमो तमारा अविवेकी विचारने वश पडीने तमारा कसाय आ त्माने पुष्टिनी खातर हिंसारुप जळ सिंचन करोछो तेना बदलानो जवाब अधोग तना स्वामिओनी आगळ आपवो मुश्केल थइ पडशे

दोहरो.—निक्षेपा सब द्रव्यना, कह्या चारना चार,
निज आतम चिन्या विना, समजे कीसु गमार १

प्रतिमा मतिने पुछवाना प्रश्न

१ अहो बाळमित्रो! मुळ सूत्रमा कयु छे पे दयाधर्मरुप भावद्रह त्यां सत्यरुप भावस्नान करवानुं कयु छे अने व्यवहारी लोकोने ससार कारण माटे सचित पा णीथी द्रव्यस्नान करनारा कह्या छे ए बे जातना स्नानोमांथी कये स्नाने साधु अने गृहस्थो निर्मळ थइने तरे छे?

२ सिद्धांतोमा ज्ञान, दर्शन, चारित्र, तप, सजम, जतना क्षियळ इंद्रि नि ग्रहरुप, भाव, तिर्थ तथा जात्रा कहीछे अने ससार व्यवहारीओ गगा, गोदावरी, हरद्वार विगेरे अनेक स्थळे तथा मुसलमानो मक्का मदिना विगेरे स्थळे तथा तपा गनो आबु, तारंगो, शेत्रुजो विगेरे द्रव्य तीर्थोए जाय छे, ए द्रव्यभाव तिर्थोमांथी कये तिर्थे साधु तथा गृहस्थो ससारमुक्त थायछे?

३ सिद्धांतोमा यज्ञ, हवन करवानु निर्वेचन छे तेमा तपरुप अग्नि जीवरुप कुंड अने भला मन, वचन, ने कायाना जोगरुप घृत सिंचवाना चाटवा,शरीररुप सधु-कण कर्मरुप इंधणा एवा कृत्यनु नाम भावयज्ञ कहीए वळी केटलाएक अजाण पुरुषो अश्वमेध, गजमेघ, अजामेध, विगेर अनेक जातना द्रव्ययज्ञ करेछे तेमा साधुने तथा गृहस्थोने कयो यज्ञ करता कर्मोंथी मुक्त थवापणु छे ?

४ सिद्धांतोमा ज्ञान, दर्शन, चारित्र ने तपने भावनिधान कह्या छे अने ससार व्यवहारीओने सोनु, रुपु, धन, धान्य, रत्न, हीरा, माणेक, झवेर, पाना, पर-वाळा विगेरे अनेक धनना निधान छे, ते द्रव्य निधान छे ए बेउमा साधु तथा गृहस्थोने कया निधाननु रक्षण करता ससारथी मुक्त थवापणु छे ?

५ सिद्धांतोमा कह्युछे जे क्रोधादिक राग, द्वेषरुप अग्निनो दावानळ सळगतो बुझावे तेने भाव अग्नि बुझावी समजवी अने छाणा इंधणादिकने बाळनार अग्नि ते द्रव्य दावानळ छे ए बे माहे साधु तथा ग्रहस्थो कयो दावानळ सळगतो बुझावे तो कर्मोंथी मुक्त थाय ?

६ सिद्धांतोमा वितरागना दयाधर्मनु आराधन करवा माटे आज्ञा सहित दया पाळे ते भावदेवनी पुजा करी कहवाय छे अने ससार व्यवहारीओथी पाषाणादि-कनी मुर्त्तीने नावण धोवण, पान, फळ, फुल, नैवेदादिक आरंभ करीने तथा धुप, दीप, केशर चडावी तथा वाजा गाडी एम अनेक जातनी सावद्य क्रियाथी पुजे छे, ते द्रव्य पुजा कहवाय छे ए बे पुजामाथी साधु तथा गृहस्थो कइ पुजा करवाथी मुक्त थाय छे ?

७ सिद्धांतोमा कह्यु छे जे आ ससारमा अनेक नास्तिक वस्तुनी ममता वधा-रवी, तेनु नाम तृष्णारुप भाववेलडी कहीछे अने वृपारुतुमा मगट थएली वनस्पति जातीमा चीबडा, कारला विगेरनी द्रव्य वेलडीओ कहेवाय छे ते बे जातीनी वेल-डीनु निर्मळ करता साधु तथा गृहस्थ कर्मथी मुक्त थाय छे

८ सिद्धांतोमा ज्ञान, दरशन, चारित्र ने तपना कृत्यने भाव वेपार कहे छे अने ससारीओ आ जीवीकानी खातर अनेक सावद्य कृत्य कर छे तेने द्रव्य वेपार कहे छे ए बे जातना वेपारमा साधु तथा गृहस्थ कया वेपारथी मुक्त थाय छे

९ सिद्धांतोमा कह्युछे जे शुद्ध श्रधारुप नगर तेने क्षमारुप गढ ने तप संजम-रुप दरवाजाना कमाड छे ते भावगढ कहेवाय छे अने कोइ ससारी राजा पोता-ना शहरनी रक्षान थाटे पाषाणादिकनो गढ कराव छे ते द्रव्यगढ कहेवाय छे ए

ये गडमाथी साधु तथा गृहस्थो कयो गढ चणाव तो कर्मोथी निरभय थाय ?

१० सिद्धातोमा मोक्षाभिलापीने युद्ध करवु कयुछ तेमा पराक्रमरूप धनुष ल्इ तेने इरिआ सुमतिरुप पणच चढावीने तपरुप वाणथी कर्मरुप वरीनु छेदन कर्यु ते भावयुद्ध कहवाय छे, अने राजा विगेर माहो माह कळेश करी युद्ध कर छे ते द्रव्ययुद्ध कहेवाय छे ते ये युद्धमाथी साधु तथा गृहस्थ कयु युद्ध करे तो कर्मथी मुक्त थाय ?

११ सिद्धातामा निर्वेद मनरुप भाव अश्व एटले घोड चढवु कयु छे अने स सारी लोकोने तिर्यच जाती द्रव्य घोडे चढनारा कह्या छे ए येमा कये अश्वे चढता साधु तथा गृहस्थो मोक्ष पहाचे ?

१२ सिद्धातोमा कयु छे जे वर्तमान काळे ससार बधन छोडीने सर्व ज्ञतपणे चोत्रीश अतिशय अने पात्रीश सतवचन वाणी सहीत बोध करता ह्यात विचर ते भाव तिर्थकर छे अने तिर्थकर आयुष्य स्थिति पुरण थएथी पछात रहेलु शरीर ते द्रव्य तिर्थकर कहेवाय छे वळी कोइक आवते काळे तिर्थकर थवाना छे तेने भविये द्रव्य तिर्थकर कहीए परतु तिर्थकर सबधी भावगुण प्रगट थया नथी ए येमा साधु तथा गृहस्थो कया तिर्थकरने वदन नमन करता कर्म निरजर ?

१३ सिद्धातोमा कयु छे जे, कोइ पुरुष ससार छोडी पच महाव्रतादिक स तावीस गुण सहित निर्वद्य करणी कर छे ते (भावी अपा) एटले भावीत आत्मा भावसाधु कहेवाय छे अने द्रव्य साधु ते आवते काळे संजम लेवानो छे एटले आवते भवे या तेज भवे पण हजु लीधो नथी ने सर्व आश्रव सेवे छे ते तथा कोइ साधु मरण पाम्याबाद पछात रहेलु शरीर ते मडु निर्गुण छे ते द्रव्य साधु कहे वाय छे ए येमा कया तिर्थकरने तथा साधुने गृहस्थो तथा साधुओ सेवा भक्ति, विनय, वयावच, आहारादिकथी सतोष आपे तो महा निरजरा करीने कर्मोथी मुक्त थाय ?

१४ सिद्धांतोमा दया, सत्य तथा ज्ञानादिक चार ए सर्वेनी आराधना करे तेने सर्वोपरी भाव मगळीक कह्या छे या भाव कल्याणीक कह्या छे अने दिवाळी सक्रात, शिवरात, अखात्रीज, गणेशचोथ वळी बळेव, दसरा विगेर परबो तथा पुत्रजन्म तथा सगाइ परणेतर विगेर अनेक जातीमा ससारी लोकोनां प्रमोद महो त्सव ते सर्व सावद्य द्रव्यमगळीक छे तेमा साधु तथा गृहस्थोने कयुं मगळीक कर तां सर्व कर्मो क्षय थाय छे ?

१५ सिद्धातोमा कह्यु छे जे सर्व कर्मो क्षय करीने सिद्ध स्थानके पहोचवु एने भावघर कह्यु छे अने द्रव्य घरने ससार व्यवहारीओने रहेवाना ते प्रत्यक्ष छे ते वेमा साधु तथा गृहस्थो कया घरनी इच्छा करता कर्म बधनथी मुक्त थाय ?

१६ अपार ससार समुद्रने तरे ते पुरुष भाव समुद्र तर्या कहवाय अने लवण समुद्रतरे ते द्रव्यसमुद्र तर्या कहेवाय ए बेमा साधु तथा गृहस्थोए कयो समुद्र तरवानो उद्यम करवो ? वळी केवे प्रकार तथा शाने तरता मुक्त थाय ?

१७ तिर्थंकर तथा साधुओ उपर चार निक्षेपानु विवेचन नाम भगवत १, स्थापना भगवत २, द्रव्य भगवत ३, भाव भगवत ४,तेमज नाम साधु १,स्थापना साधु २, द्रव्यसाधु ३, ने भावसाधु ४, ए बे चोकमळीने आठ थया तेमा साधु केटला गृहस्थ केटला ? शुद्ध केटला ने अशुद्ध केटला ? त्यागी केटला ने भोगी केटला ? तथा शुद्ध जोगवाळा केटला अने अशुद्ध जोगवाळा केटला ? तथा तेमा जीव क्यारे कहेवाय अने अजीव क्यार कहवाय ? तथा तमोधुण सवधी गुणवाळा केटला अने निर्गुणी केटला ? तथा ए आठना शरीर, वर्ण, गध, रस, ने आकार वदनिक छे के तेना गुण वदनीक छे ? तथा तेमा कोना आकार वदनीक छे अने कोना गुण वदनीक छे ? तथा एमा नवकार गणता नमस्कार कोने थयो अने केने न थयो ? तथा एमा साधु तथा श्रावकने वदनिक केटला अने अवदनिक केटला ? तथा ए आठमा स्नान, आभ्रण, धुप, दीप, लाडवा, लापसी विगेरे नैवेद तथा चोखानो साथीओ, फळ, फुल, पत्र विगेर चडाववु तथा वार्जीत्र वजावी नाचवु ए विगेर द्रव्यपुजा सावद्य कृत्यथी करवी ते तथा तेओने अर्थे महा आरभथी धाम बाधवा तथा सोनु रुपु विगेर नाणु अर्पण करवु ए सर्व मजकुर कहेली वस्तुओना भोगी केटला अने त्यागी केटला ? तथा एमा सजति केटला अने असजति केटला तथा ससारी भोगवाळा कयारे कहेवाय कने ब्रह्मचारी क्यार कहेवाय ? आ प्रश्नोना जवाबमा तमारा पुतळा उपर नजर न राखता जे वितरागे सत्यमार्ग निरुपण करेलो छे तेज प्रमाणे यथास्थित जाणता होतो बतावबु जोइए

१८ तमे चार निक्षेपा वदनिक कहोछो तेमां पुछनानु के तिर्थंकर, साधु तथा गणधर द्रव्यगुण अने भावगुण सहित होय तेने वादवा पुजवा योग्य छ परतु तेज तिर्थंकरादिक ससार व्यवहारमा द्रव्य नीक्षेपे खटकाय ने आरभे वर्तता होय ते वखते साधुओ तथा व्रतधारी श्रावको तेने वदन पुजन केम कर ? मतलब के हजु तेओमा त्याग अवस्थाना छता गुण सर्वथा प्रगट थएला नथी माट अव-

ये गढमाथी साधु तथा गृहस्थो कयो गढ चणाय तो कर्मोथी निरभय थाय ?

१० सिद्धातोमा मोक्षाभिलाषीने युद्ध करवु कह्युछे तेमा पराक्रमरूप धनुष लइ तेने इरिआ सुमतिरुप पणच चडावीने तपरुप बाणथी कर्मरुप वरीनु छेदन करवु ते भावयुद्ध कहेवाय छे, अने राजा विगेर माहो मांह कलेश करी युद्ध कर छे ते द्रव्ययुद्ध कहेवाय छे ते ये युद्धमाथी साधु तथा गृहस्थ कयु युद्ध करे तो कर्मोथी मुक्त थाय ?

११ सिद्धातोमा निर्वंध मनरुप भाव अश्व एटले घोड चडवु कह्यु छे अने ससारी लोकोने तिर्यच जाती द्रव्य घोडे चडनारा पण्या छे ए वेमा कये अश्वे चडता साधु तथा गृहस्थो मोक्ष पहोच ?

१२ सिद्धातोमा कह्यु छे जे वर्तमान काळे ससार बधन छोडीने सर्व प्रकारे चोत्रीश अतिशय अने पात्रीश सतवचन वाणी सहीत बोध करता इयात विचर ते भाव तिर्थंकर छे अने तिर्थंकर आयुष्य स्थिति पुरण थएथी पछात रहेलु शरीर ते द्रव्य तिर्थंकर कहेवाय छे वळी कोइक आवते काळे तिर्थंकर थवाना छे तेने भवियै द्रव्य तिर्थंकर कहीए परतु तिर्थंकर सबधी भावगुण प्रघट थया नथी ए वेमा साधु तथा गृहस्थो कया तिर्थंकरने वदन नमन करता कर्म निरजर ?

१३ सिद्धातोमां कह्यु छे जे, कोइ पुरुष ससार छोडी पच महाव्रतादिक सतावीश गुण सहित निर्वध करणी कर छे ते (भावी अपा) एटले भावीत आत्मा भावसाधु कहेवाय छे अने द्रव्य साधु ते आवते काळे संजम लेवानो छे एटले आवते भवे या तेज भवे पण हजु लीधो नथी ने सर्व आश्रव सेवे छे ते तथा कोइ साधु मरण पाम्याबाद थकात रहेलु शरीर ते मडु निर्गुण छे ते द्रव्य साधु कहेवाय छे ए वेमा कया तिर्थंकरने तथा साधुने गृहस्थो तथा साधुओ सेवा भक्ति, विनय, वयावच, आहारादिकथी सतोष आपे तो महा निरजरा करीने कर्मोथी मुक्त थाय ?

१४ सिद्धातोमा दया, सत्य तथा ज्ञानादिक चार ए सर्वनी आराधना करे तेने सर्वोपरी भाव मगळीक कह्या छे या भाव कल्याणीक कह्या छे अने दिवाळी सक्रात, शिवरात, अखात्रीज, गणेशचोथ वळी बळेव, दसरा विगेर परबो तथा पुत्रजन्म तथा सगाइ परणेतर विगेर अनेक जातीमा ससारी लोकोना प्रमोद महोत्सव ते सर्व सावद्य द्रव्यमगळीक छे वेमा साधु तथा गृहस्थोने कयुं मगळीक करतां सर्व कर्मो क्षय थाय छे ?

आशा भग छे के शु ? वळी पुजन करता तिर्थंकर गोत्र तथा सर्व कर्म शेवकना खपे एम कहो छो तो शु तेओनी रीते करता तमार भारे कर्मी थइ जवानो समव छे के शु ? वळी तमारामा व्रत, नियम न छता तमो व्रतधारीतु नाम राखवानी कल्पनाए पुष्पादिक अनेक जातीने सचित समजो छो तो शु तमारा शेवकोने सचित वस्तुमा जीवनु जाणपणु न करावता अजीव ठरावी आप्या छे के शु ? के ते आरभथी पाछा हठता नथी

२५ तमो प्रतिमावदनमा अवसरमा केने वदन करो छो ? जो प्रतिमाने वदन करता होतो ते वखते वितरागवदन न थया अने जो वितरागने वदन करीए छीए एम कहेतो प्रतिमा वदन न थइ वळी कहो जे वितराग तेज प्रतिमा अने प्रतिमा तेज वितराग तो पचेंद्रि विना एकेंद्रि अज्ञानमा वितराग दशा क्याथी आवी ? अने एक समे बे क्रिया केम वेदे ?

२६ तमारा प्रमिमामतना धर्ममा केटला एक दिगवरो प्रतिमा तथा गुरुनी भक्तिमाटे सावद्यपुजा विगेरे करता नथी ते शु जाणी नही करता होय ? अने तमो देवगुरुनी भक्ति माटे शु जाणीने महा आरभ करो छो ? वळी तेओए तथा तमोए कया ग्रथने आधारे प्रतिमा मडन करेलु छे ? वळी तेओनी प्रतिमाने आखो करता भुली गया छे अने तमोए प्रतिमाने आखो करी छे तो पुछवानु के तेओए चार इद्रि मान्य करी अने तमोए पाच इद्रि मान्य करी अने प्रतिमानो आरसपहाण सर-खोज छे तेमा आटलो वधो विधीफेर केम करो छो ?

२७ समक्ति एटले शु ?

२८ मोक्षकार्य छे के कारण छ के स्वत सिद्ध ? ते कारण सहित कहो ?

२९ मोक्षमार्ग केने कहीए ?

३० मोक्ष मार्गनी आराधनामा शु हय छे ने शु उपादेय छे ?

३१ जैन धर्मनु मुळ सिद्धात शु छे ?

३२ चैत्य शब्दनो अर्थ प्रतिमा करो छो तो ते शब्दनो अर्थ सर्व ठेकाणे तेमज करो छो के केम ?

३३ चैत्य शब्दना मुळधातु क्या क्याछे ? अने ते धातुना अर्थ शु शु थायछे ?

३४ जैन धर्मना बोध करनार जेवो बोध करलो छे तेवीज रीते हाल निर्विघ्न बोध थाय छे के केम ?

दनीक छे तो जे द्रव्य एकेंद्रिमाइ ज्ञान, दर्शनादिक कोइपण गुण नही छता तेमां चार नीक्षेपाथी केवी रीते वदन कराय ?

१९ इयाति तिर्थंकर, गणधर तथा साधुआ नव कोटीए आरभ समारभथी निवर्ती पामेला छे तेमज सरणागत श्रोताओने आरभथी निवर्तवानो बोध कर छे. वळी आरभना भयानक कर्मोना बधन जाणी पोते आरभथी थएली भक्तिने अमान्य करली छे तो एकेंद्रिमा तेओना नामनी सक्ल्पना करी सर्व आभवनुं शेवन करघु ते मुळशास्त्रोना न्यायनी साथे सुचवु जोइए

२० गुण वदनीक छे के आकार वदनीक छे ? जा गुण वदनीक होय तो एकेंद्रिनी मुळजातमा तिर्थंकर विगेनो कयो गुण छे ? अने आकार वदनीक होयतो ते जगत शिरोमणी सदगुणी पुरुषो वदनिक नहीं के शु ?

२१ पाषाणादिकना कल्पित देव मोटा के गुण मोटा ? जो देव मोटाइपणु तथा वितरागीन त्यागीपणु जाणीने फुल चढावोछो तो तमारा सावद्यचार्यने पण त्यागी अने वैरागी कहोछो तो तेने पुष्पादि केम चढावता नथी ? वळी जो गुरूने पाच महा व्रतधारी जाणीने सचेतनो स्पर्श न करावतां हो सो शु तमारा देवने अव्रति गणोछो के केम ?

२२ तमो प्रतिमा माहे कवी अवस्था निरुपण करो छो ? जो गृहस्थ अवस्था निरुपण करता हो तो पीळा वस्त्रवाळाओए तेने वदन नमन करघु अयोग्य छे सबब के पीळा वस्त्रवाळा संवेगपणानो डोळ बतावे छे, माटे न घटे अने प्रतिमा माहे सजम अवस्था निरुपण करता होतो तेमां चारित्रादिकनो डोळ नथी अने चारित्र अवस्थामां सर्व सचित अचित्त भोगादिक अर्पण करो छो तो तेमज इयात तिर्थंकरनी समाचारीमा सावद्य कृत्यना भोगी हता के शुं ?

२३ साधुना दर्शननी खातर श्रावक आवे त्यारे सचितादिक भोगोपभोगनी वस्तु बहार मुकीने पछी वदर्वंन कर छे सबब के साधुओ सचित वस्तुना त्यागी छे तो शु इयात तिर्थंकरादिक सचितादिक वस्तुओनो त्याग करेलो नहोतो के भक्तिने माटे सचेत वस्तुनो आरभ करो छो ?

२४ तमो तमारा शेवको पासे प्रतिमानु महा आरभथी पुजन करावो छो तेमज पुजनाराओ महा निर्जरा अने मोक्षनुं खातु तथा तिर्थंकर गोत्रनी लालचथी पुजन करे छे एवी रीते महद्फळ बतावी अंध कुपमां धकेली मारो छो तो पीळावस्त्रवाळाओने पुछवानु के तमार प्रतिमा पुजनमां निरजरा, मोक्ष अने तिर्थंकर गोत्रनी

आशा भग छे के शु ? वळी पुजन करता तिर्थंकर गोत्र तथा सर्व कर्म शेवकना खपे एम कहो छो तो शु तेओनी रीते करता तमार भार कर्मी थइ जवानो सभव छे के शु ? वळी तमारामा व्रत, नियम न छता तमो व्रतधारीनु नाम राखवानी कल्पनाए पुष्पादिक अनेक जातीने सचित समजो छो तो शु तमारा शेवकोने सचित वस्तुमा जीवनु जाणपणु न करावता अजीव ठरावी आप्या छे के शु ? के ते आरभथी पाछा हठता नथी

२५ तमो प्रतिमावदनमा अवसरमा केने वदन करो छो ? जो प्रतिमाने वदन करता होतो ते वखते वितरागवदन न थया अने जो वितरागने वंदन करीए छीए एम कहेतो प्रतिमा वदन न थइ वळी कहो जे वितराग तेज प्रतिमा अने प्रतिमा तेज वितराग तो पचेंद्रि विना एकेंद्रि अज्ञानमा वितराग दशा क्यांथी आवी ? अने एक समे बे क्रिया केम वेदे ?

२६ तमारा ममिमामतना धर्ममा केटला एक दिगंबरो प्रतिमा तथा गुरुनी भक्तिमाटे सावद्यपुजा विगेरे करता नथी ते शुं जाणी नही करता होय ? अने तमो देवगुरुनी भक्ति माटे शु जाणीने महा आरम करो छो ? वळी तेओए तथा तमोए कया ग्रथने आधार प्रतिमा मदन करेलु छे ? वळी तेओनी प्रतिमाने आखो करता भुली गया छे अने तमोए प्रतिमाने आखो करी छे तो पुछवानु के तेओए चार इद्रि मान्य करी अने तमोए पाच इद्रि मान्य करी अने प्रतिमानो आरसपहाण सरखोज छे तेमा आटलो बधो विधीफेर केम करो छो ?

२७ समक्ति एटले शु ?

२८ मोक्षकार्य छे के कारण छे के स्वत सिद्ध ? ते कारण सहित कहो ?

२९ मोक्षमार्ग केने कहीए ?

३० मोक्ष मार्गनी आराधनामा शु हय छे ने शु उपादेय छे ?

३१ जैन धर्मनु मुळ सिद्धात शु छे ?

३२ चैत्य शब्दनो अर्थ प्रतिमा करो छो तो ते शब्दनो अर्थ सर्व ठेकाणे तेमज करो छो के केम ?

३३ चैत्य शब्दना मुळधातु क्या क्याछे ? अने ते धातुना अर्थ शु शु थायछे ?

३४ जैन धर्मना बोध करनार जेवो बोध करलो छे तेवीज रीते हाल्र निर्विघ्न बोध थाय छे के केम ?

दनीक छे तो जे द्रव्य एकेंद्रिमाइ ज्ञान, दर्शनादिक कोइपण गुण नहीं छता तेमां चार नीक्षेपाथी केवी रीते वदन कराय ?

१९ हयाति तिर्थंकर, गणधर तथा साधुओ नव कोटीए आरंभ समारंभथी निवर्ती पामेला छे तेमज सरणागत श्रोताओने आरंभथी निवर्तवानो बोध करे छे, वळी आरंभना भयानक कर्मोना बंधन जाणी पोते आरंभथी थएली भक्तिने अमान्य करेली छे तो एकेंद्रिमा तेओना नामनी सकल्पना करी सर्व आभवनु सेवन करवु ते मुळशास्त्रोना न्यायनी साथे सुचवु जोइए

२० गुण वदनीक छे के आकार वदनीक छे ? जो गुण वदनीक होय तो एकेंद्रिनी मुळजातमा तिर्थंकर विषेनो कयो गुण छे ? अने आकार वदनीक होयतो ते जगत शिरोमणी सदगुणी पुरुषो वदनिक नहीं के शु ?

२१ पाषाणादिकना कल्पित देव मोटा के गुण मोटा ? जो देव मोटाइपणु तथा वितरागीने त्यागीपणु जाणीने फुल चढावोछो तो तमारा सावद्यचार्यने पण त्यागी अने वैरागी कहोछो तो तेने पुष्पादि केम चढावता नथी ? वळी जो गुरुने पाच महा व्रतधारी जाणीने सचेतनो स्पर्श न करावता हो तो शु तमारा देवने अव्रति गणोछो के केम ?

२२ तमो प्रतिमा माहे केवी अवस्था निरुपण करो छो ? जो गृहस्थ अवस्था निरुपण करता हो तो पीळा वस्त्रवाळाओए तेने वदन नमन करवु अयोग्य छे सबब के पीळा वस्त्रवाळा संवेगपणानो ढोळ बतावे छे, माटे न घटे अने प्रतिमा माहे सजम अवस्था निरुपण करता होतो तेमा चारित्रादिकनो ढोळ नथी अने चारित्र अवस्थामां सर्व सचित अचित भोगादिक अर्पण करो छो तो तेमज हयात तिर्थंकरनी समाचारीमा सावद्य कल्पना भोगी हता के शु ?

२३ साधुना दर्शननी खातर श्रावक आवे त्यार सचितादिक भोगोपभोगनी वस्तु बहार मुकीने पछी वदवदन करे छे सबब के साधुओ सचित वस्तुना त्यागी छे तो शु हयात तिर्थंकरादिके सचितादिक वस्तुओनो त्याग करेलो नहोतो के भक्तिने माटे सचेत वस्तुनो आरंभ करो छो ?

२४ तमो तमारा शेवको पासे प्रतिमानु महा आरंभथी पुजन करावो छो तेमज पुजनाराओ महा निर्जरा अने मोक्षनु खातु तथा तिर्थंकर गोत्रनी लालचथी पुजन करे छे एवी रीते महद्फळ बतावी अध कुपमा धकेली मारो छो तो पीळावस्त्रवाळाओने पुछवानु के तमार प्रतिमा पुजनमा निरजरा, मोक्ष अने तिर्थंकर गोत्रनी

आज्ञा भग छे के शु ? वळी पुजन करता तिर्थंकर गोत्र तथा सर्व कर्म शेवकना खपे एम कहो छो तो शु तेओनी रीते करता तमार मारे कर्मो थइ जवानो सभव छे के शु ? वळी तमारामा व्रत, नियम न छता तमो व्रतधारीनु नाम राखवानी कल्पनाए पुष्पादिक अनेक जातीने सचित समजो छो तो शु तमारा शेवकोने सचित वस्तुमा जीवनु जाणपणु न करावता अजीव ठरावी आप्या छे के शु ? के ते आरभथी पाछा हठता नथी

२५ तमो मतिमावदनमा अवसरमा केने वदन करो छो ? जो मतिमाने वदन करता होतो ते वखते वितरागवन्दन न थया अने जो वितरागने वदन करीए छीए एम कहेतो मतिमा वदन न थइ वळी कहो जे वितराग तेज मतिमा अने मतिमा तेज वितराग तो पचेंद्रि विना एकेंद्रि अज्ञानमा वितराग दशा क्याथी आवी ? अने एक समे बे क्रिया केम थेवे ?

२६ तमारा ममिमामतना धर्ममा केटला एक दिगवरो मतिमा तथा गुरुनी भक्तिमाटे सावद्यपुजा विगेरे करता नथी ते शु जाणी नही करता होय ? अने तमो देवगुरुनी भक्ति माटे शु जाणीने महा आरभ करो छो ? वळी तेओए तथा तमोए कया ग्रथने आधारे मतिमा मडन करेलु छे ? वळी तेओनी मतिमाने आखो करता भुली गया छे अने तमोए मतिमाने आखो करी छे तो पुछवानु के तेओए चार इद्रि मान्य करी अने तमोए पाच इद्रि मान्य करी अने मतिमानो आरसपहाण सर्-खोज छे तेमा आटलो बधो विधीफेर केम करो छो ?

२७ समकित एटले शु ?

२८ मोक्षकार्य छे के कारण छे के स्वत सिद्ध ? ते कारण सहित कहो ?

२९ मोक्षमार्ग केने कहीए ?

३० मोक्ष मार्गनी आराधनामा शु हेय छे ने शु उपादेय छे ?

३१ जैन धर्मनु मुळ सिद्धात शु छे ?

३२ चैत्य शब्दनो अर्थ मतिमा करो छो तो ते शब्दनो अर्थ सर्व ठेकाणे तेमज करो छो के केम ?

३३ चैत्य शब्दना मुळधातु क्या क्याछे ? अने ते धातुना अर्थ शु शु थायछे ?

३४ जैन धर्मना बोध करनार जेवो बोध करलो छे तेवीज रीते हाल्न निर्वध बोध थाय छे के केम ?

दनीक छे तो जे द्रव्य एकेंद्रिमाइ ज्ञान, दर्शनादिक कोइपण गुण नहीं छता तेमां चार नीक्षेपार्थी केवी रीते वदन कराय ?

१९ इयाति तिर्थकर, गणधर तथा साधुआ नव कोटीए आरभ समारभथी निवर्ती पामेला छे तेमज सरणागत श्रोताओने आरभथी निवर्तवानो बोध करे छे वळी आरभना भयानक कर्मोना बधन जाणी पोते आरभथी थएली भक्तिने अमान्य करेली छे तो एकेंद्रिमा तेओना नामनी सकल्पना करी सर्व आभवनु सेवन करवु ते मुळशास्त्रोना न्यायनी साथे मुचवु जोइए

२० गुण वदनीक छे क आकार वदनीक छे ? जो गुण वदनीक होय तो एकेंद्रिनी मुळजातमा तिर्थकर विषेनो कयो गुण छे ? अने आकार वदनीक होयतो ते जगत शिरोमणी सद्गुणी पुरुषो वदनिक नहीं के शु ?

२१ पाषाणादिकना कल्पित देव मोटा के गुण मोटा ? जो देव मोटाइपणु तथा वितरागीन त्यागीपणु जाणीने फुल चढावोछो तो तमारा सावद्यचार्यने पण त्यागी अने वैरागी कहोछो तो तेने पुष्पादि केम चढावता नथी ? वळी जो गुरुने पाच महा व्रतधारी जाणीने सचेतनो स्पर्श न करावतां हो तो शु तमारा देवने अव्रति गणोछो के केम ?

२२ तमो प्रतिमा माहे कवी अवस्था निरुपण करो छो ? जो गृहस्थ अवस्था निरुपण करता हो तो पीळा वस्त्रवाळाओए तेने वदन नमन करवुं अयोग्य छे सबब के पीळा वस्त्रवाळा सवेगपणानो ढोळ बतावे छे, माटे न घटे अने प्रतिमा माहे सजम अवस्था निरुपण करता होतो तेमा चारित्रादिकनो ढोळ नथी अने चारित्र अवस्थामा सर्व सचित अचित भोगादिक अर्पण करो छो तो तेमज इयात तिर्थकरनी समाचारीमां सावद्य कृत्यना भोगी हता के शुं ?

२३ साधुना दर्शननी खातर श्रावक आवे त्यारे सचितादिक भोगोपभोगनी वस्तु बहार मुकीने पछी वदवदन करे छे सबब के साधुओ सचित वस्तुना त्यागी छे तो शु इयात तिर्थकरादिके सचितादिक वस्तुओनो त्याग करेलो नहोतो के भक्तिने माटे सचेत वस्तुनो आरंभ करो छो ?

२४ तमो तमारा श्रेवको पासे प्रतिमानु महा आरंभथी पुजन करावो छो तेमज पुजनाराओ महा निर्जरा अने मोक्षनुं खातु तथा तिर्थकर गोत्रनी लालचथी पुजन करे छे एवी रीते महद्‌फळ बतावी अध कुपमा धकेली मारो छो तो पीळावस्त्रवाळाओने पुछवानु के तमार प्रतिमा पुजनमा निरजरा, मोक्ष अने तिर्थकर गोत्रनी

घरेमा गाढा थएला ते चार प्रतिमाने केम पुजशे ? वळी कहो जे समकिती देव पुजे पण मिथ्यात्वी देव न पुजे तो मिथ्यात्वी देव शु पुजे छे ? वळी कहो जे मेउ पुजे तोए एमना जीत व्यवहारमा ठर के बीजु ?

४२ तमे कहो छो जे असख्याता काळनी प्रतिमाओ आजसुधी छे अने भगवते मुळ सूत्रोमा एम कह्यु छे जे कर्त्तरीम वस्तु सख्यातो काळ रहे, तो तमे असख्यातो काळ क्याथी ठराव्यो छे ? वळी कहो छो जे देवताओनी सहायथी रहे छे तो पुछवानु के पालीताणाना डुगर उपर जेने तमे मुळ नायक ठराव्या छे ते प्रतिमा उपर वीजळी पडी तेनु ठाम्भक नाकज वाळी नाख्यु ते वखते पालीताणा उपर कोइ देव हतो के नहीं ? वळी अजेपाळे तथा अलाउद्दीन बादशाहे तमाम देराओ खोदी नखाव्या तथा प्रतिमाओ खडन करी नाखी ते प्रतिमानी शेत्रामा कोइ देव हशे के नहीं ? आ उपरथी खातरी थाय छे के तमो गपोडाथी धराताज नथी

४३ तमारा देवळमा प्रतिमा बेसाडती वखते केटलाएक कारणो जन्म महोत्सवना तथा परणेतरनी विधीना करो छो ते वखते केटलाएक गृहस्थ प्रतिमाओना मातपीता बने छे तो पुछवानु के तेमने पेट पचेंद्री जीव पुत्र पुत्रीनु उपजवु नथी थयु के पाषाणनी प्रतिमाथी इच्छा पुरी करे छे ? वळी ते प्रतीमाओने क्या काळनी स्थापन करीने जन्म आपो छो ? वळी तेना चार नाम न राखता चोवीश नामा आपो छो ? ते शा आधारथी ?

४४ तमो प्रतिमान साक्षात देव कहो छो तेमा पुछवानु के ज्यार ते प्रतिमाओने एना कर्मना उदये कोइए गदरना वखतमा कोइ कारणथी जमीनमा दाटी दीधी होय, तेना निकळवाना वखतमा तमे कहो छो के अमारा स्वप्नामा आवीने प्रतिमाओ कहे छे के " मने काढोर काढो " जो एम तमारा स्वप्ना सुधी कहेवा आववानी हिम्मत चाली तो पोतानी मेळे बहार नीकळीने तमारी प्रत्यक्ष थवानी शक्ति न थइ के तमार महा महेनतथी खाडो खोदी काढवी पडे छे वळी कहो जे प्रतिमानी रक्षा करनार देव कही जाय छे तेना जवाबमा कहवानु जे ते देवताने बहार काढवानी सत्ता नथी के शु ? वळी ते प्रतिमानो भक्तिनो लाभ ते देवने लेवो नथी के तमने भळावी दे छे ?

४५ पीळा वस्त्रवाळाओ ! तमे प्रतिमापुजनना आरभथी डरोछो ! अने तमारा बोलथी पीळा चादरवाळा तमारा यमत्रानो पुजनना आरभमा साहसिकपणु धरावे

३५ मोक्ष मार्गनी करणी करता सावद्यनो त्याग करवो कह्यो छे ते सावद्य कोने कहो छो ?

३६ जैन धर्म दयामय कह्यो छे तो कया कया जीवनी दया पाळवी अने कया क्यानी न पाळवी ? वळी स्थावर जंगम प्राणीओने अभयदान देवु, ते केवी रीते देवु ? अने केटला गुण धरनार अभयदान दे छे ?

३७ तिर्थंकरना नामथी मुर्ती मडन करी पुजो छो ते मुर्तीने लक्षण अतिशय सत्यवचन वाणी तथा इद्र आन्दिक सेवीत तथा छ गुण ए विगेर तिर्थंकर सबंधी सर्व मुर्तीमां छे के नहीं ?

३८ सिद्ध निरजन निराकार छे तेनी साकार मुर्ती करो छो तेमा निरंज नना आठ गुण माहेला केटला गुण छे ? वळी तिर्थंकरना नामनी प्रतिमा तथा सिद्धना नामनी प्रतिमा ए बनेना नामनो पटातरो केवी रीते करो छो ? वळी ते बेनी पुजाविधी सरखी रीते करोछो के जुदी रीते ? वळी ते पुजाओमा छकायना जीव हणाय छे के नथी हणाता ? ने हणाय छे तो केन्ला हणाय ने न हणाय तो तेनु यतु रक्षण बतावो ?

३९ तमोए मान्य करेली प्रतिमाओने छकायमाथी कइ कायमा गणो छो ?

४० ए प्रतिमाओमा गुण ठाणा केटला छे तथा व्रत केटला छे तथा द्रष्टि केटली छे तथा जोग, उपयोग, लेश्या, सज्ञा, कसाय, हेतु, विषय, ज्ञान, अज्ञान, शरीर, संघण, सठाण, इद्रि, समुदघात, प्रजा, प्राण, जोणी, कुळकोडी, वेद, अहार विगेरे केटला बोल लामेछे ?

४१ चार जातीना देवना भुवन तथा वैमान विगेरे त्रिछा लोकमां सासक्ती जीन पडिमाओ छे, ते सर्वना चारज नाम छे ते सर्वने समकिती तथा मिथ्यात्वी बने पुजे छे के एकला समकितीज पुजे छे ? वळी अहींआ कोइ मिथ्यात्वी मृत्यु पामी देव लोके उपज्यो त्यां तेनो मिथ्यात्व धर्म छे तो तेना वैमानमां हरी, हर, ब्रह्मा, विष्नु, विगेरे देवोनी प्रतिमा हशे ? वळी असुर देवना वैमानमा कब्बर विगेरे एम जुन्दाजुदा धर्मना देवस्थानमी ते देवो पुजा करे छे के सासवता चारना मनी पुजा करे छे ? वळी मिथ्यात्वीओना वैमानमा तेमनी प्रधाना देवस्थान होय तो बतावो ? वळी तमारा कहेवा प्रमाणे मिथ्यात्वी देवो सासवती चार प्रतिमाने पुजे नहीं सबब के मृत्युलोकना अन्य दर्शनीओ तमारी प्रतिमानु आखा भवमां एकवार पण पुजन करता नथी तेवीज रीते मिथ्यात्वी देवो पण स्वमिथ्यात्व

धर्मा गाढा थएला ते चार प्रतिमाने केम पुजशे ? वळी कहो जे समकिती देव पुजे पण मिथ्यात्वी देव न पुजे तो मिथ्यात्वी देव शु पुजे छे ? वळी कहो जे वेउ पुजे तोए एमना जीत व्यवहारमा ठर के बीजु ?

४२ तमे कहो छो जे असख्याता काळनी प्रतिमाओ आजसुधी छे अने भगवते मुळ सूत्रोमा एम कह्यु छे जे कृत्तरीम वस्तु सख्यातो काळ रहे, तो तमे असख्यातो काळ क्याथी ठराव्यो छे ? वळी कहो छो जे देवताओनी सहायथी रहे छे तो पुछवानु के पालीताणाना डुगर उपर जेने तमे मुळ नायक ठराव्या छे ते प्रतिमा उपर वीजळी पडी तेनु ठामुक नाकज वाळी नाख्यु ते वखते पालीताणा उपर कोइ देव हतो के नहीं ? वळी अजेपाळे तथा अलाउद्दीन बादशाइ तमाम देराओ खोदी नखाव्या तथा प्रतिमाओ खडन करी नाखी ते प्रतिमानी शेवामा कोइ देव हशे के नहीं ? आ उपरथी खातरी थाय छे के तमो गपोडाथी धराताज नथी

४३ तमारा देवळमा प्रतिमा वेसाडती वखते केटलाएक कारणो जन्म महोत्सवना तथा परणेतरनी विधीना करो छो ते वखते केटलाएक गृहस्थ प्रतिमाओना मातपीता बने छे तो पुछवानु के तेमने पेट पचेंद्री जीव पुत्र पुत्रीनु उपजवु नथी थयु के पाषाणनी प्रतिमाथी इच्छा पुरी कर छे ? वळी ते प्रतीमाओने क्या काळनी स्थापन करीने जन्म आपो छो ? वळी तेना चार नाम न राखता चोवीश नामा आपो छो ? ते श। आधारथी ?

४४ तमो प्रतिमाने साक्षात देव कहो छो तेमा पुछवानु के ज्यार ते प्रतिमाओने एना कर्मना उदये कोइए गएला वखतमा कोइ कारणथी जमीनमा दाटी दीधी होय, तेना निकळवाना वखतमा तमे कहो छो के अमारा स्वप्नामा आवीने प्रतिमाओ कहे छे के " मने काहोर काढो " जो एम तमारा स्वप्ना सुधी कहेवा आववानी हिम्मत चाली तो पोतानी मेळे बहार नीकळीने तमारी प्रत्यक्ष थवानी शक्ति न थइ के तमार महा महनतथी खाडो खाणी काढवी पडे छ वळी कहो जे प्रतिमानी रक्षा करनार देव कही जाय छे तेना जवाबमा कहवानु जे ते देवताने बहार काढवानी सत्ता नथी के शु ? वळी ते प्रतिमानो भक्तिनो लाभ ते देवने लेवो नथी के तमन भळावी दे छे ?

४५ पीळा वस्त्रवाळाओ ! तमे प्रतिमापुजनना आरभथी डरोछो ! अन तमारा मोटथी पीळा चादरवाळा तमारा यजमानो पुजनना आरभमा साहसिकपणु धरावे

छे वळी ते पुजनमा तमने महा पाप लागे अने शेनकोने ते पुजनथी मोक्ष थाय तेमा पुछवानु के ते पुजा करता तमने केटला कर्म बधाय अने केटलो काळ भवांतरनो लाभ लइ शको ?

४६ केटलाएक पीळा तीलकवाळा मृत्यु पामी अवगतिआ थाय छे ते पछाव रहेला घरना अमुक माणसने धुणावीने कहजे मारी प्रतिमा प्रतिष्ठिन देरामा बेसाडो ? त्यार तेना सबधीओ तेना कइवा प्रमाणे देरामा प्रचार्ती जगो लइ बेसाडे छे तेमा पुछवानु के ते प्रतीमानी प्रतिष्टा पुजा तमारा देवनी रीते करोछो क बीजी रीते ? वळी ते प्रतिमानु नाम अवगतीओ पाडोछो क तिर्थंकर ? वळी प्रतिमा बेसाडनारने नामे प्रतिमानु नाम राखो छो तो तेने तमे तिर्थंकरदेव शीरीते मानोछो ? केमजे त्रिखंडा, नवखंडा, नाकोडा, अमीजरा, गोडीजी, हठीजी, गुलाब वागडी आजी भावडजी, भावडजी, ए विगेरे अनेकनामनी प्रतिमा बेसाडो छो तो आ ठेकाणे ए शंका थाय छे के जेम अवगतिआओ सुरधन थइ घरमा बेसवानु मागी ले छे, तेमज तमारा सूरधनोए देरामा बेसाडवानुं मागी लीधेलु छे, ने तेमज तेम प्रतिष्टा करी देरामा बेसाडो छो, एम दरेक वखते सामव्या तथा जोवामा आवे छे तेमां पुछवानुं के लाखो रुपिआ खरचीने देरा करावी प्रतिमा बेसाडो छो ते तमारी नामदारीने माटे करो छो के आत्मकल्याणने माटे करो छो ? वळी गृहस्थोना नामनो प्रतिमा बेसाडो छो तेमज पीळा पुज्योनी प्रतिमाओनी प्रतिष्टा करीने बेसाडो छो के नहीं ?

४७ वितरागभाषित मुळ सिद्धातोमा कह्यु छे जे पहेला तथा छेला तिर्थंकरना सासनमां साध साध्वीओने धोळां वस्त्र पहेरनारा कह्याछे अने वच्चेना बावीस तिर्थंकरना सासनमां साध साध्वीओने पचरगावस्त्र पहेरनारा कह्या छे पण हालना जमानामां सवेगीओ आवळना फुल जेवा पीळा वस्त्र पहेरेछे तेओने पुछवानुं के तमे कोना सासन प्रमाणे प्रवर्षोछो ? वळी आचारंगसूत्रमां तथा निसिथ सुत्रमा भगवंते कह्युं छे " नोरंगेवा, नोधोएवा, नोपासेजा " अर्थात रंगवानी तथा धोवानी तथा अमुक द्रव्यनो पास देवानी सर्वथा ना कही छे वळी अचेत अने फासुक जळमां एकवार तथा बे बार पण न धोळवुं एम कह्यु छे तो आवा पीळा वस्त्र रंगवानी तो रजा कयाथीज होय ? एम छता पण पीतांबरधारीओ कोइएक तेमना आचार्यना करेला ग्रंथना आधारथी पोताना वस्त्रने लोदर कायो अने वाडमना छोडीआ पलाळी तेमाज बोळे छे पण पुछवानुं के ग्रंथ उपर आधार न राखता सुत्रमां केवी रीते

कहलु छे ? ते पुर्व, पश्चिम अने मध्यम ए त्रण पाटनी साथ मेळवीने शास्त्ररीत प्रमाणे वतावत्रु जोइए

४८ वितरागभाषित मुळ सिद्धातोमा सर्व साधसाध्वीओने मस्तकनोलोच करवानो कह्यो छे तेमछता मस्तकनो लोच न करतो साधुओनी समाचारीथी दुर करवो पडे छे एम सिद्धातोमा स्पष्ट रीते कहेलु छे तेम छता पीळा वस्त्र धरनाराओमा केटळाएक लोच करे छे अने केटलाएक हजाम पासे मुडावे छे या कतरावे छे एवो व्यवहार साधुओने माटे कया मुळ सूत्रथी कहोछो वळी तमे. कहोछो के साधुओने माटे सूत्रमा लोच करवाने अधीकार " लोवा, मुडेवा, कसेवा " एटले स्थिर सघेणवाळाने लाच करवा ते सिवायना साधुओने सजाए मुडावबु तथा कतरावत्रु कहोछो पण शास्त्ररीते तमारु बोल्वु वृथा छे सबब के मजकुर पाठनी क्रियातो श्रावकनीज छे ज्यार श्रावक उत्कृष्ट पडिमाओ आदरे छे त्यारे मजकुर पाठनी रीते करे छे पण साधुआने माटे तो लोच करवानीज भळामण छे पण तेमने पुछ्वानु के श्रावकनी क्रियानो पाठ तमोए लीधो तो तमारामा बारव्रत माहेलां केटला व्रत छे अने श्रावकनी केटली पडिमा आदरली छे ? वळी तमे कहोछो पे वृद्ध, रागी तपस्वी तथा वाळने माटे आगार छे तेमा पुछ्वानु के मोटा हाथी चाल्या जाय एवा आगारतो तमारा सर्व व्रतोमा प्रत्यक्ष मालम पडे छे सबब के तमारा पुर्वाचार्यना करला ग्रथोमा कहलु छे के स्वधर्मनीस्थिति वधारवाना कारणथी जीवहिंसा १ तथा जुठु बोलवु २ तथा अदत्त दान वेवु ३ तथा कुशियळ शेववु ४, तथा परिग्रह राखवो ५, तथा रात्री भोजन करवु ६, ए विगेर केटलीएक बाबतोना आगार करला छे तो पुछ्वानु क साधुने माटे एवी सागारी क्रिया कया सुत्रमा कही छे ? वळी साधपणाना मुळव्रतो विगेरमा काइ कारणथी आगार होय तो तमारा शेवकामा तथा तमारामां काइ तफावत जणातो नथी अने बेउनो आगार धर्मज मालम पडे छे तो पुछवानु के तमारा धर्मना अणगार साधुओ कइ तरफ गएला छे ?

४९ सिद्धातोमा साधुआने भगवते वरसता वर्षादमा आहारादिक भोगोपभोगनी वस्तु लेवाजवानी मना करली छे वळी कदाचित वपाद वरसवानी अगाउ गौचरीए गया अने पछी वर्षाद वरसे ता साधुओ गृहस्थने घेर न रहता स्वस्थानके आय वळी लघुनीत, वडीनीत ना कारणथी वर्षादमा सजतिओ जाय छेतेमां थएली अजतनानु प्रायछित लेवाना कामी छे एवो न्याय मार्ग छे परतु तमो

क्षुधा, तृषा विगेर परिसहार्थी हायमान मणाम करीने वरसता वर्षादमा आहारादिक लेवा जाओछो ते वखते गृहस्था माथे छत्र धरी राखे छे जेम एकताळीशना भादरवा मासमा त्रण दीवसनी वर्षादनी एली मढाणी ते वखते भावनगरमां सूर्यीचंद्रना बिम्बो जाता दीठा तेमज तेओमा सर्व ठेकाणे हशे वळी ते वखतमा सिद्धांतधारी जैन मुनीओने त्रण त्रण उपवास थएला सत्ववके सिद्धांतामा कह्यु छे जे माससमरण पा रणे जरापण दृष्टिगते वर्षादना छांटा मालम पडे त्यासुधी आहारादिकने माटे साधु हाय ते न जाय तेतो सत्य छे पण तेथी विरुद्ध रीते थइने जाओछो ते कया सूत्रना आधारथी ?

५० सिद्धांतोमा कह्यु छे जे दरराज एक घरथी आहारपाणी न वोरवुं तेमज साधुनी नेसरा कल्पिने कोइ गृहस्थ आहार पाणी नीपजावे ते सर्व वस्तु साधुओने लेवी न कळपे तेतो न्याय मार्ग छे पण हालना पीळा वस्त्र धरनार जनोने माटे केटलाक हद्यापणन्टार भगतो तेमना गुरुनी खातर अहारादिक विगेर रंधावे छे ने दररोज सीरा बनावीने वोहोरावे छे ने कोइ वखते काचो सीरो अपायो होय तो पाछा लेवा जवु पडे छे तेमज दुध उकाळीने वोहारावता वधारे पडी गयु होय तो बीजो माथीक शेवक पीइ जाय छे तेवी रीते भावनगरमा महर्धिक शेवकने घरे रीवाज छे तथा बे हाडा पाणी उकाळी वहोरावे छे ते छेवट अण कल्पता हुस वास सहित आप छे ने ते लेछे तो पुछवानु के मजकुर दातार तथा मजकुर लेना रने सिद्धांतोनी रुक्ति जोता केटलो लाभ मळ्यो हशे ?

५१ उत्तराध्ययन सूत्रना सोळमा अध्ययनमा नव वाड सहित ब्रह्मचर्य पाळवुं कह्यु छे तेमा नवमी वाडमां शरीरनी शुश्रुका, शोभा, शणगार, अतर, तेल, फुलेल विगेरे सुगंध द्रव्यथी वस्त्र तथा शरीरवासीत ब्रह्मचारी पुरुषोने न करवु कह्यु छे ते तो सत्य छे तेथी उल्टी रीते श्रय मान्य करनार आत्मारामजी विगेर एकताळी शनी सालमा लींबडीए गया त्यारे तेमना शेवकोए घणी धामधुमथी सामैयु करीने शहेरमां लइ जतां मध्य बजारमा अतरनी सीसीओ तेमना मस्तक उपर ढोळी हती ते सुगधनी वहारथी तेमनो आत्मा घणो संतोष पाम्यो हशे पण ए कृत्य जैन मुनीओनी रीतमा छे के उल्टी रीते छे ?

५२ सिद्धांतोमा वितरागे जैन मुनीओने कह्यु छे क पांच प्रकारनी सझाय करवी तेमा पांचमी सझायनुं नाम धर्मकथा कहेवाय छे ते कथाना चार प्रकार छे ते श्रोताजनोने सभळावता सुलभबोधी जीव वैराग पामी गुरु पासे समम लेवा

मनसा बतावे पण तेना वारसदारोनी आज्ञा सिवाय चारित्र आपे नहीं, एतो न्याय मार्ग छे पण तेथी उलटी रीते आधुनीक जमानामा ग्रंथ परुपक आत्मारामजी विगेरे केटलाएक वेषधारी गृहस्थोना बेटाबेटीओने तेओना वारसदारोनी रजा सिवाय बीजे देशावर मोकली दइ भेख पहेरावी देछे पछी ते भेख पहेरनाराना वारसदारो त्या जइने जुलम टटाथी न्याय कोरटनी द्रष्टिए करी केटलाएकने भेख उतरावी घेर लइ जाय छे ते जैन शास्त्रोना आधार प्रमाणे जोतातो उलटी रीत गणाय के बीजु काइ ?

५३ सिद्धांतोमा जैन मुनीओने भगवते कहुछे के अहो मुनीश्वर परदेशे विहार करता या परदेशथी आवता गृहस्थो स्वइच्छाए वाजा विगेरे आरंभनी धामधुमथी तमने सामा तेडवा आवे तथा वळावा जायतो तेओना मंडळमा आत्मार्थी मुनीओए चालवु नहीं ने चालेतो साधु धर्मथी उलटी रीते समजवु, एतो न्याय मार्ग छे पण तेथी उलटी रीते हाल आत्मारामजी विगेरे गुरु भक्तिने माटे सामैयाना मोटा लाभ बतावी अनेक आरंभ सहित गृहस्थोना मंडळमा माथे साल या चदनी धरावी चालो छो तथा चाल्वाने रस्ते जळ छाटणा तथा धजागराओ विगेरेनी शोभा लेता स्त्री मंडळना सगटाथी नि:शंकपणे चाल्ता तेमज मोढा आगळ दांडीआरसनी रमत जोता संतोष मानेछे तेमा पुछवानु के असल जैनधर्ममा हाल्नी रीते अथारु चालतु?

५४ सिद्धांतोमां जैन मुनीओने भगवते कह्यु छे के अहो मुनीश्वर ! तमारा धर्मोपगरण विगेर आहारादिक गृहस्थने उपाडवा न देवु तेमज कोइ वाहन उपर न मुकवु एम कह्यु ते तो न्यायमार्ग छे पण तेथी उलटी रीते थइ परदेश जता आवता वेठीआ करी भार उपडाववो अथवा तेम नहीं ता गाडी, घोडा, पोठीआ उपर भार भरवो वळी लाग पडे तो तेओ उपर चढी पण बेसवु ते जैन धर्मना मुनी कहवाय के नहीं ? वळी भिक्षा लेवा जाओ छो ते वखते गृहस्थने उदकनी मटकी उपाडवाने आपो छो ते साधुधर्मनी रीत छे ?

५५ सिद्धांतोमा जैन मुनीओने भगवते कह्यु छे के अहो मुनीश्वर ! गृहस्थने घर गोचर्ये मौनपणे जजे ! सबब के सुझतु कल्पतु लेवाना कामी छो माटे कदाच बोलता जशो तो तमारु आववु जाणीने काइ अविवेकीगृहस्थ सचितादिक वस्तुओना स्पर्श करी अजतना करशे तो दोष छे एतो न्याय मार्ग छ पण हाल्मा आत्मा रामजी विगेरना शिष्या नातरवा आयला शेवकाना मंडळसाथ बजारामा खेंचाताण करता पहली सुमतिने गळा करी मन गमता शेवकने घर जाय छे ने वखते, बे

चार शेवक आगळथी जइ पहाचीने वहारावनारने जाण करी दाणा लीलोतरी काचु पाणी विगेरे आघु पाछु करावे छे ए विगेर केटलीएक बावतो जोवामा आवे छे ते कृत्य साधु धर्मथी उलटी रीते छे के नहीं ?

५६ ठाणायग सूत्रमा शस्त्रने एकधारु खड्ग कयु छे अने दीवाने दश धारे खडग कयु छे माटे जैन मुनीओ ते आरभमा श्रीकर्ण शुद्ध चित्त आपता नथी ते तो न्याय मार्गछे पण हालमा वरधीचदजी विगेर पोताना मकानोमा रात्रे कायम फानसमा दीवा बळाव छे ने कहे छे जे प्रतिक्रमणनी वखत न जोइए पण पछी बाद नहीं वळी ते फानसमा दीवो कराव्या पछी खानगी सभा भरी देशावरना प्रपची पत्रो वाचवा या लखाववा या पालीताणाना डुगर उपरना देराओना रक्षणनी गोठवण करवी तथा गुरुपणाना नाम साथे खानगी वकीलात करवी ते कृत्य साधु धर्मनी रुक्तिथी उलटी रीते छे के केम ?

५७ भगवतीजीमा तुगीआनगरीना श्रावको " महीदीएअपरिभुया " कह्या छे वळी तेओनी गृहस्थाइ प्रमाणे घणुं अनुकपा निमित्ते दान आपनार कह्या छे तथा अभंग द्वार एटले तेओना आगणेथी अन्न वस्त्रादिकना अर्थीओ निराश थइने पाछा वळता नथी एवा दातार कह्या छे एवो गृहस्थ व्यवहार साचवता अनुकपा दाननी बुद्धि कही छे वळी निर्जरा ने मोक्ष कल्पना तो निग्रंथ मुनीश्वरोने प्रतिलाभता कही छे, एवो धर्म व्यवहार ए गुरु उपदेश छे, अने गृहस्थ व्यवहार ए तेओनी स्वइच्छामां छे, तेतो निर्वाधक छे पण हालना वखतमा पिळा तिलकवाळा शेवकोने पीळां वस्त्रधारी महात्माओ पचखाण एटले बंधी करावे छे के पीळां वस्त्र पहेरनार संवेगी सिवाय बीजा कोइने भात, पाणी, वस्त्र, पात्र कांइपण देवु नहीं ने देतो ससारमा रखडे, ए विगेर घणीक अविवेकतानो बोध करती वखते केटलाएक अविवेकीओ नियम लइ लेछे ने केटलाएकता लेता नथी पण पुछ्यानु के एवा नीयम करावधानी रीत कया जैनशास्त्रमा छे ? पण कहेवानु जे श्रावकना बारव्रत तथा संथाराना पाठ सहितना नवाणु अतिचार कह्या छे ते तमाम जाणवा योग्य छे तेमा पहेला व्रतना पाच अतिचार जाणे ते " बधे१ वहे २ छवीसये ३, अइभारे ४ भतपाणवोछेए ५ "

अर्थ—कोइ त्रस जीवने बधने बाध्यो होय १, कोइ त्रस जीवनो वध कर्यो होय २, कोइ त्रस जीवना अवयव छेद्या होय ३, कोइ त्रस जीवउपर अति भार भर्यो होय ४, तथा कोइ जीवोने अन्न पाणी भोगवतां अन्तराव्यां होय ५, ए पाच

कृत्यमार्थी कोइ कृत्य माराथी जाणपणे अजाणपणे बन्यु होयतो निष्फळ थाओ एम गृहस्थो सर्व जीव उपर दयाभाव राखी कोइ प्राणीनी अजीवीकानो भग क-रता नथी ने सुपात्र, कुपात्रनो भद पुरपुरो समजी दातारगुण यथायोग्य रीते सा-चवछे पण तमो महात्मा धर्माधीकारीनु नाम धरावीने तमारुज पड पोषण ने पर प्राण सोसननो धधो ल्इ बेठा एम खातरी थायछे पण पुछवानु क आठमु कर्म बाधवाना पाच प्रकार छे ते दानातराय १, लाभातराय २, भोगातराय ३, उप-भोगातराय ४, ने विरीयातराय ५, ए पाच शब्दना अर्थ तमो जाणता होता शास्त्रोक्त रीते बतावबा जोइए

५८ सिद्धातोमा कयु छे जे पाचमी सूमतिमा उच्चार पासवण, खेळ, जळ, सघाण, विगेरे पुदगळ परिठवता साधुओ पाचमी समतिमा उपयोग कर अने जतना स्थानक परीठवे ते तो न्यायमार्ग छे पण हाल्मा केटलाएक पीळा वस्त्र धारण करनार महात्माओ पायखाना बधावीने लगनीत छद्दनीतनी अवाधा टाळवा जाय छे तेमा पुछवानु के समुर्छीम प्राणीनी उत्पतिना ठेकाणा जाणता होतो शास्त्र रीते बतावबु जोइए वळी कहेवानु के केटलाएक दुरस्ती राखनार गृहस्थो पाय-खानानी गदकीथी कटाळीने बहार खुल्ला मेदानमा जाय छे अने साधुओ पायखा-नामा समुर्छीमनी उत्पति जाणीने दुर जगल्मा जायछे तेतो वाजबी छे परतु पायखानु बधावबु ते जैनधर्मना साधुओने अणघटतु छेक नहीं ?

५९ सिद्धातोमा एवा पाठ छेके इयात तिर्थकर ज्या विराज्या त्या इद्रादिक देवताए पोतानी इच्छाथी समोसरण रच्यु एमा भगवतनो उपदेश तथा आदश नथी एतो न्यायमार्ग छे पण आधुनीक जमानामा पीळा वेष धरनार महात्माओ एकेंद्रि प्रतिमाओना समोसरण रचवाना मोटा आरभनो बोध करीने मोटा वरघोडा चडाव छे ने ते बच्चे पोते चाले छे तथा पोताना मकान छोडान वरघोडा जोवानी खातर वेपारी दुकानपर किनखाबना रेजा पथरावीने वरधीचन्दजीनी रीते सर्व जणाओ बेसता हशे ? तेबी रीते वर्तनाराओने जैनधर्मना आराधक साधु कहवाय ?

६० सिद्धात बोधमा साधु धर्मनी आदिमा पाच महाव्रत परुप्या छ तेना रक्षण माटे भगवते घणो बोध करलो छे तेतो सत्य छे पण पुछवानु के ते महाव्र-तनो भागो केटलो छे ? न ते महाव्रत केटली कोटीए आदरी शकाय छे ? तथा तमो सावध धर्मनो उपदेश करोछो त पाच महाव्रतना कया भागाना आधारथी

चार शेवक आगळथी जइ पहोचीने वहारावनारने जाण करी ठाणा लीलोतरी काई पाणी विगरे आघु पाछु करावे छे ए विगेर केटलीएक वातो जोवामां आवे छे ते कृत्य साधु धर्मथी उलटी रीते छे के नहीं ?

५६ ठाणायग सूत्रमा शस्त्रने एकधारु खडग कहु छे अने दीवाने दस धारे खडग कहु छे माटे जैन मुनीओ ते आरभमा श्रीकर्ण शुद्धे चित्त आपता नथी ते तो न्याय मार्गछे पण हालमां वरधीचदजी विगेर पोताना मकानोमा रात्रे कायम फानसमा दीवा बळावे छे ने कहे छे जे प्रतिक्रमणनी वखत न जोइए पण पछी वाद नहीं वळी ते फानसमा दीवो कराव्या पछी खानगी सभा भरी देशावरना प्रपची पत्रो वांचवा या लखाववा या पालीताणाना डुगर उपरना देराओना रक्षणनी गोठवण करवी तथा गुरुपणाना नाम साथे खानगी वकीलात करवी ते कृत्य साधु धर्मनी रुक्तिथी उलटी रीते छे के केम ?

५७ भगवतीजीमा तुगीआनगरीना श्रावको " महीर्डीएअपरिभुया " कह्या छे वळी तेओनी गृहस्थाइ प्रमाणे घणु अनुकपा निमित्ते दान आपनार कह्या छे तथा अभग द्वार एटले तेओना आगणेथी अन्न वस्त्रादिकना अर्थीओ निराश थइने पाछा वळता नथी एवा दातार कह्या छे एवो गृहस्थ व्यवहार साचवता अनुकपा दाननी शुद्धि कही छे वळी निर्जरा ने मोक्ष कल्पना तो निग्रथ मुनीश्वरोने प्रतिलाभता कही छे, एवो धर्म व्यवहार ए गुरु उपदेश छे, अने गृहस्थ व्यवहार ए तेओनी स्वइच्छामां छे, तेतो निर्बाधक छे पण हालना वखतमा पिळा तिलकवाळा शेवकोने पीळा वस्त्रधारी महात्माओ पचखाण एटले बधी करावे छे के पीळा वस्त्र पहेरनार संवेगी सिवाय बीजा कोइने भात, पाणी, वस्त्र, पात्र कांइपण देवुं नहीं ने देतो संसारमां रखडे, ए विगेर घणीक अविवेकतानो बोध करती वखते केटलाएक अविवेकीओ नियम लइ लेछे ने केटलाएकतो लेता नथी पण पुछ्वानु के एवा नीयम कराववानी रीत कया जैनशास्त्रमा छे ? पण कहेवानुं जे श्रावकना बारव्रत तथा संथाराना पाठ सहितना नवाणु अतिचार कह्या छे ते तमाम जाणवा योग्य छे तेमा पहेला व्रतना पाच अतिचार जाणे ते " बंधे१ वहे २ छवीसये ३, अइभारे ४ भतपाणवोछेए ५ "

अर्थ—कोइ त्रस जीवने बंधने बाध्यो होय १, कोइ त्रस जीवनो वध कर्यो होय २, कोइ त्रस जीवना अवयव छेद्या होय ३, कोइ त्रस जीवउपर अति भार भर्यो होय ४, तथा कोइ जीवोने अन्न पाणी भोगवता अन्तराय्या होय ५, ए पाच

कृत्यमाथी कोइ कृत्य माराथी जाणपणे अजाणपणे वन्यु होयतो निष्फळ थाओ एम गृहस्थो सर्व जीव उपर दयाभाव राखी कोइ प्राणीनी अजीवीकानो भग करता नथी ने सुपात्र, कुपात्रनो भेद पुरपुरो समजी दातारगुण ययायोग्य रीते साचवेछे पण तमो महात्मा धर्माधीकारीनु नाम धरावीने तमारुज पइ पोपण ने पर प्राण सोसननो धधो ल्इ बेठा एम खातरी थायछे पण पुछवानु के आठमु कर्म याथवाना पाच प्रकार छे ते दानातराय १, लाभातराय २, भोगातराय ३, उपभोगातराय ४, ने विरीयातराय ५, ए पाच शब्दना अर्थ तमो जाणता होतो शास्त्रोक्त रीते वतावथा जोइए

५८ सिद्धातोमा कह्यु छे जे पाचमी सूमतिमा उच्चार पासवण, खेळ, जळ, संघाण, विगेरे पुदगळ परिठवता साधुओ पाचमी समतिमा उपयोग कर अने जतना स्थानक परीठवे ते तो न्यायमार्ग छे पण हाल्मा केटलाएक पीळा वस्त्र धारण करनार महात्माओ पायखाना बधावीने लगनीत वृद्धनीतनी अवाधा टाळवा जाय छे तेमा पुछवानु के समुर्छीम प्राणीनी उत्पतिना ठेकाणा जाणता होतो शास्त्र रीते वतावथु जोइए वळी कहेवानु के केटलाएक दुरस्ती राखनार गृहस्थो पायखानानी गदकीयी कटाळीने वहार खुल्ला मेदानमां जाय छे अने साधुओ पायखानामा समुर्छीमनी उत्पति जाणीने दुर जगलमा जायछे तेतो वाजवी छे परतु पायखानु बंधाववु ते जैनधर्मना साधुओने अणघटतु छेके नहीं ?

५९ सिद्धातोमा एवा पाठ छेके हयात तिर्थंकर ज्या विराज्या त्या इद्रादिक देवताए पोतानी इच्छाथी समोसरण रच्यु एमा भगवतनो उपदेश तथा आदेश नथी एतो न्यायमार्ग छे पण आधुनीक जमानामा पीळा वप धरनार महात्माओ एकेंद्रि प्रतिमाओना समोसरण रचवाना मोटा आरभनो बोध करीने मोटा वरघोडा चडावे छे ने ते वच्चे पोते चाले छे तथा पोताना मकान छोडीने वरघोडा जोवानी खातर वेपारी दुकानपर किनखावना रजा पथरावीने वरधीचन्दजीनी रीते सर्व जणाओ वेसता हशे ? तेवी रीते वर्तनाराओने जैनधर्मना आराधक साधु कहवाय ?

६० सिद्धांत बोधमां साधु धर्मनी आदिमा पाच महाव्रत परुप्या छे तेना रक्षण माटे भगवते घणो वोध करलो छे तेतो सत्य छे पण पुछवानु के ते महाव्रतनो भागो केटलो छे ? ने ते महाव्रत कटली कोटीए आदरी शकाय छ ? तथा तमो सावद्य धर्मनो उपदेश करोछो ते पाच महाव्रतना कया भागाना आधारथी

चार शेवक आगळथी जइ पहाचीने वहोरावनारने जाण करी ठाणा लीलोतरी काचु पाणी विगेरे आघु पाछु करावे ठे ए विगेर केटलीएक बावतो जोवामां आव छे ते कृत्य साधु धर्मथी उलटी रीते छे के नहीं ?

५६ ठाणायग सूत्रमा शस्त्रने एकधारु खडग कयु ठे अने दीवाने दश धारे खडग कयु छे माटे जैन मुनीओ ते आरभमा नीकर्ण शुद्धे चित्त आपता नथी ते तो न्याय मार्गछे पण हाल्मा वरधीचदजी विगेर पोताना मकानोमा रात्रे कायम फानसमा दीवा बळावे छे ने कहे छे जे प्रतिक्रमणनी वखते न जोइए पण पछी वाद नहीं वळी ते फानसमा दीवो कराव्या पछी खानगी सभा भरी देशावरना प्रपची पत्रो वाचवा या लखाववा या पालीताणाना डुगर उपरना देराओना रक्षणनी गोठवण करवी तथा गुरुपणाना नाम साथे खानगी वकीलात करवी ते कृत्य साधु धर्मनी रुक्तिथी उलटी रीते छे के केम ?

५७ भगवतीजीमा तुगीआनगरीना श्रावको " महीटीएअपरिभुया " कह्या छे, वळी तेओनी गृहस्थाइ प्रमाणे घणु अनुकपा निमित्ते दान आपनार कह्या छे तथा अभंग द्वार एटले तेओना आगणेथी अन्न वस्त्रादिकना अर्थीओ निराश थइने पाछा वळता नथी एवा दातार कह्या छे एवो गृहस्थ व्यवहार साचवतां अनुकपा दाननी बुद्धि कही छे वळी निर्जरा ने मोक्ष कल्पना तो निर्ग्रंथ मुनीश्वरोने प्रतिलाभता कही छे, एवो धर्म व्यवहार ए गुरु उपदेश छे, अने गृहस्थ व्यवहार ए तेओनी स्वइच्छामा छे, तेतो निर्बाधक छे पण हालना वखतमा पिळा तिलकवाळा शेवकोने पीळां वस्त्रधारी महात्माओ पचखाण एटले बंधी करावे छे के पीळा वस्त्र पहेरनार संवेगी सिवाय बीजा कोइने भात, पाणी, वस्त्र, पात्र काइपण देवु नहीं ने देतो संसारमां रखडे, ए विगेर घणीक अविवेकतानो बोध करती वखते केटलाएक अविवेकीओ नियम लइ लेछे ने केटलाएकतो लेता नथी पण पुछवानु के एवा नीयम कराववानी रीत कया जैनशास्त्रमा छे ? पण कहेवानु जे श्रावकना बारव्रत तथा संथाराना पाठ सहितना नवाणु अतिचार कह्या छे ते तमाम जाणवा योग्य छे तेमां पहेला व्रतना पाच अतिचार जाणे ते " वधे१ बहे २ छवीसये ३, अइभारे ४ भतपाणवोछेए ५ "

अर्थ—कोइ त्रस जीवने बधने बाध्यो होय १, कोइ त्रस जीवनो वध कर्यो होय २, कोइ त्रस जीवना अवयव छेद्या हाय ३, कोइ त्रस जीवउपर अति भार भर्यो हाय ४, तथा कोइ जीवोने अन्न पाणी भोगवता अटकाव्यां होय ५, ए पाच

धर्मनी आराधना कर छु तेवि रुचीए सर्धा आणु छु, प्रतित आणु रुचवुं छु वळी धारछत आदरता छ प्रकारना आगार राख्या हता ते आगारथी पण निवर्तु छु एम घणी वर्षोओनी साथे पहली पडिमा जाणवी " जाव " अगियारमी पडिमासुधी घणी जातनी वर्षोओ करता जाय छे वळी अगियारमी पडिमा आदरता साधु तो नहीं परतु साधुनी रीतेज तपने पारणे अस्नान्फि ग्रहण करनारा कथा छे ते तो श्रावक धर्मनी रीत छे पण हालना वखतमा शरीर धर्मना मोहीत प्राणीओ निराश्रवी श्रावकनी करणींथी कपायमान थइने उत्तम करणीं न करता पोपा हतना नाम पाडी त्रण काळ पाषाण प्रतिमाने वदन पुजन करेछे तो पुछवानु के समकितीं श्रावकोनी करणींथी भिन्न छे के केम ?

६५ प्रतिमा, देरा, ढढ अने धजा प्रतिष्ठवानी विधी कया सिद्धातना आधारथी करो छो ? वळी ते प्रतिष्ठा ग्रहस्थोने करावो छो के तमो पात्मा करो छो ? वळी तमारा धर्मी आचळगच्छवाळा कहेछे जे गृहस्थ प्रतिष्ठा कर अने तमे कहोछो जे साधु प्रतिष्ठा कर ए बेना तकरारनी समाधानी वितरागना मुळशास्त्रोना आधारथी बताववी जोइए

६६ दिगंबर मतवाळा कहेछे के नग्न प्रतिमा पुजवी अने तमो कहो छो जे नग्न न पुजवी एम तमारो प्रतिमा मत छता नाहक विवाद करी भेद पाडो छो तेनु शु कारण ?

६७ सिद्धातामा कह्यु छे के तिर्थंकरादिक चर्म शरीरा साधुओ अतक्रियाना वखतमा केटलाएक पद्मासनथी सिज्या तथा केटलाएक उभायका सिज्या तेमतो मुळशास्त्रमां छे परतु तमो प्रतिमानी स्थापना बेठा, सुता अने उभानी करोछो के बेसारी राखवामां समजो छो ? ते सिद्धातमा होय तो बताववु जोइए

६८ प्रतिमा उपर यक्षनी प्रतिमा करोछो ते यक्ष प्रतिमान नवरावता तेना मेलनु पाणी निचेनी प्रतिमा उपर पडे छे तेमा पुछवानु क तमोने तथा यक्षने आशातना थइ के नहीं ? ने थइ होय ता ते चोराशी माहेली कइ आशातना छे ? ने तमारा मानवा प्रमाणे तेने शु फळ मळशे ?

६९ प्रतिष्ठाविधी करता तमा पीळा वस्त्रवाळा मात्माने तथा तमारा शेवक श्रेवकीने तथा ते प्रतिमाने कयो चद्र पद्मचता तथा केय लगने प्रतिष्ठा करो छो ? वळी प्रतिष्ठा करता एकसो आठ कुवाना पाणी तथा घणा स्थळना पाणी तथा गोरु चदन तथा प्रतिमाने माथे कसुबानु रगीत वस्त्र तथा गळ अगीठानो काटलो

करोछो ? वळी सर्वथी महाव्रत आप्यां तेनी कोटीमांथी एक कोटी विराधे तेने साधपणामा गणवो के गृहस्थपणामा गणवो ? ए सर्व प्रश्नना उत्तर सत्य सुत्रना आधार प्रमाणे बतावबा जोइए

६१ समकिती गृहस्थ गुरुमुखथी धर्मउपदेश साभळीने यथाशक्ति वैराग पामीने पोताना घरमा वार परवी लीलोतरी विगेर छकायनो आरभ तथा कुशिपक सेववा विगेरे अनेक विधीना पचखाणो करे छे एतो योग्य रीते लाभनुज कारण छे वळी दर महिनाना बार दीवस कल्पीने आश्रव त्यागवामा चुकता नथी वळी ज्यारे पजुसण पर्व आवे त्यार घणीज रीतथी आरम समारभनी बधीओ करीने धर्मध्यान, सवर, सामायक, पोषा, प्रतिक्रमण विगेरे सवरकर्णी करवा चुक नहीं वळी धर्माचार्योने पण तेओनी अनाश्रव कर्णीने पुष्टि करावबा माटे निर्वद्य भाषाथी वैरागदशा पामे तेओ उपदेश करवो जोइए पण ते गृहस्थीने निराश्रवी धर्म ध्याननना वखतमा वैराग वृद्धिनो उपदेश न देता उलटी रीते देरांमा वेटेली प्रतिमानी खातर धुप, दीप, फुल, फळ, वनस्पति नैवेद विगेर छकायना आरंभ सहित पुजा करवानो उपदेश करोछो मा पुछवानु के ते गृहस्थो घर कार्यना आरंभथी छुटीने धर्मस्थानके आव्या, तेने प्रतिमा पुजनना आरंभनो लाभ बतावोछो, पण घरना करेला आरभनु निवारण धर्मस्थानकमां धर्मध्यान करतां मटे पण धर्म स्थानकमा करेला आरभनु निवारण करवाने बीजु क्यु स्थानक छे ?

६२ सिद्धांतोमा तिर्थंकरादिक सर्व साध साध्वीओए भव्य प्राणीने निर्वद्य भाषाथी सागार अणगार धर्मना व्रतनो बोध कर्यो ने यथाशक्ति प्रमाणे भव्य जीवोए सागार अणगारनां व्रत आचरण कर्या,वेज व्रतोने निरअतिचारपणे पाळवानो आदेश कर्यो तेतो न्यायमार्ग छे परंतु ग्रथकरनारे निर्युक्तीमां ग्रहस्थोने पुजाना आरभनो आदेश आप्यो ते केवो जुलम छे ? माटे ते सिद्धातनी युक्तिथी योग्य रीते बतावबु जोइए

६३ समवायंग सुत्रना तेत्रीशमे समवागे धर्माचार्योनी तेत्रीश आशातना टाळवी कहीछे अने ग्रंथकर्ता प्रतिमानी चोराशी आशातना कहेछे ते सिद्धांतना मुळ साथे लखवी जोइए

६४ दशासुतखध सुत्रमा श्रावकनी अगियार पडिमानो अधीकार छे तेमां पहेली दर्शन पडिमा आदरता श्रावक एम चितवे छे हु उत्कृष्ट रीते श्रावकना सर्व

धर्मनी आराधना कर छु तेवि रुचीए सर्धा आणु छु, मतित आणु रुचवुं छु वळी वारव्रत आदरता ७ मकारना आगार राख्या हता ते आगारथी पण निवर्तुछु एम घणी वर्षीओनी साथे पहली पडिमा जाणवी " जाव " अगियारमी पडिमासुर्घी घणी जातनी वर्षीओ करता जाय छे वळी अगियारमी पडिमा आदरता साधु ता नहीं परतु साधुनी रीतेज तपने पारणे अस्नादिक ग्रहण करनारा कह्या छे ते तो श्रावक धर्मनी रीत छे पण हालना वखतमा शरीर धर्मना मोहीत माणीओ निराश्रवी श्रावकनी कर्णीथी कपायमान थइने उत्तम कर्णी न करता पोपा व्रतना नाम पाडी ग्रण काळ पाषाण मतिमाने वंदन पुजन करछे तो पुछ्वानु के समकिती श्रावकोनी कर्णीथी भिन्न छे के केम ?

६५ मतिमा, देरा, दंड अने धजा मतिष्ठवानी विधी कया सिद्धातना आधारथी करो छो ? वळी ते मतिष्ठा ग्रहस्थोने करावो छो के तमो मात्मा करो छो ? वळी तमारा धर्मी आचळगच्छवाळा कहछे जे गृहस्थ मतिष्ठा करे अने तमे कहोछो जे साधु मतिष्ठा कर ए वेना तकरारनी समाधानी वितरागना मुळशास्त्रोना आधारथी वताववी जोइए

६६ दिगंबर मतवाळा कहेछे के नग्न मतिमा पुजवी अने तमो कहो छो जे नग्न न पुजवी एम तमारो मतिमा मत छता नाहक विवाद करी भेद पाडो छो तेनु शु कारण ?

६७ सिद्धातामां कह्यु छे के तिर्थंकरादिक चर्म शरीरा साधुओ अंतक्रियाना वखतमां केटलाएक पद्मासनथी सिज्या तथा केटलाएक उभाथका सिज्या तेमतो मुळशास्त्रमा छे परतु तमो मतिमानी स्थापना वेठा, सुता अने उभानी करोछो के वेसारी राखवामा समजो छो ? ते सिद्धातमा होय तो वताववु जोइए

६८ प्रतिमा उपर यक्षनी प्रतिमा करोछो ते यक्ष मतिमाने नवरावता तेना मेलनु पाणी निचेनी मतिमा उपर पडे छे तेमा पुछवानुं के दमोने तथा यक्षने आशातना थइ के नहीं ? ने थइ होय तो ते चोराशी माहेली कइ आशातना छे ? ने तमारा मानवा परमाणे तेने शु फळ मळशे ?

६९ मतिष्ठाविधी करता तमा पीळा वस्त्रवाळा मात्माने तथा तमारा शेवक शेवकीने तथा ते मतिमाने कयो चंद्र पद्माचता तथा केव लगने मतिष्टा करो छो ? वळी मतिष्टा करता एकसो आठ कुवाना पाणी तथा घणा स्थळना पाणी तथा गोरुं चदन तथा मतिमाने माथे कसुवानु रगीत वस्त्र तथा गळे भगीठानो फाटलो

तथा हाथे मिंढोळ तथा मरडार्शींगी तथा ग्रीवाए मूतरनो दोरो बाधवो ते तथा प्र तिमानी आसे आजण आंजवु ते विगेर अनेक कारणो करी बेसाडो छो तेमा पुछ- वानु के ए सर्व बाळलीलानी वीधी करो छो तो अचम थाय छे के एथी तमारी ग्रथ अवस्थानु सु रक्षण थवानु छे ते एना उपरथी आटली मनावर पुर्ण करो छो वळी तेमां बेसारवानो अर्थतो बेसवु थाय छे परतु भरावानो अर्थ शुं ? ए विगर हकीकत वितरागना वचनना आधार प्रमाणे बतावबी जोइए वळी पुछवानु के एकसो अने आठ कुवाना पाणीमा बीजा अनेक द्रव्य भेळा करावोछो ते साधुना सतावीस गुण माहेलो कयो गुण छे ?

७० चोवीश प्रतिमा माहे एक मुळ नायक करीने आभ्रणादिक अलंकार स हित मुखट, केशर, विगेर अत्यत भोगोपभोग चडावीने उचित स्थानक बेसाडो छो अने पछावनी त्रेवीश प्रनिमाने नानी करीने थोडाक भोगोपभोगथी समजावीने सेवक दरज्जे नीचे आसने बेसाडो छो तेमा पुछवानुं के तिर्थंकरोना नामथी तमे बेसाडवा धारता होतो ते मोक्ष गएला तिर्थंकर पदमा तथा ज्ञान दरशनादिक चारित्र गुणमां घटवध हता नहीं माटे आ तमारुं कृत्य तेओनी रीते सभवतु नथी परंतु चाकर ठाकरना दरज्जानी रीते तो चार जातना देवताओमा सुरधनना रीते संभवे छे तो आवो मपच कया कर्मना आधारथी करवो पडेछे ?

७१ तमे प्रतिमानी नीचे नवग्रहनी प्रतिमा करोछो तथा देरामा पेसतां क्षेत्र- पाळनी प्रतिमा करो छो तो पुछवानु के ते देव तरीके बेठेली प्रतिमाना परणेतरमां विघ्न थइ जवानो संभव छे के ? लोकोत्तर मिथ्यात्वथी सतोष न पामतां लौकिक मिथ्यात्वमा मग्न थया तेनुं वितराग भाषीत शास्त्रमां केवी रीते छे ?

७२ तमो प्रतिमा आगळ पान, फळ, फुल, बळ बाकळा, पकवान, धान्य, नैवेद तथा सोनु, रुपुं, वस्त्र विगेरे अनेक वस्तुओ धरो छो तेमा तमारुं बोलवु एम याय छे के देवने चडावेली वस्तु सवेगी विगेर गृहस्थो खाय तो नकादिक संसा रमा भ्रमण करे वळी मजकुर प्रतिमाने चडावेली चीजोमाथी एक चोखानो दाणो पण चकला सरखुं चणे तो ते पण नर्कादिकमां जाय एम कहो छो माटे नर्कादि कमां जवाना डरथी तमो तो लेवाज नहीं हो अने ते वस्तुओमाथी केटलीएक खावा पीवानी गोठीने तथा माळीने आपो छो ते सर्व वस्तु देवनीज छे तो पुछ वानुं के ते माळी तथा गोठीने तमो सर्व जेवा भगतोनी तरफथी बिचारा अजा

णने स्व कुटुंब साथे नर्कादिक गतिओमा रखळाववा धारेलु छे ? वळी देवने चडा-येलु रोकडनाणु भंडारमा मुको छो तथा वस्त्र धान्य विगेरे वेची नाणा करीने भंडा-रमा मुको छो तो ते वेचातु लेनारने पण तमोए ससारमा रखळाववा धारेलु हशे वळी देवका नाणाथी देरा प्रतिमा समरावो छो तेमा कडिया, दाडिया, स्लाट, चुनावाळा तथा सुतार विगेरनी रोजी देवका नाणाथी चुकावो छो तेनु पण तमो-ए भलु न इच्छु तथा हजारो माणसना साधारणना नाणाथी भंडार भर्या ते नाणा-नी खावकीथी अमदावाद, मुवाइ, भावनगर, पालीताणा विगेरेना गृहस्थो मोटा वेपारी थइ पडया छे, ते मख्यात छे तेने तो कोण जाणे तमारा कहेवा प्रमाणे केटलोए काळ रखडवा धारलु हशे ? पण तमोए तमारा साधर्मी भाइओनु पण भलु इच्छेलु नथी मतलब के तमे नाणु मेळ कर्यु तो तेओने खाइ जवानो विचार थयो ने तमारा कहेवा प्रमाणे तेओ सर्व धर्म हारी जइने नर्कादिकनु टाकु पण पाडी दीधु हशे माटे ठेसट केहेवानु एटलुज के सर्व जणाने ससार भ्रमण करावखानी खातर देरामा वेठेली प्रतिमाओज कार्णीक भुत छे माटे अमारा पुर्व सबधी अजाण मि-त्रोने सुहित शिक्षा आपवा इच्छीए छीए के सिद्धातना आधार उपर उपयोग करी प्रतिमा मंडन न करताहो तो नाणा विगेरनी खावकी पण न थात ने दुरगतिमा पण जवानु कारण न रहत पण पुछवानु के अनत ससार वधारवाना कारण तमोए कया मुळमूत्रथी स्थापन कर्या छे ?

७३ तमोए अठोतरी सनातरनी विधी तथा आरती मगळ तथा पेहेरामणीनी विधी तथा लुल पाणीनी विधी तथा सचित मीठु अग्नि माह होमीने वेर हवन करो छो (जेम हालमा महवामा सवेगीए कराव्यु हतु तेम) ए विगेरे महा आर-भना कारणो जैनने एवरुप केना उपदेशथी तथा कया सत्य सिद्धातना आधा-रथी करा छो ?

७४ सिद्धमभद्र सुरीए देव उपासनाथी यज्ञ कुडमाथी थमणा पारश्वनाथनी मुर्ती काढी उज्जन नगरीए शकरना देवळमा शिवलींगमाथी सिद्धसेन दीवाकर महकाळस्थान पसाए एवती पारश्वनाथनी मुर्ती काढी वळी तेनु महात्म वधारवा माटे तेओए मोटा ग्रथ वाधी आरभोपदेश कर्यो ते कळीनु मवर्तमान छे परतु ते माहला सिद्धातोमा मतिमानो महिमा मानकी तरीके काइ पण न मळे तेनु शु कारण ? वळी ज्यारे काइ तमोने पुछनार मळे त्यार घणी तकरार करवा तैयार थाओ छो तेमज फाफा मारता काइ म सूझे त्यार सासवती तथा द्रौपदीनी मति-

नी वाय मरवा दोडी जाओ छो पण कार्मीक प्रतिमानो महिमा सिद्धातापार
ाणे वतावको जोइए

७५ साडापाच वरससुधी अजवाळी पाचमना उपवास करावी ज्ञानपचमी स्था
छो ने तेनी पुर्णावतीए उजमणा करावो तेमा पाच सोनाना तथा पाच रुपाना
ना विगेर धन धान्य पकवान सहित द्रव्य पुस्तकोनी आगळ मुकावोछो तेमा पुछ
नु के मजकुर पाचमनी विधीनो महिमा सिद्धातोमा केवी रीते छे ? ते बतावबु
ोइए वळी एम समजवामा आव्यु छे के मजकुर पाचमनी विधी तमारा साधर्मी
ाचळगच्छवाळा मान्य करता नथी तेनु शु कारण छे ?

पुतळी देखी राग ने प्रतिमा देखी वैराग उपजे, ते प्रश्नोत्तर

केटलाएक मति भ्राती लोको कहे छे जे अमोए प्रतिमा स्थापन करली छे, अमारे वैरागनुज कारण छे द्रष्टांत जेम चितारानी चीतरेली पुतळीने देखता ामीजनोना मनमा विषयादिक राग उपजे छे तेमज प्रतिमा दीठे वैराग उपजे छे ेम कहेनारानी श्रद्धामा कलंक समये छे कारण के चितारानी चीतरेली पुतळी ाीतो विषय उपजवाना अवयवो प्रत्यक्ष छे माटे विषय प्रगट थायज द्रष्टात जेम कोइ पुरुष निद्राने आधीन थयलो होय ते वखते स्वप्नातरमा कोइ स्त्रीनो विषय करे छे त्यारे ते पुरुषनो मद पातन थइ जाय छे ने तेने मियळ खडननु कर्म ला ागवानो संभव छे सबब के अनादि काळथी मिथ्यात्वने उदये वार जातना अव्र तथी कर्मबंधननी क्रिया सदाकाळ लागुज पडेली छे माटे चित्रनी पुतळी देखताम विषयादिक कर्मो बंधाय तेमा शु आश्चर्य छे ! वळी ते पुतळी विगेरे केटलीएक धावतो जोवानी प्रश्नव्याकरण सुत्रमां तथा दशवीकाळीक सूत्रमां भगवते साधु साध्वीओने मना करेली छे तेता न्याय मार्ग छे पण तमो प्रतिमा जोवामा वैराग प्रगट थवानो कहोछो, ते कदी मळ्तुं आवतु नथी द्रष्टात जेम कोइ अनार्य पुरुष उपर द्वेष करीने लाकडी मुसलनो प्रहार कर तो अवश्य कर्म बधाय पण ते अनार्य पुरुषने साधु मुनीराजनी कल्पना करीन वांदे पुजे या आहारादिक चौद प्रकारनु दान देतो साधु गुणनी रीते शुद्ध निजरा न थाय वळी कोइ समकिती गृहस्थ पोताना आयुष्यने अते घर बार धन धान्य विगेर स्थावर जगम मिल्कत तथा बेटा बेटी स्त्री विगेर जेमां पोतानु धणीपणु छे, ते सर्वने वोसीरावे नहीं ने मृत्यु

पामी परलोके जाय तो पछात रहेला बेटा बेटी विगेर जे काइ आरभ करे तेनी रावई ते मरनार धणीने अवश्य जाय एमतो छे परतु पछात रहला बेटा बेटी वि-गेर धर्म ध्यान करे, ते माहलो धर्मनो हिस्सो तेने न जाय वळी जेम गाडरनी उननो बनावेलो कोइ पण पदार्थ आश्रवना काममा वापरे तो ते पापरुपी रावइ गाडरने जाय छे. पण तेज उनना ओघा, केसरीआ, कम्बळने साधु तथा श्रावको धर्मोपगरण करी जतनाना कार्यमा वापर तो ते जतनानो लाभ गाडरने न जाय. वळी कोई मनुष्य तिर्यंचादिकना चित्र चितरीने तेने द्वेषबुद्धिथी हणे तो अवश्य पाप लागे छे परतु ते चित्रोने जमाडवानी बुद्धिए भोजन पान विगेर मोढा आगळ मुकीए तो दाननो लाभ निर्जरा हतुए कदी न मळे ए मजकुर चार दाखलाओनी रीते प्रतिमा देखता वैराग न उपजे ते शास्त्र रीते खचित समजवु परतु कोइ भव्य जीवने तेवा कारणथी वैराग उपजे तो तेनु नाम प्रतेक बोध कहेवाय छे ते अमुक पदार्थ जोइने महा वैराग पामी भरतेश्वर विगेरनी रीते सर्व आरभ छोडीने सजमानुष्ठानथी मोक्ष पद पामे, एम सिद्धातमा कहेलु छे वळी ते प्र क बोध थवाना तो अनेक कारण छे ने ते कारण जोताज प्रतेक बोधी पुरुषोनो सर्व आ-रभ छुटी जाय छे अने तमो प्रतिमाने जोई महा आरभमा धसी पडोछो माटे प्रतेक बोधनी उपमा तमोने बील्कुल लागुज पडती नथी सबब के प्रतिमा देखताज तमोने महा आरभनी धुरी आवे छे द्रष्टात जेम कोइ माणसने हडकायो श्वान आभडेलो होय ते माणस पाणीमा पोतानु प्रतिबिंब देखे त्यार तेने हडकवा चाले छे तथा वर्षादनी गर्जना श्रवण करताज घणा उन्नमादनी मस्तीमा आवी जाय छे तेवीज रीते तमो अज्ञान प्रतिओने मिथ्यात्व द्रष्टि कुगुरुरुप श्वान आभडवाथी भ्रयरुप शब्दोनी गर्जना साभळीने प्रतिमा रुप जळना समुद्रमा तमारी प्रबळ जड-तानो आभास जोइने हिंसा मृषानी कर्णीरुप हडकवा चालेलो जणाय छे तेनी शातीने माटे ज्ञान वैराग्य रुप अमृत पीओ तो गुण कर्ता थाय पण खातरी छे के वितरागभाषित मुळसिद्धातनो जे उपयोग नकर तेनो जुल्म हडकवा मटवो मुश्केल छे

हिंसा पुजनथी दया माने छे ते प्रश्नोत्तर

केटलाएक अजाण मित्रोनु बोलवु एम थाय छे जे अमे प्रतिमानु पुजन क-रीए छीए तेमा हिंसा थाय छे ते सर्व स्वरुप हिंसा छे एटले सामाना देखवामा हिंसा छे परतु अमारा अनुबधमा तो दयानो लाभ छ एम कहनाराना उत्तरमा

कहेवानु के श्री भगवती सूत्रना पदरमा सतकमा कयु छे जे गोशाळाना करला उपद्रवथी श्री महावीरने शरीर लोहखड पाडो थयो पछी छट्ठा मासने छेले ढीबखे मेढी गाम पधार्या, त्यांनी रहिश एक रेवती गृहस्थणीए कहोळा पाक नीपजावता भगवतने मति लाभवानी सकल्पना करी हती पण ते सदोष आहार लेवानी सिंह अणागारने मना करेली हती ने निर्दोष बीजोरापाक लेवानी भलामण करी हती मतलबके पोते सदोष भोजन लेवाना अर्थी नथी तेमज रेवतीना शावय विचारनी भक्तिने स्वीकारी नहीं एम तो सिद्धातोमा छे परंतु तमे कहो छो जे मह भ क्तिमां आरभनु कर्म लागे नहीं तो पुछवानु के ए वचन वितरागना छे क क्यो आपेज मुख मगळीआ थया छो ? पण तमारु बोलवु प्रत्यक्ष मुळसुत्रोथी विरुद्ध जणाय छे सबब के पान फळ, फुल, नैवेदादिक प्रतिमानी भक्तिमा अर्पण करो छो पण ते प्रतिमाओ जडताने लीधे स्वीकारती नथी अने ते वस्तुओ प्रतिमान ठगीने धुर्तजनो लइ जाय छे एवी कल्पित भक्तिमा तमारी स्वइच्छाए लाभ मेळ ववा धारो छो पण कहेवानु के ख्यात तिर्थंकर, गणधर, आचार्य, उपाध्याय, सर्व_साधुओनी अतरगथी भक्ति करवा माटे कोइ गृहस्थीए तमारी रीते आरंभ करीने लाभ लेवा धारेलुं नथी एतो न्याय मार्ग छे जड प्रतिमानी भक्ति करतां लाभ मळे कहो छो ते उपर एम कहेवानुं के कोइ गृहस्थ ए मजकुर तिर्थंकरादिक त्यागी पुरुषने माटे अनेक जातना अन्न, पान, सुखडी, मुखवास विगेरे छकायना आरभथी नवा नीपजावी तेमना पात्र पोखे तथा गाडी, वेल, रथ, पालखी, मियाना, हाथी, घोडा विगेरे वाहनो उपर ते पुरुषोने बेसाडे तथा अनेक जातना जळथी स्नान मजन विलेपन ते पुरुषोने करावे तथा अनेक जातना वस्त्र, आभ्रण, एकावळ, कनकावळ, रत्नावळ, मुक्तावळ, श्रीसरा, नवसरा, अढारसरा हार पहेरावे तथा मुकुट, कुडळ, बाजुबध, बेरखा विगेरे पहेरावे तथा चुवा, चदन, चपेल, मोगरो, जाइ, जुइ, गुलाब, केवडो, मजकुंभ, डोलर, डमरा विगेरेना सुगधी अतरथी तेओना शरीर, वस्त्र, आभुषण, विगेरे वासित करे ए विगेरे अनेक चीजोथी सारभी भक्तिथी तिर्थंकरादिक त्यागी पुरुषोने संतोष उपजावे तो तमारा कहेवा प्रमाणे ते भक्ति करनार पुरुष तरत मोक्ष जाय सबब के तमो मुग्ध महळ मळीने मजकुर त्यागी पुरुषाना नामनुं कलेवर स्थापी महा आरंभथी पुजन करी निरजरा अने मोक्ष फळ लेवा बतावो छो तो साक्षात तिर्थंकरादिकन माटे आर भथी भक्ति कर तेने तो तमारा करवा अनंतो लाभ मळवो जोइए पण एवा सार-

मथी तिर्थकरादिके भक्ति स्वीकारी नथी तथा पोतानी खातर आरभनो उपदेश दइने कोइने नर्कनो मार्ग पकडावी आप्यो नथी परतु तेओए तो एक मोक्ष मार्ग निरुपण करलो छे ते मार्ग तमो सारभ मक्रतिवाळा मित्रोने अनुकुळ न पडता उलटी रीतथी कुदेव, कुगुरुने कुधर्म ए त्रण कारणो कर्म वाधवाना मळी गया छे तेनो मर्म भेद आप मित्रो न समजता अवळ चश्मा सारंभी भक्तिमा फसाया पण ते विपाक उदे आवेथी केवु पस्तावु पडशे ?

नव कोटीए वृत लइने खडन करे छे, ते प्रश्नोत्तर

केटलाएक पीतावरधारी पुरुपो कहे छे जे अमोए नवकोटीए पाच महाव्रत आदर्या छे अने पाच आश्रवने मन, वचन ने कायाए करी शेवीए नहीं, शेवरावीए नहीं ने शेवताने भलु जाणीए नहीं एम कहे छे पण साधु धर्म राखनार आत्मार्थी पुरुपोने माटे शास्त्रोक्त रीते ते वचन तो सत्य छे पण ते गुण तेओने मगट थएला नथी मतलब के तेओना अगमा नव कोटी बोधनो असर थयो होय तो कहेवानु के आ पीळा तीलकवाळा वणिको महा आरभ कर छे, ते कोनी निशाळना भणतरथी करे छे ? अने एवी कल्पित वार्ताओ काइ तेमना चोपडामा माडेलो होती नथी तो खातरी छे के ते वेषधारी मित्रो शीखवाडे छे तेमज शेवको करे छे द्रष्टात जेम मदारी रींछ, वादरा, बकरा, उदर, नोळीआ विगेर जानवरोने जे जे रमत शीखवाडे ते प्रमाणे ते जानवरो शीखे छे ने दुनिआने खेलथी रीझवी मदारी पोतानु गुजरान चलाव छे तेमज वेषधारीरुप मदारीओ पोताना भगतोरुप मर्कटोने ग्रथवचनरुप दोरोथी वाधी प्रतिमा देवळरुप चोकमा अनेक नाच करावीने पोतानी आ जीवीका गुज र छे ते सत्य छे सबब के जो तेओमा नवकोटीए आरभना नियम होय तो मुग्ध जनोने आरभनो उपदेश काण आप ? माटे तेओमा नवकोटीना नियम देखाता नथी

हवे नवकोटी छे एतो पाच आश्रवनो त्याग करनारा पच महाव्रतधारी साधुओ शास्त्रअनुसार न्या धर्म चलावनारने आदरवा लायक छे सबब क जैन मुनीओना सर्वोपरी तिर्थकर महाराज पोते सर्व आरभ त्याग करी निर्वद्य कर्णी कर छे तेमज ते तिर्थकर महाराजना शासनमा चालनार सर्व साधु साध्वीओ पण निरारभी थइने नवकोटीए आश्रवनो त्याग करी निर्वद्य कर्णी करीने महा निरजरा उपारजेछे तेवीज निर्वद्य कर्णीनो बोध श्रोता मडळन सभळावीन आरभ छोडववा धार

कहेवानु के श्री भगवती सूत्रना पदरमा सतकमा कयु छे जे गोशालाना करेला उपद्रवथी श्री महावीरने शरीरे लोहीखड झाडो थयो पछी छट्टा मासने छेले दीवसे मेंढी गाम पधार्या, त्यानी रहिश एक रेवती गृहस्थणीए कहोळा पाक नीपजावतां भगवतने प्रति लाभवानी सकल्पना करी हती पण ते सदोष आहार लेवानी सिंहा अणगारने मना करेली हती ने निर्दोष बीजोरापाक लेवानी भलामण करी हती मतलबके पोते सदोष भोजन लेवाना अर्थी नथी तेमज रेवतीना सावद्य विचारनी भक्तिने स्वीकारी नहीं एम तो सिद्धांतोमा छे परंतु तमे कहो छो जे प्रभु भक्तिमा आरभनु कर्म लागे नहीं तो पुछवानुं के ए वचन वितरागना छे के तमो आपेज मुख मगळीआ थया छो ? पण तमारु बोलवु प्रत्यक्ष मुळसुत्रोथी विरुद्ध जणाय छे सबब के पान फळ, फुल, नैवेदादिक प्रतिमानी भक्तिमा अर्पण करो छो पण ते प्रतिमाओ जडताने लीधे स्वीकारती नथी अने ते वस्तुओ प्रतिमाने ठगीने धुर्तजनो लइ जाय छे एवी कल्पित भक्तिमा तमारी स्वइच्छाए लाभ मेळववा धारो छो पण कहेवानुं के हयात तिर्थंकर, गणधर, आचार्य, उपाध्याय, सर्व साधुओनी अतरंगथी भक्ति करवा माटे कोइ गृहस्थीए तमारी रीते आरंभ करीने लाभ लेवा धारेलु नथी एतो न्याय मार्ग छे जड प्रतिमानी भक्ति करतां लाभ मळे कहो छो ते उपर एम कहेवानुं के कोइ गृहस्थ ए मजकुर तिर्थंकरादिक त्यागी पुरुषने माटे अनेक जातना अन्न, पान, सुखडी, मुखवास विगेरे छकायना आरंभथी नवा नीपजावी तेमना पात्र पोसे तथा गाडी, बेल, रथ, पालखी, मियाना, हाथी, घोडा विगेरे वाहनो उपर ते पुरुषोने बेसाडे तथा अनेक जातना जळथी स्नान मंजन विलेपन ते पुरुषोने करावे तथा अनेक जातना वस्त्र, आभ्रण, एकावळ, कनकावळ, रत्नावळ, मुक्तावळ, श्रीसरा, नवसरा, अढारसरा हार पहेरावे तथा मुकुट, कुडळ, बाजुबध, वेरखा विगेरे पहेरावे तथा चुवा, चदन, चंपेल, मोगरो, जाइ, जुइ, गुलाब, कमळो, मजकुब, डोलर, डमरा विगेरेना सुगंधी अतरथी तेओना शरीर, वस्त्र, आभुषण, विगेरे वासित कर ए विगेरे अनेक चीजोथी सारभी भक्तिथी तिर्थंकरादिक त्यागी पुरुषोने संतोष उपजावे तो तमारा कहेवा प्रमाणे ते भक्ति करनार पुरुष तरत मोक्ष जाय सबब के तमो मुग्ध मडळ मळीने मजकुर त्यागी पुरुषोना नामनु कलेवर स्थापी महा आरंभथी पुजन करी निरजरा अने मोक्ष फळ लेवा धसावो छो तो साक्षात तिर्थंकरादिकने माटे आरंभथी भक्ति कर तेने तो तमारा करतां अनंतो लाभ मळवो जोइए पण एवा सारं

वीतरागनी स्त्राने सार्पा कयु जे आ मारी छबीना शेवाथी तारो प्रतिष्ठता धर्म साच-वजे एम कही प्रदेश गयो हव ते धणीना कहवा प्रमाणे चित्रनी भक्ति करी ते स्त्री सन्ती सतोषभर रहती हती

वेपारार्थ प्रदेश गएला पुरुषनु कोइ मन्वाइना कारणथी मृत्यु थयु ते पछी प्रदेशमा साथे गएला मित्रोए पत्र लखी मरनारनी स्त्रीने जाण कर्यु ते स्त्रीए पति मृत्युना भयानक शोकथी महाकल्पना करी हाथमा पहरला चुडा विगेर सोहासण-रुपी शणगार ने पुरुषनी पछवाड उतारी रडापो भागववा रही पण धणीना आपे-ला चित्रथी साहासणपणु रमु नहीं तेमज मरनार धणीना चित्रथी घरनो कारभार चाले तेवु पण न रयु हवे मजकुर चित्रमा चाय तेटलो भाव मेळवीने ससारी सुखनी इन्छा कर पण ते स्त्रीनी कल्पना कदी समे नहीं तेवीज रीते निर्गुण प्रतिमा तथा गुरुना चित्रोमा भाव मेळवता लाभनो सभव नथी एम खातरी पुर्वक समजवु " बीजो द्रष्टात " वळी जेम कोइ पुरुष साक्षात धर्म गुरुओना उपदेशथी वैराग पामी सजम लीधो ने मुळ गुण उत्तर गुणरुप रत्नोथी भरपुर थवो तेमज मतिज्ञानना जारथी सूत्र ज्ञानी थयो तेमज कर्मक्षय करवाने माटे वार भेदे तप क-रवा उद्यमी थया एवा सर्व गुणोनी वृद्धिथी ते सर्व धर्मीजनोने आत्म प्राण समान प्रिय थइ पडेलो छे हवे तेज पुरुषना कोइ पुर्व जन्मातरना अशुभ कर्मोदयथी मज-कुर सद्गुणनो त्याग करी कुडरीक साधुनी रीते पडवाइ थइ गयो ने महा दुरा-चर्णो शेववा लाग्यो, त्यार मजकुर भक्ति करनार सज्जनो ते निर्गुणी पुरुषने तजी दइने पोताना आत्मधर्मनो सुधारो करवा धार पण ते निर्गुणने मळ्वानो कोइपण वखत इरान्दो कर नहीं तेमज पाषाणादिकनी निर्गुण मुर्तिमा भाव मक्षेपता कदी वदन योग्य थती नथी

समकीती जनोने सुचना

समकितसार सूणो भवी, आतमगुण हितकार,
पार लह भव रासना, टळे चित विकार १
जीन मुख वायक छे भला, "फळ जत मुख होय,
करुणारस भर आज्ञा, पाळे विरला कोय २
समकित धारी आतमा, जीवान्कि नव तत्व;
माणी श्रद्धा स्थिर कर, तजे असत्य ममत्व ३
निरखी परखी जीवकु, हरखित थइने आप,
माण दान सनमान दे, क्षात्ति उरम जाप ४

छे अर्थात जेम पोते आरंभ तज्यो छे तेमज श्रोता जनोने यथाशक्ति आरंभ छ-
जावी निर्वद्य करणीने निर्जरा हेतु बतावे छे माटे शास्त्रोक्त रीते नवकोटीए आश्रव
त्यागनार मुनी बोध प्रमाणीक छे केमके साधुओ नव कोटीए आरंभ पचखी श्रा
वकोने निर्वद्य बोध कर त्यारे श्रावको यथा शक्तिए करीने बनतो आरंभ छोडे, ते
न्याय मार्ग छे परंतु तमो पीळाबेषधारीओ पोते पुजा विगेर आरंभ करवामा स
जम लुंटाइ जवानी धास्ती राखोछो अने पोताना भगतोने प्रतिमानी पुजाना महा
आरंभ करावीने कहोछो जे जेम जेम छकाय खपावी पुजा करशो तेम तेम हळुकर्मी
थइ सिघ्रइ मुक्तिमा जशो एवो बोध करोछो तो पुछवानु के तमारा देवमा भोग
नी कल्पना अने तमो सावद्याचार्योमा त्यागनी कल्पना अने तमारा श्रेवकोमा
सावद्य पुजनथी मोक्षनी कल्पना ए त्रण टिखळ ने हळ, मुशळ ए त्रेखडनो मत
तमारी सावद्य क्रियामा जुदो जुदो छे माटे तमो नवकोटीना नियमनो ढोळ लइ
वेसवा धारोछो पण बोध तो लखोटी रमवानो करो छो तेथी एम खातरी थाय छे
के ते सर्व प्रपच उदर पुर्णीने माटेज करता हशो

निर्गुण मुरतीमा भाव मेळवी लाभ इच्छे, ते प्रश्नोत्तर

केटलाएक अमारा बाळमित्रो पोतानी अविवेकताथी मतांध थइने बोले छे के
पथ्थर देवनी तथा गुरु चित्रनी स्थापनामा तो गुण नथी परंतु तेओमां अमारो
भाव मेळवीए एटले वदन पुजन करवा योग्य थाय छे हवे एम कहेनारनी बुद्धिमा
कलंक समजवुं कारण के निर्गुण देव तथा निर्गुण गुरुना चित्रमा पोतानो भाव
मेळववा चितवेला कार्यमा सिद्ध थता होय तो पुछवानु के मातपिताना मरण वि
योगमां काष्टादिकना पुतळा करीने तेओमा एम भाव मेळवता हशो जे अमारा
मातपीता प्रत्यक्ष छे वळी पीतळमां सोनानो भाव मेळवे तथा काचमा रत्ननो भाव,
कथिरमां रुपानो भाव, खोळमां गोळनो भाव, छाणमा शीरानो भाव, कांकरामां
साकरनो भाव, गर्धवनी लग्नीतमां घृतनो भाव, पाडामां हाथीनो भाव, श्वानमा
सावजनो भाव, वध्या स्त्रीमा पुत्रनो भाव एम अनेक द्रव्यमा पोतानो भाव प्रक्षेपन
करो तो तमारा विचार प्रमाणे गुण कर्त्ता थवु जोइए पण एम कदी बने नहीं
द्रष्टांत एक नगरमा एक ग्रहस्थनी पतिव्रता स्त्री हती ते दर वखते पतिनी भक्ति
करी स्वधर्म साचवती हती एक वखते पोताना पुरुपने मुसाफरीए जवाना वखतमां
अरज करी के अहो प्राणप्यारा शिरछत्र! आप परदेश पधार्याबाद मारो पतिव्रता
धर्म केवी रीते साचवु ? एम अरज कर्याबाद ते पुरुष चितारा पासे पोतानी छबी

पियरीआ खट कायना, नाम धरावी आप,
सकळ बाळ पोतातणा, तेपर मार भाप १९
कौ एक घर इका तजे, असत्य वयण सहाय;
पण हाको खटकायनी, मेहेर न आणे जराय २०
धीगधीग जनुनी तुज भणी, जाया हिंसक पुत्र;
अल्पायु हिंसक तणो, केम रहे घर सूत्र २१
दयातणो सत्य धर्म छे, ते तो छे परतक्ष,
जान हर खटकायना, ते केम उत्तम पक्ष २२
बायक सुख आश्रव तणा, वदता मुनीवर सुन्य;
आप तर पर तारवा, ते गुणीजन ने धन्य २३
दया धर्मथी सुन्य छे, द्रव्य लिंगिया आप;
निपुण आश्रव बोधमा, लेशे अति सताप २४

भावपुजा ज्ञानी जनोने करवी.

गौतम समुद्र कुमारोर, ए ढाळ उपर देशी जाणो;
श्रुत देवी समरु सदारे, सूत्र तणे अनुसार
भावपुजा कहु जीन तणीरे, भवी जनने हेत कारोर
एम जीन पुजीए १
पुज्या सीव सुख थाएर, मनमें धाइए;
ध्याया सुरपद पाएरे ए २
समकित सुतने देहरोर, ध्यान सुकळ जीनबिंब;
षट आवश्यक दिपक भलार, जीव दया ध्वज लवर ए ३
त्रिपळभत निरमळ जळेर, जीन न नवण कराय;
सयावच भग लुणणोर, समकीत घंट बजावर, ए ४
क्षेमा चदन अति शुदरर, कीरीआ कचोळो अनुप;
तप अगर उखेवनेर, एम पुजो जीन रुपर ए ५
पच परमेष्टी पद तणार, पचवर्ण पुष्पनी माळ;
गुथिने जेह चढावशेर, ते लेशे भव पारर ए ६

देव गुरु ने धर्ममां, द्रव्य भाव गुणधार;
सत्य वरी असत्य हरी, ए मर्षा परिहार ५
पर प्राण परधन सदा, लिए नहीं जे वीर;
अदत् तज्युं तेणे सही, हर ते भ परपीर. ६
द्रव्य थकी तीरिया तजी, भाव थकी कुमत;
ब्रह्मचर्य धर ते गुणी, आतम हित सुमत ७
द्रव्य बीत नव विध तणो, कर्म परीग्रह भाव;
द्विवीध बीत वधसे सदा, ते निग्रंथ सहाव ८
एह धर्म जीनवरतणो, जे पाळे नर नार;
कर्म शकळने ते हरे, पामे शीवपद सार ९

" मिथ्यात्वी जनोने सुचना "

निरमळ समकित ज्ञानना, भेद भणे नहि जेह;
शुद्धि निर्वद्य करणी विना, भवजळ तरे न तेह १०
जीनाज्ञा सुरवछं लपे, हरे प्राण कुद्रष्ट;
सावद्य पुजन आश्रये, लहे विषम ते कष्ट ११
प्रजा प्राण इंद्री सपे, परस्री लक्ष्मी रीध;
आप तपे पर तापवा, वैरभाव परसीध १२
विभित जीन थापक थकी, अंधाधार गमार;
हिंसा बोध मत भ्रममा, मस्ती मह अपार १३
जीन प्रतिमा जीन सारखी, सरधे समकित सार;
सात सुर्त ज्ञानीतणी, नि श्चळ मतिज्ञा धार १४
प्रतिमा प्रतिज्ञा एकता, जीव साधन ने काज;
कर्म विकट दळ भेदीने, भिमलात्म सीरताज १५
जीन प्रतिमा पथ्थर नहीं, ए समजो गुण भेद;
पथ्थर भाणी प्राणनो, करे पन्नकर्मा छेद १६
पुजा यात्रा भावनी, करवी कही जीनराज;
तेथी विमीत थतेता, पतीत पापी आज १७
मिथ्या मान अतर धरी, मथिया आरंभ माथ;
पचशे कुंभी पाकमे, झुरता छुटे नाव. १८

मथवी अप तेउ वायरोर, वनस्पति त्रसनार जीव;
तेने हणीने पुजा कररे, ते नही समकीती जीवर ए ७
हळु कर्मी भव माणीयार, पुजो भावे सुदेव;
मेघमुनी कहे जीन तणीरे, सेवा वळु नीत मेवर ए, ८

देवनगरी लीपीमा छापेला पुस्तको

	रु आ
उत्तराध्ययन सूत्र मुळ अर्थ भावार्थ पाका पुठानु	६–८
श्री वैरागशतक भापातर	१–०
आचारंग सूत्र मुळ साथे भापातर	४–०
दशवैकालीकसूत्र मुळ अर्थ भावार्थसहित	२–४
बृहत्कल्प छेदसूत्र मुळ अर्थ भावार्थ	१–४
दशवैकाल्लीक मुळपाठ	०–४
नरचंद्र जैन ज्योतीष	१–४
सामायिक प्रतिक्रमण सूत्रार्थ	०–८
जैनव्रत शिक्षापत्री-	०–२
कमलप्रभा नवीनपुस्तक	०–५
विविधबोध संग्रह (नवीन थोकडा)	०–६
जैनस्तुति आवृति पांचमी	०–४॥
जैन सज्झायमाळा	१–८
वर्धमानदेशना भापातर	२–८
बृहदा लोयणा	०–२॥
जैन पाठमाळा	०–६
देवचंदजी कृत चोवीसी	०–६
रामरास	१–८
नारकीनी बडी कीताब	१–०
दरशन चोवीसी	०–५
उपदेशमाळा	२–०

सुचना—समकितसार भाग १–२ दोनु भागका एक बडा पुस्तक सुधारा वधारा करके नागरीमे छापी पका पुठा बंधाके तैयार कीया हे किमत १–४–० और भी जैन धर्मका तमाम पुस्तक हमारी पास तैयार है जवाब निचेका पतापर मीलनेसे पुस्तक वेल्युपेवल पोस्टमे ताकीदसे भेजे जायगे

आकाशेठ कुवाकी पोळ
अमदावाद.
श्रीभोवनदास रुगनाथदास शाह
जैन बुकसेलर